BINDING SECT. APR 8 - 1969

PK 925 A53 1913a

Amarasimha
Namalinganusasana

[redacted]

PLEASE DO NOT REMOVE
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY

OPINION.

Nâmaligânus'âsana of Amarasimha.

(*With the Commentary of Kshîrasvâmin.*)

Of all the Sanskrit lexicons, Amarakosha is considered to be the best. Every Brahman boy who learns Sanskrit has to get this *Kosha* by heart, in whatever part of India he lives. Its popularity is further evidenced by the number of commentaries that have been composed on it and that form a literature by itself............ But the most ancient and important of them all is that of Kshîrasvâmin known as *Amarakoshodghatana*................This arduous work has been undertaken by Mr. K. G. Oka. Part I of it, which contains the first two Kâ*nd*as, is already out, and Part II is in the press and is expected to come out in three or four months' time. This last will contain the third Kâ*nd*a together with a paper on Amarasimha and Kshîrasvâmin, a list of works and authors quoted by the latter, a glossary of words and so forth.

The importance of Kshîrasvâmin's commentary will be patent to any ane, who reads Anundaram Borooah's preface to his partially published edition of the *Nâmalingânus'âsana*. The list of the lexicographical, medical and other authorities, which the commentator quotes, is as invaluable as it is extensive, and shows the depth and versatility of his knowledge. His critical acumen also is perceptible in the places when he sets right the errors not only of Amarasimha but also of other lexicographers...........

At times Kshirasvamin gives us a peep into the relative priority and posteriority of authors as preserved by tradition in his time, and, as such, it is of immense value.........If his interpretation is correct, Kshîrasvâmin implies that Amara was prior to Chandra. Amara must therefore be taken to have flourished prior to *circa* A. D. 450, when Chandra or Chandragomin, teacher of Vasurâta, is supposed to have flourished...........

The importance of Kshîrasvâmin's commentary does not end here. One of its unique features is the quotations it gives from the works of Sanskrit poets.........

We are thus very glad to find that the edition of *Amarakosha* together with Kshîrasvâmin's commentary has been undertaken by Mr. Oka. So far as part I, which is out, is concerned, he seems to have done his work, on the whole, satisfactorily. His edition contains very few misprints, and is free from the errors which are discernible in what little of this commentary was published by Anundaram Borooah. Mr. Oka has also succeeded in tracing many more quotations in the original works of Sanskrit authors from which Kshîrasvâmin has cited them...........

— D.R.B. (the Indian Antiquary for October 1912.)

	PAGE	STANZA
हिमवालुका	111	130
हिमसंहति, हिमानी	17	19
हिमांशु	16	14
हिमावर्ता	78	138
हिरण्य	154	90
	154	91
	155	94
हिरण्यगर्भ	5	16
हिरण्यबाहु	44	34
हिरण्यरेतस्	12	55
हिरुक्	228	3
	228	7
हिल्मोचिका	82	158
ही	228	10
हीन	181	107
	206	128
हुतभुक्प्रिया	116	21
हुतभुज्	12	55
हुम	226	253
हूति	29	8
	184	8
हूहू	11	52
हृणीया	187	32

	PAGE	STANZA
हृद्	25	31
	102	64
हृदयंगम	30	18
हृदयालु	166	3
हृद्य	174	53
हृषीक	26	8
हृषीकेश	5	18
हृष्ट	181	103
हृष्टमानस	167	7
हे	228	7
हेति	12	57
	198	71
हेतु	24	28
हेमकूट	52	3
हेमदुग्धक	56	22
हेमन्	155	94
	235	23
हेमन्त	22	18
हेमपुष्पक	64	64
हेमपुष्पिका	66	72
हेमाद्रि	11	49
हेरम्ब	9	38
हेला	36	32
हेषा	129	48
है	228	7

	PAGE	STANZA
हैमवती	9	36
	64	60
	72	108
	78	138
हैयंगवीन	148	52
होतृ	115	17
होम	115	14
होरा	233	10
ह्यस्	230	23
ह्रद	43	25
ह्रसिष्ठ	182	113
ह्रस्व	99	46
ह्रस्वा	74	117
ह्रस्वाङ्ग	79	143
ह्रादिनी	11	47
	16	9
	44	30
	75	124
	204	112
ह्री	34	23
ह्रीण, ह्रीत	179	92
ह्रीबेर	75	122
हेषा	129	48

ADDITIONAL NOTES.

195. प्रक्षार्णभाण्डामनवेक्ष्यकारिणाम्—is the first line of a verse attributed to Vyâsa in the Subhâshitâvali. Cf. Mahâbhârata Anus'âsana-parvan II. 12.

205. पर्ववर्जं व्रजेच्चैनाम्—See Manu. III. 45.

208. जामयो यानि गेहानि &c.—This line is found in Manu III. 58.

211. तानि कृत्याहतानीव—The remaining portion of the line is—विनश्यन्ति समन्ततः in Manu. III. 58.

213. जये धरित्र्याः पुरमेव सारम्—This quotation is found in the Brihat-samhitâ of Varâhamihira LXXIV. 1.

224. अहो बत महत्कष्टम्—The whole stanza runs thus:—अहो बत महत्कष्टं विपरीतमिदं जगत् । येनापत्रपते साधुरसाधुस्तेन तुष्यति ॥ in the Subhâshitâvali and attributed to Vyâsa.

	Page	Stanza
स्वाद्वी	73	108
स्वाध्याय	120	47
स्वान	30	23
स्वान्त	25	31
स्वाप	37	37
स्वापतेय	154	90
स्वामिन्	125	18
	167	10
स्वाराज्	10	43
स्वाहा	116	21
	228	9
स्विद्	224	243
स्वेद	36	34
स्वेदज	173	51
स्वैर	216	193
स्वैरिणी	93	11
स्वैरिता	183	2
स्वैरिन्	168	15
ह	228	5
हंस	19	32
	88	24
	221	227
हंसक	108	110
हञ्जिका	69	90
हञ्जे	33	15
हट्ट	234	18
हट्टविलासिनी	76	130
हठ	138	110
हण्डे	33	15
हत	172	41
हनु	76	130
	106	90
हन्त	224	245
हम	180	97
हय	129	45
हयपुच्छी	78	139
हयमारक	67	77
हर	8	33
हरण	126	29
हरि	84	1
	214	176
हरिचन्दन	11	50
	111	181

	Page	Stanza
हरिण	27	13
	85	8
	196	51
हरिणी	196	50
हरित्	15	2
	27	14
	235	19
हरित	27	14
हरितक	145	34
हरिताल	237	32
हरितालक	156	103
हरिदश्व	19	30
हरिद्रा	146	41
हरिद्राभ	27	14
हरिद्रु	72	102
हरिन्मणि	155	92
हरिप्रिया	7	27
हरिमन्थक	143	18
हरिवालुक	75	121
हरिहय	10	48
हरीतकी	64	60
हरेणु	75	121
	142	16
हर्म्य	50	9
हर्यक्ष	84	1
हर्ष	24	24
हर्षमाण	167	7
हल	142	13
हला	33	13
हलायुध	6	23
हलाहल	39	10
हलिन्	6	24
हलिप्रिय	60	42
हलिप्रिया	164	39
हल्य	141	8
हल्या	188	41
हल्लक	45	36
हव	184	8
	219	208
हविस्	117	27
	148	52
हव्य	116	24
हव्यपाक	116	22

	Page	Stanza
हव्यवाहन	12	55
हस	34	18
हसनी	144	30
हसन्ती	144	29
हस्त	105	86
	107	98
	197	59
हस्तधारण	183	5
हस्तिन्	127	35
हस्तिनख	51	17
हस्तिपक हस्त्यारोह	131	60
हा	227	257
हाटक	155	94
हायन	23	20
	204	108
हार	108	105
हारीत	89	35
हार्द	35	27
हाला	164	39
हालिक	150	64
हाव	36	32
हास	34	19
हास्तिक	128	37
हास्य	34	19
हाहा	11	52
हि	227	258
	228	5
हिंसा	222	230
हिंसाकर्मन्	185	19
हिंस्र	170	28
हिक्का	232	8
हिङ्गु	146	40
हिङ्गुनिर्यास	64	62
हिङ्गुलु	235	20
हिङ्गुली	74	114
हिज्जल	64	61
हिन्ताल	84	170
हिम	17	19
	17	20
	235	22
हिमवत्	52	3

	Page	Stanza
स्थिरतर	176	73
स्थिरा	46	2
	74	116
स्थिरायु	61	47
स्थूणा	163	35
	196	51
स्थूल	175	61
	218	205
स्थूललक्ष	167	6
स्थूलशाटक	109	116
स्थूलोच्चय	209	148
स्थेयस्	176	73
स्थौणेय	77	133
स्थौरिन्	129	47
स्नव	184	9
स्नातक	119	43
स्नान	110	122
स्नायु	102	66
स्निग्ध	124	12
	147	46
	168	14
स्नु	52	5
स्नुत	180	93
स्नुषा	92	9
स्नुह्, स्नुही	72	106
स्नेह	35	27
स्पर्श	26	7
	185	14
स्पर्शन	13	61
	117	29
स्पश	124	13
	220	215
स्पष्ट	178	82
स्पृक्का	77	133
स्पृशी	70	94
स्पृष्टि	184	9
स्पृहा	35	27
स्प्रष्टृ	185	14
स्फटा	38	9
स्फाती	184	9
स्फिच्	103	75
स्फिर	175	63

	Page	Stanza
स्फुट	54	7
	178	82
स्फुटन	183	5
स्फुरण, स्फुरणा	184	10
स्फुलिङ्ग	12	57
स्फूर्जक	60	39
स्फूर्जथु	16	10
स्फेष्ठ	182	113
स्म	228	5
	230	18
स्मर	7	25
स्मरहर	8	33
स्मश्रु	107	99
स्मित	36	35
स्मृति	28	6
	35	29
स्यद	13	64
स्यन्दन	57	25
	130	52
स्यन्दनारोह	131	61
स्यन्दिनी	102	67
स्यम	180	93
स्यात्	230	19
स्यूत	144	26
	181	101
स्यूति	183	5
स्योनाक	63	57
स्रसिन्	57	28
स्रज्	112	135
स्रव	184	9
स्रवद्गर्भा	151	69
स्रवन्ती	44	30
स्रवा	68	84
स्रष्टृ	5	17
स्रस्त	181	104
स्राक्	227	2
स्रुत	180	93
स्रुव	116	25
स्रुवावृक्ष	60	38
स्रोतस्	41	11
	223	234
स्रोतस्वती	44	30

	Page	Stanza
स्रोतोञ्जन	156	100
स्व	96	84
	219	212
स्वच्छन्द	168	15
स्वजन	96	34
स्वतन्त्र	168	15
स्वधा	228	9
स्वधिति	136	93
स्वन	30	23
स्वनित	180	95
स्वप्न	37	37
स्वप्नज्	171	33
स्वभाव	37	38
स्वभू	5	18
स्वयंवरा	92	7
स्वयम्	229	17
स्वयंभू	5	16
स्वर्	3	6
	226	255
स्वर	28	5
	31	1
स्वरु	11	47
	213	168
स्वरूप	37	38
	207	131
स्वर्ग	3	6
स्वर्जिकाक्षार	157	109
स्वर्ण	155	94
स्वर्णकार	159	8
स्वर्णक्षीरी	78	138
स्वर्णदी	11	49
स्वर्भानु	18	27
स्वर्वेश्या	11	52
स्वर्वैद्य	11	51
स्वसृ	96	29
स्वस्ति	224	242
स्वस्तिक	50	10
स्वस्रीय	96	32
स्वाति	238	38
स्वादु	202	94
स्वादुकण्टक	59	37
	71	99
स्वादुरसा	79	144

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
सुपाटी	238	38	सौगन्धिक	45	36	स्तिमित	181	106
सुमर	86	11		83	167	स्तुत	182	110
सृष्ट	194	89		156	102	स्तुति	29	11
सेकपात्र	} 41	13	शौचिक	159	6	स्तुतिपाठक	137	98
सेचन			सौदामनी	16	10	स्तूप	235	19
सेतु	48	14	सौध	50	10	स्तेन	162	25
	57	25	सौभागिनेय	95	24	स्तेम	187	29
सेना	134	79	सौभाञ्जन	58	31	स्तेय	} 162	26
सेनाङ्ग	127	34	सौम्य	18	27	स्तैन्य		
सेनानी	9	39		212	162	स्तोक	175	61
	131	63	सौरभेय	149	60	स्तोकक	87	17
सेनामुख	134	82	सौरभेयी	150	66	स्तोत्र	29	11
सेनारक्ष	131	62	सौराष्ट्रिक	39	10	स्तोम	90	40
सेवक	123	9	सौरि	18	27		208	141
सेवन	183	5	सौवर्चल	146	43	स्त्री	91	2
सेवा	140	2		157	109	स्त्रीधर्मिणी	94	20
सेव्य	83	165	सौविद	} 123	8	स्त्रीपुंसौ	90	39
सैंहिकेय	18	27	सौविदल्ल			स्थण्डिल	115	18
सैकत	41	9	सौवीर	59	37	स्थण्डिलशायिन्	119	44
सैतवाहिनी	44	33		146	39	स्थपति	114	9
सैनिक	131	62		156	100		197	61
सैन्धव	129	45	सौहित्य	149	56	स्थल	} 46	5
	146	42	स्कन्द	9	39	स्थली		
सैन्य	131	62	स्कन्ध	54	10	स्थविर	98	42
	134	79		104	78	स्थविष्ठ	182	112
सैरन्ध्री	94	18	स्कन्धशाखा	54	11	स्थाणु	8	34
सैरिक	150	64	स्खलन	37	36		54	8
सैरिभ	85	4	स्खलित	138	110	स्थाण्डिल	119	44
सैरेयक	66	75	स्तन	104	77	स्थान	205	117
सोढ	180	97	स्तनंधयी	} 98	41	स्थानीय	48	1
सोदर्य	96	34	स्तनपा			स्थाने	229	12
सोपप्लव	21	10	स्तनयित्नु	15	7	स्थापत्य	123	8
सोपान	51	18	स्तनित	16	9	स्थापनी	68	85
सोम	17	15	स्तबक	55	16	स्थामन्	137	103
सोमपा	} 114	9	स्तब्धरोमन्	84	2	स्थायुक	123	7
सोमपीथिन्			स्तब्ध	54	9	स्थाल	237	32
सोमराजी	70	96		143	21	स्थाली	144	31
सोमवल्क	62	51	स्तम्बकरि	143	21	स्थावर	177	74
	189	9	स्तम्बघन	} 187	35	स्थाविर	97	40
सोमवल्लरी	78	138	स्तम्बघ्न			स्थासक	110	122
सोमवल्लिका	70	96	स्तम्बेरम	127	36	स्थास्नु	176	73
सोमवल्ली	68	83	स्तम्भ	207	134	स्थिति	126	27
सोमोद्भवा	44	32	स्तव	29	11		186	21

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
सुकुमार	177	78		66	73		87	2
सुकृत	24	24	सुमनोरजस्	55	17	सुषिरा	76	130
सुकृतिन्	166	3	सुमेरु	11	49	सुषेण	65	68
सुख	24	25	सुर	3	7	सुषेविका	73	109
	235	23	सुरहृगा	232	8	सुष्ठु	227	2
सुखवर्चक	157	109	सुरज्येष्ठ	5	16		230	20
सुखसंदोह्या	151	71	सुरदीर्घिका	11	49	सुसंस्कृत	147	45
सुगत	4	13	सुरद्विष्	4	12	सुहृद्	124	12
सुगन्धि	26	11	सुरनिम्नगा	44	31	सूकर	84	2
	75	121	सुरपति	10	43	सूक्ष्म	175	61
सुचरित्रा	92	6	सुरभि	22	18		209	144
सुचेलक	109	116		26	11	सूचक	173	47
सुत	95	27		208	136	सूचि	232	8
	197	60	सुरभी	75	124	सूत	131	60
सुतश्रेणी	69	88	सुरर्षि	11	48		156	99
सुतात्मजा	96	29	सुरलोक	3	6		158	3
सुत्रामन्	10	42	सुरवर्त्मन्	15	1		197	62
सुत्या	120	47	सुरसा	74	115	सूतिकागृह	50	8
सुत्वन्	114	10	सुरा	164	39	सूतिमास	97	39
सुदर्शन	7	28	सुराचार्य	18	25	सूत्थान	161	19
सुदाम	126	29	सुरामण्ड	165	43	सूत्र	162	28
सुदूर	176	69	सुरालय	11	49	सूत्रवेष्टन	186	24
सुधर्मन्	11	48	सुराष्ट्र	77	131	सूद	144	28
सुधा	11	48	सुवचन	30	17		201	91
	203	102	सुवर्ण	154	86	सूना	204	113
सुधांशु	15	14		155	94	सूनु	95	27
सुधी	113	5	सुवर्णक	57	24	सूनृत	30	19
सुनासीर	9	41	सुवल्लि	70	96	सूपकार	144	27
सुनिषण्णक	80	149	सुवहा	66	71	सूर	19	29
सुन्दर	173	52		74	115	सूरण	81	157
सुन्दरी	92	4		75	119	सूरत	168	15
सुपथिन्	48	16		75	124	सूरसुत	19	33
सुपर्ण	7	29		78	140	सूरि	113	6
सुपर्वन्	3	7	सुवासिनी	92	9	सूर्मी	163	35
सुपार्श्वक	61	43	सुव्रता	151	71	सूर्य	19	29
सुप्रतीक	15	5	सुषीम	17	20	सूर्यतनया	44	32
सुप्रयोगविशिख	132	69	सुषम	173	52	सूर्येन्दुसंगम	21	8
सुप्रलाप	30	17	सुषमा	17	18	सृक्कि	106	91
सुभगासुत	95	24	सुषवी	81	155	सृप	136	92
सुभिक्षा	76	125		145	37	सृगाल	85	5
सुमन	143	18	सुषि	37	2	सृणि	128	42
सुमनस्	3	7	सुषिर	31	4	सृणिका	102	67
	55	17		37	1	सृति	48	15

	Page	Stanza
साचि	228	7
साति	188	39
	198	64
सातिसार	101	59
सात्त्विक	33	16
सादिन्	131	61
	204	107
साधन	205	119
साधारण	164	37
	178	82
साधित	172	40
साधिष्ठ	182	113
साधीयस्	223	236
साधु	113	3
	173	52
	203	101
साधुवाहिन्	129	45
साध्य	4	10
साध्वस	34	21
साध्वी	92	6
सानु	52	5
सांतपन	121	52
सान्त्व	30	18
	125	21
सांदृष्टिक	127	30
सान्द्र	175	66
सान्द्रस्निग्ध	170	30
सान्नाय्य	117	27
साप्तपदीन	124	12
सामन्	28	3
	125	21
सामाजिक	115	16
सामान्य	25	31
	178	82
सामि	226	250
सामिधेनी	116	22
सामुद्र	146	41
सांपरायिक	128	105
सांप्रतम्	229	12
	230	24
साय	20	3
	230	20
सायक	189	2

	Page	Stanza
सायम्	20	3
	230	20
सार	54	12
	213	172
सारङ्ग	87	17
	192	23
सारथि	131	60
सारमेय	161	22
सारव	45	36
सारस	45	40
	88	23
सारसन	108	109
	131	64
सार्थ	90	42
सार्थवाह	152	78
सार्धम्	228	4
सार्द्र	181	106
सार्वभौम	15	5
	122	2
साल	49	3
	53	5
	61	45
सालावृक	190	12
सास्ना	150	63
साहस	125	21
साहस्र	131	63
	188	43
सिंह	84	1
	174	59
सिंहतल	105	85
सिंहनाद	138	108
सिंहपुच्छी	70	93
सिंहसंहनन	167	12
सिंहान	155	98
सिंहासन	127	32
सिंहास्य	72	104
सिंही	72	103
	74	114
सिकता	199	73
सिकतामय	41	9
सिकतावत्	47	11
सिध्मक	157	107
सित	27	13

	Page	Stanza
	180	95
	180	99
	200	80
सितच्छत्रा	80	152
सिता	146	43
सिताभ्र	111	130
सिताम्भोज	45	41
सिद्ध	4	11
	181	101
सिद्धान्त	25	4
सिद्धार्थ	143	18
सिद्धि	74	113
सिध्म	100	53
सिध्मल	101	61
सिध्मला	233	10
सिध्य	18	23
सिध्रका	232	8
सिनीवाली	21	9
सिन्दुक	65	68
सिन्दुवार	65	69
सिन्दूर	157	105
	237	31
सिन्धु	40	1
	203	101
सिन्धुज	146	42
सिल्ह	111	128
सीता	142	14
सीत्य	141	8
सीमन्	51	20
सीमन्त	235	19
सीमन्तिनी	91	2
सीमा	51	20
सीर	142	14
सीरपाणि	6	24
सीरा	102	65
सीवन	183	5
सीसक	157	105
सीहुण्ड	72	106
सु	227	2
	224	5
सुकन्दक	80	148
सुकरा	151	70
सुकल	167	8

	Page	Stanza
समुद्र	40	1
समुद्रान्ता	70	92
	74	116
	77	134
समुन्दन	187	29
समुम्न	181	106
समुन्नद्ध	203	103
समुपजोषम्	229	11
समूरु	85	9
समूह	90	40
समूह्य	116	20
समृद्ध	167	11
समृद्धि	184	10
संमृश	147	46
संपत्ति	134	83
संपद्	134	82
संपराय	210	150
संपुटक	112	139
संप्रति	230	24
संप्रदाय	184	7
सम्प्रधारणा	126	26
संप्रहार	138	106
संफुल्ल	54	7
संबाध	178	85
संभेद	44	35
संभ्रम	36	34
	186	26
संमद	24	24
संमार्जनी	51	18
संमूर्च्छन	183	6
सम्यच्	30	22
सम्राज्	122	3
सरक	165	43
सरघा	88	27
सरट	86	13
सरणा	81	153
सरणि	48	15
सरमा	161	23
सरल	64	60
	167	8
सरलद्रव	111	129
सरला	73	108

	Page	Stanza
सरस्, सरसी	44	28
सरसीरुह	45	40
सरस्वत्	40	1
	197	57
सरस्वती	27	1
	44	34
सरित्	44	29
सरित्पति	40	1
सरीसृप	38	7
सर्ग	191	22
सर्ज	61	45
सर्जक	61	44
सर्प	38	6
सर्पराज	38	4
सर्पिस्	148	52
सर्व	175	65
सर्वसहा	46	3
सर्वज्ञ	4	13
	8	33
सर्वतस्	229	14
सर्वतोभद्र	50	10
	64	62
सर्वतोभद्रा	59	36
सर्वतोमुख	40	4
सर्वदा	230	23
सर्वधुरावह, सर्वधुरीण	150	66
सर्वमङ्गला	9	37
सर्वरस	111	127
सर्वला	136	94
सर्वलिङ्गिन्	120	45
सर्ववेदस्	114	9
सर्वसंनहन	136	95
सर्वानुभूति	73	108
सर्वान्नभोजिन्, सर्वान्नीन*	169	22
सर्वाभिसार	136	95
सर्वार्थसिद्ध	5	15
सर्वौघ	136	95
सर्षप	142	17
सलिल	40	3
सल्लकी	75	124

	Page	Stanza
सय	115	18
सवन	120	47
सवयस्	124	12
सवितृ	19	32
सविध, सवेश	176	67
सव्य	178	85
सव्येष्ठृ	131	61
सस्य	55	15
सस्यसंवर	61	45
सह	228	4
सहकार	59	33
सहचरी	66	76
सहज	96	34
सहधर्मिणी	92	5
सहन	170	31
सहभोजन	149	55
सहस्	22	14
	137	103
	222	233
सहसा	228	8
सहस्य	22	15
सहस्रदंष्ट्र	42	18
सहस्रपत्र	45	40
सहस्रवीर्या	82	159
सहस्रवेधि	146	40
सहस्रवेधिन्	78	141
सहस्रांशु	19	32
सहस्राक्ष	10	44
सहस्रिन्	131	63
सहा	66	74
	74	114
सहाय	133	72
सहायता	188	41
सहिष्णु	170	31
सहृदय	166	3
सांयात्रिक	41	12
सांयुगीन	133	78
सांवत्सर	124	14
सांशयिक	166	5
साकम्	228	4
साक्षात्	224	244
सागर	40	1

	Page	Stanza
सनातन	176	73
सनाभि	96	33
सनि	117	32
सनीड	176	67
संतत	13	65
संतति	113	1
संतमस	38	4
संतान	11	50
	113	1
संताप	12	57
संतापित	181	103
संदान	151	73
संदानित	180	95
संदाव	139	112
संदित	180	95
संदेशवाच्	30	17
संदेशहर	125	16
संदेह	25	3
संदोह	90	40
संद्राव	139	112
संधा	203	102
संधान	165	42
संधि	125	19
	184	11
संधिनी	151	69
संध्या	20	3
सप्तच्छद	59	35
संनद्ध	132	66
संनय	210	151
संनिकर्षण } संनिधि	186	23
संनिवेश	51	19
सपत्न	124	10
सपदि	227	2
	228	10
सपर्या	115	14
	118	34
सपिण्ड	96	33
सपीति	149	55
सप्तकी	108	108
सप्ततन्तु	115	13
सप्तपर्ण	57	23
सप्तर्षि	19	28

	Page	Stanza
सप्तला	66	73
	79	143
सप्तार्चिस्	12	56
सप्ताश्व	19	30
सप्ति	129	45
सब्रह्मचारिन्	114	11
सभर्तृका	93	12
सभा	49	6
	115	15
सभाजन	184	7
सभासद् } सभास्तार	115	16
सभिक	165	44
सभ्य	113	3
	115	16
सम	164	37
	175	65
समग्र	175	66
समङ्गा	69	91
समज	91	43
समज्या	115	15
समञ्जस	126	25
समधिक	177	76
समन्ततस्	229	14
समन्तदुग्धा	72	106
समन्तभद्र	4	13
समन्वितलय	31	3
समम्	228	4
समय	20	1
	209	149
समया	226	253
	228	7
समर	138	106
समर्थ	201	87
समर्थन	126	26
समर्धुक	167	7
समर्याद	176	67
समवर्तिन्	12	58
समवाय	90	41
समष्ठिला	81	157
समसन	186	21
समस्त	175	65
समस्या	29	7

	Page	Stanza
समा	23	20
समांसमीना	151	72
समाकर्षिन्	26	11
समाघात	138	107
समाङ्गा	79	142
समाज	91	43
समाज्ञा	29	11
समाधि	25	5
	202	98
समान	13	63
	164	37
	206	127
समानोदर्य	96	34
समालम्भ	186	27
समावृत्त	114	10
समासाद्य	180	93
समासार्था	29	7
समाहार	185	16
समाहित	182	109
समाहृति	28	6
समाह्वय	165	46
समित्	138	107
समिति	115	15
	138	107
	198	70
समिध्	55	13
समीक	138	105
समीप	176	67
समीर	13	62
समीरण	13	62
	67	79
समुच्चय	185	16
समुच्छ्रय	210	152
समुज्झित	181	107
समुत्पिञ्ज	138	100
समुदक्त	179	90
समुदय	90	41
समुदाय	90	41
	138	107
समुद्र	234	17
समुद्रक	112	139
समुद्गत	169	23
समुद्धरण	196	55

	Page	Stanza
संवीत	179	91
संवेग	36	34
संवेद	183	6
संवेश	37	37
संव्यान	109	118
संशप्तक	137	99
संशय	25	3
संशयापन्नमानस	166	5
संश्रव	25	5
संश्रुत	182	109
संश्लेष	187	30
संसक्त	176	68
संसद्	115	15
संसरण	48	18
	196	55
संसिद्धि	37	38
संस्कारहीन	121	54
संस्कृत	200	81
संस्तर	212	162
संस्तव	186	23
संस्ताव	187	34
संस्त्याय	210	151
संस्था	126	27
संस्थान	206	124
संस्थित	139	118
संस्पर्शा	81	154
संस्फोट	138	106
संहत	177	76
संहतजानुक	99	47
संहति	90	41
संहनन	103	70
संहार	39	2
संहूति	29	8
सकल	175	66
सकृत्	224	243
सकृत्प्रज	87	21
सक्तुफला	62	52
सक्थि	103	73
सखि	124	12
सखी	93	12
सख्य	124	12
सगर्भ्य	96	34
सगोत्र		
सग्धि	149	55
संकट	178	85
संकर	51	18
संकर्षण	6	24
संकलित	180	93
संकल्प	25	2
संकसुक	172	43
संकाश	164	38
संकीर्ण	158	1
	179	86
संकुल	30	19
	179	86
संकोच	110	124
संक्रन्दन	10	44
संक्राम	186	25
संक्षेपण	186	21
संख्य	138	105
संख्या	25	2
संख्यात	175	65
संख्यावत्	113	5
संख्येय	153	83
सङ्ग	187	29
संगत	30	18
संगम	187	29
	238	34
संगर	212	167
संगीर्ण	182	109
संगूढ	180	93
संग्रह	28	6
संग्राम	138	107
संग्राह	136	91
	185	14
संघ	90	42
संघात	90	40
सचिव	218	207
सजम्बाल	47	10
सज्ज	132	66
सज्जन	113	3
	127	34
सज्जना	128	43
संचय	90	40
संचारिका	94	17
संजवन	49	6
संज्वर	12	57
संज्ञपन	139	115
संज्ञा	193	33
संज्ञु	99	47
सटा	107	97
संडीन	90	38
सत्	113	5
	200	83
सतत	13	65
सती	92	6
सतीनक	142	16
सतीर्थ्य	114	12
सत्तम	174	58
सत्त्व	24	29
	219	214
सत्पथ	48	16
सत्य	30	22
	210	154
सत्यंकार	153	82
सत्यवचस्	119	43
सत्याकृति	153	82
सत्यानृत	140	3
सत्यापन	153	82
सत्त्र	214	182
सत्रा	228	4
सत्त्रिन्	124	15
सत्वर	13	65
सदन	49	5
सदस्	115	15
सदस्य	115	16
सदा	230	23
सदागति	13	61
सदातन	176	73
सदानीरा	44	33
सदृक्ष		
सदृश्	164	37
सदृश		
सदेश	176	67
सद्मन्	49	4
सद्यस्	228	10
सध्र्यच्	171	34
सनत्कुमार	11	51
सना	230	18

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
श्मशान	140	120	श्रीवास }	111	129	श्वस्	230	23
श्याम	27	14	श्रीवेष्ट }			श्वसन	13	61
	209	143	श्रीसंज्ञ	110	125		62	53
श्यामल	27	14	श्रीहस्तिनी	65	70	श्वाविध्	85	7
श्यामा	63	55	श्रुत	199	77	श्वित्र	100	54
	73	109	श्रुति	28	3	श्वेत	26	12
	73	112		106	94		155	96
	209	143		199	73		200	79
श्यामाङ्क	83	166	श्रेणी	53	4	श्वेतगरुत्	88	24
श्याल	96	32		159	5	श्वेतमरिच	158	110
श्याव	27	16	श्रेयस्	24	24	श्वेतरक्त	27	15
श्येत	26	12		26	6	श्वेतसुरसा	66	71
श्येन	86	15		174	58	षट्कर्मन्	113	4
श्यैनंपाता	232	6	श्रेयसी	64	60	षट्पद	89	30
श्रद्धा	203	102		68	85	षडभिज्ञ	5	14
श्रद्धालु	94	21		71	97	षडानन	9	39
	170	27	श्रेष्ठ	174	59	षड्ग्रन्थ	62	49
श्रयण	184	12	श्रोण	99	48	षड्ग्रन्था	72	103
श्रवण }	106	94	श्रोणि	103	74	षड्ग्रन्थिका	81	154
श्रवस् }			श्रोणिफलक	103	74	षड्ज	31	1
श्रविष्ठा	18	23	श्रोत्रिय	113	6	षण्ड	45	42
श्राणा	148	50	श्रौपद्	228	9		150	62
श्राद्ध	117	31	श्लक्ष्ण	175	61	षष्टिक्य	141	7
श्राद्धदेव	13	59	श्लथ	184	11	षाण्मातुर	9	40
श्राय	184	12	श्लेष्मण	101	60	संयत्	138	107
श्रावण }	22	16	श्लेष्मन्	101	62	संयत	172	42
श्रावणिक }			श्लेष्मल	101	60	संयम }	185	18
श्री	7	27	श्लेष्मातक	59	35	संयाम }		
	138	83	श्लोक	189	2	संयुग	138	106
श्रीकण्ठ	8	32	श्वःश्रेयस	24	25	संयोजित	179	92
श्रीघन	5	14	श्वदंष्ट्रा	71	99	संरात्र	30	24
श्रीद	14	69	श्वन्	161	22	संलाप	30	16
श्रीपति	6	21	श्वनिश	238	40	संवत्	229	17
श्रीपर्ण	65	66	श्वपच	161	20	संवत्सर	23	20
	196	53	श्वभ्र	37	2	संवनन	183	4
श्रीपर्णिका	60	41		235	22	संवर्त	[illegible]23	22
श्रीपर्णी	59	35	श्वयथु	100	52	संवर्तिका	45	43
श्रीफल	58	32	श्ववृत्ति	140	2	संवसथ	51	19
श्रीफला	70	95	श्वशुर	96	21	संवाहन	186	22
श्रीमत्	60	40		97	37	संविद्	25	1
	168	14	श्वशुर्य	209	146		25	5
श्रील	168	14	श्वश्रू	96	31		201	92
श्रीवत्सलाञ्छन	6	22	श्वश्रूश्वशुर	97	37	संवीक्षण	187	30

	Page	Stanza
शीतल	17	20
	80	150
शीतशिव	72	105
	75	123
	146	42
शीधु	165	42
	238	34
शीर्ण	106	95
शीर्षक	131	64
शीर्षच्छेद्य	172	45
शीर्षण्य	107	98
	132	65
शील	35	26
	217	202
शुक	87	22
शुकनास	63	57
शुकबर्ह	77	133
शुक्त	200	83
शुक्ति	43	23
	77	131
शुक्र	12	56
	18	26
	22	16
	101	62
शुक्रशिष्य	4	12
शुक्ल	26	12
शुच्	35	25
शुचि	12	56
	22	16
	26	12
	33	17
शुण्ठी	145	38
शुण्डा	164	41
शुतुद्रि	44	33
शुद्धान्त	50	12
	198	66
शुनक	161	22
शुनी	161	23
शुभ	24	22
	152	76
	235	23
शुभंयु, शुभान्वित	173	50
शुभ्र	26	12
	216	193
शुभ्रांशु	16	14
शुम्भ	162	27
शुल्क	126	28
शुल्व	155	97
	235	23
शुश्रूषा	118	35
शुष्कमांस	102	63
शुष्म	137	103
शुष्मन्	12	54
शूक	143	23
शूककीट	86	14
शूकधान्य	143	24
शूकशिम्बि	69	87
शूद्र	158	1
शूद्रा, शूद्री	93	13
शून्य	174	56
शूर	133	78
शूर्प	144	26
शूल	217	198
शूलाकृत	147	45
शूलिन्	7	30
शूल्य	147	45
शृङ्खल	108	109
	128	42
शृङ्खलक	152	75
शृङ्ग	52	4
	79	143
	192	26
शृङ्गवेर	145	37
शृङ्गाटक	48	17
शृङ्गार	33	17
शृङ्गिणी	150	66
शृङ्गी	43	25
	71	100
	74	117
शृङ्गीकनक	155	96
शृत	180	96
शेखर	112	136
शेफस्	104	76
शेफालिका	66	71
	232	7
शेमुषी.	25	1
शेलु	59	35
शेवधि	14	71
शेवाल	45	38
शेष	38	4
शैक्ष	114	11
शैखरिक	69	89
शैल	51	1
शैलालिन्, शैलूष	160	12
शैलेय	75	123
शैवलिनी	44	30
शैशव	97	40
शोक	35	25
शोचिष्केश	12	54
शोचिस्	20	35
शोण	27	15
	44	34
शोणरत्न	155	92
शोणित	102	64
शोथ	100	52
शोथघ्नी	80	149
शोधनी	51	18
शोधित	147	46
	174	56
शौनक	63	58
शोफ	100	52
शोभन	173	52
शोभा	17	18
शोष	99	51
शौक	91	44
शौक्लिकेय	39	10
शौण्ड	169	23
शौण्डिक	159	10
शौण्डी	71	97
शौद्धोदनि	5	15
शौरि	6	21
शौर्य	137	103
शौल्विक	159	8
शौष्कल	168	19
श्च्योत	184	10

	Page	Stanza
शाटक	237	33
शाठी	238	38
शाण्ड	35	80
शाण	163	82
शाणी	233	9
शाण्डिल्य	58	32
शात	24	25
शातकौम्भ	155	94
शातला	79	144
शात्रव	124	11
शाद	41	9
शादहरित, शाद्वल	47	10
शान्त	180	98
शान्ति	183	3
शाम्बरी	159	11
शार	212	167
शारद	57	23
	202	95
शारदी	73	111
शारिका	232	8
शारिफल	165	46
शारिवा	73	112
शार्कर	47	11
शार्ङ्गिन्	6	19
शार्दूल	84	1
शार्वर	215	189
शाल	42	19
शालपर्णी	74	116
शाला	49	6
	54	11
शालि	143	24
शालीन	170	26
शालूक	45	38
शालूर	43	24
शालेय	72	105
	141	6
शाल्मलि, शाल्मलीवेष्ट	61	47
शावक	90	39
शावर	59	33
शाश्वत	176	73
शाष्कुलिक	188	40

	Page	Stanza
शासन	126	26
शास्तृ	5	14
शास्त्र	214	180
शास्त्रविद्	167	6
शिक्य	163	30
शिक्षा	28	4
शिक्षित	166	4
	179	90
शिखण्ड	89	32
शिखण्डक	106	96
शिखर	52	4
	54	12
शिखरिन्	51	1
	204	106
शिखा	12	57
	89	32
	107	97
	191	19
शिखावत्	12	55
शिखावल	89	31
शिखिग्रीव	156	101
शिखिन्	89	31
	204	106
शिखिवाहन	9	40
शिग्रु	58	31
	145	34
शिञ्ज	158	110
शिञ्जित	30	24
शिञ्जिनी	135	86
शितशूक	142	15
शिति	200	83
शितिकण्ठ	8	32
शितिसारक	60	39
शिपिविष्ट	193	34
शिफा	45	43
	54	11
शिबिका	130	54
शिविर	130	34
शिम्बा	143	23
शिरस्	106	95
शिरस्त्र	132	65
शिरस्य	107	98
शिरीष	64	63

	Page	Stanza
शिरोग्र	54	12
शिरोधि	105	88
शिरोरत्न	107	102
शिरोरुह	106	95
शिरोस्थि	103	69
शिल	140	2
शिला	50	13
	52	4
शिलाजतु	156	104
शिली	43	24
शिलीमुख	191	18
शिलोच्चय	51	1
शिल्प	163	35
शिल्पिन्	159	5
शिल्पशाला	49	7
शिव	7	30
	24	25
शिवक	151	73
शिवमल्ली	68	82
शिवा	9	37
	62	52
	64	60
	76	127
	85	5
	219	213
शिशिर	17	20
	22	18
शिशु	90	39
शिशुक	42	18
शिशुत्व	97	40
शिशुमार	42	20
शिश्न	104	76
शिश्विदान	172	46
शिष्ट	126	27
शिष्य	114	11
शीकर	16	12
शीघ्र	13	64
शीत	17	20
	58	30
	59	35
	235	22
शीतक	161	19
शीतभीरु	65	70

	Page	Stanza
शतद्रु	44	33
शतपत्र	45	40
शतपत्रक	87	17
शतपदी	86	14
शतपर्वन्	82	161
शतपर्विका	72	103
	82	158
शतपुष्पा	80	152
शतप्रास	67	77
शतमन्यु	10	42
शतमान	238	34
शतमूली	71	101
शतवीर्या	82	159
शतवेधिन्	78	141
शतह्रदा	16	9
शताङ्ग	130	52
शतावरी	71	101
शत्रु	123	9
	124	11
शनैश्चर	18	27
शनैस्	230	18
शपथ शपन	29	9
शफ	130	50
शफरी	42	18
शबल	27	17
शबली	150	67
शब्द	26	7
	28	2
	30	23
शब्दग्रह	106	94
शब्दन	171	38
शम शमथ	183	3
शमन	12	58
	117	26
शमनस्वसृ	41	32
शमल	102	67
शमित	180	98
शमी	62	52
	143	23
शमीधान्य	143	21
शमीर	62	52

	Page	Stanza
शम्पा	16	9
शम्बरारि	77	26
शम्बल	238	34
शम्बाकृत्	141	9
शम्बूक	43	23
शम्भली	94	19
शम्भु	7	30
शम्या	142	14
शम्याक	57	23
शय	104	81
शयन	37	37
	112	138
शयनीय	112	1 7
शयालु शयित	171	33
शयु	38	5
शय्या	112	137
शर	82	16
	135	88
शरजन्मन्	9	39
शरण	196	53
शरद्	23	19
	23	20
शरभ	86	11
शरव्य शराभ्यास	135	87
शरारि	88	26
शरारु	170	28
शराव	145	32
शरावती	44	34
शरासन	134	84
शरीर	103	70
शरीरास्थि	103	69
शरीरिन्	24	30
शर्करा	47	11
	146	43
	214	176
शर्करावत् शर्करिल	47	11
शर्मन्	24	25
शर्व	7	3[illegible]
शर्वरी	20	30
शर्वाणी	9	37

	Page	Stanza
शल	85	7
शलभ	88	29
शलल शलली	85	7
शलाटु	55	15
शल्क	190	13
शल्य	62	53
	85	7
	136	94
शव	140	120
शबर	161	31
शबरालय	51	20
शश	86	11
शशधर	17	15
शशलोमन्	157	107
शशादन	86	15
शशोर्ण	157	107
शश्वत्	224	244
	227	1
	229	12
शष्प	83	168
शस्त	24	26
	182	110
शस्त्र	134	83
	214	180
शस्त्रक	155	98
शस्त्रमार्ज	159	7
शस्त्राजीव	132	68
शस्त्री	136	93
शस्यमञ्जरी शस्यशूक	143	21
शाक	78	136
	145	34
शाकट	150	64
शाकुनिक	160	14
शाकीक	132	70
शाक्यमुनि	5	14
शाक्यसिंह	5	15
शाखा	54	11
शाखानगर	49	2
शाखामृग	84	3
शाखिन्	53	5
शांखिक	159	8

	Page	Stanza
व्यक्त	197	62
व्यक्ति	25	31
व्यग्र	216	191
व्यजन	112	140
व्यञ्जक	33	16
व्यञ्जन	205	116
	235	23
व्यडम्बर	62	52
व्यत्यय, व्यत्यास	187	33
व्यथा	39	3
व्यध	184	8
व्य·व	48	12
व्यय	185	17
व्यलीक	190	12
व्यवधा	16	13
व्यवहार	29	9
व्यवाय	122	57
व्यसन	205	120
व्यसनार्त	172	43
व्यस्त	176	72
व्याकुल	172	43
व्याक्रोश	54	7
व्याघ्र	84	1
	174	59
व्याघ्रनख	76	129
व्याघ्रपाद	60	38
व्याघ्रपुच्छ	62	51
व्याघ्राट	87	16
व्याघ्री	70	94
व्याज	35	30
	36	33
	194	42
व्य..		
व्याधि	76	126
	99	51
व्याधिघात	57	24
व्याधित	101	58
व्यान	13	63
व्यापाद	25	4
व्याप्य	76	126
व्याम	105	87

	Page	Stanza
व्याल	38	7
	216	197
व्यालग्राहिन्	39	11
व्यालायुध	76	129
व्यास	186	22
व्याहार	27	1
व्युत्थान	205	118
व्युष्टि	194	38
व्यूढ	195	45
व्यूढकङ्कट	132	66
व्यूति	162	29
व्यूह	90	40
	134	80
	223	239
व्यूहपार्ष्णि	134	80
व्योकार	159	7
व्योमकेश	8	34
व्योमन्	15	1
व्योमयान	11	48
व्योष	158	111
व्रज	90	40
	193	30
व्रज्या	118	35
	136	96
व्रण	100	54
व्रत	118	37
व्रतति	54	9
	198	67
व्रतिन्	114	7
व्रश्चन	163	33
व्रात	90	40
व्रात्य	121	54
व्रीडा	34	23
व्रीहि	142	15
	143	21
व्रीहिभेद	143	20
वैदेय	141	6
शंव	11	47
शंवर	40	4
	86	10
शंवरी	69	88
शकट	130	50
शकल	17	16

	Page	Stanza
शकलिन्	42	17
शकुन, शकुनि	89	33
शकुन्त	89	33
	197	58
शकुन्ति	89	33
शकुल	42	19
शकुलाक्षक	82	159
शकुलादनी	68	86
	73	111
शकुलार्भक	42	17
शकृत्	102	67
शकृत्करि	150	62
शक्त	171	36
शक्ति	125	19
	137	104
	198	66
शक्तिधर	9	40
शक्तिहेतिक	132	70
शक्र	10	42
	65	67
शक्रधनुस्	16	11
शक्रपादप	62	53
शक्रपुष्पी	78	137
शंकर	7	30
शङ्कु	42	20
	54	8
	136	94
शंख	14	71
	43	23
	77	131
	191	18
शंखनख	43	23
शंखिनी	76	127
शची	10	45
शचीपति	10	43
शटी	81	154
शठ	172	46
शणपर्णी	80	150
शणपुष्पिका	72	107
शणसूत्र	42	16
शण्ड	123	9
शतकोटि	11	47

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
वृति	184	8	वृषस्यन्ती	92	9	वैषवार	145	85
वृत	176	70	वृषा	69	88	वैहत्	151	69
	179	92	वृषाकपायी	211	156	वै	228	5
	199	8	वृषाकपि	207	130	वैकक्षक	112	136
वृत्तान्त	29	7	वृष्टि	16	11	वैकुण्ठ	5	18
	197	63	वृष्णि	152	76	वैजनन	97	89
वृत्ति	140	1	वेग	191	20	वैजयन्त	10	46
	199	73	वेगिन्	133	74	वैजयन्तिक	133	72
वृत्र	212	165	वेणि	107	98	वैजयन्तिका	65	66
वृत्रहन्	10	42	वेणी	65	69	वैजयन्ती	137	101
वृथा	225	248	वेणु	82	161	वैज्ञानिक	166	4
	228	4	वेणुध्मा	160	13	वैणव	55	18
वृद्ध	75	123	वेतन	140	1	वैणविक	160	13
	98	42		164	38	वैणिक		
	103	100	वेतस	58	29	वैणुक	128	42
वृद्धत्व	97	40	वेतस्वत्	47	9	वैतंसिक	160	14
वृद्धदारक	78	137	वेताल	235	21	वैतनिक	160	15
वृद्धनाभि	101	61	वेत्रवती	44	34	वैतरणी	39	2
वृद्धश्रवस्	9	4	वेद	28	3	वैतालिक	137	98
वृद्धसंघ	97	40	वेदना	183	6	वैदेहक	152	78
वृद्धा	93	12	वेदि	115	18		158	3
वृद्धि	184	9	वेदिका	51	16	वैदेही	71	97
वृद्धिजीविका	141	4	वेध	184	8	वैद्य	100	57
वृद्धोक्ष	149	61	वेधनिका	163	34	वैद्यमात्र	72	103
वृध्याजीव	141	5	वेधमुख्यक	77	135	वैधात्र	11	51
वृन्त	55	15	वेधस्	5	17	वैधेय	173	48
वृन्द	90	41		222	229	वैनतेय	7	29
वृन्दारक	4	9	वेपित	180	100	वैनीतक	131	59
	190	16	वेपथु	37	38	वैमात्रेय	95	25
वृन्दिष्ठ	182	113	वेमन्	162	28	वैयाघ्र	130	54
वृश्चिक	86	14	वेला	217	199	वैर	35	25
वृष	24	24	वेल्ल	72	106	वैरनिर्यातन	139	112
	72	104	वेल्लज	145	35	वैरशुद्धि		
	74	117	वेल्लित	176	72	वैरिन्	124	10
	149	59		179	87	वैवधिक	160	15
	221	221	वेश	49	2	वैवस्वत	13	59
वृषण	104	76	वेशन्त	44	28	वैशाख	22	16
वृषदंशक	85	6	वेश्मन्	49	4		151	74
वृषध्वज	8	34	वेश्मभू	51	19	वैश्य	140	1
वृषन्	10	42	वेश्या	94	19	वैश्रवण	14	69
वृषभ	74	117	वेश्याजनसमाश्रय	49	2	वैश्वानर	12	53
	149	59	वेष	107	99	वैसारिण	42	17
वृषल	158	1	वेष्टित	179	91	वैषद्	228	9

	Page	Stanza
	145	38
	175	65
विश्वकृत्	161	23
विश्वकर्मन्	204	109
विश्वभेषज	145	38
विश्वंभर	6	22
विश्वंभरा	46	2
विश्वसृज्	5	17
विश्वस्ता	93	11
विश्वा	71	100
विश्वास	126	24
विष्	102	68
विष	38	9
	221	224
विषधर	38	7
विषमच्छद	57	23
विषय	26	7
	47	8
	210	152
विषयिन्	26	8
विषवैद्य	39	11
विषा	71	100
विषाण	156	46
विषाणी	75	120
विषुर विषुवत्	22	14
विष्किर	89	34
विष्कम्भ	51	17
विष्टप	47	6
विष्टर	213	170
विष्टरश्रवस्	5	18
विष्टि	39	3
विष्ठा	102	68
विष्णु	5	18
विष्णुक्रान्ता	72	104
विष्णुपद	15	2
विष्णुपदी	44	31
विष्णुरथ	7	29
विष्य	172	45
विष्वच्	229	14
विष्वक्सेन	6	19
विष्वक्सेनप्रिया	80	151
विष्वक्सेना	63	56

	Page	Stanza
विष्वद्र्यच्	171	34
विस	45	42
विसकण्ठिका	88	26
विसप्रसून	45	41
विसर	90	40
विसर्जन	117	29
विसर्पण	186	23
विसंवाद	37	36
विसार	42	17
विसारिन्	170	31
विसिनी	45	39
विसृत	179	86
विसृत्वर विसृमर	170	31
विस्त	154	86
विस्तर विस्तार	186	22
विस्तृत	179	86
विस्फार	133	109
विस्फोट	100	53
विस्मय	34	19
विस्मयान्वित	170	26
विस्मृत	179	87
विश्रम्भ	126	24
	207	135
विस्र	26	12
विस्रसा	98	41
विहग विहंग विहंगम	89	33
विहंगिका	163	30
विहसित	36	35
विहस्त	172	43
विहायस्	15	2
	89	33
विहापित	117	29
विहार	185	16
विह्वल	172	44
वीकाश	220	216
वीचि	40	5
वीज	24	28
वीणा	31	3
वीणादण्ड	32	7

	Page	Stanza
वीणावाद	160	13
वीत	129	44
वीतंस	162	26
वीतिहोत्र	12	53
वीथी	53	4
	201	87
वीध्र	174	55
वीनाह	43	57
वीर	33	17
	34	18
	133	78
वीरण वीरतर	83	164
वीरतरु	61	45
वीरपत्नी	94	16
वीरपान	137	104
वीरभार्या वीरमातृ	94	16
वीरवृक्ष	61	48
वीराशंसन	137	101
वीरसू	94	16
वीरहन्	121	53
वीरुध्	54	9
वीर्य	35	29
	101	62
	210	154
वीवध	202	96
वुक	68	82
वृक	85	7
वृकधूप	111	128
	111	129
वृक्ण	181	104
वृक्ष	53	5
वृक्षभेदिन्	163	34
वृक्षरुहा	68	82
वृक्षवाटिका	53	2
वृक्षादन	163	34
वृक्षादनी	68	82
वृक्षाम्ल	145	35
वृजिन	23	23
	176	71
	204	109
वृत	179	92

	Page	Stanza
विधुर	186	20
विधुवन विधूनन	183	4
विधेय विनियमग्राहिन्	169	24
विना	228	3
विनायक	5	14
	9	38
विनाश	186	22
विनाशोन्मुख	179	92
विनीत	129	45
बिन्दु	170	30
बिन्ध्य	52	3
विघ्न	180	100
	181	105
विपक्ष	124	11
विपश्ची	31	3
विपण	153	83
विपणि	49	2
	196	52
विपत्ति	134	83
विपथ	48	16
विपद्	134	83
विपर्यय विपर्यास	187	33
विपश्चित्	113	5
विपाद्	44	33
विपादिका	100	52
विपाशा	44	33
विपिन	53	1
विपुल	175	61
विप्र	113	2
	113	4
वि[illegible]	185	15
विप्रकृत	172	41
विप्रकृष्टक	176	69
विप्रतीसार	35	25
विप्रयोग	187	28
विप्रलब्ध	172	41
विप्रलम्भ	187	28
विप्रलाप	30	16
विप्रश्निका	94	20
विप्रुष्	40	6

	Page	Stanza
विप्लव	185	14
विबन्ध	100	55
विबुध	3	7
विभव	154	90
विभाकर	19	29
विभावरी	21	4
विभावसु	12	56
	19	31
	221	227
विभूति	9	36
विभूषण	107	101
विभ्रम	36	32
विभ्राज्	107	10:
विमनस्	167	8
विमर्दन	185	13
विमला	79	144
विमातृज	95	25
विमान	11	48
वियत्	15	2
वियद्गङ्गा	11	49
वियम	185	18
वियात	169	25
वियाम	185	18
विरजस्तमस्	119	44
विरति	188	38
विरल	175	66
विराज्	122	1
विराव	30	24
विरिञ्च	5	17
विरूपाक्ष	8	32
विरोचन	19	31
	204	108
विरोध	35	25
विरोधन	186	21
विरोधोक्ति	30	16
विलक्ष	170	26
विलक्षण	183	2
विलम्बित	32	9
विलम्भ	187	28
विलाप	30	16
विलास	36	32
विलीन	180	100

	Page	Stanza
विलेपन	111	133
	186	27
विलेपी	148	50
विवध	202	96
विवर	37	1
विवर्ण	160	16
विवश	172	44
विवस्वत्	19	30
	197	57
विवाद	29	9
विवाह	121	56
विविक्त	126	23
	200	82
विवेष	180	94
विवेक	118	38
विव्वोक	36	32
विश्	113	2
	140	1
	220	215
विशङ्कट	175	60
विषद	26	12
विशर	139	117
विशल्या	68	83
	78	137
	210	155
विशसन	139	116
विशाख	9	40
विशाखा	18	23
विशाय	187	32
विशारण	139	114
विशारद	202	95
विशाल	175	60
विशालता	109	114
विशालत्वच्	57	23
विशाला	81	157
विशिख	135	87
विशिखा	49	3
विशेषक	110	123
विश्राणन	117	29
विश्राव	187	28
विश्रुत	167	9
विश्व	4	10

	Page	Stanza
	147	46
वासुकि	38	4
वासुदेव	6	20
वासू	33	14
वास्तु	51	19
वास्तुक	82	158
वास्तोष्पति	10	43
वास्र	130	55
वाह	129	45
	154	88
वाहद्विषत्	85	4
वादन	131	59
वाहस	38	5
वाहित्थ	128	40
वाहिनी	134	79
	134	82
	204	112
वाहिनीपति	131	63
वि	89	34
विंशति	153	83
विकङ्कत	60	38
विकच	54	7
विकर्तन	19	30
विकलाङ्ग	89	46
विकसा	69	71
विकासित	54	8
विकस्वर	170	30
विकार	185	15
विकासिन्	170	30
विकिर	89	34
विकीरण	67	81
विकुर्वाण	167	7
विकृत	34	19
	101	58
विकृति	185	15
विक्रम	137	104
	208	140
विक्रय	153	83
विक्रयिक	152	79
विक्रान्त	133	78
विक्रिया	185	15
विक्रेतृ	152	79
विक्रेय	153	82

	Page	Stanza
विक्लव	172	44
विक्षाव	188	37
विगत	180	100
विगतार्तव	94	21
विग्र	99	46
विग्रह	103	70
	125	19
	138	106
	186	22
विघस	117	28
विघ्न	185	19
विघ्नराज	9	38
विचक्षण	113	6
विचयन	187	30
विचर्चिका	100	53
विचारणा	25	2
विचारित	180	110
विचिकित्सा	25	3
विच्छर्दक	50	11
विच्छाय	236	26
विजन	126	23
विजय	138	111
विजिल	147	46
विज्ञ	166	4
विज्ञात	167	9
विज्ञान	26	6
विट	234	17
विटङ्क	51	15
विटप	55	14
	207	131
विटपिन्	53	5
विट्खदिर	62	50
विट्चर	161	23
विडङ्ग	72	107
विडौजस्	9	51
विडाल	85	8
वितण्डा	233	9
वितथ	30	21
वितरण	117	29
वितर्दि	51	16
वितस्ति	105	84
वितान	110	120
	204	113

	Page	Stanza
वितुन्न	80	149
वितुन्नक	76	127
	145	37
	156	101
वित्त	154	90
	167	9
	180	100
विदर	183	5
विदल	237	32
विदारक	41	10
विदारी	73	110
विदारिगन्धा	74	116
विदित	182	108
	182	109
विदिश्	15	6
विदु	128	38
विदुर	170	30
विदुल	58	30
विद्ध	180	100
विद्धकर्णी	68	85
विद्याधर	4	11
विद्युत्	16	10
विद्रधि	100	56
विद्रव	139	112
विद्रुत	180	100
विद्रुम	155	93
विद्रुमलता	76	130
विद्वस्	113	5
	223	235
विद्वेष	35	25
विधवा	93	11
विधा	164	38
	203	101
विधातृ	5	17
विधि	5	17
	25	28
	119	39
विधिदर्शिन्	115	16
विधु	6	22
	16	14
	203	99
विधुत	181	107
विधुंतुद	18	27

	Page	Stanza
वह्	150	63
वह्नि	12	53
	15	4
वह्निशिख	157	106
वह्निसंज्ञक	67	80
वा	226	250
	228	10
	229	16
वाकुची	70	96
वाक्पति	171	35
वाक्य	28	2
वागीश	171	35
वागुरा	162	27
वागुरिक	160	14
वाग्मिन्	171	35
वाङ्मुख	29	9
वाच्	27	1
वाचंयम	119	42
वाचक	28	2
वाचस्पति	18	25
वाचाट } वाचाल }	171	36
वाचिक	30	17
वाचोयुक्तिपटु	171	35
वाज	135	88
वाजपेय	237	31
वाजिदन्तक	72	104
वाजिन्	89	34
	129	45
	204	107
वाजिशाला	49	7
वाञ्छा	35	27
वाटी	239	42
वाट्यालका	72	107
वाडव	12	56
	113	4
	129	47
वाडव्य	188	41
वाणा	66	75
वाणि	162	29
वाणिज	152	78
वाणिज्य	152	79
वाणिनी	204	112

	Page	Stanza
वाणी	27	1
वात	13	63
वातक	80	150
वातकिन्	101	59
वातपोथ	58	29
वातप्रमी } वातमृग }	85	7
वातरोगिन्	105	59
वातायन	50	9
वातायु	85	8
वातूल	216	199
वात्सक	149	60
वादित्र } वाद्य }	32	5
वान	55	15
वानप्रस्थ	57	28
	113	3
वानर	84	3
वानस्पत्य	53	6
वानायुज	129	46
वानीर	58	30
वानेय	77	132
वान्त	100	57
वापदण्ड	162	28
वापी	44	28
वाम	209	144
वामदेव	8	32
वामन	15	5
	99	46
	176	70
वामलूर	48	14
वामलोचना	91	2
वामा	91	3
वामी	129	47
वायस	87	21
वायसाराति	86	15
वायसी	80	152
वायसोली	79	144
वायु	13	61
वायुसख	12	55
वार्	40	3
वार	90	40
	212	162

	Page	Stanza
वारण	127	35
वारणबुसा	74	113
वारबाण	131	64
वारमुख्या } वारस्त्री }	94	19
वाराही	80	151
वारि	40	3
वारिद	15	7
वारिपर्णी	45	38
वारिप्रवाह	52	5
वारिवाह	15	7
वारी	129	44
वारुणी	196	52
वार्त्त	199	66
वार्त्ता	29	7
	140	1
वार्त्ताकी	74	114
वार्त्तावह	160	15
वार्द्धक	97	40
वार्धुषि } वार्धुषिक }	141	5
वार्षिक	80	151
वाल	75	122
	106	95
वालधि	130	51
वालपाश्या	107	103
वालहस्त	130	51
वालुक	75	122
वाल्क	108	111
वावदूक	171	35
वावृत्त	179	92
वाशिका	72	103
वाशिता	199	75
वास	49	6
वासक	72	104
वासगृह	50	8
वासन्ती	66	72
वासयोग	112	134
वासर	20	2
वासव	10	42
वासस्	109	115
वासित	31	26
	112	134

	Page	Stanza
वरण	49	3
	57	25
वरण्ड	234	18
वरत्रा	128	43
	163	31
वरद	167	7
वरवर्णिनी	92	4
	146	41
वरा	71	101
वराङ्ग	192	26
वराङ्गक	77	135
वराटक	45	43
	238	38
वरारोह	92	4
वराशि	109	116
वराह	84	2
वरिवसित, वरिवस्यित	181	102
वरिवस्या	118	35
वरिष्ठ	155	97
	182	112
वरीयस्	223	236
वरुण	13	61
	15	4
	57	25
वरुणात्मजा	168	39
वरूथ	131	58
वरूथिनी	134	79
वरेण्य	174	57
वर्कर	161	23
वर्ग	90	42
वर्चस्	222	232
वर्चस्क	102	68
वर्ण	113	1
	128	43
	195	48
वर्णक	111	133
	238	38
वर्णित	182	110
वर्णिन्	119	42
वर्तक	90	36
	190	11
वर्तन	170	29

	Page	Stanza
वर्तनी	48	15
वर्ति	111	133
वर्तिष्णु	170	29
वर्तुल	176	70
वर्त्मन्	48	15
	205	121
वर्धक	69	90
वर्धकि	159	9
वर्धन	170	28
	184	7
वर्धमान	62	52
वर्धमानक	145	32
वर्धिष्णु	170	28
वर्ध्रा	163	31
वर्मन्	132	65
वर्मित	132	66
वर्य	174	57
वर्या	92	7
वर्वणा	88	27
वर्वर	69	90
वर्वरा	78	140
वर्ष	16	11
	47	6
	221	225
वर्षवर	123	9
वर्षा	23	19
वर्षाभू, वर्षाभ्वी	43	24
वर्षीयस्	98	43
वर्षोपल	16	12
वर्ष्मन्	103	70
	206	123
वलज, वलजा	193	31
वलभी	51	15
वलय	103	107
वलयित	179	91
वलिन, वलिभ	98	45
वलिर	99	49
वलीक	50	14
वलीमुख	81	3

	Page	Stanza
वस्क, वस्कल	54	12
वल्गित	129	49
वल्मीक	48	14
वल्लकी	31	3
वल्लभ	174	53
	208	137
वल्लरि	55	13
वल्ली	54	9
वल्लूर	102	63
वल्वज	82	163
वश	184	8
वशक्रिया	183	4
वशा	128	37
	151	69
	220	218
वशिक	174	56
वशिर	146	41
वश्य	169	25
वषट्	228	9
वषट्कृत	117	27
वसति	198	67
वसन	109	115
वसन्त	22	18
वसा	102	64
वसिर	71	98
वसु	4	10
	68	82
	154	90
	222	229
वसुक	67	81
वसुदेव	6	22
वसुधा, वसुंधरा, वसुमती	46	3
वस्त	152	76
वस्तक	146	42
वस्तु	234	13
वस्त्र	109	115
वस्त्रयोनि	108	110
वस्त्रवेश्मन्	110	120
वस्न	152	79
वस्नसा	102	66

	Page	Stanza
लोकालोक	52	2
लोकेश	5	16
लोचन	106	93
लोचमस्तक	73	112
लोप्त्र	162	26
लोध्र	59	33
लोपामुद्रा	17	21
लोमन्	107	99
लोमशा	77	134
लोल	177	75
	218	206
लोलुप लोलुभ	169	22
लोष्ट लोष्टभेदक	142	12
लोह	111	126
	155	98
	156	99
	235	23
लोहकारक	159	7
लोहपृष्ठ	87	16
लोहल	171	37
लोहाभिसार	136	95
लोहित	27	15
	102	64
लोहितक	155	92
लोहितचन्दन	110	124
लोहिताङ्ग	18	26
वंश	82	161
	113	1
	220	215
वंशक	111	126
वंशरोचना	157	109
वकुल	65	65
वक्तव्य	211	160
वक्तृ	171	25
वक्त्र	105	89
वक्र	176	72
वक्षस्	104	78
वङ्क्षण	103	73
वङ्ग	157	106
वचन	27	1
वचस्	27	1
वचा	72	103
वज्र	11	47
	72	106
वज्रनिष्पेष	16	10
वज्रपुष्प	66	76
वज्रिन्	10	42
वञ्चक	85	5
	173	47
वञ्चित	172	41
वञ्जुल	37	27
	58	30
	65	65
वट	58	82
वटक	234	17
वटाकर	162	27
वटीगुण	162	27
वडवा	129	47
वडवानल	12	56
वडु	175	61
वणिज्	152	78
वणिज्या	152	79
वण्टक	154	89
वत्	228	10
वत्स	104	78
	150	62
	221	227
वत्सक	65	67
वत्सतर	150	62
वत्सनाभ	39	11
वत्सर	22	13
	23	20
वत्सल	168	14
वत्सादनी	68	83
वद	171	35
वदन	105	89
वदान्य	167	6
	211	161
वदावद	171	35
वध	139	117
वधू	77	134
	91	2
	92	9
	203	202
वध्य	172	45
वन	40	3
	53	1
	206	126
वनतिक्तिका	68	85
वनप्रिय	87	20
वनमक्षिका	88	28
वनमालिन्	6	21
वनमुद्ग	142	17
वनशृङ्गाट	71	99
वनसमूह	53	4
वनस्पति	53	6
वनिता	91	2
	199	74
वनीयक	173	49
वनोद्भवा	65	70
वनौकस्	84	3
वन्दा	68	82
वन्दारु	170	28
वन्दिन्	137	98
वन्दी	140	120
वन्ध्या	151	69
वन्या	53	4
वपा	37	2
	102	64
वपुस्	103	70
वप्र	49	3
	142	11
	157	105
वमथु	100	55
	128	88
वमि	100	55
वयस्	222	231
वयस्थ	98	42
वयस्था	63	58
	78	138
वयस्य	124	12
वयस्या	93	12
वर	110	124
	184	8
	213	174
वरटा	88	26
	88	28

	Page	Stanza
रोमन्थ	235	19
रोमहर्षण } रोमाञ्च	36	35
रोष	35	26
रोहिणी	150	67
रोहित	16	11
	27	15
	42	19
	86	10
रोहितक } रोहिन्	65	49
रौद्र	33	17
	34	20
रौमक	146	42
रौरव	39	1
रौहिणेय	6	24
	18	27
रौहिष	83	167
	86	10
लकुच	64	61
लक्ष	135	87
लक्षण	17	17
लक्ष्मण	168	14
लक्ष्मणा	88	26
लक्ष्मन्	17	17
लक्ष्मी	7	27
	74	113
	134	83
लक्ष्मीवत्	168	14
लक्ष्य	36	33
	135	87
लगुड	234	18
लग्न	19	28
लग्नक	165	44
लघु	13	61
	77	133
	192	28
लघुलय	83	165
लङ्का	232	7
लङ्कोपिका	77	134
लज्जा	34	23
लज्जाशील	170	28
लज्जित	179	92

	Page	Stanza
लट्वा	233	70
लता	54	9
	54	11
	63	56
	66	72
	77	133
	80	150
लतार्क	80	148
लपन	105	89
लपित	27	1
	182	108
लब्ध	181	105
लब्धवर्ण	113	6
लब्धानुज्ञ	114	10
लम्ब	126	25
लम्बन	108	104
लम्बोदर	9	38
लय	32	9
ललना	91	3
ललन्तिका	108	104
ललाट	106	92
ललाटिका	107	103
ललाम	209	143
ललामक	112	135
ललित	36	32
लव	175	62
	186	24
लवङ्ग	110	125
लवन	26	9
	146	41
लवणोद	40	2
लवण	186	24
लवित्र	142	13
लशुन	80	149
लस्तक	135	86
लाक्षा	110	125
लाक्षाप्रसादन	60	41
लाङ्गल	142	13
लाङ्गलदण्ड } लाङ्गलपद्धति	142	14
लाङ्गलिकी	75	119
लाङ्गली	73	111
	84	169

	Page	Stanza
लाङ्गूल	130	51
लाज	147	47
लाञ्छन	17	17
लाभ	152	80
लामज्जक	83	165
लालसा	35	28
लाला	102	67
लालाटिक	191	17
लाव	90	36
लासिका	32	8
लास्य	32	10
लिकुच	64	61
लिक्षा	233	10
लिखिता	125	16
लिङ्गवृत्ति	121	54
लिपि	125	15
लिपिकर	124	15
लिप्त	179	90
	182	111
लिप्तक	135	89
लिप्सा	35	27
लिबि	125	16
लीला	36	32
	217	200
लुठित	130	51
लुब्ध	169	22
लुब्धक	161	21
लुलाय	85	4
लूता	86	13
लून	181	104
लूम	1.0	51
लेख	3	8
लेखक	124	15
लेखर्षभ	10	42
लेखा	53	4
लेपक	159	6
लेश	175	62
लेट्ट	142	12
लेह	149	56
लोक	47	6
	189	2
लोकजित्	4	13
लोकायत	237	32

	Page	Stanza
रसाला	147	44
रसित	16	9
रठोनक	80	149
रहस	126	23
	126	24
रहस्य	126	24
राका	21	8
राक्षस	13	59
राक्षसी	76	128
राक्षा	110	125
राङ्कव	108	111
राज्	122	1
राजक	122	3
राजन् / राजन्य	122	1
राजन्यक	123	4
राजन्वत्	48	13
राजबला	81	153
राजर्षाजिन्	113	2
राजराज	14	68
राजवंश्य	113	2
राजवत्	48	13
राजवृक्ष	57	23
राजसदन	50	10
राजसभा	233	9
राजसूय	237	31
राजहंस	88	25
राजादन	59	35
	61	46
राजार्ह	111	126
राजि	53	4
राजिका	143	19
राजिल	38	5
राजीव	42	19
	45	41
राज्याङ्ग	125	18
रात्रि	21	4
रात्रिचर / रात्रिंचर	13	60
राद्धान्त	25	4
राध	22	16
राधा	18	23

	Page	Stanza
राम	6	23
	86	11
	208	140
रामठ	146	40
रामा	92	4
राम्भ	120	45
राल	111	127
राशि	91	43
	220	215
राष्ट्र	215	185
राष्ट्रिका	70	94
राष्ट्रिय	33	14
रासभ	152	77
रास्ना	78	140
राहु	18	27
रिक्तक	174	56
रिक्थ	154	90
रिङ्गण	37	36
रिद्ध	143	23
रिपु	124	10
रिष्ट	193	36
रिष्टि	133	90
रीढा	34	23
रीण	180	93
रीति	155	97
	198	68
रीतिपुष्प	156	103
रुक्प्रतिक्रिया	99	50
रुक्म	155	95
रुक्मकारक	159	8
रुग्ण	179	91
रुच्	20	35
रुचक	62	51
	67	79
	146	43
	157	109
रुचि	20	35
	193	29
रुचिर / रुच्य	173	52
रुज् / रुजा	99	51
रुत	31	26

	Page	Stanza
रुदित	37	36
रुद्ध	179	91
रुद्र	4	10
	8	34
रुद्राणी	9	37
रुधिर	102	64
	235	22
रुरु	86	10
रुष्	35	18
रुषती	30	18
रुहा	82	159
रूक्ष	221	226
रूप	26	7
रूपाजीव	94	19
रूप्य	154	91
	155	96
	211	161
रूप्याध्यक्ष	123	7
रूषित	179	89
रेचित	129	49
रेणु	137	100
रेणुका	75	121
रेतस्	101	62
रेफ	174	54
रेवतीरमण	6	23
रेवा	44	32
रै	154	90
	212	166
रोक	37	2
रोग	99	51
रोगहारिन्	100	57
रोचन	61	47
रोचनी	73	109
	79	147
रोचिष्णु	107	101
रोचिस्	20	35
रोदन	106	93
रोदनी	70	92
रोदस् / रोदसी	222	230
रोधस्	40	7
रोप	135	88
रोमन्	107	99

	Page	Stanza
युग	90	39
	192	24
युगकीलक	142	14
युगंधर	131	58
युगपत्	230	23
युगपत्त्रक	56	22
युगपार्श्वग	150	63
युगल युग्म	90	39
युग्य	131	59
	150	64
युद्ध	138	105
युध्	138	107
युवति	92	8
युवन्	98	42
युवराज	33	12
यूथ	90	42
यूथनाथ यूथप	127	36
यूथिका	66	72
यूप	60	42
यूपकटक	115	18
यूपाग्र	116	19
यूष	238	35
योक्त्र	142	13
योग	191	22
योगेष्ट	157	105
योग्य	74	113
योजन	237	30
योजनवल्ली	69	91
योत्र	142	13
योद्धृ योध	131	62
योधसंराव	138	109
योनि	104	76
योषा योषित्	91	2
यौतक	126	29
यौवत	95	22
यौवन	97	40
रंहस्	13	64
रक्त	27	15
	102	64
	110	124
	200	80
रक्तक	66	73
रक्तचन्दन	111	132
	158	111
रक्तपा	43	22
रक्तफला	78	139
रक्तसंध्यक	45	36
रक्तसरोरुह	45	41
रक्ताङ्ग	79	147
रक्तोत्पल	45	42
रक्षःसभ	236	27
रक्षस्	4	11
	13	60
रक्षित	181	106
रक्षिवर्ग	123	6
रघु	184	8
रङ्कु	86	10
रङ्ग	157	106
रङ्गाजीव	159	7
रचना	112	137
रजक	159	10
रजत	155	96
	200	79
रजनी	21	4
रजनीमुख	21	6
रजस्	24	29
	94	20
	137	100
	222	232
रजस्वला	94	20
रज्जु	262	27
रञ्जन	111	132
रञ्जनी	70	95
रण	137	104
	184	8
	195	49
रत	122	57
रतिपति	7	26
रत्न	155	93
	206	126
रत्नसानु	11	49
रत्नाकर	40	2
रत्नि	105	86
रथ	58	30
	130	52
रथकट्या	130	56
रथकार	158	4
	159	9
रथगुप्ति	131	58
रथद्रु	57	26
रथाङ्ग	130	56
	130	57
रथिक रथिन् रथिर	133	77
रथिन्	131	61
रथ्य	129	47
रथ्या	49	3
	130	56
रद रदन	106	91
रदनच्छद	106	90
रन्ध्र	37	2
रभस	235	21
रमणी	92	4
रम्भा	74	113
रय	13	64
रल्लक	109	116
रव	30	23
रवण	171	38
रवि	19	32
रशना	108	108
रश्मि	208	137
रस	26	7
	26	9
	33	17
	156	99
	222	228
रसगर्भ	156	102
रसज्ञा रसना	106	91
रसा	46	2
रसातल	37	1
रसाल	59	33
	83	164

	Page	Stanza
मेदिनी	46	3
मेदुर	170.	30
मेधा	25	2
मेध्य	174	55
मेढ्र	11	49
मेलक	186	29
मेष	152	76
मेषकम्बल	157	107
मेह	100	56
मेहन	104	76
मैत्रावरुणि	17	21
मैत्री मैत्र्य	238	39
मैथुन	122	57
	206	122
मैरेय	165	42
मोक्ष	26	7
	60	40
मोघ	178	82
मोचक	58	31
मोचा	61	47
	74	113
मोदक	237	33
मोरट	158	110
मोरटा	68	84
मोषक	162	25
मोह	138	111
मौक्तिक	155	92
मौद्गीन	141	4
मौन	118	36
मौरजिक	160	13
मौर्वी	135	86
मौलि	216	194
मौष्टा	232	5
मौहूर्त मौहूर्तिक	124	14
म्लिष्ट	30	21
म्लेच्छदेश	47	7
म्लेच्छमुख	155	97
यकृत्	102	66
यक्ष	4	11
	14	69
यक्षकर्दम	111	133

	Page	Stanza
यक्षधूप	111	127
यक्षराज्	14	68
यक्ष्मन्	99	51
यजमान	114	8
यजुस्	28	3
यज्ञ	115	13
यज्ञसूत्र	120	50
यज्ञाङ्ग	56	22
यज्ञिय	117	27
यज्वन्	114	8
यत् यतस्	228	3
यति यतिन्	119	43
यथा	228	10
यथाजात	173	48
यथातथम्	129	16
यथायथम्	229	15
यथार्थम्	229	16
यथार्हवर्ण	124	13
यथास्वम्	229	15
यथेप्सित	149	57
यदि	229	13
यदृच्छा	183	2
यन्तृ	131	60
	197	59
यम	12	58
	.120	49
	185	18
यमराज्	12	58
यमानिका	79	145
यमुना	44	32
यमुनाभ्रातृ	12	58
ययु	129	46
यव	142	15
यवक्य	141	7
यवक्षार	157	108
यवफल	82	161
यवस	83	168
यवागू	148	50
यवाग्रज	157	108
यवास	70	92
यवीयस्	98	43

	Page	Stanza
यव्य	141	7
यशःपटह	32	6
यशस्	29	11
यष्टि	238	38
यष्टीमधुक	73	110
यष्टृ	114	8
याग	115	13
याचक याचनक	173	49
याचना	117	32
याचित	140	3
याचितक	141	4
याच्ञा	117	32
	183	6
याजक	115	17
यातना	39	3
यातयाम	209	145
यातु यातुधान	13	60
यातृ	96	30
यात्रा	136	96
	214	176
यादःपति	40	2
यादस्	42	20
यादसांपति	13	61
यान	125	19
	131	59
यानमुख	130	56
याप्य	174	54
याप्ययान	130	54
याम	21	6
यामिनी	21	4
यामुन	156	100
यायजूक	114	4
याव	110	125
यावक	144	18
यावत्	225	247
यावन	111	128
याष्टीक	132	71
यास	70	92
युक्त	126	25
युक्तरसा	78	140

	Page	Stanza
	235	22
मुखर	171	36
मुखवासन	26	11
मुख्य	119	40
	174	57
मुण्ड	99	48
	238	34
मुण्डित	99	48
मुण्डिन्	159	10
मुद्	24	24
मुदिर	16	8
मुद्गपर्णी	74	114
मुद्गर	136	92
मुधा	228	4
मुनि	5	14
	119	42
	238	38
मुनीन्द्र	5	14
मुरज	32	5
मुरा	75	123
मुषित	179	88
मुष्क	104	76
मुष्कक	60	40
मुष्टिबन्ध	185	14
मुसल	144	25
मुसलिन्	6	24
मुसली	75	119
	86	13
मुसल्य	172	45
मुस्तक / मुस्ता	82	160
मुहुस्	227	1
मुहुर्भाषा	30	16
मुहूर्त	22	11
मूक	168	13
मूढ	173	48
मूत	180	95
मूत्र	102	67
मूत्रकृच्छ्र	100	56
मूत्रित	180	97
मूर्ख	173	48
मूर्छा	138	111
मूर्छाल	101	61

	Page	Stanza
मूर्छित	101	61
	200	82
मूर्त	101	61
	177	77
मूर्ति	103	71
	198	66
मूर्तिमत्	177	77
मूर्धन्	106	95
मूर्धाभिषिक्त	122	1
	197	61
मूर्वा	68	84
मूल	54	12
	217	201
मूलक	82	158
मूलकर्मन्	183	4
मूलधन	152	80
मूल्य	152	79
	164	39
मूषा	163	33
	238	38
मूषिक	86	12
मूषिकपर्णी	69	88
मूषित	179	88
मृग	85	8
	187	30
मृगणः	187	30
मृगतृष्णा	20	36
मृगदंशक	161	22
मृगधूर्तक	85	5
मृगनाभि	111	12
मृगवधाजीव	161	21
मृगबन्धनी	162	27
मृगमद	111	129
मृगया	161	24
मृगयु	161	21
मृगरोमज	108	111
मृगव्य	161	24
मृगशिरस् / मृगशीर्ष	18	24
मृगाङ्क	17	15
मृगादन	84	1
मृगित	181	105
मृगेन्द्र	84	1

	Page	Stanza
मृजा	110	121
मृड	8	31
मृडानी	9	37
मृणाल	45	42
मृद्	46	4
मृत	139	119
	140	3
मृतस्नात	168	19
मृतालक	77	131
मृत्तिका	46	4
मृत्यु	139	117
मृत्युंजय	8	31
मृत्सा	46	4
मृत्स्ना	46	4
	77	131
मृदङ्ग	32	5
मृदु	177	78
	202	94
मृदुत्वच्	61	46
मृदुल	177	78
मृद्वीका	73	108
मृध	138	105
मृषा	229	16
मृषार्थक	30	21
मृष्ट	174	56
मेकलकन्यका	44	32
मेखला	108	108
	136	91
मेघ	15	7
मेघज्योतिस्	16	10
मेघनादानुलासिन्	89	31
मेघनामन्	82	160
मेघनिर्घोष	16	9
मेघपुष्प	40	5
मेघमाला	16	8
मेघवाहन	10	44
मेचक	27	14
	89	32
मेढ्र	104	76
	152	76
मेथि	142	15
मेदक	165	42
मेदस्	102	64

	Page	Stanza
	80	148
	145	38
मा	229	12
मांस	102	63
	235	22
मांसल	98	44
मांसिक	160	14
माक्षिक	157	107
मागध	137	98
	158	2
मागधी	66	71
	71	97
माघ	22	15
माध्य	66	73
माठर	19	32
माढि	232	8
माणवक	98	42
माणव्य	188	41
माणिक्य	237	31
माणिबंध	146	42
मातङ्ग	161	20
	191	21
मातरपितृ	97	37
मातरिश्वन्	13	61
मातलि	10	45
मातापितृ	97	37
मातामह	96	33
मातुल	67	78
	96	31
मातुलपुत्रक	67	78
मातुलानी	96	30
	143	20
मातुलाहि	38	6
मातुली	96	30
मातुलुङ्गक	67	79
मातृ	8	35
	33	14
	96	29
	150	66
मात्र	214	179
मात्रा	175	62
	214	178
माद	184	12
माधव	5	18
	22	16
माधवक	164	41
माधवी	66	72
मान	34	22
	153	85
मानव	91	1
मानस	25	31
मानसौकस्	88	24
मानिनी	91	3
मानुष	91	1
मानुष्यक	188	42
माया }	159	11
मायाकार }		
मायादेवीसुत	5	15
मायु	101	62
मायूर	91	44
मार	7	25
मारजित्	4	13
मारण	139	116
मारिष	33	14
मारुत	13	62
मार्कव	80	152
मार्ग	22	14
	48	15
मार्गण	135	88
	173	49
	187	30
मार्गशीर्ष	22	14
मार्गित	181	105
मार्जन	59	33
मार्जना	110	121
मार्जार	85	6
मार्जिना	147	44
मार्तण्ड	19	30
मार्दङ्गिक	160	13
मार्द्वीक	164	41
मार्ष्टि	110	121
मालक	64	62
मालती	66	73
माला	112	135
मालाकार	159	5
मालातृणक	83	167
मालिक	159	5
मालुधान	38	6
मालूर	58	32
माल्य	112	135
माल्यवत्	52	3
माषपर्णी	78	139
मास	22	12
मासर	148	49
मासिक	177	31
मास्म	229	12
माहिष्य	158	3
माहेयी	150	66
मितंपच	173	48
मित्र	19	31
	123	9
	124	12
	213	168
मिथस्	227	257
मिथुन	90	39
मिथ्या	229	16
मिथ्यादृष्टि	25	4
मिथ्याभियोग }	29	10
मिथ्याभिशंसन }		
मिथ्यामति	25	4
मिश्रेया	72	106
मिसि	72	105
	80	152
मिहिका	17	19
मिहिर	19	30
मीढ	180	97
मीन	42	17
मीनकेतन	7	25
मुकुट	107	102
मुकुन्द	75	122
मुकुर	112	140
मुकुल	55	16
मुक्तकञ्चुक	38	6
मुक्ता	155	93
मुक्तावली	108	105
मुक्तास्फोट	43	23
मुक्ति	26	6
मुक्त	51	19
	105	89

	Page	Stanza
मनोरथ	35	27
मनोरम	173	52
मनोहर	172	41
मनोज्ञा	157	105
मन्तु	126	27
मन्त्र	213	168
मन्त्रव्याख्याकृत्	114	7
मन्त्रिन्	123	4
मन्थ	151	74
मन्थदण्डक मन्थनी	151	74
मन्थर	133	73
मन्थान	151	74
मन्द	161	19
	202	95
मन्दगामिन्	133	73
मन्दाकिनी	11	49
मन्दाक्ष	34	23
मन्दार	11	50
	57	26
	67	81
मन्दिर	49	5
मन्दुरा	49	7
मन्दोष्ण	20	36
मन्द्र	31	2
मन्मथ	7	25
	56	21
मन्या	102	65
मन्यु	35	25
	210	153
मन्वन्तर	23	22
मय	152	75
मयु	14	71
मयुष्टक	142	17
मयूख	20	34
	191	18
मयूर	73	112
	89	31
मयूरक	69	89
	156	101
मरकत	155	92
मरण	139	118
मरीच	145	36

	Page	Stanza
मरीचि	19	28
	20	34
मरीचिका	20	36
मरु	46	5
	212	164
मरुत्	13	62
	15	4
	197	59
मरुत्वत्	9	41
मरुन्माला	77	133
मरुवक	62	53
मर्कट	84	3
मर्कटक	86	13
मर्कटी	62	49
	69	87
मर्त्य	91	1
मर्दन	186	22
मर्दल	32	8
मर्मन्	237	30
मर्मर	30	24
मर्मस्पृश्	178	84
मर्यादा	126	27
मल	102	65
मलदूषित	174	55
मलपू	64	62
मलयज	111	131
मलिन	174	55
मलिनी	94	20
मलिम्लुच	162	25
मलीमस	174	55
मल्ल	235	21
मल्लक	238	37
मल्लिका	65	70
मल्लिकाक्ष	88	25
मल्लिगन्धि	111	127
मषी	233	10
मसूर	142	17
मसूरविदला	73	109
मसृण	147	46
मस्कर	82	161
मस्करिन्	119	41
मस्तक	106	95
मस्तिष्क	102	95

	Page	Stanza
मस्तु	148	54
मह	87	39
महत्	175	60
महती	198	69
महस्	222	232
महाकन्द	80	149
महाकुल	113	3
महाद्रुम	152	75
महाजाली	74	118
महादेव	8	32
महाधन	109	113
महासन	144	27
महामात्र	123	5
महायज्ञ	115	14
महारजत	155	95
महारजन	157	106
महारण्य	53	1
महाराजिक	4	10
महारौरव	39	1
महाशय	166	3
महाशूद्री	93	13
महाश्वेता	73	111
महासहा	66	74
	78	139
महासेन	9	39
महिला	91	2
महिलाह्वया	63	55
महिष	85	4
महिषी	92	5
मही	46	3
महीक्षित्	122	1
महीध्र	51	1
महीरुह	53	5
महीलता	43	21
महीसुत	18	26
महेच्छ	166	3
महेरणा	75	124
महेश्वर	7	30
महोक्ष	149	61
महोत्पल	45	39
महोत्साह महोद्यम	166	3
महौषध	71	100

	Page	Stanza
भ्रेष	126	24
मकर	42	20
मकरध्वज	7	26
मकरन्द	55	17
मकुष्ठक	142	17
मकूलक	79	144
मक्षिका	88	17
मख	115	13
मगध	137	98
मघवन्	9	41
मङ्क्षु	227	2
मङ्गल	24	25
मङ्गल्यक	142	17
मङ्गल्या	111	127
मचर्चिका	24	27
मज्जन्	54	12
मञ्च	112	138
मञ्जरी	55	13
मञ्जिष्ठा	69	91
मञ्जीर	108	109
मञ्जु }	173	52
मञ्जुल }		
मञ्जूषा	163	30
मठ	50	8
मड्डु	32	8
मणि	155	93
मणिक	144	31
मणिबन्ध	104	81
मण्ड	148	49
मण्डन	107	102
	170	29
मण्डप	50	9
मण्डल	15	6
	17	16
	19	23
मण्डलक	100	54
मण्डलाग्र	135	90
मण्डलेश्वर	122	2
मण्डहारक	159	10
मण्डित	107	100
मण्डूक	43	24
मण्डूकपर्ण	63	57
मण्डूकपर्णी	69	91
मण्डूर	155	98
मतंगज	127	35
मतल्लिका	24	27
मति	25	1
मत्त	128	37
	169	23
	181	103
मत्तकाशिनी	92	4
मत्सर	213	173
मत्स्य	42	17
मत्स्यण्डी	146	43
मत्स्यपित्ता	68	86
मत्स्यवेधन	42	16
मत्स्याक्षी	78	138
मत्स्याधानी	42	16
मथित	148	53
मथिन्	151	74
मद	128	38
	184	12
	201	91
मदकल	127	36
मदन	7	25
मदिरा	164	40
मदिरागृह	50	8
मदोत्कट	127	36
मद्गु	89	35
मद्गुर	42	19
मद्य	164	41
मधु	22	15
	164	41
	157	107
	203	103
मधुक	73	110
मधुकर	89	30
मधुक्रम	164	41
मधुद्रुम	57	27
मधुप	89	30
मधुपर्णिका	59	36
मधुपर्णी	68	83
मधुमक्षिका	88	27
मधुयष्टिका	73	110
मधुर	26	9
	216	192
मधुरक	79	143
मधुरसा	68	84
	73	108
मधुरा	80	152
मधुरिका	72	105
मधुरिपु	6	20
मधुलिह्	89	30
मधुवार	164	41
मधुव्रत	89	30
मधुशिग्रु	58	31
मधुश्रेणी	68	84
मधुष्ठील	57	28
मधुस्रवा	79	142
मधूक	57	27
मधूच्छिष्ट	157	107
मधूलक	57	28
मधूलिका	68	84
मध्य	104	79
	212	162
मध्यदेश	47	7
मध्यम	31	1
	47	7
	104	79
मध्यमा	92	8
	104	82
मध्याह्न	20	3
मध्वासव	164	41
मनःशिला	157	108
मनस्	25	31
मनसिज	7	26
मनस्कार	25	2
मनाक्	228	9
मनित	182	108
मनीषा	25	1
मनीषिन्	113	5
मनु	238	38
मनुज }	91	1
मनुष्य }		
मनुष्यधर्मन्	14	68
मनोगुप्ता	157	108
मनोजवस	168	13
मनोज्ञ	173	52

	PAGE	STANZA
	119	41
भित्त	17	16
भित्ति	49	4
भिदा	183	5
भिदुर	11	47
भिन्दिपाल	136	92
भिन्न	178	83
	181	101
भिषज्	100	57
भिस्सटा	148	49
भिस्सा	147	48
भी }	34	21
भीति }		
भीम	8	34
	34	20
भीरु	91	3
	170	26
भीरुक }	170	26
भीलुक }		
भीषण }	34	20
भीष्म }		
भीष्मसू	44	31
भुक्त	182	111
भुक्तसमुज्झित	149	56
भुग्न	176	72
	179	91
भुज	104	80
भुजग }	38	6
भुजंग }		
भुजंगभुज्	89	31
भुजंगम	38	6
भुजंगाक्षी	74	115
भुजशिरस्	104	78
भुजान्तर	104	77
भुजिष्य	160	17
भुवन	40	3
	47	6
भू	46	2
भूत	4	11
	181	105
	199	78
भूतकेश	158	111
भूतवेशी	66	71

	PAGE	STANZA
भूतात्मन्	203	105
भूतावास	64	59
भूति	9	36
	198	69
भूतिक	189	8
भूतेश	8	31
भूदार	84	2
भूदेव	113	4
भूनिम्ब	79	143
भूप	122	1
भूपदी	65	70
भूभृत्	197	61
भूमि	46	2
भूमिजम्बुका	60	38
	74	118
भूमिस्पृश्	140	1
भूयस् }	175	63
भूयिष्ठ }		
भूरि	175	63
	214	183
भूरिफेना	79	144
भूरिमाय	85	5
भूरुण्डा	65	70
भूर्ज	61	46
भूषा	107	101
भूषित	107	100
भूष्णु	170	29
भूस्तृण	83	167
भृगु	52	4
भृङ्ग	77	135
	87	17
	89	30
भृङ्गराज	80	152
भृङ्गार	127	33
भृङ्गारी	88	29
भृतक	160	15
भृति	164	38
भृतिभुज	160	15
भृत्य	160	17
भृत्या	164	38
भृश	14	66
भृष्टयव	147	47

	PAGE	STANZA
भेक }	43	24
भेकी }		
भेद	125	22
भेदित	181	101
भेरी	32	6
भेषज	99	50
भैक्ष	120	46
भैरव	34	19
भैषज्य	99	50
भोग	192	23
भोगवती	198	70
भोगिन्	38	8
भोगिनी	92	5
भोजन	149	55
भोस्	228	7
भौम	18	26
भौदिक	123	7
भ्रंश	126	24
भ्रकुंस	33	11
भ्रकुटि	37	37
भ्रम	25	4
	40	7
	184	9
भ्रमर	89	30
भ्रमरक	106	96
भ्रमि	184	9
भ्रष्ट	181	104
भ्राजिष्णु	107	101
भ्रातृ }	97	36
भ्रातृज }		
भ्रातृजाया	96	30
भ्रातृभगिनी	97	36
भ्रातृव्य	209	146
भ्रात्रीय	97	36
भ्रान्ति	25	4
भ्राष्ट्र	144	30
भ्रुकुंस	33	11
भ्रुकुटि	37	37
भ्रू	106	92
भ्रूकुंस	33	99
भ्रूकुटि	37	37
भ्रूण	97	39
	195	45

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
ब्रह्मयज्ञ	115	14	भद्रमुस्तक	82	160	भाग्य	24	28
ब्रह्मवर्चस	118	34	भद्रयव	65	67		210	155
ब्रह्मसायुज्य	121	52	भद्रश्री	111	131	भाजन	145	33
ब्रह्मसू	7	27	भद्रासन	127	32	भाण्ड	145	33
ब्रह्माञ्जलि }	119	39	भय	34	21		195	44
ब्रह्मासन }			भयंकर	34	20	भाद्र }	22	17
ब्रह्मार्पा	8	35	भयद्रुत	172	42	भाद्रपद }		
ब्राह्म	23	21	भयानक	33	17	भाद्रपदा	18	23
	121	51		34	20	भानु	19	31
ब्राह्मण	113	4	भर	14	66		20	34
ब्राह्मणयष्टिका }	69	90	भरण }	164	39		203	105
ब्राह्मणी }			भरण्य }			भामिनी	92	4
ब्राह्मण्य	188	41	भरत	160	12	भार	155	87
ब्राह्मी	27	1	भरद्वाज	87	16	भारत	47	6
	78	138	भर्ग	8	33	भारती	27	1
भ	18	22	भर्तृ	97	35	भारद्वाजी	74	117
भक्त	147	48		197	59	भारयष्टि	163	30
भक्षक	169	20	भर्तृदारक	33	12	भारवाह }	160	15
भक्षित	182	111	भर्तृदारिका	33	13	भारिक }		
भक्ष्यकार	144	28	भर्त्सन	29	14	भार्गव	18	26
भग	104	76	भर्मन्	155	94	भार्गवी	82	159
	192	26		164	39	भार्गी	69	90
भगंदर	100	56	भल्ल	235	21	भार्या	92	6
भगवत्	4	13	भल्लातकी	61	43	भार्यापति	97	38
भगिनी	96	29	भल्लुक	84	3	भालूक	85	4
भङ्ग	40	5	भव	8	34	भाव	33	12
भङ्गा	143	20		218	207		34	21
भङ्गि	232	8	भवन	49	5		219	208
भजमान	126	25	भवानी	9	37	भावबोधक	34	21
भट	131	62	भविक	24	26	भावित	112	134
भटित्र	147	45	भवितृ }	170	29		147	46
भट्टारक }	33	13	भविष्णु }				181	105
भट्टिनी }			भव्य	24	26	भावुक	24	26
भण्टाकी	74	114	भषक	161	22	भाषा	27	1
भण्डिल	64	64	भस्त्रा	163	33	भाषित	27	1
भण्डी }	69	91	भस्मगन्धिनी	75	121		182	108
भण्डीरी }			भस्मगर्भा	64	63	भाष्य	237	31
भद्र	24	25	भा	20	35	भास्	20	35
	149	59	भाग	154	89	भास्कर	19	29
भद्रकुम्भ	127	33	भागधेय	24	28	भास्वत्	19	30
भद्रदारु	63	54		126	28	भिक्षा	183	6
भद्रपर्णी	59	34	भागिनेय	96	32		221	225
भद्रबला	81	153	भागीरथी	44	3	भिक्षु	113	3

	Page	Stanza
बलभद्रप्रिय	80	151
बलवत्	98	44
	227	2
बलविन्यास	138	80
बला	72	107
बलाका	88	26
बलात्कार	138	110
बलाराति	10	43
बलाहक	15	7
बलि	115	14
	125	28
	216	196
बलिध्वंसिन्	6	21
बलिपुष्ट, बलिभुज्	87	21
बलिसद्मन्	37	1
बलीवर्द	149	59
बल्वज	144	27
	149	57
बस्कयिणी	151	71
बस्ति	103	73
बहिर्द्वार	51	16
बर्हिष्ठ	182	112
बर्हिस्	230	16
बहु	175	63
बहुकर	168	17
बहुगर्त्तवान्	171	36
बहुपाद्	58	32
बहुप्रद	167	6
बहुमूल्य	109	113
बहुरूप	111	128
बहुल	175	63
	217	200
बहुला	76	125
	217	200
बहुलीकृत	143	23
बहुवारक	59	35
बहुविध	180	94
बहुसुता	70	101
बहुसूति	121	70
बाढ	14	67
	195	44
बाण	135	87

	Page	Stanza
	195	45
बादर	108	111
बाधा	39	3
बान्धकिनेय	95	26
बान्धव	96	34
बार्हत	56	19
बाल	98	42
	218	206
बालगर्भिणी	151	70
बालतनय	62	50
बालतृण	83	168
बालमूषिका	86	12
बाला	33	14
बालिश	173	48
बालेय	152	77
बालेयशाक	69	90
बाह्य	97	40
बाष्प	207	130
बाष्पिका	146	40
बाहु	104	80
बाहुज	122	1
बाहुदा	44	33
बाहुमूल	104	79
बाहुयुद्ध	138	108
बाहुल	22	18
बाहुलेय	9	40
बाह्लिक	129	46
	189	9
बाह्लीक	110	124
	146	40
बिड	146	42
बिन्दु	40	6
बिन्दुजालक	128	40
बिभीतक	63	58
बिम्ब	17	16
बिम्बिका	78	139
बिल	37	1
बिलेशय	38	8
बिल्व	58	32
बीज	24	28
बीजकोश	45	43
बीजपूर	67	79
बीजकृत	141	8

	Page	Stanza
बीज्य	113	2
बीभत्स	33	17
	34	19
बुक्का	102	64
बुद्ध	4	13
	182	108
बुद्धि	25	1
बुद्बुद	235	19
बुध	18	27
	113	5
	203	10[illegible]
बुधित	182	108
बुध्न	54	12
बुभुक्षा	148	54
बुभुक्षित	169	20
बुस	143	22
बुस्त	238	34
बृसी	120	46
बृंहित	138	109
बृहत्	175	60
बृहतिका	109	17
बृहती	70	94
	199	75
बृहत्कुक्षि	98	44
बृहद्भानु	12	54
बृहस्पति	18	25
बोधकर	137	98
बोधिद्रुम	56	20
बोल	156	104
ब्रध्न	19	29
ब्रह्मचारिन्	113	3
	119	42
ब्रह्मण्य	60	42
ब्रह्मत्व	121	52
ब्रह्मदर्भा	79	155
ब्रह्मदारु	60	42
ब्रह्मन्	5	16
	205	114
ब्रह्मपुत्र	39	10
ब्रह्मबन्धु	203	104
ब्रह्मबिन्दु	119	39
ब्रह्मभूय	121	52

	Page	Stanza
प्रासङ्ग	131	58
प्रासङ्ग्य	150	64
प्रासाद	50	9
प्रासिक	132	71
प्राह्ण	20	3
प्रिय	97	35
	174	53
प्रियक	60	42
	61	44
	63	56
	85	9
प्रियङ्गु	63	56
	143	20
प्रियता	35	27
प्रियंवद	171	36
प्रीणन	183	4
प्रीत	181	3
प्रीति	24	24
प्रुष्ट	180	99
प्रेक्षा	25	1
	221	225
प्रेङ्खा	160	54
प्रेङ्खित	179	87
प्रेत	139	118
प्रेता	39	2
प्रेत्य	228	9
प्रेमन्	35	27
प्रेष्ठ	182	112
प्रेष	220	220
प्रेष्य	160	17
प्रोक्षण }	117	26
प्रोक्षित }		
प्रोथ	130	50
प्रोष्ठपदा	18	23
प्रोष्ठी	42	18
प्रौष्ठपद	22	17
प्रौढ	177	77
प्लक्ष	58	32
	61	44
प्लव	41	11
	43	24
	77	132
	89	35

	Page	Stanza
	161	20
प्लवग	84	8
	192	24
प्लवङ्ग	84	8
प्लवङ्गम	208	137
प्लाक्ष	55	18
प्लीहन्	102	66
प्लीहशत्रु	62	41
प्लुत	129	49
प्लुष्ट	180	99
प्लोष	184	9
प्सात	182	111
फणा	38	9
फणिज्झक	67	79
फणिन्	38	7
फल	36	91
	217	202
	235	23
फलक	136	91
फलकपाणि	133	72
फलग्रहि	158	111
फलपूर	67	79
फलवत्	54	7
फलाध्यक्ष	61	46
फलिन् }	54	7
फलिन }		
फलिनी	63	56
	78	137
फली	63	56
फलेग्रहि	53	6
फलेरुहा	63	55
फल्गु	64	62
	174	56
फाणित	146	43
फाण्ट	180	95
फाल	108	111
	142	13
फाल्गुन }	22	15
फाल्गुनिक }		
फुल्ल	54	8
फेन	157	105
	235	19

	Page	Stanza
फेनिल	58	31
	59	37
फेरव }	85	5
फेरु }		
फेला	149	56
बक	88	23
बडिश	42	16
बत	224	245
बदर	59	37
बदरा	74	116
	80	151
बदरी	59	37
बधिर	99	48
बद्ध	172	42
	180	95
बन्धकी	93	10
बन्धन	126	27
	185	14
बन्धनालय	140	120
बन्धस्तम्भ	128	42
बन्धु	96	34
बन्धुजीवक	66	73
बन्धुता	97	85
बन्धुर	176	70
बन्धुल	95	26
बन्धूक	66	73
बन्धूकपुष्प	61	44
बन्ध्य	54	7
बभ्रु	213	171
बर्ह	89	32
	223	237
बर्हिण }	89	31
बर्हिन् }		
बर्हिर्मुख	4	9
बर्हिष्	12	54
बर्हिष्ठ	75	122
बल	6	24
	134	79
	137	103
	216	196
	235	22
बलदेव }	6	23
बलभद्र }		

	Page	Stanza
प्रवाल	32	7
	155	93
प्रवाह	185	18
प्रवासन	139	114
प्रवाहिका	100	55
प्रविख्याति	187	28
प्रविदारण	138	105
प्रविश्लेष	186	20
प्रवीण	166	4
प्रवृत्ति	29	7
	185	18
प्रवृद्ध	177	77
	179	89
प्रवेक	174	57
प्रवेणी	107	98
	128	43
प्रवेश	104	80
प्रव्यक्त	178	82
प्रश्न	29	10
प्रश्रित	169	25
प्रष्ठ	133	73
प्रष्ठौही	151	70
प्रसन्न	42	14
प्रसन्नता	17	17
प्रसन्ना	164	40
प्रसभ	138	110
प्रसर	186	23
	186	25
प्रसरण	137	97
प्रसव	184	10
	219	209
प्रसवबन्धन	55	15
प्रसव्य	178	84
प्रसह्य	229	11
प्रसाद	17	17
	201	91
प्रसाधन	107	99
प्रसाधनी	112	139
प्रसाधित	107	100
प्रसारिणी	81	153
प्रसित	167	9
प्रसिति	185	14
प्रासंद	203	104

	Page	Stanza
प्रसू	96	29
	222	230
प्रसूता	94	16
प्रसूति	184	10
प्रसूतिका	94	16
प्रसूतिज	39	3
प्रसून	55	17
	206	1:3
प्रसूजनयितारौ	97	37
प्रसृत	179	89
प्रसृता	103	72
प्रसृति	105	85
प्रसेव	144	26
प्रसेवक	32	7
प्रस्तर	52	4
प्रस्ताव	186	24
प्रस्थ	52	5
	154	89
	201	88
प्रस्थपुष्प	67	79
प्रस्थान	136	96
प्रस्फोटन	144	26
प्रस्रवण	52	5
प्रस्राव	102	67
˜हर	21	6
प्रहरण	134	83
प्रहस्त	105	84
प्रहि	43	26
प्रहेलिका	28	6
प्रह्व	181	103
प्रांशु	176	70
प्राकार	49	3
प्राकृत	160	16
प्राग्दक्षिण	47	7
प्राग्वंश	1,5	16
प्राग्रहर, प्राग्र्य	174	58
प्राघार	184	10
प्राच्	229	17
	230	24
प्राचिका	232	8
प्राची	15	3
प्राचीन	49	3

	Page	Satnza
प्राचीना	61	85
प्राचीनावीति	120	50
प्राच्य	47	7
प्राजन	142	12
प्राजितृ	131	60
प्राज्ञ	113	5
प्राज्ञा, प्राज्ञी	93	12
प्राज्य	175	63
प्राड्विवाक	123	5
'।ण	13	63
	137	104
	140	121
	156	104
प्राणिन्	24	30
प्रातर्	230	20
प्रातिहारिक	159	11
प्राथमकल्पिक	114	11
प्रादुस्	227	257
	229	13
प्रादेश	105	83
प्रादेशन	117	30
प्राध्वम्	228	4
प्रान्तर	48	17
प्राप्त	179	87
	181	105
प्राप्तपञ्चत्व	139	118
प्राप्तरूप	207	131
प्रांस	198	69
प्राप्य	180	93
प्राभृत	126	28
प्राय	121	53
	210	153
प्रायस्	230	18
प्रार्थित	180	98
प्रालम्ब	112	136
प्रालम्बिका	108	104
प्रालेय	17	19
प्रावार	109	117
प्रावृत	109	113
प्रावृष	23	19
प्रावृषायणी	69	87
प्रास	136	93

	Page	Stanza
प्रतिमा	164	36
प्रतिमान	128	40
	164	36
प्रतिमुक्त	132	66
प्रतियत्न	204	107
प्रतियातना	164	36
प्रतिरोधिन्	162	25
प्रतिवाक्य	29	10
प्रतिविषा	71	100
प्रतिशासन	187	34
प्रतिश्याय	99	51
प्रतिश्रय	210	153
प्रतिश्रव	25	5
प्रतिश्रुत्	31	26
प्रतिष्टम्भ	186	27
प्रतिसर	213	175
प्रतिसीरा	110	120
प्रतिहत	172	41
प्रतिहास	67	77
प्रतीक	103	70
प्रतीकार	139	112
प्रतीकाश	164	38
प्रतीक्ष्य	166	5
प्रतीची	15	3
प्रतीत	167	9
	200	82
प्रतीपदर्शिनी	91	2
प्रतीर	40	7
प्रतीहार	51	16
	123	6
	213	71
प्रतीहारी	213	71
प्रतोली	49	3
प्रत्न	177	77
प्रत्यक्	230	24
प्रत्यक्पर्णी	69	89
प्रत्यक्श्रेणी	69	88
	79	145
प्रत्यक्ष	177	79
प्रत्यग्र	177	78
प्रत्यन्त	47	7
प्रत्यन्तपर्वत	52	7
प्रत्यय	209	147
प्रत्ययित	124	13
प्रत्यर्थिन्	124	11
प्रत्यवसित	182	111
प्रत्याख्यात	172	40
प्रत्याख्यान	187	31
प्रत्यादिष्ट	172	40
प्रत्यादेश	187	31
प्रत्यालीढ	135	86
प्रत्यासार	134	80
प्रत्याहार	185	16
प्रत्युत्क्रम	186	26
प्रत्युषस्, प्रत्यूष }	20	2
प्रत्यूह	185	19
प्रथम	178	81
	209	144
प्रथा	184	9
प्रथित	167	9
प्रदर	212	165
प्रदीप	112	138
प्रदीपन	39	10
प्रदेशन	126	28
प्रदेशिनी	104	81
प्रदोष	21	6
प्रद्युम्न	7	25
प्रद्राव	139	112
प्रधन	138	105
प्रधान	24	29
	123	5
	174	57
	206	122
प्रधि	130	57
प्रपञ्च	192	28
प्रपद	103	71
प्रपा	49	7
प्रपात	52	4
प्रपितामह	96	33
प्रपुन्नाड	79	147
प्रपौण्डरीक	76	128
प्रफुल्ल	54	7
प्रबन्धकल्पना	28	6
प्रबोधन	110	122
प्रभञ्जन	13	63
प्रभव	219	211
प्रभा	20	35
प्रभाकर	19	29
प्रभात	20	8
प्रभाव	125	19
	125	20
प्रभिन्न	128	37
प्रभु	167	11
प्रभूत	175	63
प्रभ्रष्टक	112	135
प्रमथ	8	35
प्रमथन	139	116
प्रमथाधिप	8	31
प्रमद	24	24
प्रमदवन	53	3
प्रमदा	91	3
प्रमनस्	167	7
प्रमा	184	10
प्रमाण	196	54
प्रमाद	35	30
प्रमापण	139	114
प्रमिति	184	10
प्रमीत	117	26
	139	119
प्रमीला	37	37
प्रमुख	174	57
प्रमुदित	181	103
प्रमोद	24	24
प्रयत	120	45
प्रयस्त	147	45
प्रयाम	186	23
प्रयोगार्थ	186	26
प्रलम्बघ्न	6	23
प्रलय	23	22
	36	34
प्रलाप	29	15
प्रवण	196	56
प्रवयस्	98	42
प्रवर्ह	174	57
प्रवह	185	18
प्रवहण	130	53
प्रवह्लिका	28	6
प्रवारण	183	3

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
पृश्नि	129	47	प्रकीर्य	62	48		210	151
	188	42	प्रकृति	24	29	प्रणव	28	4
पेचक	86	15		37	38	प्रणाद	29	11
	189	6		125	18	प्रणाली	44	35
पेटक	163	30		199	73	प्रणिधि	124	13
पेटी	239	42	प्रकोष्ठ	104	80		203	100
पेलव	175	66	प्रक्रम	186	26	प्रणिहित	179	87
पेशल	161	19	प्रक्रिया	127	32	प्रणीत	116	20
पेशीकोश	90	38	प्रक्वण	31	25		147	45
पैठर	147	45	प्रक्वाण			प्रणुत	182	110
पैतृष्वसेय	95	25	प्रक्ष्वेडन	135	88	प्रणेय	169	25
पैतृष्वस्रीय			प्रगण्ड	104	80	प्रतन	177	77
पैत्र	23	21	प्रनतजानुक	99	47	प्रतल	105	84
पोगण्ड	99	46	प्रगल्भ	169	25		105	85
पोट्गल	82	163	प्रगाढ	195	44	प्रताप	125	20
पोटा	93	15	प्रगुण	176	72	प्रतापस	67	81
पोत	90	39	प्रगे	230	20	प्रति	225	46
	197	60	प्रग्रह	140	120	प्रतिकर्मन्	107	99
पोतवणिज्	41	12		223	238	प्रतिकूल	178	84
पोतवाह			प्रग्राह	223	238	प्रतिकृति	164	36
पोताधान	42	19	प्रग्रीव	238	35	प्रतिकृष्ट	174	54
पोत्र	214	181	प्रघण	50	12	प्रतिक्षिप्त	172	42
पोत्रिन्	84	2	प्रघाण			प्रतिग्रह	134	80
पौतव	153	85	प्रचक्र	137	97	प्रतिग्राह	112	139
पौत्री	96	29	प्रचलायित	170	32	प्रतिघा	35	26
पौर	83	167	प्रचुर	175	63	प्रतिघातन	139	116
पौरस्त्य	178	81	प्रचेतस्	13	61	प्रतिच्छाया	164	36
पौरुष	105	87	प्रचोदनी	70	94	प्रतिजागर	187	28
पौरोगव	144	27	प्रच्छदपट	109	116	प्रतिज्ञान	182	109
पौर्णमास	120	48	प्रच्छन्न	50	14	प्रतिज्ञान	25	5
पौर्णमासी	21	7	प्रच्छर्दिका	100	55	प्रतिदान	153	81
पौलस्त्य	14	69	प्रजन	186	25	प्रतिध्वान	31	26
पौलि	147	47	प्रजविन्	133	74	प्रतिनिधि	164	36
पौष	22	15	प्रजा	193	32	प्रतिपद्	20	1
पौध्यक	156	103	प्रजाता	94	16		25	1
प्याट्	228	8	प्रजापति	5	17	प्रतिपन्न	182	108
प्रकाण्ड	24	27	प्रजावती	96	30	प्रतिपादन	117	29
	54	10	प्रज्ञा	25	1	प्रतिबद्ध	172	41
प्रकाम	149	57		93	12	प्रतिबन्ध	186	27
प्रकार	212	163	प्रज्ञान	206	122	प्रतिबिम्ब	164	36
प्रकाश	20	35	प्रज्ञु	99	47	प्रतिभय	34	20
	220	219	प्रडीन	90	38	प्रतिभान्वित	169	25
प्रकीर्णक	127	32	प्रणय	186	25	प्रतिभू	165	44

	Page	Stanza
पुरंदर	9	41
पुरंध्री	92	6
पुरस्	228	8
पुरस्कृत	200	84
पुरस्तात्	225	247
पुरा	226	254
पुराण	28	5
	177	77
पुरातन	177	77
पुरावृत्त	28	4
पुरी	48	1
पुरीतत्	102	67
पुरीष	102	68
पुरु	175	63
पुरुष	24	29
	57	25
	91	1
	220	219
पुरुषोत्तम	6	21
पुरुहू	175	63
पुरुहूत	9	41
पुरोग, पुरोगम, पुरोगामिन्	133	73
पुरोडाश	235	21
पुरोधस्	123	5
पुरोभागिन्	172	46
पुरोहित	123	5
पुलाक	189	5
पुलिन	41	9
पुलिन्द	161	21
पुलोमजा	10	45
पुषित	180	97
पुष्कर	15	1
	40	4
	45	41
	79	146
	215	187
पुष्कराह्व	88	23
पुष्करिणी	43	27
पुष्कल	174	58
पुष्ट	180	97
पुष्प	55	17

	Page	Stanza
	77	133
	94	21
पुष्पक	14	70
	156	103
पुष्पदन्त	15	5
पुष्पधन्वन्	7	26
पुष्पफल	56	21
पुष्परस	55	17
पुष्पलिह्	89	30
पुष्पवती	94	20
पुष्पवत्	21	10
पुष्पसमय	22	18
पुष्य	18	23
पुष्यरथ	130	52
पुस्त	162	29
पूग	84	169
	191	20
पूजा	118	34
पूजित	180	98
पूज्य	166	5
	210	150
पूत	120	45
	143	23
	174	55
पूतना	64	59
पूतिक, पूतिकरज	62	48
पूतिकाष्ठ	63	54
पूतिगन्धि	26	12
पूतिफली	70	96
पूप	147	48
पूय	238	35
पूर	235	20
पूरणी	61	47
पूरित	180	99
पूरुष	91	1
पूर्ण	180	99
पूर्णकुम्भ	227	33
पूर्णिमा	21	7
पूर्त	117	28
पूर्व	175	66
	178	81
	207	133

	Page	Stanza
पूर्वज	98	43
पूर्वदेव	4	12
पूर्वपर्वत	52	2
पूर्वा	15	3
पूर्वेद्युस्	230	22
पूषन्	19	30
पृक्ति	184	9
पृच्छा	29	10
पृतना	134	79
	134	82
पृथक्	228	3
पृथक्पर्णी	70	93
पृथगात्मता	25	31
	118	38
पृथग्जन	160	16
	203	105
पृथग्विध	180	94
पृथिवी	46	3
पृथु	145	37
	146	40
	175	60
पृथुक	90	39
	147	47
	189	3
पृथुरोमन्	42	17
पृथुल	175	60
पृथ्वी	46	3
	145	37
	146	40
पृथ्वीका	76	125
पृदाकु	38	6
पृश्नि	20	34
	99	48
पृश्निपर्णी	70	93
पृषत्	40	6
पृषत	40	6
	86	10
पृषत्क	135	87
पृषदश्व	13	62
पृषदाज्य	116	24
पृष्ठ	104	78
पृष्ठवंशाधर	104	76
पृष्ठास्थि	103	96

	Page	Stanza
पिच्छ	89	32
पिच्छा	61	47
	233	9
पिच्छिल	147	46
पिच्छिला	61	47
	64	63
पिञ्ज	139	117
पिञ्जर	156	103
पिञ्जल	137	100
पिटक	100	53
	163	30
पिठर	144	31
	215	189
पिण्ड	144	26
	155	98
	156	104
	234	18
पिण्डक	111	128
पिण्डिका	130	57
पिण्डीतक	62	53
पिण्याक	189	9
	237	32
पितामह	5	16
	96	33
पितृ	96	28
	97	37
पितृदान	117	31
पितृपति	12	58
	15	4
पितृपितृ	96	33
पितृप्रसू	20	3
पितृवन	140	120
पितृव्य	96	31
पितृसंनिभ	168	13
पित्त	101	62
पित्र्य	121	51
पित्सत्	89	35
पिधान	16	13
पिनद्ध	132	66
पिनाक	8	35
	190	14
पिनाकिन्	8	31
पिपासा	149	55

	Page	Stanza
पिपीलिका	232	8
पिप्पल	56	20
पिप्पली	71	97
पिप्पलीमूल	158	110
पिप्लु	99	49
पियाल	59	35
पिल्ल	101	60
पिशङ्ग	27	16
पिशाच	4	11
पिशित	102	63
पिशुन	110	124
	173	47
	206	127
पिशुना	77	133
पिष्टक	147	48
पिष्टपचन	145	32
पिष्टात	112	139
पीठ	112	138
पीडन	138	111
पीडा	39	3
	163	30
पीत	27	14
पीतदारु	63	54
पीतद्रु	64	60
	72	102
पीतन	57	27
	110	124
	156	103
पीतसालक	61	44
पीता	146	41
पीताम्बर	6	19
पीन	175	61
पीनस	99	5[illegible]
पीनोध्नी	151	71
पीयूष	11	48
	148	54
पीलु	57	28
	216	194
पीलुपर्णी	68	84
	78	139
पीवन्, पीवर	175	61
पीवरस्तनी	151	71

	Page	Stanza
पुंश्चली	93	10
पुंस्	91	1
पुक्कस	161	20
पुङ्ख	234	17
पुङ्गव	174	59
पुच्छ	130	51
पुञ्ज	91	43
पुटभेद	40	7
पुटभेदन	48	1
पुटी	239	42
पुण्डरीक	15	5
	45	41
	190	11
पुण्डरीकाक्ष	6	19
पुण्डर्य	76	128
पुण्ड्र	83	164
पुण्ड्रक	66	72
पुण्य	24	24
	211	161
पुण्यक	118	37
पुण्यजन	13	60
पुण्यजनेश्वर	14	69
पुण्यभूति	47	8
पुण्यवत्	166	3
पुत्तिका	88	28
पुत्र	95	27
	97	37
पुत्रिका	162	29
पुद्गल	235	20
पुनःपुनर्	227	1
पुनर्	226	254
	229	16
पुनर्नवा	80	149
पुनर्भव	105	83
पुनर्भू	95	23
पुन्नाग	57	25
पुर्	48	1
पुर	48	1
	59	34
	215	184
पुरःसर	133	73
पुरतस्	228	8
पुरद्वार	51	16

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
पाटल	27	15	पादुका	163	30	पारियात्रिक	52	3
	142	15	पादू	163	31	पारिषद	8	35
पाटला	63	55	पादूकृत्	159	7	पारिहार्य	108	107
पाटलि	60	40	पाद्य	118	33	पारी	233	10
	63	55	पानगोष्ठिका }	165	43	पारुष्य	29	14
पाठ	115	14	पानपात्र }			पार्थिव	122	1
	187	29	पानभाजन	145	32	पार्वती	9	37
पाठा	68	85	पानमदस्थान	164	41	पार्वतीनन्दन	9	39
पाठिन्	67	80	पानीय	40	4	पार्श्व	104	79
पाठीन	42	18	पानीयशालिका	49	7		188	42
पाणि	104	81	पान्थ	125	17	पार्श्वभाग	128	41
पाणिगृहीती	92	5	पाप	23	23	पार्श्वास्थि	103	69
पाणिघ	160	13		173	47	पार्ष्णि	103	72
पाणिपीडन	122	57	पापचेली	68	85	पार्ष्णिग्राह	124	10
पाणिवाद	160	13	पाप्मन्	23	23	पालघ्न	83	167
पाण्डर	26	12	पामन्	100	53	पालङ्की	75	122
पाण्डु	27	13	पामन	101	58	पालाश	27	14
पाण्डुकम्बलिन्	130	55	पामर	160	16	पालि	136	94
पाण्डुर	27	13	पामा	100	53		217	198
पातक	237	33	पायस	111	128	पालिन्दी	73	109
पाताल	37	1	पायु	103	73	पाल्लव	232	5
	218	203	पाय्य	153	85	पावक	12	54
पातुक	170	27	पार	41	8	पाश	107	98
पात्र	41	8	पारत	156	99	पाशक	165	45
	116	24	पारंपर्योपदेश	114	12	पाशिन्	13	61
	145	33	पारशव	219	211	पाशुपत	68	82
	214	180	पारश्वधिक	132	71	पाशुपाल्य	140	2
पात्री	239	42	पारसीक	129	46	पाश्या	188	43
पात्रीव	238	35	पारस्त्रैणेय	95	24	पाश्चात्य	178	81
पाथस्	40	4	पारायण	183	2	पाषण्ड	120	45
पाद	52	7	पारावत	86	15	पाषाण	52	4
	103	71	पारावताङ्घ्रि	80	150	पाषाणदारक	163	34
	154	89	पारावार	40	1	पिक	87	20
	201	89		238	35	पिङ्क	27	16
पादकटक	108	110	पाराशरिन्	119	41	पिङ्गल	19	32
पादग्रहण	119	41	पारिकाङ्क्षिन्	119	42		27	16
पादप	53	5	पारिजातक	11	50	पिचण्ड	104	77
पादबन्धन	14	58		57	26		234	18
पादस्फोट	100	52	पारितथ्या	107	103	पिचण्डिल	98	44
पादाग्र	103	71	पारिप्लव	177	75	पिचु	157	106
पादाङ्गद	108	109	पारिभद्र	57	26	पिचुमर्द	64	63
पादात	132	68	पारिभद्रक	62	53	पिचुल	60	40
पादातिक	132	67	पारिभव्य	76	126	पिच्चट	157	105

	Page	Stanza
परिपण	152	80
परिपन्थिन्	124	11
परिपाटी	118	36
परिपूर्णता	112	137
परिपेलव	77	132
परिप्लव	177	75
परिबर्ह	223	240
परिभव	34	22
परिभावण	29	14
परिभूत	181	107
परिमल	26	10
	185	13
परिरम्भ	187	30
परिवर्जन	139	115
परिवादिनी	31	3
परिवापित	179	86
परिवित्ति	121	56
परिवृढ	167	11
परिवेत्तृ	121	56
परिवेष	19	33
परिव्याध	58	30
	64	61
परिव्राज्	119	41
परिषद्	115	15
परिष्कार	107	101
परिष्कृत	107	100
परिष्वङ्ग	187	30
परिसर	48	14
परिसर्प	186	20
परिसर्या	186	21
परिस्कन्द	160	18
परिस्तोम	128	43
परिस्पन्द	112	137
परिस्रुत्	164	39
परिस्रुता	164	40
परीक्षक	167	7
परीभाव	34	22
परीवर्त	152	80
परीवाद	29	13
परीवाप	206	129
परीवार	213	170
परीवाह	41	10
परीष्टि	117	32

	Page	Stanza
परीसार	186	21
परीहास	36	33
परुत्	230	21
परुष	30	19
परुस्	82	162
परेत	139	118
परेतराज्	12	58
परेद्यवि	230	22
परेष्टुका	151	70
परैधित	160	18
परोष्णी	88	27
पर्कटी	58	32
पर्जनी	72	102
पर्जन्य	209	146
पर्ण	55	14
	58	29
	235	22
पर्णशाला	49	6
पर्णास	67	80
पर्यङ्क	112	138
पर्यटन	118	35
पर्यन्तभू	48	14
पर्यय	118	37
	187	33
पर्यवस्था	186	21
पर्याप्त	149	57
पर्याप्ति	183	5
पर्याय	118	37
	209	147
पर्युदञ्चन	140	3
पर्येषणा	117	32
पर्वत	51	1
पर्वन्	21	7
	82	162
	205	121
पर्शुका	153	69
पल	154	86
	218	203
पलगण्ड	159	6
पलंकषा	71	99
पलल	102	63
पलाण्डु	80	148
पलाल	143	22

	Page	Stanza
पलाश	55	14
	58	29
	81	155
पलाशिन्	53	5
पालक्नी	93	12
पलित	98	41
पल्यङ्क	112	138
पल्लव	55	14
पल्वल	44	28
पव	186	24
पवन	13	63
	186	24
पवनाशन	38	8
पवमान	13	63
पवि	11	47
पवित्र	83	166
	120	45
	174	55
पवित्रक	42	16
पशुपति	7	30
पशुप्रेरण	188	39
पशुरज्जु	151	73
पश्चात्	224	244
पश्चात्ताप	35	25
पश्चिम	178	81
पश्चिमा	15	3
पश्चिमोत्तर	47	7
पष्ठवाह्	150	63
पस्त्य	49	5
पांशु	137	100
पांशुला	93	11
पाक	90	39
	184	8
पाकल	76	126
पाकशासन	9	41
पाकशासनि	10	46
पाकस्थान	144	27
पाक्य	146	42
पाञ्चजन्य	7	28
पाञ्चालिका	162	29
पाट	228	7
पाटच्चर	162	25

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
पति	97	35	पद्मचारिणी	79	146	पराग	55	17
	167	10	पद्मनाभ	6	20		191	21
पतिंवरा	92	7	पद्मपत्त्र	79	146	पराङ्मुख	171	33
पतिवत्नी	93	12	पद्मराग	155	92	पराचित	160	18
पतिव्रता	92	6	पद्मा	7	27	पराचीन	171	33
पत्तन	48	1		69	90	पराजय	139	113
पत्ति	132	67		79	146	पराजित		
	134	81	पद्माकर	44	28	पराधीन	168	16
	199	72	पद्माट	80	148	परान्न	169	20
पत्तिसंहति	132	68	पद्मालया	7	27	पराभूत	139	113
पत्नी	92	5	पद्मिन्	127	36	परारि	230	21
पत्त्र	55	14	पद्मिनी	45	39	परार्ध्य	174	58
	90	37	पद्य	237	31	परासन	139	114
	131	59	पद्या	48	15	परासु	139	118
	214	180	पनस	64	61	परास्कन्दिन्	162	25
पत्त्रपरशु	163	33	पनायित	182	110	परिकर	212	166
पत्त्रपाश्या	107	103	पनित			परिकर्मन्	110	121
पत्त्ररथ	89	34	पन्न	181	104	परिक्रम	185	16
पत्त्रलेखा	110	122	पन्नग	38	8	परिक्रिया	186	20
पत्त्राङ्ग	111	132	पन्नगाशन	7	29	परिक्षिप्त	179	88
	158	111	पयस्	40	3	परिखा	44	29
पत्त्राङ्गुलि	110	122		148	51	परिग्रह	223	238
पत्त्रिन्	86	15		223	234	परिघ	136	92
	89	34	पयस्य	148	51		192	27
	135	88	पयोधर	212	164	परिघातन	136	92
	204	106	पर	124	11	परिचय	189	23
पत्त्रोर्ण	63	57		216	192	परिचर	131	63
	109	113	परजात	160	18	परिचर्या	118	35
पथिक	125	17	परतन्त्र	168	16	परिचाय्य	116	20
पथिन्	48	15	परपिण्डाद	169	20	परिचारक	160	17
पथ्या	64	59	परभृत्	87	21	परिणत	180	97
पद्	103	71	परभृत	87	20	परिणय	122	57
पद	202	93	परमम्	229	13	परिणाम	185	15
पदग	132	67	परमान्न	116	24	परिणाय	165	46
पदवी	48	15	परमेष्ठिन्	5	16	परिणाह	109	114
पदाजि	132	61	परंपराक	117	26	परितस्	229	14
पदाति			परवत्	168	16	परित्राण	183	5
पदिक	132	68	परशु	136	93	परिदान	152	80
पद्ग			परश्वध			परिदेवन	30	16
पद्धति	48	15	परश्वस्	230	23	परिधान	109	117
पद्म	14	71	परःशत	175	64	परिधि	19	33
	45	39	पराक्रम	137	104		202	97
पद्मक	128	40		208	138	परिधिस्थ	131	63

	Page	Stanza
नृ	91	1
नृत्य	32	10
नृप	122	1
नृपलक्ष्मन्	127	33
नृपसभ	236	27
नृपासन	127	32
नृशंस	173	47
नृसेन	238	40
नेतृ	167	11
नेत्र	106	93
	214	181
नेत्राम्बु	106	93
नेदिष्ठ	176	69
नेपथ्य	107	99
नेमि	43	27
	57	26
	130	57
नैकभेद	178	83
नैगम	152	78
	208	140
नैचिकी	150	67
नैपाली	157	108
नैमेय	152	80
नैयग्रोध	55	18
नैर्ऋत	13	60
	15	4
नैष्किक	123	7
नैस्त्रिंशिक	132	71
नो	229	12
नौ	41	10
नौकादण्ड	41	13
नौतार्य	41	10
न्यक्ष	221	226
न्यग्रोध	58	32
	202	96
न्यग्रोधी	69	88
न्यङ्कु	86	10
न्यच्	176	71
न्यस्त	179	89
न्याद	149	56
न्याय	126	25
न्याय्य	126	26
न्यास	153	81

	Page	Stanza
न्युङ्ख	234	17
न्युब्ज	101	61
न्यून	206	128
पक्कण	51	20
पक्व	179	92
	180	97
पक्ष	22	12
	90	37
	107	98
	135	88
	221	221
पक्षक	50	14
पक्षति	20	1
	90	37
पक्षद्वार	50	14
पक्षभाग	128	41
पक्षमूल	90	37
पक्षान्त	21	7
पक्षिन्	89	33
पक्षिणी	21	5
पक्ष्मन्	205	121
पङ्क	23	23
	41	9
पङ्किल	47	10
पङ्केरुह	45	40
पङ्क्ति	53	4
	199	72
पङ्गु	99	48
पचम्पचा	72	102
पचा	184	8
पञ्चजन	91	1
पञ्चता	139	117
पञ्चदशी	21	7
पञ्चम	31	1
पञ्चलक्षण	28	5
पञ्चशर	7	25
पञ्चशाख	104	81
पञ्चाङ्गुल	62	52
पञ्चास्य	84	1
पञ्जर	237	31
पञ्जिका	232	7
पट	109	116
पटच्चर	109	115

	Page	Stanza
पटल	50	14
	217	202
पटलप्रान्त	50	14
पटवासक	112	139
पटह	32	6
	138	109
पटु	81	155
	161	19
	171	35
	194	40
पटुपर्णी	78	138
पटोल	81	155
पटोलिका	74	118
पट्ट	234	17
पट्टिका }	60	41
पट्टिन् }		
पट्टिश	235	21
पण	154	88
	164	39
	165	45
पणव	32	8
पणायित }	182	110
पणित }		
पणितव्य	153	82
पण्ड	17	39
पण्डित	113	5
पण्य	153	82
पण्यवीथिका	49	2
पण्या	80	150
पण्याजीव	152	78
पतग	89	34
पतङ्ग	88	29
	193	20
पतङ्गिका	88	28
पतत्	89	34
पतत्र	90	37
पतत्रिन्	89	34
पतद्ग्रह	112	139
	235	21
पतयालु	170	27
पताका	137	101
पताकिन्	133	72

	Page	Stanza
निर्झर	52	5
निर्णय	25	3
निर्गजक	159	10
निर्देश	126	26
निर्धौत	168	13
निर्भर	14	66
निर्मद	128	37
निर्मुक्त	38	6
निर्मोक	38	9
निर्याण	128	39
निर्यातन	205	120
निर्यूह	223	237
निर्वपण	117	30
निर्वर्णन	187	31
निर्वहण	33	15
निर्वाण	26	6
	183	96
निर्वात	180	96
निर्वाद	29	13
	201	90
निर्वापण	139	116
निर्वासन	139	115
निर्वृत्त	181	101
निर्वेश	164	39
	186	20
	220	216
निर्व्यपन	37	2
निर्हार	185	17
निर्हारिन्	26	11
निर्ह्राद	30	23
निलय	49	5
निवह	90	40
निवान	200	84
निवाप	117	31
निवीत	109	113
	120	50
निभृत	179	88
निवेश	127	34
निशा	21	4
निशाख्या	146	41
निशान्त	49	5
निशापति	16	14
निशित	179	91

	Page	Stanza
निशीथ	21	6
निशीथिनी	21	4
निश्चय	25	3
निश्चेष्टि	51	18
निषङ्ग	135	89
निषङ्गिन्	132	70
निषद्या	49	2
निषद्वर	41	9
निषध	52	3
निषाद	31	1
	161	20
निषादिन्	131	60
निषूदन	139	114
निष्क	190	14
निष्कला	94	21
निष्कासित	171	39
निष्कुट	53	1
निष्कुटि	76	125
निष्कुह	55	13
निष्क्रम	186	25
निष्ठा	33	15
	194	41
निष्ठान	147	44
निष्ठीवन		
निष्ठेवन	188	38
निष्ठेव		
निष्ठुर	30	19
	177	76
निष्ठ्यूत	179	88
निष्ठ्यूति	188	38
निष्णात	166	4
निष्पक्व	180	96
निष्पन्न	181	101
निष्पाव	186	24
निष्प्रभ	180	100
निष्प्रवाणि	109	112
निसर्ग	37	38
निसृष्ट	179	89
निस्तब्ध	176	70
निस्तर्हण	139	115
निस्त्रिंश	135	90
निस्राव	148	49

	Page	Stanza
निस्वन	30	23
निस्वान		
निहनन	139	115
निहाका	43	22
निहिंसन	139	114
निहीन	160	16
निह्नव	30	17
	219	209
नीकाश	164	88
नीच	160	16
नीचैस्	230	18
नीड	90	38
नीडोद्भव	89	35
नीध्र	50	14
नीप	60	42
नीर	40	4
नील	27	14
नीलकण्ठ	89	31
	194	39
नीलमृत्यु	86	14
नीललोहित	8	33
नीला	88	27
नीलाम्बर	6	24
नीलाम्बुजन्मन्	45	37
नीलिका	66	71
नीलिनी	70	95
नीली		
नीवाक	186	23
नीवार	144	25
नीवी	152	80
	229	213
नीवृत्	47	8
नीशार	109	118
नीहार	17	19
नु	225	249
नुति	29	11
नुत्त	179	88
नुन्न		
नूतन	177	78
नूत्न		
नूनम्	226	251
	229	17
नूपुर	108	109

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
नाराचर्णा	71	101	निक्वण	31	25	निबन्धन	32	7
नारी	91	2	निक्वाण			निबर्हण	139	114
नाल	42	2	निखिल	175	65	निभ	164	38
नाला	42	2	निगड	128	42	निभृत	169	25
	143	22	निगद	184	12	निमग्न	152	80
नालिकेर	84	169	निगाद			निमित्त	199	76
नाविक	41	12	निगम	48	1	निमेष	22	11
नाव्य	41	10		208	139	निम्न	42	15
नाश	139	118	निगार	188	37	निम्नगा	44	30
नासत्य	11	51	निगल	129	49	निम्ब	64	63
नासा	50	13	निग्रह	185	13	निम्बतरु	57	26
नासिका	105	89	निघ	187	36	नियति	24	28
नास्तिकता	25	4	निघस	149	56	नियन्तृ	131	60
निःकृत	172	41	निघ्न	168	16	नियम	25	5
निःशलाक	126	23	निचुल	64	61		118	37
निःशेष	175	65	निचोल	109	116		120	49
निःशोध्य	174	56	निज	193	32	नियातन	186	27
निःश्रेयस	26	6	नितम्ब	103	74	नियामक	41	12
निःषमम्	229	15	नितम्बिनी	91	3	नियुत	236	24
निःसरण	51	19	नितान्त	14	67	नियुद्ध	138	108
निःस्व	173	49	नित्य	14	66	नियोज्य	160	17
निकट	176	67	निदाघ	23	19	निर्	226	254
निकर	90	40		36	34	निरन्तर	175	66
निकर्षण	51	19	निदान	24	28	निरय	39	1
निकष	163	32	निदिग्ध	178	89	निरर्गल	178	84
निकषा	228	7	निदिदिषक्ता	70	94	निरवग्रह	168	15
	230	20	निदेश	126	26	निरसन	187	31
निकषात्मज	13	60	निद्रा	37	37	निरस्त	30	20
निकाम	149	57	निद्राण	171	33		135	89
निकाय	91	43	निद्रालु				172	40
निकाय्य	49	5	निधन	139	118	निराकरिष्णु	170	30
निकार	187	36		206	123	निराकृत	172	40
निकारण	139	114	निधि	14	71	निराकृति	121	54
निकुञ्चक	154	88	निधुवन	122	57		187	31
निकुञ्ज	53	8	निध्यान	187	31	निरामय	100	57
निकुम्भ	79	145	निनद	30	23	निरिष	142	13
निकुरम्ब	90	41	निनाद			निर्ऋति	39	2
निकृत	172	46	निन्दा	29	13	निर्गुण्डी	65	69
निकृति	35	30	निप	145	32		66	71
निकृष्ट	174	54	निपठ	187	29	निर्ग्रन्थन	139	115
			निपाठ			निर्घोष	30	23
निकेतन	48	4	निपान	43	26	निर्जर	3	7
निकोचक	54	29	निपुण	166	4	निर्जितेन्द्रियग्राम	119	43

	Page	Stanza
नखर	105	83
नग	191	19
नगरी	48	1
नगौकस्	89	34
नग्न	171	39
नग्नहू	165	42
नग्निका	92	8
नट	63	57
	160	12
नटन	32	10
नटी	76	130
नड	82	163
	237	33
नडप्राय	47	9
नडसंहति, नड्या	83	168
नड्वत्, नड्वल	47	9
नत	176	71
नतनासिक	98	45
नदी	44	29
नदीमातृक	47	12
नदीसर्ज	61	45
नप्त्री	163	31
ननान्दृ	96	29
ननु	225	249
ननुच	229	15
नन्दक	7	28
नन्दन	10	45
नन्दिवृक्ष	76	128
नन्द्यावर्त	50	10
नपुंसक	97	39
नप्त्री	96	29
नभस्	15	1
	22	16
	222	233
नभसंगम	89	35
नभस्य	22	17
नभस्वत्	13	63
नमस्	230	19
नमसित, नमस्यित	181	102
नमस्कारी	79	142
नमस्या	118	34
नमुचिसूदन	10	43
नम्र	184	9
नयन	106	93
नर	91	1
नरक	39	1
नरवाहन	14	69
नर्तक	33	11
नर्तकी	32	8
नर्तन	32	10
नर्मदा	44	32
नर्मन्	86	33
नलकूबर	14	70
नलद	83	65
नलमीन	42	18
नलिन, नलिनी	45	39
नली	76	130
नल्व	48	18
नव	177	79
नवदल	45	43
नवनीत	148	52
नवमालिका	66	73
नवसूतिका	151	71
नवाम्बर	109	112
नवीन	177	78
नवोद्धृत	148	52
नव्य	177	78
नष्ट	139	113
नष्टचेष्टता	36	34
नष्टाग्नि	121	53
नस्तित, नस्योत	150	63
नहि	229	12
नाक	3	6
	189	2
नाकु	48	14
नाकुली	74	115
नाग	38	4
	127	35
	157	105
	174	59
	191	21
नागकेसर	65	65
नागजिह्विका	157	108
नागबला	74	117
नागर	105	38
	215	189
नागरङ्ग	60	38
नागलोक	37	1
नागवल्ली	75	120
नागसंभव	157	105
नागसुगन्धा	74	115
नागान्तक	7	29
नाट्य	32	10
नाडिका	145	34
नाडिंधम	159	8
नाडी	102	65
	143	22
	195	43
नाडीव्रण	100	54
नाथवत्	168	16
नाद	30	23
नादेयी	58	30
	60	38
	65	66
	74	118
नाना	225	248
	228	3
नानारूप	180	94
नान्दीकर, नान्दीवादिन्	171	38
नापित	159	10
नाभि	130	57
	208	136
	233	9
नाम	226	252
नामधेय, नामन्	29	8
नाय	184	9
नायक	167	11
नारक	39	1
नारद	11	48
नाराच	135	88
नाराची	163	32
नारायण	5	18

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
धनुर्धर	132	70	धान्याम्ल	146	39		173	47
धनुःपट	59	35	धामन्	206	124	धूर्वह	150	65
धनुष्मत्	132	70	धामार्गव	69	89	धूलि	137	100
धनुस्	134	84		74	118	धूसर	27	13
धन्य	166	3	धाय्या	116	22	धृति	199	74
धन्वन्	46	5	धारणा	126	27	धृष्ट }	169	25
	134	84	धारा	130	50	धृष्णु }		
धन्वयास	70	92	धाराधर	15	7	धेनु	151	71
धन्विन्	132	70	धारासंपात	16	12	धेनुका	128	37
धमन	82	163	धार्तराष्ट्र	88	25		190	15
धमनि	102	65	धार्मपत्तन	145	36	धेनुष्या	151	72
धमनी	76	130	धावनि	70	93	धेनुक	149	60
धम्मिल	107	97	धिक्	224	241	धैवत	31	1
धर	51	1	धिक्कृत	171	39	धोरण	131	59
धरणि }				180	94	धोरितक	129	49
धरा }	46	2	धिषण	18	25	धौतकौशेय	109	113
धरित्री }			धिषणा	25	1	धौरेय	150	65
धतूर	67	78	धिष्ण्य	210	155	धाम्य	83	167
धर्म	24	24	धी	25	1	ध्रुव	17	21
	28	3	धीन्द्रिय	26	8		54	8
	208	138	धीमत्	113	6		176	73
धर्मचिन्ता	35	28	धीमती	93	12		219	212
धर्मध्वजिन्	121	54	धीर	113	5	ध्रुवा	74	116
धर्मराज्य	4	13	धीवर	42	15		116	25
	12	58	धीशक्ति	186	25	ध्वज	137	101
	193	31	धीसचिव	123	4	ध्वजिनी	134	79
धर्मसंहिता	28	6	धुनी	44	30	ध्वनि	30	23
धव	97	35	धुर्	130	56	ध्वनित	180	95
	218	207	धुरंधर }			ध्वस्त	181	104
धवल	27	13	धुरीण }	150	65	ध्वाङ्क्ष	87	21
धवला	150	67	धुर्य }			ध्वान	30	23
धवित्र	116	23	धूत	181	107	ध्वान्त	37	3
धातु	53	8	धूपायित }	181	103	न	229	12
	198	65	धूपित }			नकुलेष्टा	74	115
धातकी }	76	125	धूमकेतु	197	58	नक्तक	109	115
धातुपुष्पिका }			धूमयोनि	16	8	नक्तम्	228	6
धातृ	5	17	धूमल	27	16	नक्तमाल	62	48
धात्री	214	177	धूम्या	188	43	नक्र	43	21
धाना	147	47	धूम्याट	87	17	नक्षत्र	18	22
धानुष्क	132	70	धूम्र	27	16	नक्षत्रमाला	108	106
धान्य	143	21	धूर्जटि	8	33	नक्षत्रेश	17	15
धान्यत्वच्	143	22	धूर्त	67	78	नख	77	131
धान्याक	145	38		165	44		105	83

	Page	Stanza
देवताड	65	69
देवदारु	63	54
देवद्र्यच्	171	34
देवन	165	45
	205	117
देववल्लभ	57	25
देवभूय	121	52
देवमातृक	47	12
देवयोनि	4	11
देवर	96	32
देवल	159	11
देवसभा	11	48
देवाजीविन्	159	11
देवी	33	13
	68	84
	77	133
देवृ	96	32
देश	47	8
देशरूप	126	25
देह	103	71
देहली	50	13
दैतेय, दैत्य	4	12
दैत्यगुरु	18	26
दैत्या	75	123
दैत्यारि	6	19
दैर्घ्य	109	114
दैव	24	28
	121	51
दैवज्ञ	124	14
दैवज्ञा	94	20
दैवत	4	9
	23	21
दोषा	70	95
	130	54
दोषज्ञ	113	5
दोषैकदृक्	172	46
दोस्	104	80
दोहद	35	27
दोहदवती	94	21
द्युति	17	18
	20	35
द्युमणि	19	31

	Page	Stanza
द्युम्न	154	90
द्यूत	165	45
द्यूतकारक, द्यूतकृत्	165	44
द्यो	3	6
	15	1
द्योत	20	35
द्रप्स	148	51
द्रव	36	33
	139	112
द्रवन्ती	69	88
द्रविण	130	103
	154	90
	196	52
	235	22
द्रव्य	154	90
	210	154
द्राक्	227	2
द्राक्षा	73	108
द्राघिष्ठ	182	113
द्राविडक	77	135
द्रु	53	5
द्रुकिलिम	63	54
द्रुघण	136	92
द्रुण	86	14
द्रुणा	233	9
द्रुत	13	64
	179	90
	180	100
	227	2
द्रुम	53	5
द्रुमामय	110	125
द्रुमोत्पल	64	60
द्रुवय	153	85
द्रुहिण	5	17
द्रोण	154	88
द्रोणकाक	87	22
द्रोणक्षीरा, द्रोणदुघा	151	72
द्रोणी	41	11
	70	95
द्रोहचिन्तन	25	4
द्रौणिक	141	10

	Page	Stanza
द्वन्द्व	90	39
	219	218
द्वयातिग	119	44
द्वादशाङ्गुल	105	84
द्वादशात्मन्	19	29
द्वापर	25	3
	212	163
द्वार्, द्वार	51	16
द्वारपाल, द्वाःस्थ, द्वाःस्थितदर्शक	123	6
द्विगुणाकृत	141	6
द्विज	89	33
	193	30
द्विजराज	17	15
द्विजा	75	120
द्विजाति	113	4
द्विजिह्व	207	133
द्वितीया	92	5
द्विप	127	35
द्विपाद्य	126	28
द्विरद	127	35
द्विरेफ	89	30
द्विष्	124	11
द्विषत्	124	10
द्विहायनी	150	68
द्वीप	41	8
द्वीपवती	44	30
द्वीपिन्	84	1
द्वेषण	124	10
द्वेष्य	172	45
द्वेष	125	19
द्वैप	130	54
द्वैमातुर	9	38
द्व्यष्ट	155	97
धन	154	90
धनंजय	12	53
धनद	14	68
धनहरी	76	129
धनाधिप	14	68
धनिन्	167	10
धनिष्ठा	18	23

	Page	Stanza
दारुहरिद्रा	72	102
दारुहस्तक	184	34
दार्वाघाट	87	17
दार्विका	75	120
दार्वी	72	102
दाव	218	207
दाविक	45	36
दाश	42	15
दाशपुर	77	132
दास	160	17
दासी	66	75
दासीसभ	236	27
दासेय } दासेर }	160	17
दिगम्बर	171	39
दिग्गज	15	5
दिग्ध	135	89
	179	90
दित	181	104
दितिसुत	4	12
दिधिषू	95	23
दिन	20	2
दिनान्त	20	3
दिव्	3	6
	15	1
दिवस	20	2
दिवस्पति	10	42
दिवा	228	6
दिवाकर	19	29
दिवाकीर्ति	159	10
	161	20
दिविषद्	3	8
दिवौकस्	3	7
दिव्योपपादुक	173	50
दिश	15	2
दिश्य	15	3
दिष्ट	20	1
	24	28
	193	35
दिष्टान्त	139	117
दिष्टया	229	11
दीक्षित	114	8
दीदिवि	147	48

	Page	Stanza
दीधिति	20	34
दीन	173	49
दीप	112	138
दीपक	190	11
दीप्ति	20	35
दीप्य	73	112
दीर्घ	176	69
दीर्घकोशिका	43	25
दीर्घदर्शिन्	113	6
दीर्घपृष्ठ	38	8
दीर्घवृन्त	63	57
दीर्घसूत्र	168	167
दीर्घिका	44	28
दुःख	39	3
	235	23
दुःषमम्	229	15
दुःस्पर्श	70	92
दुस्पर्शा	70	94
दुकूल	109	113
दुग्ध	148	51
दुग्धिका	71	100
दुर्द्रुम	80	148
दुन्दुक	63	57
दुन्दुभि	32	6
	207	135
दुरध्व	48	16
दुरालभा	70	92
दुरितं	23	23
दुरोदर	213	172
दुर्ग	125	18
दुर्गत	173	49
दुर्गति	39	1
दुर्गन्ध	26	12
दुर्गसंचर	186	25
दुर्गा	9	37
दुर्जन	173	47
दुर्दिन	16	12
दुर्नामक	100	54
दुर्नामन्	43	25
दुर्बल	98	44
दुर्मनस्	167	8
दुर्मुख	171	36
दुर्वर्ण	155	96

	Page	Stanza
दुर्विध	173	49
दुर्हृद्	124	10
दुलि	43	24
दुष्च्यवन	10	44
दुष्कृत	23	23
दुष्ट	230	20
दुष्पुत्र	76	129
दुष्प्रधर्षिणी	74	114
दुहितृ	96	28
दूत	125	16
दूती	94	17
दूत्य	125	16
दून	181	103
दूर	176	69
दूरदर्शिन्	113	6
दूर्वा	82	158
दूषिका	102	67
दूष्य	110	120
दूष्या	128	43
दृढ	14	67
	177	76
	195	45
दृढसंधि	177	76
दृति	235	19
दृब्ध	179	86
दृश	106	93
	223	218
दृषद्	52	4
दृष्ट	121	31
दृष्टरजस्	92	8
दृष्टान्त	197	6
दृष्टि	106	9
	194	3
देव	3	
	33	1
देवकीनन्दन	6	2
देवकुसुम	110	12
देवखातक	43	2
देवखातबिल	52	
देवच्छन्द	108	10
देवजग्धक	83	1
देवतरु	11	
देवता	4	

	Page	Stanza
त्वक्क्षीरी	157	109
त्वक्पत्र	77	135
त्वक्सार	82	161
त्व	178	82
त्वच्	54	12
	101	62
त्वच	77	135
त्वचिसार	82	161
त्वरा	186	26
त्वरित	13	64
	133	74
त्वरितोदित	30	20
त्वट	180	99
त्वष्टृ	159	9
	193	35
त्विष्	20	35
	221	226
त्विषांपति	19	31
त्सरु	136	91
दंश	88	28
दंशन	132	65
दंशित	132	66
दंशी	88	28
दंष्ट्रिन्	84	2
दक्ष	161	19
दक्षिण	167	8
दाक्षिणस्य	131	61
दक्षिणा	15	3
दक्षिणाग्नि	116	19
दक्षिणारुस्	161	24
दक्षिणार्ह, दक्षिणीय	166	5
दक्षिणेर्मन्	161	24
दाक्षिण्य	166	5
दग्ध	180	99
दग्धिका	148	49
दण्ड	19	32
	125	21
	194	42
दण्डधर	13	59
दण्डनीति	28	5
दण्डविष्कम्भ	151	174
दण्डाहत	148	53
दधित्थ, दधिफल	56	21
दधिसक्तु	147	48
दनुज	4	12
दन्त	106	91
दन्तधावन	62	50
दन्तभाग	128	41
दन्तशठ	56	21
	57	24
दन्तशठा	78	141
दन्तावल, दन्तिन्	127	35
दन्तिका	79	145
दन्दशूक	38	8
दभ्र	175	61
दम	125	21
	183	3
दमथ	183	3
दमित	180	98
दमुनस्	12	56
दम्पती	97	36
दम्भ	35	30
दम्भोलि	11	47
दम्य	150	62
दया	34	18
दयालु	168	15
दर	34	21
	215	185
दरत्	233	9
दरिद्र	173	49
दरी	52	6
दर्दुर	43	24
दर्द्रुघ्न	79	147
दद्रुण, दद्रुरोगिन्	101	59
दर्पक	7	25
दर्पण	112	140
दर्भ	83	166
दर्वि	145	34
दर्वीकर	38	8
दर्श	21	8
	120	48
दर्शन	187	31
दल	55	14
दव	218	207
दविष्ठ, दवीयस्	176	69
दशन	106	91
दशनवासस्	106	90
दशबल	5	14
दशमिन्	96	43
दशमीस्थ	201	87
दशा	109	114
	220	217
दस्यु	124	11
	162	25
दस्र	11	51
दहन	12	55
दाक्षायणी	18	22
दाक्षाय्य	87	22
दाडिम	65	65
	239	42
दाडिमपुष्पक	62	49
दाण्डपाता	232	6
दात	181	104
दात्यूह	87	22
दात्र	142	12
दान	117	29
	125	21
	128	38
दानव	4	12
दानवारि	4	9
दानशौण्ड	167	6
दान्त	119	42
	180	98
दान्ति	183	3
दापित	172	40
दाम, दामिनी	151	73
दामोदर	5	18
दायाद	201	89
दार	92	6
दारद	39	11
दारित	181	101
दारु	55	13
दारुण	34	20

	Page	Stanza
तुम्बी	81	156
तुरग / तुरंग / तुरंगम	129	44
तुरङ्गवदन	14	71
तुरायण	183	2
तुरासाह्	10	44
तुरीय	110	123
तुरुष्क	111	128
तुला	154	87
तुलाकोटि	108	109
तुल्य	164	37
तुल्यपान	149	55
तुवर	26	9
तुवरिका	77	131
तुष	64	59
	143	22
तुषार	17	19
	17	20
तुषित	4	10
तुहिन	17	19
तूण	135	89
तूणी	135	90
तूणीर	135	89
तूर	60	42
तूर्ण	13	65
तूल	60	42
	157	106
तूलिका	193	33
तूवर	212	166
तूष्णींशील / तूष्णीक	171	39
तूष्णीकाम् / तूष्णीम्	228	10
तृण	83	168
तृणद्रुम	84	170
तृणधान्य	144	25
तृणध्वज	81	161
तृणराज	84	169
तृणशून्य	65	70
तृण्या	83	168
तृतीयाप्रकृति	97	39
तृप्त	181	103

	Page	Stanza
तृप्ति	149	56
तृष्	35	27
	149	55
तृष्णज्	169	22
तृष्णा	196	51
तेजन	82	161
तेजनक	82	162
तेजनी	68	84
तेजस्	101	62
	223	235
तेजित	179	91
तेम	187	29
तेमन	147	44
तेजसावर्तिनी	163	33
तैत्तिर	91	44
तैलपर्णिक	111	131
तैलपायिका	88	27
	141	7
तैलीन	22	15
तैष	96	28
तोक	142	16
तोक्म	237	30
तोटक	128	42
तोत्र	142	12
	142	12
तोदन	136	94
तोमर	40	4
तोय	73	111
तोयपिप्पली	51	16
तोरण	32	10
तौर्यत्रिक	181	107
त्यक्त	117	29
त्याग	34	23
त्रपा	157	105
त्रपु	28	3
त्रयी	177	74
त्रस	186	24
त्रसर	170	26
त्रस्नु	181	106
त्राण	184	8
	181	106
त्रात	80	151
त्रायन्ती / त्रायमाणा		

	Page	Stanza
त्रास	34	21
त्रिक	104	76
त्रिककुद्	52	2
त्रिकटु	158	111
त्रिका	43	27
त्रिकूट	52	2
त्रिखट्व / त्रिखट्वी	239	41
त्रिगुणाकृत	141	9
त्रितक्ष / त्रितक्षी	239	41
त्रिदश	3	7
त्रिदशालय / त्रिदिव	3	6
त्रिदिवेश	3	7
त्रिपथगा	44	31
त्रिपुटा	73	108
	76	126
त्रिपुरान्तक	8	83
त्रिफला	158	111
त्रिभण्डी	73	109
त्रियामा	21	[illegible]
त्रिलोचन	8	32
त्रिवर्ग	122	58
	125	20
त्रिविक्रम	6	20
त्रिविष्टप	3	6
त्रिवृत् / त्रिवृता	73	108
त्रिसंध्य	20	3
त्रिसीत्य	141	9
त्रिस्रोतस्	44	31
त्रिहल्य	141	9
त्रिहायणी	150	68
त्रुटि	76	126
	175	62
	194	37
त्रेता	116	20
	198	69
त्रोटि	90	37
त्र्यम्बक	8	33
त्र्यम्बकसख	14	68
त्र्यूषण	158	111

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
तरु	53	5	तार्क्ष्यशैल	156	102		110	123
तरुण	98	42	ताल	32	9		146	43
तरुणी	92	8		84	169	तिलकालक	99	49
तर्क	25	3		105	85	तिलपर्णी	111	132
तर्कविद्या	28	5		156	103	तिलपिञ्ज }	143	19
तर्कारी	65	66	तालपत्र	107	103	तिलपेञ्ज		
तर्जनी	104	81	तालपर्णी	75	123	तिलित्स	38	5
तर्णक	149	61	तालमूलिका	75	119	तिल्य	141	7
तर्पण	115	14	तालवृन्तक	112	140	तिल्व	59	33
	149	56	तालाङ्क	6	24	तिष्य	18	23
	183	4	ताली	76	127		209	147
तर्मन्	116	19		84	170	तिष्यफला	63	58
तर्ष	35	28	तालु	106	91	तीक्ष्ण	20	36
	149	55	तावत्	225	247		155	98
तल	135	85	तिक्त	26	9		196	53
	218	203	तिक्तक	81	155	तीक्ष्णगन्धक	58	31
तलिन	206	127	तिक्तशाक	57	25	तीर	40	7
तल्प	207	131	तिग्म	20	36	तीर्थ	201	86
तल्लज	24	27	तितउ	144	26	तीव्र	14	67
तष्ट	180	99	तितिक्षा	35	24	तीव्रवेदना	39	3
तस्कर	162	25	तितिक्षु	170	31	तु	224	243
ताण्डव	32	10	तित्तिरि	90	36		228	5
	238	34	तिथि	20	1	तुङ्ग	57	25
तात	96	28	तिनिश	57	26		176	70
तान्त्रिक	124	15	तिन्तिडी	61	44	तुङ्गी	78	140
तापस	119	42	तिन्तिडीक	145	35	तुच्छ	174	56
तापसतरु	61	46	तिन्दुक	50	39	तुणि	76	128
तापिच्छ	65	68	तिन्दुकी	232	8	तुण्ड	105	89
तामरस	45	40	तिमि	42	19	तुण्डिकेरी	74	116
तामलकी	76	127	तिमिंगिल	42	20		78	139
तामसी	21	5	तिमित	181	106	तुण्डिभ }	101	61
ताम्बूलवल्ली }	75	120	तिमिर	37	3	तुण्डिल		
ताम्बूली			तिरस्	227	257	तुत्थरसाञ्जन	156	101
ताम्रक	155	97	तिरस्करिणी	110	120	तुत्था	70	95
ताम्रकुट्टक	159	8	तिरस्क्रिया	34	22		76	126
ताम्रचूड	87	18	तिरीट	59	33	तुत्थाञ्जन	156	101
तार	31	2		237	30	तुन्तुभ	142	17
तारकजित्	9	40	तिरोधान	16	13	तुन्दिन् }	98	44
तारका }	18	22	तिरोहित	139	113	तुन्दिभ		
तारा			तिर्यच्	171	34	तुन्दिल		
तारुण्य	97	40	तिलक	60	40	तुन्न	76	128
तार्क्ष्य	7	29		99	49	तुन्नवान	159	6
	209	145		102	65	तुमुल	138	108

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
ज्ञान	26	6	डिम्भा	98	41	तन्त्रिका	68	83
ज्ञानिन्	124	14	डुण्डुभ	38	5	तन्द्र	145	34
ज्या	46	2	ढक्का	32	6	तन्त्री	37	37
	135	86	तक्र	148	53		214	177
ज्याघातवारण	135	85	तक्षक	189	4	तप	23	19
ज्यानि	184	9	तक्षन्	159	9	तपःक्लेशसह	119	42
ज्यावह्	98	43	तट	40	7	तपन	19	32
	223	236	तटिनी	44	30		39	1
ज्येष्ठ	194	41	तडाग	44	28	तपनीय	155	94
ज्यैष्ठ	22	16	तडित्	16	10	तपस्	22	15
ज्योतिरिङ्गण	88	29	तडित्वत्	15	7		222	233
ज्योतिष्मती	80	150	तण्डक	237	33	तपस्य	22	15
ज्योतिस्	222	231	तण्डुल	72	107	तपस्विन्	119	42
ज्योत्स्ना	17	17	तण्डुलीय	78	136	तपस्विनी	77	134
ज्यौतिषिक	124	14	तत	31	4	तप्त	181	103
ज्यौत्स्नी	21	5		179	86	तम	18	27
	74	118	ततस्	228	3	तमस्	24	29
ज्वर	100	56	तत्काल	127	30		37	3
ज्वलन	12	53	तत्त्व	32	9		222	232
ज्वाल	12	57	तत्पर	169	9	तमस्विनी	21	4
झगिति	227	2	तथा	228	10	तमाल	65	68
झग्यमला	76	127	तथागत	4	13	तमालपत्र	110	123
झर	52	5	तथ्य	30	22	तमिस्र	37	3
झर्झर	32	8	तद्	228	3	तमिस्रा	21	5
झर्झरी	233	10	तदा	230	23	तमी	21	4
झष	42	17	तदात्व	127	30	तमोनुद्	201	89
झषा	74	117	तदानीम्	230	23	तमोपह	223	239
झाटल	60	40	तनय	95	27	तरक्षु	84	1
झाटलि	238	38	तनु	103	71	तरङ्ग	40	5
झाबुक	60	40		175	61	तरङ्गिणी	44	30
झिण्टी	66	75		175	66	तरणि	19	31
झिल्लिका	88	29		204	113		41	10
टङ्क	163	34	तनुत्र	132	65		66	74
	237	33	तनू	103	71	तरपण्य	41	11
टिट्टिभ	90	36	तनूकृत	180	99	तरल	107	102
टीका	232	7	तनूनपात्	12	53		177	75
डमर	185	14	तनूरुह	90	37	तरला	148	50
डमरु	32	8		107	99	तरस्	13	64
डयन	130	58	तन्तु	162	28		137	103
डहु	64	61	तन्त्र	215	186	तरस	102	63
डिण्डिम	32	8	तन्त्रक	109	112	तरस्विन्	134	74
डिम्ब	185	14	तन्त्रवाय	86	13		206	128
डिम्भ	90	39		159	6	तरि(री)	41	10

	PAGE	STANZA
जयन्ती	65	66
जया		
जय्य	133	75
जरण	145	36
जरत्	98	42
जरद्गव	149	61
जरा	98	41
जरायु	97	38
जरायुज	173	50
जल	40	3
जलजन्तु	42	20
जलचर	15	7
जलनिधि	40	2
जलनिर्गम	40	7
जलनीली	45	38
जलप्राय	47	10
जलमुच्	16	8
जलव्याल	38	5
जलशुक्ति	43	23
जलाधार	43	25
जलाशय	43	25
	83	165
जलोच्छ्वास	41	10
जलौकस्	43	22
जलौका		
जल्पाक	171	36
जल्पित	182	108
जव	13	64
	133	74
जवन	129	46
	133	74
	188	39
जवनिका	110	120
जह्नुतनया	44	31
जागरा	185	19
जागरितृ	170	32
जागरूक		
जागर्या	185	19
जाङ्गुलिक	39	11
जाङ्घिक	133	74
जात	25	31
जातरूप	155	95
जातवेदस्	12	53

	PAGE	STANZA
जातापत्या	94	16
जाति	25	31
	66	13
	198	68
जातीकोश	111	132
जातीफल		
जातु	228	4
जातोक्ष	149	61
जानु	103	72
जामातृ	96	32
जामि	208	142
जाम्बव	56	19
जाम्बूनद	155	95
जायक	110	125
जाया	92	6
जायाजीव	160	12
जायापती	97	38
जायु	99	50
जार	97	35
जाल	42	16
	217	201
जालक	55	16
जालिक	160	14
जाल्मी	74	118
जाल्म	160	16
	168	17
जावाल	159	11
जिघत्नु	169	20
जिङ्गी	69	91
जित्वर	133	78
जिन	4	13
जिष्णु	10	42
	133	78
जिह्म	176	71
	208	141
जिह्मग	38	8
जिह्वा	106	91
जीन	98	42
जीमूत	16	8
	65	69
जीरक	145	36
जीर्ण	98	42
जीर्णवस्त्र	109	115

	PAGE	STANZA
जीव	18	25
	140	121
जीवक	61	44
	79	143
जीवंजीव	90	36
जीवन	40	3
	140	1
जीवनी	79	142
जीवनीया		
जीवनौषध	140	121
जीवन्तिका	68	82
	68	83
जीवन्ती	79	142
जीवा		
जीवातु	140	121
जीवान्तक	160	14
जीविका	140	1
जीवितकाल	140	121
जुगुप्सा	29	13
जुहूण	78	138
जुहू	116	25
जूति	188	39
जूर्ति		
जृम्भ	37	36
जृम्भण		
जेतृ	133	75
	133	78
जेमन	149	56
जेय	133	75
जैत्र		
जैवातृक	17	15
	167	6
	190	11
जोङ्गक	111	126
जोषम्	226	252
ज्ञ	113	5
ज्ञपित	180	98
ज्ञप्त		
ज्ञप्ति	25	1
ज्ञातसिद्धान्त	124	15
ज्ञाति	96	84
ज्ञातृ	170	80
ज्ञातेय	97	85

	Page	Stanza
चैत्य	49	7
चैत्र / चैत्रिक	22	15
चैत्ररथ	14	70
चोच	77	135
	237	30
चोरपुष्पी	76	127
चोल	109	118
चौर	162	25
चौरिका / चौर्य	162	26
च्युत	181	104
छगलक	152	76
छगलाण्डी	78	137
छत्र	127	33
छत्रा	72	105
	83	167
	145	37
छत्राकी	74	115
छद	55	14
	90	37
छदन	55	14
छदिस्	50	14
छद्मन्	35	30
छन्द	186	20
	201	88
छन्दस्	116	22
	222	233
छन्न	126	23
	180	98
छल	138	110
छवि	17	18
	20	35
छाग / छागी	152	76
छात	98	44
	181	104
छात्र	114	11
छादित	180	98
छान्दस	113	6
छाया	211	158
छित	181	104
छिद्र	37	2

	Page	Stanza
छिद्रित	180	100
छिन्न	181	104
छिन्नरुहा	68	83
छुरिका	136	93
छेक	91	44
छेदन	184	7
जगत्	47	6
	200	80
जगती	47	6
	198	71
जगत्प्राण	13	62
जगर	132	65
जगल	165	42
जग्ध	182	111
जग्धि	149	55
जघन	103	74
जघनेफला	64	62
जघन्य	178	81
	211	160
जघन्यज	98	43
	158	1
जङ्गम	177	74
जङ्गमेतर	177	74
जङ्घा	103	72
जङ्घाकरिक / जङ्घाल	133	74
जटा	54	11
	77	134
	107	97
	194	38
जटिन्	58	32
जटिला	77	134
जठर	104	77
	216	190
जड	17	20
	171	38
जडुल	99	49
जतु	110	125
जतुक	146	40
जतुका	88	27
जतुकृत् / जतूका	81	154
जत्रु	104	78

	Page	Stanza
जनक	96	28
जनंगम	161	20
जनता	188	43
जनन	24	30
	113	1
जननी	81	154
	96	29
जनपद	47	8
जनयित्री	96	29
जनश्रुति	29	7
जनार्दन	6	19
जनाश्रय	50	9
जनि	24	30
जनी	81	154
	92	9
जनुस् / जन्तु	24	30
जन्तुफल	56	22
जन्मन्	24	30
जन्मिन्	24	30
जन्य	122	58
	138	105
	211	160
जन्यु	24	30
जप	120	47
	184	12
जपन	184	12
जपा	66	76
जम्पती	97	38
जम्बाल	41	9
जम्बीर	57	24
	67	80
जम्बु	56	19
जम्बुक	85	5
	189	3
जम्बू	56	19
जम्भ	57	24
जम्भभेदिन्	10	43
जम्भल / जम्भीर	57	24
जय	65	67
	138	111
जयन्त	10	46

	Page	Stanza
चरणायुध	87	18
चरम	178	81
चरमक्ष्माभृत्	52	2
चराचर चरिष्णु	177	74
चरु	116	22
चर्चरी	233	10
चर्चा	25	2
	110	122
चर्मकसा	79	144
चर्मकार	159	7
चर्मन्	120	46
	136	91
चर्मप्रभेदिका	163	35
चर्मप्रसेविका	163	33
चर्मिन्	61	46
	133	72
चर्या	118	35
चर्वित	182	111
चर्षणी	93	10
चल	177	75
चलदल	56	20
चलन चलाचल	177	75
चलित	137	97
	179	87
चविका चव्य	71	98
चषक	165	43
चषाल	115	18
चाक्रिक	137	98
चाङ्गेरी	78	141
चाटकेर	87	19
चाण्डाल	161	20
चाण्डालिका	163	32
चातक	87	17
चातुर्वर्ण्य	113	2
चान्द्रभागा	44	34
चाप	134	84
चामर	127	32
चामीकर	155	95
चाम्पेय	64	64
	65	65

	Page	Stanza
चार	124	13
चार्टी	79	146
चारण	160	12
चारु	173	52
चार्चिक्य	110	122
चालनी	144	26
चाष	87	16
चिकित्सक	100	57
चिकित्सा	99	50
चिकुर	106	95
	172	46
चिक्कण	147	46
चिक्कस	238	35
चिञ्चा	61	44
चित्	25	1
	228	3
चिता चिति	139	119
चित्त	25	31
चित्तविभ्रम	35	26
चित्तसमुन्नति	34	22
चित्ताभोग	25	2
चित्या	139	119
चित्र	27	17
	34	19
	214	179
चित्रक	62	51
	67	80
	110	123
चित्रकर	159	7
चित्रकृत्	57	27
चित्रतण्डुला	72	106
चित्रपर्णी	70	93
चित्रभानु	12	56
	19	31
	203	105
चित्रशिखण्डिज	18	25
चित्रशिखण्डिन्	19	28
चित्रा	69	88
	81	157
चिन्ता	35	29
चिपिटक	147	47
चिबुक	106	95

	Page	Stanza
चिरक्रिय	168	17
चिरण्टी	92	9
चिरंतन	177	77
चिरसूता	151	71
चिररात्राय चिरस्य चिराय	227	1
चिरिबिल्व	62	48
चिलिचिम	42	18
चिह्न	87	22
	101	60
चिन्ह	17	17
चीन	85	9
चीर	237	31
चीरी चीरिका	88	29
चीवर	237	31
चुक्र	78	141
	145	35
	235	20
चुक्रिका	78	141
चुल्ल	101	90
चुल्लि	144	29
चुचुक	104	77
चुडा	89	32
चूडा	89	32
	107	97
चूडामणि	107	102
चूडाल	82	160
चूत	59	33
चूर्ण	112	134
	137	100
चूर्णकुन्तल	106	96
चूर्णि	233	9
चुलिका	128	39
चेटक	160	17
चेत्	229	13
चेतकी	64	60
चेतन	24	30
चेतना	25	1
चेतस्	25	31
चेल	109	115
	218	203

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
घण्टापथ	48	18	घ्रात	179	90	चतुर	161	19
घण्टारवा	72	107	च	224	242	चतुरङ्गुल	57	23
घन	16	8		228	5	चतुरानन	5	16
	31	4	चकोरक	90	36	चतुर्भद्र	122	58
	32	9	चक्र	88	23	चतुर्भुज	6	20
	136	92		130	57	चतुर्वर्ग	122	58
	175	66		134	79	चतुष्पथ	48	17
	204	111		214	183	चतुर्हायणी	150	68
घनरस	40	5	चक्रकारक	76	129	चत्वर	50	13
घनसार	111	130	चक्रपाणि	6	20		115	18
घनाघन	204	110	चक्रमर्दक	79	147	चन	228	3
घर्म	36	34	चक्रयान	130	52	चन्दन	111	131
घस्मर	169	2:)	चक्रला	82	160	चन्दना	73	112
घस्र	20	2	चक्रवर्तिन्	122	2	चन्द्र	16	14
घाटा	105	88	चक्रवर्तिनी	81	154		79	147
घाण्टिक	137	98	चक्रवाक	88	23		214	183
घात	139	117	चक्रवाल	15	6	चन्द्रक	89	32
घातुक	170	28		52	2	चन्द्रमस्	16	14
	173	47	चक्राङ्ग	88	24	चन्द्रबाला	75	125
घास	83	168	चक्राङ्गी	68	86	चन्द्रशेखर	7	30
घुटिका	103	72	चक्रिन्	38	7	चन्द्रसंज्ञ	111	130
घुण	234	18	चक्रीवत्	152	77	चन्द्रहास	135	90
घूर्णित	170	32	चक्षुःश्रवस्	38	7	चन्द्रिका	17	17
घृणा	34	18	चक्षुस्	106	93	चपल	13	65
	187	32	चक्षुष्या	156	102		156	99
	196	51	चञ्च	62	52		172	46
घृणि	20	34	चञ्चल	177	75	चपला	16	10
घृत	148	52	चञ्चला	16	10		71	97
	199	76	चञ्चु	90	37	चपेट	105	84
घृष्टि	80	151	चटक }	87	19	चमर	86	10
	84	2	चटका }			चमरिक	56	22
घोटक	129	44	चटकाशिरस्	158	110	चमस	238	35
घोणा	105	89	चणक	143	18	चमसी	233	10
घोणिन्	84	2	चण्ड	170	32	चमू	134	79
घोण्टा	59	37	चण्डा	69	88		134	82
	84	169		76	129	चमूरु	85	9
घोर	34	20	चण्डात	67	77	चम्पक	64	64
घोष	51	20	चण्डातक	110	119	चय	49	3
घोषक	74	118	चण्डाल	158	4		90	41
घोषणा	29	12		161	20	चर	124	13
घ्राण	105	89	चण्डालवल्लकी	163	32		177	74
	179	90	चण्डिका	9	37	चरक	237	33
घ्राणतर्पण	26	11	चतुःशाल	49	6	चरण	103	71

	Page	Stanza
गेन्दुक	112	138
गेह	49	4
गैरिक	53	8
	190	12
गैरेय	156	104
गो	149	60
	150	66
	192	25
गोकण्टक	71	99
गोकर्ण	86	10
	105	83
गोकर्णी	68	84
गोकुल	149	58
गोक्षुरक	71	99
गोचर	26	8
गोजिह्वा	75	120
गोतुम्बा	81	157
गोत्र	51	1
	113	1
	214	181
गोत्रभिद्	10	42
गोत्रा	46	3
	149	60
गोदारण	142	14
गोदुह्	149	57
गोधन	149	58
गोधा	135	85
गोधापदी	75	119
गोधि	106	92
गोधिका	43	22
गोधिकात्मज	85	6
गोधूम	143	18
गोनर्द	77	132
गोनस	38	4
गोप	123	7
	149	57
	207	130
गोपति	150	62
गोपरस	156	104
गोपानसी	51	15
गोपायित	181	106
गोपाल	149	57
गोपी	73	112

	Page	Stanza
गोपुर	51	16
	77	132
	214	183
गोप्याक	160	17
गोमत्	149	58
गोमय	148	50
गोमायु	85	5
गोमिन्	149	58
गोरस	148	53
गोर्द	102	65
गोल	235	20
गोलक	97	36
गोला	157	108
गोलिह	60	40
गोलोमी	72	103
	82	159
	158	111
गोवन्दनी	63	56
गोविन्द	6	19
	201	91
गोविष्	148	50
गोशालि*	238	40
गोशीर्ष	111	131
गोष्ठ	48	13
गोष्ठी	115	15
गोष्पद	202	94
गोसंख्य	149	57
गोस्तन	108	105
गोस्तनी	73	108
गोस्थानक	48	13
गौड	234	18
गौतम	5	15
गौधार, गौधेय, गौधेर	85	6
गौर	27	13
	27	14
	216	190
गौरी	9	36
	92	8
गौष्ठीन	48	13
ग्रन्थिपर्ण	77	133
ग्रथित	179	86

	Page	Stanza
ग्रन्थि	82	162
ग्रन्थिक	158	110
ग्रन्थिल	60	38
	67	77
ग्रस्त	30	20
	182	111
ग्रह	21	9
	184	8
	223	237
ग्रहणी	100	55
ग्रहपति	19	31
ग्रहीतृ	170	27
ग्राम	51	19
	208	140
ग्रामणी	195	49
ग्रामतक्ष	159	9
ग्रामता	188	43
ग्रामाधीन	859	9
ग्रामान्त	51	20
ग्रामीणा	70	95
ग्राम्य	30	19
ग्राम्यधर्म	122	57
ग्रावन्	51	1
	52	4
	204	106
ग्रास	148	54
ग्राह	43	21
	184	8
ग्राहिन्	56	21
ग्रीवा	105	88
ग्रीष्म	22	18
ग्रैवेयक	108	104
ग्लस्त	182	111
ग्लह	165	45
ग्लान, ग्लास्नु	101	58
ग्लौ	17	15
घट	145	32
घटना, घटा	138	108
घटीयन्त्र	162	28
घट्ट	234	18
घण्टा	60	40

	Page	Stanza
गर्भाशय	97	38
गर्भिणी	95	22
गर्भोपघातिनी	151	69
गर्मुत्	83	166
गर्व	34	22
गर्हण	29	13
गर्ह्य	174	54
गर्ह्यवादिन्	171	37
गल	105	88
गलकम्बल	150	63
गलन्तिका	144	31
गलित	181	104
गलोद्देश	129	49
गव्या	188	43
गवय	86	11
गवल	156	100
गवाक्ष	50	9
गवाक्षी	81	157
गवीश्वर	149	58
गवेधु	144	25
गवेधुका		
गवेषणा	117	32
गवेषित	181	105
गव्य	148	50
गव्या	149	60
गव्यूति	48	18
गहन	53	1
	178	85
गह्वर	52	6
	215	184
गाङ्गेय	155	94
	210	155
गाङ्गेरुकी	74	117
गाढ	14	67
गाणिक्य	95	22
गाण्डीव	135	85
गात्र	103	70
	128	41
गात्रानुलेपनी	111	133
गान	31	26
गान्धार	31	1
गायत्री	62	50
	116	22

	Page	Stanza
गारुत्मत	155	92
गार्भिण	95	22
गार्हपत्य	116	19
गालव	59	33
गिर	27	1
गिरि	51	1
	184	11
गिरिकर्णी	72	104
गिरिका	86	12
गिरिज	156	104
गिरिजामल	156	100
गिरिमल्लिका	65	67
गिरिश	8	31
गिरीश		
गिलित	182	111
गीत	31	26
गीर्ण	182	110
गीर्णि	183	11
गीर्व-ष्य-न्ति	18	25
गीर्वाण	4	9
गुग्गुलु	59	34
गुच्छ	143	21
	108	105
गुच्छक	55	16
गुच्छार्ध	108	105
गुञ्जा	71	98
गुड	194	42
गुडपुष्प	57	27
गुडफल	57	28
गुडा	72	106
गुडूची	68	83
गुण	24	29
	125	19
	135	86
	144	28
	162	27
	195	47
गुणवृक्षक	41	12
गुणित	179	89
गुण्ठित	179	89
गुद	103	73
गुन्द्र	82	162

	Page	Stanza
गुन्द्रा	63	56
	82	160
गुप्त	179	89
	181	106
गुप्ति	199	74
गुरण	184	11
गुरु	18	25
	114	7
गुर्विणी	95	22
गुल्फ	103	72
गुल्म	54	9
	102	66
	134	82
	208	142
गुल्मिनी	54	9
गुवाक	84	169
गुह	9	39
गुहा	52	6
	70	93
गुह्य	210	154
गुह्यक	4	11
गुह्यकेश्वर	14	68
गूढ	179	89
गूढपाद्	38	7
गूढपुरुष	124	13
गूथ	102	68
गून	180	97
गृञ्जन	80	149
गृष्न	169	22
गृध्र	79	22
गृध्रसी	233	10
गृह	49	4
	49	5
गृहगोधिका	86	13
गृहपति	124	15
गृहयालु	170	27
गृहस्थूण	237	30
गृहागत	118	34
गृहाराम	53	1
गृहावग्रहणी	50	13
गृहिन्	113	3
गृह्यक	91	44
	168	61

	Page	Stanza
खर	20	36
	152	77
खरणस्, खरणस	99	46
खरपुष्पा	78	140
खरमञ्जरी	69	89
खराश्वा	73	112
खर्जू	100	53
खर्जूर	84	170
	155	96
खर्जूरी	84	170
खर्व	99	46
खल	173	47
खलपू	168	17
खलिनी	188	42
खलीन	130	50
खलु	227	256
खल्या	188	42
खात	43	27
खादित	182	111
खारी	154	88
खारीक, खारीवाप	141	10
खिल	46	5
खुर	77	131
	130	50
खुरणस्, खुरणस	99	47
खेट	174	54
खेय	44	29
खेला	36	33
खोड	99	49
ख्यात	167	9
ख्यातगर्हण	180	93
ख्याति	184	9
गगन	15	1
गङ्गा	44	31
गङ्गाधर	8	34
गज	127	35
गजता	128	37
गजबन्धनी	129	44
गजभक्ष्या	75	124
गजानन	9	38

	Page	Stanza
गञ्जा	50	8
गडक	42	17
गडु	234	18
गडुल	99	48
गण	90	41
	134	82
	195	46
गणक	124	14
गणदेवता	4	10
गणनीय	175	65
गणरात्र	21	6
गणरूप	67	81
गणहासक	76	129
गणाधिप	9	38
गणिका	66	72
	94	19
गणिकारिका	65	66
गणित, गणेय	175	65
गण्ड	106	90
	128	38
गण्डक	85	4
गण्डकाली	79	142
गण्डशैल	52	6
गण्डाली	82	159
गण्डीर	81	157
गण्डूपद	43	22
गण्डूपदी	43	24
गण्डूषा	233	10
गतनासिक	99	46
गद	99	51
गद्य	237	31
गन्त्री	130	53
गन्ध	26	7
गन्धकुटी	75	123
गन्धन	205	115
गन्धनाकुली	74	115
गन्धफली	63	56
	64	64
गन्धमादन	52	3
गन्धमूली	81	154
गन्धरस	156	104

	Page	Stanza
गन्धर्व	4	11
	11	52
	86	11
	129	45
	207	132
गन्धर्वहस्तक	62	51
गन्धवह, गन्धवाह	13	62
गन्धवहा	105	89
गन्धसार	111	131
गन्धाश्मन्, गन्धिक	156	102
गन्धिनी	75	124
गन्धोत्तमा	164	40
गन्धोली	88	28
गभस्ति	20	34
गभीर	42	15
गम, गमन	136	96
गम्भारी	59	36
गम्भीर	42	15
गम्य	180	93
गरल	38	9
गरागरी	65	69
गरिष्ठ	182	113
गरुड	7	29
गरुडध्वज	6	19
गरुडाग्रज	19	33
गरुत्	90	37
गरुत्मत्	7	29
	89	35
	197	58
गर्गरी	151	74
गर्जित	16	9
	128	37
गर्त	37	2
गर्दभ	152	77
गर्दभाण्ड	61	43
गर्धन	169	22
गर्भ	97	39
	207	135
गर्भक	112	135
गर्भागार	50	8

	Page	Stanza
क्षण	22	11
	37	39
	195	47
क्षणदा	21	4
क्षणन	139	115
क्षणप्रभा	16	9
क्षतज	102	64
क्षतव्रत	121	54
क्षत्तृ	131	60
	159	3
	197	63
क्षत्रिय	122	1
क्षत्रिया	93	14
क्षत्रियी	93	15
क्षत्रियाणी	93	14
क्षपा	21	4
क्षपाकर	17	15
क्षम, क्षमा	208	142
क्षमित्र, क्षमिन्, क्षन्तृ	170	61
क्षय	23	22
	99	51
	184	7
	209	145
क्षव	100	52
	143	19
क्षवथु	100	52
क्षान्त	180	97
क्षान्ति	35	24
क्षार	156	99
क्षारक	55	16
क्षारमृत्तिका	46	4
क्षारित	172	43
क्षिति	46	2
	198	70
क्षिप्त	179	88
क्षिप्नु	170	30
क्षिप्र	13	64
क्षिया	184	7

	Page	Stanza
क्षीर	40	4
	148	51
	214	183
क्षीरविकृति	147	44
क्षीरविदारी	73	111
क्षीरशुक्ला	73	110
क्षीरावी	71	100
क्षीरिका	61	46
क्षीरोद	40	2
क्षीव	169	23
क्षुत्, क्षुत	100	52
क्षुताभिजनन	143	19
क्षुद्र	173	48
	214	178
क्षुद्रघण्टिका	108	110
क्षुद्रशङ्ख	43	23
क्षुद्रा	70	94
	214	178
क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात	42	19
क्षुध्	148	54
क्षुधित	169	20
क्षुप	54	8
क्षुमा	143	20
क्षुर	72	105
	235	20
क्षुरक	60	40
क्षुरप्र	235	20
क्षुरिन्	159	10
क्षुल्लक	160	16
	175	61
	190	10
क्षेत्र	142	11
	214	181
क्षेत्रज्ञ	24	29
	193	33
क्षेत्राजीव	141	6
क्षेपण	184	11
क्षेपणी	41	13
क्षेपिष्ट	182	112
क्षेम	24	26
	76	129
	238	34

	Page	Stanza
क्षेत्र	142	11
क्षोणी	46	2
क्षोद	137	100
क्षोदिष्ठ	182	112
क्षोम	50	12
क्षौद्र	157	107
क्षौम	109	113
क्ष्णुत	179	91
क्ष्मा	46	3
क्ष्माभृत्	51	1
	122	1
क्ष्वेड	38	9
क्ष्वेडा	138	108
	195	43
क्ष्वेडित	238	34
ख	15	1
	191	18
	235	22
खक्खट	177	76
खग	89	33
	135	87
	191	19
खगेश्वर	7	29
खजाका	145	34
खज	99	49
खञ्जन, खञ्जरीट	87	16
खट	234	17
खट्वा	112	138
खड्ग	85	4
	135	90
खड्गिन्	85	4
खण्ड	17	16
खण्डपरशु	8	31
खण्डविकार	146	43
खण्डिक	142	16
खदिर	62	50
खदिरा	79	142
खद्योत	88	29
खनि	52	7
खनित्र	142	12
खपुर	84	169

	Page	Stanza
कोकिल	87	20
कोकिलाक्ष	72	105
कोटर	55	13
कोटवी	94	17
कोटि	135	85
	136	94
	194	38
कोटिवर्षा	77	134
कोटिश	142	12
कोट्टार	234	18
कोठ	100	54
कोण	32	6
	136	94
कोदण्ड	134	84
कोद्रव	142	16
कोप	35	26
कोपना	92	4
कोपिन्	170	32
कोमल	177	78
कोयष्टि	90	36
कोरक	55	16
कोरङ्गी	76	125
कोरदूषक	142	16
कोल	41	11
	59	37
	84	2
कोलक	111	129
	145	36
कोलदल	77	130
कोलम्बक	32	7
कोलवल्ली	71	98
कोला	71	97
कोलाहल	31	26
कोलि	59	37
कोविद	113	5
कोविदार	56	22
कोशफल	111	130
कोशातकी	189	8
कोष	154	91
	221	222
कोष्ठ	194	40
कोण	20	36
कौक्कुटिक	131	17

	Page	Stanza
कौक्षेयक	135	90
कौटतक्ष	159	9
कौटिक	160	14
कौणप	13	59
कौतुक } कौतूहल	34	31
कौद्रवीण	141	8
कौन्तिक	132	171
कौन्ती	75	121
कौपीन	206	122
कौमुदी	17	17
कौमोदकी	7	28
कौलटिनेय } कौलटेय	95	27
कौलटेय } कौलटेर	95	26
कौलीन	205	116
कौलेयक	161	22
कौशिक	59	34
	190	10
कौशेय	108	111
कौस्तुभ	7	28
क्रकच	163	35
क्रकर	67	77
	87	20
क्रतु	115	13
क्रतुध्वंसिन्	8	34
क्रतुभुज्	4	9
क्रथन	139	116
क्रन्दन	138	109
	206	123
क्रन्दित	37	36
क्रम	119	39
क्रमुक	60	42
	84	169
क्रमेलक	152	75
क्रयविक्रयिक	152	78
क्रयिक	152	79
क्रय्य	153	81
क्रव्य	102	63
क्रव्याद् } क्रव्याद	13	59
क्रायक	152	79

	Page	Stanza
क्रिमि	86	14
क्रिया	28	2
	211	157
क्रियावत्	168	18
क्रीडा	36	33
क्रुञ्च्	88	23
क्रुध्	35	26
क्रुद्ध	87	36
क्रूर	173	47
	177	76
	216	192
क्रेतव्य } क्रेय	151	81
क्रोड	84	2
	104	77
क्रोध	35	26
क्रोधन	170	32
क्रोधमुख	48	18
क्रोष्टु	85	5
क्रोष्टुविन्ना	70	93
क्रोष्ट्री	73	110
क्रौञ्च	88	23
क्रौञ्चदारण	9	40
क्लम } क्लमथ	185	10
क्लिन्न	181	106
क्लिन्नाक्ष	101	60
क्लिशित	180	99
क्लिष्ट	30	19
	180	99
क्लीतक	73	110
क्लीतकिका	70	95
क्लीब	97	39
	219	214
क्लेश	187	29
क्लोमन्	102	65
क्वङ्गु	143	20
क्वण	31	25
	184	8
क्वणन	31	25
क्वथित	189	96
क्वाण	31	25

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
कुसुम्भ	157	106	कृताभिषेका	92	5	केकिन्	89	31
	208	136	कृतिन्	113	6	केतकी	84	170
कुस्वाति	35	30		166	4	केतन	137	101
कुस्तुम्बरु	145	38	कृत्त	181	104		205	114
कुहना	121	53	कृत्ति	120	46	केतु	194	60
कुहर	37	1	कृत्तिवासस्	8	31	केदर	235	20
कुहू	21	9	कृत्या	211	159	केदार	142	11
कूकुद	168	14	कृत्रिमधूपक	111	128	केनिपातक	41	13
कूट	52	4	कृत्स्न	175	65	केयूर	108	107
	91	43	कृपण	173	48	केलि	36	33
	194	37	कृपा	34	18	केवल	218	204
कूटयन्त्र	162	27	कृपाण	135	90	केश	106	95
कूटशाल्मलि	61	47	कृपाणी	163	34	केशपर्णी	69	89
कूटस्थ	177	74	कृपालु	168	15	केशाम्बुनामन्	75	122
कूप	43	26	कृपीटयोनि	12	53	केशपाशी	107	97
कूर	41	10	कृमिकोशोत्थ	108	111	केशव	5	18
	41	12	कृमिघ्न	72	107		98	45
	103	75	कृमिज	111	126	केशवेष	107	97
कूबर	131	58	कृश	175	61	केशिक }	98	45
कूर्च	106	92	कृशानु	12	54	केशिन् }		
कूर्चशीर्ष	79	143	कृशानुरेतस्	8	33	केशिनी	76	127
कूर्चिका	147	44	कृशाश्विन्	160	12	केसर	45	43
कूर्दन	35	33	कृषक	142	13		57	25
कूर्पर	104	80	कृषि	140	2		65	65
कूर्पासक	109	118	कृषिक }	141	6	केसरिन्	84	1
कूर्म	43	21	कृषीवल }			कैटभजित्	6	22
कूल	40	7	कृष्ट	141	8	कैडर्य	60	41
कूष्माण्डक	81	156	कृष्टि	113	6	कैतव	35	30
कृकण	87	20	कृष्ण	5	18		165	45
कृकलास	86	13		27	14	कैदारक }		
कृकवाकु	87	18		145	36	कैदारिक }	142	11
कृकाटिका	105	88	कृष्णपाकफल	65	68	कैदार्य }		
कृच्छ्र	39	4	कृष्णफला	70	96	कैरव	45	37
	121	52	कृष्णभेदा	68	86	कैलास	14	70
कृत	199	77	कृष्णला	71	98	कैवर्त	42	15
कृतपुङ्ख	132	69	कृष्णलोहित	27	16	कैवर्तीमुस्तक	77	132
कृतमाल	57	24	कृष्णवर्त्मन्	12	54	कैवल्य	26	6
कृतमुख	166	4	कृष्णवृन्ता	63	55	कैशिक }	106	96
कृतलक्षण	167	10	कृष्णसार	86	10	कैश्य }		
कृतसापत्निका	92	7	कृष्णा	71	97	कोक	85	7
कृतहस्त	132	69	कृष्णिका	143	19		88	23
कृतान्त	12	58	केकर	99	49	कोकनद	45	42
	197	64	केका	89	32	कोकनदच्छवि	27	15

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
कुट	53	5	कुन्द	66	73	कुलक	60	39
	145	32		75	122		81	155
कुटक	142	13		235	19		159	5
कुटज	65	67	कुन्दुरु	75	122	कुलटा	93	10
कुटन्नट	63	57	कुन्दुरुकी	75	124	कुलत्थिका	156	103
	77	132	कुपूय	174	54	कुलपालिका	92	7
कुटर	151	74	कुप्य	174	91	कुलश्रेष्ठिन्	149	5
कुटिल	176	72	कुबेर	14	18	कुलसंभव	113	2
कुटी	49	6		15	4	कुलस्त्री	92	7
	238	38	कुबेरक	76	128	कुलाय	90	38
कुटुम्बव्यापृत	167	11	कुबेराक्षी	63	55	कुलाल	159	6
कुटुम्बिनी	92	6	कुब्ज	99	48	कुलाली	156	102
कुट्टनी	94	19	कुमार	9	40	कुलिश	11	47
कुट्टिम	238	34		33	12	कुली	70	94
कुठार	136	93	कुमारक	57	25	कुलीन	113	3
कुठेरक	67	80	कुमारी	66	74	कुलीर	43	21
कुडव	154	89		92	8	कुल्माष	143	18
कुडङ्गक	234	17	कुमुद	15	5		235	21
कुड्मल	55	16		45	37	कुल्माषाभिषुत	146	39
कुड्य	49	4	कुमुदबान्धव	16	14	कुल्य	102	68
कुणप	140	120	कुमुदिका	60	41	कुल्या	44	34
कुणि	99	48	कुमुदिनी	45	39	कुवल	59	37
कुण्ठ	168	17	कुमुद्वत्	47	9		239	42
कुण्ड	97	36	कुमुद्वती	45	38	कुवलय	45	37
	144	31	कुम्बा	115	18	कुवाद	171	37
कुण्डल	107	103	कुम्भ	59	34	कुविन्द	159	6
कुण्डलिन्	38	7		128	38	कुवेणी	42	16
कुण्डी	120	46		207	134	कुश	83	169
कुतप	117	31	कुम्भकार	159	6		220	217
कुतुक	36	31	कुम्भसंभव	17	21	कुशल	24	26
कुतुप } कुतू	145	33	कुम्भिका	45	38		166	4
कुतूहल	36	31	कुम्भी	60	41		218	205
कुत्सा	29	13	कुम्भीर	43	21	कुशी	156	99
कुत्सित	174	54	कुरङ्ग	85	8	कुशीलव	160	12
कुथ	83	166	कुरङ्गक	161	24	कुशेशय	45	40
	128	43	कुरण्टक	66	76	कुष्ठ	76	126
कुद्दाल	56	22	कुरुवक	66	75		100	54
कुनटी	157	108	कुरुविन्द	82	160		238	34
कुनाशक	70	92	कुरुविस्त	154	86	कुसीद	141	4
कुन्त	136	94	कुल	90	42	कुसीदिक	141	5
कुन्तल	106	95		113	1	कुसुम	55	17
						कुसुमाञ्जन	156	103
						कुसुमेषु	7	26

	Page	Stanza
कालक	99	49
कालकण्ठक	87	22
कालकूट	39	10
कालखण्ड	102	66
कालधर्म	139	117
कालपृष्ठ	134	84
कालमेषिका	69	91
	73	109
कालमेषी	70	96
कालशेय	148	53
कालसूत्र	39	2
कालस्कन्ध	60	39
	65	68
काला	63	55
	70	95
	73	109
	145	37
कालागुरु	111	127
कालानुसार्य	75	123
	111	126
कालायस	155	98
कालिका	190	15
कालिन्दी	44	32
कालिन्दीभेदन	6	24
काली	9	36
कालीयक	72	102
	111	126
काल्य	20	2
काल्यक	77	135
काल्या	151	70
कावचिक	132	67
कावेरी	44	35
काव्य	18	26
काश	82	163
	100	52
काश्मरी } काश्मर्य }	59	36
काश्मीर	79	146
काश्मीरजन्मन्	110	124
काश्यपि	19	33
काश्यपी	46	2
काष्ठ	55	13
काष्ठकुद्दाल	41	13
काष्ठतट्	159	9
काष्ठा	15	2
	22	11
	194	41
काष्ठाम्बुवाहिनी	41	11
काष्ठीला	74	114
कासमर्द	235	19
कासर	85	4
कासार	44	28
किंशारु	143	21
	212	164
किंशुक	58	29
किकीदिवि	87	16
किंकर	160	17
किंकिणी	108	110
किंचित्	228	9
किंचुलुक	43	22
किंजल्क	45	43
किटि	84	2
किट्ट	102	65
किण	234	18
किणिही	69	89
किण्व	165	42
कितव	67	78
	165	44
किंनर	4	11
	14	71
किंनरेश	14	69
किम्	226	252
	228	5
किमु	228	5
किमुत	227	2
	228	5
किंपचान	173	48
किंपुरुष	14	71
किंवदन्ती	29	7
किर	84	2
किरण	20	34
किरात	161	21
किराततिक्त	79	143
किरीट	107	102
किर्मीर	27	17
किल	226	255
किलास	100	53
किलासिन्	101	61
किलिञ्जक	144	26
किल्बिष	23	23
	221	224
किशोर	129	47
किष्कु	189	7
किसलय	55	14
कीकस	102	68
कीचक	82	162
कीनाश	220	216
कीर	87	22
कीर्ति	29	11
कील	12	57
	217	198
कीलक	151	73
कीलाल	40	3
	217	201
कीलित	172	42
कीश	84	3
कु	46	3
	224	241
कुकर	99	48
कुकुन्दर	103	75
कुकूल	218	204
कुक्कुट	87	18
कुक्कुभ	90	36
कुक्कुर	77	133
	161	22
कुक्षि	104	77
कुक्षिंभरि	169	21
कुङ्कुम	110	123
कुच	104	77
कुचन्दन	111	132
कुचर	171	37
कुचाग्र	104	77
कुज	18	26
कुञ्चित	176	71
कुञ्ज	53	8
	193	31
कुञ्जराशन	56	20
कुञ्जल	146	39

Word	Page	Stanza
कशिपु	207	130
कशेरु	234	13
कशेरुका	103	69
कश्मल	138	111
कश्म	129	48
	164	40
	172	44
कष	163	32
कषाय	26	9
	210	153
कष्ट	39	4
	194	39
कस्तूरी	111	129
कल्हार	45	36
कह्न	88	23
कांस्यताल	31	4
काक	87	21
काकचिञ्ची	71	98
काकतिन्दुक	60	39
काकनासिका	75	119
काकपक्ष	106	96
काकपीलुक	60	39
काकमाची	80	152
काकमुद्रा	74	114
काकली	31	2
काकशृङ्गी	75	119
काकिणी	233	9
काकु	29	12
काकुद	106	91
काकेन्दु	60	39
काकोदुम्बरिका	64	62
काकोदर	38	7
काकोल	39	10
	87	22
काक्षी	77	131
काङ्क्षा	35	27
काच	156	99
	163	30
	192	28
काञ्चन	155	95
काञ्चनाह्वय	67	78
काञ्चनी	146	41
काञ्चिक	146	39
काशी	108	108
काण्ड	195	43
काण्डपृष्ठ	132	68
काण्डवत् } काण्डीर }	132	70
काण्डेक्षु	72	105
कातर	170	26
कात्यायनी	9	36
	94	17
कादम्ब	88	24
कादम्बरी	164	40
कादम्बिनी	16	8
काद्रवेय	38	4
कानन	53	1
कानीन	95	24
कान्त	173	52
कान्तलक	76	128
कान्ता	91	3
कान्तार	48	17
	213	173
कान्तारक	83	164
कान्ति	17	18
कान्दविक	144	28
कान्दिशीक	172	42
कापथ	48	16
कापोत	91	44
	157	109
कापोताञ्जन	156	100
काम	7	25
	35	28
	149	57
	208	138
कामंगामिन्	133	77
कामन	169	24
कामपाल	6	23
कामम्	229	14
कामयितृ	169	24
कामिनी	91	3
	204	112
कामुक	169	23
कामुका } कामुकी }	92	9
काम्पिल्य	79	147
काम्बल	130	55
काम्बविक	159	8
काम्बोज	129	46
काम्बोजी	78	139
कामदान	183	3
काय	103	71
काय (तीर्थ)	121	51
कायस्था	64	59
	79	144
कारण	24	28
कारणा	39	3
कारणिक	167	7
कारण्डव	89	35
कारम्भा	63	56
कारवी	73	112
	81	153
	145	37
	146	40
कारवेल्ल	81	155
कारा	140	120
कारिका	190	15
कारित	179	90
कारीष	188	43
कारु	159	5
कारुणिक	168	15
कारुण्य	34	18
कारोत्तम्	165	43
कार्तस्वर	155	95
कार्तान्तिक	124	14
कार्त्तिक	22	17
कार्त्तिकिक	22	18
कार्त्तिकेय	9	39
कार्पास	108	111
कार्म	168	18
कार्मण	183	4
कार्मुक	134	84
कार्श्य	61	45
कार्षापण } कार्षिक }	154	88
काल	13	59
	20	1
	27	14
	216	195

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
करहाटक	62	53	कर्पूर	111	130	कलानिधि	17	15
कराल	218	206	कर्बुर	13	60	कलाप	206	129
करिगर्जित	138	109		27	17	कलाय	142	16
करिणी	128	37	कर्मकर	160	15	कलि	138	106
करिन्	127	35		168	19		216	195
करिपिप्पली	71	97	कर्मकार	168	19	कलिका	55	16
करिशावक	127	36	कर्मक्षम	168	18	कलिङ्ग	65	67
करीर	67	77	कर्मठ				87	17
	213	174	कर्मण्यभुज्	168	19	कलिद्रुम	64	59
करीष	148	51	कर्मण्या	164	38	कलिमारक	62	48
करुणा	33	17	कर्मन्दिन्	119	41	कलिल	178	85
	34	18	कर्मशील	168	18	कलुष	23	23
करेटु	87	20	कर्मशूर				42	14
करेणु	196	52	कर्मसचिव	123	4	कलेवर	103	70
करोटि	103	69	कर्मार	82	161	कल्क	190	14
कर्क	129	47	कर्मेन्द्रिय	36	8	कल्प	23	21
कर्कटक	43	21	कर्बुर	155	94		23	22
कर्कटी	81	156	कर्ष	154	86		119	40
कर्कन्धु	59	37	कर्षक	141	6		126	25
कर्कन्धू	238	38	कर्षफल	64	59	कल्पना	128	43
कर्करी	144	31	कर्षू	221	223	कल्पवृक्ष	11	50
कर्करेटु	87	20	कल	31	2	कल्पान्त	23	22
कर्कश	79	147	कलकल	31	26	कल्मष	23	23
	220	218	कलङ्क	17	17	कल्माष	27	17
कर्कारु	81	156		189	4	कल्य	100	57
कर्चूर	81	155	कलत्र	214	179		211	160
कर्चूरक	77	135	कलधौत	199	76	कल्या	30	18
कर्ण	1[illegible]6	94	कलम्ब	135	88	कल्याण	24	25
कर्णजलौकस्	86	14		145	35	कल्लोल	40	6
कर्णधार	41	12	कलभ	127	36	कवच	132	65
कर्णवेष्टन	107	103	कलम	143	24	कवरी	78	140
कर्णिका	107	103	कलम्बी	82	158		107	97
	190	15	कलरव	86	15		146	40
कर्णिकार	64	61	कलल	97	38	कवल	148	54
कर्णीरथ	130	53	कलविङ्क	87	19	कवाट	51	17
कर्णेजप	173	47	कलशि	70	93	कवि	18	26
कर्तरी	163	34	कलस	144	31		113	5
कर्दम	41	9	कलहंस	88	24	कविका	130	50
कर्पट	109	115	कलह	138	106	कविय	238	35
कर्पर	102	68	कला	17	16	कवोष्ण	20	36
कर्परी	156	101		22	11	कव्य	116	24
कर्पास	238	85		217	199	कशा	163	31
कर्पासी	74	116	कलाद	159	8	कशार्ह	172	44

	Page	Stanza
कण्टक	237	32
कण्टकारिका	70	94
कण्टकिफल	64	61
कण्ठ	105	88
कण्ठभूषा	108	104
कण्डू कण्डूया	100	53
कण्डूरा	69	87
कण्डोल	144	26
कण्डोलवीणा	163	32
कत्तृण	83	156
कथा	28	6
कदध्वन्	48	16
कदम्ब	60	42
कदम्बक	90	41
	142	17
कदर	62	50
कदर्य	173	48
कदली	74	115
	85	9
कदाचित्	228	4
कदुष्ण	20	36
कद्रु	27	16
कद्वद	171	37
कनक	155	94
कनकाध्यक्ष	123	7
कनकालुका	127	33
कनिष्ठ	98	43
	194	41
कनिष्ठा	104	82
कनीनिका	106	92
कनीयस्	175	62
	223	236
कन्था	233	9
कन्द	45	43
	81	157
	238	35
कन्दर	52	6
कन्दराल	58	[illegible]9
	61	43
कन्दर्प	7	25
कन्दली	85	9
कन्तु	144	30
कन्दुक	112	138
कन्धरा	105	88
कन्यकाजात	95	25
कन्या	92	8
कपट	35	30
कपर्द	8	35
कपर्दिन्	8	32
कपाल	102	68
कपालभृत्	8	32
कपि	84	3
कपिकच्छु	69	87
कपित्थ	56	21
कपिल	27	16
कपिला	64	63
	75	121
कपिवल्ली	71	98
कपिश	27	16
कपीतन	57	27
	61	43
	64	63
कपोत	86	15
कपोतपालिका	51	15
कपोताङ्घ्रि	76	130
कपोल	106	90
कफ	101	62
कफिन्	101	69
कफोणि	104	80
कबन्ध	40	4
	139	119
कम्	2[illegible]6	251
कमठ	43	21
कमठी	43	24
कमण्डलु	120	46
कमन	169	24
कमल	40	3
	45	40
	216	195
कमला	7	27
कमलासन	5	17
कमलोत्तर	157	106
कमितृ	169	23
कम्प	37	39
कम्पन कम्प्र	177	75
कम्बल	109	116
	216	195
कम्बलिवाह्यक	130	53
कम्बि	145	34
कम्बु	43	23
	207	133
कम्बुग्रीवा	105	88
कम्र	169	24
कर	20	34
	126	28
	212	165
करक	65	65
	189	6
करका	16	12
करज	62	48
	76	129
करञ्जक	62	48
करट	87	21
	193	34
करण	158	2
	196	54
करण्ड	234	18
करतोया	44	33
करपत्त्र	163	35
करभ	104	81
	152	75
करभूषण	108	108
करमर्दक	65	68
करम्भ	147	48
कररुह	105	83
करवाल	135	90
करवालिका	136	92
करवीर	67	77
करशाखा	104	82
करशीकर	128	38
करहाट	45	43

	Page	Stanza
एतर्हि	230	24
एध	55	13
एधस्		
एधा	184	10
एधित	177	77
एनस्	23	23
एरण्ड	62	51
एर्वारु	81	156
एला	76	125
एलापर्णी	78	140
एलावालुक	75	121
एवम्	226	251
	228	10
	229	13
	229	16
	229	17
एषिका	163	33
एषणिका	163	32
ऐकागारिक	162	25
ऐङ्गुद	55	18
ऐडविड	14	69
ऐण	85	8
ऐणेय	85	8
ऐतिह्य	114	12
ऐन्द्रियक	177	79
ऐरावण	10	46
ऐरावत	10	46
	15	5
	60	38
ऐरावती	16	9
ऐलेय	75	121
ऐश्वर्य	9	36
ऐषमस्	230	21
ओकस्	223	234
ओघ	32	9
	90	40
ओङ्कार	28	4
ओजस्	223	234
ओड्रपुष्प	66	76
ओतु	85	6
ओदन	147	48
ओम्	229	13
ओल	184	9

	Page	Stanza
ओषधी	78	136
ओषधि	53	6
ओषधीश	16	14
ओष्ठ	106	90
औक्षक	149	60
औचिती	238	39
औचित्य		
औत्तानपादि	17	21
औदनिक	144	28
औदरिक	169	21
औपगवक	188	40
औपयिक	126	25
औपवस्त्र	118	38
औरभ्रक	152	77
औरस	96	28
और्ध्वदेहिक	117	30
और्व	12	56
औशीर	215	186
औषध	78	136
	99	50
औष्ट्रक	152	77
क	189	5
कंस	145	32
कंसाराति	6	21
ककुद	201	92
ककुद्मती	103	74
ककुभ्	15	2
ककुभ	32	7
	61	45
कक्कोलक	111	130
कक्ष	104	79
	220	220
कक्ष्या	128	43
कङ्क	87	16
कङ्कटक	132	65
कङ्कण	108	108
कङ्कतिका	112	139
कङ्काल	103	69
कच	106	95
कच्चर	174	55
कच्चित्	229	15
कच्छ	47	10
	76	128

	Page	Stanza
कच्छप	43	21
कच्छपी	207	132
कच्छू	100	53
कच्छुर	101	58
कच्छुरा	70	92
कञ्चुक	38	9
	131	64
कञ्चुकिन्	123	8
कट	103	74
	128	38
	144	26
	193	34
कटक	52	5
	108	107
कटभी	80	150
कटंभरा	68	86
	81	153
कटाक्ष	106	94
कटाह	235	21
कटि	103	74
कटिप्रोथ	103	75
कटिल्लक	81	155
कटी	238	38
कटु	26	9
	68	86
कटुतुम्बी	81	156
कटुरोहिणी	68	86
कट्फल	60	41
कट्वङ्ग	63	57
कठिञ्जर	67	80
कठिन	177	76
कठोर		
कडङ्गर	143	22
कदम्ब	145	35
कडार	27	16
कण	175	62
	195	46
कणप	235	20
कणा	71	97
	145	36
कणिका	65	66
	232	8
कणिश	143	21

	Page	Stanza
उरस्य	96	28
उरस्वत्	133	77
उरुबूक	62	51
उर्वरा	46	4
उर्वसी	11	52
उर्वी	46	3
उलप	54	9
उलूक	86	15
उलूखल	144	25
उलूपिन्	42	18
उल्का	232	8
उल्मुक	144	30
उल्लाघ	100	57
उल्लोच	110	120
उल्लोल	40	6
उल्व	97	38
उल्वण	178	82
उशनस्	18	26
उशीर	83	164
उषर्बुध	12	54
उषस्	20	2
उषा	230	19
उषापति	7	27
उषित	180	99
उष्ट्र	152	75
उष्ण	23	19
	161	19
	235	22
उष्णरश्मि	19	30
उष्णिका	148	50
उष्णीष	221	221
उष्णोपगम	23	19
उस्र	20	34
उस्रा	150	66
ऊत	181	101
ऊधस्	151	73
ऊन	206	128
ऊम्	230	19
ऊररी	226	255
ऊरव्य	140	1
ऊरी	226	255
ऊरीकृत	182	109
ऊरु	103	73

	Page	Stanza
ऊरुज	104	1
ऊरुपर्वन्	103	72
ऊर्ज	22	18
ऊर्जस्वल, ऊर्जस्विन्	133	76
ऊर्णनाभ	86	13
ऊर्णा	196	50
ऊर्णायु	152	76
	157	107
ऊर्ध्वक	32	5
	200	85
ऊर्ध्वजानु, ऊर्ध्वज्ञु	99	47
ऊर्मि	40	5
ऊर्मिका	108	107
ऊर्मिमत्	176	71
ऊष	46	4
ऊषण	145	36
ऊषणा	71	97
ऊषर, ऊषवत्	46	5
ऊष्मक	22	18
ऊष्मागम	23	19
ऊह	25	3
ऋक्थ	154	90
ऋक्ष	18	22
	63	57
	85	4
ऋच्	28	3
ऋचीक	145	32
ऋजु	176	72
ऋण	140	3
ऋत	30	22
	140	2
ऋतुमती	94	21
ऋते	228	3
ऋत्विज्	115	17
ऋद्धि	74	113
ऋभु	3	8
ऋभुक्षिन्	10	44
ऋश्य	86	10

	Page	Stanza
ऋषभ	31	1
	149	59
	174	59
ऋषि	119	43
ऋष्टि	133	90
ऋष्यकेतु	7	27
ऋष्यगन्धिका	73	111
ऋष्यप्रोक्ता	69	87
	71	101
एक	178	82
	178	83
	190	16
एकके	178	82
एकगुरु	114	12
एकतान	178	80
एकताल	31	3
एकदन्त	9	38
एकदा	230	23
एकधुर, एकधुरावह, एकधुरीण	150	65
एकपदी	48	15
एकपिङ्ग	14	69
एकयष्टिका	108	106
एकसर्ग	178	80
एकहायनी	150	68
एकाकिन्	178	82
एकाग्र	178	80
	216	191
एकाग्र्य	178	80
एकान्त	14	66
एकाब्दा	150	68
एकायन, एकायनगत	178	80
एकावली	108	106
एकाष्ठील	68	82
एकाष्ठीला	68	85
एड	99	48
एडक	152	76
एडगज	79	147
एडूक	49	4
एण	86	10
एत	27	17

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
उन्मत्त	67	78	उपभृत्	116	25	उपाकरण	119	40
	101	60	उपभोग	186	20	उपाकृत	116	25
उन्मदिष्णु	169	23	उपमा	164	36	उपात्यय	118	37
उन्मनस्	167	8		164	38		187	33
उन्माथ	139	117	उपमातृ	214	177	उपादान	185	16
	162	27	उपमान	164	36	उपाधि	35	28
उन्माद	35	26	उपयम	121	56		167	12
उन्मादवत्	101	60	उपयाम	122	57	उपाध्याय	114	7
उपकण्ठ	176	68	उपरक्त	21	10	उपाध्याया	93	14
उपकालिका	50	10		172	43	उपाध्यायानी	93	15
उपकार्या			उपरक्षण	127	34	उपाध्यायी	93	14
उपकुञ्चिका	76	126	उपराग	21	9		93	15
	145	37	उपराम	188	38	उपानह्	163	31
उपकुल्या	71	97	उपरि	215	184	उपायचतुष्टय	125	21
उपक्रम	115	13	उपल	52	4	उपायन	126	29
	186	26	उपलब्धार्था	28	5	उपालम्भ	29	14
	208	139	उपलब्धि	25	1	उपावृत्त	130	51
उपक्रोश	29	13	उपलम्भ	186	27	उपासङ्ग	135	89
उपगत	182	109	उपला	217	200	उपासन	118	35
उपगूहन	187	30	उपवन	53	2		135	87
उपग्रह	140	120	उपबर्ह	112	137	उपासित	181	102
उपग्राह्य	126	29	उपवर्तन	47	8	उपाहित	21	10
उपघ्न	185	19	उपवास	118	38		179	92
उपचरित	181	102	उपविषा	71	100	उपेन्द्र	6	20
उपचाय्य	116	20	उपवीत	120	50	उपोदका	82	158
उपचित	179	89	उपशल्य	51	20	उपोद्घात	29	9
उपचित्रा	69	88	उपशाय	187	32	उप्तकृष्ट	141	8
उपजाप	125	22	उपश्रुत	182	109	उभयद्युस्	230	22
उपज्ञा	115	13	उपसंख्यान	109	117	उभयेद्युस्		
उपतप्तृ	185	14	उपसंपन्न	117	26	उम्	230	19
उपताप	99	51		147	45	उमा	9	36
उपत्यका	52	7	उपसर	186	25		143	20
उपदा	126	29	उपसर्ग	138	110	उमापति	8	34
उपधा	125	22	उपसर्जन	175	60	उरःसूत्रिका	108	104
	208	139	उपसर्या	151	70	उरग	38	8
उपधान	112	137	उपसूर्यक	19	33	उरण	152	76
उपधि	35	30	उपस्कर	145	35	उरणाक्ष	80	148
उपनाह	32	7	उपस्थ	103	75	उरभ्र	152	76
उपनिधि	153	81	उपस्पर्श	118	36	उर्वी	226	255
उपनिषद्	202	93	उपहार	126	29	उरीकृत	182	109
उपनिष्कार	48	18		216	196	उरश्छद	132	65
उपन्यास	29	9	उपह्वर	215	184	उरस्	104	78
उपपति	97	35	उपांशु	126	24	उरसिल	133	77

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
उटज	49	6	उत्सर्जन	117	29	उद्गमनीय	109	112
उडु	18	22	उत्सव	37	39	उद्गाढ	14	66
उडुप	41	11		219	210	उद्गातृ	115	17
उड्डीन	90	38	उत्सादन	110	121	उद्गार	188	37
उत	181	101	उत्साह	35	39	उद्ग्रन्थ	235	19
	224	244		125	19	उद्घूर्ण	179	90
	228	5	उत्साहन	205	115	उद्ग्राह	188	37
उताहो	228	5	उत्साहवर्धन	34	18	उद्द	24	27
उत्क	167	8	उत्सुक	167	9	उद्दन	187	35
उत्कट	77	135	उत्सृष्ट	181	107	उद्घाटन	162	28
	169	23	उत्सेध	54	10	उद्घात	186	26
उत्कण्ठा	35	29		202	96	उद्दान	126	27
उत्कर	91	43	उदक्	230	24	उद्दाल	59	35
उत्कर्ष	184	11	उदक	40	4	उद्दिन	180	95
उत्कलिका	35	29		235	22	उद्द्राव	139	112
उत्कार	187	36	उदक्या	94	21	उद्धर्ष }	37	39
उत्क्रोश	88	24	उदग्र	176	70	उद्धव }		
उत्तंस	222	228	उदज	188	39	उद्धार	141	4
उत्त	181	106	उदधि	40	1	उद्धृत	179	90
उत्तप्त	102	63	उदन्त	29	7	उद्ध्मान }	144	29
उत्तम	174	57	उदन्या	149	55	उद्वान }		
उत्तमर्ण	141	5	उदन्वत्	40	1	उद्भव	24	30
उत्तमा	150	67	उदपान	43	26	उद्भिज्ज }		
उत्तमाङ्ग	106	95	उदय	52	2	उद्भिद् }	173	51
उत्तर	29	10	उदर	104	77	उद्भिद }		
	216	191	उदर्क	127	30	उद्भ्रम	184	12
उत्तरा	15	3	उदवसित	49	4	उद्यत	179	90
उत्तरासङ्ग	109	117	उदश्वित्	148	53	उद्यम	184	11
उत्तरीय	109	118	उदात्त	28	4	उद्यान	53	3
उत्तान	42	15	उदान	13	63		205	117
उत्तानशया	98	41	उदार	167	8	उद्योग	237	33
उत्थान	205	118		216	193	उद्र	42	20
उत्थित	200	85	उदासीन	124	10	उद्वर्तन	110	121
उत्पतितृ	170	29	उदाहार	29	9	उद्वान्त	128	37
उत्पत्ति	24	30	उदित	182	108	उद्वासन	139	116
उत्पतिष्णु	170	29	उदीची	15	3	उद्वाह	122	57
उत्पन्न	200	85	उदीच्य	47	7	उद्वेग	84	170
उत्पल	45	37		75	122		184	12
	76	126	उदुम्बर	56	22	उन्दुरु	86	12
उत्पलशारिवा	73	112		155	97	उन्नत	176	70
उत्पात	138	110	उदुम्बरपर्णी	79	145	उन्नतानत	176	70
उत्फुल्ल	44	7	उदूखल	144	25	उन्नय }	184	12
उत्स	52	5	उद्गत	180	97	उन्नाय }		

	Page	Stanza
आस्य	105	89
आस्या	186	21
आस्रव	187	29
आहत	30	21
	179	89
आहतलक्षण	167	10
आहव	138	107
आहवनीय	116	19
आहार	149	56
आहाव	43	26
आहेय	38	9
आहो	228	5
आहोपुरुषिका	137	102
आह्वय	29	7
आह्वा }	29	8
आह्वान }		
इक्षु	83	164
इक्षुगन्धा	71	99
	72	105
	73	110
	82	163
इक्षुर	72	105
इक्ष्वाकु	81	156
इङ्ग	177	74
	185	15
इङ्गित	185	15
इङ्गुदी	61	46
इच्छा	35	27
इच्छावती	92	9
इज्याशील	114	8
इट्चर	150	62
इडा	194	42
इतर	160	16
	178	83
	216	193
इति	225	246
इतिह	114	12
इतिहास	28	4
इत्वरी	93	10
इदानीम्	230	24
इध्म	55	13
इन	204	111
इन्वका	18	24

	Page	Stanza
इन्दीवर	45	37
इन्दु	16	14
इन्दीवरी	71	101
इन्द्र	9	41
	15	4
इन्द्रद्रु	61	45
इन्द्रयव	65	67
इन्द्रवारुणी	81	157
इन्द्रसुरस }	65	69
इन्द्राणिका }		
इन्द्राणी	10	45
इन्द्रायुध	16	11
इन्द्रारि	4	12
इन्द्रावरज	6	20
इन्द्रिय	26	8
	101	62
इन्द्रियार्थ	26	8
इन्धन	55	13
इभ	127	36
इभ्य	167	10
इरंमद	16	10
इरा	164	40
	214	177
इला	194	42
इव	228	10
इष	22	17
इषु	135	88
इषुधि	135	89
इष्ट	117	28
	149	57
इष्टकापथ	83	165
इष्टगन्ध	26	11
इष्टार्थोद्युक्त	167	9
इष्टि	194	39
इष्वास	134	84
ईक्षण	106	93
ईक्षणिका	94	20
ईडित	182	110
ईति	198	68
ईरिण	197	57
ईरित	179	88
ईर्म	100	54
ईर्ष्या	35	24

	Page	Stanza
ईलित	182	110
ईली	136	92
ईश	7	30
	15	4
ईशान	7	30
ईशितृ	167	10
ईश्वर	7	30
	167	10
ईश्वरा	9	36
ईषत्	228	9
ईषत्पाण्डु	27	13
ईषा	142	14
ईषि	128	39
ईहा	35	27
ईहामृग	85	7
उक्त	182	108
	237	30
उक्ति	27	1
उक्थ	237	30
उक्षन्	149	59
उखा	144	31
उख्य	147	45
उग्र	8	32
	34	20
	158	2
उग्रगन्धा	72	103
	79	145
उच्च	176	70
उच्चटा	82	160
उच्चण्ड	178	13
उच्चार	102	67
उच्चावच	178	83
उच्चैःश्रवस्	10	45
उच्चैर्घुष्ट	29	12
उच्चैस्	230	18
उच्छ्रय }	54	10
उच्छ्राय }		
उच्छ्रित	176	70
	200	85
उज्जासन	139	116
उज्ज्वल	33	17
उञ्छ }	140	2
उञ्छशिल }		

	Page	Stanza
आम्रातक	57	27
आम्रेडित	29	12
आयत	176	69
आयतन	49	7
आयति	127	30
	199	72
आयत्त	168	16
आयाम	109	114
आयुध	134	83
आयुधिक } आयुधीय	132	68
आयुष्मत्	167	6
आयुस्	140	121
आयोधन	138	105
आरकूट	155	97
आरग्वध	57	23
आरनालक	146	39
आराति	188	38
आरम्भ	186	26
आरव	30	24
आरा	163	35
आरात्	224	243
आराधन	206	175
आराम	53	2
आरालिक	144	28
आराव	30	24
आरेवत	57	24
आरोग्य	99	50
आरोह	223	239
आरोहण	51	18
आर्तगल	66	75
आर्तव	94	21
आर्द्र	181	106
आर्द्रक	105	37
आर्य	33	14
	113	3
आर्यावर्त	47	8
आर्षभ्य	150	62
आल	156	103
आलम्ब	139	117
आलय	49	5
आलवाल	44	29
आलस्य	161	19

	Page	Stanza
आलान	128	42
आलाप	29	15
आलि	48	14
	53	4
	93	12
आलिङ्गिन् } आलिङ्ग्य	32	5
आलीढ	135	86
आलु	144	31
आलोक	183	3
आलोकन	187	31
आवपन	115	33
आवर्त	40	6
आवलि	53	4
आवसित	143	23
आवाप	44	29
आवापक	108	107
आवाल	44	29
आविद्ध	176	72
	179	88
आविध	187	36
आविल	42	14
आविस्	229	13
आवुक	33	12
आवृत्	118	36
आवृत	179	91
आवेगी	78	137
आवेशन	42	7
आवेशिक	118	34
आशंसितृ } आशंसु	170	27
आशय	186	20
आशयाश	12	54
आशर	13	59
आशा	15	2
	220	217
आशितंगवीन	149	59
आशीविष	38	7
आशिस् } आशीस्	222	229
आशु	13	56
	142	15

	Page	Stanza
आशुग	13	62
	135	87
	191	19
आशुशुक्षणि	12	55
आश्चर्य	34	19
आश्रम	113	4
आश्रय	125	19
आश्रयाश	12	54
आश्रव	25	5
	169	24
आश्रुत	182	109
आश्व	129	49
आश्वत्थ	55	18
आश्वयुज } आश्विन	22	17
आश्विनेय	11	51
आश्वीन	129	48
आषाढ	22	16
	120	45
आसक्त	167	9
आसन	112	128
	125	19
	128	40
आसना	186	21
आसन्दी	233	9
आसन्न	176	67
आसव	165	42
आसादित	181	105
आसार	16	12
	137	97
आसुरी	143	19
आसेचनक	174	53
आस्कन्दन	138	105
आस्कन्दित	129	49
आस्तरण	128	43
आस्था	201	88
आस्थान } आस्थानी	115	15
आस्पद	202	94
आस्फोट	67	81
आस्फोटनी	163	34
आस्फोता	65	70
	72	104

	Page	Stanza
आच्छादन	16	13
	109	115
आच्छुरितक	36	35
आच्छोदन	161	24
आजक	152	77
आजानेय	129	45
आजि	138	107
	193	32
आजीव	140	1
आजू	39	3
आज्ञा	126	27
आज्य	148	52
आटि	88	26
आडम्बर	138	109
	213	169
आढक	154	88
आढकिक	141	10
आढकी	77	131
आढ्य	167	10
आणु	190	10
आतञ्चन	205	115
आततायिन्	172	44
आतप	20	35
	235	20
आतपत्र	127	33
आतर	41	11
आतापिन्	87	22
आति	88	26
आतिथेय, आतिथ्य	118	33
आतुर	101	58
आतोद्य	32	5
आत्तगन्ध	172	40
आत्मगुप्ता	69	87
आत्मघोष	87	21
आत्मज	95	27
आत्मन्	24	29
	204	109
आत्मभू	5	16
	7	26
आत्मंभरि	169	21
आत्रेयी	94	20
आथर्वण	188	43

	Page	Stanza
आदर्श	112	140
आदि	178	81
आदिकारण	24	28
आदितेय	3	8
आदित्य	3	8
	4	10
आदीनव	187	29
आदृत	200	85
आद्य	178	81
आद्यमाषक	153	85
आद्यून	169	21
आधार	44	29
आधि	35	28
	202	97
आधूत	179	87
आधोरण	131	60
आध्यान	35	29
आनक	32	6
	189	3
आनकदुन्दुभि	6	22
आनत	176	71
आनद्ध	31	4
आनन	105	89
आनन्द, आनन्दथु	24	25
आनन्दन	184	7
आनर्त	197	64
आनाय	42	16
आनाय्य	116	21
आनाह	100	55
	109	114
आनुपूर्वी, आनुपूर्व्य	118	36
आन्धसिक	144	28
आन्वीक्षिकी	28	5
आपक्व	147	47
आपगा	44	30
आपण	49	2
आपणिक	152	78
आपत्प्राप्त	172	42
आपद्	134	83
आपन्न	172	42
आपन्नसत्त्वा	95	22

	Page	Stanza
आपमित्यक	141	4
आपान	165	43
आपीड	112	136
आपीन	151	73
आपूपिक	144	28
आप्त	124	13
आप्य	40	5
आप्यायन	205	115
आप्रच्छन	184	7
आप्रपद, आप्रपदीन	110	119
आप्लव	110	121
आप्लु	119	43
आप्लाव	110	121
आबन्ध	142	13
आबुत्त	33	12
आभरण	107	101
आभाषण	29	15
आभास्वर	4	10
आभीर	149	57
आभीरपल्ली	51	20
आभीरी	93	13
आभील	39	4
आभोग	112	137
आमगन्धिन्	26	12
आमण्ड	62	52
आमनस्य	39	3
आमय	59	51
आमयाविन्	101	58
आमलक	237	33
आमलकी	63	58
आमिक्षा	116	23
आमिष	102	63
	221	224
आमिषाशिन्	168	19
आमिषी	77	134
आमुक्त	132	66
आमोद	24	24
	26	10
आमोदिन्	26	11
आम्नाय	28	3
	184	7
आम्र	59	33

	Page	Stanza
अश्मसार	155	98
अश्रान्त	13	65
अश्रि	136	94
अश्रु	106	93
अश्लील	30	19
अश्व	129	44
अश्वकर्णक	61	45
अश्वत्थ	56	21
अश्वयुज्	18	22
अश्ववडव	234	16
अश्वा	129	47
अश्वाभरण	195	44
अश्वारोह	131	61
अश्विन्	11	51
अश्विनी	18	22
अश्विनीसुत	11	51
अश्वीय	129	49
अषडक्षीण	126	23
अष्टापद	155	95
	165	46
अष्ठीवत्	103	72
असकृत्	227	1
असती	93	10
असतीसुत	95	26
असन	61	44
असमीक्ष्यकारिन्	168	17
असार	174	56
असि	135	90
असिक्नी	94	18
असित	27	14
असिधावक	159	7
असिधेनुका }	136	93
असिपुत्री }		
असिहेति	132	71
असु	140	121
असुधारण	140	121
असुर	4	12
असूक्षण	34	23
असूया	35	24
असृग्धरा	101	62
असृज्	102	64
असौम्यस्वर	171	37

	Page	Stanza
अस्त	52	2
	179	88
अस्तम्	230	18
अस्ति	230	19
अस्तु	229	14
अस्त्र	134	83
अस्थि	102	68
अस्थिर	172	43
अस्फुटवाच्	171	37
अस्र	102	64
	106	93
	212	165
अस्राप	13	59
अस्रु	106	93
अस्वच्छन्द	168	16
अस्वप्न	3	8
अस्वर	171	37
अस्वाध्याय	121	54
अहंयु	173	50
अहंकार	34	22
अहंकारवत्	173	50
अहन्	20	2
अहमहमिका	137	103
अहपूर्विका	137	102
अहंमति	26	7
अहर्पति	19	31
अहर्मुख	20	2
अहस्कर	19	29
अहह	227	258
अहार्य	51	1
अहि	38	6
	223	239
अ. त	124	11
अहितुण्डिक	39	11
अहिभय	127	31
अहिभुज्	193	30
अहेरु	72	102
अहो	228	10
अहोरात्र	22	12
अह्नाय	227	2
आ }	224	241
आः }		
आम्	229	17

	Page	Stanza
आकम्पित	179	87
आकर	?2	7
आकर्ष	221	222
आकल्प	107	99
आकार	185	15
	212	163
आकारगुप्ति	36	34
आकारणा	29	8
आकाश	15	2
आकीर्ण	179	86
आकुल	176	72
आकृति	212	163
आक्रन्द	201	90
आक्रीड	53	3
आक्रोश	29	15
आक्रोशन	183	6
आक्षारणा	29	15
आक्षारित	172	43
आक्षेप	29	13
आखण्डल	10	44
आखु	86	12
आखुभुज्	85	6
आखेट	161	24
आख्या	29	8
आख्यात	182	108
आख्यायिका	28	5
आगन्तु	118	34
आगस्	126	27
!	222	231
आगू	25	5
आग्नीध्र	115	17
आग्रहायणिक	22	14
आग्रहायणी	18	24
आङ्	223	240
आङ्गिक	33	16
आङ्गिरस	18	25
आचमन	118	36
आचाम	148	49
आचार्य	114	7
आचार्या	93	14
आचार्यानी	93	15
आचित	154	87

	Page	Stanza
अलिक	106	92
अलिन्	89	30
अलं(लि)जर	144	31
अलिन्द	50	12
अलात	190	12
अलर्क	175	61
अल्पतनु	99	48
अल्पमारिष	78	136
अल्पसरस्	44	28
अल्पिष्ठ अल्पीयस्	175	62
अवकर	51	18
अवकीर्णिन्	121	54
अवकृष्ट	171	39
अवकेशिन्	54	7
अवक्रय	152	79
अवगणित	181	107
अवगत	182	108
अवगीत	180	93
	200	79
अवग्रह	16	11
	128	39
अवग्राह	16	11
अवचूर्णित	180	94
अवज्ञा	34	23
अवज्ञात	181	107
अवट	37	2
अवटीट	98	45
अवटु	105	88
अवतंस	221	228
अवतमस	37	3
अवतोका	151	69
अवदंश	164	40
अवदात	27	13
	200	80
अवदान	182	3
अवदारण	140	12
अवदाह	83	165
अवदीर्ण	179	90
अवद्य	174	54
अवधारण	214	178
अवधि	203	99
अवध्वस्त	180	94

	Page	Stanza
अवन	182	4
अवनत	176	71
अवनाट	98	45
अवनाय	186	27
अवनि	46	3
अवन्तिसोम	146	39
अवन्ध्य	53	6
अवभृथ	117	27
अवभ्रट	98	45
अवम	174	54
अवमत	181	107
अवमर्द	138	111
अवमानना	34	23
अवमानन	181	107
अवयव	103	70
अवर	128	41
अवरज	98	43
अवरति	188	38
अवरवर्ण	158	1
अवरीण	180	94
अवरोध	50	12
अवरोधन	50	11
अवरोह	51	11
अवर्ण	29	13
अवलक्ष	27	13
अवलग्न	104	79
अवलम्बित	203	104
	178	83
अवल्गुज	70	96
अववाद	126	26
अवश्यम्	229	17
अवश्याय	17	19
अवष्टब्ध	203	104
अवसर	186	24
अवसर्प	123	13
अवसान	188	39
अवसित	49	4
	180	99
	182	108
अवस्कर	102	67
	213	168
अवस्था	24	29
अवहार	43	21

	Page	Stanza
अवहित्था	36	34
अवहेलन	34	23
अवाक्पुष्पी	81	153
अवाप	176	71
अवाच्	168	13
	171	33
अवाची	15	3
अवाच्य	30	21
अवार	41	8
अवासस्	171	39
अवि	219	208
अविघ्न	64	68
अवित	181	106
अविद्या	26	7
अविनीत	169	23
अविरत अविलम्बित	13	65
अविस्पष्ट	30	21
अवीचि	39	1
अवीरा	93	11
अवेक्षा	187	28
अव्यक्त	197	62
अव्यक्तराग	27	15
अव्यङ्गा	69	87
अव्यथा	64	59
	79	146
अव्यय	238	34
अव्याहृत	176	68
अशनाया	148	54
अशनायित	169	20
अशनि	11	47
अशित	182	111
अशिश्वी	93	11
अशुभ	235	23
अशेष	175	65
अशोक	65	65
अशोकरोहिणी	68	86
अश्मगर्भ	155	92
अश्मज	156	104
अश्मन्	52	4
अश्मन्त	144	29
अश्मपुष्प	75	123
अश्मरी	100	56

	Page	Stanza
अम्मय	40	5
अम्ल	26	9
अम्ललोणिका / अम्लवेतस	78	141
आम्लिका	61	44
अम्लान	66	74
अय	24	27
अयन	22	13
	48	15
अयस्	155	98
अयःप्रतिमा	163	35
अयि	230	91
अयोघ	144	25
अयोघन	194	34
अर	13	64
अरघट्ट	234	18
अरणि	116	19
अरण्य	235	22
	53	1
अरण्यानी	53	1
अरत्नि	105	86
अरर	51	17
अरलु	63	58
अरविन्द	45	39
अराति	124	11
अराल	176	71
अरि	124	10
अरित्र	41	13
अरिमेद	62	50
अरिष्ट	50	8
	58	31
	64	62
	80	149
	87	21
	148	53
	193	36
अरिष्टदुष्टधी	172	44
अरुण	19	30
	19	33
	27	15
	195	48
अरुणा	71	100
अरुन्तुद	178	84

	Page	Stanza
अरुष्कर	61	43
	216	190
अरुस्	100	54
अरोक	180	100
अर्क	19	30
	189	4
अर्कपर्ण	67	81
अर्कबन्धु	5	15
अर्काह्व	67	81
अर्गल	51	17
अर्घ	192	27
अर्घ्य	118	33
अर्चा	118	34
	164	36
अर्चित	181	102
	205	85
अर्चिस्	12	57
	222	231
अर्जक	67	80
अर्जुन	27	13
	61	45
	83	168
अर्जुनी	150	67
अर्णव	40	1
अर्णस्	40	4
अर्तन	187	32
अर्ति	198	68
अर्थ	154	90
	201	86
अर्थना	117	32
	182	6
अर्थप्रयोग	141	40
अर्थशास्त्र	28	5
अर्थिन्	123	9
	173	49
अर्ध्य	156	104
	211	161
अर्दना	183	6
अर्दित	180	98
अर्ध	17	16
अर्धचन्द्रा	73	109
अर्धनाव	42	14
अर्धात्र	21	6

	Page	Stanza
अर्धर्च	137	32
अर्धहार	108	106
अर्धोरुक	110	119
अर्बुद	235	19
अर्भक	90	39
अर्म	238	34
अर्य	140	1
	209	146
अर्यमन्	19	29
अर्या / अर्याणी	93	14
अर्या	93	15
अर्व	174	54
अर्वन्	129	45
अर्वाक्	41	8
	229	17
अर्शस	101	59
अर्शस्	100	54
अर्शोघ्न	81	157
अर्शोरोगयुत	101	59
अर्हणा	118	34
अर्हित	181	102
अलम्	226	253
	229	12
अलक	106	96
अलका	14	70
अलक्त	110	125
अलक्ष्मी	39	2
अलगर्द	38	5
अलंकरिष्णु	107	100
	170	29
अलंकर्तृ	107	100
अलंकर्मीण	168	18
अलंकार	107	101
अलंकृत	107	100
अलंक्रिया	107	101
अलर्क	67	81
	161	22
अलस्	161	19
अलात	144	80
अलाबू	81	156
अलि	86	14
	89	30

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
अभिघातिन्	124	11	अभीक	169	24	अमर	3	7
अभिचर	133	72	अभीक्ष्ण	227	1	अमरावती	10	45
अभिचार	185	19		229	12	अमर्त्य	3	8
अभिजन	113	1	अभीप्सित	174	53	अमर्ष	35	26
अभिज्ञात	200	82		182	112	अमर्षण	170	32
अभिज्ञ	166	4	अभीरु	71	101	अमा	226	251
अभितस्	176	68	अभीरुपत्नी			अमांस	98	44
	227	256	अभीषङ्ग	183	6	अमात्य	123	4
अभिधान	29	8	अभीषु	220	220	अमावस्या	21	8
अभिध्या	35	24	अभीष्ट	174	53	अमावास्या		
अभिनय	33	16	अभ्यग्र	176	68	अमित्र	124	11
अभिनवोद्भिद्	53	4	अभ्यन्तर	15	6	अमुत्र	228	9
अभिनिर्मुक्त	121	55	अभ्यमित	101	58	अमृणाल	83	165
अभिनिर्वाण	136	96	अभ्यमित्रीण	133	76	अमृत	11	48
अभिनीत	126	25	अभ्यमित्रीय				26	6
	200	81	अभ्यमित्र्य				40	3
अभिपन्न	206	128	अभ्यर्ण	176	68		117	28
अभिप्राय	186	20	अभ्यर्हित	200	83		140	3
अभिभूत	172	40	अभ्यवकर्षण	185	17		199	76
अभिमर	220	215	अभ्यवस्कन्दन	138	111	अमृता	63	58
अभिमान	34	22	अभ्यवहृत	182	111		64	59
	204	110	अभ्याख्यान	29	10		68	83
अभियोग	185	13	अभ्यागम	138	107	अमृतान्धस्	3	8
अभिरूप	207	131	अभ्यागारिक	167	12	अमोघा	63	55
अभिलाव	186	24	अभ्यादान	186	26		72	106
अभिलाष	35	28	अभ्यान्त	101	58	अम्बर	15	1
अभिलाषुक	169	22	अभ्यामर्द	138	107		214	182
अभिवादक	170	28	अभ्यास	176	67	अम्बरीष	144	30
अभिवादन	119	41	अभ्यासादन	138	111	अम्ब	158	1
अभिव्याप्ति	183	6	अभ्युदित	121	55	अम्बष्ठ	66	74
अभिशस्त	172	43	अभ्युपगम	25	5		68	85
अभिशाप	29	11	अभ्युपपत्ति	185	13		78	141
अभिषङ्ग	192	24	अभ्यूष	147	47	अम्बा	33	14
अभिषव	120	47	अभ्र	15	1	अम्बिका	9	37
	165	42		15	7	अम्बु	40	4
अभिषक्ति	117	32	अभ्रक	156	100	अम्बुकण	16	12
अभिषेणन	136	96	अभ्रपुष्प	58	30	अम्बुज	64	61
अभिष्टुत	182	110	अभ्रमातङ्ग	10	46	अम्बुभृत्	15	7
अभिसंपात	138	106	अभ्रमुवल्लभ			अम्बुवेतस	58	30
अभिसर	133	72	अभ्रि	41	13	अम्बुसरण	41	11
अभिसारिका	93	10	अभ्रिय	16	8	अम्बूकृत	30	20
अभिहार	185	17	अभ्रेष	126	25	अम्भस्	40	4
अभिहित	182	108	अमत्र	145	33	अम्भोरुह	45	41

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
अन्तरिक्ष	15	1	अपकारगी	29	14	अपाङ्ग	106	94
अन्तरिप	41	8	अपक्रम	139	113		191	21
अन्तरीय	109	117	अपघन	103	70	अपान	13	63
अन्तरे	229	11	अपचय	185	16		103	63
अन्तरेण	229	11	अपचायित }	181	102	अपामार्ग	69	89
	228	3	अपचित }			अपावृत	168	15
अन्तर्गत	179	87	अपचिति	118	34	अपासन	139	115
अन्तर्द्वार	50	14		198	67	अपि	226	250
अन्तर्धा }	16	13	अपटान्तर	176	68	अपिधान	16	13
अन्तर्धि }			अपटु	101	58	अपिनद्ध	132	66
अन्तर्मनस्	167	8	अपत्य	96	28	अपूप	147	48
अन्तर्वत्नी	95	22	अपत्रपा	34	23	अप्याति	13	61
अन्तर्वाणि	167	6	अपत्रपिष्णु	170	28	अपित्त	12	56
अन्तर्वंशिक	123	8	अपथ }	48	17	अप्रकाण्ड	54	9
अन्तावसायिन्	159	10	अपथिन् }			अप्रगुण	176	72
अन्तिक	176	68	अपदिश	15	6	अप्रत्यक्ष	177	79
अन्तिकतम	176	69	अपदेश	36	33	अप्रधान	175	60
अन्तिका	144	29		220	217	अप्रहत	46	5
अन्तेवासिन्	114	11	अपध्वस्त	171	39	अप्राग्र्य	175	60
	161	20	अपभ्रंश	28	2	अप्सरस्	4	11
अन्त्य	178	81	अपयान	139	113		11	52
अन्त्र	102	66	अपरस्पर	183	1	अफल	54	7
अन्दुक	128	42	अपराजिता	72	104	अबद्ध	30	20
अन्ध	101	61		80	150	अबद्धमुख	171	36
	203	103	अपराद्धपृषत्क	132	69	अबन्ध्य	53	6
अन्धकरिपु	8	34	अपराध	126	27	अबला	91	2
अन्धकार }	37	3	अपराह्ण	20	3	अबाध	178	84
अन्धतमस }			अपर्णा	9	37	अब्ज	17	15
अन्धस्	147	48	अपलाप	30	17		193	32
अन्धु	43	26	अपवर्ग	26	7	अब्जयोनि	5	17
अन्न	147	48	अपवर्जन	117	30	अब्द	23	20
	182	111	अपवाद	29	13		201	88
अन्य }	178	83		201	89	अब्धि	40	1
अन्यतर }			अपवारण	16	13	अब्धिकफ	157	105
अन्वक्ष }	177	79		206	125	अब्रह्मण्य	33	14
अन्वक् }			अपशब्द	28	2	अभय	83	165
अन्वय }	113	1	अपष्टु	178	84	अभया	64	59
अन्ववाय }			अपश(स)द	160	16	अभाषण	118	36
अन्वाहार्य	117	31	अपसव्य	178	84	अभिक	169	24
अन्विष्ट	181	105	अपस्कार	130	56	अभिक्रम	237	97
अन्वेषणा	117	32	अपस्नात	168	19	अभिख्या	211	156
अन्वेषित	181	105	अपहार	185	16	अभिग्रह	195	13
अप् (आपः)	40	3	अपांपति	40	2	अभिग्रहण	185	12

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
अधिरथक्का	52	7	अनन्यवृत्ति	178	80	अनुताप	35	25
अधिप	167	11	अनय	209	149	अनुत्तम	174	57
अधिभू			अनर्थक	30	20	अनुत्तर	216	191
अधिरोहणी	51	18	अनल	12	54	अनुनय	230	18
अधिवासन	112	134	अनवधानता	35	30	अनुपद	177	79
अधिविन्ना	92	7	अनवरत	14	66	अनुपदीना	163	31
अधिश्रयणी	144	29	अनवस्कर	174	56	अनुप्लव	133	72
अधिष्ठान	206	126	अनवरार्ध्य	174	57	अनुबन्ध	202	98
अधीन	168	16	अनस्	130	53	अनुबोध	110	122
अधीर	170	26	अनागतार्तवा	92	8	अनुभव	186	7
अधीश्वर	122	2	अनातप	211	158	अनुभाव	34	21
अधुना	230	24	अनादर	34	22		219	210
अधृष्ट	170	26	अनामय	99	50	अनुमति	21	8
अधोंशुक	109	117	अनामिका	104	82	अनुयोग	29	10
अधोक्षज	6	21	अनायासकृत	180	95	अनुरोध	124	12
अधोभुवन	37	1	अनारत	13	65	अनुलाप	30	16
अधोमुख	171	33	अनार्यतिक्त	79	143	अनुलेपन	235	53
अध्यक्ष	123	6	अनाहत	109	112	अनुवर्तन	124	12
	221	226	अनिमिष	220	219	अनुवाक	234	17
अध्यवसाय	35	29	अनिरुद्ध	7	27	अनुशय	209	148
अध्यात्म	209	144	अनिल	4	10	अनुष्ण	161	19
अध्यापक	114	7		13	62	अनुहार	185	17
अध्याहार	25	3	अनिश	13	65	अनूक	190	13
अध्यूढा	92	7	अनीक	134	79	अनूचान	114	10
अध्येषणा	117	32		138	106	अनूनक	175	66
अध्वग	125	17	अनीकस्थ	123	6	अनूप	47	10
अध्वनीन			अनीकिनी	134	79	अनूरु	19	33
अध्वन्	48	15		134	82	अनृजु	172	46
अघ्न्य	125	17	अनु	225	249	अनृत	30	21
अध्वर	115	13	अनुक	169	23		140	2
अध्वर्यु	115	17	अनुकम्पा	34	18	अनेकप	127	35
अनक्षर	30	21	अनुकर्ष	131	58	अनेडमूक	171	38
अनङ्ग	7	25	अनुकल्प	119	40	अनेहस्	20	1
अनच्छ	42	14	अनुकामीन	133	77	अनोकह	53	5
अनडुह्	149	60	अनुकार	185	17	अन्त	139	118
अनन्त	15	1	अनुक्रम	118	36		178	81
	38	4	अनुक्रोश	34	18	अन्तःपुर	50	11
	200	81	अनुग	177	79	अन्तक	13	59
अनन्ता	46	2	अनुग्रह	185	13	अन्तर	215	188
	70	92	अनुचर	133	72	अन्तरा	229	21
	78	137	अनुज	98	43	अन्तराभवसत्त्व	207	132
	82	149	अनुजीविन्	123	9	अन्तराय	185	19
अनन्यज	7	26	अनुतर्षण	165	43	अन्तराल	15	6

	Page	Stanza		Page	Stanza		Page	Stanza
अच्युताग्रजः	6	23	अणिमन्	9	36	अतिसारकिन्	101	59
अच्छ	42	14	अणीयस्	175	62	अतिसौरभ	59	33
अच्छभल्ल	85	4	अणु	143	20	अतीक्ष्ण	202	94
अज	152	76		175	62	अतीत	230	18
	193	30	अण्ड	90	38	अतीतनौक	42	14
अजगन्धिका	78	140	अण्डकोश	104	76	अतीन्द्रिय	177	79
अजगर	38	5	अण्डज	42	17	अतीव	227	2
अजगव	8	35		89	34	अत्तिका	33	15
अजन्य	138	110		173	51	अत्यध्यक्ष	177	79
अजमोदा	79	145	अतट	52	4	अत्यन्तकोपन	170	32
अजशृङ्गी	75	120	अतर्कित	228	8	अत्यन्तीन	133	77
अजस्र	14	66	अतलस्पर्श	42	15	अत्यय	139	117
अजहा	69	87	अतसी	143	20		210	150
अजा	152	76	अति	228	5	अत्यर्थ	14	66
अजाजी	145	36		224	242	अत्यल्प	175	62
अजाजीव	159	11	अतिक्रम	187	33	अत्याहित	199	77
अजित	197	62		210	150	अत्रि	19	28
अजिन	120	46	अतिचरा	79	146	अथ }	225	248
अजिनपत्त्रा	88	27	अतिच्छत्त्र	83	167	अथो }		
अजिनयोनि	85	8	अतिच्छत्रा	80	152	अदभ्र	175	63
अजिर	50	13	अतिजव	133	74	अदर्शन	186	22
	214	182	अतिथि	118	34	अदितिनन्दन	3	8
अजिह्म	176	72	अतिनिर्हारिन्	26	10	अदृश्	101	61
अजिह्मग	135	87	अतिनु	42	14	अदृष्ट	127	31
अज्जुका	33	11	अतिपथिन्	48	16	अदृष्टि	37	38
अज्झटा	76	127	अतिपात	118	37	अद्धा	229	13
अज्ञ	171	38		187	33	अद्भुत	33	17
	173	48	अतिप्रसिद्ध	220	219		34	19
अज्ञान	26	7	अतिमात्र	14	66	अद्यर	169	20
अञ्चित	180	98	अतिमुक्त	66	72	अद्य	230	21
अञ्जन	15	5	अतिमुक्तक	57	26	अद्रि	51	1
अञ्जनकेशी	76	130	अतिरिक्त	177	76		212	164
अञ्जलि	105	85	अतिवक्तृ	171	35	अद्वयवादिन्	5	14
अञ्जसा	227	2	अतिवाद	29	14	अधम	174	54
	229	13	अतिविषा	71	100		209	144
अटनी	135	85	अतिवेल	14	66	अधमर्ण	141	5
अटरूष	72	104	अतिशक्तिता	137	104	अधर	106	90
अटवी	53	1	अतिशय	14	66		216	190
अटाट्या	118	35		184	11	अधिकर्द्धि	167	11
अट्ट	50	12	अतिशस्त	194	41	अधिकाङ्ग	131	64
	207	131	अतिशोभन	174	58	अधिकार	127	32
अणक	174	54	अतिसंस्कृत	200	81	अधिकृत	123	6
अणि	130	57	अतिसर्जन	187	28	अधिक्षिप्त	172	42

II

Index of words in Kshirasvâmin's text of Amarakosha.

	Page	Stanza
अ	229	12
अंश	154	89
अंशुक	109	115
अंशुमती	74	116
अंशुमत्फला	74	113
अंस	104	78
अंसल	98	44
अंहति	117	30
अंहस्	23	23
अकराणि	188	39
अकूपार	40	1
अकृष्णकर्मन्	172	46
अक्ष	64	59
	146	43
	154	86
	165	45
अक्षत	147	47
अक्षदर्शक	123	5
अक्षदेविन् / अक्षधूर्त	165	44
अक्षर	214	183
अक्षरचण / अक्षरचुञ्चु	124	15
अक्षरविन्यास	125	16
अक्षवती	165	45
अक्षाग्रकीलक	130	57
अक्षान्ति	35	24
अक्षि	106	93
	235	22
अक्षिकूटक	178	39
अक्षिगत	172	45
अक्षीव	58	31
	146	41
अक्षोट	58	29
अक्षौहिणी	134	82
अखण्ड	175	66
अखात	43	27
अखिल	175	65

	Page	Stanza
अग	191	19
अगद	99	50
अगदंकार	100	57
अगम	53	5
अगस्त्य	17	21
अगाध	42	15
अगार	49	5
अगुरु	111	126
अगुरुशिंशपा	64	63
अग्नायी	116	21
अग्नि	12	53
अग्निकण	12	57
अग्निचित्	114	12
अग्निज्वाला	76	125
अग्नित्रय	116	20
अग्निभू	9	39
अग्निमन्थ	65	66
अग्निमुखी	61	43
अग्निशिख	110	124
अग्निशिखा	75	119
	78	137
अग्न्युत्पात	21	10
	197	98
अग्र	174	58
	215	184
अग्रज	98	43
अग्रजन्मन्	113	4
अग्रतस्	225	247
	228	8
अग्रतःसर	133	73
अग्रमांस	102	64
अग्रिय	98	43
	174	58
अग्रीय	178	58
अग्रेदिधिषू	95	23
अग्रेसर	133	73
अग्र्य	174	58

	Page	Stanza
अघ	23	23
	192	27
अघमर्षण	120	47
अघ्न्या	150	67
अङ्क	17	17
	189	4
अङ्कुर	53	4
अङ्कुश	128	42
अङ्कोट	58	29
अङ्क्य	32	5
अङ्ग	103	70
	228	7
	230	20
अङ्गद	108	107
अङ्गन	50	13
अङ्गना	91	3
अङ्गविक्षेप	33	16
अङ्गसंस्कार	110	121
अङ्गहार	33	16
अङ्गार	114	30
अङ्गारक	18	26
अङ्गारधानिका	144	29
अङ्गारवल्लरी	62	49
अङ्गारवल्ली	69	90
अङ्गारशकटी	144	29
अङ्गीकार	25	5
अङ्गीकृत	182	109
अङ्गुलिमुद्रा	108	108
अङ्गुली	104	82
अङ्गुलीयक	108	107
अङ्गुष्ठ	104	82
अङ्घ्रि	103	71
अङ्घ्रिपर्णिका	70	93
अचण्डी	151	70
अचल	51	1
अचला	46	2
अचिक्कण	221	226
अच्युत	6	19

	Page	Stanza
स्तूप	235	19
स्त्येन	162	25
स्त्रीचिह्न	104	76
स्थण्डिल	115	18
स्थपति	156	9
स्थपुट	182	113
स्थला	46	5
स्थविर	5	17
स्थानक	135	86
स्थाल	144	31
	237	32
स्थिति	200	85
स्थूल	110	120
स्नसा	102	66
स्नातक	114	10
स्नुहा	72	106
स्नेहाश	112	138
स्फुलिङ्ग, स्फुलिङ्गा	12	57
स्मरगृह	104	76
स्यात्	230	19
स्याद्वादिक	113	6
स्याल	96	32
स्रुच्	116	24
स्रुवा	68	84
स्वज	7	26
स्वधिति	132	71
स्वरुस्	10	47
	213	169
स्वर्जिकाक्षार	157	109
स्ववासिनी	92	9
स्वादुरसा (3)	79	144
	164	40
स्वामिन्	9	40
हंसपदी	75	119
हंसपाद	157	105
हंहो	228	7
हह	234	18
हत्वर्तनी	49	2
हनुमत्, हनूमत्	122	2
हम्भा(म्बा)राव	151	73
हरित्	235	19
हरिताल	237	32
हरिद्राराग	182	111
हरितकी	55	18
हर्यक्ष	14	69
हविष्य	149	52
हस्तधारण, हस्तवारण	183	5
हस्तसूत्र	108	107
हस्त्यारोह	131	61
हान	188	43
हारहूर	164	40
हारहूरा	73	108
हारिन्	173	52
हाल	122	2
	218	207
हालहल, हालाहल	38	10
हालाहल	86	13
हिंसा	138	118
हिक्का	232	8
हिंगुल, हिंगुलु	235	20
हिंगुलक	157	105
हिडिम्बजित्	122	2
हिन्दोला	130	54
हिण्डीर	156	105
हिमवत्	47	6
हिमाचल	52	3
हुं	230	20
हुड	152	76
हुडुका	32	8
हूं	230	20
हृच्छय	7	26
	212	162
हय	30	21
हयगन्धा	146	42
हेमकूट	47	6
हेमपुष्पिका (3)	66	72
हेममुष्टिक	159	8
हेला, हेलि	218	207
हैमवती (3)	78	138
हैयंगवीन	149	52
होरा	233	10
ह्रादिनी	44	30
ह्राद	43	25

I

Index of additional words given by Kshirasvâmin, as well as those of Amarasimha which are specially remarked upon in the Commentary.

		Page	Stanza
सरक		165	43
सरघा		73	108
सरणी		81	153
सरलि		105	86
सरध्वज		40	2
सरयू		44	35
सरस्वती		44	30
सर्वज्ञ		5	15
सवेला		136	94
		198	66
सविमा		231	2
सव्य		178	84
सव्यसाचिन्		122	2
सहचरी		92	6
सहन		35	24
सहस्रदोस्		122	2
सहस्रवेधिन्	(3)	78	141
सहा	(3)	66	74
	(3)	74	114
सहृदय		166	3
साकेत		49	2
सागरमल		157	105
सागराम्बरा		46	3
साध्य		113	6
सातवाहन		122	2
साति		232	9
सातीनक		142	16
सात्वन		6	24
		120	50
सात्त्विक		119	44
सान्तपन		121	52
सान्त्वना		188	43
सांन्यासिक		119	42
साप्तपदीन		124	12
सामज		127	36
सामवायिक		123	4
सामि		17	16
सामुद्रिक		14	14
सांपरायिक		130	52
सांप्रत		126	26
सांनातुर		59	25
सायम्		20	3
सारघ		157	107

		Page	Stanza
सारणी		44	34
		81	135
सारसन		110	120
सार्पिष्क		147	45
सालभञ्जिका		162	29
सालूर		43	24
साहस		125	21
साहसाङ्क		122	2
सिंह		19	28
सिंहतल		105	85
सिंहद्वार		51	16
सिंहान		155	98
सिंघाण			
सिंघाणी		105	89
सिंघिणी			
सिचय		109	115
सिञ्जिनी		108	108
सित		155	96
सितद्रु		44	33
सिद्धसिन्धु		11	49
सिद्धान्तिन्		120	50
सिद्धार्थ		5	15
सिध्मला		233	10
सिध्रका		232	8
सिन्दूर		237	31
सिन्धुर		127	36
सीमन्त		235	18
सीस		156	99
सीमपन्थ		157	105
सुकेशी		11	51
सुकृण		31	25
सुकाण			
सुग्रीव		122	2
सुगा		72	106
सुधाभूति		17	15
सुधामूर्ति			
सुनिर्मथित		182	111
सुमुख		171	35
सुम्य		162	27
सुरगज		10	46
सुरङ्गा		232	8
सुरत		122	57
सुरभि	(3)	75	121

		Page	Stanza
सुराजीविन्		159	10
सुवहा	(3)	66	71
	(3)	78	140
सुधाकरी		151	70
सुत्वा		75	124
सुहृदय		166	3
सूपि		232	8
सूनृत		24	26
सूर्यकान्त		155	93
सूर्यमण्डल		19	33
सृक्विन्		106	91
सृक्कन्			
सृगाली		73	110
सेक्तृ		91	35
सेव्य	(2)	83	165
सेता		44	33
सैरन्ध्री		31	4
सोत्कण्ठ		167	8
सोत्प्रास		30	21
सोमपीतिन्		114	9
सोमवत्		114	8
सोमवल्क	(3)	62	51
सोमवल्ली	(3)	78	138
सोमसंस्था		114	8
सोमसिद्धान्तिन्		120	42
सोल्लुण्ठन		30	21
सौखशायिक		137	98
सौगत		113	6
सौगन्धिक	(3)	83	167
सैनिक		160	14
सौमिक		138	111
सौम्य		121	51
सौर		18	27
सौराष्ट्रक		155	97
सौवस्तिक		123	5
सौहार्द		124	12
सौहृद			
सौहृदय			
स्कन्धावार		127	34
स्कान्धिक		149	61
स्तनंधय		98	41
स्तनप			
स्तम्ब		143	21

		Page	Stanza
शृङ्गी		155	96
शेपस्		104	76
शेफालिका		232	7
शेलुक		59	35
शेवल		45	38
शैल्य		212	162
शैव		120	50
शैवल		45	38
शैवाल			
शौणक		63	58
शौनक			
श्यान		182	113
श्यामक		143	20
श्यामाक			
श्येता		27	17
श्येनी			
श्रन्थन		188	43
श्रमण		120	50
श्रव्य		30	21
श्रावक		120	50
		137	98
श्रीखण्ड		111	131
श्रीद		14	69
श्रीविष्ट		111	129
श्रीवेष्ट			
श्रेणि		125	18
श्रेयसी	(3)	64	60
श्रोत्र		106	94
श्लथ		175	66
श्लाघा		30	17
श्लिष्टसंपृक्त		182	113
श्लील		168	14
श्लीपद		100	56
श्वपच		161	20
श्वभ्र		37	2
श्वापद		86	11
श्वन		47	6
श्वेत		120	50
श्वेतपट			
श्वेतक		154	88
श्वेतवाजि		122	2
श्वोवसीय		24	25

		Page	Stanza
षष्ठी	(2)	81	154
		77	135
		81	155
षडार्द्धिक		120	42
षड्गव		152	77
षण्ड		97	39
षण्ढ			
षष्टिक		141	7
		143	24
षिड्ग		169	24
षोडत्		149	61
संसक्त		14	66
संस्कार		25	2
संस्कृत		182	111
संस्त्यायु		49	6
संस्था		138	118
		201	88
संस्थान		48	17
संस्थानक			
संस्फेट		138	106
संहनन		105	85
संहार		23	22
		39	2
सक्तु		147	47
संकथा		30	16
संक्रम		48	14
		186	25
संक्राम		186	25
संख्या		25	2
संख्यान			
संगम		237	34
संघात		39	2
संघातमृत्यु		101	58
सजूः		228	4
संज्वन		49	9
सती		9	37
सत्त्रशाला		50	8
सत्यवतीसुत		118	36
सद्यस्क		177	78
सध्रीची		93	12
सनत्		230	18
सनात्			
सनात्कुमार		11	51

		Page	Stanza
संतति		96	28
संतान			
संदर्भ		188	43
संदानित		179	86
संधि		125	19
संधिनी		151	69
संनाह्य		128	37
संनिवेश		51	19
सभ शूर		115	16
सम		55	17
सुन			
समङ्गा		78	142
समपाद		135	86
समर्थक		166	7
समर्धुक			
समाङ्गा		78	142
समाज्ञा		29	11
समाधान		25	2
समाहित		100	85
समित्			
समीचीन		30	21
समुद्रक		234	17
समुद्र		153	84
समुद्रनवनीत		11	48
		17	15
समुद्रान्ता	(3)	74	116
	(3)	77	134
समुद्गिका		41	14
समुद्गय			
समूहनी		51	18
संपरायक		138	105
संप्रधारणा		126	26
संप्रयोग		122	57
संफेट		138	106
संबाध		203	104
संमुखीन		171	33
संमोहन		122	57
संयमित		179	86
संवाहक		159	10
संवीक्षण		187	30
संवेशन		122	57
सर		108	105
सरि			

	Page	Stanza
शकान्तक	122	2
शकार	160	16
शकुल	42	17
शङ्कर	149	60
शक्त	171	36
शक्ति	125	19
शक्रनन्दन	122	2
शक्र	171	36
शङ्कु	153	84
शङ्कुकर्ण	152	77
शङ्ख	14	71
शटी	77	135
	81	154
शण्ड	97	36
शण्ढ		
शण	143	20
	142	15
शतधृति	5	17
शतपर्विका (3)	72	103
शतमान	238	34
शतानन्द	5	17
शनि	18	27
शफ	207	132
शम	104	81
शमि	143	23
शम्बल	125	17
	238	34
शम्बा	16	9
शम्या	31	4
शयनक	130	54
शयानक	86	13
शर	149	51
शरच्चन्द्रिका	45	43
शरध्वज	40	2
शल्क	85	7
शलल		
शल्यक		
शल्किन्	42	17
शल्यारि	122	2
शवर	161	21
शशोर्ण	157	107
शष्कुली	147	47
	218	207

	Page	Stanza
शसन	116	26
शाक	77	136
शाकशाकट	141	8
शाकशाकिन		
शाक्कर	149	60
शाङ्कर		
शाक्त	120	42
शाक्य	5	15
	120	50
शाटक	237	33
शाटी	120	50
शाण	233	9
शाणी		
शातकुम्भ	155	94
शाद्वल	47	10
शान्त	33	17
शान्ति	183	3
शाप	29	9
	30	17
शारिका	88	26
	232	8
शार्ङ्गक	204	106
शार्वर	215	189
शालाजिर	144	32
शालि	142	15
शालिवाहन	122	2
शालीन	72	105
शालीवर	174	58
शाश्वतिक	176	73
शाष्कल	168	19
शासन	206	129
शिक्यित	179	90
शिक्षित		
शिखण्ड	195	44
शिखण्डिन्	90	36
शिखा	54	11
शिखिन्	19	27
	87	18
शिङ्घाण	155	98
शिञ्जा	30	24
शित	179	91
शितद्रु	44	33
शिथिल	175	66

	Page	Stanza
शिफा	207	132
शिम्बि	143	23
शिरसिज	106	95
शिरोगृह	50	8
शिल	143	21
शिला	157	108
शिवंकर	166	2
शिवताति		
शिवा	85	5
शिवी	9	37
शीतलवातक	80	149
शीतशिव (2)	75	123
शीधु	237	34
शीन	182	113
शुक	77	133
शुकबर्ह		
शुकमालक,	64	63
शुक्त	146	39
शुक्लापाङ्ग	89	31
शुचि	33	17
	120	45
शुद्धमार्गिक	120	50
शुद्धान्त	50	12
शुन्य	174	56
शुभ्रदन्ती	15	5
शुम्य	162	27
शुल्क	191	18
शुल्व	155	97
	162	27
शुषिर	31	4
शुष्मन्	12	54
	137	103
शूद्रक	122	2
शून्यवादिन्	113	6
शूर	19	32
शूरण	81	157
शूर्प	154	88
शूषा	45	38
शृगालिका	73	110
शृङ्खल	128	42
शृङ्गारयोनि	7	26
शृङ्गीवत्	47	6

	Page	Stanza
विग्रह	125	19
विचार	25	2
विच्छन्दक / विच्छर्दक	50	11
विजय	122	2
	233	11
विज्जल	147	46
विट	169	24
	234	17
वितण्डा	232	9
वितर्क	188	43
विधुर	13	60
विदग्ध	169	24
विदल	237	32
विदिशा	49	2
विदेहा	49	2
विनीत	129	45
विनीय	190	14
विनोद	188	43
विपथ	48	16
विपरीत	178	84
विपर्यय	118	37
विपुला	46	3
विप्रतिसार	35	25
विभ्रत	20	3
विमर्श	25	2
विमान	130	53
विरह	186	28
विरागार्ह	182	111
विरिंचि	5	17
विरूढ / विरूढक	77	136
विलग्न	104	79
विलास	85	6
विलीनाह्वा	88	23
विलोचन	106	93
विलोम	178	84
विवध	160	15
विवेक	118	38
विशसन	138	117
विशल्या (3)	68	83
विशाख	80	149
विशाखिका	118	35

	Page	Stanza
विशाला	81	157
विशिखा	49	3
विशेषदश्	120	42
विश्व / विश्वा	145	38
विश्वामित्र	118	36
विषुण	22	14
विष्कम्भ / विष्कम्भी	51	17
विष्णुवल्लभा	80	151
विसंवाद	186	28
विसूरित	188	43
विस्पष्ट	30	21
विहंगमा / विहंगिका	163	33
वीचि / वीची	40	5
वीचिमालिन्	40	2
वीटा	112	138
वीतदम्भ	182	111
वीतराग	5	15
वीथि / वीथी	50	13
वीरप्रसू	94	16
वुक	68	82
वुक्कन् / वुक्का	102	64
वृक	84	1
वृकनिखता / वृकी	68	85
वृकोदर	122	2
वृक्कन् / वृक्का	102	64
वृक्षगन्धा (3)	78	137
वृक्षरोहा	68	82
वृद्ध	182	113
वृद्धकाक	87	22
वृद्धि	141	5
वृश्चन	163	33
वृश्चिक	19	28
वृष्णि	20	34
वेग	13	64

	Page	Stanza
वेणी	44	35
	197	57
वेतन	140	1
वेताल	235	21
वेत्रिन्	123	6
वेदना	206	129
वेदान्तिन्	113	6
वेष	222	229
वेश	49	2
	107	99
वेश्यापति	169	24
वैकटिक	159	8
वैकृतक	155	98
वैखानस	113	3
वैडूर्य / वैदूर्य	155	93
वैद्य	212	162
वैमनस्य	39	3
वैरागिक	182	111
वैरोचन	122	2
वैशाख	135	86
वैशेषिक	113	6
वैष्णव	120	42
	135	86
वोटा	94	16
व्यञ्जन	147	44
	162	25
व्यड्म्बक / व्यडम्बन / व्यड्म्बर	62	52
व्यलीक	162	25
व्यवाय	212	162
व्यसनिन्	169	24
व्यक्ति	205	120
व्यायाम	11	47
व्यापादन	138	117
व्याप्य	76	126
व्याली	216	197
व्यास	118	36
व्युत्पन्न	182	111
व्यूढ	20	3
व्रीड	35	23
शंसित	182	111

	Page	Stanza
लुलित	179	87
लेलिहान	38	8
लोकबन्धु लोकबान्धव	19	32
लोकायत	237	32
लोचमर्कट	73	112
लोध्र	58	33
लोला	106	91
लोहाभिहार	136	95
लोहिता-नी	27	17
लौकायानिक	113	6
वक वकोट	88	23
वक्र	18	26
	40	7
वक्षोरुह	104	77
वचनीयत्व	188	43
वप्र	155	93
वज्रज्वाला	16	10
वञ्जुल (3)	57	27
(3)	64	65
वटक	234	17
वटाकर वटी वटागुण	162	27
वणिज्य वणिज्या	140	2
वण्ड	99	49
वत्	228	10
वतंस	222	228
वत्स	221	227
वत्सल	33	17
वदन्य	166	6
वधूटी	92	9
वधूटिका	147	49
वन	53	2
वनशृङ्गाट	71	99
वन्दक	120	42
वन्दनमालिका	51	16
वन्दनी	63	56
वन्दी	140	120
वपन	120	50
वप्तृ	96	23

	Page	Stanza
वयस्या	63	59
वरण	197	57
वरण्ड	235	18
वर वरयितृ	97	35
वरला	88	26
वरा	158	111
वर्कर	36	33
वर्चक	69	90
वर्णपरिस्तोम	128	43
वर्णपुष्प	66	74
वर्ध्य	110	124
वर्तक वर्तिक	90	36
वर्तक वर्तलोह	155	97
वर्तन	140	1
वर्ति	109	114
वर्धना	51	18
	144	31
वर्धमान	50	10
वर्ध्री	163	31
वर्वर	160	16
वर्हित	182	113
वलज	51	16
	143	21
वलभी	50	15
वलित	179	88
वल्गु	173	52
वल्गुलिका	88	27
वल्ल	143	20
वंशिका	110	126
वसति	49	6
वसिर (3)	71	98
	146	41
वसु	155	95
वसुक वस्तक	146	42
वहंलिह	150	63
वाचिक	33	16
वाच्य	211	160
वाज	13	64
वाजपेय	237	31

	Page	Stanza
वाट वाटी	49	3
वाटी	239	42
वाडवेय	149	60
वादाल	42	18
वार्ध्रीणस	85	4
वानायु	85	8
वानायुज	129	46
वान्त	100	57
वाप	141	10
वापदण्ड वायदण्ड	162	28
वामस्रोतसिक	120	42
वारणवुषा	73	114
वारबाण	131	64
वाराणसी	49	2
वार्त	100	57
वार्ताक	74	114
वार्दल	16	12
वार्द्धक	97	40
	191	18
वार्द्धपि वार्द्धषिन्	141	5
वार्मण	188	43
वाल्मीकि	118	36
वासतेयी	21	4
	49	6
वासना	25	2
वासिता	199	75
वास्तु	233	13
वाहद्विषत्	85	4
वाह्लिक वाह्लीक	129	46
वाह्लीक	110	124
विकट	175	61
विकटघोण	99	47
विकत्थन	30	17
विकल्प	25	2
विकल्पन	188	43
विकारिका	71	100
विक्रमादित्य	122	2
विकुष्ट	30	19
विगान	188	43

		Page	Stanza
यष्टि		108	105
याज्ञसेनी		122	2
यादःपति		13	61
यान		125	19
यानपात्र		41	14
यामल		120	42
याम्य		174	54
युग		130	54
युगंधर		238	35
युगात्यय		23	22
युगाद्युग		131	58
युधिष्ठिर		122	2
यूप		235	19
यूष		238	35
येन		228	3
योग		119	39
योग्य		212	162
योजन		237	30
रक्तधातुक		155	97
रक्तमाल		61	48
रक्ताम्बर		120	42
रक्तिका		71	98
रचना		188	43
रजक		159	10
रजनी		146	41
रजनी } रञ्जनी		72	102
रजस्वल		85	4
रजोवारणी		51	18
रञ्जक		86	15
रति		122	57
रत्नगर्भा } रत्नवती		46	3
रथाङ्गाह्वय } रथाङ्गनामन्		88	23
रधिर		133	77
रथ्यामृग		161	22
रभस		235	21
रमा		7	27
रम्भा		11	51
रल्लक		234	17
रवण		151	75

		Page	Stanza
रस } रसगन्ध		156	104
रसजात } रसाग्र्य		156	102
रसा	(3)	68	85
रसित		16	9
रहस्		122	57
राघव		122	2
राजधानी		49	1
राजयक्ष्मन्		99	51
राजवाह्य		128	37
राजशालि		143	24
राजसभा		233	9
राजसर्प		38	8
राजसूय		237	31
राजादन	(2)	59	35
राधेय		122	2
राम		122	2
राला		111	127
रावण		122	2
रावणहस्त		31	4
रावणारि		122	2
रिङ्खण		37	36
रिष्ट		143	23
रिष्टताति		166	2
रिश्य(ष्य)		161	21
रुचक		50	10
	(4)	67	79
रुचि		148	54
रुण्ड		138	119
रुद्राङ्कुश		118	35
रुमा		48	1
रुषत्		30	18
रेचनी		73	109
		79	147
रे		228	7
रेफ		160	16
		207	132
रेवती		8	35
रोगहारिन्		100	57
रोचक		148	54
रोचनी		79	147

		Page	Stanza
रोदसी } रोदस्यौ		48	1
रोपोवक्षा		44	30
रोध्र		58	33
रोमन्थ		235	19
रोमविक्रिया } रोमहर्षण		36	35
रोलम्ब		89	30
रोषण		170	32
रोहिणीश } रोहिणीसख		17	15
रोहित		16	11
लक्ष		221	227
लक्ष्मण		88	23
		122	2
लक्ष्मणी		88	26
लगुड		235	18
लङ्का		232	7
लङ्कापति		122	2
लब्धा		126	29
लट्वा		233	10
लता	(3)	80	150
		54	9
		54	11
		108	105
लम्पट		169	22
लवणाकर		48	1
लवणानुसर		81	155
लवतर्क		80	148
लहरी		40	6
लाङ्गल		1:0	42
लाक्षा		233	10
लाञ्छन		206	129
लाभ		141	5
लालस		169	22
लिक्षा		233	10
लिखिता(त) } लिवि		125	16
लिपिकर } लिविकर		124	15
लुब्धक		191	18
लुलाप } लुलाय		85	4

		Page	Stanza
मन्दर		52	2
मन्दारव		35	23
मन्दोदरीसुत		122	2
मन्यु		35	25
ममता		34	22
मयूरक	(3)	73	112
मरक		101	58
मरुत्		77	133
मरुवक	(2)	62	53
मर्कटी	(3)	62	49
मर्कटवल्ली	(3)	71	98
मर्मन्		237	30
मर्ष		35	24
मल्य		52	3
मल्यू		64	62
मलम्बिम्र		100	53
मल्लिक मल्लिकाख्य		88	25
मल्लिका		145	32
मस्		16	14
		22	12
मसी		233	10
मह		85	4
महाकाल		233	11
महानट महानाद		8	34
महानन्द		26	7
महानिशा		21	4
महापद्म		14	71
महाबल		13	63
महाबिल		15	2
महाब्ज		153	84
महामनस्		266	3
महामार्ग महाव्रतिन्		120	42
महाश्वेता	(3)	73	111
महासर्ग		64	61
महासहा		74	114
महास्नायु		102	66
महिका		17	19
महेला		91	2
महोदया महोदय		49	2

		Page	Stanza
महौषधम्	(3)	71	100
मा		7	27
माढि		55	14
माठी		232	8
माणिक्य		237	31
माणिमन्थ		146	42
मातृष्वसृ		171	38
मातृशासित		171	38
		173	48
माध्वीक		164	41
मारुतात्मज मारुति		122	2
मारि मारी		101	58
मार्जनी		51	18
		168	17
मार्तण्ड मार्तोण्ड		19	30
मार्ष		33	14
मालक		51	20
मालभट		161	21
माला		77	133
माष		142	15
मार्षीण माष्य		141	7
मासूरिण		141	8
माहाराजिक		4	10
मिथिला		49	2
मिथुन		19	28
मीनक		19	28
मीमांसक		113	6
मुकुन्द		14	71
मुख		37	39
मुखविष्टा		88	27
मुञ्जकेश		6	22
मुण्ड		237	34
मुण्डक		195	44
मुण्डन		120	50
मुण्डमाला		112	135
मुण्डा		150	67
मुद्ग		142	15
मुशली		86	13

		Page	Stanza
मुषित मुष्ट		182	113
मुस्त मुस्ता		82	160
मूर्धज		106	95
मूर्धावसिक्त		122	1
मूलनगर		49	1
मृगव्या		161	23
मृगादि		129	46
मृत		161	20
मेखलतरु		72	106
मेखला		52	5
मेघनाद		122	2
मेघाध्वन्		15	2
मेधिका		16	8
मेथि मेधि		142	15
मेनका		11	51
मेरु		47	6
मेला		70	95
मैत्रावरुण मैत्रावरुणि		118	36
मोचक	(3)	58	31
मोचनी		61	47
मोदक		237	33
मौकुलि		87	21
म्रक्षण		149	50
म्लान		174	55
यकृत्		102	65
		102	66
यज्ञोपवीत		120	50
यति		113	3
यथाकामिन्		168	15
यथाजात		160	16
यद्भविष्य		173	48
यद्वद		171	37
यम		120	49
यमजौ यमौ		11	51
यमानिका यवानिका		79	145
यमी		44	31
यवनेष्ट		80	148

	Page	Stanza
बुद्बुद	235	19
बुध	203	104
बुस्त	237	34
बुस्ति	147	47
ब्रह्मण्य	182	111
ब्रह्मरीति	155	97
ब्रह्मवादिन्	113	6
ब्रह्माणी	8	35
ब्राह्मणब्रुव	113	97
ब्राह्मणहित	182	111
ब्राह्मी	8	35
(2)	60	90
	155	97
भक्तकार	144	28
भक्ति	200	85
भग	19	32
भग्नव्रत	120	45
भङ्गुर	176	72
भङ्गि	232	8
भङ्ग्य	141	7
भटित्र	147	45
भण्डिर } भण्डी	64	64
भदन्त	120	42
भद्रपदा	18	23
भद्रा	74	117
भद्राकरण	120	50
भम्भा	32	6
भरिमन्	231	2
भल्ल	235	21
भल्लक	85	4
भल्लुक } भल्लूक	85	4
भवतुनाम	229	14
भवितव्यता } भविष्यत्	24	28
भव्य	212	162
भसल(न)	89	30
भस्मन् } भसित	12	56
भाग	17	16
भाङ्ग	108	111
भाङ्गीन	141	7

	Page	Stanza
भानुफला	74	113
भा(म)रुटक	147	45
भाल	106	92
भालूक	63	57
भावना	25	2
भाष्य	237	31
भिक्षु	120	42
भिण्डिपाल	136	92
भिल्ल	161	21
भिस्सा	147	48
भीत	170	26
भीम	209	145
भीमसेन	122	2
भुजंग	169	24
भुजंगभुज्	38	8
भुजा	104	80
भुटभेद	161	21
भूक्षुर	71	99
भूतधात्री	46	3
भूतनाशन	146	40
भूमिच्छाय	37	3
भूमिपिशाच	84	169
भूमिसृ	43	21
भूर्	46	2
भूरि } भूरिचन्द्र	155	95
भूषित	182	113
भूस्ति	147	47
भृङ्ग	80	152
भृङ्गरजस्	80	152
भृङ्गरिटि	9	41
भृङ्गिन्	9	41
	233	11
भृत	182	113
भृट	147	45
भैरव	8	34
भैरवी	9	37
भैरविन्	120	42
भोग	134	80
भ्रम	209	145
भ्रातृव्य	124	11
भ्रामर	157	107
मकर	14	71

	Page	Stanza
मकर	19	28
मकुट	107	102
मकुर	112	140
मखाग्नि	144	29
मघवन्	9	41
मङ्क्ष	137	98
मङ्गल्य	56	21
मच्छ	42	17
मज्जन	110	121
मञ्जरी	143	21
मञ्जीर	151	74
मञ्जुघोषा	11	51
मणिकार	159	8
मणित	30	21
मणिबन्ध	104	81
मणिमन्त(न्थ)	146	42
मण्डक	66	72
	147	48
मण्डुक	32	8
मण्डल	134	80
	135	86
मण्डलिन्	161	22
मतङ्गक } मत्तवारण } मत्तालम्ब	50	9
मत्स्यकरण्डिका } मत्स्यबन्धनी	42	16
मत्स्यण्डी } मत्स्याण्डी	146	43
मदन (3)	56	21
मदिष्ठा	161	40
मयदावनी	75	125
मद्र	31	2
मधु	55	17
मधुपर्णी (3)	70	95
मध्य	153	84
मध्वष्ठील	57	28
मध्यमपाण्डव	152	2
मनोगवी	35	27
मनोहारिन्	30	21
	173	52
मन्त्रशक्ति	125	19
मन्द	18	27

	Page	Stanza
प्रणव	188	43
प्रणाय्य	182	111
प्रणिधान	25	2
प्रणिपात	188	43
प्रतति	54	9
प्रतारण	162	25
प्रतिकाय }	164	36
प्रतिच्छन्द }		
प्रतिपत्ति	188	43
प्रतिरूप	164	36
प्रतिश्रय	50	8
प्रतिश्रित	182	113
प्रतिसर	108	108
प्रतिसूर्य	86	13
प्रतीष्ट	182	113
प्रतोली	51	16
प्रत्यक्श्रेणी (2)	79	145
प्रत्यनीक }	124	11
प्रत्यनीकिन् }		
प्रत्यवसान	149	56
प्रत्यवस्यातृ	124	11
प्रत्युत्क्रम }	186	26
प्रत्युत्क्रान्ति }		
प्रत्युत्पन्नमति	169	25
प्रत्युषम्	20	2
प्रदिश्	15	6
प्रद्योतन	19	32
प्रपात	200	85
प्रफुल्त }	54	7
प्रफुल्ल }		
प्रभावशक्ति }	125	19
प्रभुशक्ति }		
प्रमय	138	118
प्रमाण	153	85
प्रमातामह	96	33
प्रमीलन	138	118
प्रमृत	140	2
प्रमेह	100	56
प्रयुत	153	84
प्ररोह	53	4
प्रवचन	114	10
प्रवयण	142	12
प्रवाच्	171	35

	Page	Stanza
प्रवार्णा	109	112
प्रवाल	55	14
प्रविष्ट	182	113
प्रशस्त	24	26
प्रष्ठवाह्	150	63
प्रष्ठौही	151	70
प्रसभ	138	110
प्रसाधन	107	99
प्रसार	137	97
प्रसूतिज	39	3
प्रसृत	105	85
प्रस्तावना	37	39
प्रहत	182	111
प्राग्ज्योतिष	49	2
प्राघुणक }		
प्राघुर्णिक }	118	34
प्राघूर्णिक }		
प्राचिका	232	8
प्राचीनबर्हिस्	10	44
प्राचीर	49	3
प्राचेतस	118	36
प्रातर्	20	3
प्राध्व	219	215
प्राप्त	179	87
	181	105
प्राबन्धिक	131	59
प्राशक	165	45
प्रास्थिक	141	10
प्राहरिक	131	62
प्रियक (3)	63	56
प्रियदर्शन	87	22
	182	111
प्रेङ्खोलित	179	87
प्रेतवन	138	120
प्रेवण	142	12
प्रेष्य	160	17
प्रोत	109	115
प्रोथ }	103	75
प्रोह }		
प्लवन	188	43
प्लीहन्	102	65
फड्गा	45	38
फट्	230	20

	Page	Stanza
फग	38	9
फरक	133	72
फल	136	91
	142	13
फल्गु	23	18
फाल्गुन	122	2
फेन	235	19
फेरण्ड	85	5
बक	68	82
बकवैरिन्	122	2
बदरा (3)	80	151
बद्ध	179	86
बद्धपुट	32	9
बन्दी	140	120
बन्धनीया }	151	69
बन्ध्या }		
बन्धुर	216	194
बभ्रु	6	22
बर्ह	77	133
बर्हिःशुष्मन् }		
बर्हिरुत्थ }	12	54
बर्हिस् }		
बलि	122	2
	126	28
बल्कयणी	151	71
बहल	175	61
	217	200
बहुकरी	51	18
	168	17
बहुरूप	180	94
बहुला	51	18
बाढ	229	13
बाधना	206	129
बाधा	203	104
बालपत्र (2)	62	50
बालवायज	155	93
बाह्लव	237	32
बिम्ब	207	134
बिल	52	6
बिलाल	85	6
बिसकण्टिका	88	26
बीजक	61	44
बीभत्सु	122	2

		Page	Stanza
पामर		101	58
पार		238	35
पारत		156	99
पारशव		155	98
पारापत		86	15
पारावतपदी	(2)	80	150
पाराशर्य		118	36
पारिपान्थिक		162	25
पारिभद्र	(3)	57	26
	(3)	63	54
पारिभव्य		76	126
पारियात्र		233	11
पारिरक्षि(क्ष)क		119	42
पार्षद पारिषद		115	16
पारी		144	32
		233	10
पार्थ		122	2
पाली		157	108
पावकि		8	33
पावन		120	45
पाश		220	219
पाशुपत		120	50
पिङ्गला		15	5
पिङ्गा		155	97
पिचण्ड		104	77
		234	18
पिचण्डिल		98	44
पिचु		157	106
पिचुमन्द पिचुमर्द		64	63
पिचुल		157	106
पिच्छा		232	9
पिच्छिला	(3)	64	63
पिञ्जर		27	15
पिटक		144	26
पिठरी		144	31
पिण्ड		97	39
		234	18
पिण्डी		195	44
पिण्डीशूर		182	111
पिण्याक		237	32
पित्तल		155	97
पिठर		23	21
पिपासित		169	22
पिपीलिका		232	8
पिप्पल		56	20
पिष्ट		156	104
पीडा		163	30
पीतदारु	(3)	63	54
पीतपादा		88	26
पुङ्ख		234	17
पुटकिनी		45	39
पुटी		239	42
पुण्ड्र		110	123
पुण्य		120	45
पुत्री		95	28
पुद्गल		235	20
पुनर्नव		105	83
पुन्ध्वज		86	12
पुप्फुस		102	65
पुरस्तात्		230	23
पुराणपुरुष		6	22
पुरुह पुरुहु		175	63
पुरोडाश		235	21
पुलक		36	35
		86	14
पुलोमजित्		10	44
पुष्करावर्तक		233	11
पुष्कस		161	20
पुष्पकेतु		7	26
पुष्पफल	(2)	56	21
पुष्परस		157	107
पुष्पिता		94	21
पुष्परथ		130	52
पूजित		181	102
पूतिखदिर		62	50
पूय		238	35
पूर		235	20
पूरित		182	113
पूर्ण		175	66
		182	113
पूर्व		175	66
पूर्वरङ्ग		37	39
पूर्वाग्रायिन्		120	42
पृतना		63	59
पृतनासाह्		10	44
पृथगात्मता		118	38
पृथग्रूप		180	94
पृथा		122	2
पृथ्वीका	(3)	76	125
पृश्नि पृष्णि		20	34
पृषत्क		135	87
पेटक		191	18
पेटा पेटारिका		163	30
पेटी		239	42
पेल		104	76
पेशी पेशीकोश		90	38
पोटगल	(2)	82	163
पोटा		194	40
पोत		41	14
पौष्कर्य		76	128
पौण्ड्र		83	164
पौतव		153	85
पौत्तिक		157	107
पौरुष		105	87
पौलस्त्य		122	2
पौलोमी		10	45
प्रकट		182	118
प्रकम्पन		13	68
प्रकाश		182	113
प्रकुञ्च		105	85
प्रकुञ्चक		154	88
प्रगल्भ		171	35
प्रगल्भता		188	43
प्रगे		20	3
प्रग्रीव		50	9
		238	35
प्रचण्ड		233	11
प्रचर्चित		182	113
प्रचलाक		89	32
प्रचोदनी	(2)	70	94
प्रजविन्		129	46
प्रजा		96	28
प्रज्ञ		113	5

Word	Page	Stanza
नीराजन(ना)	136	95
नील	14	71
	47	6
नीलिका	45	38
नीलीराग	182	111
नीवार	83	166
नीवी	108	109
	110	120
नेत्रविभाग	106	94
नेदीयस्	176	69
नेपाली	157	108
नेम	17	16
नेमि	43	27
नैकषेय	13	60
नैय्यायिक	113	6
नैश्चिन्त्य	37	39
न्यक्कार	34	23
न्यञ्चित	182	113
न्यर्बुद	153	84
न्युङ्ख	234	17
न्युब्ज	182	111
पक्षक पक्षद्वार	50	14
पक्षिणी	230	22
पक्ष्म	182	111
पङ्गु	18	27
पञ्च	158	1
पञ्चभद्र	169	24
पञ्चलोह	155	97
पञ्चशिख	84	1
पञ्जर	237	31
पञ्जिका	232	7
पटकुटी पटकुड्य	110	120
पटी	109	116
पट्ट	234	17
पट्टिश	235	21
पणस	64	61
पणस्त्री पण्यस्त्री	94	19
पतङ्ग	111	132
पतन् पतत्रिन्	89	34

Word	Page	Stanza
पतद्ग्रह	235	21
पत्नीशाला	115	16
पत्त्र	131	59
पद	103	71
पद्म	14	71
	154	84
पद्मवर्ण	79	146
पद्मिनीकान्त	19	32
पद्य	237	31
	158	1
परभाग	188	43
परःशत परःसहस्र	175	64
पराक	121	52
पराभव	34	23
परार्ध	153	84
परिकर	110	120
	185	20
परिकृत	179	88
परिघ	51	17
परिचारित	179	88
परिताप	188	43
परिदान	152	80
	153	81
परिपन्थक	124	11
परिपवन	144	26
परिभूत	139	113
परिमाण	153	85
परिवत्सर	23	20
परिवर्त	23	22
परिवाह	41	10
परिवित्ति परिवेत्तृ	121	56
परिवेष्टित	179	88
परिव्यय	147	45
परिव्याध (2)	64	61
परिव्रज्या	118	35
परिष्वङ्ग	188	43
परीत	179	88
परेत	39	2
पर्कटी	58	32
पर्णिका	115	18

Word	Page	Stanza
पर्यङ्क	110	120
	191	18
पर्यङ्किका	110	120
पर्यनुयोग	29	10
पर्यन्त	138	118
पर्याहार	160	15
पर्येष्टि	118	35
पर्वन् पर्वसन्धि	21	7
पर्श्वध	132	71
	136	93
पर्शु	103	69
पर्षद्	115	15
पल	153	88
पलंकष (3)	71	99
पलाश	27	14
पलिक्नी	151	70
पल्यङ्क	112	138
पल्लविक	169	24
पल्ली	51	20
पवनी	51	18
पवनेष्ट	64	63
पवित्रक	83	166
पश्यतोहर	162	25
पष्टवाह्	150	63
पाक	191	18
पाक्य (3)	146	42
पाञ्चरात्रिक	120	50
पाञ्चार्थिक	120	50
पाञ्चाली	122	2
पाटला	56	20
पाण्डुभूम	46	4
पातं	19	32
पातक	237	33
पात्री	239	42
पात्रीव	238	35
पाथःपति	40	2
पाथेय	125	17
पादकृत्	159	7
पादत्राण	163	31
पादवल्मीक	100	56
पादावर्त	162	28
पापर्द्धि	161	23

	Page	Stanza
द्वेष्य	182	113
द्वैगुणिक	141	5
द्वैध	125	19
द्वैपायन	118	36
धट	234	17
धत्तुर	67	78
धन	149	58
धनंजय	122	2
धनाया	188	43
धनिन्	206	129
धन्विन्	19	28
धत्तूर }	67	78
धस्तुर		
धर्मपुत्र	122	2
धर्माधिकरणिक	123	5
धाटी	138	111
धातकी	232	7
धानाचूर्ण	147	47
धान्यक	145	38
धा-निधि	19	32
धामार्गव (2)	69	89
धारा	216	194
धार्मपत्तन	145	36
धिपाड्ग	131	64
धिष्ण्य	212	162
धूमकेतु	21	10
धूममहिषी }	17	19
धूमिका		
धूम्र	87	17
धूम्रक	151	75
धूष्णज् }	169	25
धृष्णु		
धोरण	131	59
ध्यान	119	39
ध्याम	209	145
ध्रुवा	219	212
ध्वज	137	101
ध्वनित	16	9
नःक्षुद्र	99	46
नमहु }	165	42
नमहू		
नमाट	120	50
नष्ट	237	33

	Page	Stanza
नतोन्नत	182	113
ननुच	229	15
नन्दक	76	128
नन्दन	96	28
नन्दिकेश्वर	9	41
नन्दिन्	9	41
	233	11
नन्दीवर्त }	42	20
नन्द्यावर्त		
नन्द्यावर्त	50	10
नपुंसक	97	39
नप्तृ	200	85
नराधिप	122	1
नल	82	163
नस्तित }	150	63
नस्योत		
नाग	37	4
	157	105
नादेयी (3)	58	30
(3)	65	66
नानाविध	180	94
नान्दीपट	43	27
नाभि	233	9
	235	20
नायक	191	18
नाला	45	42
नालि	100	54
नालीक	45	41
नाश	220	219
नाहल	161	21
निःश्रेयस	24	26
निकृत }	172	41
निःकृत		
निकर्षण	51	19
निकषोपल	163	32
निकार	34	23
निक्षेप	153	81
निखर्व	99	46
	153	84
निगडित	179	86
निगाल	129	49
निग्राह	188	39
निचित	182	113

	Page	Stanza
निचोल	64	61
नितम्ब	207	134
निदाघ	192	28
निदान	206	129
निबन्धन	32	7
निभ	36	33
निभृत	182	113
नियम	120	49
नियमन	57	26
नियाम	41	12
नियुत	153	84
नियोग्य	123	4
निरङ्कुश	168	15
निरर्थक	182	113
निर्गुण्डी	65	69
निर्ग्रन्थ	120	42
निर्झरिणी	44	33
निर्धार्य	168	13
निर्मर्याद	169	23
निर्यन्त्रण	168	15
निर्याम	41	12
निर्यास	233	13
निर्वर्ण्य	168	13
निर्वृति	37	39
निर्व्यूढ	183	3
निर्वेशन	185	20
निर्वेद	188	43
निर्व्लयनी	38	9
निवरा	118	35
निविड }	175	66
निविरीश		
निवृत्त	109	113
निवेशन	49	6
निशा	146	41
निशाट	86	15
निशाटनी	88	27
निशात	179	91
निशुम्भन	138	117
निषध	47	6
निषेक	114	7
निष्कुट	54	13
निष्पाव	143	20
निस्त्रिंश	220	219

		Page	Stanza
तेजनी	(2)	68	84
तेजस्		125	20
तेन		228	3
तैल		149	50
तैलाटा		88	28
तैलाट्या		88	27
तोकक		192	23
तोटक		237	30
तोत्त्र		142	12
त्याग		188	43
त्रयीतनु		19	32
त्रस्त		170	26
त्रापुष		162	29
त्रिककुभेदिन्		120	50
त्रिकालविद्		5	15
त्रिविष्टप		3	6
त्रिपुटा	(2)	76	125
त्रिपुटी		73	108
त्रिवर्ग		122	58
		125	20
त्र्यक्षा		73	108
त्वक्क्षीर		157	109
त्वरक		143	20
त्सरु		233	13
दक		40	5
दक्ष		221	227
दक्षिणागम		120	42
दक्षिण्य		166	5
दग्धकाक		87	22
दण्डकण्टक / दण्डकरोटक		151	74
दण्डिन्		123	6
दन्ति		128	38
दन्तक		52	7
दन्तशठ	(2)	56	21
दर		14	67
		215	185
दरद्		161	21
		233	9
दरित		170	26
दरी		215	185
दर्दुर		31	4

	Page	Stanza
दर्द्रुण / दर्द्रुरोगिन्	101	59
दर्प	34	22
दर्वि	38	9
दर्वी	207	134
दर्शक	123	6
दल	17	16
	218	207
दवथु	188	43
दशास्य	122	2
दशेन्धन	112	138
दाक्षायणी	9	37
दाक्षिण्य	166	5
दाडिम	238	42
दाढिका	107	99
दाधिक	147	45
दान्ति	183	3
दाय	126	29
दायाद	95	27
दारक	95	27
	191	18
दारिका	95	28
दालिम	64	65
दाशरथि	122	2
दाशार्ह	16	22
दासेरक	151	75
दिगम्बर	120	50
दिण्डीर	156	105
दिनमणि	19	32
दिवस्पृथिव्यौ	48	1
दिवि	87	16
दिष्टि	105	84
दीर्घजङ्घ	88	23
	151	75
दीर्घदण्डक	62	52
दीर्घनिद्रा	138	118
दीर्घायुस्	79	143
दुःसंज्ञा	43	25
दुन्दुक	63	57
दुरभिप्यान / दुरेषणा	30	17
दुर्ग	49	1
दुर्गसंचर	186	25

	Page	Stanza
दुश्चर्मन्	99	49
दुष्पत / दुष्पुत	76	129
दुःस्थ	173	49
दूषीका	102	67
दृक्प्रसादा	156	102
दृति	235	19
देवखात	52	6
देवगायन	11	52
देविका	44	35
देशिक	191	18
देवपर	173	48
दे[दे]शिक	125	17
दोष	221	227
दोषज्ञ	193	33
दोषा	221	227
दौकूल	130	55
दौर्भागिनेय	95	24
दौवारिक	123	6
द्यावापृथिव्यौ / द्यावाभूमी	48	1
द्युः	230	21
द्युम्न	206	129
द्युसद्	3	8
द्रग	51	19
द्रप्स	149	51
द्रुणी	233	9
द्रोण	86	14
	87	22
द्रौपदी	122	2
द्वाःस्थित / द्वाःस्थितदर्शक / द्वाःस्थोपस्थित-दर्शक	123	6
द्वारका / द्वारवती	49	2
द्विक	82	21
द्विनग्न	99	49
द्विलोहक	155	97
द्विसीत्य / द्विहल्य	141	9
द्वेष	35	25
द्वेषिन्	125	11

	Page	Stanza
जलशूक	45	38
जलहस्तिन्	42	20
जलूका	43	22
जाङ्गल	102	63
जात	200	85
जातीसस्य	111	132
जातुष	162	20
जात्य	212	162
जानुलम्बिन्	178	83
जालकार	86	13
जालिक	86	13
	191	18
जाहक	86	13
जिघांसु	124	11
जितकाशिन् }	138	112
जिताहव }		
जिन	5	15
जिष्णु	122	2
जीव }	120	42
जीवक }		
जीवत्तोका }	94	16
जीवसू }		
जीवनीय	40	5
जीवन्ती (3)	68	82
जीवा	135	86
	140	121
जीवितेश	220	219
जूट	107	97
जैमिनीय	113	6
ज्ञ	18	27
	193	33
ज्येष्ठाश्रमिन्	113	3
ज्योतिर्मालिन्	88	29
ज्योत्स्ना	21	5
ज्वाला	12	57
झगिति }	227	2
झटिति }		
झंझामरुत्	13	63
झल्लरी	233	10
टङ्क	191	18
	237	33
टीका	232	7
टुण्टुक	63	57

	Page	Stanza
डिण्डीर	156	105
डुडुभ	38	5
डोम्ब	161	20
ढौकन	126	29
तटस्थ	124	10
तडाक	43	28
तण्डक	337	33
तत्कालधी	169	25
तत्त्व	32	9
तन्तु	96	28
तन्तुनाग	43	21
तन्तुवाय	86	13
	159	6
तन्त्रक	109	112
तन्त्रवाय	86	13
	149	6
तन्द्रू	145	34
तन्द्रा	37	37
	214	16
तप	222	233
तपस्या	118	35
तमा	21	4
तमाल	237	33
तरक्ष	84	1
तरल	172	46
तरलित	179	87
तरवालिका	136	92
तरसा	227	2
तरिमन्	234	15
तर्क	188	43
तर्कु(र्कू)क	173	49
तद्रू	145	34
तर्पण	148	55
तर्षित	169	22
तल्लजक	24	27
ताड	65	69
ताडी	76	127
ताण्डव	238	34
तान्त्रिक	120	42
तापि(यि)न्	5	14
तामिस्र	39	2
ताम्रकर्णी	15	5
ताम्राक्ष	87	20

	Page	Stanza
तार	155	96
तारापथ	15	2
तालपत्री (2)	75	119
तिन्दुकी	232	8
तिमिंगिलगिल	42	20
तिरीट	237	30
तिलोत्तमा	11	51
तीक्ष्ण	196	53
	220	215
तीक्ष्णधी	171	38
तीर्थ	114	11
तीर्थकृत्	5	15
तुक्खार	129	46
तुण्ड	90	37
तुण्डिकेरी (2)	74	116
(2)	78	139
तुण्डिन्	9	41
तुण्डिभ }	101	61
तुण्डिल }		
तन्तुभ	142	17
तुन्दि	104	77
तुन्दिक }	98	44
तुन्दिभ }		
तुन्दिभ }	101	61
तुन्दिल }		
तुभ	152	76
तुमुल	218	207
तुम्बुरु	11	52
तुरायण	183	2
तुरीय }	182	113
तुर्य }		
तुला	19	28
	188	43
तुवरी	143	20
तूणी	70	95
तूलि	163	33
	218	207
तूलिका	112	137
तूष्णीकाम्	228	10
तृणशून्य }	65	70
तृणशल्य }		
तृषित	169	22
तेजन (2)	82	161

	Page	Stanza
चटुला	16	10
चण्ड	233	11
चण्डा	150	67
चण्डाल	158	4
चण्डिल	159	10
चत्वर	48	17
	115	18
चतुर्दण्डिका	163	30
चन्दना	73	112
चन्दनाचल	52	3
चन्द्र	155	95
चन्द्रक	110	120
चन्द्रकिन्	89	31
चन्द्रशाला	50	8
चन्द्रोदय	212	162
चपला	93	10
चपेटा	105	84
चमस	238	35
चमसी	233	10
चरक	237	33
चरणप	53	5
चरण्टी	92	9
चरित, चरित्र	35	26
चरिमाट	234	15
चरीन्द्र	38	5
चरु	216	194
चर्चन	25	2
चर्चर	106	96
चर्चरी	233	10
चर्चिका	9	41
चर्चिक्य	110	122
चर्मकषा, चर्मकसा	79	144
चर्मचटका	88	27
चर्मप्रसेवक	163	33
चर्ममुण्डा	9	41
चर्मसीवनी	163	35
चर्चर	106	96
चर्वण	164	40
चर्वणी	93	10
चल	172	46
चलचल	172	46

	Page	Stanza
चल्लनक	109	119
चषक	145	32
चाटकैर	86	16
चाटु, चाटुक	30	17
चन्द्रभागा, चान्द्रभागी	44	34
चान्द्रमसायनि	18	24
चान्द्रायण	118	37
चापल	172	46
चामुण्डा	9	41
चाम्पक	64	64
चार्मण	188	43
चार्वाक	113	6
चिक्कस	238	35
चिखल्ल	41	9
चित्रक, चित्रा	214	178
चित्रकाय	84	1
चित्रकला	81	157
चित्रवल्ली	42	18
चित्ति, चिन्ति	35	29
चित्रा (2)	81	157
चिद्रूप	166	3
चिपिटघोण	98	45
चिरजीविन्	87	21
चिरम्, चिरात्, चिरेण	227	1
चिरिण्टी	92	9
चिहुर	106	95
चीनपिष्ट	157	105
चीर	109	115
	237	31
चीवर	237	31
चुक्र	235	20
चुक्रक, चुक्रिका (3)	78	141
चुन्दी	94	19
चुलक	86	14
चूर्ण	137	100

	Page	Stanza
चूर्णक	106	69
चूर्णि, चूर्णा	233	9
चत्रा	188	43
चैत्य	49	7
चैत्रसख	7	26
चैल	109	115
चोच	84	169
	237	30
चोदनी	70	92
चोद्य	30	17
चोरित	182	113
छग, छगल	152	76
छद्मन्	36	33
छन्द	222	233
छर्दि, छर्दी	100	55
छल	36	33
	138	110
छायापुत्र	18	27
छेक	169	24
छेद	17	16
जगच्चक्षुस्	19	32
जगन्मातृ	9	37
जम्पूक	171	36
जटायु, जटायुस्	122	2
जनित्री	96	29
जनी	81	154
	92	9
	206	129
जन्य	122	58
जमन, जवन	149	56
जम्बू	56	19
जम्भीर	67	80
जय	65	66
	233	11
जटिल	143	19
जलकाक	89	35
जलरञ्ज	87	17
	87	22

	Page	Stanza
गन्धमादन	47	6
	52	3
गन्धर्व	207	132
गन्धाली	81	155
	88	28
गर	38	9
गर्जा	16	9
गर्ता	37	2
गर्ताट	86	12
गर्ध	188	43
गर्धिन्	200	85
गर्धजापिन्	171	36
गल्ल	106	90
गल्वर्क	165	43
गवेषण	187	30
गाङ्गेय	38	40
गाढ	175	66
गाण्डीविन्	122	2
गात्रसंकोचिन्	86	13
गाधेय	118	36
गान्धारपङ्क } गान्धारपिष्ट	157	105
गाली	29	15
गावी	27	2
गिन्दुक	112	138
गिरि	216	194
गिरिक	112	138
गुच्छ	143	21
गुण	125	19
गुणनिका	37	39
गुणशालिनी } गुणलयनी	110	120
गुणोत्कर्ष	188	43
गुण्ठित	179	89
गुत्सक	55	16
गुदज } गुदकीलक	100	54
गुन्द्रा (3)	63	56
गुम्फ	188	43
	207	132
गुर्वी	95	22
गुलिका	112	138

	Page	Stanza
गुलुञ्छ	55	16
गुल्मक	127	34
गुहाशय	86	12
गृध्रसी	233	10
गृष्टि	151	70
गृहगोलिका	86	13
गृहमणि	112	138
गृहमेधिन् } गृहाश्रमिन्	113	3
गृहीतदिक्क	138	113
गृहेनर्दिन्	182	111
गृह्य	182	111
गेहेशूर	182	111
गैरिक	155	95
गो	63	56
गोकर्ण	38	7
गोणी	27	2
	154	88
गोत्रा	214	181
गोदावरी	44	35
गोनास	38	4
गोप	156	104
गोपुच्छ	108	105
गोपीतलिका	27	2
गोमतल्लिका	150	67
गोमुख	32	8
	191	18
गोयुग	152	77
गोराटी	88	26
गोल	235	20
गोलाङ्गूल	84	3
गोलिह	60	40
गोलीढ	60	40
गोष्ठश्व	182	111
गोस	156	104
गोसर्ग	20	3
गौड	234	18
गौरव	118	34
ग्रन्थ	201	88
ग्रन्थन	188	43
ग्रह	116	24

	Page	Stanza
ग्रहकल्लोल	19	27
ग्रामटिका	92	9
	147	49
ग्रामणी	167	11
	174	58
ग्रामधान	51	19
ग्रामीण } ग्रामेयक } ग्राम्य	182	113
ग्राह	42	20
ग्राविन्	151	75
घटा	194	40
घट्ट	126	28
घण्टिका	106	91
घन	32	9
	155	98
	175	61
घरगोली	86	13
घुघुरक	108	110
घुण	235	18
घुतूण	110	124
घूक	86	15
घृतयोनि	149	52
घृताची	11	52
घृष्टि	194	40
घोष	155	97
	221	227
घोषवती	31	3
चकित	170	26
चक्र	214	183
चक्रमण्डलिन्	38	5
चक्रयान	130	52
चक्रवाल	152	77
चक्रव्यूह	134	80
चक्राङ्क	88	24
चक्राह्वा	88	29
चक्रिका	214	183
चक्षुष्य	182	111
चञ्च	62	52
चञ्चरीक	89	30
चञ्चल	172	46
चञ्चु	62	52
चटु	30	17

	Page	Stanza
कृष्णा	122	2
	150	67
कॢप्तक	153	81
केतु	19	27
	65	66
केदर	235	20
केरव	45	37
केवर्त	42	15
केवलिन्	5	15
केशघ्न	100	56
केशपर्णी }	69	89
केशवल्ली }		
केशावावास	56	21
कैकसेय	13	60
कोकिल	59	57
कोटीर	107	102
कोट	49	1
	234	18
कोण	136	94
कोपन	170	32
कोलिक	59	37
कोश	90	38
	125	18
	154	91
	220	219
कोशकार	83	164
कोष	125	18
	154	91
कोष्ठक	143	21
कोष्ठागार	143	21
कोहनक	76	129
कौपीन	120	50
	206	129
कौपोदकी	7	28
कौल	120	42
कौशलिक	126	29
कौशिक	118	36
कौसीद्य	188	43
क्नोपन	147	44
क्रमोल्लङ्घन	118	37
क्रिमि	86	14
क्रिया	188	43
	212	162

	Page	Stanza
क्रीडा	188	43
क्रूर	152	77
क्रीतकिका (2)	70	95
क्लोम	102	65
क्वङ्गु	143	20
क्षत्त्र	122	1
क्षपणर्धि	120	50
क्षमा	35	24
क्षार	12	56
क्षारण }	29	15
क्षारणा }		
क्षारपत्त्र	82	158
क्षिपणी }	41	13
क्षिपा }		
क्षीरकाकोली }	71	100
क्षीरा }		
क्षीरशुक्ला (3)	73	111
क्षुण्ण	182	111
क्षुद्रनासिक	99	46
क्षुद्रा	95	27
क्षुब्ध	151	74
क्षुर	235	20
क्षुरक	235	20
क्षुरिका	136	93
क्षुल्लक	43	23
क्षेम	237	34
क्षेमंकर	166	2
क्षौम	50	12
क्ष्मार	120	50
क्ष्वेडित	2 7	34
क्ष्वेला	138	108
खचित	182	113
खजक	151	74
	191	18
खट	234	17
खट्टर	99	46
खटक्किका	50	14
खण्ड	146	43
	195	41
खण्डल	17	16
खण्डशर्करा }	146	43
खण्डश्वेता }		
खण्डिक	142	16

	Page	Stanza
खद्योत	19	34
खनक	86	12
खर्व	14	71
	153	81
खर्वट	237	33
खल }	142	15
खल्वा(धा)नक }		
खलति	99	48
खलभर्जित	147	47
खलीकार	185	15
	186	27
खल्लु	228	5
खलेवाली	142	15
खानि	52	7
खेटक	51	19
	191	18
खेद	188	43
खेला	36	33
गगनमाणिक्य	19	31
गजनिर्मालिका	157	107
गजमल्ल	10	46
गजासुरारि	8	34
गङ्गा	48	1
	50	8
	52	7
गडु	103	69
	235	18
गणनायिका	9	37
गणिका	191	18
गण्ड	195	44
गण्डूष	221	227
	233	10
गण्डूषा	233	10
गति	200	85
गदाग्रज	6	22
गद्य	237	31
गन्ध	203	104
गन्धक	156	102
गन्धज्ञा	86	12
गन्धफली (2)	63	56
(2)	64	64
गन्धमांसी	77	134

		Page	Stanza
कामदान }		183	3
काम्यदान }			
कामरूप		49	2
कामाङ्कुश		105	83
काञ्ची		73	112
		80	153
		145	37
		146	40
कान्ति		179	90
कारोत्तम }		165	43
कारोत्तर }			
कार्तवीर्य		122	2
कार्षक		141	6
कार्ष्णी[श्री]रथ		74	114
काल		18	27
कालकण्ठ		87	22
कालकण्टक }		87	22
कालकण्ठक }			
कालखञ्ज }		102	66
कालखण्ड }			
कालघ्न		87	18
कालधर्म		138	117
कालमेषी	(3)	70	96
कालस्कन्ध	(3)	65	68
कालिङ्गा }		65	67
कालिङ्गी }			
काल्य		20	2
		30	18
काल्य }		77	135
काल्यक }			
काश		82	162
		82	163
काशी		49	2
काश्यप		19	33
काषाय		212	162
कासमर्द		235	19
किशारु		233	13
किकि }		87	16
किकीदिवि }			
किकिन् }			
किङ्कणी }		108	110
किङ्किणी }			
किङ्किरात		66	74

		Page	Stanza
किञ्चुलक		43	22
किञ्जल्क		191	18
किण		235	18
किण्व		23	23
किंनरी		163	32
किरीटिन्		122	2
किलकिंचित		36	32
किलाटिका		146	44
किलिम		62	54
किष्किन्धाधिप		122	2
कीकट		173	49
कीचकाराति		122	2
कीटमणि }		88	29
कीटमाणिक्य }			
कीनाश		13	60
		173	48
कुचिका }		146	44
कुचीका }			
कुज		53	5
कुटक		151	74
कुटन्नटा		77	132
कुटहारिणी		94	16
कुट्टिम		50	8
		237	34
कुडङ्गक		234	17
कुणाल		144	26
कुणि		76	128
		99	48
कुण्डी		144	31
कुतप		207	132
कुद्दाल		142	12
कुन्ती		122	2
कुन्द		14	71
		235	19
कुपाणि		99	48
कुमोदक		7	28
कुम्भ		19	28
कुम्भिन्		127	36
कुम्भी		63	55
		144	31
कुम्भीनस		28	8
कुरण्टक		66	74
कुरल		106	96

		Page	Stanza
कुर्दन		36	33
कुल		218	207
कुलक	(2)	60	39
कुलत्थ		142	15
कुलिक		158	5
कुलिशतरु		72	106
कुल्माष		142	18
		146	39
		235	21
कुल्माषाभिषुत		146	39
कुल्या		105	89
		212	162
कुवल	(2)	59	37
		239	42
कुशाग्रीय		171	38
कुशी		220	216
कुष्ठ		237	34
कुसीद		140	2
		140	4
कुसूल		143	21
कुसृति		159	11
कुहन		121	53
		182	111
कुहनिका		121	53
कुहक }		159	11
कुहका }			
कूट		149	61
कूर्मी		43	24
कूलंकषा		44	30
कृच्छ्र		118	37
कृतकर्मन् }		166	4
कृतार्थ }			
कृतकृत्य		113	6
		166	4
कृपीट		194	40
कृमि		86	14
कृमिफल		56	22
कृशर }		149	50
कृसर }			
कृपिक		142	13
कृष्णभूम		46	4
कृष्णमुख		84	3

	Page	Stanza
ओष	32	9
	40	6
ओष्ठ	106	90
औदुम्बर	155	97
औपयिक	126	25
औपवस्त }	118	38
औपवस्त्र }		
औपवाह्य	128	37
औमीन	141	7
औलूक्य	113	6
कम्	40	4
कक्खट	177	76
कक्षा	188	43
कक्षापटी	120	50
कक्ष्य	104	79
कच्छ	47	10
कच्छप	14	71
कज्जलध्वज	112	138
कञ्चुक	109	118
कञ्चुकिन्	38	8
कञ्चुलिका	109	118
कट	51	20
कटक	191	18
कटु	55	14
कटम्भरा (2)	68	86
कटाह	235	21
कटार	103	74
कटुतिक्त	158	111
कटुर	174	54
कणप	235	20
कणिका	232	8
कण्टक	191	18
	237	32
कण्टोलवीणा }	163	32
कण्डोलवीणा }		
कण्ठीरव	84	1
कण्डरा	102	66
कदन	138	117
कदर्क	110	120
कन्था	232	9
कन्द	238	35
कन्यका	19	28
कन्यकुब्जा	49	2

	Page	Stanza
कपिञ्जल	90	36
कपिध्वज	122	2
कपिला	15	5
	150	67
कपिलोह	155	97
कपिशीर्ष	221	227
कपीतन (3)	57	27
कफेल	38	9
कबरी	146	40
कमला	216	195
करक	212	165
करङ्क	102	69
करज (2)	62	48
करटा	31	4
	32	8
करण्ड	235	18
करपाल	135	90
करपालिका	136	92
करभ	208	137
करवीर	138	120
करवाल	135	90
करवालिका	136	92
करामल	65	68
कर्क	129	47
कर्कट	19	28
कर्कटशृङ्गी	75	120
कर्ण	41	12
	122	2
कर्णमोटी	9	41
कर्णिका	45	43
कर्णिन्	57	24
क[illegible]	216	194
कर्पराल	57	29
कर्पास	238	35
कर्बुर	146	40
कर्मसाक्षिन्	19	32
कर्ष	63	59
कर्षणी	112	139
कलंबक	99	48
कलकण्ठ	87	20
कलधौत	155	95
		96
कलशि	151	74

	Page	Stanza
कलान्तर	140	4
	141	5
	152	80
कलाप	108	108
कल्मष	174	55
कल्प	20	2
	30	18
	164	40
	211	160
कल्यपाल	159	10
कल्या	211	160
कल्याण	155	95
कल्हार	146	42
कवक	77	136
कवरी	146	40
कवितृ	113	5
कविय	238	35
कशारुका	103	69
कांस्य	155	97
काक	91	44
काकजङ्घा	74	119
काकतुण्ड	111	126
काकिणी }	233	9
काकिनी }		
काकुत्स्थ	122	2
काकाण्डा	79	144
काचमणी	80	152
काच[वि]र	99	49
काचस्थाली	63	55
काचित	179	90
काञ्चिक }	146	39
काञ्जिक }		
काणी	233	9
काण्डपट	110	120
कादम्ब	207	134
काद्रवेय	37	4
कान्दुक	144	28
कान्यकुब्ज	49	2
कापथ	48	16
कापालिन्	120	42
कापिल	113	6
कापिशायन	164	40
कापेय	84	3

	Page	Stanza
उचित	126	26
उच्चण्ड	178	83
उच्चार	108	109
	110	120
उच्छादन	110	121
उच्छृङ्खल	178	84
उज्जयिनी	49	2
उज्ज्वल	33	17
उडुप	41	11
उत्कट	178	82
उत्कलिका	191	18
उत्कोच	126	29
उत्तंस	112	136
उत्तरासङ्ग	50	13
उत्ताल	178	83
उत्तुङ्ग	176	70
उत्थान	129	49
उत्तरण	29	149
उत्पश्य	182	11
उत्पाटित	182	113
उत्सर्ग	117	30
उत्सादन	58	33
उत्सारक	123	6
उत्साहशक्ति	125	19
उदग्भूम	46	4
उदञ्चित	182	113
उदर्चिस्	12	56
उदश्वित	98	44
उदरंभरि	169	21
उदलावणिक	147	45
उदात्त	166	3
उदार / उदाराभिलाष	166	3
उदास्थित	200	85
उदीर्ण	166	3
उदुम्बर	50	13
उदूखल	143	25
उद्गताम्बर	155	97
उद्घातन	162	28
उद्गीथ	235	19
उद्दाम	178	84
उद्धत	178	82
उद्धर्षण	37	39

	Page	Stanza
उद्धुर	176	70
उद्धृत	182	113
उद्ध्मान	144	29
उद्भट	166	3
उद्यम	35	9
उद्यमवत्	166	3
उद्योग	35	29
	237	33
उद्रिक्त	178	2
उद्वण	144	25
उद्वह	96	28
उद्वा(द्धा)न	144	29
उद्वाहन	162	28
उन्दुर	86	12
उन्नति	54	10
उन्मद	169	23
उन्मान	153	85
उन्मुख	182	111
उन्मूलित	182	113
उपकालिका / उपकुञ्ची	145	37
उपक्रम	115	13
उपचित्रा (2)	69	88
उपज्ञा	114	13
	236	28
उपदंश	161	40
उपदा	126	29
उपधा	125	22
उपनाह	32	7
उपप्लुत	169	24
उपप्रदान	126	29
उपबाहु	104	80
उपभुक्ति	185	20
उपरम	188	38
उपलम्भा	25	1
उपविष्ट	182	111
उपसेचन	147	44
उपाग्र	175	65
उपाय	125	21
उपालिन्दक	50	12
उपावर्तन	47	8
उपोद्घात	186	26

	Page	Stanza
उमा	141	7
	143	20
उम्ब	141	7
उरसिज	104	77
उर्वारुक	81	156
उल्का	232	8
उलप	97	38
उल्मन	37	39
उषणा	71	97
उषा	228	6
उष्णल	161	19
उष्ट्रिका	191	18
ऊर्ध्वंदम / ऊर्ध्वंस्थ	182	111
ऊर्ध्वलोक	3	6
ऊ(ओ)र्ध्वस्रोतसिक	120	50
ऊषण	145	36
ऋक्षगन्धा	78	137
ऋचीक(ष) / ऋजीष	144	32
ऋत	200	85
ऋद्ध	143	23
ऋश्य / ऋष्य	86	10
ऋष्यगन्धा (3)	73	111
एककुण्डल	6	24
	218	207
एकतान	31	3
एकदृष्टि	87	21
एकपद	230	23
एकश्रुति	28	4
एकाग्र	178	80
एकायन	120	50
एडमूक	171	38
एण	86	10
एर्वारु	81	156
एलावालुक	75	121
एषिका	163	33
ऐकाग्र्य	178	20
ऐण	85	8
ऐडविड / ऐलविल	14	69

	Page	Stanza
असित	18	27
असूर्क्षण / असूक्षण	34	23
असृज्	110	124
असेचनक	174	53
अस्थि	136	94
अस्र	106	93
अहंता	34	22
अहिजित्	200	85
अहिर्बुध्न	8	34
अहिहन्	10	41
अह्रीक	120	50
आकारण	29	8
आकूत	188	45
आक्रोश	30	17
आक्षदर्शक	123	5
आक्षपटलिक	167	7
आक्षपाद	113	6
आक्षेप	30	17
आख्यात	43	27
आखुरथ	9	38
आघाट	51	20
आचित	182	113
आच्छन्न	182	113
आजगव	8	35
आञ्जनेय	122	2
आट	87	17
आढकी	142	15
	232	7
आणवीन	141	7
आणी	130	57
आताविन् / आतायिन्	87	22
आतिथ्य	118	33
आत्तगन्ध / आत्तगर्व	171	40
आत्मदर्श	112	140
आत्रेय	17	15
आदण्ड	62	52
आदिकवि	118	36
आदिम	178	81
आदिष्टिन्	114	7
आन्दोलित	179	7

	Page	Stanza
आन्वयिक	120	42
आपमित्यक	141	4
आप्त	200	85
आप्रच्छन्न	184	7
आप्लव	188	43
आभोगिक	32	5
आम	99	51
आमलक / आमलकी	237	33
आमुष्यायण	113	3
आम्नाय	212	162
आयःशूलिक	182	111
आय	18	26
	155	97
आर्या	9	37
आर्हत	113	9
आलस्य	288	43
आलिङ्गिन् / आलिङ्ग्य	32	5
आलिन्	86	14
आलीन	157	106
आवसथ	49	6
आवाप	41	11
आवेष्टक	49	3
आशय	188	43
	212	162
आशयाश	12	54
आशाबन्ध्	77	134
आशु	220	219
	227	2
आश्रय	212	162
आश्रयाश	12	54
आस	134	84
आसक्त	14	66
आसन	125	19
आसन्दी	233	9
आसार	137	97
	188	43
	216	194
आसीन	182	111
आसेचनक	174	53
आस्फोट	67	81

	Page	Stanza
आस्फोता	65	70
(2)	72	104
आस्य	105	89
आहार्य	33	16
आहिताग्नि	114	11
इक्षुगन्धा (3)	71	99
(3)	73	110
इतरेद्युः	230	21
इत्वर	150	62
इदानीम्	230	24
इदावत्सर / इद्वत्सर	23	20
इन	19	32
इन्दिरा	7	27
इन्दिन्दिर	89	30
इन्द्रकोश	50	9
इन्द्रगोपक	88	29
इन्द्रजाल	159	11
इन्द्रजित्	122	2
इन्द्रद्रु (3)	61	45
इन्द्रनील	155	93
इन्द्रलुप्तक	99	48
	100	56
इरंमद	16	10
इलावृत्त	47	6
इल्वला	18	24
इषीका	82	162
ईर्या	118	35
ईर्यापथ	118	35
	121	53
ईनीह	81	156
ईर्ष्या	35	24
ईर्ष्यालु	182	111
ईहावृक	85	7
ईली	136	92
ईश्वरी	9	36
ईषिका	163	33
उ	230	19
उं	230	18
उक्त	237	30
उक्थ	237	30
उक्षतर	149	61
उग्रधन्वन्	10	44

	Page	Stanza
अन्ध	40	4
अन्धतामिस्र	:9	2
अन्यत्र	227	3
अन्यतरेद्युः अन्येद्युः	230	21
अन्वित अन्वीत	182	113
अन्वीक्षण अन्वेषण	186	30
अन्वेष्टृ	182	111
अपरेद्युः	230	21
अपवरक	50	8
अपविद्ध	172	40
अपवाद	160	16
अपसर्प	124	13
अपसोपान	51	17
अप(व)स्रवन्ती	151	69
अपाची	15	3
अपाश्रय	50	9
अपुनर्भव	26	7
अप्रतिरथ	122	2
अब्जिनी	45	39
अब्जिनीपति	19	32
अब्धिजा	7	27
अब्धिशायिन्	6	22
अभिख्या	29	11
अभिचर	133	72
अभिज्ञान	17	17
अभिभव	34	23
अभिभूत	139	113
अभिमर	196	53
	220	215
अभिमुख	171	33
अभियोग	30	17
अभिषव	114	10
अभिषुत	146	39
अभ्यञ्जन	149	50
अभ्यामित्र	133	76
अभ्यवहार	149	56
अभ्युत्थान	118	34
अभ्येष	147	47
अभ्रपिशाच	19	27
अभ्रमु	15	5

	Page	Stanza
अमत्र	63	58
अमा	230	20
अमुष्यपुत्र	113	3
अमृणाल (2)	83	165
अमृतनिर्गम	17	15
अमृष्य	182	113
अम्बरमणि	19	31
अम्बष्ठा (3)	78	141
अम्ल अम्र	26	9
अम्लवेतस	145	35
अम्भोज	5	41
अम्भोजिनी	45	39
अयि	228	7
अयुत	153	84
अयोध्या	49	2
अरम्	13	6:
अरघट्ट	234	18
अरणि अरणिक	65	66
अरत्नि	104	80
अराति	51	17
अरि	230	20
अर्कजा	11	51
अर्जुन	122	2
	155	95
अर्ति	135	85
अर्थ	26	8
अर्बुद	153	84
	23	19
	237	33
अर्म	230	34
अर्हत्	5	15
अलंकार	36	32
अलि	89	30
अलिगर्द	38	5
अलिञ्जर	144	31
अलिन्	86	14
	89	30
अलीक	106	92
अलुक	145	38
अवक्रय	152	79
	153	81

	Page	Stanza
अवग्रह	128	39
अवग्रहणी	50	13
अवग्राह	188	39
अवच्छुरित	36	35
अवदत्त	83	165
अवधान	25	2
अवनद्ध	31	4
अवन्ती	49	2
अवपात	200	85
अवरोध	50	12
अवलम्बन अवलम्बित	178	83
अवलेप	34	22
अवसक्थिका	110	120
अवसन्नता	188	43
अवसर्प	124	13
अवसित	143	23
अवहित्थ	36	34
अवहेल अवहेला	34	23
अवाक्कर्ण	99	48
अवाचीन	171	33
अवार	238	35
अवारपार	40	2
अवि	94	21
अविदूस अविमरीस अविसोढ	152	77
अविलम्बन अविलम्बित	178	83
अवी	94	21
अव्यक्त	24	29
अव्यय (3)	79	149
अव्यग्र	238	34
अश्र	13	59
अश्वापद	30	19
अश्ववार	131	61
अष्टदण्ड	48	18
अष्टमूर्ति	8	34
असंमत	182	111
असंबद्ध	30	20
असहन	124	11
असिक्नी	151	70

I.

Index of additional words given by Kshîrasvâmin, as well as those of Amarasimha which are specially remarked upon in the Commentary.

	Page	Stanza
अंशु	220	219
अंशुमालिन् अंशुसत्तम	19	32
अकल्मष	182	111
अक्षोल	57	29
अक्षपटलिक	123	5
अक्षिगत	182	113
अक्षीव (4)	58	31
अगच्छ	53	5
अगदंकार	100	57
गूढगन्ध	146	40
ग्निमणि	155	93
ग्निमित्र	122	2
अग्निमुखी (2)	74	119
अग्रज	193	32
अग्रणी	167	11
	174	58
अग्रिम	98	43
	178	81
अग्रीय अग्र्य	98	43
अङ्क	217	198
अङ्कपाली	188	43
	217	198
अङ्किन् अङ्कुश	31	5
अङ्कोट अङ्कोल	57	29
अङ्ग	28	4
अङ्गना	15	5
अङ्गमर्द	159	10
अङ्गाधिप	122	2
अङ्गारधानिका अङ्गारधानी	144	29

	Page	Stanza
अङ्घ्रिप	53	3
अचित	182	113
अजकव	8	35
अजननि	188	39
	232	4
अजर्य	124	12
अजातशत्रु	122	2
अजिगीषुता	188	43
अञ्चल	110	120
अञ्जनावती	15	5
अञ्जलिका	86	13
अञ्जलिकारिका	162	29
अटाट्या अटया	118	35
अट्टालक	50	12
अणव्य	141	7
अतिक्रम	118	37
	188	43
अतिचण्डिका	9	41
अतिच्छत्रक	83	167
अतिमर्याद	14	67
अतिवाहिक	39	2
अतिसंधान	162	25
अतीसारकिन्	101	59
अत्याधान	188	43
अत्युक्त	237	30
अत्युग्र	146	40
अर्द्रिकाक	87	22
अद्रिराज	52	3
अद्वयमार्गिन्	120	42
अधः	106	90
अधरेद्युः	230	21
अधस्तात्	230	23
अधिपाङ्ग	131	64

	Page	Stanza
अधीतिन्	114	10
अधीर	216	194
अनडुही अनड्वाही	150	67
अनन्त	6	24
अनन्ता	73	112
अनाकुल	31	3
अनाहत	181	107
अनियन्त्रण	178	84
अनीक	134	79
	138	106
अनुतर्ष	221	227
अनुतर्षण	165	43
अनुताप	188	43
अनुत्तर	171	37
अनुनय	188	43
अनुपदिन्	182	111
अनुपमा	15	5
अनुपल	210	151
अनुरहसम्	126	24
अनुवत्सर	23	20
अनुवाक	234	17
अनुशोचन	29	16
अनेडमूक	171	38
	191	18
अन्त	153	84
	178	81
अन्तरा	227	3
अन्तर्गडु	182	113
अन्तर्गलशुण्डिका	106	91
अन्तावसायिन्	161	20
अन्तिम	178	81
अन्ती	144	29
अन्त्यज	161	21

213. घृतान्मांसं तु घारकृत्—Compare क्षीरान्मांसं तु पुष्टिकृत् on p. 224.

217. पालीयं चम्पकानां—A verse in the Ratnâvali Act III begins with these words.

218. द्वन्द्वोविभाषा—This Sûtra is not traceable to Pâṇini's grammar nor to Chandra's grammar.

„ कालभावयोः सप्तमी—Compare Pâṇini's Sûtra यस्यचभावेनभावलक्षणं II. 3. 37.

219. ध्रुवा हि नाट्यस्य प्रथमे प्राणाः—This is from Bharata's Nâṭyaśâstra.

„ नीविरापन्थनं नार्या &c.—This line is given in Vâmana's अलंकारसूत्रवृत्ति as quoted from नाममाला. Hence the name of Kâtya's *Kosha* may be नाममाला. But the Nâmamâlâ quoted by Kshîrasvâmin is different from this.

221. अक्षः षोडश माषकाः—This is from Manusmṛiti. Compare— ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री on p. 154.

224. स्वस्ति तेस्तु लतया सह वृक्ष—The whole verse quoted in Vâmana's अलंकारसूत्रवृत्ति runs thus— मा भवन्तमनलः पवनो वा वारणो मदकलः परशुर्वा । वाहिनीजलभरः कुलिशं वा स्वस्ति तेस्तु लतया सह वृक्ष ॥

227. आश्रयेहि मम सीधुभाजनात्—The remaining three lines in Vâmana's अलंकारसूत्रवृत्ति are— यावदग्रदशनैर्न दश्यसे । चन्द्र मद्दशनमण्डलाङ्कितः खं न यास्यसि हि रोहिणीभयात् ॥

228. यो वै युवाप्यधीयानः—The whole line (Manusmriti II. 156) is— यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः ।

„ सान्वि लोचनयुगं नमयन्ती—See Bhâravi's Kirâtarjuniya IX. 44.

229. सन्त्येवेदमृतेन किं यदि खलास्तत्काल &c.—This quotation is from Râjasekhara's works.

230. शनैः शनैर्व्युपरमेत्—Compare शनैः शनैरुपरमेद् बुद्ध्या धृतिगृहीतया in Bhagavadgitâ VI. 25.

231. पञ्चमूलीशृतं पयः—This is repeated on p. 236.

233. विष्णोरनुचराः—Compare the verse— विष्वक्सेनोद्धवाक्रूराः सनकाद्याः शुकादयः । महाविष्णुप्रसादं च सर्वे गृह्णन्तु वैष्णवाः ॥ enumerating the five attendants on Vishṇu.

„ रुद्रानुचराः—Compare the verse— बाणरावणचण्डीशनन्दिभृङ्गिरिटादयः । सदाशिवप्रसादं च सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः ॥ enumerating the five attendants on S'iva.

236. पाणिन्युपज्ञमकालकं &c.—Pâṇini's grammar is called अकालक, because he does not employ terms indicative of time, such as अद्यतन, &c.

189. स्थालीपुलाकन्यायेन—The maxim of the rice in the cooking-pot. This maxim is used when the condition of the whole class is inferred from that of a part.

191. वेगाग्र धा[वा]रयेद्वात &c.—This is from चरकसंहिता.

192. शृङ्गग्राहिकया—*Lit.* 'by seizing oxen by their horns' *i. e.* by way of specification.

196. ऊर्णेयमन्तर्भुवो:—This occurs twice in the Nâgânanda Act I and V.

„ ये द्रव्यहेतोर्ध्याइं &c.—See comment. on अभिमर p. 220.

198. रसासृङ्मांसमेदोस्थि &c.—This quotation from Vâgbha*t*a is repeated on page 222.

199. भूतमप्यनुपन्यस्तं हीयते &c.—This line is met with in Yâjnavalkya-Sm*r*iti II. 19.

201. प्रसादे वर्तस्व—A verse attributed to चन्द्रक in the शार्ङ्गधरपद्धति begins with these words.

202. रसाः स्वाद्वम्ललवण &c.—The six flavours are enumerated here and the passage is again quoted on p. 222.

„ भद्रो मन्दो मृगश्चेति &c.—These are the three kinds of elephants mentioned by writers on elephants. Compare भद्रो मन्दो मृगश्चेति विशेयास्त्रिविधा गजाः in Mallinâtha's commentary on S'isupâlavadha V. 49.

203. सप्त वातस्कन्धाः—The seven courses (स्कन्धाः) of wind one above the other in the Vâyupurâ*n*a are :—आवहः प्रवहश्चैव संवहश्चोद्वहस्तथा। विवहाख्यः परिवहः परावह इति क्रमात् ॥

„ संज्ञारूपसंवेदनासंस्कार &c.—These are the five forms of mundane consciousness (in Buddhistic philosophy). Compare- रूपवेदनाविज्ञानसंज्ञासंस्काराः पञ्चस्कन्धाः in Mallinâtha's commentary on S'isupâlavadha II. 28.

204. शार्ङ्गको मन्दपालसुतः—One of the four birds, sons of the sage मन्दपाल, who were allowed by Arjuna and K*r*ish*n*a to escape from the Khâ*nd*ava forest before it was burnt down by fire.

210. सत्त्ववान्वीर्यसंपन्नः—Compare सत्त्ववाञ्शीलसंपन्नः on page 219.

211. स्तम्भे स्यान्निष्क्रियो जन्तुः &c.—This quotation is from a medical work like चरक or सुश्रुत.

„ परार्थं बद्धकक्ष्याणां त्वादृशां &c.—The whole verse in the Nâgânanda Act IV runs thus :—जायन्ते च म्रियन्ते च मादृशाः क्षुद्रजन्तवः। परार्थं बद्धकक्ष्याणां त्वादृशामुद्भवः कुतः ॥

212. स गुरुः क्रियां कृत्वा &c.—This line from a Sm*r*iti is also quoted on p. 211 before.

117. दिवसस्याष्टमे भागे &c.—This is from the शातातपस्मृति.

118. क्रीतं च निवरा कन्येतिवत्—See Kâsikâ on Panini's Sûtra III. 3. 48 (नौवृधान्ये).

119. तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानं &c.—These Sûtras are given in Patanjali's Yoga-philosophy.

122. जन्याः स्निग्धा वरस्य ये—See Kshirasvâmin's comment. on जन्याः and the line quoted from Raghu (VI. 30). Mallinâtha reads the line as— याहीति जन्यामवदत्कुमारी which is evidently wrong according to the context. Mallinâtha and Bhattoji Dikshita take the word जन्या as meaning मातृसखी on the authority of Visvakosha which is in conflict with Amarakosha.

129. घोरितं वल्गितं धारा &c.—This quotation must be from an अश्वतन्त्र like S'âlihotra.

136. पर्श्वोपि यदाह &c.—See verse 71 p. 132.

137. कमर्थिनः कुपुम्यन्तु &c.—Compare this verse with that given hereafter in the Note on वावदूक page 171.

139. कालः संहरति प्रजाः—This is from Hârita and the whole runs thus— कालः सृजति भूतानि कालः संहरति प्रजाः। कालः स्वपिति जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः॥ It is also met with in Patanjali's Mahâbhâshya on Pânini's Sûtra III. 4. 167.

147. भिस्सटा—A diminutive from भिस्सा as वधूटिका from वधू and ग्रामटिका from ग्राम. See Note on वधूटी p. 92.

155. समासे वर्णस्य वा वलोपमाहुः—This rule may fall under Pânini's Sûtra VI. 3. 109 (पृषोदरादीनियथोपदिष्टम्).

157. गृहस्थूणवल्लीवे— See गृहस्थूणम् on page 237.

" गजनिमीलिकयैते— गजनिमीलिका or इभनिमीलिका means 'shrewdness or sagacity.' Compare the stanza— य एव पारायणिकैर्दृष्टोपि विवरीकृतः। पन्थास्तेनैव याताः स्मः कृत्वा गजनिमीलिकाम्॥ in the introduction to the Kshiratarangini.

162. व्रणोव्रियामीर्मरः &c.—See verse 54 page 100.

171. पदकारवाक्याद्गूकः—Here the Padakâra may probably be a grammarian, but nothing is known about him. In the Kshiratarangini वावदूक is thus derived— यजजपदशांयङ्, वदेरपि–इष्यते। यदाह भोजः– यायजूकं ध्रुवं कालदन्दशूको न खादति। लोकोक्तिजजपूकं च वावदूकं च खादति॥

174. अवोपसोर्लोपश्च—This Sûtra here and again on p. 209 is not traceable to Pânini's grammar, nor to Chandra's grammar.

81. प्राप्तप्रणिहिते समे—See verse 87 (p. 179).

63. तिष्यमामलके लक्ष्मीरिति—The आमलकी tree is called तिष्यफला and Kshîrasvâmin accounts for it by quoting from the verse— तिष्यमामलके लक्ष्मीर्नित्यं हरितगोमये । नित्यं शङ्खे च पद्मे च नित्यं शुक्ले च वाससि ॥

70. यदाह पृश्निरल्पतनौ—See the verse 48 of the नृवर्ग on p. 99.

71. हरमेखलो निघण्टौ दृष्टः— हरमेखलं or हरमेखलतन्त्रम् is an old medical work. Hence हरमेखले निघण्टौ दृष्टः ought to be the correct reading here.

74. ऐरावतो नागरङ्गो &c.—Here Kshîrasvâmin points out the inaccuracy of Amarasimha by referring the reader to the line on page 60.

75. सल्लकी शल्लकी ह्लादा &c.—Bhânujî Dikshita attributes this verse and the one on p. 169 to रुद्रकोश.

77. ओषधी फलपाकान्ता जातिः—Compare ओषधिः फलपाकान्ता (p. 53), and the quotations from Dhanvantari on pp. 179 and 217.

81. कस्य वित्तंमता ब्रवीति &c.—The verse referred to here is quoted on page 77.

83. लामज्जकं सुवासं स्यात् &c.—This verse is from सुश्रुत according to Bhânujî Dikshita.

92. वधूटी च ग्रामटिकावत्—The word स्वर्गग्रामटिका is met with in a verse in the महानाटक and explained by Kshîrasvâmin on page 147.

100. वार्तं इति तु युक्तं यद् &c.—See verse 76th on page 199.

102. मांसभक्षयितामुत्र यस्य &c.—The verse in the Manusmriti V. 55 runs thus :—मां स भक्षयितामुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम् । एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ Hence the second line of the verse in the bracket here may be— एतन्मांसस्य मांसत्वं निरुक्तं मनुरब्रवीदिति नैरुक्ताः ।

104. अंसकक्षयोः सन्धि &c.—Read अंसवक्षसयोः सन्धि etc. The mistake is due to the reading in the Vyâkhyâsudhâ of Bhânuji Dikshita.

109. गौरिवाकृतनीशारः &c.—This quotation is given in Patanjali's Mahâbhâshya on the Vârttika शृवायुवर्णनिवृतेषु ।

„ अर्धोरुकम्—May अर्धोरुक be a corruption of अधरोरुक met with in Patanjali's Mahâbhâshya on I. 2. 45 and quoted in the Notes (on page 10 before.)

113. ब्रह्म वेदा ब्रह्म तपो &c.—This line is repeated on pp. 114 and 205.

115. चन्द्रोपज्ञसंज्ञकं &c.—Read चन्द्रोपज्ञमसंज्ञकं etc. Chandra's grammar is called असंज्ञक, for he uses the word नामन् instead of the word संज्ञा in Pânini's grammar, *e. g.* नाम्निजन्याः = संज्ञायांजन्याः । Also see page 236.

„ नन्दोपक्रमाणि मानानि—Compare नन्दोपक्रम मानानि on p. 208 and नन्दोपक्रमाणि मानानि on p. 236.

33. मान्ये मावोपि वक्तव्यः &c.—This quotation from Bharata here as well as on page 219 ought to be—मान्यो मार्षोपि वक्तव्यः किञ्चिदूनस्तु मारिषः ।

33. मार्षोपि यथा परिषत्पर्षत्—*Short* for मारिष is मार्ष, as पर्षत् is for परिषत् on p. 115.

34. अनुभावस्त्वभिनयः &c.—This from Bharata's Nâ*t*yasâstra is quoted again on page 219.

,, तिरसोगतो &c.—The Sûtra in Chandra's grammar is तिरसः (not तिरसोगतो) corresponding to Panini's Sûtra विभाषाकृञः ।

36. स्तम्भे विचेतनत्वं &c.—Compare स्तम्भे स्वामिनिष्क्रियो जन्तुः प्रलये गतचेतनः । on page 211.

38. आशीस्तालुगता दंष्ट्रा &c.—This is repeated on page 222.

39. मधु तिष्ठति वाचि &c.—This verse is found in the Saundarânanda of As*v*aghosha. Bhart*r*ihari's Vairâgyasataka has— मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हालाहलमेव केवलम्.

,, स्निग्धं भवत्यमृततुल्य &c.—This is quoted in Vâmana's अलंकारसूत्रवृत्ति also.

45. कुवलयदलनीला &c.—The line quoted in Vâmana's अलंकारसूत्रवृत्ति runs thus— कुवलयदलनीला कोकिला बालचूते ।

47. शरावत्या अवधेः पश्चिमेन &c.—The river शरावती is probably the modern रावती or राप्ती a tributary of सरयू. A town of the same name was situated on the शरावती. This river forms the geographical boundary dividing the two great schools of Grammarians, the Eastern and the Northern.

48. द्यावाभूमी च रोदसी—See comment. on रोदसी p. 222.

50. इन्द्राद्ययोः समासेन—This Sûtra is not traceable in Pâ*n*ini's nor Chandra's grammar.

51. मुसमः संक्रमो &c.—See comment. on संक्रम page 186.

52. सुगन्धिर्गन्धमादनः &c.—See Kumâra-sambhava VI. 46.

54. पतनान्ताः समुच्छ्रयाः—The complete verse in the Mahâbhârata (*S*ântiparvan) runs thus :—क्षयान्ता निचयाः सर्वे पतनान्ताः समुच्छ्रयाः । संयोगो विप्रयोगान्तो मरणान्तं च जीवितम् ॥

58. आह च &c.—Many unspecified quotations in the वनौषधिवर्ग are traceable to Dhanvantari's Nigha*nt*u.

61. पिच्छेन पिच्छा &c.—The primary meaning of the word पिच्छा is आचाम. (See page 232). Hence the remark आचामवद्द्रवस्निग्धत्वात्. For आचाम see page 148.

rilabhatta. Haradatta gives the correct form (अप्यविष). Compare comment. on गैरिक pp. 53 and 190.

15. जपादित्वात्पक्षे यत्वम्—See जपा(वा) on page 66. The जपादिगण is not given in Pânini's Ganapâtha nor in Vardhamâna's Ganaratnamahodadhi. It occurs frequently in this commentary. See pp. 51, 54, 86, &c.

16. मा अप्युच्यते सत्यभामा &c.—As भामा is *short* for सत्यभामा by the rule (पूर्वपदलोपः) given in Patanjali's Mahâbhâshya, so is माः for चन्द्रमाः.

21. पक्षिणीत्याहुः—Compare comment. on उभयेद्युः p. 230.

24. तम आवरकं मोहहेतुः—Compare गुरुवरणकमेव तमः on page 222.

25. संविदं लङ्घयेच्च यः (not सः)—This line is from Yâjnavalkya-Smriti (II. 187) and quoted again on page 201.

27. गावीगोणीगोपोतलिकादिः—The reference is to the passage—एकैकस्य शब्दस्य बहवोपभ्रंशाः । तद्यथा– गौरित्यस्य गावीगोणीगोतागोपोतलिकेत्येवमादयोपभ्रंशाः in Patanjali's Mahâbhâshya.

28. भट्टोपि &c.—Here Bhatta means Kumârilabhatta and the verse quoted is from his श्लोकवार्तिक.

,, पुरापि नवं (भवं) पुराणं.—There is probably a slip in writing पुरापि न नवं पुराणं of the Nirukta. See pp. 177 and 226.

,, दामोदरकराघात &c.—This verse is attributed to Bâna in the सुभाषितसंग्रह.

29. चिन्तां प्रकृतसिध्यर्थां &c.—See comment. on उद्घात (p. 186) and this very line quoted there.

30. छिवुष्ठिवोर्वादीर्घः—The Sûtra from Chandra's grammar is incorrectly quoted here, छिविसिव्योर्दीर्घश्च on page 183 and छिविसिव्योर्ल्युटिवा दीर्घः on page 188. The correct Sûtra runs thus— छिवुसिवोर्दीर्घश्च.

,, असंबद्धं दशदाडिमादि वाक्यं—See Pantanjali's Mahâbhâshya on I. 2. 45, where words are grouped incoherently thus— दश दाडिमानि षडपूपाः कुण्डमजाजिनं पललपिण्डः– अधरोरुकमेतत्कुमार्याः स्फैयकृतस्य पिता प्रतिशीन इति Also compare— गुणानां दर्शनान्मुख्यो यस्यार्थस्तदपार्थकम् । दाडिमानि दशेत्यादि न विचारक्षमं वचः ॥ in Vâmana's काव्यालंकारसूत्रवृत्ति.

,, एष वन्ध्यासुतो याति &c.—This as well as अन्धोमणिमविन्दत्तमनङ्गुलिरावयत् &c. above are probably *Subhâshitas*.

31. तिर्यग्योनिश्च पञ्चधा भवति—Compare the quotation (on page 173): अष्टविकल्पो दैवस्तिर्यग्योनिश्च पञ्चधा भवति । मानुष्य एकविधः स समासाद् भौतिकः सर्गः ॥ Also compare अष्टविकल्पं दैवं तैर्यग्योनं पञ्चधा भवति । मानुष्यं चैकविधं समासतोयं त्रिधा सर्गः ॥ in the सांख्यकारिका of ईश्वरकृष्ण.

NOTES.

PAGE.

1. भमा अभिधानकृतो &c.—Compare भमाः पारायणिकाद्यन्ताया अपि च यत्र विभ्रान्ताः। तान्धातून् विवरीतुं गहनमहोप्यवासिताः स्मः ॥ in the Kshîrataranginî.

,, जाता विश्वसृजः क्रमेण &c.—This verse ends the introduction to the Kshîrataranginî also. The six works or commentaries (षड्वृत्तयः) of Kshîrasvâmin are: (1) नामपारायण or अमरकोशोद्घाटन; (2) क्षीरतरङ्गिणी or धातुवृत्ति; (3) निपाताव्ययोपसर्गवृत्ति, (4) अमृततरङ्गिणी referred to in the Kshîrataranginî; (5) निघण्टुवृत्ति mentioned by Devarâja in his Niruktanirvachana; and (6) गणवृत्ति referred to by Vardhamâna in his Ganaratnamahodadhi and containing probably the *Japâdigana* not found elsewhere.

2. समाहृत्यान्यतन्त्राणि &c.—The works alluded to here ought to be the large *Koshas* of Kâtya, Muni, Bhâguri, Dhanvantari, etc. who were anterior to Amarasimha. (See Introduction).

4. देववदद्दसंहृतेभ्यः &c.—See comment. on दिग्भ्योपपादुक p. 173.

,, सर्वे गत्यर्था ज्ञानार्थाः—This remark repeated on page 182 is well-known amongst Grammarians.

,, ऐश्वर्यस्य समग्रस्य &c.—This verse from Vishnupurâna is repeated on page 192.

5. तापी च—This ought to be तायी च. Buddha is styled तायिन् (not तापिन्). The letters प and य, which are similar in form, are often mistaken one for the other. Hence the above error met with in Dictionaries also.

6. बलस्त्वनुनिष्पादिन्यायेन— बल is *short* for बलभद्र after the manner of an echo by dropping भद्र, as भीम for भीमसेन.

7. संहितासु स्वेक ब्रह्म &c.—The *Samhitâ* referred to here is the पंचरात्रसंहिता of Nârada. This passage is a quotation from S'ankarâchârya's शारीरभाष्य.

14. विग्रहसा विग्रहो &c.—The *Nyâya* or principle of the words अवि & अविक occurs in Patanjali's Mahâbhâshya on IV. 1. 88 (Vârt. 2) as follows:—तत्र द्वयोः शब्दयोः समानार्थयोरेकेन विग्रहोऽपरस्मादुत्पत्तिर्भविष्यति अविरविकन्यायेन। तद्यथा— अवेर्मांसमिति विगृह्य— आविकशब्दादुत्पत्तिर्भवति— आविकमिति। The inaccurate compound (आविरविक) is attacked by Kumâ-

Page

प्रार्थं कुरुध्वं बुधाः
मुग्धे मुधा ताम्यसि
उताहोस्विद्वैदर्भराजा नलः परपुरंजयः
एकमेव वरं पुंसामुत राज्यमुताश्रमः
आख्यामि तु तत्त्वं ते
न हि न हि माहिमानं प्राप्य तुष्यन्ति भूपाः
भीमः पार्थस्तथैव च
इति ह स्माहुराचार्याः
नासीरधूलिधवलाः पुरतः प्रयान्ति
अग्रतो धावति श्रीः
किंचित्कुञ्चितमूर्धजाः
अन्यो धनं प्रेत्य गतस्य भुङ्क्ते
अमुत्र भविता यत्ते तच्चिन्तय शुभाशुभम्
शारदाभ्रमिव चेल्यमायुः
सद्यः पतति मांसेन
229 प्रसह्य वित्तानि हरन्ति चोराः
यतो भवन्तमन्तरेणान्यथा भूपतिर्प्रोहितः
न हि प्रेम प्रयोजनापेक्षम्
नेकः सुप्तेषु जागृयात्

Page

अञ्जसा वक्ति साधुः
परितः प्रपतन्ति दुष्कृत्वा [तो] विपदः
सर्वतः संपदः सताम्
कच्चिज्जीवति मे माता
यथातथं वक्ति सभासु विद्वान्
आत्मा सर्वं तु पश्यति
गुरुर्वा वक्ति भीष्मो वा
उच्चैरुच्चरितुं चिरम्
सन्तः प्रायो विवेककारः
शनैर्याति पिपीलिका
230 ऊं सैवास्मि तव प्रिया
नरो लोकेऽस्य दुर्लभः (थैलः)
पुष्पन्तो योतते कथम्
तं हन्तास्मि परेद्यवि
235 कियती पञ्चसहस्री कियती लक्षाथ कोटिरपि कियती । औदार्योन्नतमनसां रत्नवती वसुमती कियती ॥
237 सुदिनासु सभासु कार्यमेतत्

Vide Notes for the verification of some unverified passages in the Commentary.

Page

दुष्करं पुष्करं गन्तुम्
पर्वतान्तरिताः श्रियः
अन्तरज्ञो भव सदा धनस्य च जनस्य च
अयमन्य(त्व)न्तरो मम
दृष्ट्वान्तरं ज्योतिरुपारराम्
216 प्रस्नधोयधिया पृच्छा तस्य भजनमुत्तरम्
217 सितपटच्छमपाली कपालीम्
शीलधनः साधुः
218 षड्युग्मकरतलरतालो वितस्तिः शङ्कुरानन्नम्
न केवलं भुवो भर्ता
धात्वर्थः केवलः शुद्धो भाव इत्यभिधीयते
भावालसा विलासिन्यः
स्वं भावं भावयेद्योगी
भावाश्चित्तजया भवन्ति भवता भाव्यन्त एते यथा
219 उत्सुकानीव भान्ति स्वाः
हृदि स्वमवलोकयन्
प्रभूताः स्वा न दीयन्ते
वस्तूपलक्षणं यत्र सर्वनाम प्रयुज्यते ।
द्रव्यमित्युच्यते सोर्थो भेद्यत्वेन व्यवस्थितः ।।
उत्क्रान्तसत्त्वो मृगः
220 त्यक्तापदेशो यतिः
अग्रतो बाहुपाशेन केशपाशेन पृष्ठतः ।
पार्श्वयोः कर्णपाशेन सर्वतो बन्धनं प्रिया [ये]।।
त्व[म]दुन्ताङ्कितपालिकक्षरुधिराक्लिष्टाप्रपुङ्खं शरम्
221 चतस्रः कर्षूः पितृभ्यः कुर्यात्
222 रसस्यातिरसः सर्पिः
रोदोरन्ध्रमजिहदत् [न्]
उपष्टम्भकं बलं च रजः
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत
224 सर्वान्गुणानेव गुणोतिभाति
सद्धयुवानो गीर्वाणाः
आराच्छत्रोः सदा वसेत्
संप्रीतान्स्थापयेदारात्

Page

अहो बत महत्कष्टम्
बत वितरत तोयं तोयवाहा हिमान्तं [नितान्तं]
225 वृद्धिरित्येव या वृद्धिः
नाना नारीर्निष्फला लोकयात्रा
ननु चण्डि प्रसीद मे
आशीविषो वा संक्रुद्धः सूर्यो वाभ्राद्विनिर्गतः ।
भीमोन्तको वा समरे गदापाणिरदृश्यत ।।
226 सामिसंमीलिताक्षी
नूनं हन्तास्मि रावणम्
जोषमास्ते जितेन्द्रियः
को नामायं सवितुरुदयः
दृष्टेपरे रोदिति नाम तन्वी
स्वर्गतस्य सपुत्रस्य
गोत्रस्खलितं क्लिलाश्रुतं कृत्वा
227 आपतन्तमभितोरिमपश्यत्
भिक्षित्वापि बुभुक्षिता यदहहा
अहह प्रज्ञाप्रकर्षो राज्ञः
चिराय निर्धनो भूत्वा भवत्यह्ना (ह्ना) महाधनः
कान्तं [न्तां] मुहुर्ध्यायति
पुनः पुनर्वारि पिबेदभूरि
अभ्यद्रक्षि क्रुशोक्षितः
अभीक्ष्णमास्फाल्यतीभकुम्भम्
साम्यसरत्यभिसारिका
सपदि प्रदहत्युपेक्षितोग्निः
प्राग्विद्रुतं कातरैः
तरसोदिता सह जलेषु
किमुत ब्रह्मविन्निभिः
सुसिक्तं आम्रः फलति
विना वातं विना वर्षम्
त्वामन्तरा तामरसायताक्षि
228 वितर गिरमुदारां येन मूकाः पिकाः स्युः
पद्भ्यां याति कुतश्चन
कदाचिच्छूरतां याति मरणे कृतनिश्चयः
सत्रा कलत्रैर्गार्हस्थ्यम्
सहगो द्विजिह्वैः सज्जः

Page

98 अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरौत्सर्गिकः स्मृतः ।
नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिध्यति माणवः ॥

103 पद्भ्यामेव यथातयेति

119 अभिवाद्योपसंग्राह्यः

162 निष्प्रवाणिर्नवः पटः

167 येनान्तर्जलचारिभिर्जलचरैरप्युत्क्रमुत्कूजितम्

175 सूर्यः समेषां समः

178 कुलस्यान्तः प्रभु श्रियः

180 प्रिय[या]दर्शनमेवास्तु किमन्यैर्दर्शनान्तरैः ।
निर्वाणमाप्यते येन सरागेणापि चेतसा ॥

186 संवाहनं स्पर्शसुखम्

188 अकरणिरिह भूयादप्रशस्तस्य धातुः

189 पुलाका इव धान्येषु
पुलाककारी विपुलाशयः स्यात्

190 तपो न कल्कोऽध्ययनं न कल्कः

192 विचरेद्युगमात्रदृक्

193 वर्जयेत्कटधूमं तु

195 प्रकीर्णभाण्डामनवेक्ष्यकारिणीम्
क्षणे रक्ष्याः कुलस्त्रियः
क्षणपरपुरजिद्दत्तशूलप्रहारान्

199 वृत्तदेहः स्नायुसारः

201 यदध्यासितमर्हद्भिस्तद्धि तीर्थम्
तीर्थे तद्धव्यकव्ययोः
एकमेवेदं संविद्रूपम्
प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च संविदं स्थापयेद्व्रणे
धर्मस्योपनिषत्परा

202 जीवेम शरदः शतम्
पदमापदि माधवः
सूर्यांशवः शशिनि लब्धपदा यथैव
नवनखपदलेखालाञ्छितं बाहुमूलम्
बाहुप्रमाणं परिधिरच्छिन्नाप्रोतिपत्रलः
आधिं प्राप्तो यो न मुह्येत्स धीरः
अनुबन्धमवस्थां च ज्ञात्वा दण्डं निपातयेत्

203 सिन्धोः परमपूरुषम्

205 पर्ववर्जं व्रजेदेनाम्

206 व्याप्तं व्योमनि वर्ष्मणा

Page

207 क्षरत्येनः कृतं पूर्वम्
गर्भस्थेन समः सदा
रम्भागर्भमृदुः
भर्तृगर्भद्रुहां चैव
दुन्दुभ्या किल तत्कृतं पतितया यद्
द्रौपदी हारिता

208 जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः

209 दर्भाः कृष्णाजिनं मन्त्रा ब्राह्मणा हविरग्नयः ।
अयातयामान्येतानि नियोज्यानि पुनः पुनः ॥
न शत्रोः प्रत्ययं गच्छेत्
समयाच्छ्रावयेच्छिष्यम्

210 गुणिनां नात्ययं कुर्यात्
वाक्पारुष्येत्ययः शतम्
सर्वस्यैव हि दानस्य ग्रहीता गुरुरुच्यते ।
कन्यायाश्चैव विद्यायाः प्रदाता पूज्यते गुरुः ॥
प्रायेणाकृतकृत्यत्वान्मृत्योरुद्विजते जनः

211 कृपाकषायीमभ्येति सत्वपः किं न गोत्रभिद्
सर्वाः क्रिया मन्त्रमूला नृपाणाम्
महापातकिनां पुंसां भवेत्प्राणान्तिका क्रिया
गुरुदेवक्रियारतः
क्रियां विना को हि जानाति कृत्यम्
अतो न रोदितव्यं हि क्रियाः कार्याः प्रयत्नतः
विच्छायः पुरुषो भवेत्
संक्रान्तच्छाय आदर्शः
सप्त कक्ष्या अतिक्रम्य
परिधानाद्बहिः कक्ष्या निबद्धा ह्यासुरीभवेत्
तानि कृत्याहतानीव

212 वारं वारमुदारसंगरसुखे
संगरो विक्रियाकरः
अन्योन्यं कृतसंगरौ
संगरे शरणं सुहृत्

213 आडम्बराणि पूज्यन्ते स्त्रीषु राजकुलेषु च
जये धरित्र्याः पुरमेव सारम्
वरं कूपशताद्वापी

214 मात्राशी सर्वकालं स्यात्

215 चतुःपीठमिदं तन्त्रम्
साधारणं भवेत्तन्त्रम्

62, 64, 70, 72, 73, 85, 86, 89, 93, 101, 102, 103, 105, 111, 118, 121, 123, 126, 136, 137, 149, 151, &c.

शिशुपालवधम्–A poem by Mâgha, 12, 15, 29, 137, 188, 222, 225, 226· 227, 228, etc.

श्रीहर्षः– A lexicographer (probably author of द्विरूपकोश), 101.

संहिताः–Some unspecified literary works, (see Notes), 5. 7, etc.

सांख्यम्–One of the six systems of philosophy (by Kapila), 24, 25, etc

सांख्यकारिका–A work by *Is*varakrish*n*a, 199, 217.

सुभाषितानि–Sanskrit anthologies, (see Notes), 31, 201,

सुश्रुतः–A well-known medical writer, 80, 83.

सूदशास्त्रम्–A work on cookery, 146.

सौन्दरानन्दम्–A poem by A*s*vaghosha, (see Notes), 39.

सौरतन्त्रम्–A treatise (about the solar deity), 19.

सौश्रुताः–Followers of the Susruta school, 64.

स्मार्तम्–The Sm*r*iti-literature, 92, 153, 159, 230.

स्मार्ताः–A sect of ritualists so called, 51, 158.

हरमेखलम्–An old medical work, (see Notes), 71.

हर्षचरितम्–A biographical work by Bâ*n*abha*tt*a, 28.

हारीतः–A Sm*r*iti-writer, (see Notes), 139.

NOTE—References to श्रुति, स्मृति, पुराण, निरुक्त, आगम, ect., are not included in this list.

List of Unverified Quotations, &c.

Page

11 गन्धर्वौ च हाहा हूहूः

18 जमदग्निर्वै पञ्चममवदानमवायत्

20 ब्रह्मणो ह्येषा पितृप्रसवित्री तनुः

22 अहोरात्राविमौ पुण्यौ

23 जीव्यात्सहस्रं समाः

25 सत्संवित्करणातीता

30 न तां वदेद्दुषतीं (गां) पापलोक्याम्

35 मीढ्वावनप्रवक्तेन्दुः
त्वाढादमुं देवमुदीक्ष्य
य ईर्ष्युः परवित्तेषु

39 काममपायि मयेन्द्रियकुण्डैर्यद्यपि दुष्कृत-
हालहलोत्वः

Page

सेयं दुःखा च दुरुपपादा च
दुःखः सुतो निर्गुणः
सर्वं दुःखं विवेकिनः

40 सुगममेव हि मध्यमपांपतेः

47 न हि कोटरसंस्थेग्नौ तरुर्भवतिशाद्वलः
राजन्वान्-लोक उच्यते

67,161 अ मा नो नाः प्रतिषेधे

82 दर्भाणां स्थाने शरैः प्रस्तरितव्यम्
धान्तो धान्तः काञ्चनस्येव राशिः

88 क्षिल्लिकार्ति(क्षां)कृतानाम्

91 अजयद् द्विषतः प्राप्तनयः परमहेलया ।
स्वप्नेपि मनासि स्पृष्टो न यः परमहेलया ॥

96 या जनित्री त्रिलोक्याः

माला-A lexicon, (see Introduction), 13, 15, 20, 21, 23, 24, 39, 40, 41, 44, 47, 48, 50, 63, 66, 74, 81, 82, 85, 86, 94, 118, 132, 144, 146, 148, 149, 151, 152, 154, &c.

मालाकारः-Author of the lexicon Mâlâ, 20, 35, 148, &c.

मुद्राराक्षसम्-A drama by Visâkhadatta, 199, 224.

मुनिः-An old lexicographer, (see Introduction), 44, 94, 97, 98, 103, 105, 109, 117, 118, 131, 132, 136, 141, 145, 147, &c.

मेघदूतम्-A poem by Kâlidâsa, 96, 184, 205, 228.

याज्ञवल्क्यः-A well-known Smriti-writer, 39, 95, 121, 153, 158, 199, 201, &c.

योगशास्त्रम्-A work on Yoga-philosophy, 13, 119, 191, &c.

रघुवंशम्-A well-known poem by Kâlidâsa, 11, 38, 97, 110, 121, 122, 127, 129, 191, 192, 195, 202, 209, 211, 230, &c.

रत्नावली-A drama by S'rîharsha, 217, 227.

राजशेखरः-Author of Bâlarâmâyana, Viddhasâlabhanjikâ, &c. 215.

रुद्रः-A lexicographer, (see Notes), 72, 75, 169.

वाजसनेयिसंहिता-The Samhitâ of the S'ukla Yajurveda, 224, 226.

वात्स्यायनः-A writer on erotics, 66, 217.

वामनः-Author of Kâvyâlankârasûtravritti, (see Notes), 38, 45, 219, 224, 227, &c.

वामनः-One of the joint authors of Kâsikâ, 48.

वायुपुराणम्-One of the 18 Purânas, (see Notes), 203.

वाह(ग्भ)टः-A well-known medical writer, 146, 200, 198, &c.

विक्रमोर्वशीयम्-A drama by Kâlidâsa, 11, 230.

विदग्धमुखमण्डनम्-A work by Dharmadâsa, 21.

विद्धसालभञ्जिका-A drama by Râjasekhara, 18, 38, 227.

विष्णुपुराणम्-One of the 18 Purânas, (see Notes), 4, 28, 191, 192.

वृद्धचाणक्यः-A work on Niti, 192.

वेणीसंहारम्-A drama by Bhatta Nârâyana, 202, 207.

वैद्यकम्-A medical work probably of Vâgbhata, 200.

वैद्याः-Medical writers, 42, 59, 71, 72, 74, 75, 102, 146, 147, &c.

वैशेषिकम्-A system of philosophy founded by Kanâda, 25, 210.

व्यासः-An ancient sage to whom Mahâbhârata and many other works are ascribed, 207.

शातातपः-Author of a Smriti, (see Notes), 117.

शारीरभाष्यम्-A well-known work by S'ankarâchârya. (see Notes), 7.

शाश्वतः-An old lexicon, (see Introduction), 5, 8, 13, 18, 20, 21, 23, 27, 32, 35, 37, 39, 40, 41, 45, 46, 47, 49, 51, 52, 54, 56, 58,

पञ्चतन्त्रम्–A well-known work containing moral stories and fables, 41, 126, 193, 195, &c.

पदकारः–A grammarian (?), 171.

पाणिनिः–The great Sanskrit grammarian, 225, 236, &c.

पातञ्जलम्–Patanjali's system of Yogaphilosophy, 4.

पालकाप्यः–A very old writer on elephants, 128, 203, 209.

पाश्चात्याः (प्रतीच्याः):–The Western school of S'âbdikas or grammarians, 8, 185.

प्राच्याः–The Eastern school of grammarians, 3, 5, 8, 11, 16, 21, 94, 114, 149, etc.

बाणः–Author of Kâdambari, Harshacharita, etc. (see Notes), 28.

बालरामायणम्–A drama by Râjasekhara, 10, 12, 94, 215, 224, 226, etc.

बौद्धः (आगमः)–Buddhistic philosophy or doctrines, 4, 203.

बौद्धाः–The followers of Buddhistic doctrines, 4, 25.

भगवद्गीता–A celebrated sacred work being an extract from Mahâbhârata, 193, 195, 203, 209, 218, 219, 224, 226, 230, etc.

भट्टः–The same as Kumârilabhatta q. v. 28.

भट्टिः–A poet of the 6th century or his work, 132, 179, etc.

भरतः–Author of Natyasâstra (a work on dramaturgy, etc.), 31, 33, 34, 36, 92, 108, 125, 135, 138, 160, 219, 223, etc.

भर्तृहरिः–Author of the well-known Satakas, 28, 39, 207, 229, etc.

भागुरिः–A very old lexicographer, (see Introduction), 4, 7, 8, 11, 14, 15, 16, 23, 26, 29, 39, 46, 70, 83, 95, 106, 118, 148, 151, etc.

भारतम् (महाभारतम्)–The well-known Indian Epic, 54, 112, 134, etc.

भाष्यम्–Patanjali's Mahâbhâshya, 20, 97, 147, 153, 180, 182, 226, 231, etc.

भोजः (श्रीभोजः)–A lexicographer, grammarian and commentator, 2, 11, 18, 27, 43, 45, 49, 101, 131, 137, 149, 152, 159, 163 173, 175, 198, 230, &c.

मनुः–A celebrated Smriti-writer, 23, 24, 47, 92, 95, 114, 115, 118, 120, 140, 141, 168, &c.

महानाटकम्–A work by Dâmodaramisra (also called Hanumannâtaka), (see Notes), 147, 215, &c.

महावीरचरितम्— A drama by Bhavabhûti, 195.

मालतीमाधवम्–A drama by Bhavabhûti, 209.

गौडाः–The Gauda school of Sâbdikas, 63, 74, 76, 90, 199, &c.

गौतमः–The reputed author of the Dharmasâstra named after him, 28, 114.

घटख(क)र्परः–Author of the Yamaka-Kâvya, 218.

चन्द्रः–Author of a medical Nighantu, 58, 59, 62, 64, &c.

चन्द्रः (चन्द्रगोमी)–The well-known Buddhist grammarian, 115, 236, (see Introduction).

चन्द्रकः–A poet to whom certain Subhâshitas are attributed in शार्ङ्गधरपद्धति, 201.

चन्द्रनन्दनः–Author of the medical Nighantu called गणनिघण्टु, 64, 65, 66, 71, 72, 76, &c.

चरकसंहिता–A well-known medical work, 194, 211, 217, etc.

चाणक्यः– The same as Kautilya q. v., 48, 163, &c.

चाणक्यशतकम्–A work on Niti, 41, 191, 193, 206.

चान्द्रम्–The grammar of Chandragomin, 30, 34, 40, 161, 171, 188, 211, &c.

जैनाः–The followers of Jaina doctrines, 187.

जैमिनिः–The Author of the Pûrva-Mimâmsâ, 28.

ज्योतिषम् (ज्यौतिषम्)–A work on astronomy, 23, 86.

टीका–A commentary, 17.

तान्त्रिकाः–Followers of Tantra doctrines, 144.

दन्तिलः–An old writer on the science of music, 31, 32.

दुर्गः–A lexicographer, 7, 12, 21, 27, 29, 31, 41, 55, 64, 84, 86, 99, 106, 131, 136, 142, 148, &c.

द्रावि(मि)डाः–The Dravidian school of Sâbdikas, 45, 92, 147, 163.

धनुर्वेदः–A work on archery, 135.

धन्वन्तरिः–Author of a well-known medical Nighantu named after him, (see Introduction), 56, 59, 62, 67, 74, 77, 80, 81, 82, 110, 111, 148, 156, 157, 179, &c.

धातुविदः–Metallurgists, 156.

नागानन्दम्–A drama by Sriharsha, 36, 196, 211, 227.

नाममाला–A lexicon, 13, 99, 104, &c.

नारदः–Author of a Smriti, 158

नारायणः–A commentater, 34.

निघण्टुः–The medical Nighantu by Dhanvantari, 61, 63, 66, 68, 69, 71, &c.

निघण्टु –Vedic vocabulary explained by Yâska, 46, 97.

निमिः–A medical writer, 63, 88, 157.

APPENDIX I.

An alphabetical list of authors and works quoted by Kshirasvâmin in his commentary on Amarakosha.

(The figures refer to pages).

अनेकार्थः (अनेकार्थकोशः)–A lexicon, 67.

अभिधानकारः–Author of Abhidhânakosha, 32.

अभिधानशेषः–A supplement to Abhidhânakosha, 235.

अमरमाला–A lexicon, 12, 15, 29.

अश्वतन्त्रम्–A work on horses (by some writer like Sâlihotra ?) (see Notes), 129.

आचार्याः–A commentator (कोऽयम्: ?), 50.

इन्दुः–Author of a medical Nighantu, 56, 57, 58, 59, 61, 68, 65, 67, 68, 69, 71, 75, 76, 77, 79, 80, 81, &c.

उत्तररामचरितम्–A drama by Bhavabhûti, 85, 140, 175, 227, 229.

उदीच्याः–The Northern school of grammarians, 185.

उद्भटः–A writer on Rhetoric (of Kâsmere), 224.

उपाध्यायः–A commentator on Amarakosha, 2, 41, 54, 99, 140, 141, 164.

कात्यः–A very ancient lexicographer, (see Introduction), 8, 10, 15, 16, 21, 23, 24, 27, 29, 30, 35, 36, 37, 39, 41, 47, 48, 50, 52, 54, 55, 89, 94, 104, 115, 118, 122, 125, 131, 144, 148, 151, &c.

कादम्बरी–A prose work by Bânabhatta, 28.

कालिदासः–Author of Raghuvamsa, Kumârasambhava, &c., 52, 90.

काव्यादर्शः–A work on Rhetoric by Dandin, 191.

काशिका–A complete commentary on Pânini, 35, 47, 118, 215, &c.

काश्मीराः–The Kâsmere recension of Amarakosha, 132.

किरातार्जुनीयम्–A poem by Bhâravi, 179, 210, 228, 236, &c.

कुमारसंभवम्–A poem by Kâlidâsa, 9, 52, 90, 109, 176, 196, 202, 224, 225, 226, 227, &c.

कुमारिलभट्टः–Author of the Mîmâmsâ-Vârttikas, 28, 166, 207.

कौटिल्यः–Author of a work on Arthasâstra, 34, 42, 49, 50, 51, 125, 137, 162, 185, 186, 193, 196, 210, 211, &c.

गौडः–A commentator on Amarakosha, 2, 3, 40, 41, 50, 59, 60, 77, 86, 106, 130, 131, 153, 192, 193, &c.

कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि ।
अणाद्यन्तास्तेनरक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥
षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् ।
परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गसंग्रहवर्गः । ५ ।

कार्त्तिकमहः । इन्द्रो देवतास्या ऐन्द्री (ऋक्), ऐन्द्रो मन्त्रः, ऐन्द्रं हविः । असंज्ञायामित्येव– श्रवण पौर्णमासी, अश्वत्था पौर्णमासी, संज्ञायांश्रवणाश्वत्थाभ्याम् (सू०) इत्यणो लुप् । नानाविधार्थविशेषा येषां ते वाच्यलिङ्गाः– को ब्रह्मा, कं शिरः, नभः खं, नभाः श्रावणः । नानार्था विशेषणानि वेत्येके– मूर्खा, मूर्खः, मूर्खं, विदुषी, विद्वान्, विद्वत् ॥ ४५ ॥ ष्णान्ताषट् (सू०) इति षट्संज्ञकाः, तथा युष्मदस्मच्छब्दौ, आख्यातान्यव्ययानि च त्रिलिङ्ग्यां समानि लिङ्गकृतविशेषरहितानीत्यर्थः । षट् स्त्रियः, षड्रसाः, षट् कुलानि, पञ्च स्त्रियः, पञ्च शराः, पञ्चेन्द्रियाणि, त्वं स्त्री, त्वं पुमान्, त्वं कुलं, अहं स्त्री, अहं पुमान्, अहं कुलं, ब्रूते स्त्री, ब्रूते पुमान्, ब्रूते कुलं, नानास्त्रियः, नानादेशाः, नानाकुलानि, उच्चैः स्त्री, उच्चैस्तरुः, उच्चैर्वनं, तत्र पारे, तत्र देशे, तत्र वने, एवं कति स्त्रियः, कति जनाः, कति खानि । लिङ्गविशेषविधौ पूर्वापरविरोधे परं लिङ्गं भवति । असुरपर्यायाः पुंस्त्व इत्यस्य विषये– नैर्ऋतः, राक्षसः । द्वयच्कमसिसुसन्नन्तमिति नृतीय इत्यस्य विषये– इदं तेजः, यशः । इहोभयं प्राप्नोति– इदं रक्षः, परत्वात्क्लीबे । इह यन्नोक्तं तल्लक्ष्यतो द्रष्टव्यं, यथा– गोधा पुंस्त्वजापि स्त्री, तथा पोटा नपुंसकमपि स्त्री । तथाव्यक्ते गुणसंदेहे नपुंसकलिङ्गं प्रयुज्यते– किं तस्या जातं स्त्री पुमान्वा, शक्यं श्वमांसादिभिरपि क्षुत्प्रतिहन्तुम् । तथा तयप्प्रत्ययान्तं धर्मवृत्ति स्त्रीनपुंसकयोः– वर्णानां चतुष्टयी, वर्णानां चतुष्टयम्, वेदानां त्रयी, वेदत्रयम् । धर्मिवृत्ति तु वाच्यलिङ्गं– त्रय्यः स्थितयः, त्रये लोकाः, त्रयाणि जगन्ति । तथा छान्दसोऽण् स्वार्थे क्लीबे– गायत्र्येव गायत्रं, अनुष्टुबेवानुष्टुभम् । तथा इक्-स्तिपन्तः पुंसि– अयं वृद्धिः, अयं पचतिः । तथा दरद् ह्रस्वकश्च स्त्रियां– इयं दरद्देशः, गृह्यकण्डिका, छत्रिका, दण्डिका, नालिका, नासिका । तथा प्रमाणाद्या अजहल्लिङ्गवचनाः– वेदाः प्रमाणं, स्मृतयः प्रमाणं, भूतमियं ब्राह्मणी, विप्राशिषो भद्रम् ॥ ४६ ॥ इति लिङ्गसंग्रहवर्गः । ५ । [इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने । सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥]

इति श्रीभट्टक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितेऽमरकोशोद्घाटने सामान्यकाण्डस्तृतीयः समाप्तः ।

आबन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप् ।
त्रिखट्वं त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥
त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ।
परलिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेपि तत् ॥ ४२ ॥
अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः ।
तद्धितार्थे द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥
बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेया तदुदाहृतिः ।
गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधयः परगामिनः ॥ ४४ ॥

त्रयाणां तक्ष्णां समाहारस्त्रितक्षं त्रितक्षी ॥ ४१ ॥ इति स्त्रीनपुंसकशेषः । एते त्रिलिङ्गाः– पात्रो भाजनं, पुट आच्छादनं, वाटो वृतिः, पेटः संहतिः परिच्छदश्च, कुवलं कोलिफलं, दाडिमं विदलम् । इति त्रिलिङ्गशेषः । स्वप्रधान इतरेतरयोगद्वन्द्वे तत्पुरुषे चोत्तरपदस्य यल्लिङ्गं तद्भवति– कुक्कुटमयूर्याविमे, मयूरीकुक्कुटाविमौ, कुलविशेषं, विप्रकुलमिदं, अर्धं पिप्पल्या अर्धपिप्पलीयं, चन्द्रार्धोयं, परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः (सू०) ॥ ४२ ॥ अर्थशब्दान्ताः प्राद्यलमादिपूर्वपदाश्च परोपगाः वाच्यलिङ्गा इत्यर्थः । ब्राह्मणायेयं ब्राह्मणार्था शिखरिणी, ब्राह्मणार्थ ओदनः, ब्राह्मणार्थं पयः, अर्थेन नित्यसमासः सर्वलिङ्गता च (वक्तव्या) (वा०), प्रगत आचार्योऽस्याः प्राचार्या, प्राचार्यः, प्राचार्यं, प्रादयोगताद्यर्थे प्रथमया (वा०), प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा (वा०) इत्युत्तरपदलोपः । अतिक्रान्ता खट्वामतिखट्वा, अतिखट्वः, अतिखट्वं, अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया (वा०) । अवक्रुष्टा कोकिलया चूतकलिकावकोकिला, अवकोकिलः, अवकोकिलं, अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया (वा०) । परिग्लानाध्ययनाय पर्यध्ययना, पर्यध्ययनः, पर्यध्ययनं, पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या (वा०) । निष्क्रान्ता मर्यादाया निर्मर्यादा, निर्मर्यादः, निर्मर्यादं, निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या (वा०) । अलं जीविकायै– अलंजीविका, अलंजीविकः, अलंजीविकम् । प्राप्ता जीविकां प्राप्तजीविका, प्राप्तजीविकः, प्राप्तजीविकम् । आपन्ना जीविकामापन्नजीविका, आपन्नजीविकः, आपन्नजीविकं, प्राप्तापन्ने च द्वितीयया (सू०) । वाच्यलिङ्गा इत्यर्थः । पञ्चसु कपालेषु संस्कृता पञ्चकपालापूपिका, पञ्चकपालः पुरोडाशः, पञ्चकपालं हविः । संख्या सर्वनाम च तदन्ताश्च वाच्यलिङ्गाः– एका, एकः, एकं, तिस्रः, त्रयः, त्रीणि, सर्वा, सर्वः, सर्वम् । संख्यान्ताः– ऊनास्तिस्रो यासां ता ऊनतिस्रः, ऊनत्रयः, ऊनत्रीणि । सर्वनामान्ताः– द्वाभ्यामन्या द्व्यन्या, द्व्यन्यः, द्व्यन्यत् ॥ ४३ ॥ बहुव्रीहिर्वाच्यलिङ्गः– चित्रा गावोऽस्याश्चित्रगुः स्त्री, चित्रगुर्ना, चित्रगु कुलम् । अदिङ्नाम्नामिति किं– दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोर्यदन्तरालं सा दक्षिणपूर्वा, एवं पूर्वोत्तरा सा विदिक् । गुणादिभिर्योग उपाधिः प्रवृत्तिनिमित्तं येषां ते परगामिनो वाच्यलिङ्गाः । गुणोपाधिः– शुक्ला शाटी, शुक्लः पटः, शुक्लं वस्त्रम् । द्रव्योपाधिः– दण्डिनी स्त्री, दण्डी पुमान्, दण्डि कुलम् । क्रियोपाधिः– पाचिका, पाचकः, पाचकम् ॥ ४४ ॥ कर्त्रर्थे संज्ञावर्जिताः कृदन्ता वाच्यलिङ्गाः– कर्त्री, कर्ता, कर्तृ, कुम्भकारी, कुम्भकारः, कुम्भकारम् । असंज्ञायामिति किं– ग्रहः, व्याघ्रः । कर्तृकर्मार्थे कृत्या वाच्यलिङ्गाः– वास्तव्या, वास्तव्यः, वास्तव्यं, वसेस्तव्यत्कर्तरि णिच्च (वा०), कर्तव्या, कर्तव्यः, कर्तव्यम् । कर्तरि कर्मणीति किं– स्यातव्यं त्वया, ब्रह्मभूयं, हत्या । असंज्ञायामित्येव– सूर्यः, भिद्योद्ध्यौ नदे (सू०) । तेन रक्तमित्याद्यर्थेऽणादितद्धितान्ता वाच्यलिङ्गाः– हरिद्रया रक्ता हारिद्री, हारिद्रः, हारिद्रं, लाक्षामिर्(भिः)रक्ता लाक्षिकी, लाक्षिकः, लाक्षिकं, कृत्तिकाभिर्युक्ता कार्तिकी पौर्णमासी, कार्तिको दिवसः,

कुम्रं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेमकुट्टिमम् ।
संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥
कवियं कन्दकर्पासं पारावारं युगंधरम् ।
पूयं (यूपं) प्रग्रीवपात्रीवे यूषं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥
अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।
तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् ॥ ३६ ॥
स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः ।
जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥
मुनिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ।
मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कुटी कटी ॥ ३८ ॥
स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्यञ् क्वचिच्च वुञ् ।
औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः ॥ ३९ ॥
षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेनाच्छायाशालासुरानिशाः ।
स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥

नद्यादिमेलः । शतमानं रूप्यपलं, यत्स्मृतिः– द्वे कृष्णले रूप्यमाषो धरणं षोडशैव ते । शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ॥ अमोक्षितक् । शम्बलः पथिव्ययः (पाथेयं) । अव्ययमलिङ्गमसंख्यम् । ताण्डवं नृत्यम् ॥ ३४ ॥ कवियमश्वमुखबन्धनम् । कन्दं मूलविशेषः । कर्पासं बादरम् । पारं नद्याः परं पार्श्वम् । अवारमर्वाक्पार्श्वम् । युगंधरं रथकाष्ठम् । पूयं क्लिन्नासृक् । प्रग्रीवं वातायनम् । पात्रीवं यज्ञोपकरणम् । यूषं मुद्गादिनिर्यासः । चमसं यज्ञाम्बुपानपात्रम् । चिक्कसं यवपिष्टम् ॥ ३५ ॥ अर्धर्चादिगणे पूर्वैर्घृतादीनां पुंस्त्वं यदुक्तं तन्निश्चितं छान्दसम् । अत इह लौकिके नोक्तम् । अथ प्रमादाल्लोके दृश्यते यदि तल्लिङ्गशेषव[त्स्वा]ङ्गीकार्यम् ॥ ३६ ॥ इति पुंनपुंसकशेषः । स्त्रीपुंसयोः शेषो वक्ष्यत इति शेषः । अपत्यप्रत्ययान्ताः स्त्रीपुंसयोः– वासिष्ठः– वासिष्ठी, गार्ग्यः– गार्गी । द्विपदादयो जातिविशेषाः स्त्रीपुंसयोः– पुरुषः– पुरुषी, कठः– कठी, कुक्कुटः– कुक्कुटी, मृगः– मृगी, अयं गौः– इयं गौः, अयं कपिः– इयं कपिः, भ्रमरः– भ्रमरी, वरटः– वरटी, उरगः– उरगी, अयमहिः– इयमहिः । एते मल्लकादयः शब्दाः स्त्रीयोगैः सह पुमाख्याः स्त्रीनरलिङ्गा इति ज्ञेयाः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ इति पुंस्त्रीलिङ्गशेषः । सिंहावलोकितेन (न)पुंसीत्येव द्वयोः । भावे कर्मणि च ष्यञन्तः स्त्रीनपुंसकलिङ्गः– यथा– उचितस्य भावः कर्म वा, (गुणवचन)ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च (सू०) इति ष्यञ्, एवं वैदग्ध्यं– वैदग्धी, सामग्र्यं– सामग्री । चोरस्य भावः कर्म वा चौरिका– चौरिकम् । क्वचिद्ग्रहणादिह– शौक्ल्यं, ब्राह्मण्यं, मानोज्ञकं, रामणीयकं, साहायकं, शैष्योपाध्यायिका, गार्गिका, काठिका ॥ ३९ ॥ षष्ठ्यन्तपूर्वपदाः सेनादयः स्त्रीनपुंसकयोः– नृणां सेना नृसेनं नृसेना, शुनां निशा श्वनिशं श्वनिशा, भूतनिशं भूतनिशा, गवां शाला गोशालं गोशाला । एवमितरे छायसुरे उदाहार्ये, यथा– वृक्षस्य वृक्षयोर्वा छाया वृक्षच्छायं वृक्षच्छाया, यवसुरं यवसुरा ॥ ४० ॥ आबन्तोत्तरपदो द्विगुरन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि स्त्रीनपुंसकयोः, नस्य च लुग्भवतीति प्रसङ्गाल्लक्षणानुवादः– तिसृणां खट्वानां समाहारस्त्रिखट्वं त्रिखट्वी,

भावे नणकचिद्भ्योन्ये समूहे भावकर्मणोः ।
अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥
क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेप्युक्थतोटके ।
चोचमुक्तं गृहस्थूणं तिरीटं मर्मयोजने ॥ ३० ॥
राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ।
माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपञ्जरम् ॥ ३१ ॥
लोकायतं हरितालं विदलस्थालबाह्लव(ह्लिक)म् ।
पुंनपुंसकयोः शेषोर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥
मोदकस्तण्डकष्टङ्कः शाटकः खर्वटोर्बुदः ।
पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

स्विति किं– चैत्रकन्था, संज्ञायांकन्थोशीनरेषु (सू०) इति नपुंसकम् ॥ २८ ॥ नणकेभ्यश्चकारानुबन्धेभ्यश्च येन्ये भावेर्थे कृतस्तथा समूहेर्थे भावकर्मणोश्च ये तद्धितास्ते ते प्रत्यया येषां ते शब्दास्तृतीये– समन्ताद्रावः सांराविणं वर्तते, सांकूटिनं वर्तते, अभिविधौभावइनुण् (सू०), अणिनुणः (सू०) इति स्वार्थेऽण् । ब्रह्मणो भवनं ब्रह्मभूयं गतः, भुवोभावे (सू०) इति क्यप् । नणकचिद्भ्योन्य इति किं– (न)– प्रश्नः, यत्नः, (ण)– न्यदनं न्यादः, नौणचेति (सू०), (क)– आखूनामुत्थानमाखूत्थः, सुपिस्थः (सू०) इति योगविभागात्कः, (चित्)– श्वयनं श्वयथुः, ट्वितोथुच् (सू०), आसनमासना, भावना, ण्यासश्रन्थोयुच् (सू०) । समूहादौ तद्धिताः खल्वपि– भिक्षाणां समूहो भैक्षं, यौवतं, राजकं, औक्षकं, गोर्भावो गोत्वं, शुक्लस्य भावः कर्म वा शौक्ल्यं, मार्दवं, मानोज्ञकं, स्तेयम् । पुण्यसुदिनाभ्यां परः कृतसमासान्तोह्नःशब्दस्तृतीये– पुण्यं च तदहश्च पुण्याहं, सुदिनशब्दोत्र शोभनवाची, यथा– सुदिनासु समासु कार्यमेतत्, पुण्यसुदिनाभ्यामह्नोवक्तव्यात् (वा०) नपुंसकत्वम् ॥ २९ ॥ क्रियाविशेषणान्यव्ययविशेषणानि च तृतीये– एकवचनान्तानि च भवन्ति– मृदु पचति, शोभनं पचति, पूर्वस्यां दिशि देशे काले वा पुरस्ताद्रम्यं, श्वः शोभनम् । एते शब्दास्तृतीये– उक्थं सामविशेषः, तोटकं वृत्तभेदो रूपकभेदश्च, चोचं भुक्तोच्छिष्टा फेला, नारिकेरफलस्य फलत्वात्सिद्धं, उक्तमेकाक्षरं छन्दः, अत्युक्तं च द्व्यक्षरम् । गृहस्य स्थूणा गृहस्थूणम् । तिरीटं शिरोवेष्टनम् । मर्म संधिस्थानम् । योजनं चतुःक्रोशी ॥ ३० ॥ राजसूयवाजपेये यज्ञविशेषौ । कविकर्मण्येते द्वे तृतीये– गद्यं दण्डकबन्धः, पद्यं श्लोकबन्धः । कृतौ कवेरिति किं– गद्या खी, पद्या शर्करा । मणिरेव माणिक्यम् । भाष्यं चूर्णिः । सिन्दूरं चीनपिष्टम् । चीरं वार्क्षी त्वक् । चीवरं मुनिवासः । पञ्जरं पक्ष्यादिबन्धनगृहम् ॥ ३१ ॥ लोकायतं नाम तर्कः । हरितालं धातुभेदः । विदलं दाडिमकणः, फल[ले]स्य सिद्धम् । स्थालं भोजनपात्रम् । बाह्लवं देशः । इति नपुंसकलिङ्गशेषः । अयमिदं वार्धमृचोर्धर्चः । पिण्याकं खलिः । कण्टकं लतारोम ॥ ३२ ॥ मोदकं भक्ष्यविशेषः । तण्डकं परिष्कारः, दण्डको वायम् । टङ्कोश्मदारणः । शाटकं पटः । खर्वटश्चतुःशतग्रामाणां संग्रहस्थानम् । अर्बुदोक्षिरोगः संख्याविशेषश्च, पर्वते तु पुंलिङ्गः । पातको गोहत्यादिः । उद्योग उत्साहः । चरकं शास्त्रविशेषः । तमालं वृक्षभेदः । आमलको धात्रीफलं, वृक्षे त्वामलकी । नडोन्तः– सुषिरं तृणम् ॥ ३३ ॥ कुष्ठं त्वग्रोगः, द्रव्यं च । मुण्डं शिरः, मुण्डिते तु वाच्यलिङ्गम् । शीधुर्मद्यम् । पुस्तं मांसशष्कुली । क्ष्वेडितं मुखध्वनिभेदः । क्षेमं कुशलम् । कुट्टेन निर्वृत्तः कुट्टिमो मणिभूः । संगमो

कोट्याः शतादिः संख्यान्या वा लक्षा नियुतं च तत् ।
द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥ २४ ॥
त्रान्तं सनो(लो)पधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्यायान्वितम् ।
पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुर्लक्ष्यानुसारतः ॥ २५ ॥
द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ।
षष्ठ्याश्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा ॥ २६ ॥
शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थादराजकात् ।
दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः ॥ २७ ॥
उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।
कोपज्ञकोपक्रमादि कन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥

मदनः । कथमास्थानमास्थानी, करणं करणी, प्रमाणं प्रमाणी, अधिकरणमधिकरणी, राजधानं राजधानी ल्युटष्टित्वात्, किं च, कृत्यल्युटोबहुलम् (सू०) इत्यनान्तानां त्रिलिङ्गत्वं स्म[स्व]रन्ति– राजभोजनी क्षैरेयी, राजभोजनः शालिः, राजभोजनं भक्तम्, इध्मव्रश्चनी शस्त्री, इध्मव्रश्चनः परशुः, इध्मव्रश्चनं शस्त्रम्, पलाशशातनी, पलाशशातनः, पलाशशातनम्, पूरणी, पूरणः, पूरणम्, गोदोहनी घटी, गोदोहनो घटः, गोदोहनं भाण्डम् ॥ २४ ॥ केवलं त्रान्तं, सकारनकारोपधं त्रशब्दान्तं च, शिष्टं प्रागुक्तादन्यच्छन्दरूपं तृतीये– पात्रं, अमत्रं, दात्रं, कलत्रं, शस्त्रं, वस्त्रं, शास्त्रं, अस्त्रं, तन्त्रं, यन्त्रम् । शिष्टमिति किं– पुत्रः, औपवस्त्रः, मन्त्रः । संख्यापूर्वं रात्रान्तं तृतीये, रात्राह्नाहाःपुंसीति (सू०) पुंस्त्वं प्राप्तम्– तिसृणां रात्रीणां समाहारस्त्रिरात्रम्, एवं पञ्चरात्रं, षड्रात्रम् । संख्ययेति किं– वर्षारात्रः । पात्रादिभिरकारान्तै-रुत्तरपदैः समाहारे लक्ष्यानुसारेण यो द्विगुः स तृतीये– पञ्चपात्रं, त्रिभुवनं, त्रिपुरदाहमुमापतिसेविनः (किराताර्जु०), चतुर्युगम् । पात्रादीति किं– त्रिलोकी, त्रिवेदी । एकार्थ इति किं– पञ्चकपालः पुरो-डाशः । लक्ष्यानुसारत इति किं– त्रिपुरी, पञ्चमूलीशृतं पयः ॥ २५ ॥ द्वन्द्वस्य यदेकत्वं समाहारोऽव्ययी-भावश्च समासस्तृतीये– इदं पाणिपादं, मार्दङ्गिकपाणविकं, स्त्रीषु कथा वर्तत इदमधिस्त्रि, इदं तिष्ठद्गु कालः, इदमुन्मत्तगङ्गं देशः । संख्याव्ययाभ्यां परः कृतसमासान्तः पथिशब्दस्तृतीये– त्रयाणां पथां समाहारस्त्रिपथं, विरुद्धः पन्था विपथं, कुत्सितः पन्थाः कापथम् । संख्याव्ययादिति किं– धर्मपथः । षष्ठ्यन्तात्परा कृतसमासान्ता छाया तृतीये बहूनां चेत्– गृध्राणां छाया गृध्रच्छायं, वीनां छाया विच्छायं, शलभच्छायं, छायाबाहुल्ये (सू०) इति नपुंसकम् । बहूनामिति किं– वृक्षस्य च्छाया वृक्षच्छाया । षष्ठ्याः परा समासे समूहार्था सभा तृतीये– दासीनां सभा दासीसभं दासीसमूह इत्यर्थः, ब्राह्मणसभं, अशाला च (सू०) इति नपुंसकम् । संहताविति किं– दास्याः सभा गृहं दासीसभा ॥ २६ ॥ राजार्थे-भ्योऽमनुष्यार्थेभ्यश्च षष्ठ्यन्तेभ्यः परा समूहार्था शालार्थापि सभा तृतीये, राजशब्दपरा चेन्न स्यात्– नृपस्य सभा गृहं नृपाणां समूहो वा नृपसभं, ईश्वरसभं, रक्षःसभं, पिशाचसभम् । अराजकादिति किं– राजसभा, सभाराजामनुष्यपूर्वा (सू०) इति नपुंसकम् । इमा दिश इमान्युदाहरणानीत्यर्थः ॥ २७ ॥ उपज्ञायत इत्युपज्ञा, उपक्रम्यत इत्युपक्रमः, तदन्तः शब्दः षष्ठीसमासे तदादिकथने द्योत्ये तृतीये– यथा कस्योपज्ञा कोपज्ञं सर्गः, चन्द्रोपज्ञमसंज्ञकं व्याकरणं, पाणिन्युपज्ञमकाल(लकं) व्याकरणं, कस्योप-क्रमः कोपक्रमं सृष्टिः, नन्दोपक्रमाणि मानानि । तदादित्व इति किं– डित्थोपज्ञो रथः, चैत्रोपक्रमो घटः, उपज्ञोपक्रमंतदाद्याचिख्यासायाम् (सू०) इति नपुंसकम् । उशीनरदेशे या कन्था षष्ठ्याः परा सा संज्ञायां गम्यमानायां तृतीये– सौशमीनां कन्था सौशमिकन्थम् । उशीनरेति किं– दाक्षिकन्था । नाम-

दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः ।
कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयू(पू)पकौ ॥ १९ ॥
आतपः क्षत्रिये नाभिः कणपक्षुरकेदराः ।
पूरक्षुरप्रचुकाश्च गोलहिङ्गुलुपुद्गलाः ॥ २० ॥
वेतालमल्लमल्लाश्च पुरोडाशापि पट्टिशः ।
कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥
द्विहीनेऽन्यच्च(च्च) खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम् ।
शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥
फलहेमशुल्बलोहं सुखदुःखशुभाशुभम् ।
जलपुष्पाणि लवणव्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

गडुर्गण्डः (कपोलः) । करण्डः समुद्रः । लगुडो यष्टिः । वरण्डः समूहः । किणो मांसग्रन्थिः । घुणो दारुकृमिः ॥ १८ ॥ दृतिर्भस्त्रा । सीमन्तः केशसीमान्तः, शकन्ध्वादित्वात्पररूपम् (वा०) । हरितो वर्णः, दिक्पर्यायस्तु स्त्रीलिङ्गः प्रागुक्तत्वात् । रोमन्थस्तिरश्चां चर्वितचर्वणम् । उद्गीथ ओंकारः । बुद्बुदोऽम्बुस्फोटः । कासमर्दो वेसवारभेदः । अर्बुदं दशकोट्यादिः संख्याभेदश्च । कुन्दो माघ्यं पुष्पम् । फेनो डिण्डीरः । स्तूपो मृदादिकूटः । यूपो यज्ञे पशुबन्धनकाष्ठम् ॥ १९ ॥ आतपोऽर्कोद्द्योतः । क्षत्रियपर्याया नाभिः, नेह– इयं नाभिस्तुन्दिः । कणाः धान्यविशेषः । क्षुरो नापितभाण्डम् । कदरो क्रकचम् । पूरस्तोयोच्छ्रयः । क्षुरप्रः काण्डभेदः । चुक्रोऽम्लव्यञ्जनम् । गोलो वर्तुलः पिण्डः, यथा भूगोलः । हिङ्गुलुः– दरदकम्, अकारान्तोऽयमित्येके । पुद्गलो जीवः ॥ २० ॥ वेतालो भूताविष्टः शवः । भल्लः काण्डभेदः । पुरोडाशो यज्ञे पिष्टपूपः । पट्टिशो नामायुधम् । कुल्माषोऽर्धस्विन्ना माषादिः । रभसः पौर्वापर्यविचारः । कटाहो द्रव्यपचनभाण्डम् । पतद्ग्रहः– अवेक्षकधारः ॥ २१ ॥ इति पुंलिङ्गशेषः । द्विहीने तृतीये नपुंसके, उक्तादन्यः शेषो वक्ष्यत इत्यर्थः । खादि सर्वं यथाविशेषं तृतीये । खमिन्द्रियमाकाशं चोच्यते– खमिन्द्रियं हृषीकं करणं, खं गगनमन्तरिक्षम् । अरण्यं विपिनं कान्तारम् । पर्णं पलाशं दलम् । श्वभ्रं विवरं सुषिरम् । हिमं प्रालेयं तुहिनम् । उदकं पानीयं तोयम् । शीतं शिशिरम् । उष्णं घर्मम् । मांसं तरसं पललम् । रुधिरं रक्तमसृक् । मुखं तुण्डमास्यम् । अक्षि नयनं लोचनम् । द्रविणं धनं स्वापतेयम् । बलं सैन्यमनीकम् ॥ २२ ॥ फलविशेषाः– आम्रं पनसं कपित्थम् । हेम सुवर्णं कार्तस्वरम् । शुल्बं ताम्रमौदुम्बरम् । लोहमश्मसारम् । सुखमुपजोषं शान्तम् । दुःखमाभीलं कृच्छ्रम् । शुभं पुण्यं सुकृतम् । अशुभं पापं दुष्कृतम् । जलपुष्पभेदाः– अम्बुजं कुमुदमिन्दीवरं कह्लारम् । लवणभेदाः– सैन्धवमौद्भिदं बिडं रुचकम् । व्यञ्जनभेदाः– व्यञ्जनमुपसेचनं दधि दुग्धमुदश्विन्मस्तु । अनुलेपनभेदाः– [अनुलिप्यते] अनुलेपनं कुङ्कुममग्निशिखं काश्मीरं चन्दनं श्रीखण्डम् ॥ २३ ॥ भयानृ[मृ]तशकृद्रक्त(स्तु)चापाभरणलाङ्गलम् । दावौषधमृणापत्यहृदयोदरकाकुदम् ॥ पत्तनाजिरशृङ्गाम्बुद्वारबर्हिर्द्रुमानसम् । ध्वान्तं चाव्यक्तलिङ्गं च भणितो यत्प्रयुज्यते ॥ कोटेरन्या शतादिका संख्या तृतीये– शतं सहस्रमयुतं, नेह– इयं कोटिर्लक्षशतम् । शतादिरिति किं– इयं विंशतिः, इयं नवतिः । लक्षशब्दस्तृतीये वा, पक्षे स्त्रियां निर्देशात्, यथा– कियती पञ्चसहस्री कियती लक्षाथ कोटिरपि कियती । औदार्योन्नतमनसां रत्नवती वसुमती कियती ॥ इदं लक्षं नदेव प्रयुतान्ययमित्यभिधानशेषोऽपि । असन्तमिसन्तमुसन्तमनन्तं च यद् द्विस्वरं तत्तृतीये– इदं यशस्तेजः पयः सर्पिर्बर्हिर्यजुर्धनुः, इदं नाम लोम नर्म पर्व । अकर्तरि यदनप्रत्ययान्तं तत्तृतीये– साध्यतेऽनेनेति साधनं, अधिक्रियतेऽस्मिन्नधिकरणं, पाकः पचनम् । कर्तरि तु मधुसूदनः, रमणः,

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ।
कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥
कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ ।
पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ १४ ॥
नाम्न्यकर्तरि भावे च घञजबूनङ्णघाथुचः ।
ल्युः कर्तरीमनिज्भावे को घोः किः प्रादितोऽन्यतः ॥ १५ ॥
द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवानसमाहृते ।
कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयःपूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥
वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडङ्गकः ।
पुङ्खो न्युङ्खः समुद्गश्च विटपट्टघटाः खटः ॥ १७ ॥
कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगौड(गोण्ड)पिचण्डवत् ।
गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

वस्तु पदार्थः ॥१३॥ ककारादिद्वादशाक्षरोपधा अकारान्ताः पुंसि । क- शल्कः, शृङ्गः, श्वेतकः, वराटकः । ष- वृक्षः, कक्षः, निकषः । ण- गणः, शाणः, बाणः, कणः । भ- कुम्भः, शलभः । म- आचामः, धूमः, ग्रामः । र- अङ्कुरः, करः, दरः, समीरः । प- सर्पः, सूपः, कलापः, बाष्पः । थ- सार्थः, शपथः, नाथः । न- फेनः, हायनः, स्तनः, जनः । य- तनयः, व्ययः, तन्तुवायः । स- रसः, दासः, कुक्षः, वत्सः । ट- सरटः, पटः, कटः । अपत्यप्रत्ययान्ताः शाखाध्यायिनश्च पुंसि- गार्ग्यः, वासिष्ठः, दाक्षिः, कठः, बह्वृचः, छन्दोगः ॥ १४ ॥ अकर्तरि च कारके संज्ञायां भावे चार्थे घञन्तादयः पुंसि । घञ्- प्र(प्रा)सीदन्त्यस्मिन्नयनमनांसीति प्र(प्रा)सादः, प्रक्रियते प्रकारः, पाकः, त्यागः, अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् (सू०) घञ् । अच्- पचः चयः, नयः, पचाद्यच् (नन्दिग्रहीति), एरच् (सू०)। अप्- करः, भरः, स्तवः, लवः, प्लवः, ऋदोरप् (सू०)। नङ्- यज्ञः, यत्नः, प्रश्नः, यजयाचयतविच्छेति (सू०) नङ् । उपलक्षणत्वात्- स्वप्नो नन् (सू०)। णः- न्यदनं न्यादः, नौ णवेति (सू०) णः । घः- प्रहरः, निगमः, गोचरः, पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण (सू०)। अथुच्- आनन्दथुः, श्वयथुः, वेपथुः, ट्वितोऽथुच् (सू०)। कर्तरि ल्युः पुंसि- नन्दयति नन्दनः, रमयति रमणः, नन्दिग्रहिपचादिभ्य (सू०) ल्युः । इमनिजन्ताः पुंसि- पृथोर्भावः प्रथिमा, लघिमा, पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा (सू०)। भाव इति किं- तरिमा पृथ्वी, व[च]रिमा तपस्वी, औणादिक इमनिच् । भावे कप्रत्ययान्तः पुंसि- आखूनामुत्थानमाखूत्थो वर्तते, सुपि स्थः (सू०) इति योगविभागात्कः । घञर्थे कविधानं (वा०)- प्रस्थः, प्रघ्नः । प्रादित उपसर्गादन्यतः सुबन्तात् परात् घुसंज्ञकात्परो यः किप्रत्ययस्तदन्तः पुंसि- निधिः, प्रधिः, आधिः, आदिः, उपसर्गे घोः किः (सू०), अब्धिः, इषुधिः, कर्मण्यधिकरणे च (सू०) इति किः ॥ १५ ॥ समाहारादन्यत्र द्वन्द्वेऽश्ववडवौ- अश्ववडवाः पुंसि, द्विवचनबहुवचनयोरुदाहरणम् । नेह- अश्ववडवं, विभाषा वृक्षमृगेति (सू०) समाहारविकल्पः । सूर्यादिपूर्वः कान्तशब्दः पुंसि- सूर्यकान्तः, भास्वत्कान्तः, इन्दुकान्तः, चन्द्रकान्तः, अयस्कान्तः ॥ १६ ॥ वटको भक्ष्यविशेषः । अनुवाक ऋग्यजुःसमूहः । रल्लकः पक्ष्मकम्बलः । कुडङ्गको वृक्षलतागहनम् । पुङ्खः काण्डमूलम् । न्युङ्खा ओंकाराः षोडश । समुद्गः करण्डकः । विटः कामुकानुचरः । पट्ट उष्णीषादिः । घटो दारुतुला । खटस्तृणम् ॥ १७ ॥ कोट्टो दुर्गः । अरघट्टो महाकूपः । हट्ट आपणः । पिण्डो ग्रासः । गौडो गुडको देशविशेषो वा । पिचण्ड उदरम् ।

पिच्छाවितण्डाकाकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरद् ।
सातिः कन्था तथासन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥
झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला ।
लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥
पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।
स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः ॥ ११ ॥
करगण्डौष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।
अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

काकिणी नाम माषकचतुर्थभागः, पणचतुर्थभाग इत्येके । काकिनीति सभ्याः । चूर्णिर्भोष्यम् । शाणी निकषः, शाण इत्येके, काणीपाठे संकोचोर्यः । द्रुणी कर्णजलौका । दरद् म्लेच्छजातिः । सातिः प्रावार-विशेषः । कन्था खण्डैः स्यूतं वासः । आसन्दी पीठिका । नाभी तुन्दिः । राज्ञः सभा राजसभा, सभाराजामनुष्यपूर्वेति (सू०) राजनियेधात्क्लीवत्वम् ॥ ९ ॥ झल्लरी वाद्यविशेषः । चर्चरी हर्षक्रीडा । पारी पानभाण्डम् । होरा लग्नं जातकं च । लट्वा–अलका भ्रमरकाश्च । सिध्मला पामा मलः श्वित्रं च । लाक्षा जतुः । लिक्षा यूकागर्भः । गण्डूषा– आस्यचुलुकं, गण्डूषोपि । गृध्रसी– ऊरुसंधौ वातरुक् । चमसी मसूरादिपिष्टं स्थलचमसश्च । मसी रञ्जनी । इति स्त्रीलिङ्गशेषः ॥ १० ॥ सुरा असुरास्तद्विशेषा-स्तदनुचराश्च पर्यायैः सह पुंसि । सुरा दिवौकसः, सुरविशेषाः–इन्द्रो बिडौजाः शक्रः, आदित्यः सूर्यो रविः, ब्रह्मा स्वयंभूः, विष्णुः शौरिः, रुद्रः शंभुः । विष्णोरनुचराः– चण्डः प्रचण्डः, जयो विजयः, विष्वक्सेनः । रुद्रानुचराः– नन्दी महाकालो भृङ्गी, गणाः प्रथमाः । एवं सर्वत्र । असुराः पूर्वदेवा दैत्या दानवाः, तद्विशेषाः– विरोचनो बलिर्नमुचिः प्रह्लादः । प्राङ् नपुंसकाधिकारात्पुंलिङ्गाधिकारः । एते सभेदाः सपर्यायाः पुंसि । स्वर्गो नाकस्त्रिदिवः । यागः क्रतुः सप्ततन्तुः, तद्विशेषाः– अग्निष्टोम उक्थ्यो-तिरात्रः– अप्तोर्यामः । अद्रिः पर्वतः शैलः, तद्विशेषाः– मेरुर्हेमसानुर्हिमवान् सह्यो विन्ध्यः पारियात्रः । मेघस्तडित्वान् घनः, तद्विशेषः पुष्करावर्तकः । अब्धिः समुद्र उदन्वान्, तद्विशेषः क्षीरोदः । द्रुस्तरुः पादपः, तद्विशेषाः– आम्रस्तालश्चम्पकः । कालः समयः, तद्विशेषाः– क्षणो लवः, मुहूर्तः, मासश्चैत्रः, संवत्सरः । असिः करवालः, तद्विशेषाः– नन्दकश्चन्द्रहासः । शरः सायकः पृषत्कः क्षुरप्रः । अरिर्द्विड-मित्रः ॥ ११ ॥ करः पाणिर्हस्तः । गण्डः कपोलः । ओष्ठो दन्तच्छदोधरः । दोर्बाहुः । दन्तो रदनः । कण्ठो गलः । केशो वालश्चिकुरः । नखः कररुहः । स्तनः पयोधरः । कृतसमासान्ताहःशब्दोत्तरपदाः पुंसि, रात्राह्नाहाःपुंसि (सू०) इति– पूर्वाह्णः, मध्याह्नः, सायाह्नः । द्व्यहः, त्र्यहः, उत्तमाहः, परमाहः, राजाहःसखिभ्यष्टच् (सू०), अह्नोह्न एतेभ्यः (सू०) इत्यह्नादेशः । विषविशेषाः पुंसि– वत्सनाभो गरलः कालकूटो हलाहलः । पुंसि क्लीबे च प्रागुक्तत्वात्पुंसि प्रचुरप्रयोगार्थं विधिः । एवं सर्वत्र । विषं तु क्लीबे । असंख्यापूर्वाः कृतसमासान्ता रात्रान्ताः पुंसि– अहोरात्रः, दीर्घरात्रः, वर्षारात्रः, अहःसर्वैकदेशसंख्यात-पुण्याच्च रात्रेः (सू०) इत्यच्, नेह– त्रिरात्रं, षड्रात्रम् ॥ १२ ॥ श्रीवेष्टः सर्जरसः कर्चूरः । निर्यासो वृक्षद्रवः । असन्ता अन्नन्ताश्चाबाधिता अनरोदि[हि]ताः पुंसि– पुरोधाः, उशना, मज्जा, प्लीहा । अबा-धिता इति किं– इदं यादो जलचरः, इदं लोम, इदं साम । अदन्तमनिमुसन्नन्तमिच्छन्त्यादौ बाध्यते । कशेर्वादीनि वर्जयित्वा त्वन्ता रुशब्दान्ताश्च पुंसि– अयं वास्तुर्गृहाधारः, मस्तुः, सक्तुः, [illegible] न्यग्रोधः, त्सरुः खड्गादिमुष्टिः, मरुर्धन्वा, ऊरुः सक्थि । नेह– इदं कशेरु जलजः कन्दः, जतु लाक्षा,

तद्वृन्दे येनिकच्यत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् । -
स्त्रीभावादावनिक्तिण्ण्वुल्ण्णच्ण्वुच्क्यब्युजिञ्ञङ्(ङ्नि)शाः ॥४॥
उणादिषु निरूरीश्च ङ्याबूङन्तं चलं स्थिरम् ।
तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्लवा णदिक् ॥ ५ ॥
घञो ञः सा क्रियास्यां चेद् दाण्डपाता हि फाल्गुनी ।
श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥
स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि ।
लङ्का शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाढकी ॥ ७ ॥
सिध्रका शा(सा)रिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका ।
तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गासूचिमाढयः ॥ ८ ॥

द्विशतिकां ददाति । उपलक्षणत्वाद् वुञन्तोपि, द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च (सू०) इति वुञ्- शैष्योपाध्यायिका । गोत्रचरणाच्छ्लाघादौवुञ् (सू०)- गार्ग्यस्य भावः कर्म चेति गार्गिकया श्लाघते, काठिकया श्लाघते । स्त्रियामित्यधिकृत्य भावे वा कर्तरि च कारके- अनादिप्रत्ययान्ताः स्त्रियाम्, आक्रोशेनञ्यनिः (सू०)- अजननिरस्ते वृषल भूयात्, अकरणिः । स्त्रियांक्तिन् (सू०)- कृतिः, भक्तिः । रोगाख्यायांण्वुल्बहुलम् (सू०)- प्रवाहिका, विचर्चिका । धात्वर्थनिर्देशेण्वुल्वक्तव्यः (वा०)- कारिका, जीविका । कर्मव्यतिहारेणच्स्त्रियाम् (सू०)- अन्योन्यं व्यावक्रोशनं व्यावक्रोशी वर्तते, व्यावभाषी[हासी], णचःस्त्रियामञ् (सू०) स्वार्थे । पर्यायार्हणोत्पत्तिषुण्वुच् (सू०)- भवतः शायिका, इक्षुभक्षिकोत्पन्ना । व्रजयजोर्भावेक्यप् (सू०)- व्रज्या, इज्या । संज्ञायांसमजनिषद० (सू०) क्यप्- समज्या, निषद्या । हनस्तच (सू०) इति क्यप्- ब्रह्महत्या । ण्यासश्रन्थोयुच् (सू०)- मण्डना, आसना । प्रश्नाख्यानयोरिञ् (चान्द्रसू०)- कां कारिमकार्षीः, इमां कारिमकार्षम् । षिद्भिदादिभ्योऽङ् (सू०)- घटा, मृजा, भिदा । अप्रत्ययात् (सू०)- चिकीर्षा, पुत्रीया । कृञःशच (सू०)- क्रिया, इच्छा ॥ ४ ॥ उणादौ न्यन्त ऊदन्त ईदन्तश्च स्त्रियां- अरणिः, धमनिः, हानिः, ग्लानिः, म्लानिः, अलाबूः, जम्बूः, लक्ष्मीः, तन्त्रीः । ङ्यन्तमाबन्तमूङन्तं चाभिधेयलिङ्गं रूढलिङ्गं च स्त्रियां- पुंस इयं पौंस्नी बुद्धिः, हिमानी, अजा, बलाका, श्वश्रूः, ब्रह्मबन्धूः । मुष्टिः प्रहरणं यस्यां क्रीडायां मौष्टा, पल्लवाः प्रहरणमस्यां पाल्लवा, तदस्यां प्रहरणमितिक्रीडायांणः (सू०), णदिक्- णप्रत्ययोदाहरणमित्यर्थः ॥५॥ दण्डपातोऽस्यां फाल्गुन्यां वर्तते, श्येनपातोऽस्यां मृगयायां वर्तते, तिलपातोऽस्यां स्वधायां वर्तते, घञःसास्यांक्रियेति (सू०) ञः, श्येनतिलस्यपातेञे (सू०) इति मुक्, स्वधाऽस्त्यस्यां स्वधा श्राद्धम् ॥ ६ ॥ अपचयेऽल्पत्वे यदि वक्तुमिच्छा तदा मृणाल्यादयः स्त्रीलिङ्गाः स्युः । अपचयेऽपचयस्थानलक्षणानि हि स्त्रीपुंनपुंसकानि । आदिशब्दात्प्रणाली, तटी, मटी, छत्रिका, गृहकाण्डी । काचिदिति यत्र लोके पुंनपुंसकयोः स्त्रीत्वं दृश्यते, न सुखादौ । लङ्का राक्षसपुरी । शेफालिका पुष्पविशेषः । टीका वृत्तिः । धातकी नामौषधिः । पञ्जिका न्यासः । आढकी व्रीहिभेदः, स्वल्पाढकं च ॥ ७ ॥ सिध्रकाशारिके वृक्षभेदौ । हिक्का- ऊर्ध्वं वातप्रवृत्तौ शब्दः । प्राचिका पक्षिविशेषः । उल्का ज्वाला । पिपीलिका वल्मीककृमिः । योऽप्रसिद्धः प्रागनुक्तो वा स प्रातिपदिकेनोच्यते, अतः शनैर्याति पिपीलिक इति पुंस्त्वमनिषिद्धम् । एवं सर्वत्र । तिन्दुकी नाम वृक्षः फलं च । कणिका- अल्पकणः- गोधूमपिष्टं च । भङ्गिर्विच्छित्तिः । सुरङ्गा तिर्यग्भूखातः । सूचिः सीवनी । माढिर्नाम देशः कवचं च ॥८॥ पिच्छा-आचामः । पितण्डा स्वाक्षरापन्ना(नो) हीनो जल्पः ।

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः ।
अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥
लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।
स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥
नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम् ।
अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

इह लिङ्गसंग्रहवर्गे वक्ष्यमाणलिङ्गानुशासनसहितैः सुब्धातुवृत्त्यादिजातैः (शब्दैः) प्रागनुक्तैर्लिङ्गमुन्नयेदूहेत । लक्षणेन तत्त्वतो ज्ञानार्थं सन्नाद्युपादानम् । लिङ्गशास्त्रेण यथा- स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् । सुब्धातुवृत्तिजैर्यथा- अप्रत्यात् (सू०), ण्यासश्रन्थो युच् (सू०) । कृद्वृत्तिजैर्यथा- स्त्रियां क्तिन् (सू०), पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण (सू०), नपुंसके भावे क्तः (सू०) । गोबलीवर्दन्यायेनात्र सुब्धातुवृत्तिवर्जं कृद्वृत्तिरुदाहार्या । तद्धितवृत्तिजैर्यथा- तत्कोशस्थं प्रहरणं चेन्मौष्टादि । समासवृत्तिजैर्यथा- अदन्तैर्द्विगुरेकार्थ इत्यादि । कथमुन्नयेदित्याह- प्रागुक्तसंकीर्णवर्गवत्, वचनमात्रेणेत्यर्थः । उक्तं च प्राक्- प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत् (पृ० १८१) । प्रकृत्या यथा- अर्धर्चाः पुंसि च (सू०) । प्रत्ययेन यथा- स्त्रियां क्तिन् (सू०) । अर्थद्वारेण च यथा- मातृस्वस्रादीनाम् । आदिशब्दात् क्रियाविशेषणानां कर्मत्वं नपुंसकलिङ्गता च वक्ष्यन्ति । तथा- अर्थस्य नित्यसमासवचनं सर्वलिङ्गता चेत्यादि ॥ १ ॥ अयं लिङ्गानां प्रागुक्तानां शेषविधिसंज्ञो वर्ग उत्सर्गत्वाद् व्यापको भवत्यपवादैर्यद्यबाधितः स्यात् । यथा- असन्ता अबाधिताः पुंसि, तथा न्नान्तं सलोपश्च शिष्यमिति, यथा- चन्द्रमाः, पुरूरवाः, सविमा प्रथवः, महिमा कल्पः । अत्रापवादः- द्व्यच्कमसिसुसन्तं तृतीये- इदं यशः, तेजः, नाम, धाम । ईदन्तमूदन्तं चैकस्वरं स्त्रीलिङ्गं भवति- इयं स्त्री, श्रीः, धीः, ह्रीः, भ्रूः, भूः, सूः, द्रुः, जूः । पुंलिङ्गात्प्राक् स्त्रियामित्यधिकारोऽयम् । योनियुक्तानां प्राणिनां संज्ञा च स्त्रियाम्, यथा- इयं माता, स्वसा, प्रसूः, योषित्, इयं गौः सुरभिः, इयं कपिर्वानरी, इयमहिर्भुजंगी, इयं करेणुर्हस्तिनी । दारादौ तु स्त्रीत्वं पुंभूम्नि दाराः (पृ० १२) इत्याद्यपवादैर्बाध्यते । एवं सर्वत्रोन्नेयम् ॥ २ ॥ एषां नामपर्यायाः स्त्रियाम्- इयं विद्युत्तडिदशनिः, इयं निशा रात्रिः, इयं वल्ली वीरुत्, इयं वीणा परिवादिनी, इयं दिक् ककुप्, इयं भूः कुः, इयं नदी सरित्, इयं ह्रीर्लज्जा । अकारान्तैः शब्दैः सहैकार्थैः समाहारे यो द्विगुः स स्त्रियां, यदिष्टिः- अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामाप्यते, (यथा) त्रयाणां लोकानां समाहारस्त्रिलोकी, पञ्चमूलीशृतं पयः । स द्विगुः पात्राद्युत्तरपदैरदन्तैर्न स्त्रियां, पात्रादिभ्यः प्रतिषेध इति (पात्राद्यन्तस्य न), अतः स नपुंसकमिति क्लीबे- पञ्चपात्रं, चतुर्युगं, त्रिभुवनं, त्रिपुरं, भाष्ये तु त्रिपुरी ॥ ३ ॥ तल्प्रत्ययान्ताः स्त्रियां, तस्य भावस्त्वतलौ (सू०)- गोर्भावो गोता, अश्वता । ग्रामजनबन्धुसहायेभ्यस्तल् (सू०)- ग्रामाणां समूहो ग्रामता, जनता । देवात्तल् (सू०)- देव एव देवता । समूहे यादिप्रत्ययान्ताः स्त्रियां, पाशादेर्यत् (वा०) (पाशादिभ्यो यः)- पाशानां समूहः पाश्या । खलगोरथात् (सू०) यत् (वा०), इनित्रकट्यचश्च (सू०) चकाराद् यत् (वा०)- खलिनी, गोत्रा, रथकट्या । वैरार्थे वुञन्तः स्त्रियां (द्वन्द्वाद्वुन्वैरमैथुनिकयोः)- अश्वमहिषयोर्वैरमश्वमहिषिका, काकोलूकिका । अत्रिभरद्वाजयोर्मैथुनप्रयोजने विवाहे वैरमत्रिभरद्वाजिका, वसिष्ठकुशिका । आदिशब्दात् पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां वुन्लोपश्च (सू०), दण्डव्यवसर्गयोश्च (सू०)- द्वौ द्वौ पादौ द्विपदिकां ददाति, द्वे द्वे शते द्विशतिकां

अल्पे नीचैर्महत्युच्चैः प्रायो भूम्न्यद्रुते शनैः ।
सना नित्ये बहिर्बाह्ये स्मातीतेऽस्तमदर्शने ॥ १८ ॥
अस्ति सत्त्वे रुषोक्तावु(ञु) ऊं प्रश्नेऽनुनये त्वयि ।
तर्के स्याद् (हुं तर्के) स्यादुषा रात्रेरवसाने नमो नतौ ॥ १९ ॥
पुनरर्थेऽङ्ग निन्दायां दुष्ठु सुष्ठु प्रशंसने ।
सायं साये प्रगे प्रातः प्रभाते निकषान्तिके ॥ २० ॥
परुत्परार्थैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति ।
अद्यात्राह्न्यथ पूर्वेऽह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥ २१ ॥
तथाधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।
उभयद्युश्चोभयेद्युः परे त्वह्नि परेद्यवि ॥ २२ ॥
ह्यो गतेऽनागतेऽह्नि श्वः परश्वस्तु परेऽहनि ।
तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २३ ॥
एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा ।
दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २४ ॥

इत्यव्ययवर्गः । ४ ।

शनैः शनैर्बुध्युपरमेत् । सनातनः । सनत्सनाच्च– सनत्कुमारः, सनात्कुमारश्च । बहिर्भूतः । यत्ति स्म व्यासः, अबोधदित्यर्थः । अस्तं गतः ॥ १८ ॥ अस्तिक्षीरा स्त्री, अस्ति परलोके मतिरस्यास्तिकः । कोपनोक्तौ– उं सैवास्मि तव प्रिया । रुषेत्येव– ऊं न जानासि स्वार्थम् । अप्ययि साहसकारिणि । स्याद्वादिनो जैनाः । उषातनो वायुः । नमो देवेभ्यः ॥ १९ ॥ अमानुगुण्ये स्मरणे हुं फड् विघ्ननिराकृतौ । वषडाहुतौ स्यादर्थे हूं हीनसंबोधने त्वरे ॥ मूर्खोऽपि नावमन्तव्यः किमङ्ग विद्वान् । दुष्ठुवादी खलः । सुष्ठूक्तम् । सीयते दीयते सायो निशामुखं, घञ्– सायंतनो वायुः, सायमशनः संध्यां वन्देत । प्रगेतनो वायुः । प्रातः संध्यामुपासीत । मित्रं निकषास्ते ॥ २० ॥ पूर्वे वर्षे परुत् । पूर्वतरे वर्षे परारि । यति गच्छति वर्तमाने वर्षे– ऐषमः, सद्यःपरुत्परार्यैषमःइति (सू०) साधवः । एवममिमाः । अस्मिन्नहन्यद्य, वर्तमानतामात्रेऽप्याहुः– अद्य श्वो वा दुर्लभः(बलः), तदद्यत्वेन तथा । पूर्वेऽह्नि पूर्वेद्युः । आदिशब्दादुत्तरेद्युः अधरेद्युः, अपरेद्युः, अन्येद्युः, अन्यतरेद्युः, इतरेद्युः । द्युर्दिनमिति श्रीभोजः, यथा– द्युयन्तो वर्धते कथम् ॥ २१ ॥ उभयोरह्नोः– उभयेद्युः, उभयद्युः, द्युश्चोभयाद्वक्तव्यः (वा०) । स्यात्तेऽपरेद्यवि रात्रिरुदिता । तं हन्तास्मि परेद्यवि ॥ २२ ॥ अतीतेऽह्नि ह्यः– ह्योऽकरोत् । आनागतेऽह्नि श्वः– श्वो गन्ता । श्वोदिनात्परमहः परश्वः, पारस्कारादित्वात् (सू०) परःसहस्रादिवत्सुट् । तस्मिन्काले तदा, सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा (सू०) तदा, तदानीं च । एतौ तुल्यकालार्थौ । युगपच्छासाः । एकस्मिन्काले– एकदा मिलन्ति । एकपदे च– असमेऽकपदे तथा वियोगः (विक्रमोर्वशी०) । सर्वस्मिन्कालेऽर्थे, सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा (सू०), सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि (सू०) ॥ २३ ॥ अस्मिन्कालेऽर्थे, इदमो र्हिल् (सू०), एतेतौ रथोः (सू०) इत्येतादेशः, (एतर्हि)– भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते विवर्तमानं नरदेववर्त्मनि (रघु०), अधुना, इदानीं च । संप्रत्येव सांप्रतं, स्वार्थेऽण् । प्राच्यां दिशि प्राचि देशे काले वा– प्राग्वसति । प्राच्या दिशः प्राचो देशात्कालाद्वा– प्रागागतः । प्राची दिक् प्राक् देशः कालो वा– प्राग्रम्यम् । दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः (सू०), अञ्चेर्लुक् (सू०) । आदिशब्दादुदगवागादि । एवं पूर्वादिभ्यः पुरस्तादधस्तादादि ॥ २४ ॥ इत्यव्ययवर्गः । ४ ।

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्देऽथान्तरेऽन्तरा ।
अन्तरेण च मध्ये स्युः प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ ११ ॥
युक्ते द्वे सांप्रतं स्थानेऽभीक्ष्णं शश्वदनारते ।
अभावे नह्य नो नापि मास्म मालं च वारणे ॥ १२ ॥
पक्षान्तरे चेद्यदि च तत्त्वे त्वद्धाञ्जसा द्वयम् ।
प्रकाशे प्रादुराविः स्यादोमेवं परमं मते ॥ १३ ॥
समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ।
अकामानुमतौ काममसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १४ ॥
ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कच्चित्कामप्रवेदने ।
निष्षमं दुष्षमं गर्ह्ये यथास्वं तु यथायथम् ॥ १५ ॥
मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ।
स्युरेवं तु पुनर्वैवेत्यवधारणवाचकाः ॥ १६ ॥
प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।
संवद्वर्षेऽवरे त्वर्वागामेवं स्वयमात्मना ॥ १७ ॥

दिष्ट्या पुत्रो जातः । समुपजोषं वर्तते । आवयोरन्तरे जाताः पर्वताः सरितो द्रुमाः (महानाट०) । अन्तरा त्वां च मां च कमण्डलुः । यतो भवन्तमन्तरेणान्यया भूमिर्मोहितः, भवन्मध्येनेत्यर्थः । प्रसह्य वित्तानि हरन्ति चोराः ॥ ११ ॥ न सांप्रतं यतः स्त्री नेत्री । हन्त स्थाने प्रश्नः । अभीक्ष्णं वक्ति । शश्वद्याति, आविरतमित्यर्थः । नहि प्रेम प्रयोजनापेक्षम् । अविप्र इव भाषसे, विप्रवन्न भूष इत्यर्थः । नो जानीमः । नेकः सुप्तेषु जागृयात् । मास्म करोः । मा कार्षीः । अलं बाले रोदनेन ॥ १२ ॥ सन्तश्चेदमृतेन किम् । यदि खलास्तत्कालकूटं मृषा । अरे अद्धा पुरुषः । अञ्जसा वक्ति साधुः । प्रादुरासीत् । आविर्भूतः । मतमभ्युपगमः– ओं कुरु, एवं कुरु, परमं तत्रावसम् । एवं बाढमित्यादि च ॥ १३ ॥ एते सर्वतोदिगर्थे– समन्ततो धावति, परितः प्रपतन्ति दुष्कृतां(तो) विपदः, सर्वतः संपदः सताम्, विष्वगयति विष्वद्यङ् । इतिशब्दात्समन्तादित्यादि– समन्ताद्भवः सामन्तः । आदावनिच्छायां पश्चादङ्गीकारे– कामं करोमि । अस्तुशब्दोऽसूयापूर्वेऽङ्गीकारे– अस्तुकारः, एवमस्तु को दोषः । चशब्दाद्भवतु नाम ॥ १४ ॥ ननुच कः शब्दः । कामप्रवेदनमिष्टपरिप्रश्नः– कच्चिज्जीवति मे माता । निष्क्रान्ताः समा दुष्टाः समा वत्सरा अत्रेति, तिष्ठद्गुप्रभृतीनिच (सू०) इत्यव्ययीभावादव्ययत्वम्, गर्ह्यमात्रे तूपचारात्, समेन समासो वा– निःषमं वक्ति मूर्खः, कालानुचितमित्यर्थः । एवं दुःषमं वर्तते । सर्वथा तु यथायथम्, यथास्वीं[त्मी]यमित्यर्थः, यथास्वंयथायथमिति (सू०) साधुः ॥ १५ ॥ मृषोद्यम् (उ० रा०) । मिथ्यावादी । तथेति सत्यमनतिक्रम्य– यथातथं वक्ति सभासु विद्वान् । एवमेतत् । आत्मा सर्वं तु पश्यति । विप्रः पुनः पूज्यः । गुरुर्वा वक्ति भीष्मो वा । त्वमेव देव सर्वं जानासि ॥ १६ ॥ प्राक् कृतम् । नूनं हन्तास्मि रावणम् । अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः (भर्तृहरि०) । संवत्सरः, संवत्तृतीये । अवरः पारादन्यः– वर्षात्षोडशादर्वाक्, अर्वाक्कालीनः । अङ्गीकारार्थे– आं कुर्मः, एवं कुर्मः । स्वयंभूः, आत्मनेति तृतीयान्तार्थे ॥ १७ ॥ नीचैर्मरुद्वाति । उच्चैरुच्चरितुं चिरम् । अन्तः प्रायो त्रिवेत्कारः, भूम्नि बाहुल्यार्थे । अशीघ्रार्थे– शनैर्याति पिपीलिका । क्रमेपि (शनैः) अद्रुतार्थान्वयात्–

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च वर्जने ।
यत्तद्यतस्ततो हेतावसाकल्ये तु चिच्चन ॥ ३ ॥
कदाचिज्जातु सार्धं तु साकं सत्रा समं सह ।
आनुकूल्यार्थकं प्राध्वं व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥
आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमुत च ।
तु हि च स्म ह वै पादपूरणे पूजने स्वति ॥ ५ ॥
दिवाह्नीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ॥ ६ ॥
तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ संबोधनार्थकाः ।
स्युः प्याट् पाडङ्ग हे है भोः समया निकषा हिरुक् ॥ ७ ॥
अतर्किते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ८ ॥
स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा ।
किंचिदीषन्मनागल्पे प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ९ ॥
वद्वा(वा) यथा तथैवैवं साम्येऽहो हीति विस्मये ।
मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ १० ॥

गिरमुदारां येन मूकाः पिकाः स्युः, नदीं तेन गतः, गमने नदी हेतुः । द्वितयो लक्ष्यते– येन दाता [वोढा] तेन श्लाघ्यः । (ऊने) किंचिद् मृते । पद्भ्यां याति कुतश्चन । प्रायः किंवृत्तात्परौ, क्वचित्– कुत्रचित्– कथंचित् ॥ ३ ॥ अन्योन्यपर्यायावेतौ– कदाचिच्छूरतां याति मरणे कृतनिश्चयः, न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति (मनुः) । सार्धं धनैर्महान् । पुत्रेण साकं याति । सत्रा कलत्रैर्गार्हस्थ्यम् । भ्रात्रा समं युध्यते । पुत्रैः सहास्ते । सङ्गो द्विजिह्वैः सजूरिति सजूर्गतिप्रतिरूपको निपातः । प्राध्वं कुरुष्व सुधाः, प्राध्वंबन्धने (सू०) इति गतिसंज्ञा– प्राध्वंकृत्य । वृथा दुग्धोनड्वान् । मुग्धे मुधा ताम्यसि ॥ ४ ॥ विकल्पः पक्षान्तरं– स्थाणुराहो पुरुषः, उताहोस्विद् भवेद्राजा नलः परपुरंजयः, किमुत रज्जुः किमुत सर्पः [किं रज्जुः किं सर्पः], किमु खेदयेत्किमु मानयेत् , एकमेव वरं पुंसामुत राज्यमुताश्रमः । आख्यामि तु तत्त्वं ते । न हि न हि महिमानं प्राप्य तुष्यन्ति भूपाः । भीमः पार्थस्तथैव च । इति ह स्माहुराचार्याः । यो वै युवाप्यधीयानः । स्वत्यादयोऽपि– अहो न(नु) खलु भोः । पूजने– सुस्तुतं, अतिस्तुतम् ॥ ५ ॥ दिवातनं, इतिशब्देन सप्तम्यन्ते दिनार्थेऽयमिति द्योत्यते । अथेप्येवम् । दोषा- मन्यमहः । नक्तंचरः । तथा– उषापि– उषातनो वायुः ॥ ६ ॥ साचि लोचनयुगं नमयन्ती । तिरः काष्ठं कुरु । प्याट् पाठकाः । पाट् पान्थाः । अङ्गानङ्ग, इष्टाह्वाने चैतत् । हे चैत्र । है वातूल । भो भार्गव । हंहो, अरेरे, अयि– हंहो काम, रे चोर, अरे चेट, अयि प्रिये । एते समंपार्श्वेऽन्योन्यं पर्यायाः– समया ग्रामं, लङ्कां निकषा हनिष्यति (शिशु०) । सभ्यान् हिरुक् ॥ ७ ॥ सहसा विदधीत न क्रियाम् (किरातार्जु०) । अप्रार्थो एते– पुरःसरः । नासीरधूलिधवलाः पुरतः प्रयान्ति । अग्रतो धावति श्वा ॥ ८ ॥ सोमाय स्वाहा । अस्तु श्रौषट् । ब्रीही वौषट् । वषाडिन्द्राय । पितृभ्यः स्वधा । किं चेत्कुचिरमूर्यजाः । ईषत्स्मेरः । मृत मनाक्समार्दवम् । अन्यो धनं प्रेत्य गतस्य भुङ्क्ते । अमुत्र भविता यत्ते तच्चिन्तयं शुभाशुभम् ॥ ९ ॥ पचतोति[स्रवन्ती]वत् । पद्मिनीं[नी] वान्यरूपां[पा] (मेघ०) । यथा चैत्रस्तथा मैत्रः । शारदा- भ्रमिव पेलवमायुः । यथार्क एवं कर्णः । अहो आश्चर्यम् । हतविधिलसि(सि)तानां ही विचित्रो विपाकः (शिशु०) । मुनिस्तूष्णीमास्ते । अकत्वप्रकरणेतूष्णीमःकाम्बक्तव्यः(वा०) इत्यज्ञाताद्यर्थे विशिष्टे मौने तूष्णीकां, मौनमात्रे तूष्णीम् । सद्यः पतति मांसेन । सपदि प्रदहत्युपेक्षितोऽग्निः ॥ १० ॥

निषेधवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु ।
समीपोभयतःशीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ २५६ ॥
नामप्राकाश्ययोः प्रादुर्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि ।
तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे हा विषादशुगर्तिषु ॥ २५७ ॥
अहहेत्यद्भुते खेदे हि हेताववधारणे ॥ २५८ ॥

इति नानार्थवर्गः । ३ ।

चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ।
मुहुः पुनःपुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः ॥ १ ॥
स्राग्झगित्यञ्जसाह्नाय सपदि द्राङ् मङ्क्षु [च] द्रुते ।
बलवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥

त्याहुः । जिज्ञासायाम्– स खल्वधीते वेदम् । अनुनये– न खलु न खलु मुग्धे साहसं कार्यमेतत् (नागानन्द०) । अभितो ग्रामं वसति, समीप उभयत्र वेत्यर्थः । शीघ्रे– गच्छाभितः । साकल्ये– ग्रामाणामभितो रथः, समन्तादित्यर्थः । आभिमुख्ये– आगन्तारमभितोऽरिमपश्यत् ॥ २५६ ॥ नाम्नि– विष्णोर्दश प्रादुर्भावाः, मत्स्यकूर्मादीनि दश नामानीत्यर्थः । प्राकाश्ये– प्रादुरासीत् । अन्योन्यार्थे– मिथः प्रहरतः । रहसि– मिथो मन्त्र्यते । अन्तर्धौ– तिरोहितः । परिभूतेऽन्तर्ध्युपचारात्– तिरस्कृतोऽरिः । तिर्यगर्थे– तिरः काष्ठं कुरु । विषादे– हा रमणीनां [यो] गतः कालः । शोके– हा प्रिये जनकराजपुत्रि (उ० रा०) । अर्तौ– हा हतोऽस्मि । निन्दायां च– हा श्रोत्रियान् ॥ २५७ ॥ अद्भुते– अहह प्रज्ञाप्रकर्षो राज्ञः । खेदे– अहह हता विरहिणी बाला । दीर्घान्तोऽपि– भिक्षितस्यापि बुभुक्षिता अहहहा । हेतौ– अग्निरत्र धूमो हि दृश्यते । अवधारणे– को हि हस्तगतं पादगतं कुर्यात् ॥ २५८ ॥ इत्यव्ययेष्वनेकार्थवर्गः । इति नानार्थवर्गः । ३ ।

चिराय निर्धनो भूत्वा भवत्याढ्यो(ढ्या) महाधनः । चिररात्राय जायते [यजते] । चिरस्य भुङ्क्ते यावति । आद्यशब्दाच्चिरेण चिराच्चिरमपि– चिरंजीवी, चिरंतन. । कान्तं[न्ता] मुहुर्ध्यायति । पुनःपुनर्वारि पिबेद्भूमि । शश्वद्भिक्षुकशिक्षितः । अभीक्ष्णमास्फालनवीभत्स्यम् । असकृदपि ॥ १ ॥ स्रागम्बरत्वमिसारिका । झगिति कुपतत्पादेनमो मन्मथाय (विद्धशाल०) । यच्चाञ्जसा जयति प्रपन्नलोकम् ॥ अह्नाय सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज (कु० सं०) । सपदि मदवदस्तुगेक्षिणोभिः । द्रागिवभूतं ध्वजतैः । मङ्क्षूद्पाति परितः पटलैरलीनाम् (शिशु०) । मङ्क्ष्वाशु तरसापि च– झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः (रत्नावली०), आश्वेहि मम सीधुभाजनात्, तरसोदिता सह जनेषु । तूर्णं द्रुतं क्षिप्रं शीघ्रं त्वरितमिति क्रियाविशेषणम् । बलवदपि पासितोऽस्मि । सुष्ठु यत्किंचिदुच्यते । किमुत मत्ताबिम्बिभिः । सुसिक्त आम्रः फलति, अतिसिक्तश्च । अतीव सुरिमाद्रि(सार्दि)तः ॥ २ ॥ पृथग्देवदत्तादयं [त्वत्तः पृथङ् नास्ति बन्धुः] । विना प्राणं कृतो देवः [विना वातं विना वर्षम्] । अन्तरेण पुरुषकारं न किंचित्सिध्यति । ऋते कृशानोर्न हि मन्त्रपूतम् (कु० सं०) । हिरुक् कर्मणां[णो] मोक्षः, कर्मक्षये[यो] मोक्ष इत्यर्थः । नाना नारीर्निष्फला लोकयात्रा । अन्तराऽन्यत्रापि– त्वामन्तरा तामरसायताक्षि, अ(आ)रोगिभावादन्यत्र । प्रसभमाशु प्रगल्भसे तत्पुरोऽसि । यतो विद्वांस्ततो मान्यः । येन तेनापि च– वितर

गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वपि ।
उपमायां विकल्पे वा सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २५० ॥
अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्ध्नि च ।
इवेत्थमर्थयोरेवं नूनं तर्केऽर्थनिश्चये ॥ २५१ ॥
तूष्णीमर्थे सुखे जोषं किं पृच्छायां जुगुप्सने ।
नाम प्राकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ॥ २५२ ॥
अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ।
हुं वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५३ ॥
पुनरप्रथमे भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः ।
स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ २५४ ॥
ऊरर्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ।
स्वर्गे परे च लोके स्वर्वार्तासंभाव्ययोः किल ॥ २५५ ॥

यद्वनो वा । अर्धे– सामि संमीलितं दृशौ । जुगुप्सिते– सामि कृतमकृतं स्यात् ॥ २५० ॥ सहार्थे– पुत्रेणामा भुङ्क्ते । समीपे– अमा अमात्यः । जले– कजं पद्मम् । मूर्ध्नि– कजाः केशाः । निन्दासुखयोः– कंदर्पः, कंयुः । इवार्थे– अग्निरेवं विप्रः । इत्थमर्थे– एवंवादिनि देवर्षौ (कु० सं०) । उपदेशादौ च– एवं पठ । निर्देशे– एवं तावत् । निश्चये– एवमेतत् । अङ्गीकारे– एवं कुर्मः । तर्के– नूनं शरत्काले हि चाताः । अर्थनिश्चये– नूनं हन्तास्मि रावणम् ॥ २५१ ॥ तूष्णीमर्थे– जोषमास्स्व । सुखे– जोषमास्ते जितेन्द्रियः । प्रश्ने– किं गतोऽसि । जुगुप्सने– किंराजा यो न रक्षति, किमः क्षेपे (सू०) इति समासान्ताभावः । प्राकाश्ये– हिमालयो नाम नगाधिराजः (कु० सं०) । संभाव्ये– कथं नाम तत्र गमिष्यति । स्तुतिः संभावनैव– स नामायं पटुः । क्रोधे– ममापि नाम दशाननस्य परैः परिभवः । उपगमः सासूयोऽङ्गीकारः– एवमस्तु नाम । कुत्सने– को नामायं सार्वभौमः । अलीकविस्मययोश्च– दक्षपरे रोदिति नाम वन्ध्या, अन्धो नाम पर्वतमारोहति ॥ २५२ ॥ भूषणे– अलंकारः । पर्याप्तौ– अलमस्त्यस्य धनं, पर्याप्तमित्यर्थः । शक्तौ– अलं मल्लो मल्लाय । वारणे– अलमतिप्रसङ्गेन । अलंखल्वोःप्रतिषेधयोः (सू०) इति निषेधेऽपि– अलम्ब्यालम्बिनं वक्षोर्वस्य वाचनमाहरत् (शिशु०), न वक्ष्यमेतदित्यर्थः । वितर्के– चैत्रो हुं मैत्रो हुं । परिप्रश्ने– हुं स त्वं सुहृत् । मयादौ च– हुं राक्षसोऽयम् । भर्त्सने– हुं निर्लज्ज । अनिच्छायां हुं हुं मुञ्च । स्वां समयास्ते, स्वत्समीप इत्यर्थः । ग्रामं समयाहते, ग्राममध्य इत्यर्थः ॥ २५३ ॥ अप्रथमे– पुनरुक्तम् । (भेदे) विशेषे– किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा (भगवद्गीता) । निश्चये– निश्चयः । निषेधे– निर्मर्यादः । प्रबन्धे– उपाध्यायेन स्म पुराधीयते, अविरतमपाठीत्यर्थः । चिरातीते– पुरापि न नवं पुराणम् । निकटागामिके भविष्यदासन्ने– गच्छ पुरा देवो वर्षति, यावत्पुरानिपातयोर्लट् (सू०), अनन्तरं वर्षिष्यतीत्यर्थः ॥ २५४ ॥ उररीकृत्य पटं, विस्तीर्येत्यर्थः । आज्ञामुररीकृत्य याति, अङ्गीकृत्येत्यर्थः । स्वर्गे– एहि जाये स्वरारोहाव (वाजसनेयीसंहिता) । परलोके– स्वर्यातस्य ह्यपुत्रस्य । वार्तायां– जघान कंसं किल वासुदेवः (भाष्य०) । संभाव्ये– अर्जुनः किल विजेष्यते कुरून् । हेत्वादौ च– स किल कावेरेयमुद्धरन् (वा० रा०) । अलीके– गोदत्त्वाचितं किलाश्रुतं कृत्वा । अरुचौ– त्वं किल योत्स्यसे ॥ २५५ ॥ निषेधे– खलु कृत्वा, निषिद्धं करणमित्यर्थः । वाक्यालंकारे– जयो

प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ।
इति हेतुप्रकरणप्रकर्षादिसमाप्तिषु ॥ २४६ ॥
प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थेऽग्रत इत्यपि ।
यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे ॥ २४७ ॥
मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथो अथ ।
वृथा निरर्थकाविध्योर्नानानेकोभयार्थयोः ॥ २४८ ॥
नु पृच्छायां विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरनु ।
प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु ॥ २४९ ॥

मन्युरर्जुनतः[नं] प्रति । वीप्सायां- वृक्षं वृक्षं प्रति सिञ्चति । लक्षणे- वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत् । आदि-शब्दादित्थंभूताख्यानादौ- साधुश्चैत्रो मातरं प्रति । भागे- यदत्र मां प्रति स्यात्सोंशो दीयताम् । प्रति-दाने- माषानस्मै तिलेभ्यः प्रति प्रयच्छति । हेतौ- हन्तीति पलायते । प्रकरणं प्रकारः- गौरश्वो हस्तीति जातिः (भाष्य०) । प्रकर्षे- इति पाणिनिः, पाणिनिशब्दः प्रकर्षात्प्रसिद्ध इत्यर्थः । अत एव प्रकारा(शा)दीति पेठुः । आदिशब्दादेवमर्थे- क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः (शिशु०) । मते- इत्यापिशलिः । विवक्षानियमे- तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् (पाणिनिसूत्रं) । स्वरूपे- वृद्धिरित्येव या वृद्धिः । समाप्तौ यथा- अ थ इति । प्रत्यक्षे संनिधाववधारणे च ॥ २४६ ॥ प्राच्यां- पुरस्तात्सूर्य उदेति । प्रथमे- पुरस्ताद् भुङ्क्ते । पुरार्थेऽतीते- पुरस्ताद्रामोऽभूत् । अग्रतोऽर्थे- पुरस्तात्सेनानीर्याति । आपिशब्दात्पूर्वदेशे काले च- पुरस्ताद् द्वारम्, पुरस्तात्कृतम् । साकल्ये यथा- यावत्कार्यं तावत्कुरु, सकलं कुर्वित्यर्थः । अवधौ- यावद् गन्ता तावत्तिष्ठ । माने- यावद्दत्तं तावद् भुक्तम् । अवधारणे- यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व ॥ २४७ ॥ मङ्गले- अथ परस्मैपदानि । अनन्तरे- स्नात्वाथ भुङ्क्ते । आरम्भे- अथ शब्दानुशासनम् । प्रश्ने- अथ शक्तोऽसि भोक्तुम् । कार्त्स्न्ये- अथ क्रतून् ब्रूमः । अधि-कारेपि- अथ स्नानविधिः । प्रतिज्ञायां- गौडोभवानथेति ब्रूमः । अन्वादेशेपि- अथो इमं वेदमध्यापय, अथो एनं छन्दोपि । समुच्चये द्वौ- अथो बल्वाहुः, भीमोऽथार्जुनः । निरर्थके- वृथा दुग्धोनड्वान् । अविधौ- प्रातिमाभ्यं वृथा दानमाक्षिकं सौरिकं च यत् (मनुः) । अनेकार्थे- नानाविधा जनाः । उभ-यार्थे- नानापक्षपरामर्शः संशयः । विनार्थेपि- नाना नारीं निष्फला लोकयात्रा ॥ २४८ ॥ प्रश्ने- को नु धावति । विकल्पेपि- भीमो नु फाल्गुनो नु योद्धा । वितर्के- अहिर्नु रज्जुर्नु । पश्चादर्थे- रथमनु धावति । सादृश्ये अनुकारः । लक्षणादौ च- वृक्षमनु द्योतते । तत्त्वाख्याने- साधुश्चैत्रो मातरमनु । भागे- यदत्र मामनु स्यात्तद् दीयताम् । वीप्सायां- वृक्षं वृक्षमनु सिञ्चति । दैर्घ्ये- अनुगङ्गं वाराणसी । प्रश्ने- नन्वध्येष्यसे । अवधारणे- नन्वद्य गच्छामः । अनुज्ञायां- नन्वादिश । अनुनयामन्त्रणे- ननु सखि प्रसीद मे । वाक्यारम्भादौ च- नन्वयोहः प्रस्तू(सू)यते । आक्षेपे- ननु किमयंमामवोचि । प्रत्युक्तौ- अकार्षीः कटं चैत्र, ननु करोमि भोः ॥ २४९ ॥ गर्हायां- अपि सिञ्चेत्पलाण्डुम् । समुच्चये- भीमोर्जु-नोपि । प्रश्ने- अपि यासि । इष्टप्रश्नेपि- अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशम् (कु० सं०) । शङ्कायां- अपि प्रसीदेत् । संभावनायां- पर्वतमपि शिरसा भिन्द्यात् । अपेक्षादौ च- अपि गृह्णीयां वे[वे]दम् । पदार्थे- सर्पिषोपि स्यात्, मात्रा स्तोकं वा । उपमायां आशीविषो वा संक्रुद्धः सूर्यो वाभ्र-विनिर्गतः । भीमोन्तको वा समरे गदापाणिरदृश्यत ॥ विकल्पे- यवैर्व्रीहिभिर्वा यजेत् । द्वे द्वे समुच्चयेत एव- सा वा शम्भोस्तदीया वा मूर्तिर्जलमयी मम (कु० सं०), न तृतीयेत्यर्थः, वायुर्वा मेरुर्वा

आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कोपपीडयोः ।
पापकुत्सेषदर्थे कु धिङ् निर्भर्त्सननिन्दयोः ॥ २४१ ॥
चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये ।
स्वस्त्याशीःक्षेमपुण्यादौ प्रकर्षे लङ्घनेऽप्यति ॥ २४२ ॥
स्वित्प्रश्ने च वितर्के च तु स्याद्भेदेऽवधारणे ।
सकृत्सहैकवारे चाप्याराद् दूरसमीपयोः ॥ २४३ ॥
प्रतीच्यां चरमे पश्चादुताप्यर्थविकल्पयोः ।
पुनः सहार्थयोः शश्वत्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४४ ॥
खेदानुकम्पासंतोषविस्मयामन्त्रणे बत ।
हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ॥ २४५ ॥

किलैतत् । वाक्यपूरणे पूर्वोक्तस्यान्यथात्वे चोत्ये, यथा– आ एवं तु मन्यसे, पूर्वं नैवममंस्थाः– अथ तु मन्यस इत्यर्थः । निपातएकाजनाङ् (सू०) इति प्रगृह्यत्वात्, प्लुतप्रगृह्याअचीति (सू०) प्रकृतिभावः, यदाहु– ईषदर्थे क्रियायोगे मर्यादाभिविधौ च यः । एतमातं ङितं विद्याद्वाक्यस्मरणयोरङित् (का०)। समुच्चयेऽपिशब्दात्- देवेभ्यश्च पितृभ्य आ (निरुक्त०) । कोपे– आः रक्षस्तिष्ठ ! । पीडायां– विद्यामानरमः प्रदर्श्य नृपश्रत् भिक्षामहे निस्रपाः (उद्भट०)। पापे यथा– पापो ब्रह्मा कुब्रह्मा । कुत्सायां– कुपुरुषः । ईषन्मधुरं कामधुरम् । निर्भर्त्सने– धिक् तार्किकान् । निन्दायां– धिङ् मृतोयम् ॥ २४१ ॥ अन्वाचयो मुख्यसिद्धावप्रधाननिष्पत्तिः, यथा– भिक्षामट गां चानय । समाहारे संहतिप्राधान्ये, यथा– पाणी च पादौ च पाणिपादम् । इतरेतरयोगे संहन्यमानप्राधान्ये, यथा– [प्लक्षश्च न्यग्रोधश्च] प्लक्षन्यग्रोधौ । समुच्चय एकस्यानेकप्रचयः, यथा– गार्ग्यो वात्स्यश्चागतौ, पचति च पठति च चैत्रः । विनियोगतुल्ययोगिताहेतुषु च । विनियोगे– अहं च त्वं च वृत्रहन् संयुज्याव सनिभ्य आ (निरुक्त०) । तुल्ययोगितायां– ध्यानश्चायास्थितश्च । हेतौ– ग्रामश्च गन्तव्यः शीतं च, शीतत्वं गम्यत इत्यर्थः । स्वस्तीत्यविनाशनाम[य]– स्वस्ति तेऽस्तु लतया सह वृक्ष । क्षेमे– स्वस्ति प्रजाभ्यः । पुण्ये– कामामिदं ते स्वस्ति । आदिशब्दान्मङ्गलादौ– स्वस्ति श्रीकुसुमपुरात् (मुद्राराक्षस०) । प्रकर्षे– अतिवृक्षः । लङ्घनमतिक्रमणं यथा– सर्वान् गुणानेव गुणोति भाति, अतिक्रम्य भातीत्यर्थः ॥ २४२ ॥ प्रश्ने– कः स्विदेकाकी चरति । वितर्को नानापक्षावमर्शः– अधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत् (वाजसनेयीसंहिता) । भेदो विशेषः, यथा– क्षीरान्मांसं तु पुष्टिकृत् । अवधारणे– भीमस्तु पाण्डवानां रौद्रः । हेतुश्च भूमी त्वनयोर्भेदो– गृहीता मे[वे]दं दुर्जन त्वं तु किं करिष्यसि । सहार्थे– सकृद्यान्ति । एकवारे– सकृदंशो निपतति (मनुः) । अपिशब्दात्सदार्थे– सकृद्युवानो गीर्वाणाः ॥ दूरे– आराच्छत्रोः सदा वसेत् । समीपे– संप्रीतान् स्थापयेदारात् ॥ २४३ ॥ प्रतीच्यां– पश्चादस्ताद्रिः । चरमे– पश्चायाति । अप्यर्थः समुच्चयप्रश्नौ । समुच्चये– उत भीम उतार्जुनः । प्रश्ने– उत दण्डः पतिष्यति । विकल्पे– उत पर्वते भिन्या– उत प्रुष्येद्रूक्षः । वितर्केऽपि– स्थाणुरुत पुरुषः । पुनरर्थे पौनःपुन्ये– शश्वद्याति । सहार्थे– शश्वद् भुङ्क्ते । नित्येऽपि– शाश्वतं वैरम् । प्रत्यक्षे– साक्षाद् द्रष्टा साक्षी । तुल्ये– इयं साक्षाल्लक्ष्मीः ॥ २४४ ॥ खेदे– अहो बत महत्कष्टम् । अनुकम्पायां– बत निःस्वोऽसि । संतोषे– बत मासा क्षीता । विस्मये– अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः (कु० सं०) । आमन्त्रणे– बत वितरत तोयं तोयवाहा हिमान्तं [नितान्तं] । हर्षे– हन्त जीविताः स्मः । अनुकम्पायां– पुत्रक हन्त मे बालकाः [ते धानकाः] । वाक्यारम्भे– हन्त ते कथयिष्यामि (भगवद्गीता) । विषादे– हन्त हताः पथिकगेहिन्यः । दाने निश्चये च– हन्तकारः (धा० र०), हन्त गच्छामः ॥ २४५ ॥ प्रतिनिधौ– अभि-

ओकः सद्माश्रयश्चौकाः पयः क्षीरं पयोम्बु च ।
ओजो दीप्तौ बले स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये ॥ २३४ ॥
तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेप्यतस्त्रिषु ।
विद्वान् विदंश्च बीभत्सो हिंस्रोऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३५ ॥
वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान् कनीयांस्तु युवाल्पयोः ।
वरीयांस्तूरुवरयोः साधीयान्साधुबाढयोः ॥ २३६ ॥
दलेपि बर्हं निर्बन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः ।
द्वार्यापीडे क्वाथरसे निर्यूहो नागदन्तके ॥ २३७ ॥
तुलासूत्रेश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोपि च ।
पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः ॥ २३८ ॥
दारेषु च गृहाः श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ।
व्यूहो वृन्देप्यहिर्वृत्रेप्यग्नीन्द्वर्कास्तमोपहाः ॥ २३९ ॥
परिच्छदे नृपार्हेर्थे परिबर्होव्ययाः परे ।
आङीषदर्थेभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे ॥ २४० ॥

तु (भरत०) । स्रवति स्रोतः, इन्द्रियमिन्द्रियद्वारम् । रयः प्रवाहो लक्षणया (स्रोतः) ॥ २३४ ॥ तिज निशाने (तेजः) । अपिशब्दादसहनत्वे यच्चूरतः— अधिक्षेपावमानादेः प्रयुक्तस्य परेण यत् । प्राणात्ययेप्यसहनं तत्तेजः समुदाहृतम् ॥ षान्ता यावद्वाच्यलिङ्गाः । विदेःशतुर्वसुः (सू०) । वेत्त्यात्मपण्डितात्मज्ञो (विद्वान्) । मान्बधेति (सू०) सन्नभ्यासदीर्घश्च, ततो अप्रत्ययात् (सू०), बीभत्सास्यास्तीति बीभत्सः । चशब्दाज्जुगुप्सितोर्जुनश्च । वक्ष्यमाणाश्चत्वार ईयसुन्नन्ताः ॥ २३५ ॥ प्रशस्यस्य श्रः (सू०), वृद्धस्य च (सू०), ज्य च (सू०) इति ज्यादेशः । युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् (सू०)। अतिशयेनोरुर्वरश्च वरीयान्, प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलेति (सू०) उरोर्वरादेशः । अतिशयेन साधु बाढं च साधीयः, अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ (सू०) ॥ २३६ ॥ इतो हान्ताः । दलं पर्णं, परिवारश्च (बर्हम्) । अपिशब्दान्मयूरपिच्छे (बर्हं), बृह वृद्धौ, बर्हं प्राधान्ये च । उपरागो राहुग्रहणं, भावे ग्रहवृदृनिश्चिगमश्चेति (सू०) अप्, कर्तरि विभाषाग्रहः (सू०) इत्यच् । भूतोपि (ग्रहः) । आपीडो बहिर्निःसृतं दारु, निर्यान्त्यनेन निर्यौति निर्वाति च निर्यूहः, पृषोदरादित्वात् लौकिको धातुर्वा । नागदन्तको भित्तिस्थः शङ्कुः (निर्यूहः) ॥ २३७ ॥ प्रगृह्यतेनेन, प्रेवणिजाम् (सू०), रश्मौ च (सू०) इति वा घञ् । परिगृह्यते परिग्रहणं च परिग्रहः, ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च (सू०) इत्यप्, परिगृह्णातीति— अच् । शापः शपथः (परिग्रहः) ॥ २३८ ॥ दारेषु तात्स्थ्यात् । चशब्दाद्वेश्मानि, गृह्णन्ति गृहाः, नित्यं बहुत्वे, गेहेकः (सू०) । श्रोण्यां यथा— वरारोहा । अपिशब्दाद्धेलायारोहणेश्वारे च (आरोहः), आधिकरणे भावे च घञ्, कर्तर्यच् । व्यूह्यते रच्यते व्यूहः, अपिशब्दात्सैन्यविन्यासे यथा— चक्रव्यूहः । अंहत्याहिः, अपिशब्दात्सर्पे मेघे च । अपघ्नन्तेरः (अपंक्षतमसोः) ॥ २३९ ॥ नृपार्हे छत्रचामरादौ, अर्थे वस्तुनि धने वा (परिबर्हः) । इति नानार्थवर्गः । अत ऊर्ध्वमव्ययवर्गो वक्ष्यते, ततः प्रस्तावान्नानार्थाव्ययवर्गस्तावत् । ईषत्पिङ्गलः— आपिङ्गलः । अभिव्याप्तिरभिविधिः— आकुमारं यशः पाणिनेः । सीमार्थो मर्यादा, यथा— आ— उदकान्तात्प्रियं प्रोषितमनुव्रजेत् । धातुयोगजे धात्वर्थेन क्रियया योगजे संबन्धोत्थे द्योतकत्वे, यथा— आरोहति । उपसर्गोपि सुरनरन्यायेनात्रोक्तः ॥ २४० ॥ स्मृतिः सूचनं, यथा— आ एवं

शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ।
पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ २२८ ॥
देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु ।
विष्णौ च वेधाः स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ॥ २२९ ॥
लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये हिंसा चौर्यादिकर्म च ।
प्रसूरश्वापि भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते ॥ २३० ॥
ज्वालाभासौ नपुंस्यर्चिर्ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु ।
पापापराधयोरागः खगबाल्यादिनोर्वयः ॥ २३१ ॥
तेजःपुरीषयोर्वर्चो महश्चोत्सवतेजसोः ।
रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे राहौ ध्वान्ते गुणे तमः ॥ २३२ ॥
छन्दः पद्येऽभिलाषे च तपः कृच्छ्रादिकर्म च ।
सहो बलं सहा मार्गो नभः खं श्रावणो नभाः ॥ २३३ ॥

तीक्ष्णरसान् भिक्षुकांश्च रिपौ युञ्जीत । वीर्ये यथा– रसस्यातिरसः सर्पिः । गुणे यथा– रसाः स्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः । रागे यथा– रसिकः पुरुषादिः । द्रवे यथा– हरीतकीरसः । आद्यदेहधातौ च यथा– रसासृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः । पारदे च यथा– रसवादी । रसा तु भूः । तंसिः सौत्रो भूषणार्थः, वतंसोऽपि ॥ २२८ ॥ देवभेदे यथा– अष्टौ वसवः । अनलोऽग्निः, रश्मिस्तेजः, वसति सर्वत्रोष्यते वा । तेजश्च वसु, आहुश्च– वसु रत्नं वसु धनं वसु तेजो निगद्यते । चशब्दाद्वृद्धौषध्योः, विदधाति विधत्ते वा वेधाः । वेधश्च हिंसामाहुः । आशासनमाशीः, आशं(श)सति हिनस्ति च, यदाहुः– आशीस्तालुगता दंष्ट्रा तया विद्धो न जीवति । आशीविषः, पृषोदरादित्वात् (सू०) सलोपः ॥ २२९ ॥ लष ईप्सायामित्यस्मात्लसेर्यङन्ताद्वा लालसा । चशब्दाद्वधः (हिंसा) । वडवाप्यत्र प्रसूः । अपिशब्दान्माता (प्रसूः) । गोतोणिदित्यत्रौतोणिदिति पाठाद् द्योशब्दस्य सर्वनामस्थाने वृद्धिः । आद्य ईयन्तो भुवि दिवि च वर्तेते, अन्योऽसन्तः क्लीबे द्वयमाह, यथा– रोदोरन्ध्रमजिहदत्[न्] । स्यादि सर्वे रोदः । रोदसीत्यव्ययमप्यस्ति, यथा– द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ रोदसी रोदसीति च ॥ २३० ॥ ईदमिषं वा, अर्च्यतेऽर्चिः । ज्योतते ज्योतिः, भं तारका, द्योतः प्रकाशः, दृष्टिः कनीनिकामध्यम्, यन्मनुः– तारा नेत्रत्रि[वि]भागः स्याज्ज्योतिस्तत्पञ्चमांशकम् । आगच्छत्यागः । वयते याति [वाति वा] वयः, असुन्, नुमा क्लीबे ॥ २३१ ॥ रूपेऽपि (वर्चः) । उत्सवे (महः), अकारान्तोऽपि, मह पूजायाम् । गुणे सत्त्वात्परे यथा– उपष्टम्भकं चलं च रजः । चशब्दाद्धूलौ (रजः) । स्त्रीपुष्पे यथा– रजस्वला । गुणे यथा– गुरुवरणकमेव तमः, ताम्यन्त्यनेन तमः ॥ २३२ ॥ छन्दति छन्दः, पद्ये गायत्र्यादौ । अभिलाषे– अकारान्तोऽपि यथा– छन्दानुवर्ती । चकाराद्वेदे यथा– युक्तश्छन्दांस्यधीयीत । आदिशब्दाच्चान्द्रायणादि (तपः) । चशब्दात्तपा माघः, अदन्तोऽपि ग्रीष्मार्थः, यथा– तपेन वर्षा शरदा हिमागमः (शिशु०) । सहते सहः । मार्गो मार्गशीर्षः, द्विः पाठो लिङ्गभेदार्थः । एवं नभसोः– ओकसोः, पयसोस्त्वेकं लिङ्गं क्षीराम्भसोः क्लीबत्वात् । न भभस्ति नभाः, एकं शून्यत्वादन्यो मेघच्छन्नत्वात्, नभ हिंसायां वा ॥२३३॥ उच समवाये, ओकउचःके (सू०) इति– अदन्तोऽपि । पीङ् पाने, पय गतौ च (पयः) । उब्जेरसुनि सलोपः (ओजः) । विषमसंख्यावाची त्वोजोदन्तः, ओजेनौजः समः पादो युग्युजाव[र्धे]समस्य

पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः(-षं) शिरोवेष्टकिरीटयोः ।
शुक्रले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ॥ २२१ ॥
कोषोऽस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः ।
द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽथाक्षमिन्द्रिये ॥ २२२ ॥
ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ।
कर्षूर्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी ॥ २२३ ॥
पुंभावे तत्क्रियायां च पौरुषं विषमप्सु च ।
उपादानेऽप्यामिषं स्यादपराधेऽपि किल्बिषम् ॥ २२४ ॥
स्याद् वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ।
प्रेक्षा नृत्तेक्षणं प्रज्ञा भिक्षा सेवार्थना भृतिः ॥ २२५ ॥
त्विड् शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कार्त्स्न्यनिकृष्टयोः ।
प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ २२६ ॥
रविश्वेतच्छदौ हंसौ सूर्यवह्नी विभावसू ।
वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ सारङ्गाश्च दिवौकसः ॥ २२७ ॥

विरोधयोः । पक्षे काले पतत्रे च रुचौ पार्श्वे विकल्पिते ॥ उष्यते उष्णीषः । शुक्रले यथा– वृष्याः प्रयोगाः । मूषिके यथा– वृषदंशः । श्रेष्ठे यथा– पुरुषवृषः । सुकृते यथा– वृषो हि भगवान्धर्मः (नारदः), वर्षति वर्ष्यते च वृषः ॥ २२१ ॥ कुष्यति कुष्णाति च कोषः, कुड्मले कलिकामध्ये, अर्थौघो भाण्डागारं, दिव्यं शपथः । योन्यां पात्रविशेषेऽपि यथा– मूत्रकोषः, मेद्रकोषः । कोशे तालव्यः शान्तोऽयम् । अपिशब्दादाकर्षणे, आकर्षणमाकृष्यते– आकर्षत्यस्मिन्नाकर्षः । अश्नोत्यर्थं चक्षुरादि ॥ २२२ ॥ द्यूताङ्गे यथा– स्त्रियोऽक्षा मृगया पानम् । कर्षे यथा– अक्षः षोडश माषकाः । चक्रे रथकाष्ठोपलक्षणम् (भरतः) । व्यवहारे आयव्ययादिन्यायः, यथा– अक्षपटलम् । कलिद्रुमो बिभीतकः (भरतः) । धीतोमूलेऽपि (भरतः) । कर्षणं कर्षति कृष्यते वा कर्षूः, वार्ता कृषिः, करीषं शुष्कगोमयम् । कुल्या यथा– वततः कर्षूः पितृभ्यः कुर्यात् ॥ २२३ ॥ पुरुषस्य भावः कर्म चेति, भावे (प्राक्भृगुक्षाति) युवादिभ्योऽण् इति (सू०) अण् । विष्लृ व्याप्तौ । चशब्दाद्गरले (विषम्) । उपादानमुत्कोचः (आमिषम्) । अपिशब्दान्मांसादौ, आमिष्यत आमिषम् । अपिशब्दात्पापे किल्बिषं, किल क्षेपे ॥२२४॥ लोके धत्ते लोकधातुर्जम्बुद्वीपस्तस्यांशो भूखण्डो नववेलावृत्तादिः, वर्षणं वर्षं, आज्यिषवित्तयादीनामुपसंख्यानम् (वा०) । वाम्यत वर्षयत्याप्याययतीति वर्षः, दुर्गस्तु– वर्षाख्या लोकधातुश्च पञ्चवत्सरवृष्टयः । षण्डो वर्षवरः । नृत्तादिप्रेक्षणकं, प्रेक्ष्यत इति प्रेक्षा । प्रेक्ष्यतेऽनयेति प्रेक्षा धीः, प्रेक्षणे च । अतो नृत्तेक्षणप्रज्ञास्विति युक्तः पाठः ॥ २२५ ॥ अधिगतोऽक्षैरध्यक्षो घटादिः । अक्षेष्वाधिष्ठानेष्वधिकृतोऽध्यक्षः, अधिकान्यक्षीण्यस्य, अध्यश्नोति वाध्यक्षो नियुक्तः । रूक्ष पारुष्ये, अचिक्कणे निःस्नेहे ॥ २२६ ॥ तथा– स्याजसंस्य चरम्येषु लक्षं घोषो रथव्रजौ । कपिशीर्षे भित्तिशृङ्गेऽनुतर्षश्चषकः सुरा ॥ दोषो वातादिके दोषा रात्रौ दक्षोऽपि कुक्कुटे । शुण्डाग्रभागे गण्डूषो द्वयोश्च मुखपूरणे ॥ इतः साम्ताः । हन्ति गच्छतीति हंसः, आद्यदेहत्यागादुत्तरदेहसंपरिग्रहश्च हंस आत्मा प्राणो वातविशेषश्च । विभा त्विड् वसु यस्य विभावसुः । वसति वसन्त्यस्मिन्वत्सः । वत्सं तु वक्षः । सरन्ति सारङ्गाः, सहारङ्गेण गत्या वर्णेन च वर्तन्ते वा । चशब्दान्मृगाश्चातका [हस्तिनो] भ्रमराश्च ॥ २२७ ॥ आदिशब्दात्करुणादौ (रसः) । विषे यथा–

द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ ।
द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥ २१५ ॥
रहःप्रकाशौ वीकाशौ निर्वेशो भृतिभोगयोः ।
कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१६ ॥
पदे लक्ष्ये निमित्तेपदेशः स्यात्कुशमप्सु च ।
दशावस्थानेकविधाप्याशा तृष्णापि चायता ॥ २१७ ॥
वशा स्त्री करिणी च स्याद् दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ।
स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि ॥ २१८ ॥
प्रकाशोतिप्रसिद्धेपि शिशावज्ञे च बालिशः ।
क्षुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१९ ॥
काकमत्स्यात्खगौ ध्वाङ्क्षौ कक्षौ च तृणवीरुधौ ।
अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ प्रैषः प्रेषणमर्दने ॥ २२० ॥

पतिर्विशरमाज्ञमारात् (रघु०) । विट् गृये, षन्त इत्येके । अभिम्रियतेभिमरः प्राणनिरपेक्षस्तीक्ष्णाद्यः, यो द्रव्यहेतोर्म्यार्थे हस्तिनं वा योधयाति । रणेभिमर इत्येके, स्पश बाधनस्पर्शनयोः । बन्धे तु घञ्, यथा- सेवमुभयतःस्पाशा रज्जुः । राति राशयति वा राशिः । पुञ्जे यथा- धान्यराशिः । मेषवृषाद्या द्वादश राशयः । वनुते वंशः, मस्करो वेणुः । (वंशः) समूहरतूपचारात् ॥ २१५ ॥ विकाशनं वीकाशः, उपसर्गस्यघमीति (सू०) दीर्घः, विर्विगतार्थे विशेषार्थे च । निर्विश्यते भुज्यते निर्वेशः । भृतौ यथा- प्रतिग्रहजप[य]विक्रय[म]निर्वेशाधिगतैरर्थैः । भोगे यथा- स्त्र्यन्नपानं निर्वेशः । कुत्सितं नाशयतीति कीनाशः । कीशब्दीकृत्कोचकाद्यर्थः की निपात इति श्रीभोजः । मर्कटेपि (कीनाशः) ॥ २१६ ॥ अपदिश्यतेपदेशः, पदं स्थानं यथा- त्यक्तापदेशो यतिः । लक्ष्ये यथा- सापदेशः । निमित्ते यथा- केनाप्यपदेशेनागतः । प्रसिद्धौ च यथा- रूढव्यपदेशः । कौ शेते कुश्यति च कुशम् । चशब्दा-दूर्भे (कुशः) । फाले तु कुशी, जानपदकुण्डेति (सू०) अयोविकारे ङीष् । दशाति दस्यते च दशा । आपिशब्दाद्वर्तिः, पटान्ते तु दशाः पुंबहुत्वे । आशासनमाशा महान्नार्थः । अपिशब्दाद्दिक् (आशा) ॥ २१६ ॥ चशब्दाद्वन्ध्यगवी सुता वश्या च (वशाः) । वश स्वायत्तः, इच्छा यन्त्रणा प्रभुत्वं च । भावे कर्तरि करणे च क्विप् (दृश्), दर्शनेक्षिण च । कृणाति कर्कशः, अमसृणः परुषः ॥ २१८ ॥ प्रकाशते प्रकाशनं च प्रकाशः । अपिशब्दात्प्रकटे- उद्योते च (प्रकाशः) । वालते बालिशः, बाडृ आप्लावे । दुर्गस्तु- कोशोस्त्री कुड्मले खड्गपिधानेर्थौघदिव्ययोः । नाशः क्षये तिरोधाने जीवितेशः प्रिये यमे ॥ नृशंसखड्गौ निस्त्रिंशावंशुः सूर्यांशवः कराः । आश्वःद्या शालिर्ष्ग्रामे पाशो बन्धनशस्त्रयोः ॥ लक्ष्यं च- अग्रतो बाहुपाशेन केशपाशेन पृष्ठतः । पार्श्वयोः कर्णपाशेन सर्वतो बन्धनं प्रिया [ये] ॥ अथ षान्ताः । न निमिषत्यनिमिषः । पुरि पुरि शयनात्पूरणात्पालनाच्च पुरुषः ॥ २१९ ॥ मत्स्यानत्ति मत्स्यादकः, ध्वाक्षि काङ्क्षायाम् । कषति कक्षः, वीरुल्लता । चशब्दात्पापे पार्श्वे भित्तौ च (कक्षः) पापे यथा- कक्षाय क्रमते कक्षायते, सत्रकक्षकष्टकृच्छ्रगहनेभ्यः(कण्वचिकीर्षायामिति) (वा०) पापे क्रमणे क्यङ् । पार्श्वेङ्गविशेषे यथा- त्व[म]दन्ताङ्कितपालिकक्षदधिरक्षिमाप्रदृष्टं शरम् । भित्तौ यथा- सप्तकक्षान्तरा राजधानी । ईष उञ्छे, प्रग्रहो वल्गादिः, रश्मिर्मरीचिः । (प्रैषः) प्रादूहोढोढ्येषैष्येष्विति (वा०) वृद्धिः ॥ २२० ॥ पक्ष परिग्रहे । अपिशब्दात्- केशे पक्षः समूहार्थः पक्षः साध्य-

अवयः शैलमेषार्का आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ।
भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०८ ॥
स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ।
अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावपि निह्नवः ॥ २०९ ॥
उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसवे मह उत्सवः ।
अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये ॥ २१० ॥
स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये ।
शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः ॥ २११ ॥
ध्रुवो भभेदे क्लीबे तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ।
स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने ॥ २१२ ॥
स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी (विः) परिपणेऽपि च ।
शिवा गौरीफेरवयोर्द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥ २१३ ॥
द्रव्यासुव्यवसायेष्वपि सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ।
क्लीबं नपुंसकं पण्डे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥ २१४ ॥

सात्त्विकः । व्यभिचारी च पञ्चैते भावभेदा व्यवस्थिताः ॥ पूज्ये च यथा– मान्यो भावेति वक्तव्यः किंचिदूनस्तु मारिषः (भरतः) ॥ २०८ ॥ प्रसवनं प्रसूयते च प्रसवः । अपत्ये च (प्रसवः) ॥२०९॥ उत्सेक उद्रेकः, इच्छायाः प्रसव उत्पत्तिः (उत्सवः) । मह इति सप्तमी, षु प्रसवैश्वर्ययोः, षू प्रेरणे च ॥ प्रभावे यथा– महानुभावः । चशब्दाद् भावसूचके, यदाहुः– अनुभावस्त्वभिनयः पदार्थप्रकाशनात् ॥ २१० ॥ जन्महेतुः पित्रादिः, प्रभवत्यस्मात्प्रभवः । प्रथममुपलब्ध्यर्थो देशश्च प्रभवः, यथा– हिमवान् गङ्गाप्रभवः ॥ २११ ॥ भविशेषे यथा– औत्तानपादिः (ध्रुवः) । निश्चिते क्लीबं (यथा)– ध्रुवं मूर्खोऽयम् । शाश्वते यथा– जातस्य च ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च (भगवद्गीता) । कीले निश्चले च (ध्रुवः) । क्वचित्तु ध्रुवा गाने च, यदाह– ध्रुवा हि नाट्यस्य प्रथमे प्राणाः । आत्मात्मीयज्ञातिधनवचनो हि स्वशब्दः, स्यति सीयते वा स्वः । ज्ञातौ यथा– उल्मुकानीव भान्ति स्वाः । आत्मनि यथा– हृदि स्वमवलोकयन् । आत्मीये यथा– स्वदारनिरतः । धने यथा– प्रभूताः स्वा न दीयन्ते ॥ २१२ ॥ स्त्रियाः कटीवस्त्रस्य बन्धनं, यत्कात्यः– नीविरामन्थनं नार्या जघनस्थस्य वाससः । परिपणो राजपुत्रादिबन्धकः (नीविः) । अपिशब्दाद्व्ययविशुद्धं धनं कारा च (नीविः) । शिनोति शिवा, फेरवा शृगाली । हरीतकी, आमलकी च (शिवा) । शिवस्तु रुद्रः, शिवं भद्रम् । द्वौ द्वौ द्वन्द्वं, द्वन्द्वंरहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु (सू०) इति साधुः । मिथुने च (द्वन्द्वम्) ॥ २१३ ॥ द्रव्यं पारिभाषिकं विशेष्याख्यं, यदाहुः– वस्तूपलक्षणं यत्र सर्वनाम प्रयुज्यते । द्रव्यमित्युच्यते सोऽर्थो भेद्यत्वेन व्यवस्थितः ॥ यथा– सत्त्वे निविशतेऽपैति (का०) । असुषु यथा– उत्क्रान्तसत्त्वो मृगः । व्यवसायोऽतिशयवद्बुद्धिर्ये यथा– सत्त्ववाञ्शीलसंपन्नः । जन्तौ यथा– सत्त्वहितः । अपिशब्दाद् गुणे बले स्वभावे पिशाचे, आत्मलाभे सत्तायां सारे च (सत्त्वम्), यत्कौटिल्यः– सत्त्ववन्तो मृदभागाः । क्लीबं अधार्थे, पण्डे– उभयव्यञ्जने नपुंसकलिङ्गम् ॥ २१४ ॥ क्वापि च– अत्यध्वगातिव्रणतो प्राप्तो प्राप्तं च बन्धने । अथ शान्ताः । (वैश्ये) यथा– विप्रक्षत्रियविट्शूद्राः (पृ० ११२) । मनुजे यथा– विशां·

अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं स्यात्तामिषे पलम् ।
और्वानलेऽपि पातालं चेलं वस्त्रेऽधमे त्रिषु ॥ २०३ ॥
कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ।
निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः ॥ २०४ ॥
पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ।
प्रवालमङ्कुरेऽप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०५ ॥
करालो दन्तुरे तुङ्गे चारौ दक्षे च पेशलः ।
मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्याल्लोलश्चलसतृष्णयोः ॥ २०६ ॥
दवदावौ वनारण्यवह्नी जन्महरौ भवौ ।
मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशाखिनरा धवाः ॥ २०७ ॥

परी । पृष्ठेऽपि यथा– भूतलम् । चपेटेऽपि यथा– तलप्रहारः । वितस्तौ तलः, यथा– पड्युग्मकस्तलस्तालो वितस्तिः शङ्कुराननम् । तलं च प्रकोष्ठे ज्याघातरक्षार्थं चर्म । चशब्दात्कर्षचतुष्टये (पलं), आमिषे मांसे, पल रक्षणे । अपिशब्दाद्रसातले (पातालं), पतति [विशति] पातमालाति च । चिल वसने, अधमे चेलम्, पचादिः (चेलखेटकटुकेति), यथा– ब्राह्मणिचेली ॥ २०३ ॥ कोः कूलं कुत्सितं वा कूलं कुकूलम् । इतिशब्देन मान्तमव्ययमिति ध्वनितं, यथा– साधुश्चेतः केवलं मूर्खः, केवृ सेवने । एकोऽत्रासहायः (केवलः) । कृत्स्ने यथा– न केवलं भुवो भर्ता ॥ २०४ ॥ पर्याप्तिः सामर्थ्यं यथा– कुशलं कटकरणे । क्षेमे यथा– कुशलं ते भूयात् । पुण्ये यथा– कुशलकृद्याजकः, कुशान्–लातीति । (कुशलः) शिक्षितत्वेन नैपुण्यं लक्ष्यते । प्रवते प्रवालं, वातेर्वलतेर्वा रूपम् । अङ्कुरोऽत्र किसलयः (प्रवालम्) । अपिशब्दाद् विद्रुमे वीणादण्डे च (प्रवालः) । स्थूल परिबृंहणे, जडः स्थूलोऽतीक्ष्णप्रज्ञत्वात् । अपिशब्दात्पीवरे (स्थूलः) ॥ २०५ ॥ करोति कृणोति च करालः । चशब्दान्मृदौ (पेशलः), पीङ् पाने पिश अवयवे वा । अपिशब्दात्केशे ह्रीबेरे वालधौ च (बालः), बाडृ आप्लाव्ये बल संवरणे च । लुड विलोडने, सतृष्णो लौल्यात् ॥ २०६ ॥ कुलं गृहेऽपि ताम्राङ्के कुवेरे चैककुण्डलः । खेलामात्रवशयोर्हेला हेलिः सूर्ये रणे हिलिः ॥ हालः स्यान्नृपतौ मये शकलच्छदयोर्दलम् । तूलिश्चित्रोपकरणशलाकातूलशय्ययोः ॥ तुमुलं व्याकुले शब्दे शष्कुली कर्णपाल्यपि ॥ अथ वान्ताः । दूयन्तेऽनेनेति, दुन्योर्विभाषा (सू०) इति घञ्, यत्कात्यः– दवो वनगतो वह्निर्दावश्च वनमुच्यते । हरो हरः (भवः), भावेऽपादाने च– अप् । प्राप्तिसंसारसत्ताकल्याणेष्वपि (भवः) । मन्त्री बुद्धिसचिवः, सह– अयते सहायः कर्मसचिवः, सचति समवैति सचिवः । पतिर्भर्ता, शाखी वृक्षविशेषः, धवति धूयते वा धवः ॥ २०७ ॥ अयत्यविः । हूयन्ते हवः, भावेऽनुपसर्गस्येति (सू०) ह्वः संप्रसारणं, अप् च । हूयतेऽस्मिन्हवोऽध्वरः । षट्सु (अर्थेषु) कर्तरि भावे चार्थानुगुण्यात् (घञ्) । सत्तायां यथा– कालभावयोः सप्तमी– गोषु दुह्यमानासु गतः । स्वभावे यथा– भावानुरक्तवनितासुरतैः शपेयम् (घटकर्परः) । अभिप्राये यथा– भावानुवर्ती भृत्यः । तात्पर्येऽत एव (यथा)– अयमत्र भावार्थः । चेष्टा क्रिया यथा– धात्वर्थः केवलः शुद्धो भाव इत्यभिधीयते । लीलापि चेष्टैव (यथा)– भावालसा विलासिन्यः । आत्मनि यथा– स्वं भावं भावयेद्योगी । जन्मनि यथा– नासतो विद्यते भावः (भगवद्गीता) । वस्तुनि च यथा– भावाधिसजया भवन्ति भवता भाव्यन्त एते यथा । रतिवेगे च यथा– प्रमाणकालभावेभ्यो रतावस्थापनम् । प्रवृत्तिनिमित्ते च, भवतोऽस्मादभिधानप्रत्ययाविति भावः । विभूतियोनित्वप्रसिद्धे स्याप्यादौ च, यदाहुः– विभावः स्थायिसंज्ञश्च सानुभावश्च

मलोऽस्त्री पापविट्किट्टान्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ।
शङ्कावपि द्वयोः कीलः पालिः स्त्र्यश्र्यङ्कपङ्क्तिषु ॥ १९८ ॥
कला शिल्पे कालभेदेऽप्याली सख्यावली अपि ।
अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि ॥ १९९ ॥
बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ शितौ त्रिषु ।
लीला विलासक्रिययोरुपला शर्करापि च ॥ २०० ॥
शोणितेऽम्भसि कीलालं मूलमाद्ये शिफाभयोः ।
जालं समूह आनायो गवाक्षक्षारकावपि ॥ २०१ ॥
शीलं स्वभावे सद्वृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम् ।
छदिर्नेत्ररुजोः क्लीबं समूहे पटलं न ना ॥ २०२ ॥

मलयति मलते वा देहं च मलः, विट् गूथं, किट्टं कलङ्कः । स्मृतौ तु– वसा शुक्रमसृङ् मज्जा मूत्रं विट् कर्णविण्नखाः । श्लेष्माश्रु दूषिका स्वेदो द्वादशैते मला नृणाम् ॥ शूलं रुजायां, स्वपातदोषः, यदाहुः– शूलं वर्ततेऽनिलात् । शङ्कौ कीलके (कीलः), अपिशब्दाज्ज्वालायां, कील बन्धे । स्त्री प्रहणनविशेषे कीला, यदाह वात्स्यायनः– कीलमुरसि कर्तरी शिरसि विद्धा कपोलयोः । पाल्यतेऽनया पालिः श्रोणिकूणा, धाराधारा । अङ्के यथा– कपोलपाली, कपोलोत्सङ्ग इत्यर्थः । अङ्कपालीत्याहुर्बुधाः, यथा माघः– भुजाङ्कनाभिमेवृत्तातात्मनेति । पङ्क्तौ यथा– पालीयं चम्पकानाम् । प्रान्ते यथा– कर्णपाली, तथा सितपटच्छत्रपाली कपालीम् । एके कल्पितयोऽनेऽप्याहुः ॥ १९८ ॥ शिल्पे कलादौ, कालविशेषे, यदवोचत्– अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला (पृ० २२) । चन्द्रभागे यथा– चन्द्रकला, निष्कलः । निवृत्त्यां स्या ग्राथादश्रेत्कलाः । तालेषु गुरुः कला । आ– अलति भूषयति आली, आ लाति च । अपिशब्दादालिरनर्थः । जलधिजलविकारे वेला, तटेऽप्युपचारात्, वेल चलने । कालोऽवसरः, मर्यादायां यथा– उद्वेलः ॥ १९९ ॥ बहुलाः कृत्तिका नाम नक्षत्रं, बहुत्वं तारकाणां बहुत्वात्, शितौ कृष्णवर्णे, वहन्ति बहुलाः, बहु लाति च । वहति हव्यं बहुलोऽस्त्यग्निः । बहुलं प्रभूतं प्रायिकं च । बहलशब्दोऽप्यस्ति घनतार्थो बहुत्वार्थश्च । लीङ् श्लेषणे, विलासो वेषादेरलंकारोपकल्पनम्, इष्टजनस्यानुकृतिर्लीलेति भरतोक्तो भेदो नात्र विवक्षितः । क्रिया कायिकः परिस्पन्दः (लीला) । उपलति– उप्यते वा– उपला शर्करा– अश्मरूपा मृत्, अश्मखण्डिका वा । अपिशब्दादिक्षुविकारः, यथा– सिकतोपला । उपलस्त्वश्मा ॥ २०० ॥ कील्यते बध्यते कीलालम् । मूल प्रतिष्ठायां, मूङ् बन्धने, आद्ये यथा– मूलप्रकृतिरविकृतिः (सांख्यकारिका), मूलं धनम् । शिफा वृक्षजटा, भं नक्षत्रविशेषः (मूलम्) । अन्तिकेऽपि यथा– वृक्षमूलम् । जल धान्ये, आनायो रज्जुवितानः (जालम्) । गवाक्षे यथा– जालान्तरगते भानौ (मनुः) । क्षारको मुकुलवृन्दम् । अपिशब्दाद् दम्भे, इन्द्रजाले च (जालम्) ॥ २०१ ॥ शील समाधौ, स्वभावे यथा– हरणशीलः । शोभने वृत्ते (यथा)– शीलधनः साधुः । सस्ये (फलं) यथा– ओषध्यः फलपाकान्ताः (धन्वन्तरिः) । हेतुना कृते यथा– अभिभवणादेः पाकः फलम् । आयुधाग्रे लाभे फलके, आम्रादौ धान्यादिकणे च (फलम्), मुक्तादौ तूपचारात् । छदिर्गृहाच्छादनं, नेत्ररुजि यथा– तिमिरं काचतां याति पटलं तदुपेक्षया (चरक०) । समूहे यथा– पयोदपटली, पटं विस्तारं लाति पटलम् ॥ २०२ ॥ अधो यथा– पादतलम् । स्वरूपे यथा– तनुतले–

गौरोऽरुणे सिते पीते व्रणकार्यप्यरुष्करः ।
जठरः कठिनेऽपि स्यादधस्तादपि चाधरः ॥ १९० ॥
अनाकुलेऽपि चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले ।
उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्यादनुत्तरः ॥ १९१ ॥
एषां विपर्यये श्रेष्ठे दूरानात्मोत्तमाः पराः ।
स्वादुप्रियौ च मधुरौ क्रूरौ कठिननिर्दयौ ॥ १९२ ॥
उदारो दातृमहतोरितरस्त्वन्यनीचयोः ।
मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः ॥ १९३ ॥
चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ।
द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९४ ॥
कृतान्तानेहसोः कालश्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ।
स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥ १९५ ॥
करोपहारयोः पुंसि ब(व)लिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ।
स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काककासीरिणोः ॥ १९६ ॥
वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।
भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ॥ १९७ ॥

जठरं, अपिशब्दात्कुक्षौ । अपिशब्दादोष्ठे हीने दुर्धरे च (अधरः) ॥ १९० ॥ अपिशब्दादवहिते, एकमग्रं चिन्तनीयमस्यैकाग्रः । विविधमग्रमस्य व्यग्रः, विशेषमागतिर्वा । उपरि यथा- इत उत्तरम् । उदीच्ये यथा- उत्तरे कुरवः । श्रेष्ठे यथा- लोकोत्तरम् । अपिशब्दाद्वाक्ये यथा- निरुत्तरीकृतः । प्रतिवाक्ये यथा- प्रश्नश्चोद्याधिया पृच्छा तस्य भञ्जनमुत्तरम् । अतिशयेनोद्गतमुत्तरम् । नास्त्युत्तरमस्मादनुत्तरम् ॥ १९१ ॥ एषामुपर्यादीनां विपर्यये गुप्ते दक्षिणेऽधमे वचनाभावे च (अनुत्तरः) । अनात्मा आत्मनोऽन्यः (परः) । उत्तमोऽग्रोत्तरतः, पूर्वादन्यः शत्रुश्च (परः), पिपर्तीति परः । मधु माधुर्यमस्यास्ति मधुरः, ऊषसुषीति रः, (सू०) । कृणाति कृन्तति वा क्रूरः ॥ १९२ ॥ उच्चैराराद्युदारः, अनाकुलेऽपि । इतं राति- एति वा- इतरः । स्वेनेर्ते स्वस्य- ईरो वा स्वैरः, स्वादीरेरिणोः (वा०) इति वृध्येकादेशौ । शोभते शुभ्रम् ॥ १९३ ॥ आसारो वेगवद्वर्षे सैन्यप्रसरणे तथा । धाराम्बुपाते चोत्कर्षेऽसौ कटाहे तु कर्परः । बन्धुरं सुन्दरे नम्रे गिरिर्गेन्दुकशैलयोः । चरुः स्थाल्यां हविःपक्तावधीरः कातरे चले ॥ अथ क्रान्ताः । संयता बद्धाः केशा मौलिः, मूल प्रतिष्ठायां, मूङ् बन्धने वा । द्रुमविशेषः पीलुः । मातङ्गोऽत्र हस्ती. पील गतौ ॥ १९४ ॥ अनेहा कालः क्षणत्रुट्यादिः, कलयति भूतानि कलयत्यायुर्वा कालः । महाकाले मृत्यौ कृष्णवर्णे च (कालः) । अपिशब्दात्कलहे, निरर्थके रणे तूपचारात् (कलिः), कल क्षेपे । अपिशब्दात्पद्माम्भसोः कमलम् । कमला तु श्रीः । कमलते कुत्सितमलति च (कमलम्) । अपिशब्दात्सास्नायां नागविशेषे च, काम्यते कुत्सितं बलति च कम्बलः ॥ १९५ ॥ करो राजग्राह्यः, पूजोपकरणमुपहारः, प्राण्यङ्गजस्त्वक्संकोचः (वलिः) । आद्य ओष्ठ्यादिरन्त्यो दन्त्योष्ठ्यादिरिति विशेषो न गणितः । बल प्राणने, वल संवरणे, दैत्येऽपि बलिः । स्थौल्यादौ रूपात्क्लीबे (बलं), काकहलधरयोस्तु ना पुंलिङ्गः (बलः) ॥ १९६ ॥ वातात्समूहे च (वा०), तं न सहत इति- ऊलः । उन्मत्तेप्याहुः, वातुलवातलौ च दृश्येते । विविधमालमनर्थोऽस्माद्व्यालः । अड उद्यमे, व्याडोऽपि । स्त्रियां तु व्याली ॥ १९७ ॥

गुहाम्भमी गह्वरे द्वे रहोन्तिकमुपह्वरे ।
पुरोधिकमुपर्यग्राण्यगारे नगरे पुरम् ॥ १८४ ॥
मन्दिरं चाथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ।
दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ॥ १८५ ॥
तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ।
औशीरं चामरे दण्डेप्यौशीरं शयनासने ॥ १८६ ॥
पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले ।
व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः ॥ १८७ ॥
अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये ।
छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येन्तरात्मनि च ॥ १८८ ॥
मुस्तेपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम् ।
शार्वरं त्वन्धतमसे घातुकेभे न्(-घ)लिङ्गकम् ॥ १८९ ॥

गुह्यते गुहा, भिदादिः (षिद्भिदादीति) । गाहनं गाह्यते वा गह्वरं, निकुञ्जेपि । रहो निर्जनं. उपह्वरन्तेऽत्रेत्युपह्वरम् । पुरो यथा– अग्रेसरः । अधिकं यथा– साग्रं शतम् । उपरि यथा– वृक्षाग्रम्, अगलाग्रम् । भिक्षाभेदेपि (अग्रं), यत्स्मृतिः– ग्रासप्रमाणं भिक्षा स्यादग्रं ग्रासचतुष्टयम् । अग्रं चतुर्गुणं प्राहुर्हन्तकारं द्विजोत्तमाः ॥ मुख्ये तूपचारात्, यथा– अग्रहारः । चशब्दः पुरापेक्षः, सर्वतोभद्रादियागे देहेपि पुरम्, पिपर्ति पूर्यते च, मन्दतेऽत्र मन्दिरम् ॥ १८४ ॥ राजने राष्ट्रं, विषयो जनपदः । उपद्रवे यथा– परराष्ट्रभयम् । दृ भये, दॄ विदारणे, श्वभ्रे दर्येपि । दरोऽत– ईषदर्थेऽव्ययं दरं पदं वा, यथा– दरदलितहरिद्रापिञ्जराण्यङ्गकानि (राजशेखरः) । वजत्येव न प्रतिहन्यते वज्रं, हीरको मणिश्रेष्ठं रत्नम् । वज्रोऽशनिश्च ॥ १८५ ॥ तन्यते तन्त्र्यते वा तन्त्रम् । प्रधाने यथा– द्विलम्बतन्त्रम् । सिद्धान्ते यथा– चतुःपीठमिदं तन्त्रम् । सूत्रवाये यथा– तन्त्रवायः । परिच्छदे यथा– तन्त्रपतिः । अत एव स्वमण्डलचिन्ता तन्त्रम् । आयत्तेपि यथा– स्वतन्त्रः । शास्त्रप्रक्रियाशब्दव्युत्पत्तिरौषधादि च, यथा– साधारणं भवेत्तन्त्रं यथा श्वेतो धावति (भाष्य०) । उश्यते काम्यत इत्युशगमात्, दण्डो यष्टिः । शयनासनयोः समुदितयोः संदेयम् (औशीरं) । अपिशब्दादुशीरस्येदं (औशीरम्) ॥ १८६ ॥ वाद्यभाण्डे मुरजस्य मुखे, तीर्थविशेषे यथा– पुष्करं दुष्करं गन्तुम् । औषधविशेषे यथा– पुष्करमूलानि ॥ १८७ ॥ अन्तरात्यन्तरम् । अवकाशे यथा– अन्तरं देहि (वा० रा०) । अवधौ यथा– मासान्तरे देयम् । परिधाने यथा– अन्तरे शाटका अन्तःपरिधानीया इत्यर्थः (काशिका०) । अन्तर्धौ यथा– पर्वतान्तरिताः श्रियः । भेदो विशेषः, यथा– अन्तरज्ञो भव सदा धनस्य च जनस्य च । तादर्थ्ये यथा– कांस्यनान्तरस्तण्डुलः । छिद्रे यथा– अन्तरं लब्ध्वारिः प्रहरेत् । आत्मीये यथा– अयमभ्य[न्त]न्तरो मम । विनार्थे यथा– अन्तरेण पुरुषकारं न किंचित्सिध्यति । बहिरर्थे यथा– अन्तरे चाण्डालगृहा बाह्या इत्यर्थः । अवसरं यथा– अन्तरज्ञः सेवकः । मध्ये यथा– आवयोरन्तरे जाताः पर्वताः सरितो द्रुमाः (महानाट०) । अन्तरात्मनि यथा– अन्तरात्मा, तथा च, दृष्ट्वान्तरं ज्योतिरुपारराम । चशब्दादन्यार्थे यथा– वस्त्वन्तरम् ॥ १८८ ॥ अपिशब्दात्स्थाल्यां (पिठरं), पिठ अवयवे । राजकशेरुर्जलजकन्दविशेषः (नागरम्) । अपिशब्दाच्छुण्ठी, नगरभवं च (नागरम्) । शर्वर्यां भवं शृणाति वा शार्वरं, घातुकश्चासाविभो हस्ती च ॥ १८९ ॥ गोर एव गौरः । अपिशब्दाद् भल्लातकः (अरुष्करः) । जठति (जायते)

यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ।
शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ॥
शर्करा कर्परांशेपि यात्रा स्याद्यापने गतौ ॥ १७६ ॥

इरा भूवाक्सुराप्सु स्यात्तन्द्री निद्राप्रमीलयोः ।
धात्री स्यादुपमातापि क्षितिरप्यामलक्यपि ॥ १७७ ॥

क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।
त्रिषु क्रूरेऽधनेल्पेपि क्षुद्रं मात्रा परिच्छदे ॥ १७८ ॥

अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कार्त्स्न्येवधारणे ।
आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ॥ १७९ ॥

योग्यभाजनयोः पात्रं पत्रं वाहनपक्षयोः ।
निदेशग्रन्थयोः शास्त्रं शस्त्रमायुधलोहयोः ॥ १८० ॥

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ।
मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रं गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८१ ॥

सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेपि च ।
अजिरं विषये कायेप्यम्बरं व्योम्नि वाससि ॥ १८२ ॥

चक्रं राष्ट्रेप्यक्षरं तु मोक्षेपि क्षीरमप्सु च ।
स्वर्णेपि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेपि गोपुरम् ॥ १८३ ॥

भूवाक्सुराम्भःपः । तननं शात्यस्यां तन्द्री, तन्द्रापि । प्रमीला– इन्द्रियग्लानता । धयन्त्येनां धत्ते च धात्री, उपमाता क्षीरदात्री ॥ १७६ ॥ क्षुणत्ति क्षुद्यते च क्षुद्रम् । व्यङ्गा हीनाङ्गी, वेश्या शीलहीनोपलक्षणं, सरघा मधुमक्षिका (क्षुद्रा)। अधनो निःस्वः (क्षुद्रः) । अपिशब्दात्कृपणः (क्षुद्रः) ॥ १७७ ॥ परिच्छदे यथा– महामात्रः । अल्पे यथा– मात्रया विलेपनं ताम्बूलं चोपयुज्य । परिमाणे यथा– मात्राशी सर्वकालं स्यात् । धने कर्णभूषणेऽक्षनिमेषकाले तालाङ्गे च (मात्रा) । कार्त्स्न्ये यथा– हस्तमात्रम-मिकुम्भम् । अवधारणे यथा– न स्नानमात्रगमनोत्सवभूषणानाम् (शिशु०) । स्वार्थेपि यथा– तावन्मात्रम् । चीयते चिन्यते वा चित्रम् । नानावर्णे च (चित्रम्)। चित्रकं तु तिलकम् । चित्रा सुभद्रानक्षत्रयोः । कलं दुर्बलं त्रायते कलत्रं कलयति वा ॥ १७८ ॥ पाति पीयतेनेन च पात्रम् । नदीकूलान्तरे यज्ञभाण्डे नाट्यानुकर्तरि (पात्रम्) । पतन्ति यान्त्यनेन पत्त्रम्, पर्णेपि । निदेश आज्ञा, शासनं शास्यतेनेन शास्त्रम् । शस्यतेनेन शस्त्रम् ॥ १७९ ॥ जटा वृक्षमूलं, अंशुकं पटोत्र, नयति नीयतेनेन नेत्रम् । मन्थानरज्जौ बस्तिनाड्यामक्षिण च (नेत्रम्)। क्षिणोति क्षीयते वा क्षेत्रम् । केदारे सिद्धस्थाने गणितव्यवहारे च (क्षेत्रम्)। क्रोडः सूकरः, तस्य मुखाग्रं घोणा, पुनन्त्यनेन पोत्रं, हलसूकरयोःपुवः (सू०) ष्ट्रन् । गूयते शब्द्यतेनेन गां त्रायते च गोत्रं, चशब्दात्कुले शैले च । गोत्रा तु भूः, गोसमूहश्च ॥ १८१ ॥ सीदन्त्यत्र सत्त्रं, दम्भे साधने चशब्दात् । अजन्त्यत्राजिरं, विषये रूपादौ । अपिशब्दात्प्राङ्गणे (अजिरम्)। अम्बतेम्ब्यते वाम्बरम् । सुगन्धद्रव्यभेदेपि (अम्बरम्) ॥१८२॥ करोतेश्चकतेश्च रूपं (चक्रम्)। अपिशब्दादायुधे रथाङ्गे सैन्ये राष्ट्रे तैलिककुलालाद्युपकरणे च (चक्रम्)। चक्रस्तु चक्रवाके । दुरुयोगघुमावर्तयोश्चाक्रिका । न क्षरत्यक्षरम् । अपिशब्दाद् ब्रह्मवर्णयोः (अक्षरं)। घस्यते क्षीरम्, चशब्दाद् दुग्धे। अपिशब्दात्प्रभूतेन्द्वोः (भूरिचन्द्रौ), भवति भूरि । अपिशब्दात्पुरद्वारे, गोप्यते गोपुरम् ॥ १८३ ॥

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो रवावपि ।
मखेषुयूपखण्डेऽपि स्वरुर्गुह्येऽप्यवस्करः ॥ १६८ ॥
आडम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ।
(अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च ॥ १६९ ॥)
स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोशे परिच्छदे ।
विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम् ॥ १७० ॥
द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ।
विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुः स्यात्पिङ्गले त्रिषु ॥ १७१ ॥
सारो बले स्थिरांशे च न्याय(य्ये) क्लीबं वरे त्रिषु ।
दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् ॥ १७२ ॥
महारण्ये दुर्गपथे कान्तारः पुंनपुंसकम् ।
मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ १७३ ॥
देवाद् वृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनाक् प्रिये ।
वंशाङ्कुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना ॥ १७४ ॥
ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ॥ १७५ ॥

ध्यायधारणं (मन्त्रः), मायाबीजादिश्च । मेद्यति स्निह्यति मित्रः । अपिशब्दान्मित्रं सुहृत् । मखादिषु यज्ञार्थेषु (स्वरुः) । अपिशब्दाद्वज्रे, स्वरति स्वरुः । अन्ये तु सान्तमाहुः, शोभनान्यरूंषि यस्येति, दन्त्यस्थाने खड्गं पेठुः । अपिशब्दाद्वर्चस्के, अवकीर्यत इति, वर्चस्केऽवस्करइति (सू०) साधुः ॥१६८॥ आदम्ब[डम्ब]न्ते भीरवोऽनेनेत्याडम्बरः । संरम्भेऽपि, यथा– आडम्बराणि पूज्यन्ते स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ १६९ ॥ परिवार्यतेऽनेनेति, परिवारोऽपि । परिच्छदः परिजनादिः (परीवारः) । विस्तीर्यते विष्टरः, वृक्षासनयोर्विष्टरः (सू०) साधुः । दर्भमुष्टिरायामः[परिमाणं] तस्य विष्टरत्वं श्राद्धादौ ब्राह्मणासनत्वे- नाम्नानात् । पीठाद्यमासनविशेषणम् ॥ १७० ॥ प्रतिह्रियते निवार्यतेऽनेन प्रवेशोऽनेनात्र च प्रतीहारः । अन- न्तरे द्वाःस्थे स्त्रियां प्रतीहारी, अपिशब्दो द्वाःस्थापेक्षः । बिभर्ति बभ्रुः ॥ १७१ ॥ सारस्थिरेति (सू०) स्थिरे घञ् (सारः) । बले यथा– सुसारः, घृतान्मांसं तु सारकृत् । स्थिरांशे यथा– चन्दनसारः, मज्जासारः । न्याय्ये यथा– नैतत्सारम् । वरे यथा– जये धरित्र्याः पुरमेव सारम् । दुष्टमासमन्तादुदरमस्य दुरोदरम् ॥ १७१ ॥ कस्याम्भसोऽन्तं नाशमृच्छति कान्तारः, कान्ता आरा धारा अत्र(स्य) वा । माद्यति परकृच्छ्रे मदात्सरति वा मत्सरः, तद्वान् मत्सरवान् ॥ १७२ ॥ देवादिभ्यो वृते याचिते, रूपान्तरेऽपि, यदाहुः– तपोभिरिष्यते यस्तु देवेभ्यः स वरो मतः (कात्यः) । श्रेष्ठे यथा– वरं कूपशताद्वापी, अव्य- यमित्येके । त्रिवाच्योऽपि वरः । करोति करिणमीरयति क्रिय[कीर्य]ते च करीरः । चशब्दाद्वंशविशेषेऽपि ॥ १७३ ॥ चमूजघनं सेनापश्चाद्भागः, हस्तसूत्रं विवाहादौ कौतुकं मङ्गलार्थमूर्णामयं मणिबन्धसूत्रं (प्रतिसरः), यागादौ तूपचारात् । नियोज्येऽपि (प्रतिसरः) ॥ १७४ ॥ कपिले पीतवर्णे पुमान्, तद्वति त्रिषु, हरति हरिः । शीर्यते शर्करा, कर्परांशो मृत्कपालखण्डः । अपिशब्दादिक्षुविकारे शर्करिलदेशे च (शर्करा) । याप्यतेऽनया [यात्रा], यापने भोजनादिवर्तने यथा– प्राणयात्रा । गतिर्याने यथा– विषययात्रा । देवोत्सवेऽपि, यान्त्यत्रेति (यात्रा) ॥१७५॥ इण इःतेश्च रूपं, हराक्षमलक्ष्मपरस्य, दुर्गश्च– हरा

न्याय्येपि मध्यं सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ।
निवहावसरौ वारौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ॥ १६२ ॥
गुरू गीष्पतिपित्राद्यौ द्वापरौ युगसंशयौ ।
प्रकारौ भेदसादृश्ये आकाराविङ्गिताकृती ॥ १६३ ॥
किंशारू धान्यशूकेषू मरू धन्वधराधरौ ।
अद्रयो द्रुमशैलार्काः स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ॥ १६४ ॥
ध्वान्तारिदानवा वृत्रा बलिहस्तांशवः कराः ।
प्रदरा भङ्गनारीरुग्बाणा अस्राः कचा अपि ॥ १६५ ॥
अजातशृङ्गो गौः कालेप्यश्मश्रुर्ना च तुवरौ ।
स्वर्णेपि राः परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः ॥ १६६ ॥
मुक्ताशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु ।
कर्बुरेथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः ॥ १६७ ॥

दन्तरे युक्ते प्रमाणेवलग्ने च, मन्यते मध्यः । सोमो देवतास्येति सौम्यं, सोमाट्यण् (सू०), सुन्दरे तूपचारात् । चन्द्रजे च (सौम्यः) । बुधस्तु- सर्वज्ञानिपजौ वेद्यावात्मा कामश्च हृच्छयौ । फलकस्यापयोर्भव्यं योग्यं सांप्रतिके त्रिषु ॥ क्रियाचारातिक्रमेपि जलाधारेपि चाशयः । दैत्याचार्योपि धिष्ण्यो ना काषायः सुरभावपि ॥ चन्द्रोदयो वितानेपि स्यादाम्नायोऽन्वये श्रुतौ । शीताशिते शीते शैत्यं जलत्वं कुलजकान्तयोः ॥ व्यवायो व्यवधौ च स्यात्कुल्या कुलवधूः सरित् ॥ अथ रान्ताः । निवहो यथा- ग्रामवारः । अवसरो यथा- वारंवारमुदारसंगरमुखे । सेवाक्रमेपि यथा- वारस्त्री । वारः सूर्यादिदिवसः । संस्तीर्यते संस्तरः शय्या । संस्तीर्यन्ते दर्भा अत्र संस्तरो यज्ञः ॥ १६२ ॥ गृणाति गुरुः । गीष्पतिर्जीवः (गुरुः) । आद्यशब्दात्स गुरुर्यः क्रियां कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति । तथा गुरु दुर्वहं, अलघु च । द्वाभ्यां कृतत्रेताभ्यां परं द्वापरं युगम् । संशये द्वौ परौ मुख्यावत्रेत्युभयकोटिस्पृक्त्वात्, पृषोदरादित्वात् (सू०) आत्वम् । भेदो विशेषः, यथा- पलाण्डुप्रकारा गृञ्जनादयः । सादृश्ये यथा- विषप्रकारः पिशुनः । इङ्गितं भावसूचकं चेष्टितम्, आकृतिर्देहवर्ण्यादिः संनिवेशश्च (आकारः) । १६३ ॥ किंचित्कुत्सितं वा शृणाति किंशारुः, इषुः शरः । म्रियन्तेऽस्मिन्दुर्गमत्वान्मरुः, धन्वा निर्जलो देशः । अद्यतेस्ति वाद्रिः । अब्दो मेघः (पयोधरः) ॥ १६४ ॥ वृणोति वृत्रः । कीर्यते करोति वा करः, बलिः- राजग्राह्यम् । मेघोपलस्तु करकः । हस्तिशुण्डापि करः, उपचारात् । प्रदीर्यतेऽनेनेति प्रदरः, नारीरुग्गतिरजःस्रावः । अस्यन्ते- अस्राः । अपिशब्दाद्वाष्पोऽसृक् चास्रम् ॥ १६५ ॥ काले याति गवि नरि च काकादिवद्योग्यम् । तनोति तूः- लक्षणं, प्रनेष्वट्ः (उ०) बाहुलकात्, तूं वृणोति छादयति तूवरः । रातेर्डैः (उ०), अपिशब्दाद्वित्ते मेघे च । परिक्रियते परिकीर्यते च परिकरः । समूहारम्भयोः प्रगाढगात्रिकाबन्धे च (परिकरः) ॥ १६६ ॥ मुक्तानां शुद्धिस्तारो नाम गुणः, लक्षणया शुद्धमौक्तिके । चशब्दात्कनीनिकातारकयोश्च तारावत् । अत्युच्चस्वरे रूप्ये च (तारः) । शृवायुवर्णनिवृतेषु (वा०) इति कर्तरि घञ् । कर्बुरो नानावर्णः (शारः) । प्रतिज्ञायां यथा- सत्यसंगरः । आजौ यथा- संगरो विक्रियाकरः । संविदि यथा- अन्योन्यं वृत्तसंगरौ । आपदि यथा- संगरे शरणं सुहृत्, संगरणं संगिरन्तेत्र च संगरः । शमीफले तु संगरम् ॥ १६७ ॥ मन्त्रब्राह्मणात्मको हि वेदः । गुप्तवादो रहसि कर्त-

वृषाकपायी श्रीगौर्योरभिख्या नामशोभयोः ॥ १५६ ॥
आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ।
उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः ॥ १५७ ॥
छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ॥ १५८ ॥
कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभबन्धने ।
कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ॥ १५९ ॥
जन्यः स्याज्जनवादेऽपि जघन्योऽन्त्ये(न्ते)धमेऽपि च ।
गर्ह्याधीनौ च वक्तव्यौ कल्यौ सज्जनिरामयौ ॥ १६० ॥
आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यौ पुण्यं तु चार्वपि ।
रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि वदान्यो वल्गुवागपि ॥ १६१ ॥

यथा– वृषाकपायीमन्येति सत्रपः किं न गोत्रभिद् । अभिख्यायतेनयाभिख्या संज्ञा, यथा– चैताभिख्य । शोभाया यथा– काप्यभिख्या तयोरासीत् (रघु०) । कीर्तौ च (अभिख्या) ॥ १५६ ॥ मन्त्रादौ कृञः शच (सू०), आरम्भे यथा– सर्वाः क्रिया मन्त्रमूलाः नृपाणाम् । निष्कृतिर्यथा– महापातकिनां पुंसां भवेत्प्राणान्तिका क्रिया । शिक्षा यथा– क्रिया हि द्रव्यं विनयति नाद्रव्यम् (कौटिल्यः)। पूजनं यथा– गुरुदेवक्रियारतः । संप्रधारणं विचारः, यथा– क्रियां विना को हि जानाति कृत्यम् । उपायो यथा– सामादिकाः क्रियाः । कर्म यथा– पाकक्रिया । चेष्टा यथा– स्तम्भे स्यान्निष्क्रियो जन्तुः प्रलये गतचेतनः । चिकित्सा यथा– पुनर्ज्वरे समुत्पन्ने क्रिया पूर्वज्वरानुगा (चरकसं०)। धात्वर्थेपि, यथा– क्रियावाचो धातुः । आख्यातं तूपचारात्, यथा– क्रिया वा कारकान्विता (पृ० २८) । गर्भाधानादिसंस्कारेपि यथा– स गुर्वर्थः क्रियां कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति । और्ध्वदेहिकं यथा– अतो न रोदितव्यं हि क्रियाः कार्याः प्रयत्नतः ॥ १५७ ॥ छयति सतापं छाया, छो छेदने । छायाख्यार्कभार्या । कान्तौ यथा– विच्छायः पुरुषो भवेत् । प्रतिबिम्बे यथा– संक्रान्तच्छाय आदर्शः । आतपाभावे यथा– नष्टच्छायो मध्याह्नः ॥ १५८ ॥ राजगृहादेः प्रारम्भकोष्ठे यथा– सप्त कक्ष्या अतिक्रम्य । काञ्चीबन्धनदाम यथा– परिधानाद्बहिः कक्ष्या निबद्धा ह्यासुरी भवेत् । मध्ये– इभस्य बन्धने यथा– हेमकक्ष्या गजाः । उपोषे सस्पर्धया यथा– परार्थे बद्धकक्ष्याणां त्वादृशानुद्भवः कुतः । क्रियायां करणे कृत्या यथा– कां कृत्यामकार्षीः, प्रश्नाख्यानयोरिञ् (चान्द्रसू०) इति क्यप्– वा । देवता मारी नाम, यथा– तानि कृत्याहतानीव । धनादिना यः शत्रोर्भेद्यते स कृत्यः, यत्कौटिल्यः– क्रुद्धलुब्धभीतावमानिताः परेषां कृत्याः । कार्ये च कृत्यम् ॥ १५९ ॥ जनस्य जल्पो जन्यः, मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु (सू०)। अपिशब्दाद्युद्धः संग्रामोपि (जन्यः) । जननीयः पितरौ च, तथा संज्ञायांजन्याः (सू०) जनीं वहन्तीति । अपिशब्दाज्जघनभवे, शरीरावयवाद्यत् (सू०) । चशब्दाद्वाच्यः, वाच्यशब्दोपि गर्ह्यार्थवाची । कलासु साधुः कल्यः, सज्जेनुगुणः । दक्षोपि (कल्यः) । कल्यं ह्यस्तनं श्वस्तनं वाहः, प्रभातं च । कल्या कादम्बिनी ॥ १६० ॥ आत्मवानर्थनीयोर्थे साधुर्वा, अभवानेति पाठे धार्मिकोर्थ्यः । (अर्थ्यः) धर्मपथ्यर्थेति (सू०) यत् । पुणाति पुण्यं, अघ्न्यादिः (उ०) । अपिशब्दात्सुकृतं धर्मश्च (पुण्यम्)। अपिशब्दादाहतं हेमरूप्ये, रूपादाहतप्रशंसयोः (सू) इति यप् । वदति वदान्यः, वदेरान्यः (उ०)। अपिशब्दाद्दाता, वदन्यश्च– एकदेशविकृतः ॥ १६१ ॥ (न्याय्ये) यथा– मध्यस्थः । अपिशब्द।

अत्ययोतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेप्यथापदि ।
युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेपि च ॥ १५० ॥
पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ ।
संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥
विस्र(श्र)म्भयाच्ञाप्रेमाणो विरोधेपि समुच्छ्रयः ।
विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥
निर्यासेपि कषायोस्त्री स्यात्सभायां प्रतिश्रयः ।
प्रायो भूम्न्यन्तगमने मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि ॥ १५३ ॥
रहस्योपस्थयोर्गुह्यं सत्यं शपथतथ्ययोः ।
वीर्यं बलं प्रभावश्च द्रव्यं भव्यं गुणाश्रये ॥ १५४ ॥
धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेग्नौ भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ।
कसे(शे)रुहेम्नोर्गाङ्गेयं विशल्या दन्तिकापि च ॥ १५५ ॥

अन्योन्यसमयः । संकेतोवसरो नियमश्चोपचारात्, यथा– न समयपरिरक्षणं क्षमं ते (किरातार्जु०)। विरुद्धो नयो व्यसनं (अनयः), षाड्गुण्यस्यायथावत्प्रयोगात् । न श्रेयः (अयः) अनुकूलं दैवमनयः। विरुद्धं नयनं विपद् (अनयः) ॥ १४९ ॥ अतिक्रम उल्लङ्घनं यथा– धर्मस्यात्ययः । कृच्छ्रे यथा – प्राणात्ययः । दोषे यथा– गुणिनां नात्ययं कुर्यात् । दण्डे यथा– वाक्पारुष्येत्ययः शतम् । सम्यक्परागमनं यत्रेति (संपरायः), यथा– सांपरायिकं दुर्गं कुर्यात् । श्वशुरः पूज्य इति स्मृतेः, सर्वस्यैव हि ज्ञानस्य प्रणेता गुरुरुच्यते । कन्यायाश्चैव विद्यायाः प्रदाता पूज्यते गुरुः ॥ अपिशब्दान्मान्यः (पूज्यः) ॥ १५० ॥ पश्चादवस्थायि बलमनुबलाह्वयं, समवायो मेलः, संनयति संनयनं च संनयः । स्त्ये संघाते, चशब्दात् गृहे, यथा– विश्रम्य लौकिकान् संस्त्यायान् प्रविशेयुः । परिचयोपि (प्रणयः) ॥ १५१ ॥ विरोधो वैरं, अपिशब्दादुन्नतौ (समुच्छ्रयः), समुल्लङ्घ्य श्रयणं– ऊर्ध्वश्रयणं च. उदिश्रयतीति (सू०) घञ् बाहुल्कादत्र नास्ति । विषिणोति बध्नाति विषयः, यस्य मत्स्यादेर्यो जलादिर्ज्ञातः प्रसिद्धस्तत्र वर्तते । शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाश्चेति विषयाः । अपिशब्दाद् ग्रामसमूहे गोचरे देशे च (विषयः) ॥१५२॥ निर्यासः क्वाथरसः, यथा– त्रिफलाकषायः । अपिशब्दात्कषायस्तुवराह्वयो रसः । रागविशेषेपि, यथा– परिपक्वकषायो मुनिः । रक्तपीतवर्णयोगेपि, यथा– कषायवस्त्रः । आस्पदे च (प्रतिश्रयः) । भूम्नि बाहुल्ये यथा– प्रायेणाकृतकृत्यत्वान्मृत्योरुद्विजते जनः । अन्तगमनेऽनशने यथा– प्रायोपवेशनमतिर्नृपतिर्बभूव (रघु०) । तुल्ये च यथा– मूर्खप्रायः, अत्रापि वा मूर्खैः प्रायेणेति व्युत्पत्तिः । मन्यते मन्युः, क्रतौ यथा– शतमन्युरिन्द्रः ॥ १५३ ॥ रहस्यं गोप्यं, उपस्थो योन्यादिः, गूहनीयं गुह्यं, शंसिदुहिगुहिभ्यो वाक्यप्– वक्तव्यः (वा०) । सति साधु सत्यं, शपथे यथा– सत्येन शापयेद्विप्रम् (मनुः) । तथ्ये यथा– सत्यवादी । बलं प्राणसामर्थ्यं यथा– सत्त्ववान् वीर्यसंपन्नः । प्रभावो द्रव्यशक्तिर्यथा– रसवीर्यविपाकाः (पृ० ५६) । चशब्दाद्रेतो वीरकर्म च (वीर्यम्) । भव्ये योग्ये, द्रव्यंचभव्ये (सू०) साधुः, यथा– क्रिया हि द्रव्यं विनयति नाद्रव्यम् (कौटिल्यः) । गुणाश्रये यथा– क्रियावद्गुणवत्समवायि कारणं द्रव्यं पृथिव्यादि (वैशेषिकसू०) । धनमौषधं च द्रव्यम् ॥१५४॥ धिष शब्दे, भं नक्षत्रं (धिष्ण्यं) । अग्निविशेषे पुमान् (धिष्ण्यः) । भागायत् (सू०). शुभमशुभं शुभाशुभं पुरा कृतं कर्म (भाग्यम्) । राजकसेरुर्जलजः कन्दोत्र न पार्श्वास्थि (गाङ्गेयम्) । दन्तिका नामौषधी, अपिशब्दाल्लाङ्गली विगतशल्या च (विशल्या) ॥ १५५ ॥ वृषाकपेः स्त्री वृषाकपायी, वृषाकप्यग्नीति (सू०) ङीप् ऐत्वम् । स्वाहा च, शचीमप्याहुः,

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा ।
ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥
सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये प्रधाने प्रथमस्त्रिषु ।
वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वावधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥
जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ।
तुरंगगरुडौ तार्क्ष्यौ निलयापचयौ क्षयौ ॥ १४५ ॥
श्वशुर्यौ देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ।
पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः ॥ १४६ ॥
तिष्यः पुष्ये कलियुगे पर्यायोवसरे क्रमे ।
प्रत्ययोधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥ १४७ ॥
रन्ध्रे शब्देथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ।
स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥
समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ।
व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥

नीले वर्णः । शारिवा नामौषधिः (श्यामा), गन्धप्रियङ्गुश्च । ललति लालयति लल्यते च ललामं, पुण्ड्रोश्वमुखेल्पवर्णं चिह्नम् । अश्वभूषा ललामाख्या । प्रथनेपि प्राधान्यान्वयात्, यथा- नृपललामः । केतौ यथा- कपिललामार्जुनः । प्रभावे शृङ्गे च (ललामम्) । नान्तोप्यस्ति यथा- कन्याललाम कमनीयमजस्य लिप्सोः (रघु०) ॥ १४३ ॥ मुष्टु- उच्यते सूक्ष्मं, आत्मनि-अधि- अध्यात्मम् । अपिशब्दादल्पेपि त्रिषु (सूक्ष्मम्) । प्रथतेस्मात्प्रथते च प्रथमः । वमेर्वातेर्वा रूपं, (वामो वल्गुः), यथा- वामलोचना । (वामः प्रतीपः) यथा- विधौ वामारम्भे (मालतीमा०) । चशब्दाद्वामं दक्षिणेतरत् । वामा स्त्री, अश्वा तु वामी । अधोभवोधमः, अवोधसोर्लोपश्च (सू०) इति मः सलोपश्च, तुच्छेपि (अधमः) ॥ १४४ ॥ जीर्णं यथा- यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् (भगवद्गीता) । परिभुक्तं यथा- दर्भाः कृष्णाजिनं मन्त्रा ब्राह्मणा हविरग्नयः । अयातयामान्येतानि नियोज्यानि पुनः पुनः ॥ याता यामाः क्षपांशा अस्येति । दुर्गश्चाह- श्रमो मूर्च्छा तक्षभाण्डमजिराम्बुविनिर्गमः । श्यामौ धूम्रास्फुटौ भीमा रुद्रभीषणपाण्डवाः ॥ इतो यान्ताः । तृक्षस्यापत्यं तार्क्ष्यः । क्षि निवासे, क्षिप् हिंसायाम्, यक्ष्मा कल्पान्तश्च (क्षयः) ॥१४५॥ श्वशुरस्यापत्यं श्वशुर्यः, कुमारम्पत्योः । भ्रातुरपत्यं भ्रातृव्यः, भ्रातुर्व्यच्च (सू०), व्यन्सपत्ने (सू०), योगविभागाद् भ्रातृजे । पिपर्ति जनं पर्जन्यः, परोम्भःपूरे जन्यतेनेन वा । रसदब्दो गर्जन्मेघः, अगर्जत्यपि योग्यत्वात् (पर्जन्यः) । अरणीयोर्यः ॥ १४६ ॥ त्विषति तिष्यः, त्विष दीप्तौ, अघ्न्यादिः (उ०) । (पर्यायः) परावनुपात्ययइणः (सू०) इति घञ् । (प्रत्ययः) यथायथं कर्तृभावकरणेष्वच् । अधीन आयत्तः, यथा- राजप्रत्ययाः प्रजाः । विश्वासे यथा- न शत्रौ प्रत्ययं गच्छेत् । हेतौ यथा- स्त्रीप्रत्ययः कलहः । रन्ध्रे यथा- रिपोः प्रत्ययमासाद्य प्रहरेत् । शब्दोत्र कृत.द्धितादिः, प्रथितत्वे च (प्रत्ययः) ॥ १४७ ॥ देशविशेषेपि (अनुशयः) । स्थूलस्य पुरुषस्योच्चयनमन्यस्यासंप्रहात्, स्थूलावलोकनेनेत्यर्थः । हस्तिनां मध्यमगतौ, यत्पालकाप्यः- नीचैर्गतं स्थूलोच्चयो वीचिमार्ग इति तिस्रो गतयः ॥ १४८ ॥ शपथे यथा- कृतसमयः । आचारे यथा- समयाञ्श्रावयेच्छिष्यम् । काले यथा- संध्यासमयः । सिद्धान्ते यथा- बौद्धसमयः । संविदि यथा-

स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान् ।
क्षत्रियेपि च नाभिर्ना सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ॥ १३६ ॥
सभा संसदि सभ्ये च त्रिष्वध्यक्षेपि वल्लभः ।
किरणप्रग्रहौ रश्मी कपिभेकौ प्लवंगमौ ॥ १३७ ॥
इच्छामनोभवौ कामौ शक्त्युद्योगौ पराक्रमौ ।
धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ॥ १३८ ॥
उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ।
वणिक्पथः पुरं वेदो निगमो नागरो वणिक् ॥ १३९ ॥
नैगमौ द्वौ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ।
शब्दादिपूर्वो वृन्देपि ग्रामः क्रान्तौ च विक्रमः ॥ १४० ॥
स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्मस्तु कुटिलेलसे ।
उष्णेपि घर्मश्चण्डालंकारे भ्रान्तौ च विभ्रमः ॥ १४१ ॥
गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।
क्षितिक्षान्त्योः क्षमा युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

कुसुम्भं, सुम्भ (शुम्भ) भासने हिंसायां च । अपिशब्दाद्विजिगीषौ राज्ञि (नाभिः), ना पुमान् चक्रमध्ये तुन्दे च स्त्री, नभते नभ्यते वा नाभिः । सुष्ठु रभते सुरभिः, चशब्दाद्वसन्ते पुमान्, सुगन्धौ च त्रिषु । मनोज्ञे तूपचारात् (सुरभिः) ॥ १३६ ॥ सह भान्त्यस्यां सभा, सभ्यास्तु तात्स्थ्यात् । समूहे शालायां द्यूते च (सभा) । अध्यक्षोत्र गो[त्रा]ध्यक्षः (वल्लभः) । अपिशब्दात् प्रिये (वल्लभः) । करभो करपार्श्वोष्ट्रौ । इतो मान्ताः । (रश्मिः) प्रग्रहो वल्गादिः, राशिः सौत्रः । प्लवेन गच्छतीति, गमश्च (सू०) इति खच् ॥ १३७ ॥ काम्येपि (कामः) । कामं तु बाढार्थे । शक्तिरत्र प्रभुमन्त्रोत्साहलक्षणा, उद्योगोरीन् प्रति बलोत्साहः (पराक्रमः) । धरते धर्मः, पुण्यं यागादि— अहिंसा च । यमो धर्मराजः, धर्मस्तु भीमवत् । न्याये यथा— धर्माधिकरणम् । स्वभावे यथा— क्रूरधर्मा । आचारे यथा— धर्मशास्त्रम् । सोमपे यथा— एष धर्मः सनातनः (मनुः) । युधिष्ठिरपिता च (धर्मः) । वेदे च (धर्मः) । धर्मसाधने यागादौ क्लीबे, यच्छ्रुतिः— तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥ १३८ ॥ उपधामात्यपरीक्षा (उपक्रमः) । अपिशब्दात्तदाद्याचिकित्सा यथा— नन्दोपक्रमं मानानि । (उपक्रमः) चिकित्सा— उपायपूर्वारम्भत्वात् । निगम्यते निगमः, गोचरसंचरेति (सू०) साधुः । निगमे भवो नैगमः, द्वाविति ब्राह्मणस्य नैगमत्वे निषेधः ॥ १३९ ॥ बले हलधरे, रमते रामः, णः । भार्गवे काकुत्स्थे च (रामः) । वृन्दे यथा— शब्दग्रामः, गुणग्रामः । अपिशब्दाद्विषयैकदेशे षड्जग्रामादौ च, यदाहुः— सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनास्त्वेकविंशतिः । गिरन्ति गृणान्ति च यं स ग्रामः । क्रान्तौ पादादिभिराक्रमण (विक्रमः), चशब्दाच्छौर्ये क्वचित् ॥ १४० ॥ ष्टुञ् स्तुतौ, अर्तिस्तुसु (उ०) इति मन् । जहाति सतां वृत्तिं जिह्मः । घर्मः, घृणु दीप्तौ ॥ १४१ ॥ गुड रक्षणे, गुड्यतेनेन गुल्मः, रुक्– उदर्यो व्याधिः । स्तम्बोत्र लताप्रतानतृणादिसमूहः, सेनाक्षौहिण्यङ्गं (गुल्मः) । चशब्दाद् दुर्गादौ रक्षास्थानं (गुल्मः), बलानां सन्धानं विटपसंघातोपि । जमति विरुद्धं जामिः, यथा— जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः । क्षमते क्षमणं क्षम्यते च (क्षमा, क्षमं) ॥ १४२ ॥ (श्यामः) श्यैङ् गतौ, हरि-

गोधुग्गोष्ठपती गोपौ हरो विष्णुर्वृषाकपिः ।
बाष्पमूष्माश्रु कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥
तल्पं शय्याट्टदारेषु स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ।
प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥
भेद्यलिङ्गा अमी कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ।
अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने ॥ १३२ ॥
कम्बुर्ना वलये शंखे द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ।
पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुंबहुत्वेऽपि पूर्वजान् ॥ १३३ ॥
कुम्भौ घटेभमूर्धांशौ डिम्भौ तु शिशुबालिशौ ।
स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ शंभू ब्रह्मत्रिलोचनौ ॥ १३४ ॥
कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भा विश्रम्भः प्रणयेऽपि च ।
स्याद् भेर्यां दुन्दुभिः पुंसि स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ॥ १३५ ॥

अमिथ । वाययति शोषयति बपति च बाष्पः । कशति क्लेशं कशिपु, द्वयं युगपत्पृथक् नेव । कशिपू इत्यपपाठः ॥ १३० ॥ तल प्रतिष्ठायां, अट्टो दुर्गप्राकारः, रणमण्डप इत्येके, यथा- विशीर्णतल्पा- (ट्टशता) पूः (रघु॰)। शय्या यथा- तल्पं भूः स्तरणं तृणानि (भर्तृहरि॰)। दारा यथा- गुरु- तल्पगः (मनुः)। स्तम्बो गुल्मः (विटपः)। अपिशब्दात्स्कन्धादूर्ध्वं तरोः शाखा विटपः (कात्यः)। अग्रे विस्तारे तूपचारात्, विट आक्रोशे। बुधे लक्षणया (प्राप्तरूप १०)॥ १३१ ॥ कूर्मी कमठी, वीणाविशेषः सारस्वताख्यः, कच्छेन पिबति कच्छं पाति वा कच्छपी । कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाह्नो- ऽष्टमके । इतः फान्ताः । रवर्णे पुंसि रेफः स्यात् कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः । शिफा शिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि ॥ शफं मूले तरूणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च । गुम्फः स्याद् गुम्फने बाहोरलङ्कारे च कीर्तितः । अथ बान्ताः [वान्ताश्च]। (गन्धर्वः) अन्तरा मरणजन्मनोर्मध्ये भवं सत्त्वं यातना- शरीरम्। यदाहुः- अन्तराभवदेहो हि नेष्यते विन्ध्यवासिना (कुमारिलभट्ट॰), तन्न, लक्ष्याविरोधात्। तस्मादन्तरिक्षवासिनो गन्धर्वाख्या भूताः, यद् व्यासः- अस्माभिर्यदनुष्ठेयं गन्धर्वैस्तदनुष्ठितम् । गन्ध्यते गन्धर्वः, पशुभेदेऽपि ॥ १३२ ॥ काम्यते कम्बुः, शम्बूकेऽपि । (द्विजिह्वः) जिह्वाद्वयवचनमुपचा- रात्। पूर्वो वाच्यलिङ्गः। प्रागिति दिशं देशं कालं चाह, तत्स्थं च वस्तु (पूर्वम्)। पूर्वजा आदि- पुरुषाः। आद्यर्थे तु क्लीबे यथा- क्षरत्येनः कृतं पूर्वम् ॥ १३३ ॥ चित्रपुङ्खेऽपि कादम्बो नितम्बोऽद्रितटे कटौ। दुर्वी फणापि बिम्बोऽस्त्री मण्डले चाकृतौ फले ॥ अथ भान्ताः। इभस्य मूर्धांशः शिरोभागः (कुम्भः)। डयते डिम्ब्यते वा डिम्भः, बालिशो मूर्खः। ष्टभि प्रतिबन्धे, स्तम्भुः सौत्रो वा, स्तभ्नाति गूढं चेष्टितं च स्तम्भः। (शंभुः) अर्हत्यपि ॥ १३४ ॥ भ्रूण उदरस्थो जन्तुः (गर्भः)। कुक्षौ यथा- गर्भस्थेन समस्तदा। अन्तर्भवे तूपचारात्, यथा- रम्भागर्भमृदुः । भ्रूणे यथा- भर्तृगर्भदुहा देव। अर्भके यथा- गर्भरूपः, गीर्यते गृणाति च गर्भः। प्रणयः शृङ्गारप्रार्थना (विश्रम्भः)। अपि- शब्दात्विसंवादे विश्वासे च (विश्रम्भः)। दुन्दु भाषते दुन्दुभिः, दुनोति भासनिति नैरुक्ताः। भेर्यां यथा- दुन्दुभिस्ताडितोऽयम् (वेणीसंहार॰)। अक्षोऽत्र पाशकः, यथा- दुन्दुभ्या किल तत्कृते पतितया यत्र द्रौपदी हारिता ॥ १३५ ॥ महारजनं पप्रकम्। करकः कमण्डलुः, कुस्यति कुसुम्भति मृद्नाति

अकार्यगुह्ये कौपीनं मैथुनं संगतौ रते ।
प्रधानं परमात्माधीः प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः ॥ १२२ ॥
प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधनं कुलनाशयोः ।
क्रन्दने रोदनाह्वाने वर्ष्म देहप्रमाणयोः ॥ १२३ ॥
गृहदेहत्विट्प्रभावा धामान्यथ चतुष्पथे ।
संनिवेशे च संस्थानं लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ॥ १२४ ॥
आच्छादने संविधानमपवारणमित्युभे ।
आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥
अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ।
रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥
तलिनं विरले स्तोके वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ।
समानाः सत्समैके स्युः पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥
हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ वेगिशूरौ तरस्विनौ ।
अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्गतावपि ॥ १२७ ॥
कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतेऽपि च ।
परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥

कूपं प्रवेष्टुमर्हति– इति कौपीनं, शालीनकौपीनेअधृष्टाकार्ययोः (सू०) इति साधुः । अन्यनया लिङ्गं तदाच्छादनं च (कौपीनं) । मिथुनं युग्मं स्त्रीपुंसौ च तस्येदं मैथुनम् । प्रधीयतेऽस्मिन्प्रवर्तते च प्रधानम्, अजहल्लिङ्गम् । प्रकृतिर्महामात्रो मुख्यश्च (प्रधानं) । (प्रज्ञानं) भावे करणे च ल्युट् ॥ १२२ ॥ प्रसूयते प्रसूनम् । नियतं धनं यत्र, निवृत्तश्च धनस्य निधनम् । अन्तोऽपि (निधनम्) । (क्रन्दनं) भावे ल्युट् । वर्षति वृष्यते वर्ष्म । प्रमाणमत्रोन्नतिः, यथा– व्याप्तं व्योमनि वर्ष्मणा ॥ १२३ ॥ त्विट् तेजः, धीयतेऽत्र धत्ते च धाम, जन्मापि । संनिवेशो रचना (संस्थानं), आकृतौ मृत्यौ च । लक्ष्यतेऽनेन लक्ष्म, लक्ष्ये च । आच्छादने द्वे, संपिधानमिति सभ्यः पाठः । अपवारणं स्थगनं, यत्तु तूपचारात् (आच्छादनम्) । (आराधनं) करणे भावे च ल्युट् ॥ १२५ ॥ (अधिष्ठानं) अधिकरणे भावे च ल्युट् । चक्रं रथाङ्गं, अपिशब्दादारोपणे व्यवस्थापने च (अधिष्ठानं) । (रत्नं) यदाहुः– जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते (चाणक्यश०) । अपिशब्दान्मणौ, रमन्तेऽस्मिन् रत्नम् । वने द्वे, वनु याचने ॥ १२६ ॥ तलमस्यास्ति तलिनं, अधस्तनेऽपि । पान्तेभ्यः प्राक् त्रिलिङ्गाः । सह मानेन वर्तते समानं मानं चास्य समानः । अपिश्यति तक्ष्णोति पिशुनः, पिश अवयवे वा ॥ १२७ ॥ हीयते हीनः, ऊन परिहाणे । ऊनोऽल्पः, गर्ह्यस्तूपचारात् । तरो जवो बलं वास्त्यस्य तरस्वी । अपराध्यस्यपराद्धः, अभिद्रुतोऽपि (अभिपन्नः) ॥ १२८ ॥ दुर्गश्चाह– स्वत्वं भूम्यादिदानार्थं यातनाज्ञा च शासनम् । निदानमवसानेऽपि सार्थे वार्धुषिके धनी ॥ कक्षापटेऽपि कौपीनं न ना [ग्लाने] खेदेऽपि बाधना [वेदना] । युग्मं पक्षेऽस्य भार्यापि जनी दोषेऽपि लाञ्छनम् ॥ अथ पान्ताः । कला आप्नोति कल्पते च कलापः, भूषणे काञ्चपादौ । संहते यथा– केशकलापः । तूणे[रूपे]ऽपि (कलापः) । परिच्छदः परिवारः, पर्युप्तिः परितो बीजत्यागः (परीवापः), स्थितिरचलत्वं, सलिलस्थितिर्जलधार इत्येके ॥ १२९ ॥ गोष्ठपतिर्गोष्ठाध्यक्षः, गोकुलस्वामी च, गाः पाति गोपायति च गोपः । वृषेण दान्तेन धर्मेण वा कम्पते याति वृषाकपिः,

मन्येथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ।
वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥
उत्साहने च हिंसार्थसूचने चापि गन्धनम् ।
आतञ्चनं प्रतीवापजवनाप्यायनार्थकम् ॥ ११५ ॥
व्यञ्जनं लाञ्छनश्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ।
स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥
स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।
अवकाशे स्थितौ स्थानं क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥
उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च ।
व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥
मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ।
निर्वर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥
निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।
व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥
पक्ष्माक्षिलोम्नि किञ्जल्के तन्त्र्याद्यंशेऽप्यणीयसि ।
तिथिभेदे क्षणे पर्व वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥

केत्यतेऽनेन केतनं, कित ज्ञाने । कृत्येऽवश्यंकार्ये यथा– कार्यकेतनम् । केतौ ध्वजे यथा– मीनकेतनः । उपनिमन्त्रणे यथा– ब्राह्मणो निकेतनं नातिक्रामेत् । तत्त्वं ज्ञानं, ब्रह्म वेदा ब्रह्म तपो ब्रह्म ज्ञानं च शाश्वतम् । बृह वृद्धौ, विप्रे यथा– ब्रह्महत्या । त्रिष्वर्थेषु क्लीबे द्वयोः पुंसि ॥ ११४ ॥ हिंसार्थे यत्सूचनं मतदर्शनं, यदाहुः– गन्धन हिंसाप्रयुक्तं सूचनं, हिंसायामित्येके पेठुः । अपिशब्दात्प्रकाशने (गन्धनम्)। तञ्चु गतौ, प्रतीवापः स्वर्णादेर्द्रुतस्य द्रव्यान्तरेणावचूर्णनं विपरीतावपनम् (आतञ्चनम्)॥ ११५॥ व्यज्यतेऽनेन व्यञ्जनं निष्ठानं भक्ताद्युपसेचनं दध्यादि, अवयवः स्त्र्यादिचिह्नम् । अपिशब्दात्ककारादि (व्यञ्जनम्)। कुलीने भवं कौलीनं, कुलस्येदं वा । लोकवादोऽपवादः, यथा– मा कौलीनादसितनयने मय्यविश्वासिनी भूः (मेघ०) ॥ ११६ ॥ (उद्यानं) भावेऽधिकरणे च ल्युट् । वनभेद उपवनं (उद्यानं)। अधिकरणे भावे च ल्युट् (स्थानं)। आदिशब्दाद्विजिगीषादौ (देवनं)। अपिशब्दात्परिदेवने द्यूते च (देवनं) ॥ ११७ ॥ पौरुषमुद्योगः, तन्त्रं सैन्यं स्वमण्डलचिन्ता च (उत्थानम्)। संनिविष्टोद्गम उपविष्टस्योर्ध्वभावः । अपिशब्दान्मलोत्सर्गे चैत्यगृहे वास्त्वन्तरे च (उत्थानं)। प्रतिरोधे, विगतमुत्थानमत्रेति । अपिशब्दात्समाधिनिवृत्तौ (व्युत्थानम्) ॥ ११८ ॥ यथाक्रमं भावादौ ल्युट् (साधनम्) । चशब्दाल्लिङ्गे कारके सैन्ये– उपहरणे– उपाये सिद्धौ मेधे च (साधनम्) ॥ ११९ ॥ न्यासार्पणं निक्षेपप्रतिदानं (निर्यातनम्), अपिशब्दादृणादिसंशुद्धौ । व्यस्यति श्रेयोमार्गाद् व्यसनं, व्यस्तिश्च । कामजो दोषो मृगयाक्षपानस्त्रियः, क्रोधजो वाक्पारुष्यदण्डपारुष्यार्थदूषणानि । अशुभं पापे दैवानिष्टफले, अशक्तौ चोपचारात् (व्यसनम्) ॥ १२० ॥ पक्ष परिग्रहे, तन्तुतूलादीनां भागेऽल्पतरे (पक्ष्म)। गरुति च (पक्ष्म) । तिथिविशेषः षष्ठ्यष्टमी– अमावास्यादिः, यथा– पर्ववर्ज्यं व्रजेदेनाम् । प्रतिपत्पञ्चदश्योः संधिश्च (पर्व) । क्षणः प्रस्ताव उत्सवश्च (पर्व)। ग्रन्थौ चरिते च (पर्व), यथा– आदिपर्व । वर्तते वर्त्म, वर्तन्ते यान्त्यनेन च । नेत्रच्छदोऽक्षिपुटः (वर्त्म) ॥ १२१ ॥

ग्रावाणौ शैलपाषाणौ पत्त्रिणौ शरपक्षिणौ।
तरुशैलौ शिखरिणौ शिखिनौ वह्निबर्हिणौ ॥ १०६ ॥
प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहावथ सादिनौ।
द्वौ सारथिहयारोहौ वाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः ॥ १०७ ॥
कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः।
वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥
क्लेशेऽपि वृजिनो विश्वकर्मार्कसुरशिल्पिनोः।
आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥
शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः।
अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ॥ ११० ॥
घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे।
इनः सूर्ये प्रभौ राजा मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥
वाणिन्यौ नर्तकीदूत्यौ स्रवन्त्यामपि वाहिनी।
ह्लादिन्यौ वज्रतडितौ वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥
त्वग्देहयोरपि तनुः सूनाऽधोजिह्विकापि च।
क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥

वा ग्रावा। पत्त्राणि पक्षाः सन्त्यस्य पत्त्री। श्येनोऽपि (पत्त्री)। वृक्षकुक्कुटौ च (शिखिनौ), कुर्गश्च-शिख्याख्या वह्निबर्हिद्रुद्विजकुक्कुटशार्ङ्गकाः, शार्ङ्गको मन्दपालसुतः पक्षी च ॥ १०६ ॥ उपग्रहो बन्दि-ग्रहणादिः (प्रतियत्नः)। सतो गुणान्तराधानं संस्कारश्च (प्रतियत्नः)। सीदत्यवश्यं सादयति वा सादी। वाजाः पक्षाः सन्त्यस्य वाजी। अश्वाः पूर्वं सपक्षा अभवन्, इषुः शरः (वाजी) ॥ १०७ ॥ अभिजायतेऽस्मादभिजनः, जनिवध्योश्च (सू०) इति ह्रस्वः। वर्षेऽर्चिषि च क्लीबे (हायनं) आहुः। व्रीहिविशेषः (हायनः) षष्टिकाख्यः। जहाति जलं हायनः, हश्चव्रीहिकालयोः (सू०) ण्युट्। विरो-चते विरोचनः, अनुदात्तेतश्च (सू०) इति युच् ॥ १०८ ॥ अपिशब्दाद्धर्मपापयोः क्लीबे, वर्ज्यत इति वृजिनम्। विश्वस्य कर्मास्माद्विश्वं च कर्मास्य विश्वकर्मा। यत्ने यथ— महात्मा। स्वभावे यथा— दुष्टात्मा। ब्रह्मणि यथा— आत्मैवेदं सर्वमिदं नेह नानास्ति किंचन (कठोपनि०)। वर्ष्म शरीरं यथा— कृशात्मा। चशब्दात्क्षेत्रज्ञः (आत्मा) ॥ १०९ ॥ हन्ति तच्छीलो घातुकः, स चासौ मत्तेभश्च (घनाघनः)। वर्षति तच्छीलो वर्षुकोऽब्दो मेघः, हन्तीति घनाघनः, चरिचलिपतिवदीनां वा द्वित्वमच्या-क्चाभ्यासस्य (वा०), हन्तेर्घत्वं च (वा०) इति सिद्धिः। प्रणयः प्रार्थना, मानेर्मन्यतेश्च भावे रूपम्। हिंसायां तु मीनातेर्ल्युट्याहुः, मीनातिमिनोतिदीङामिति (सू०) आत्वम् ॥ ११० ॥ हन्यतेऽनेन हन्ति वा घनः, मूर्तौ घनः (सू०) इति साधुः। मूर्तिगुणः काठिन्यं, असर्वगतद्रव्यपरिमाणं मूर्तिः सैव गुणो वा, दर्शनं च स्पर्शनं च मूर्तिः। निरंतरं निबिडं (घनं)। मुस्ते लोहमुद्गरे बाहुल्ये च (घनः)। घनं तु कांस्यवाद्यम्। एतीति— इनः, प्रभुः स्वामी। सोमो राजा द्विजातीनामिति श्रुतिः ॥ १११ ॥ वनुते तच्छीला वाणिनी, वणेः शब्दार्थाद्वाणिनीति सभ्यः। विदग्धापि (वाणिनी), स्रवन्त्यां नद्यां (वाहिनी)। अपिशब्दात्सेनायां, वहति वाहते वा तच्छीला वाहिनी, वाहृ प्रयत्ने। वन्दा वृक्षरुहा, अपिशब्दात्स्त्रीविशेषे (कामिनी) ॥ ११२ ॥ अपिशब्दात्कृशाल्पविरलेषु, तन्यते तनुः। (सूना) [षू प्रेरणे], अपिशब्दाद् भक्ष्यप्राणिवधस्थानम्। पञ्च सूना गृहस्थस्येति तूपचारात्। पुष्पं तु सूनम्। वितन्यते वितानं, विगतं तननं वाऽत्र। शून्ये कदर्के [र्यं]के च (वितानम्) ॥ ११३ ॥

मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ।
विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे बिलेवधिः ॥ ९९ ॥
विधिर्विधाने दैवेपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे ।
बुधवृद्धौ पण्डितेपि स्कन्धः समुदयेपि च ॥ १०० ॥
देशे नदविशेषेब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ।
विधा विधौ प्रकारे च साधू रम्येपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥
वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च सुधा लेपोमृतं स्नुही ।
संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृहा ॥ १०२ ॥
मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेप्यन्धं तमस्यपि ।
अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डितंमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥
ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्देशेथावलम्बितः ।
अविदूरोप्यवष्टब्धः प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ॥ १०४ ॥
सूर्यवह्नी चित्रभानू भानू रश्मिदिवाकरौ ।
भूतात्मानौ धातृदेहौ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥

मुख्यानुयायी यथा– अनुबन्धी(न्धः) शिशुः स्नेहेनानुबध्नातीति । प्रकृतानुवर्तने यथा– वेगानुबन्धः । विध्यति विदधाति विधत्ते वा विधुः, विध विधाने, विधीयते सुरैः पीयते वा, धेट् पाने । पर्यन्तेवधीयतेवधिः । उपचारादवधाने कालेपि (अवधिः) ॥ ९९ ॥ (विधिः) भावकरणादौ किः (उपसर्गे घोः किः) । अपिशब्दात्काले धातरि कल्पे प्रकारे विधायके च वाक्ये (विधिः) । (प्रणिधिः) भावे कर्मणि च किः । अवधानेपि (प्रणिधिः) । अपिशब्दाज्ज्ञे स्थविरे च (बुधवृद्धौ) । स्कन्धति(?)स्कन्धः । समुदये यथा– सप्त वातस्कन्धाः । अपिशब्दात्सैन्यभागे यथा– स्कन्धावारः । अंसे राशौ समूहे वृक्षप्रकाण्डे च (स्कन्धः) । बौद्धे च यथा– संज्ञारूपसंवेदनासंस्कारसमुदायाख्याः [विज्ञानलक्षणाः] पञ्च स्कन्धाः ॥ १०० ॥ देशे यथा– सिन्धुर्देशः, स्यन्दते सिन्धुः, सरित्सामान्ये, विशेषे च यथा– सिन्धोः परमपूरुषम् । विधौ विधाने (विधा) । प्रकारे यथा– द्विविधाः । चशब्दाद्धस्त्यश्वादिभोजने वेतने च (विधा) । साध्नोति साधुः । अपिशब्दात्सज्जने (साधुः) । युक्ते रम्यत्वात्, यथा– साधु दृष्टं यद् रम्यम् ॥ १०१ ॥ उह्यते बध्नाति वा वधूः, स्त्रीति स्त्रीमात्रम् । सुष्ठु धीयते धयन्ति वैतां सुधा । लिप्यतेनेनेति लेपो मल्लिकोलादिः, स्नुही वज्रकन्दा यथा– सुधाक्षीरम् । मूर्वापि (सुधा) । (प्रतिज्ञा) यथा– सत्यसंधः । संधारणं च (संधा) । संप्रत्ययो भक्त्यतिशयो यथा– श्रद्धया परयोपेताः (भगवद्गीता) । स्पृहा यथा– भोजने श्रद्धालुः ॥ १०२ ॥ माद्यन्त्यनेन मन्यते च मधु । क्षुद्राभिः कृतं क्षौद्रं, क्षुद्राभ्रमरवटरेति (सू०) अञ् । अपिशब्दादारेवे चैत्रे मधूके वसन्ते च पुंलिङ्गः (मधुः) । अपिशब्दादचक्षुषि जले च (अन्धम्) । इतो धान्ता वाच्यलिङ्गाः । ऊर्ध्वबद्धोपि (समुन्नद्धः) ॥ १०३ ॥ ब्रह्मणो ब्राह्मणस्य बन्धुः, परमनुष्ठानाभावाज्जातिमात्रब्राह्मणः । एवं क्षत्रबन्धुः । निर्देशे यथा– व्यवस्थिताख्याने ब्रह्मणो बन्धुर्ज्ञातिरिति । अवलम्बितो यष्ट्यादौ रुद्धः (अवष्टब्धः) । अविदूरे यथा– अवष्टब्धे सेने, अवाच्चालम्बनाविदूर्ययोः (सू०) इति षत्वम् । अपिशब्दाद्बद्धोपि (अवष्टब्धः) । प्रसिध्यति प्रसाध्यते च प्रसिद्धः । लेशेपि गन्धः संबाधो गुह्यसंकुलयोरपि । बाधा निषेधे दुःखे च ज्ञातृषाब्दिसुरा बुधाः ॥ १०४ ॥ अथ नान्ताः । चित्रा भानवो रश्मयोनयोः । भाति भानुः । भूतानामात्मा भूतान्येवात्मास्य वा भूतात्मा । पृथक्कार्यो जनः– असभ्यत्वात्पृथग्जनः ॥ १०५ ॥ गिरति गृणाति

धर्मे रहस्युपनिषत्स्यादृतौ वत्सरे शरत् ।
पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु ॥ ९३ ॥
गोष्पदं सेविते माने प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ।
त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू मृदू चातीक्ष्णकोमलौ ॥ ९४ ॥
मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युर्द्वौ तु शारदौ ।
प्रत्यग्राप्रतिभौ विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥
व्यामो वटश्च न्यग्रोधावुत्सेधः काय उन्नतिः ।
पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥
परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।
बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥
स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ।
दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥

ऋतुरश्वयुजकार्तिकौ (शरद्)। वत्सरं यथा– जीवेम शरदां शतम्। शीर्यन्तेऽस्यामोषधयः शरत्, स्त्री। (पदं) पद्यतेऽनेनःपदं पेतिवच्छन्यात् (पा०) सः। त्राणं शरणं यथा– पदमापदि माधवः। स्थानं यथा– धुर्योऽयवः सचिवो लब्धपदा बभूव। लक्ष्म यथा– नवनखपदरेखालाञ्छितं बाहुमूलम्। अङ्घ्रिर्यथा– पादाग्रे प्रपदम् (पृ० १०३)। वस्तु यथा– पदार्थः। पादन्यासे पादमुद्रायां सुप्तिङन्ते च, यथा– कुरु घनोरु पदानि शनैः शनैः (वेणिसंहार०), पदं तुषारस्रुतिधौततरक्तम् (कु० सं०), पदसमूहो वाक्यम् (न्यायम.व्य०) ॥९३॥ गोभिः सेवितं गोष्पदं, गोष्पदंसेवितासेवितप्रमाणेषु (सू०) इति साधुः। माने गोखुरश्वभ्रे, यथा– गोष्पदं प्रविष्टो देवः। आस्पदंप्रतिष्ठायाम् (सू०) साधुः, कृत्य उपचारात्। इष्टो मृष्टः, मधुरो रसः, यथा– रसाः स्वादुम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः, स्वदते स्वादु। मृद्यते मृदुः, अतीक्ष्णोऽसाहिंस्रः ॥ ९४ ॥ मूढो यथा– मन्दः कवियशःप्रार्थी (रघु०)। अल्पे यथा– मन्दोदरी। अपटुः सरुक्, यथा– मन्दं विचिकित्सति भिषक्। निर्भाग्ये यथा– मन्दभाग्यः। स्वैरेप्यस्पत्वाद्यथा– [मन्द]मन्दपदगामी[चारी], भद्रो मन्दो मृगश्चेति। हस्तिविशेषः सौरिश्च (मन्दः)। शरदि भवः शारदः, लक्षणयाभिनवः, अधृष्टोऽप्रतिभः। शुद्धो वर्षे च (शारदः)। विगतो शारदोऽप्रतिभत्वदोषोऽस्य विशारदः ॥९५॥ अथ धान्ताः। व्यामस्तिर्यक्कृतबाह्वन्तरम्, न्यग्रुणद्धि न्यग्रोधः न्यग्रोहति च, न्यङ्कादिः (सू०)। ऊर्ध्वं सिध्यत्यनेनोत्सेधः, ऊर्ध्वे सेच(ध)नं च। परित आहरणं व्रीहितृणादेः पर्याहारो भाराख्यः (विवधः)। विशिष्टो वधो गमनमत्रेति विवधः, बाहुलकाद्वा दीर्घः (उपसर्गस्येति) ॥ ९६ ॥ परितोऽस्याश्चातुर्दिक्षं (चतुर्दिशं) धीयते बर्हिस्तरणवत् परिधिः, यदाहुः– बाहुप्रमाणं परिधिरच्छिन्नाग्रोऽतिपत्रलः। उपसूर्यकं सूर्यमण्डलं प्रतिसूर्याख्यम्। चक्रप्रान्तेऽपि (परिधिः)। बन्धकं दद्युत्तमर्णाय भूम्याद्याधीयते, यथा– आधिर्विनश्येद् द्विगुणे धने यदि न मोक्ष्यते (मनुः)। व्यसनं यथा– आधिं प्राप्तो यो न मुह्येत्स धीरः। आध्यानमाधिर्मानसी पीडा। आधीयतेऽस्मिन्नाधिराधारः ॥ ९७ ॥ समर्थनं दोषपरिहारः, यथा– अत्रायं समाधिः। नीवाको वचनाभावः समाधिरिव। चशब्दाच्चित्तैकाग्र्यं समाधानं (च), समाधीयते मनोऽस्मिन्समाधिः। दोषोत्पादे यथा– अनुबन्धमवस्थां च ज्ञात्वा दण्डं निपातयेत्। प्रकृतिप्रत्ययागमादेशानां यः कार्यार्थमासज्यते विनश्वर उच्चरितप्रध्वंसी सोऽनुबन्धः ॥ ९८ ॥

अर्थोऽभिधेयरैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।
निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥
समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे हितेऽपि च ।
दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि ॥ ८७ ॥
आस्थानीयत्नयोरास्था प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ।
अभिप्रायवशौ छन्दावब्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥
अपवादौ तु निन्दाज्ञे दायादौ सुतबान्धवौ ।
पादा रश्म्यङ्घ्रितुर्यांशा अभीन्द्वर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥
निर्वादो जनवादेऽपि शादो जम्बालशष्पयोः ।
साराव रुदिते त्रातर्याक्रन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥
स्यात्प्रसादोऽनुरोधेऽपि सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ।
गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥
प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम् ।
स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥

(अर्थः) । वस्तुनि पदार्थे । निवृत्तौ यथा— मशकार्थोऽयं धूमः । इन्द्रियविषये कारणे च (अर्थः) । निपानं जलाशयः, आगमः शास्त्रं (तीर्थम्) । ऋषिजुष्टं प्रभासपुष्करादि, यदध्यासितमर्हद्भिस्तादि तीर्थमिति । गुरौ यथा— तीर्था(दा)प्तविद्यः । जलावतरणमार्गे सत्रिण्यध्वरे पुण्यक्षेत्रे पात्रेऽपि यथा— तीर्थं तद्व्यक्तव्ययोः, तरत्यनेन तीर्थम् ॥ ८६ ॥ समर्थयते समर्थ्यते संगतार्थोऽस्त्यिति (वा) समर्थः दशम्यां कामावस्थायां वयोवस्थायां च तिष्ठति दशमीस्थः, क्षीणो रागेण क्षीणरागः, मरणावस्थां प्राप्ते नष्टबीजो वा । वेतेर्विथेश्च वीथी, पदवी मार्गः । अपिशब्दाद् गृहप्रान्तः पङ्क्तिश्च (वीथी) ॥ ८७ ॥ आतिष्ठन्त्यस्यामास्थानी । आलम्बनं चास्था । प्रतिष्ठन्तेऽस्मिन् प्रस्थो गिरेः समा भूः । मानमात्रकचतुर्भागोऽत्र (प्रस्थः) । शाब्दद्रविणयोर्मन्यः संस्थाधारे स्थितौ मृतौ । अथ दान्ताः । (अभिप्रायवशौ) यथा— छन्दानुवर्ती, स्वच्छन्दः, छदेः— रूपम् । अपो ददात्यब्दः, आप्नोति च ॥ ८८ ॥ आज्ञामपवाद, माहुः । दायं रिक्थमादत्ते दायादः, बान्धवः सपिण्डः । (पादः) कर्तरि पदरुजेति (सू०) घञ् कर्मकरणादौ च । तुर्यांशो रूपकादेश्चतुर्भागः, कुलाद्रेः प्रत्यन्तपर्वतोऽपि पादः ॥ ८९ ॥ अपिशब्दादाभाषा निश्चितवादश्च (निर्वादः) । शीयन्तेऽवसीदन्त्यनेन शादः पङ्कः । शाद्य(स्य)ते छिद्यते शादस्तृणम् । आक्रन्दनमाक्रन्दयते— आक्रन्दन्त्यस्मिंश्चाक्रन्दः । त्राता पार्ष्णिग्राहाक्रान्तस्य विजिगीषो रक्षिता, आहुश्च— पार्ष्णिग्राहस्तथाक्रन्दः (मनुः) ॥ ९० ॥ (अनुरोधे) यथा— प्रसादे वर्तस्व (शार्ङ्गधरप०) । अपिशब्दान्नैर्मल्ये प्रीतिदाने च (प्रसादः), काव्यगुणे तूपचारात् । सूद्यते पच्यते सूदयति च सूदः, व्यञ्जनं सूपोऽत्र । अपिशब्दात्सूपकारे (सूदः) । अपिशब्दाद्विष्णौ, गां विन्दति गोविन्दः, अनुपसर्गाल्लिम्पविन्देति (सू०) शः । अपिशब्दाद् गन्धेऽप्यामोदः । गर्वे क्षैव्ये गजदाने च मदः, मदोऽनुपसर्गे (सू०) इत्यप् ॥ ९१ ॥ प्रधानमेव प्राधान्यं, राजलिङ्गं छत्रादि, कङ्कते कं कौति वा ककुदम् । शैलशृङ्गे ककुच्छब्दोऽप्यस्ति, यथा— ककुद्मान् । संवेदनं संवेद्यतेऽस्यां संविदन्ति(ते) अनया च संविद् । ज्ञाने यथा— एकमेवेदं संविद्रूपम् । संभाषा संकेतो यथा— प्रवृत्तौ च निवृत्तौ च संविदं स्थापयेद्रणे । क्रियाकारो व्यवस्थापनं यथा— संविदं लङ्घयेच्च यः (याज्ञवल्क्य०) । आजिर्युद्धं, नाम संज्ञा । तोषणाचारप्रतिज्ञास्वप्याहुः (संविद्) ॥ ९२ ॥ उपनिषीदन्त्यस्यामुपनिषद् , वेदान्तोऽपि रहस्यत्वात् । तत्त्वेऽपि यथा— धर्मस्योपनिषत्परा ।

महद्राज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु ।
श्वेतं रूप्येपि रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥
त्रिष्वितो जगदिङ्गेपि रक्तं नील्यादिरागि च ।
अवदातः सिते पीते शुद्धे बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥
युक्तेतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतोथ संस्कृतम् ।
कृत्रिमे लक्षणोपेतेप्यनन्तोनवधावपि ॥ ८१ ॥
ख्याते हृष्टे प्रतीतोभिजातस्तु कुलजे बुधे ।
विविक्तौ पूतविजनौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ ८२ ॥
द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ शिती धवलमेचकौ ।
सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥
पुरस्कृतः पूजितेरात्यभियुक्तेग्रतः कृते ।
निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥
जातोर्ध्वक(चक्षु)प्रबुद्धाः स्युरुच्छ्रिता उत्थितास्त्वमी ।
वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आदृतौ सादरार्चितौ ॥ ८५ ॥

(वृत्तम्) ॥ ७८ ॥ महति मप्रते च महत् । चशब्दाद् वृहद् मुदितत्त्वं च (महत्) । विरुद्धं गीयते- ऽवगीतम् । जननीयो जन्यः, जनस्य जल्पो वा, मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु (सू०) इति यत् । मुहुर्दृष्टेपि (अवगीतम्) । श्वेतते श्वेतं, अपिशब्दाच्छुक्ले । रज्यते रजतम् । हेम्नि महारजताख्यम् ॥ ७९ ॥ इतस्तान्ता वाच्यलिङ्गाः । गच्छति जगत्, इङ्गे जङ्गमे । अपिशब्दाद् भुवने (जगत्) । रज्यते रक्तं, नील्यादिरागोस्यास्ति । चशब्दादसृक् (रक्तम्), कुङ्कुमं ताम्रमनुरक्तं च । (अवदातः) दैप् शोधने । (सितः) अर्जुनः शुक्लः, षिञ् बन्धने ॥ ८० ॥ (अभिनीतः) मर्षिण्यक्रोधे । संस्कृतं (सू०) अनित्ये साधु, संलक्षणेन प्रकृत्यादिविभागेन सिद्धे शब्दे, संपर्युपेभ्यः (सू०) इति सुट् । अपिशब्दात्सतो गुणाधाने पक्के च । अपिशब्दान्नागराजे (अनन्तः), विष्णौ व्योम्नि च । अनन्ता च भूः ॥ ८१ ॥ प्रतीयते प्रत्येति वा (प्रतीतः), ज्ञानेपि । सुकुमारे न्याय्ये चोपचारात् (अभिजातः) । विचिर्विरेचने, विजिर् पृथग्भावे, असंयुक्तो[पृक्तो]पि (विविक्तः) । मूर्च्छा मोहसमुच्छ्राययोः ॥ ८२ ॥ अम्लं चुक्रं, यदाहुः- यन्मूलादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्जिकं । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं चुक्रं शुक्तं तदुच्यते (वैद्यकम्) ॥ परुषे शुक्त उपचारात्, यथा- शुक्तां वाचं (न) वदेत् । चशब्दात्पूतिगन्धे, ईशुचिर् पूतीभावे (शुक्तः) । शिञ् निशाने, मेचकः कृष्णः (शितिः) । अस्तेः शतृप्रत्ययः, सत्त्वे च सत् ॥ ८३ ॥ (पुरस्कृतः) पुरोव्ययमिति (सू०) गतित्वात्सत्वम् । अरातिनाभियुक्तोभिषेणितः, अभिषिक्तोपि (पुरस्कृतः) । निवायते गम्यते निवातः, निवृत्तो वातोत्र । शस्त्राभेद्यं च वर्म, यथा- निवातकवचाः ॥ ८४ ॥ ऊर्ध्वक उच्चकः (उच्छ्रितः) । प्रोद्यतः सोद्यमः (उत्थितः) । कर्तृकर्मणोः क्तः (आदृतः) ॥ दुर्गे- व्याह- कर्मविपाकेपि गतिगर्मुद् हेम्न्युल्बणे तृणे । ऋतमुञ्छाशिले सत्ये शोभनेपि विवक्षितम् ॥ उदास्थितः प्रतीहारे चरभेदे समाहितः । ध्यानस्थे चाप्यनीकस्थो गजलक्षणवेदिनि ॥ श्रद्धारचनयोर्भक्तिर्गौण्यां वृत्तौ च सेवने । आप्तो लब्धप्रत्ययितौ नप्ता पुत्रश्च पुत्रयोः ॥ भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्यां (सू०) इत्येकशेषोत्र । समूहोत्पन्नयोर्जातमहिजिच्छ्रितीन्द्रयोः । सौप्तिकेपि प्रपातोथावपाताववटावटौ ॥ समित्सङ्गे रणेपि स्त्री व्यवस्थानामपि स्थितिः ॥ ८५ ॥ इतस्थान्ताः । अर्यतेर्थ्यते वार्थः । अभिधेयः शब्दार्थः । रा धने

पङ्क्तिश्छन्दोऽपि दशमं स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ।
पत्तिर्गतौ च मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः ॥ ७२ ॥
प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।
सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे श्रवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥
वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ।
गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥
बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि ।
वाशि(सि)ता स्त्रीकरिण्योश्च वार्ता वृत्ती जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥
वार्त्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते ।
कलधौतं रूप्यहेम्नोर्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥
श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्युगपर्याप्तयोः कृतम् ।
अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥
युक्ते क्ष्मादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ।
वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥

पञ्चतौ वर्गौ पङ्क्तिः, पङ्क्तिविंशतित्रिंशदिति (सू०) साधुः, पच्यते च । अपिशब्दादागामिनि काले दैर्घ्ये च, आयतन्तेऽस्यामायतिः, आयमनं च । पदनं पद्यते च पत्तिः । चशब्दात्सेनांशे पदातौ च (पत्तिः) । पक्षविशेषयोर्मूलं प्रतिपदादिः पक्षांशश्च पक्षतिः, पक्षात्तिः (सू०) ॥ ७२ ॥ योनिरुपादानकारणं यथा— मूलप्रकृतिरविकृतिः (सांख्यकारिका) । लिङ्गं स्त्रीपुंनपुंसकं यथा— तृतीयाप्रकृतिः षण्ढः (पृ० ९७), चशब्दात्स्वाम्यमात्यादिः (प्रकृतिः) । प्रत्ययात्पूर्वः स्वभावश्च (प्रकृतिः) । कैशिकीभारतीसात्त्वत्यारभट्यः (वृत्तयः) । चशब्दाद् ग्राम्या परुषोपनागरिका (वृत्तिः), कृ र्याादर्जीविकावृत्तिश्च, वर्तनं वृत्तिः, वर्तनेनया च । सिच्यन्ते सिकताः, नित्यं बहुत्वेयम् । अपिशब्दात्सिकतिले देशे, देशेलुबिलचौच (सू०) इत्यनो लुप् । श्रवः श्रोत्रम् । चशब्दात्किंवदन्त्यां षड्जाद्यारम्भिकायामाकर्णने च, श्रूयते शृणोत्यनया श्रवणं श्रुतिः ॥ ७३ ॥ वनु याचने । चशब्दात्स्त्रीमात्रे (वनिता) । गोप्यते गोपनं गुप्तिः, क्षितिव्युदासो भूगर्तः । अपिशब्दात्कारायां रक्षायां च (गुप्तिः), यच्छाश्वतः— गुप्तिः कारा च रक्षा च जीर्णे च विवरं भुवः । (धृतिः) भावे करणे च क्तिन्, सौख्येऽप्युपचारात् ॥ ७४ ॥ क्षुद्रवार्ताकी कण्टकारिका, छन्दोविशेषो नवाक्षरपादः (बृहती) । वाश्यते काम्यते वशे स्थाप्यते वाशते वा वाशिता । वासितेति गौडाः पेठुः, कृतवासेति च व्याख्यन् । वर्ततेऽनया वर्तते वा, वृत्तिर्जीविका यास्त्यस्या वार्ता । वृत्तिः कृषिपाशुपाल्यवाणिज्याख्याऽऽभेदोपचारात् । जनश्रुतिर्वृत्तान्तः (वार्ता) । वर्तनं [च] वार्ता ॥ ७५ ॥ फल्गु तुच्छं यथा— वार्त्तमेतत् । चशब्दात्सर्पिषि घृतं, पीयूषे हुतशेषेऽयाचिते मैक्ष्ये मोक्षे चामृतम् । कलः कालिका धौतास्येति । निमेद्यति निमित्तं, हेतुः कारणं, लक्ष्म चक्षुःस्पन्दनादि ॥ ७६ ॥ श्रूयते श्रवणं श्रुतं, अवधृतमाकर्णितम् । युगं कालभेदः (कृतम्) । पर्याप्तं यथा— कृतमतिविस्तरेण । क्रियाशब्दस्तु कृतस्त्रिलिङ्गः । अतीवाहितमाहितं वात्याहितं, जीवानपेक्षि कर्म साहसाख्यम् ॥ ७७ ॥ युक्ते यथा— यथाभूतवादी प्रामाणिकः स्यात् । क्ष्मादौ यथा— महाभूतानि । ऋतं सत्यं यथा— भूतमप्यनुपन्यस्तं हीयते व्यवहारतः । प्राणिनि यथा— भूतग्रामः । अतीते यथा— भूते लुङ् । समस्तुल्यो यथा— सुहृद्भूतोऽयम् । ग्रहेऽपि यथा— भूतमियं ब्राह्मणी । प्राप्ते यथा— इत्थंभूतं, भवति स्म प्राप्यते स्मेति, भू प्राप्तौ । (वृत्तं) पद्यं पादबन्धः श्लोकादिः । चरित्रं शीलं (वृत्तम्) । अतीते यथा— वृत्तोत्सवं पुरम् (मुद्राराक्ष०) । दृढे यथा— वृत्तदेहः स्नायुसारः । निस्तलं वर्तुलं, अधीतेऽपि

श्लेष्मादि रसासृ(स)रक्तादिर्महाभूतानि तद्गुणाः ।
इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥
कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ।
कासूसामर्थ्ययोः शक्तिर्मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥
विस्तारवल्ल्योर्व्रततिर्वसती रात्रिवेश्मनोः ।
क्षयार्चयोरपचितिः सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥
अर्त्तिः पीडाधनुष्कोट्योर्जातिः सामान्यजन्मनोः ।
प्रचारः स्यन्दयोरीतिरीतिर्डिम्बप्रवासयोः ॥ ६८ ॥
उदयेऽधिगमे प्राप्तिस्त्रेताग्नित्रितये युगे ।
वीणाभेदेऽपि महती भूतिर्भस्मनि संपदि ॥ ६९
नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्यथ संगरे ।
सङ्गे सभायां समितिः क्षयवासावपि क्षिती ॥ ७० ॥
रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।
जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥

स्तेऽपि (धानतम्) । कृतोन्तोऽनेन कृतान्तः, कृतः सिद्धान्तो निष्ठा यस्य, कृतस्यान्तश्च । शास्त्रेप्युपचारात्कृतान्तः ॥ ६४ ॥ श्लेष्मा वातः पित्तं च, धारणात्तु धातवः । अस्थिरक्तादीनि, र(र)सासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः (वाग्भट०) । महाभूतानि पृथिव्यादीनि, तद्गुणाः शब्दादयः, अश्मविकृतिर्हरितालादिः, शब्दयोनिर्म्वादिः (धातवः) । चशब्दाद् गैरिकं मनःशिलादिर्हेमादिश्च (धातुः) ॥ ६५ ॥ कक्षान्तरे राजधानीस्थानविशेषे वासगृहाह्वये (शुद्धान्तः) । अपिशब्दाद्राजदारेषु, अशौचप्रलये च, शुद्धो रक्षितोन्तोऽस्य शुद्धान्तः । कासूर्नामायुधं सर्वलाख्यं, शक्यतेऽनया जेतुं शक्तिः । शकन उत्साहादौ च (शक्तिः) । मूर्च्छनं मूर्च्छति च मूर्तिः ॥ ६६ ॥ व्रजन्ती ततिरस्यां व्रततिः, व्रतप्रातव्रतस्यादिलिप्यर्थे व्रतिर्धातुरुन्नेय इति श्रीभोजः । वसन्त्यस्यां वसतिः, स्थितौ च । चिञश्च यतेश्च,(चायतेः)क्तिनि नित्यं चिभावः (वा०) अपचितश्च (सू०) इत्यत्र वक्तव्यात् । विकृतौ व्यत्यये च (निष्कृतौ व्यये च) (अपचितिः) । सनोतेः क्तिनि जनसनेति (सू०) आत्वम्, स्यतेः- ऊतियूतिजूतीति (सू०) साधुः ॥ ६७ ॥ अर्दनमर्त्तिः, अर्द्यतेऽनया च, अर्द गतौ याचने च । जायतेऽनया, भिन्नेष्वभिन्नाभिधानप्रत्ययो जातिः, जननं च । छन्दोलंकारविशेषयोः (जातिः), मालतीगोत्रयोश्च । प्रचारः शैली (रीतिः), री गतौ रीङ् स्रवणे । आरकूटे मर्यादायां वैदर्भ्यादौ (रीतिः) । ईङ् गतौ, डिम्ब उपद्रवः, यदाहुः- अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषिकाः शलभाः शुकाः । अत्यासन्नाश्च राजानः षडेता ईतयः स्मृताः ॥ ६८ ॥ उदयो लाभः, अधिगम आसादनं (प्राप्तिः) । त्रेता, पृषोदरादिः (सू०) । शततन्त्री वीणा महती । अपिशब्दाद् बृहत्यां (महती) । भवति भूयतेऽनया च भूतिः, भवनं च ॥ ६९ ॥ भोग उपभोगः सर्पकायश्चास्त्यस्याः (भोगवती) । समयनं सयन्ति संगच्छन्त्यस्यां वा समितिः । वासो निवासः (क्षितिः) । अपिशब्दाद् भूः, क्षि क्षये, क्षि निवासगत्योः ॥ ७० ॥ शस्त्रमायुधं, हिनोति हेतिः, ऊतियूतीति (सू०) साधुः । गच्छति जगती, छन्दो द्वादशाक्षरपादम् ॥ ७१ ॥ उक्तात्युक्ता मध्या प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठा गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्तिस्त्रिष्टुबिति दशमं दशाक्षरपादं वा । अपिशब्दाच्चूर्णिर्दशसंख्या च (पङ्क्तिः),

संकीर्णौ निचिताशुद्धावीर(रि)णं शून्यमूषरम् ।
देवसूर्यौ विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥
पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
अग्न्युत्पातौ धूमकेतू जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥
हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ पवनामरौ ।
यन्ता हस्तिपके सूते भर्ता धातरि पातरि ॥ ५९ ॥
यानपात्रे शिशौ पोतः प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ।
ग्रहभेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥
स्थपतिः कारुभेदेऽपि भूभृद् भूमिधरे नृपे ।
मूर्धाभिषिक्तो भूपेऽपि ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥
विष्णावप्यजिताव्यक्तौ सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।
व्यक्तः प्राज्ञेऽपि दृष्टान्तावुभे शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥
क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ।
वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥
आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्विशेषयोः ।
कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

ईर गतौ । शून्यं निराश्रयो देशः, ऊषः क्षारमृत्तिकास्यास्ति– इत्यूषरः, ऊषसुषीति (सू०) रः (इरंमम्) । सेतौ च वरणो वेणी नदीवाहे कचोच्चये । अथ तान्ताः । विवस्ते छादयति विवस्तेजोस्यास्तीति विवस्वान् । सरस्वान्नाम नदः ॥ ५७ ॥ गरुतः पक्षाः सन्त्यस्य गरुत्मान् । भासः पक्षिविशेष । कीटोऽपि, शक्नोति शकुन्तः । धूमः केतुर्लिङ्गमस्य धूमकेतुर्वह्निः । धूमप्रधानश्च केतुरुत्पातग्रहः । जीवनस्याम्भसो मूतः पुटबन्धः (जीमूतः) ॥ ५८ ॥ जहाति हस्तः पाणिः । हसति व्योम्नि हस्तो नक्षत्रम् । प्रशंसायैव (यथा)– केशहस्तः । म्रियतेऽनेन मरुत् । यमयतीत्यन्तर्भावितण्यर्थो यमिः, सूतः सारथिः । यन्त्रस्य [यन्त्रस्य] भर्ता, स्त्रिया भर्ता ॥ ५९ ॥ पवते पुनाति च पोतः । प्रैति स्म प्रेतः, प्राण्यन्तरं नारकम् । ग्रहभेदो नवमः (केतुः), कित ज्ञाने । षु प्रसवैश्वर्ययोः (सुतः) ॥ ६० ॥ स्थापयति, स्थपानां पतिश्च वा, तिष्ठन्त्यस्मिन्नायत्ताः स्थः, घञर्थे कः (वा०) । कारुविशेषो मुख्यतक्षा (स्थपतिः) । अपिशब्दात् स (यज्वा) गीष्पतीष्ट्या स्थपतिः (पृ० ११४), कञ्चुकी च । (भूभृत्) धारणात्पोषणाच्च । (मूर्धाभिषिक्तः) अपिशब्दाद्विप्रात्क्षत्रियायां जाते, मुख्येऽपि । ऋच्छत्यायाति ऋतुः स्त्रीणामार्तवं रजः । अपिशब्दाद्वसन्तादौ (ऋतुः) ॥ ६१ ॥ अपिशब्दादजितोऽपरिभूतो बुद्धश्च । अव्यक्तोऽस्फुटः । मूर्खश्च (अव्यक्तः) । प्रकृतिमहत्त्वव्यक्तम् । षू प्रेरणे, त्वष्टा रथकारः, तथा ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतः । प्रजाते पारदे च (सूतः) । व्यनक्ति व्यज्यते च (व्यक्तः) । अपिशब्दात् पुरोबुद्ध्या[दि]निश्चितः, यथा– व्यक्तं मूर्खोऽयम् । दृष्टोऽन्तो निश्चयोऽस्य दृष्टान्तः, निदर्शनमुदाहरणं यथा– अग्निरत्र धूमान्महानसवत् ॥ ६२ ॥ क्षदति क्षत्ता, द्वास्थः प्रतीहारः । क्षत्रियायां शूद्राज्जातः क्षत्ता, क्षत्त्रिया मागधं वैश्याच्छूद्रात्क्षत्तारमेव च (पृ० १५८) । स्मृतौ क्षत्तशब्दोऽप्यस्ति । वृत्तोऽन्तोऽस्य वृत्तान्तः, वृत्तस्यान्तश्च । तथा प्रकारो विशेषः । वार्ता जनश्रुतिराख्यायिका च ॥ ६३ ॥ आनृत्यन्त्यत्रानर्तः । नीवृद्विशेषो जनपदः,

ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवौ ।
हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥
त्रिषु पाण्डौ च हरिणः स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ।
तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे जुगुप्साकरुणे घृणे ॥ ५१ ॥
वणिक्पथेऽपि विपणिः सुरा प्रत्यक्च वारुणी ।
करेणुरिभ्यां स्त्री नेभे द्रविणं तु बलं धनम् ॥ ५२ ॥
शरणं गृहरक्षित्रोः श्रीपर्णं कमलेऽपि च ।
विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु ॥ ५३ ॥
प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ।
करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥
प्राण्युत्पादे संसरणमसंबाधचमूगतौ ।
घण्टापथेऽथ वान्तान्ने समुद्धरणमुन्नये ॥ ५५ ॥
स्वतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ।
प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥

वृन्दं च ॥ ४९ ॥ ऊर्णोत्यूर्णा । आवर्तश्चक्रवर्तिचिह्नं यथा– ऊर्णेयमन्तर्भ्रुवोः, अन्तरा भ्रुवाविति– अन्तरान्तरेणयुक्ते (सू०) द्वितीया । हरति हरिणी मृगी हेम्नो वा प्रतिमा । हरिं पीतं वर्णं नयतीति, हरिता नीला, वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तोनः (सू०) इति वा ङीप् । यूथिका पाण्डुरा च (हरिणी) ॥ ५० ॥ चशब्दान्मृगे (हरिणः) । तिष्ठति स्थूणा । अपिशब्दाल्लोहप्रतिमाव्याधिविशेषयोश्च (स्थूणा) । तर्षणं तृष्णा, स्पृहा निस्त्वलक्षणत्वात् । एवं तृट्तर्षावपि स्पृहापिपासार्थे । जिघर्ति क्षरति मनोऽनया घृणा, घृणु दीप्तौ वा ॥ ५१ ॥ वणिक्पथो हट्टः (विपणिः) । अपिशब्दात्पण्यवीथ्यां, विपण्यतेऽस्यां विपणिः । सुरा वरुणादब्धेर्जाता । प्रत्यक् प्रतीची दिक्, वरुणस्येयमिति । के मूर्ध्नि रेणुरस्य करेणुः । इभ्यां हस्तिन्यां स्त्री, इभे तु ना पुमान् । द्रवत्यनेन द्रवति वा द्रविणम् ॥ ५२ ॥ शीर्यते शृणाति च परं शरणं, श्रयन्ति तदिति नैरुक्ताः । श्रीः पर्णेष्वस्य श्रियं पिपर्ति च श्रीपर्णम् । अपिशब्दादग्निमन्थे (श्रीपर्णम्) । अभिमरो मरकं युद्धं च (तीक्ष्णं), लोहं शस्त्रम् । ये द्रव्यहेतोर्व्याडं हस्तिनं वा योधयेयुस्ते तीक्ष्णा इति कौटिल्यः । तेज्यते तीक्ष्णं, अतिक्षणोतीति नैरुक्ताः ॥ ५३ ॥ यथ योगं करणादौ ल्युट्, हेतुर्ज्ञप्तिनिमित्त यथाग्न्यादेर्धूमादि (प्रमाणं) । मर्यादावधिः, यथा– कौटिल्यः- राजानं मां च प्रमाणं कृत्वा यथस्याः कुशलं पश्यतीति । इयत्ता परिच्छेदः, यथा– कियत्प्रमाणमुदकम् । प्रमाता यथा– अत्रार्थे प्रभुः प्रमाणम् । (करणं) गात्रे यथा– उपमानमभूद्विलासिनां करणं यत्तव कान्तिमत्तया (कु० सं०) । (करणं) अपिशब्दात्कारणिकानां कायस्याध्यक्षादीनां समूहे कृतौ क्रियाभेदे कामशास्त्रनाट्यशास्त्रोक्ते च ॥ ५४ ॥ प्राण्युत्पाद आजीवंजीविभावः संसाराख्यः । असंबाधेन [असंकटेन] सेनागमने (संसरणम्) । घण्टापथः पुरः समीपे विश्रामभूरुपनिष्कराख्या (संसरणम्) । (समुद्धरणं) कर्मणि भावे च ल्युट्, उन्नय ऊर्ध्वनयनं कूपादिभ्यो जलादेः ॥ ५५ ॥ स्वतो न तु वाच्यलिङ्गतया । वेवेष्टि विषाणम् । प्रवणति प्रवणः [अनुकूले], वण शब्दार्थः । त्रिष्वित्येव संकीर्णे यावत् । क्रमेण निम्नायां भुवि यथा– श्राद्धे दक्षिणप्रवणा भूः । प्रह्वे यथा– भक्तिप्रवणः । अनुकूले तूपचारात् । चतुष्पथे, प्रवन्तेऽनेन प्रवणः ॥ ५६ ॥ निचितं संकीर्णं व्याप्तम् । अशुद्धे संकीर्णं यतो मिश्रीभवतीति । ईरति– ईरणं,

क्ष्वेडा वंशशलाकापि नाडी कालेपि षट्क्षणे ।
काण्डोऽस्त्री दण्डबाणार्ववर्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥
स्याद् भाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने ।
भृशप्रतिज्ञयोर्बाढं प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥
शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ।
भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे बाणो बलिसुते शरे ॥ ४५ ॥
कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे गणः ।
पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च ॥ ४६ ॥
मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसंध्यादिके गुणः ।
निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयोः क्षणः ॥ ४७ ॥
वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु चाक्षरे ।
अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि स त्रिषु ॥ ४८ ॥
स्थाणुः शर्वेऽप्यथ द्रोणः काकेऽप्यथ रवे रणः ।
ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥

च । दण्डो नालं यथा– उद्द(त्का)ण्डैः पुण्डरीकैः । अर्वा कुत्सितः, यथा– काण्डपृष्ठः (महावीर०) । वर्गे यथा– बालकाण्डं, श्राद्धक[का]ण्डिका । काण्डस्यावसरस्याभावोऽकाण्डम् । लतावृक्षस्कन्धयोश्च (काण्डः) । प्रकाण्डं तु वृक्षादिस्कन्धः, प्रशंसार्थे च यथा– पुरुषप्रकाण्डम् ॥ ४३ ॥ अश्वस्याभरणं मायानं पर्याणादि. यथा– भाण्डग्रासो हयः । अमत्रे यथा– प्रकीर्णभाण्डामनवेक्ष्यकारिणीम् । मूलं कृत्स्नं वणिजो धनं वा, यथा– भाण्डपतिः । संघातग्रासयोः पिण्डी द्वयोः पुंसि कलेवरे । गण्डो कपोलविस्फोटौ मुण्डक त्रिषु मुण्डिते ॥ इक्षुभेदेपि खण्डोऽस्त्री शिखण्डो बर्हचूडयोः । अथ ढान्ताः । बाढेः क्ते(बाढं) क्षुब्धस्वान्तध्वान्तेति (सू०) साधुः । (बाढं) प्रतिज्ञानेऽङ्गीकारेऽव्ययम् । (प्रगाढं) दृढेऽपि, यथाहुः– प्रगाढं कृच्छ्रमिच्छन्ति प्रगाढं बलवद् दृढम् ॥ ४४ ॥ दृंहि वृद्धौ क्त दृढः, दृढःस्थूलबलयोः (सू०) इति साधुः । अत्यर्थे च यथा– दृढं शान्तोऽस्मि । त्रिष्वित्येव । विन्यस्तं रचितं यथा– व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण (भगवद्गीता) । संहतो घनो यथा– व्यूढोरस्कः (रघु०) । अथ णान्ताः । भ्रियते भ्रूणः । बलिसुतो बाणासुरः । दासीकुरण्टकेऽपि बाणशब्दार्थः ॥४५॥ अतिसूक्ष्मे मुक्तादिगुलिके (कणः) । धान्यस्यांशः कणिका यथा– कणादो मुनिः । गण्यते गणः, संख्यायां सैन्यांशेऽपि । क्षित्यंपणःपरिमाणे (सू०) इति साधुः । द्यूतादावुत्सृष्टं जय्यत्वे स्थापितं (पणः) । आदिशब्दात्समाह्वयपणादौ । भृतिर्वेतनम् । अपिशब्दात्क(त्का)र्षिकस्ताम्रिकः पणः, यच्छाश्वतः– ग्लहे माने श्वेतकानां मूल्ये कार्षापणे धने । द्यूतादौ कल्पिते चैव बद्धमुष्टौ भृतौ पणः ॥ ४६ ॥ द्रव्याश्रिते पटादेः शुक्लादिर्गुणः, आत्मनो बुद्धिसुखादिः, रूपादिचतुर्विंशतेर्गुणत्वात् । सत्त्वेऽनिविशतेऽप्रतीतिच (गुणः) (का०) । सत्त्वादीनि सत्त्वरजस्तमांसि, शौर्योदार्यादयो गुणाः । संधिविग्रहयानासनद्वैधीभावसंश्रयाः षड् गुणाः । तेजोबलवीर्यैश्वर्यवैराग्यशक्तयश्च षट् पराश्रितत्वात् , तेन गुणोऽप्रधानमित्यपि च वाच्यम् । शौर्योदयस्तूत्कर्षाद् गुणाः । रज्ज्वप्रधानसूदेन्द्रियभोगेष्वपि (गुणः) । निर्व्यापारासने यथा– क्षणो नास्ति रहो नास्ति (पंचतं०) । कालविशेषो नाडिकाषष्ठांशः (क्षणः) । उत्सवे यथा– क्षणे रक्ष्याः कुलस्त्रियः । वृत्ते तूत्सवत्वाद्यथा– क्षणपरपुरजिद्दत्तशूलप्रहारान् , क्षणोति क्षणः ॥ ४७ ॥ वृणोति व्रियते वा, वर्ण्यते वर्णनं वा वर्णः । षड्जादिगतौ तालविशेषे गुणयशोविलेपनवस्त्रवर्येष्वपि (वर्णः) ॥ ४८ ॥ (ग्रामणीः) ग्रामः खेटको

अयोघने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ।
सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संशयेऽपि सा ॥ ३७ ॥
अत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्नकचे जटा ।
व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिर्ज्ञानेऽक्ष्णि दर्शने ॥ ३८ ॥
इष्टिर्यागेच्छयोः सृष्टं(ष्टिः) निश्चितं बहुनि त्रिषु ।
कष्टं तु कृच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु तु ।
पटुर्द्वौ वाच्यलिङ्गौ च नीलकण्ठः शिवेऽपि च ॥ ३९ ॥
पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुशूलोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४० ॥
निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।
त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ॥ ४१ ॥
दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद् गुडो गोलेक्षुपाकयोः ।
सर्पमांसात्पशू व्याडौ गोभूवाचस्त्विडा इलाः ॥ ४२ ॥

(पंचतं०) । कैतवं व्याजः (कूटं) । राशिर्धान्यादिपुञ्जः (कूटः) ॥ ३६ ॥ अयोमयो घनः, आघातार्थमयःसारं माण्डं कूटं नाराचो वा, कूटशाल्मलिरित्येके । सीराङ्गं फालाधारः कूटाख्यः, यद्दुर्गः– कूटः घटहलाङ्गयोः । त्रुटति त्रुटिः, कालेऽल्पे क्षणद्वयाह्वये । संशये यथा– त्रुटिं प्राप्तो रोगी ॥ ३७ ॥ अतिश्चापकोटिरटनिर्यथा– धनुःकोट्या नुदति । उत्कर्षे यथा– परां कोटिमारूढः । आश्रिर्धारा कोणो वा यथा– शतकोटिर्वज्रः । संख्यापि कोटिः, यद् भागुरिः– अत्यर्बुदाश्रयः कोट्यः, स्त्रीत्वार्थे ङीप् । वृक्षादिमूलं जटा । लग्नाः श्लिष्टाश्च कचा जटाः, जट संघाते । व्युष्ठनं व्युष्टिः, उच्छी विवासे, फलं प्रयोजनम् । चशब्दात्स्तुतौ (व्युष्टिः) । (दृष्टिः) भावे करणे च क्तिन् ॥ ३८ ॥ यजेरिषेश्च क्तिन् (इष्टिः) । मुक्तनिर्मितयोश्च (सृष्टम्) । कषिष्यतीति कष्टं, यथा– कष्टं प्राप्तः क्लेशमित्यर्थः । कष्टानि सामानि गहनानीत्यर्थः, कृच्छ्रगहनयोःकषः (सू०) इत्यनिट् । (पटुः) दक्षोऽनलसः, अमन्दो धृष्टः, अगदो नीरुक् । चशब्दाल्लवणो रसः पटुः ॥ ३९ ॥ द्वौ कृष्टपटू । पोटा दासी द्विलिङ्गा च घृष्टी घर्षणसूकरौ । घटा गोष्ठयां हस्तिपङ्क्तौ कृपीटमुदरे जले । इतष्ठान्ताः । अपिशब्दान्मयूरः (नीलकण्ठः) । कुष्यते कोष्ठो जठराभ्यन्तरं, यथा– मृदुकोष्ठः । कुशूलो धान्याधारः (कोष्ठः) । कोष्ठागारं गृहस्याभ्यन्तरमपवरकाख्यम् ॥ ४० ॥ निर्व्यूढं निर्वृत्तं नियतं च स्थानं निष्ठा । क्लेशनपोयास्त्यानिर्वहं(वेह)अपरमगतयोऽपि (निष्ठाः) । काशनं काशते वा काष्ठा, स्थितिर्मर्यादा । कालविशेषेऽपि अष्टादश निमेषास्तु काष्ठेति । काष्ठं दारु च । इष्टनि प्रशस्यस्यश्रः (सू०), ज्यच (सू०) । अपिशब्दादग्रजे वृद्धेऽपि (ज्येष्ठः) । युवाल्पयोःकनन्यतरस्याम् (सू०), अतियुवात्यल्पश्च ॥ ४१ ॥ अथ डान्ताः । दम्यतेनेन दण्डः, अपिशब्दाच्चतुरङ्गं बलं चतुर्थोपायो दमो मन्यश्च । गोलो वृत्तो मृदादिगुडकः, यथा - भक्षिता वाप्ययोगुडाः (चरक०) । लत्वेन गुलिका स्नुही गुलिका निशा । सन्नाहश्च गुडः । मांसमत्तीति मांसात् सिंहादिः । व्यडति हन्तुं व्याडः, व्यड उद्यमे, विविधमाल(ड)मस्माद्वा व्याडः । इल क्षेपणे, बुधभार्यापि– इडा यस्या अपत्यमैडः पुरूरवाः ॥ ४२ ॥ क्ष्वेडिः शब्दार्थ उन्नयः, अपिशब्दात्सिंहनादो दन्तोद्धवाद्यम् (क्ष्वेडा) । क्ष्वेडस्तु विषं ध्वनिश्च । षड्भिः क्षणैश्च षट्क्षण इति नाडीव नालिकात्र, अपिशब्दात्सुषिरं वृक्षादि धमनिश्च । नाडो नालश्च जलनिर्गमः । डलयोरैक्यात्प्रणालो नालः काण्डः पद्मादिकन्दं

मास्यमात्ये धात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।
अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥
केकिताक्ष्यविहिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।
अजा विष्णुहरच्छागा गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥
धर्मराजौ जिनयमौ कुञ्जो दन्तेपि न स्त्रियाम् ।
वलजे क्षेत्रपूर्द्वारे वलजा वल्गुदर्शना ॥ ३१ ॥
समे क्ष्मांशे रणेप्याजिः प्रजा स्यात्संततौ जने ।
अब्जौ शङ्खशशाङ्कौ च स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥ ३२ ॥
पुंस्यात्मनि प्रधाने(वीणे) च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः ।
संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना ॥ ३३ ॥
काकेभगण्डौ करटौ गजगण्डकटौ कटौ ।
शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥
देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा दिष्टं दैवेपि न द्वयोः ।
रसे कटुः कटुकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥
रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे ।
मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥

शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मिकावृतू । उपधा धर्मार्थकामभयमुखेन सचिवपरीक्षा, तामतिक्रान्तोत्युपधः, यत्कौटिल्यः– उपधाभिः शौचाशौचपरिज्ञानममात्यानाम् । (रुचिः) अभिष्वङ्गो रागः, गभस्तिर्दीप्तिः ॥ २९ ॥ अथ जान्ताः । मयूरगरुडौ (*अहिभुजौ) । विप्रः क्षत्रियवैश्ययोपलक्षणम्, यत्स्मृतिः– विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाद्यास्त्रयो द्विजाः । अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः । न जायते अजति वा– अजः । गावस्तिष्ठन्त्यस्मिन् गोष्ठम् । व्रजन्त्यस्मिन् व्रजोऽध्वा, गोचरसंचरेति (सू०) साधुः । निवहः समूहः, यथा– द्विजव्रजः ॥ ३० ॥ (धर्मराजौ) समवर्तित्वात् । दन्ते हस्तिदन्ते, यथा– कुञ्जरः । अपिशब्दात्पादिपिहितोदरे (कुब्जः) । वलन्तेनेन वले जायते वा वलजं क्षेत्रं पुरद्वारं च । वल्गुदर्शने भद्राकृतौ त्रिलिङ्गम् ॥ ३१ ॥ आनिम्नोन्नतो भूभागो रणश्चाजिः, अज्यतेत्राजिः । अपिशब्दात्क्षणेपि, यद्दुर्गः– युद्धभागक्षणप्याजिः । संततौ यथा– शोच्यं मिथुनमप्रजम् (चाणक्यश०) । जनो लोको यथा– प्रजापतिः । चकारात्पद्मम् (अब्जम्) । नियतं जायते निजम् । अग्रजो विप्रपूर्वजौ– इति दुर्गः ॥ ३२ ॥ अथ ञान्ताः । क्षेत्रं शरीरं पात्रं जानाति क्षेत्रज्ञः, आत्मा मुख्यश्च । संज्ञानं संज्ञा संज्ञायतेनया च । आद्यशब्दादक्षिनिकोचनाद्यैः, अर्थः प्रयोजनम् । दोषज्ञो वैद्यविद्वांसौ ज्ञो विद्वान् सोमजोपि च ॥ ३३ ॥ टान्ताः । केति रटति करोति (किर)ति मदं च करटः । कटति वर्षति मदं कटः । श्मशानं कालिञ्जोपि, कटत्वावृणोतीति, यथा– वर्जयेत्कटधूमं तु, कटे आस्ते । शिपिश्चर्म विष्टं दोषव्याप्तमस्येति, दुश्चर्मा षण्ढः, आहुश्च– शिपिविष्टः शिवः शौरिर्दुश्चर्मा खलतिस्तथा ॥ ३४ ॥ देवशिल्पी विश्वकर्मा । अपिशब्दात्सूर्ये तक्ष्णि च त्वष्टा, त्वक्षति त्वक्ष्यते वा । समर्णस्तेजःशातनात्त्वष्टा । दिशति शुभाशुभं फलं दिष्टं, दैवं पुराकृतं कर्म । अपिशब्दात्काले (दिष्टः) । कटत्यावृणोति कटुः, दुर्गन्धे चाप्रिये चोपचारात् ॥ ३५ ॥ रिष हिंसायां, नास्ति रिष्टमशुभं क्षेमं वा– अरिष्टं, आहुश्च– तक्रे मरणचिह्ने चारिष्टं वृक्षे च फेनिले । सुरायां च शुभेपि स्यात्काके निम्बे च पुंस्ययम् ॥ माया– इन्द्रजालं, निश्चले यथा– कूटस्थोक्षर उच्यते (भगवद्गीता), निश्चलं व्योमेति गौडः । यन्त्रं मृगादिग्रहणार्थं छलं यथा– छित्त्वा पाशमपास्य कूटरचनाम्

भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः ।
चातके हरिणे पुंसि सारंगः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥
कपौ च प्लवगः शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ।
यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥
स्वर्गेषुपशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ।
लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौर्लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥
शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः ।
भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥
परिघः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रये ।
मूल्ये पूजाविधावर्घोऽंहोदुःखव्यसनेष्वघम् ॥ २७ ॥
त्रिष्विष्टेऽपि(ल्पे) लघुः काचाः शिक्यमृद्भेददृग्रुजः ।
विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः पावके शुचिः ॥ २८ ॥

(भोगः) । आदिशब्दात्कर्मकृद्वेतनं, यच्छाश्वतः– पालनेऽभ्यवहारे च निर्वेशे च पणे स्त्रियाः । भोगः सुखे भुजंगानां शरीरफणयोरपि ॥ चातकस्तोककाख्यः पक्षी, सरति सारं गच्छति सहारङ्गेण वा वर्तते सारङ्गः । गौडः श(श)बलः सारङ्ग इति व्याहरन् ॥ २३ ॥ चशब्दाद्भेके पक्षिभेदे च (प्लवगः) । शापो मिथ्याभिशंसनमनिष्टावधारणं च, आहुश्च– अभिषङ्गाख्याः शापाक्रोशपराभवाः । (अभिषङ्गः) कर्मणि भावे च घञ् । यानं रथशकटादि । आदिशब्दाद्धलम् । तदङ्गं दान्तादियोजनकाष्ठं, पुंसि यथा– अनोयुगः शकटयुगः । आदिशब्दात्त्रेतादि । हस्तचतुष्कं च यथा– विचरेद्युगमात्रदृक् ॥ २४ ॥ इषुर्बाणः । वागादौ स्त्रीलिङ्गो गौः स्वर्गादौ पुंलिङ्गः पशौ तूभयं, यथा– इयं गौर्धेनुः, अयं गौर्दान्तः । इत्थं जलाक्ष्णोः क्लीबे– इत्येके । लीनं गमयति लिङ्गति चित्रीकरोति वा लिङ्गम् । चिह्नं धूमादिः शेफः साधनम् ॥ २५ ॥ शीर्यते शृणाति च शृङ्गम् । प्रधानमेव प्राधान्यं, यथा– शृङ्गग्राहिकया । सानुरत्र गिरिशिखरं, कात्यस्तु– शृङ्गं शिखरं सान्वपीत्याह । चशब्दाद्विषाणं क्रीडाम्बुपात्रं च (शृङ्गम्) । गुह्यं योनिः । भज्यते सेव्यते मर्य[ह्य]ते च भगं, खलोभगःपदं वेति (वा०) वचनाद् घः । कामात्र योनिः । सूर्यविशेषो भगः पुंसि मित्रवत् । धर्मो मोक्षश्च भगः, यदाहुः– ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः । वैराग्यस्याथ मोक्षस्य षण्णां भग इति स्मृतः ॥ २६ ॥ अथ घान्ताः । परिहननं परिहन्यतेऽनेन वा परिघः, परौ घः (सू०) इत्यप्प्रत्यये हन्तेर्घत्वं, करणेऽयोविद्रुषु (सू०) इत्यतः करणानुवृत्त्या भावादौ नेच्छन्ति । अस्त्यतेऽस्त्रमायुधविशेषः । अपिशब्दादर्गलेऽपि (परिघः) । उह्यते वहति वा– ओघः, न्यङ्क्वादौ (सू०) साधुः । मूल्यं पणः, यथा– अनर्घा गुणाः, अर्धिधात्वन्तरं, पूजार्थे स्वर्हे न्यङ्क्वादित्वात् (सू०) कुत्वम् ॥ २७ ॥ (लघुः) इष्टे यथा– दर्शनेन लघुना यथा तयोः प्रीतिमापुरुभयोस्तपस्विनः (रघु०) । अपिशब्दात्क्षिप्राल्पागुरुनिःसारेषु (लघुः) । निदाघस्त्वातपे स्वेदे ग्रीष्मे चैव (प्रकीर्तितः) । अथ चान्ताः । कमयति कचति वा काचः । शिक्यं रज्जुयन्त्रम् । मृद्भेदो धातुविशेषः, यथा– काचः काचो मणिर्मणिः (वृद्धचाणक्यः) । दृग्रोगः काचाख्यः । विपर्यासो माया । विपर्यासे च विस्तारे– इति पाठो युक्तः, प्रथनेवावशब्दे (सू०) इत्यपो निषेधात् । शुचिः शोधकोऽग्निविशेषः , यच्छ्रुतिः– अग्नये शुचये च द्वितीयायाम् ॥ २८ ॥ मासोऽत्राषाढः, यच्छ्रुतिः–

स्याद्दाम्भिकः कौक्कुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः ।
ललाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ १७ ॥
मयूखस्त्विट्करज्वालास्वलिबाणौ शिलीमुखौ ।
शङ्खो निधौ ललाटास्थ्नि कम्बौ न स्त्रीन्द्रियेपि खम् ॥ १८ ॥
घृणिज्वाले अपि शिखे शैलवृक्षौ नगावगौ ।
आशुगौ वायुविशिखौ शरार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥
पतंगौ पक्षिसूर्यौ च पूगः क्रमुकवृन्दयोः ।
पशवोपि मृगा वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥ २० ॥
परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि ।
गजेपि नागमातङ्गावपाङ्गस्तिलकेपि च ॥ २१ ॥
सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ।
योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥

माया कुक्कुटीपादपातश्च, तौ पश्यति कौक्कुटिकः, संज्ञायांल्ललाटकुक्कुट्यौ पश्यति (सू०) इति ठक् । ललाटं कोपप्रसादचिह्नं पश्यति, ललाटमेव वा दूरात्कार्येष्वलितः सन् पश्यति लालाटिकः । भालं ललाटं, भालदर्शीत्येके पेठुः ॥ १७ ॥ भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु कटकोऽस्त्रियाम् । सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टकः ॥ पाको पक्विशिशू मध्यरत्ने नेतरि नायकः । पर्यङ्कः स्यात्परिकरेऽप्याश्रयामपि लुब्धकः ॥ पेटकस्त्रिषु वृन्देपि गुरौ देश्ये च दैशिकः । खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेपि च जालिकः ॥ पुष्परेणौ च किञ्जल्कः शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेपि च । स्यात्कल्लोलेप्युत्कलिका वार्धकं भाववृन्दयोः ॥ करिण्यां चापि गणिका दारकौ बालभेदकौ । धन्वेऽप्यनेडमूकः स्याट्टङ्कौ दर्पाश्मदारणौ ॥ मृद्भाण्डेप्युष्ट्रिका मन्थे खजको रसदर्वके ॥ इतः खान्ताः । मिनोत्यन्धकारं मयूखः । त्विड् दीप्तिः । करो रश्मिः । शिली शल्यं मुखेस्य (शिलीमुखः) । शं खनति खाम्यति वा शंखः । शंखपद्मौ वैश्रवणनिधी । ललाटप्रान्तास्थि शंखः, कम्बौ तु, अर्धर्चादिः (सू०) । खन्यते खम् । अपिशब्दात्स्वर्व्योम्नोः (खं), शून्ये तूपचारात् ॥ १८ ॥ अपिशब्दाच्चूडायामाग्रमात्रे मयूरचूडा च, शिनोति शीयते वा शिखा । उपलेपेऽपि गोमुखम् । अथ गान्ताः । न गच्छति नगः, नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम् (सू०) इति नञ् प्रकृत्या । (आशुगः) विशिखो बाणः । खे गच्छन्ति खगाः ॥ १९ ॥ पतन्गच्छति पतति वा पतंगः । चशब्दाच्छलभः (पतंगः), शालिविशेषश्च । पूयते पूगः । क्रमुकः पूगवृक्षः । अपिशब्दाद्धरिणो हस्तिविशेषो मृगशीर्षं मार्गणा च (मृगः) । वेति वेगः, विजतेनैव वा, घञ् । प्रवाहे यथा– नदी वेगेन शुध्यति (चाणक्यः) । जवे यथा– वायुवेगः । अपिशब्दान्मूत्रादिप्रवृत्तौ यथा– वेगाश्च धा[वा]रयेद्वातविण्मूत्रक्षवतृट्क्षुधाः । मलोत्सर्गे प्रभावे शृङ्गारभावे च यथा– चण्डवेगो मन्दवेगः ॥ २० ॥ परागच्छति परागः । स्नानस्नेन स्नानीयं चूर्णम् । रजो धूलिः (परागः) । अपिशब्दात्कादम्बेये सीसे नागकेसरे नागदन्त्यां गजाह्वये वस्ते रङ्गे च, न– अगो नागः । चण्डालेपि मातङ्गः । मा तङ्गति, मतङ्गापत्यं वा । अपगतोऽङ्गादपाङ्गः, अपिशब्दान्नेत्रान्ते ॥ २१ ॥ स्वभावे यथा– निसर्गः । निर्मोक्षे त्यागे (यथा)– विसर्गः, मोक्षाभावे वा, सर्गः संसारः । निश्चये यथा– गृहाण शस्त्रं यदि सर्ग एष ते (रघु०) । अधीयतेऽध्यायोऽत्र महाकाव्यादौ विश्रान्तिस्थानं, सर्गबन्धो महाकाव्यम् (काव्यादर्शे) । सृष्टौ यथा– सर्गश्च प्रतिसर्गश्चेति (विष्णुपु०) । उत्साहेपि सर्गः । (योगः) संनहनं कवचादि, उपायः सामादिः, संनहनाङ्गं कवचादिरित्येके । ध्यानं चित्तवृत्तिनिरोधः, संगतिः श्लेषः (योगः) । युक्तिर्योजनम् । अपूर्वार्थप्राप्तिर्भेषजं विश्रम्भघाती चरश्च योगः ॥ २२ ॥ भुजेरभ्यवहारार्थात्कौटिल्यार्थाच्च घञ् । कण्यशीनां भृतिर्भागः

महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ।
रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः स्वल्पेपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥
जैवातृकः शशाङ्केपि खुरेप्यश्वस्य वर्तकः ।
व्याघ्रेपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥
सा(शा)लावृकाः कपिक्रोष्टुश्वानः स्वर्णेपि गैरिकम् ।
पीडार्थेपि व्यलीकं स्यादलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥
शीलान्वयावनूके द्वे शल्के शकलवल्कले ।
साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥
दीनारेपि च निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ।
दम्भेप्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥
धेनुका तु करेण्वां च मेघजाले च कालिका ।
कारिकायातनाकृत्योः कर्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥
करिहस्ताङ्गुलौ पद्मबीजकोश्यां त्रिषूत्तरे ।
वृन्दारकौ रूपिमुख्यावेके मुख्यान्यकेवलाः ॥ १६ ॥

तृकः) तकि कृच्छ्रजीवने । स्वल्पः खलः । अपिशब्दाद्दरिद्रे कनिष्ठेपि, क्षोदः क्षुत्- क्षुद्रं क्षुभ्रं च लाति क्षुल्लकः ॥ १० ॥ जीवेरातृकन्वृद्धिश्च (उ०) । अपिशब्दादायुष्मति (जैवातृकः) । अपिशब्दात्पक्षिविशेषे (वर्तकः) । (पुण्डरीकः) पुणेः पुण्डेश्च रूपम् । अपिशब्दाद्दिग्गजे, सिताम्बुजसितच्छत्रयोस्तु नपुंसकं (पुण्डरीकम्) । यवान्यजमोदा । अपिशब्दाद्दीपेलंकारे जीरकेपि (दीपकः) ॥ ११ ॥ स्यन्ति शाला आवृण्वन्ति (सालावृकाः) । धातुविशेषेपिशब्दात् (गैरिकं), गिरौ भवं गैरिकं, गिरिणा विग्रहो गिरिकारप्रत्ययोऽध्यात्मादिकन्यायेन । अपिशब्दादप्रियाकार्यवैलक्ष्यविपर्ययेषु (व्यलीकं) । कामजेपराधेपि, विशेषेणालीकं, व्यलीकमपि च व्यङ्गमिति च माला । अल्यते वार्यतेलीकं न लीयते वा, अलीकमहितं विदुरिति कात्यः । (अलीकं) ललाटेप्याहुः ॥ १२ ॥ अनूच्यति समवैत्यनूकं, उच समवाये, न्यङ्क्वादिः (सू०) । द्वे इत्येव, शलति पृथग्भवति शल्कं खण्डः । वल्कलं वार्क्षी त्वक् । सहाष्टाभिर्वर्तते साष्टं, बहुव्रीहौ संख्येयेडजबहुगणात् (सू०) । सुवर्णं षोडश माषकाः । पलं सुवर्णाश्चत्वारः । दीनैर्यते दीनारं रूपकम् । निःशेषेण काम्यते निष्कः, आकर्षोपि ॥ १३ ॥ कल्यते कल्कं द्रवाधर्मूर्णं पिनीयाख्यं, शमलं विष्ठेत्येके । एनः पापं, यथा- तपो न कल्कोध्ययनं न कल्कः । अपिनह्यते पिनाकं त्रिशूलं शांकरमेवास ॥ १४ ॥ चकारान्नवप्रसूतायां गवादौ (धेनुका), हस्तिन्यां तु नाम्नैतत् । कुपाणीधेनुसमासव्यानीषु च (धेनुका) । चात्सुवर्णादेर्दोषे सुरायां च, कालो वर्णः समयश्चास्त्यस्याः कालिका, तस्या वृद्धि[रि]त्र । कृञ् हिंसायां, कारिका नारकी व्यथा । करणं कृतिश्च कारिका, पर्यायार्हणोत्पत्तिषु च (सू०) इति ण्वुच् । कारिका यातनावृत्त्योरित्येके, वृत्तिः श्लोकैर्विवरणं, कारिके वृत्तियातने इति दुर्गः । कर्णस्यालंकारः कर्णिका, कर्णललाटात्कनलंकारे (सू०), इवांस्तियवार्थे (इवेप्रतिकृतौ, संज्ञायां च) ॥ १५ ॥ सान्तेभ्यः प्राग्वाच्यलिङ्गाः । वृन्दमस्त्यस्येति (वृन्दारकः), शृङ्गवृन्दाभ्यामारकन् (वा०) । रूपमस्त्यस्य रूपी । देवोप्युपचारात् (वृन्दारकः) । संख्यायां च, यत्कात्यः- प्रधानान्यासहायेषु संख्यायां चैक इष्यते ॥ १६ ॥ दम्भः प्रयोजनमस्त्यस्य दाम्भिकः । यतः कुकुयी

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ।
भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥
आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने ।
पद्ये यशसि च श्लोकः शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥
जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ पृथुकौ चिपिटार्भकौ ।
आलोकौ दर्शन(नोद्)द्योतौ भेरी पटहमाण(न)कौ ॥ ३ ॥
उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः कलङ्कोऽङ्कापवादयोः ।
तक्षकौ नागवर्धक्योरर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥
मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनोः ।
स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥
उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।
कमण्डलौ च करकः सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥
किष्कुर्हस्ते वितस्तौ च शूककीटे च वृश्चिकः ।
प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥
स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कट्फले भूस्तृणेऽपि च ।
ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातक्यथ कट्फले ॥ ८ ॥
सिते च खदिरे सोमवल्कः स्यादथ सिह्लके ।
तिलकल्के च पिण्याको बाह्लिकं रामठेऽपि च ॥ ९ ॥

इह तावत्कान्तवान्तादिवर्गेष्वेव नानार्थाः कीर्तिताः । तन्मध्याच्च ये केपि येष्वर्थेषु भूरिप्रयोगाः प्रचुरव्यवहारास्ते तत्पर्यायेष्वपि कथिता इति पौनरुक्त्यादिदोषो नोद्भावनीयः । कान्ता इतो वक्ष्यन्ते । एवं सान्तगान्तादौ द्रष्टव्यम् ॥ १ ॥ व्योम्नि स्वर्गे च नाको वर्तते, नास्त्यकमस्मिन्निति । लोक्यते लोकः, यथा– ब्रह्मलोकः, गतानुगतिको लोकः । पद्ये पदबद्धे वृत्ते, श्लोक्यते श्लोकः, श्लोकृ संघाते । स्यति– अन्तं करोति सायकः ॥ २ ॥ (जम्बुकः) जमु अदने । पर्थते वर्धते पृथुकः । चिपिट आर्द्रधान्यभ्योषः । (आलोकः) भावे करणे च घञ्, अवलोकनप्रकाशार्थौ । अन्तस्तन्त्रीका ढक्का भेरी । पटहो दुन्दुभिः, समन्तादानत्याणकः ॥ ३ ॥ अमन्त्यस्मिन्बालादय इत्यङ्कः, अङ्क्यतेनेन च, अकि, लक्षणे, यथा मृगाङ्कः । कल्यते क्षिप्यते कलङ्कः । अङ्कोत्र चिह्नम् । नागो नागविशेषः । वर्धकिस्तक्षा । अर्च्यतेऽर्कः, वृक्षेपि ॥ ४ ॥ आत्मन्यपि कः । कं सुखेपि च, कायति काम्यते कचते(वे) वा । पुलं विस्तारमकति पुलाकः, यथा– पुलाका इव धान्येषु । संक्षेपे क्षिप्ते, यथा– पुलाककारी विपुलाशयः स्यात् । सिक्थे, यथा– स्थालीपुलाकन्यायेन ॥ ५ ॥ (पेचकः) पिचि गतौ पाचिवो । (करकः) चशब्दाद्वर्षोपले दाडिमे च, कृ विक्षेपे । (विनायकः) चशब्दाद् गणपतौ धर्मराजे च विनेतृत्वात् ॥ ६ ॥ कीयते ज्ञायतेनेन किष्कुः, चतुर्विंशत्यङ्गुलं द्वादशाङ्गुलं च मानम् । वृश्चतीति (वृश्चिकः) शूकवान्कीटः कण्टकी च कृमिः । चशब्दाशो मदन्तिकायां च (वृश्चिकः) । प्रतीपमेति प्रतीकः । एकदेशोंऽशः, यथा सप्रतीकः श्लोकः । द्वीपेपि (प्रतीकः) ॥ ७ ॥ एते वनौषधिवर्गे व्याख्याताः । तथा भूनिम्बः किराततिक्तकः । कट्फलः श्रीपर्णी । भूस्तृणं छत्रा । यवान्यां च (भूतिकं) । ज्योत्स्निका पटोलिका । घोषोपामार्गः ॥ ८ ॥ पीड्यते पिण्याकः । बाह्लीकमित्येके । अपिशब्दाद्बाह्लीकदेशोत्पन्नेऽश्वादौ हिङ्गौ कुङ्कुमे च ॥ ९ ॥ कुशिकस्यापत्यं, कोशो वा प्रयोजनमस्य कौशिकः । (आत-

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ॥ ३७ ॥
आरत्यवरतिविरतय उपरामस्त्रियां तु निष्ठेवः ।
निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ॥ ३८ ॥
जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूर्तिः ।
उदजस्तु पशुप्रेरणमकरणिरित्यादयः शापे ॥ ३९ ॥
गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ।
आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ॥ ४० ॥
माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता ।
हल्या हलानां ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ॥ ४१ ॥
द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठ्यमनुक्रमात् ।
खलानां खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम् ॥ ४२ ॥
ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक् पृथक् ।
अपि साहस्रकारीषवा(चा)र्मणाथर्वणादिकम् ॥ ४३ ॥

इति संकीर्णवर्गः । २ ।

-राशीकरणं वा ॥ ३६ ॥ (निगार इ०) निगरणमुद्गरणं च, उन्योर्गः (सू०) इति घञ् । विक्षावः शब्दे [से], वौक्षुश्रुवः (सू०) इति घञ् । (उद्ग्राहः) उद्ग्रहणं, उदिग्रहः (सू०) इति घञ् ॥ ३७॥ (उपरामः) निवृत्त्यर्थे, नोदात्तोपदेशस्यमान्तस्यानाचमः (सू०) इति वृद्धिनिषेधो नास्ति- अनुदात्तोपदेशत्वात्, यमउपरमे (ग०) इति निपातनात्तूपरमः । (निष्ठीवन) ष्ठिवुक्लमुचमां शिति ष्ठिवुक्लम्वाचमां शिति इत्यादि दीर्घः (चान्द्रसू०) ॥ ३८ ॥ (जूतिः) ऊतियूतिजूतिसातिहेतीति (सू०) साधुः, जवनमित्येके । (सातिः) षोऽन्तकर्मणि । (जूर्तिः) ज्वरत्वरस्रिव्यवीति (सू०) ऊत्वम् । (उदजः) समुदोरजः पशुषु (सू०) इत्यप्, अघञ्गोः (सू०) इति वी नास्ति । न करणं (अकरणिः), यथा- अकरणिरिह भूयादप्रशस्तस्य धातुः, तस्याजननिरेवास्तु (शिशु०), आक्रोशेनञ्यनिः (सू०) । तथा- आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः (सू०), निग्राहस्ते वृषल भूयात्, अवग्राहः ॥ ३९ ॥ औपगवानां समूहः (औपगवकम्) । आदिशब्दाद् गार्गकं, दाक्षकं, गोत्रोक्षोष्ट्रेति (सू०) वुञ् । तस्य वृन्दमित्येव- आ वर्गसमाप्तेः । अपूपानां समूह आपूपिकम्, अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् (सू०) । आदिशब्दात् शाष्कुलिकादिः [कावचिकादिः] ॥ ४० ॥ (माणव्यं) ब्राह्मणमाणववाडवाद्यत् (सू०) । (सहायता) ग्रामजनबन्धुसहायेभ्यस्तल् (सू०) । (हल्या) पाशादिभ्यो यः (सू०) ॥ ४१ ॥ पर्शूनां समूहः पार्श्वम्, पर्श्वा णस्वक्तव्यः (वा०) । (पृष्ठ्यं) पृष्ठादुपसंख्यानात् (वा०) यत्, यञ्विधिरयमदः स्मरन्ति । (खलिनी, इ०) खलगोरथात् (सू०), इनित्रकट्यचश्च (सू०) इति- इनिर्यश्च । मनुष्याणां समूहः (मानुष्यकं), गोत्रोक्षोष्ट्रेति (सू०) वुञ्, प्रकृत्याकेराजन्यमनुष्ययुवानः (वा०) इति यलोपाभावः ॥ ४२ ॥ ग्रामादिसमूह एते वर्तन्ते, ग्रामजनेति (सू०) तल्, पाशादिभ्यश्चेति (सू०) यः, भिक्षादिभ्योऽण् (सू०) । पृथक्पृथगिति परस्परं पर्यायत्वाभावः । वर्मिणां समूहो वार्मणम् । आदिशब्दाच्चार्मणाङ्गारादि । वाच्यं चात्र- परभागो गुणोत्कर्षः प्रतिपत्तिः प्रगल्भता । ग्रन्थनं मन्थनं गुम्फः संदर्भो रचना न ना ॥ प्रणिपातस्त्वनुनयः प्रणयः सान्त्वना न ना । दवथुः परितापः स्यादनुतापो विसूरितम् ॥ क्रीडा विनोदः खेदस्तु निर्वेदश्चावसन्नता । आप्लवः प्लवनं गर्धो धनायाकूतमाशयः ॥ अङ्कपाली परिष्वङ्ग आसारं त्वासरद्वलम् । विगानं वचनीयत्वमत्याधानमतिक्रमः ॥ हानं त्यागस्तुला कक्षा क्रिया चेष्टा विकल्पनम् । वितर्कस्तर्क आलस्यं कौसीद्यमजिगीषुता ॥ ४३ ॥ इति संकीर्णवर्गः । २ ।

विप्रलम्भो विप्रयोगो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।
विश्रावस्तु प्रविख्यातिरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥
निपाठनिपठौ पाठे तेमस्तेमौ समुन्दने ।
आदीनवास्रवौ क्लेशे मेलके सङ्गसंगमौ ॥ २९ ॥
संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।
परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥
निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम् ।
प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥
उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।
अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थके ॥ ३२ ॥
स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।
पर्ययोतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥
प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।
स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥
निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्घनः ।
स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥
आविधो विध्यते येन तत्र विष्वक्समे निघः ।
उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

इति घञ्, प्रसिध्यर्थे । (अवेक्षा) अवधानार्थे ॥ २८ ॥ (निपाठ इ०) नौगदनदेति (सू०) वा घञ् । (तेम इ०) तिम ष्टिम ष्टीम आर्द्रीभावे । (समुन्दनं) उन्दी क्लेदने । (आदीनवः) दीङ् क्षये । आस्रवन्तीन्द्रियाण्यनेनास्रवः, यज्जैनाः— जीवाजीवास्रवसंवरनिर्जरबन्धमुक्तयः सप्त पदार्थाः । मेलनं मेलः, मिलिर्लौकिकः । सजनं सङ्गः, घञ् । संगतिः संगमः, ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च (सू०) इत्यप् ॥ २९ ॥ अन्वीक्षणमन्वेषणमित्यन्ये पेठुः । (मार्गणं) मार्ग अन्वेषणे, ल्युट् । (मृगणा) मृग अन्वेषणे, युच्, अदन्तत्वाद् गुणाभावः । मृगः, एरच् (सू०), एरजण्यन्तानाम् (वा०) इत्यस्य भाष्यस्थत्वात् । गवेषणं च । (परिरम्भः) रभेरशब्लिटोः (सू०) इत्यचि नुम्, आलिङ्गनार्थे ॥ ३० ॥ (प्रत्याख्यानं, इ०) निराकरणार्थे ॥ ३१ ॥ (उपशायः) व्युपयोःशेतेःपर्याये (सू०) इति घञ् । पर्यायः क्रमः, (यथा)– तवावराजोपशायः । ऋतिः सौत्रो घृणार्थः, ऋतेरीयङ् (सू०) । हृणीङ् कण्ड्वादिः, यक्, अप्रत्ययात् (सू०) ॥३२॥ व्यतिक्रम्यासनं व्यत्यासः । विपरीतासनं विपर्यासः, अस्यतेर्घञ् । विपरीतायनमितीणोऽचि विपर्ययः, परावनुपात्ययइणः (सू०) इत्यपि विपर्ययः । परित्यज्यायनं पर्ययः, परावनुपात्ययइणः (सू०) इति- उपात्यये क्रमोल्लङ्घने घञ् नास्ति । अतिक्रम्य पतनं यथा– कालातिपातः । उपपन्नस्यात्ययोतिक्रमणमुपात्ययः ॥ ३३ ॥ आकारणं कृत्वा यद् भृत्यानां कार्येषु विसर्जनं तत्प्रतिशासनम् । समं स्तूयतेस्मिन्छन्दोगैः संस्तावः, यज्ञेसमिस्तुवः (सू०) इति घञ् ॥३४॥ उद्धन्यतेस्मिन्नुद्घनः, उद्घनोत्याधानम् (सू०) इति साधुः । (स्तम्बघ्नः) स्तम्बेकच (सू०) इति कः, स्तम्बस्तृणं विहृत्य । (स्तम्बघनः) अप् च ॥ ३५ ॥ (आविधः) व्यधेः, घञर्थेकविधानम् (वा०) । समन्तात्समः, समस्तुल्यारोहपरिणाहः । नियतं हन्यते निघः, निघोनिमितम् (सू०) इति साधुः । (उत्कारः) कृधान्ये (सू०) इति घञ्, उभयोरित्यनुवृत्तेः (उभयोर्मः) । ऊर्ध्वं क्षेपो

निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्पः परिक्रिया ।
विधुरं तु प्रविश्लेषेभिप्रायश्छन्द आशयः ॥ २० ॥
संक्षेपणं समसनं पर्यवस्था विरोधनम् ।
परिसर्या परीसारः स्यादास्या त्वासना स्थितिः ॥ २१ ॥
विस्तारो विग्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः ।
संवाहनं मर्दनं स्याद्विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥
संस्तवः स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्पणम् ।
नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥ २३ ॥
लवोभिलावो लवने निष्पावः पवने पवः ।
प्रस्तावः स्यादवसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
प्रजनः स्यादुपसरः प्रसरः प्रणयः (प्रश्रयप्रणयौ) समौ ।
धीशक्तिर्निष्क्रमोस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥
प्रत्युत्क्रमः प्रयोगा(युद्धा)र्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
स्यादभ्यादानमुद्घात आरम्भः संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥
प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भोवनायस्तु निपा(पा)तनम् ।
उपलम्भस्त्वनुभवः समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥

छन्दयति– आच्छादयते छन्दः, अच् । आशेरतेस्मिन् भावा इत्याशयः ॥ २० ॥ संगृहीतो [वि]क्षेपो विप्रकीर्णता संक्षेपणम् । एवं समसनम् । पर्यवस्थानं (पर्यवस्था) । पर्यन्ते समन्ताद्वा सरणं परिसर्या, परिचर्यापरिसर्यामृगयाटाट्यानामुपसंख्यानात् (वा०) क्यप् । (आस्या) वासरूपत्वात् (वाऽसरूपोस्त्रियाम्)ण्यत् । (आसना) ण्यासश्रन्थोति (सू०) युच् ॥ २१ ॥ (विस्तारः) प्रथनेवावशब्दे (सू०) इति घञ् । विस्तीर्णं ग्रहणं विग्रहः । विविधमसनं व्यासः । (विस्तरः) घञः शब्दे निषेधात् (अप्) । संवाहनं स्पर्शसुखमिति तु लक्ष्यम् ॥ २२ ॥ संगतं स्तवनं संस्तवः, धातोरनेकार्थत्वेनोपसर्गेणपोर्षो द्योत्यते । समन्ताच्चयनं परिचयः । प्रकर्षेण निकटे सरणं प्रसरः, बाहुलकादप् । नियतवचनं नीवाकः, तुलाकृतं न्यूनाधिक्यं क्रयादरो वा । संनिपूर्वो धाञ् नैकट्यार्थे ॥ २३ ॥ (अभिलावः) निरभ्योःपूल्वोः (सू०) इति घञ् । (निष्पावः) धान्यादेर्निर्बुसीकरणम् । प्रसङ्गेन स्तवनं प्रस्तावः, प्रद्रुस्तुस्रुवः (सू०) इति घञ् । त्रस्यति चलति त्रसरः, सूत्रं वेष्ट्यते यत्र वानार्थम् ॥ २४ ॥ प्रजायतेस्मिन् प्रजनः पशूनां गर्भग्रहणकालः, जनिवध्योश्च (सू०) इति वृध्यभावः । (उपसरः) प्रजने सर्तेः (सू०) इत्यप् । (प्रसरः) प्रीत्या प्रार्थनम् । धीशक्तिः प्रज्ञासामर्थ्यमष्टधा । संक्रमन्त्यनेन संक्रमः, संक्रम इत्येके, सेत्वादिः, यत्कौटिल्यः– मुखसमः संक्रमः । दुर्गं संचरन्त्यनेन, गोचरसंचरेति (सू०) साधुः, घञि तु संचारः ॥२५॥ प्रयुक्तिः कर्मारम्भे प्रयोगः, प्रकृष्टो युद्धार्थो (योगः)(प्रत्युत्क्रमः), [प्रकृष्टार्थे प्रत्युदो प्रार्थौ], प्रत्युत्क्रान्तिर्वा । (प्रक्रम इ०) प्रोपौ– आरम्भार्थे । आभिमुख्येनादानमभ्यादानम् । उद्धननमुद्घातः, उपोद्घातोपि, यदाहुः– चिन्तां प्रकृतसिद्ध्यर्थामुपोद्घातं प्रचक्षते । (त्वरा) त्वरेर्घटादित्वात् षित्त्वादङ् (षिद्भिदादिभ्योऽङ्) ॥ २६ ॥ प्रतिष्टम्भनं रोधः, प्रतेः स्तम्भेः (सू०) इति षत्वम् । अवनयनमवनायः खलीकारः, अवोदोर्नियः (सू०) इति घञ् । निपातनं, यत निकारोपस्कारयोः । उपलब्धिरुपलम्भः, उपसर्गात्खल्घञोः (सू०) इति नुम् । समाङ्पूर्वो लभिर्वधार्थे ॥ २७ ॥ विरहो विसंवादो वा । (विलम्भः) दानार्थे । (विश्रावः) वौक्षुश्रुवः (सू०)

विमर्दनं परिमलोऽभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।
निग्रहस्तु विरोधः स्यादभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥
मुष्टिबन्धस्तु संग्राहो डिम्बे डमरविप्लवौ ।
बन्धनं प्रसितिः स्वारः(तिश्चारः) स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तरि ॥ १४ ॥
विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ।
परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥
अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः ।
प्रत्याहार उपादानं विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥
अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
अनुहारोऽनुकारः स्यादर्थस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥
प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्प्रवहो गमनं बहिः ।
वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥
हिंसाकर्माभिचारः स्याज्जागर्या जागरा द्वयोः ।
विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥

पत्त्यादिर्दानादिभिः स्वीकारे वर्तते । (अनुग्रहः) ग्रहेः– ग्रहवृदृ– (सू०) इत्यप् । नियमनाय ग्रहणं निग्रहः, निरोध इति पाठ्यम्, विग्रहो विरोध इति वा । आभिमुख्येनोद्यमः (अभियोगः) ॥१३॥ समिमुष्टौ (सू०) इति घञ्, मग्राहो मल्लस्य । डयनं त्रिद्रवो डिम्बः, डीङ् गतौ, अस्त्रकलहः, लुण्ठनादिरित्येके । डयनं डमरः । (प्रसितिः) षिञ् बन्धने । स्वृ शब्दोपतापयोः, स्वरति स्वारः । (स्पर्शः) पदरुज– (सू०) इत्यत्र स्पृश उपतापएव (वा०) इति कर्तरि घञ् । (स्प्रष्टा) वाऽप्रष्ट-पातृच् (वासरूपोऽस्त्रियाम्) ॥ १४ ॥ निकृष्टं करणं निकारः खलीकारः । (इङ्गः, इङ्गितं) भावे घञ्क्तौ । इङ्गिताकाराभ्यां भावज्ञानमित्यादौ गोबलीवर्दन्यायेन– इङ्गितं चेष्टितम् । आकृतिग्रहणमाकारो मुखरागादिरिति कौटिल्यो व्याहरत्, अयं त्वनयोराशयज्ञापकत्वादैक्यं मन्यते । विकारेऽर्थे त्रयो वर्तन्ते, द्वयोस्तु साम्यं स्त्रीत्वात् ॥ १५ ॥ (अपहारः) हानिर्ह्रासित्यर्थः । उपसर्गवैचित्र्यादर्थभेदः । (समाहारः) अनेकस्यैकत्राध्यावापः । (प्रत्याहारः) एकत्र ढौकनं– अन्नादिकविषयेभ्य इन्द्रियाणा-माकर्षणं च । (विहारः) क्रीडासंचारः ॥ १६ ॥ (अभिहारः) आभिमुख्येन हरणम् । (निर्हारः) युक्त्या निःसारणाकर्षणम् । अनु सादृश्ये । (व्ययः) व्यय वित्तसमुत्सर्गे ॥ १७ ॥ प्रारम्भो वहनस्य प्रवाहः कार्यारम्भः, अविच्छिन्ना जलादेः प्रवृत्तिर्वा । (प्रवहः) गोचरसंचरेति (सू०) साधुः, बाहु-लकादज्वा । द्वौ द्वौ भिन्नार्थौ, विविधं यमनं वियामः, उपरतिमात्रं यमः, संयमनं संयमः, यमःसमुपनि-विषुचेति (सू०) वा घञ् ॥ १८ ॥ अभिभवितुं चरणं मारणोच्चाटनादिकृत्यासाधनम् । (जागर्या) इच्छा (सू०) इत्यत्र जागर्तेरकारोवावक्तव्यः (वा०) पक्षे क्यप्, जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु (सू०) इति गुणः, घञि तु जागरः । विहन्त्यस्मिन् विघ्नः, घञर्थेकविधानम् (वा०), विहन्यते कार्यमनेन वा । अन्तरायनं कार्यव्यवधानमन्तरायः । प्रतीपमूहनं प्रत्यूहः । उप समीपे हन्यते गम्यतेऽस्मिन्नुपघ्नः, उपघ्न आश्रये (सू०) इति साधुः ॥ १९ ॥ निःपूर्वो विशिरुपभोगार्थे । सर्वत्रात्र प्रत्यये तन्त्रम्, अतो निर्वे-शनमुपभुक्तिः, उपसर्पणं, परिकर इत्याद्युन्नेयम् । समन्तात्सर्पणं परिसर्पः । विघटि[टि]ता धूः कार्य-भारोऽत्र विधुरमिति प्रतीच्याः, विरुद्धं धान(!)मित्युदीच्याः । (अभिप्रायः) प्रीङ् कान्तौ ।

वर्धनं छेदनेऽथ द्वे आनन्दनसभाजने ।
आप्रच्छन्नमथाम्नायः संप्रदायः क्षये क्षिया ॥ ७ ॥
ग्रहे ग्राहो वशः कान्तौ रक्ष्णस्त्राणे रणः क्वणे ।
व्यधो वेधे पचा पाके हवो हूतौ वरो वृतौ ॥ ८ ॥
ओषः प्लोषे नयो नाये ज्यानिर्जीर्णौ भ्रमो भ्रमौ ।
स्फातिर्वृद्धौ प्रथा ख्यातौ स्पृष्टिः पृक्तौ स्नवः स्रवे ॥ ९ ॥
एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ प्रमा ।
प्रसूतिः प्रसवे श्च्योते प्राघारः क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥
उत्कर्षोऽतिशये संधिः श्लेषे विषय आश्र(श)ये ।
क्षिपायां क्षेपणं गीर्णिर्गिरौ गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥
उन्नाय उन्नये श्रायः श्रयणे जप(य)ने जपः(यः) ।
निगादो निगदे मादो मद उद्वेग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥

सभाज प्रीतिदर्शने । (आप्रच्छन्नं) आङ्पूर्वः प्रच्छिरालिङ्गनादिनानन्दनार्थः, यथा– आपृच्छस्व प्रियसखममुम् (मेघ०) । वृद्धपारंपर्येणाम्नानमाम्नायः । (क्षयः) क्षि क्षये, एरच् (सू०) । (क्षिया) क्षिष् हिंसायां, अङ् ॥ ७ ॥ (ग्रहः) ग्रहवृदिति (सू०) अप् । (ग्राहः) बाहुलकाद् घञ् (भावे) । (वशः) वशिरण्योरुपसंख्यानादप् (वा०) । (रक्ष्णः) यजयाचेति (सू०) भावे नङ् । रक्ष इत्यपपाठः, गुरोश्चहलः (सू०) इत्यकारः स्यात् । रणनं रणः, अप् । (क्वणः) क्वणो वीणायां च (सू०) । व्यधनं व्यधः, व्यधजपोरनुपसर्गे (सू०) इत्यप् । वेधनं वेधः, विध विधाने । पचनं पचा, षित्वादङ् (षिद्भिदादिभ्योऽङ्) । पक्तिर्बाहुलकात् । (हवः) ह्वः संप्रसारणं च (सू०) इत्यप् । वरणं वरः, व्रियते वा, यत्कात्यायनैः तपोभिरिष्यते यस्तु देवेभ्यः स वरो मतः, वृञ् वरणे, वृङ् संभक्तौ च ॥ ८ ॥ (ओषः) उष दाहे । (नायः) श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे (सू०) इति घञ् । (ज्यानिः) ग्लाम्लाज्याहाभ्यो निः (वा०) । जरणं जीर्णिः, ऋल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावत् (वा०) । (भ्रमः) घञ् । भ्रमणं भ्रामिः, इक्कृष्यादिभ्यः (वा०) । (स्फातिः) स्फायी वृद्धौ । प्रथनं प्रथा, घटादयः षितः (ग०) इत्यङ् । पृक्तिः, पृची संपर्के । (स्नवः) ष्णु प्रस्रवणे ॥ ९ ॥ विधा समृद्धावित्येके पेठुः । एधनमेधा, षिद्भिदादिभ्योऽङ् (सू०) । स्फुरणं स्फुरणा, स्फुर चलने कुटादिः । (प्रमितिः) माङ् माने, क्तिन्, द्यतिस्यतीति (सू०) इत्वम् । (प्रमा) आतश्चोपसर्गे (सू०) इत्यङ् । (प्रसूतिः, इ०) षूङ् प्राणिगर्भविमोचने, षू प्रसवे वा । (श्च्योतः) श्च्युतिर् क्षरणे । (प्राघारः) घृ क्षरणदीप्त्योः । (क्लमथः) औणादिकोऽथच्, क्लमथुरित्यपपाठः ॥ १० ॥ ऊर्ध्वं कर्षणं (उत्कर्षः) । (संधिः) उपसर्गे घोः किः (सू०) । विषीयतेऽत्र विषयः, विषिणोति वा, आश्रयस्थानम् । (क्षिपा) षिद्भिदादित्वादङ् (षिद्भिदादीति) । गिरणं गीर्णिः, इक्कृष्यादिभ्यः (सू०) । कुटादित्वाद् गुरणमाहुः, चुरादेर्गोरणमपि । अडउद्यमे (ग०) इति निपातनादुद्यमः ॥ ११ ॥ ऊर्ध्वं नयनमनुसरणं वोन्नायः, अवोदोर्नियः (सू०) इति घञ् । (उन्नयः) बाहुलकाद्– एरच् (सू०) (श्रायः) श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे (सू०) इति घञ् । (जपः) व्यधजपोरनुपसर्गे (सू०) इत्यप् । (निगाद इ०) गद व्यक्तायां वाचि, नौ गदनदेति (सू०) वा घञ् । (मदः) मदोऽनुपसर्गे (सू०) इत्यप् । (मादः) सधमादस्थयोश्छन्दसि (सू०) इति निपातनाद् घञ् । (उद्वेगः) ओविजी भयचलनयोः, घञ् ॥ १२ ॥ (परिमलः) संज्ञापूर्वकत्वाद् वृद्ध्यभावः । अभ्यु·

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत् ।
कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥
साकल्यासङ्गवचने पारायणतुरायणे ।
यदृच्छा स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्था(स्या) विलक्षणम् ॥ २ ॥
शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ।
अवदानं कर्म वृत्तं कामदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥
वशक्रिया संवननं मूलकर्म तु कार्मणम् ।
विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥
पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधा(वा)रणमित्यपि ।
सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥
आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदना न ना ।
संमूर्च्छनमभिव्याप्तिर्याच्ञा भिक्षार्थनार्दना ॥ ६ ॥

प्रकृत्याद्यैः प्रकीर्णकेऽत्र लिङ्गमुत्प्रेक्षेत । प्रकृत्या (यथा)– अपरस्पराः सार्था यान्ति, अपरस्पराणि कुलानि वहन्ति [अक्षराणि वदन्ति] । प्रत्ययेन (यथा)– क्तिन्, शान्तिः, नपुंसके भावे क्तः (सू०) ल्युट् च– आसितं, तर्पणम् । अर्थेन तु (यथा)– कर्मैव कार्मणम् । आद्यशब्दादुपभेदसाहचर्यादिना (यथा)– यदृच्छा स्वैरिता, शमथस्तु शमः । (कर्म, क्रिया) भावकर्मणोर्मनिन् (सर्वधातुभ्यो मनिन्), कृञः श च (सू०) । क्रियासंततत्वे गम्यमाने, अपरे च परे च– अपरस्पराः सार्था यान्ति, अपरे च परे च यत्र तदपरस्परं कृत्वा वा, अपरस्पराः क्रियासातत्ये (सू०) इति साधुः ॥ १ ॥ पारमयन्ते येन सकलं व्याप्नुवन्ति पारायणम् । त्वरणं तुरणं वा तूः, तया हेतुभूतया– अयन्ते येनासक्तं गच्छन्ति तत्तुरायणम् । या या– इच्छा यदृच्छा, यदृच्छाशक्तिजानुकरणेति (माधव०) वाक्यलिङ्गात्साधुः । स्वैर– ईर्ते तच्छीलः स्वैरी, भावे तल् (तस्य भावस्त्वतलौ), स्वैरस्य भावो वा । आसनमास्था, ण्यासश्रन्थेति (सू०) युचि प्राप्ते, वाऽसरूपेण (वाऽसरूपोऽस्त्रियां) स्त्रियां ल्यप्‌ (सू०), अस्त्रियामिति निषेधो द्वयोरेवोत्सर्गापवादयोर्न त्वेकस्य । विगतं लक्षणमालोचनं यत्रेति विलक्षणमप्रतिपत्तिरित्यर्थः ॥ २ ॥ (शमथः, इ०) शोणादिकोऽथच्, घञि तु नोदात्तोपदेशस्येति (सू०) वृद्ध्यभावः । कामक्रोधाद्यभावः शान्तिस्तपःक्लेशसहिष्णुता दान्तिः । अवदीयतेनेन– अवदानं सोत्कर्षचरितं, वृत्तं परिशुद्धं, निर्व्यूढमित्येके । (कामदानं) कामनापूर्वं दानं स्वेच्छात्याग इत्यर्थः । काम्यदानमिति तु युक्तः पाठः ॥ ३ ॥ (वशक्रिया) वशीकरणम् । वनुवनोऽस्यते (ग०) इत्यनेकार्थत्वात्संवननं, वनु याचने वा । मूलैरौषधिभिर्वशीकरणं तत्, कर्मैव कार्मणं, तद्युक्तात्कर्मणोऽण् (सू०) । (विधूननं) धूञ् णिच्, धूञ्प्रीञोर्नुक् (वा०), ल्युट् । विधुवनमिति धू विधूनने, कुट्यादित्वाद्ङित् (गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित्) । (अवनं) अव प्रीतौ ॥ ४ ॥ पर्याप्तिर्युद्धमुद्यतस्य हस्तधारणं रोधः, रक्ष्यस्य पृष्ठे हस्तस्थापनं वा । (सीवनं) ष्ठिविसिव्योर्दीर्घश्च (चान्द्रसू०) इति वा दीर्घः । सेवनं स्यूतिः, च्छ्वोः शूडिति (सू०) ऊठ् । (विदरः) दॄ विदारणे, ऋदोरप् (सू०) । (स्फुटनं) स्फुट कुटादिः । भेदनं भिदा, षिद्भिदादिभ्योऽङ् (सू०) ॥ ५ ॥ अभिषजनं पराभिमुख्येन वाच्ययोजनमभीषङ्गः, उपसर्गस्य घञीति (सू०) दीर्घः । वेदना, विद चेतने, णिच्, ण्यासश्रन्थेति (सू०) युच्, वेदेर्वा, घट्टिवन्दिविदिभ्यश्चेत्युपसंख्यानात् (वा०) । स्तुति तु वेदनम् । (संमूर्च्छनं) मुर्च्छा मोहसमुच्छ्राययोः । अभिव्यापनं सर्वतो वृद्धिः । याचनं याच्ञा, यजयाचेति (सू०) नङ् । (अर्दना) अर्द याचनेऽस्मात् स्वार्थे णिच्, युच् ॥ ६ ॥ (वर्धनं) वर्ध छेदनपूरणयोः । (समाजनं)

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपिते ।
बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ॥ १०८ ॥
ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ।
संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ॥ १०९ ॥
ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ।
अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ॥ ११० ॥
भक्षितचर्वितलिप्तप्रत्यवसितगिलितखादितप्सातम् ।
अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ॥ १११ ॥
क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः ।
क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुप्रकर्षार्थाः ॥ ११२ ॥
साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठह्रसिष्ठवृन्दिष्ठाः ।
बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ॥ ११३ ॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः । १ ।

निषेधस्यानित्यत्वज्ञापनात् । मतं तु मन्यतेः । वेत्तेस्तु विदितं, निष्ठा । प्रतिपन्नं, पद गतौ, सर्वे गत्यर्था ज्ञानार्था इति ॥ १०८ ॥ ऊर्यूररी तु विस्तारेऽङ्गीकारे च गतिसंज्ञाः (ऊर्यादिच्विडाचश्च), तेन ऊरीकृतमपि । (संगीर्ण) समःप्रतिज्ञाने (सू०) इति संगिरङ्गीकारार्थः, गॄ शब्दे ॥ १०९ ॥ ईलितं, ईड स्तुतौ, डलयोरेकत्वम् । (शस्तं) शंसु स्तुतौ । (पणायितं, इ०) पण व्यवहारे स्तुतौ च, पन च, गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः (सू०) । अपि स्वार्थे, उपसर्गं इत्यके । गीर्णं, गॄ शब्दे ॥ ११० ॥ लिप्तस्थाने लीढं पेठुः । (प्रत्यवसितं) प्रत्यवपूर्वः स्यतिर्भोजने वर्तते । (गिलितं) गॄ निगरणे, अचि विभाषा (सू०) इति लत्वम् । (प्सातं) प्सा भक्षणे । (अभ्यवहृतं) अभ्यवपूर्वो हृञ् भोजने । अदते स्क्तं, अदोऽनन्ने (सू०) इति निपातनात्साधुः । (जग्धं) अपाणिकान्यपि निपातनानि भवन्तीति पक्षे ज्ञेयः । वाच्यं चात्र–ब्रह्मण्यो ब्राह्मणहितो वीतदम्भस्त्वकल्मषः । असंमतः प्रणाय्यः स्यात्पटुरुच्यः प्रियदर्शनः ॥ वैरागिको विरागार्हः शंसितस्तु सुनिश्चितः । ईर्ष्यालुः कुहनो गोष्ठश्वोऽन्यद्वेष्टा स्वगेहगः ॥ [गोष्ठश्वः, अचतुरेति (सू०) साधुः] । तीक्ष्णोपायेन योऽन्विच्छत्यर्थं स आयःशूलिको जनः । गेहेशूरो गृहे नर्दी पिण्डीशूरोऽपि संस्कृतः ॥ व्युत्पन्नप्रहतक्षुण्णा अन्वेष्टानुपदी समौ ॥ नीलीरागः स्थिरस्नेहो हरिद्रारागकोऽन्यथा ॥ आसीन उपविष्टः स्यादूर्ध्वस्थोर्ध्वदमो स्थितः । उन्मुखः उन्मुखे गृध्रः पक्षे(क्ष्ये) न्युब्जस्त्वधोमुखे ॥ १११ ॥ अतिशयेन क्षिप्रः क्षेपिष्ठः । एवं क्षुद्रः क्षोदिष्ठः । अतिशयेन प्रियः प्रेष्ठः । एवमुरुः वरिष्ठः, प्रियस्थिरस्फिरोरु० इति (सू०) प्रस्थस्फवर्बंहादेशाः । स्थूलः स्थविष्ठः, स्थूलदूरयुवेति (सू०) यणादिलोपः पूर्वस्य च गुणः । बहुलो बंहिष्ठः ॥ ११२ ॥ अतिशयेन बाढं साधिष्ठं, अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ (सू०) । एवं दीर्घो द्राघिष्ठः । स्फिरः (बहुः) स्फेष्ठः । गुरुर्गरिष्ठः । ह्रस्वो ह्रसिष्ठः । वृन्दारको वृन्दिष्ठः, प्रियस्थिरेति (सू०) आदेशः । वाच्यं चात्र–प्राम्ये ग्रामेयकग्रामीणावाच्छिन्नो बलाद्धृते । चोरिते मुषितं मुष्टं स्वपुटं तु नतोन्नतम् ॥ उत्पाटितोन्मूलितार्थमुद्धृतं बर्हितं वृहम् । आचितं निचितं पूर्णं पूरितं निभृते भृतम् ॥ प्रतिश्रितं प्रविष्टं स्यादन्तर्गडु निरर्थके । न्यञ्चितं स्यादधः क्षिप्तं क्षिप्तमूर्ध्वमुदञ्चितम् ॥ स्पष्टे प्रचितं चतुर्थे तु तुरीयं तुर्यमाश्रिते । आकारे श्लिष्टसंपृक्तः खादने क्षुरेत(?)भूषितो ॥ प्रपाचितं प्रतीष्टं द्रष्टुमिष्याक्षिगताः समाः । स्यानं धीनेऽन्वितेऽन्वीतं प्रकाशनकटो स्फुटे ॥ ११३ ॥ इति विशेष्यनिघ्नवर्गः । १ ।

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ दारिते भिन्नभेदितौ ।
ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसंतते ॥ १०१ ॥
स्यादर्हिते नमस्यितनमसितमपचायितार्चितापचितम् ।
वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं च ॥ १०२ ॥
संतापितस्तु तप्तो धूपितधूपायितौ च दूनश्च ।
हृष्टो मत्तस्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः ॥ १०३ ॥
छिन्नं छातं लूनं कृत्तं दातं दितं छितं वृक्णम् ।
स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं च गलितं च ॥ १०४ ॥
लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च ।
अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ॥ १०५ ॥
आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ।
त्राणं त्रातं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च ॥ १०६ ॥
अवगणितमवमतावज्ञाते अवमानिते च परिभूतम् ।
न्यस्तं त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ॥ १०७ ॥

(भिन्न इ०) भिदिः– रुधादिश्चुरादिश्चेति वा– इट् । ऊतं, ऊयी तन्तुसंताने, क्तः, लोपोव्योर्वलि (सू०)। स्यूतं, षिवु तन्तुसंताने, च्छ्वोःशूडिति (सू०) वस्योत्वम् । उतं, वेञ् तन्तुसंताने, क्तः, संप्रसारणम् । तन्तुभिः संतते विस्तृते ॥ १०१ ॥ (नमस्यितं, इ०) नमोवरिवइति (सू०) नमसः पूजायां क्यच्, क्यस्यविभाषा (सू०) इति यस्य वा लोपः । (अपचायितं, इ०) अपचितश्च (सू०) इति चायेर्वा चिः । पूजितं च । वरिवसः परिचर्यायां क्यच् ॥ १०२ ॥ (संतापित इ०) तपिश्चुरादिर्भ्वादिश्च । (धूपित इ०) गुपूधूपेति (सू०) आयः, आयादयआर्धधातुकेवा (सू०) । (दूनः) दूङ् परितापे, स्वादयओदितः (ग०) इति निष्ठा नत्वम् । प्रह्लादते स्म प्रह्लन्नः, ह्रादोनिष्ठायाम् (सू०) इति ह्रस्वः ॥ १०३ ॥ ल्वादिभ्यश्च (सू०) इति नत्वं लूनम् । छो छेदने, शाच्छोरन्यतरस्याम् (सू०) इतीत्वं वा (छातं, छितं) । दाप् लवने, अस्माद्दातम् । दो अवखण्डने, अस्माद् द्यतिस्यतीति (सू०) इत्वे दितम् । वृश्च्यते स्म वृक्णं, ओव्रश्चू छेदने । स्कन्नं, स्कन्दिर् गतिशोषणयोः । पन्नं, पद गतौ । एते हस्तादेः पतितेर्थे वर्तन्ते ॥ १०४ ॥ प्राप्तं कर्मणि, प्राप्तमभिहिते समे इति कर्तरि । विन्नं, विदॢ लाभे । भावितं, भू प्राप्तौ, आधृषाद्वा (ग०) इत्यस्य वा णिच्, पक्षे भूतं, यथा– इत्थंभूतम् । आसादितं, आङः षद पदार्थे णिच् । अन्वेषितं, जेषृ णेषृ एषृ गतौ । अन्विष्टं, इषेः तीषसहेति (सू०) वेट् । गवेष मार्गणे । मार्ग अन्वेषणे । मृग अन्वेषणे ॥ १०५ ॥ आ–अर्दते– आर्द्रः पद्यादिः । सहार्द्रेण गुणेन वर्तत इति सार्द्रः । तिम ष्टिम आर्द्रीभावे । (समुन्नं, इ०) उन्दी क्लेदने, नुदविदोन्देति (सू०) वा नत्वम् । (गोपायितं, इ०) गुपेः, आयादयआर्धधातुकेवा (सू०) ॥ १०६ ॥ (अवगणितं) गणेति विपर्ययेर्थे । अवमतं, मन ज्ञाने । अवमानितं, मनिश्चुरादिः, मान पूजायां वा । अनादृतं च । हीयते हीनम्, ओहाक् त्यागे, निष्ठा नत्वं (ओदितश्च), घुमास्थागेति (सू०) ईत्वम् ॥ १०७ ॥ (उप्तं, उदितं) वचिस्वपियजादीनां किति (सू०) वच वदिवपोः संप्रसारणम् । (अभिहितं) अभिपूर्वो धाप्– उक्तार्थः, दधातेर्हिः (सू०)। (बुद्धं) बुध अवगमने– अनिट् । (बुधितं) बुधिरवबोधने सेट् । मनु अवबोधनेस्मान्मनितं, कृती-चृतीनृतीनामीदित्करणेन सेऽसिचिकृतचृतछृदतृदनृतः (सू०) इति विकल्पे, यस्यविभाषा (सू०) इति

प्राप्यं गम्यं समासाद्यं स्यन्नं रीणं स्नुतं स्रुतम् ।
संगूढः स्यात्संकलितोवगीतः ख्यातगर्हणः ॥ ९३ ॥
विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ।
अवरीणो धिक्कृतश्चाप्यवध्वस्तोवचूर्णितः ॥ ९४ ॥
अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनितं समे ।
बद्धे संदानितं मूतमुद्दितं संदितं सितम् ॥ ९५ ॥
निष्पक्वे क्वथितं पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् ।
निर्वाणो मुनिवह्न्यादौ निर्वातस्तु गतेऽनिले ॥ ९६ ॥
पक्वं परिणते गूनं हन्ने मीढं तु मूत्रिते ।
पुष्टे तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्वान्तमुद्गते ॥ ९७ ॥
दान्तस्तु दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेर्दितः ।
ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते छन्नश्छादिते पूजितेञ्चितः ॥ ९८ ॥
पूर्णस्तु पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेवसिते सितः ।
प्रुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ ९९ ॥
वेधितच्छिद्रितौ विद्धे विन्नवित्तौ विचारिते ।
निष्प्रभे विगतारोकौ विलीने विद्रुतद्रुतौ ॥ १०० ॥

रणे । विरुद्धमवगीयतेवगीतः ॥ ९३ ॥ विविधा विधा प्रकारोस्य विविधः । बहुरूपः पृथग्रूपो नानाविधश्च । (अवरीणः) अवेति विरुद्धार्थः । चूर्णेनावध्वस्तोवचूर्णितः, सत्यापपाशेति (सू०)णिचि क्तः ॥ ९४ ॥ क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानीति (सू०) फणः फाण्टं साधुः, त्रिफलाकषायादिसारम् । (स्वनितं, ध्वनितं) मनस्तमसोरन्यत्रेट् । (संदानितं) दान अवखण्डने । (मूतं) मूङ् बन्धने । द्यतिस्यतीति (सू०) इत्वे– उद्दितं संदितं च । षिञ् बन्धने, सितः ॥ ९५ ॥ निःशेषेण पक्वं निष्पक्वम् । श्रातेः श्रपेश्च शृतंपाके (सू०) इति साधुः । निर्वाति स्म निर्वाणः, वातादन्यत्र शान्त्यर्थे साधुः (निर्वाणोऽवाते) । आदिशब्दान्निर्वाणं मुक्तिर्निर्वृतिश्च, यथा– प्रिय[या]दर्शनमेवास्तु किमन्यैर्दर्शनान्तरैः । निर्वाणमाप्यते येन सरागेणापि चेतसा ॥ निर्वाति निर्वातः, गतो वात इत्यर्थः ॥९६॥ परिणमतेवस्थान्तरं प्राप्नोति स्म, यथा– परिपक्वधीः । (गूनं)गु पुरीषोत्सर्गे, दुग्वोर्दीर्घश्च (वा०), (मीढं) मिह सेचने, ढ्लोपेपूर्वस्यदीर्घोणः (सू०) । पुष्यति स्म पुष्टम् । पोषति स्म पुषितम् । सह्यते स्म सोढं, सहिवहोरोदवर्णस्य (सू०) । (उद्वान्तः) टुवम उद्गिरणे ॥ ९७ ॥ (दान्तः) वादान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः (सू०) इति ण्यन्तात्क्ते वा साधुः । एवं शान्तादयः । अर्द गतौ याचने च, अर्दितः । मारणादन्यत्र मित्वेपि ज्ञप्तः सामान्येन निपातनात्, यथा– आज्ञापितः, आज्ञप्तः । (अञ्चितः) अञ्चेःपूजायाम् (सू०) इतीड् नलोपाभावश्च ॥ ९८ ॥ (क्लिष्टः) क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः (सू०) इति वेट् । (सितः) षोन्तकर्मणि, द्यतिस्यति मास्थेति (सू०) इत्वम् । (प्रुष्ट इ०) प्रुषु प्लुषु उष दाहे । (तष्ट इ०) तक्षू त्वक्षू तनूकरणे ॥ ९९ ॥ (वेधितः) विध विधानेनेत्यर्थः । छिद्यते स्म छिद्रितः, छिद्रं संजातं वास्य । व्यधेः क्तः, विद्धः । विद विचारणे, नुदविदोन्देति (सू०) नत्वं, यदाह– वेत्तेर्विन्नश्चवित्तश्च (भाष्य०) । नास्ति रोको रोचनमस्यारोकः । (विलीनः) लीङ् द्रवीकरणे ॥ १०० ॥

संकीर्णं संकुलाकीर्णे मुण्डितं परिवापितम् ।
ग्रन्थितं संदितं दृब्धं विसृतं विस्तृतं ततम् ॥ ८६ ॥
अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्तप्रणिहिते समे ।
वेल्लितप्रेङ्खिताधूतचलिताकम्पिता धुते ॥ ८७ ॥
नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः ।
परिक्षिप्तं तु निवृतं मूषितं मुषितार्थकम् ॥ ८८ ॥
प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिसृष्टे गुणिताहते ।
निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्ठितरूषिते ॥ ८९ ॥
द्रुतावदीर्णे उद्गूर्णोद्यते कारितशिक्षिते(काचितशिक्यिते)।
घ्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुदक्तोद्धृते समे ॥ ९० ॥
वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ।
रुग्णं भुग्नेऽथ निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ॥ ९१ ॥
स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वं ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते ।
वृत्ते तु वृत्तवावृत्तौ संयोजित उपाहितः ॥ ९२ ॥

संकीर्यते संकीर्णं निरन्तरं व्याप्तम् । संकोलति निरन्तरीभवति सकुलम् । एतान्पूर्वत्र संबध्नन्ति व्याप्त्य-
र्थत्वात् । (मुण्डितं) मुडि खण्डने । (परिवापितं) परिपूर्वो वपिर्मुण्डनार्थः, यथा- म्लानपरिवापवे
(सू॰)। संहितं दितं यत्रेति संदितं, दोवखण्डने । संदानितं संयमितं बद्धं निगडितं च । दृब्धं, दृभी
ग्रन्थे । विसरति स्म विस्तीर्यते स्म तन्यते स्म (विसृतं, इ॰) ॥ ८६ ॥ स्मृतेर्व्यवहितमन्तर्गतम् ।
प्रणिधीयते स्म प्रणिहितम् । (वेल्लितं) वेल्ल चलने । (प्रेङ्खितं) इखि गत्यर्थः । धूञ् धुञ् वेस्पुभवक
पाठः । प्रेङ्खोलितस्तरलितो लुलितान्दोलितावपि ॥ ८७ ॥ (नुत्तं, नुन्नं), नुदविदेति (सू॰) वा
निष्ठा नत्वम् । अस्यते स्मास्तम् । निष्ठीव्यते स्म निष्ठ्यूतम् । आविध्यते स्माविद्धम् । परिक्षिप्यते सम-
न्ताद्वेष्ट्यते स्म परिक्षिप्तम् । नियतं व्रियते स्म निवृतम् । परीतं परिवेष्टितं वलितं परिष्कृतं परिचारितं
च । मुषिः क्र्यादिः, मूषिर्भ्वादिः ॥ ८८ ॥ आहन्यते स्म- एकादिरङ्कोऽङ्कान्तरेणाभ्यस्यते- आह-
तम् । द्वे द्वे तुल्यार्थे । गुण्ठितं गुण्डितमाहुः । रूषिलौकिको व्याप्त्यर्थः, यथा- अन्तर्गिरिरेणुरूषितः
(किरा॰) । प्रवर्ध्यते, प्रसरति, न्यस्यते, निसृज्यते, गुण्यते, आहन्यते, निदिह्यते, उपचीयते, गुह्यते,
गुप्यते, गुण्ठ्यते, रूष्यते ॥ ८९ ॥ द्रूयते, अवदीर्यते, उद्गूर्यते । द्रुतमत्र विभिन्नम् । (उद्-
गूर्णं) गुरी उद्यमे । कार्यते शिक्षां कारितः । घ्रायते स्म घ्राणं, नुदविदोन्देति (सू॰) वा निष्ठा
नत्वम् । समुदच्यते समुदक्तं, अञ्चोऽनपादाने (सू॰) इति निष्ठास्ति ॥ ९० ॥ वलयः संजातोऽस्य वलयि-
तम् । (संवीतं) व्येञ् संवरणे । (रुग्णं) रुजो भङ्गे । (भुग्नं) भुज कौटिल्ये । (शातं, निशितं)शो
तनूकरणे, शाच्छोरन्यतरस्याम् (सू॰) इति वेत्वम्, उपसर्गप्राधान्यात् । शितनिशातौ च । (क्ष्णुतं)
क्ष्णु तेजने । (तेजितं)तिज निशाने ॥ ९१ ॥ पच्यते स्म पक्वं फलादि, पचो वः (सू॰) इति निष्ठा
वत्वम्, आहुश्च- ओषध्यः फलपाकान्ताः (धन्व॰)। जिहेति स्म (ह्रीणह्रीतौ), नुदविदोन्देति (सू॰) वा
नत्वम् । व्रियते वृतः । वर्तते वृत्यते वा वृत्तः । वावृत्तः, वृतु- वावृतु वरणे[वर्तने], इत्थमवुद्ध्वा वृत्त-
व्यावृत्ताविति पेठुः, लक्ष्येऽपि- ततो वावृत्यमानासौ(-त्यमाना सा) भट्टिः । उपाधीयते स्मोपाहितः
॥ ९२ ॥ (स्यन्नं) स्यन्दू स्रवणे । (रीणं)रीङ् स्रवणे, स्वादय ओदितः (ग॰) । (स्नुतं)ष्णु उद्गि-

एकतानोनन्यवृत्तिरे(रै)काग्र्यैकायनावपि ।
अप्येकसर्ग एकाग्रोप्येकायनगतोपि सः ॥ ८० ॥
पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथास्त्रियाम् ।
अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमम् ॥ ८१ ॥
मोघं निरर्थकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्वणम् ।
साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक एककः ॥ ८२ ॥
भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोन्येतरावपि ।
उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमवलम्बितम् ॥ ८३ ॥
अरुंतुदं तु मर्मस्पृगबाधं तु निरर्गलम् ।
प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च ॥ ८४ ॥
वामं शरीरे सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणम् ।
संकटं ना तु संबाधः कलिलं गहनं समे ॥ ८५ ॥

विच्छिन्नो विस्तारोस्यैकतानः । अनन्यैकरूपा वृत्तिर्व्यापारोस्यानन्यवृत्तिः । एकमग्रं पुरोगतं ज्ञेयमस्यैकाग्रः, स्वार्थेऽण्वा । एकमयनं गतिरस्यैकायनः । एकः सर्गो निश्चयोस्यैकसर्गः । एकमयनं गतः (एकायनगतः) ॥ ८० ॥ आदीयते प्रथममित्यादिः, धर्मिवृत्तित्वेप्यजहल्लिङ्गं, यथा– आदिर्गर्गकुलम् । धर्मवृत्तित्वे भवे यत्, आद्यो वाच्यलिङ्गः– अन्त्यवत् । पूर्वति पूर्वः । पुरो भवः पौरस्त्यः, दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् (सू०) । प्रथते प्रथमः । आदिमोग्रिमश्च । अमत्यन्तः, धर्म(र्मि)वृत्तित्वेप्यर्धर्चादिलिङ्गः, यथा– कुलस्यान्तः प्रभु प्रियः । जघने भवो जघन्यः, दिगादिभ्यो यत् (सू०) । चरति चरमः । पश्चाद्भवः पाश्चात्यः– पश्चिमः, दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक् (सू०), अग्रादिपश्चाड्डिमच् (सू०) । अन्तिमोपि ॥ ८१ ॥ मुह्यन्त्यस्मिन्मोघः, न्यङ्क्वादित्वात् (सू०) कुत्वम् । (स्पष्टं) स्पश बाधनस्पर्शनयोः । स्फुटति बहिः प्रकाशते स्फुटम् । प्रकृष्टं व्यज्यते स्म प्रव्यक्तम् । उद्वणत्युल्वणं, पृषोदरादित्वात् (सू०) पक्षे सः । एतौ पुंस्यपि इत्यन्ये । उद्धतमुत्कटमुद्रिक्तं च । समानमाधारणमस्य साधारणम् । समानं मानमस्य सामान्यं, भावे(स्वार्थे)ष्यञ् । (एकाकी, इ०) एकादाकिनिच्चासहाये (सू०), चात्कन्लुकौ च ॥ ८२ ॥ भिन्न इत्यर्थे । इतोन्यार्थः सर्वनाम, यथा– उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाच(चं] (निरुक्त) । एत्येकः, यथा– इत्येके मन्यन्ते, यत्कात्यः– प्रधानान्यासहायेषु संख्यायां चैक इष्यते । अनित्यन्यः, अघ्न्यादिः (उ०) । (अन्यतरः) तरप्स्वार्थे– अल्पाद्यन्तरवत् (सू०) । एति– इतरः । उदक्चावाक्चोच्चावचं, उन्नतं चावनतं च वा, मयूरव्यंसकादिः (सू०) । नैकशब्दः सुप्सुपेति (सू०) समासात्, नानाप्रकारमित्यर्थः । उच्चण्डते– उच्चण्डम् । अवलम्बतेवलम्बित[म्बन]म् । अत एव उच्चण्डं आनुलम्बि चेति पेठुः । केचित्तु विलम्बितमित्याशुकार्यमाहुः, उच्चण्डमुत्तालमिति हि सभ्याः ॥ ८३ ॥ अरुरपि तुदत्यरुंतुदं, विध्वरुषोस्तुदः (सू०) इति खच् । (मर्मस्पृक्) स्पृश उपतापे, मर्मव्यथकमित्यर्थः । निष्क्रान्तमर्गलाया निरर्गलमानियन्त्रणम् । उद्दाममुच्छृङ्खलं च । (प्रसव्यं, अपसव्यं) प्रगतं– अपगतं सव्याद्वामादित्यर्थः, सव्यशब्दो हि– आराच्छन्दवद्वामदक्षिणार्थः । प्रतीपं कूलात्यतिकूलं, लक्षणया विरुद्धार्थं प्रातिलोम्यवत् । अपतिष्ठत्यपष्ठु, कुः, सुषामादित्वात् (सू०) षत्वम् । विपरीतं विलोमं च ॥ ८४ ॥ वम्यते वामम् । सूयते सव्यं, षु प्रसवे । शरीर इत्येव । अपक्रान्तं सव्यादपसव्यम् । दक्षिणं, दक्ष वृद्धौ । संकटत्यावृणोति संकटं, संप्रोदश्च कटच्वा (सू०), विशेष्यलिङ्गम् । पुंलिङ्गस्तु संघटः बाध्यन्तेस्मिन् संबाधः । कल्यते क्षिप्यतेत्रान्यत्कलिलम् । गाह्यते व्याप्यत्वाद्गहनम् ॥ ८५ ॥

कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ।
चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम् ॥ ७४ ॥
चलनं कम्पनं कम्प्रं चलं लोलं चलाचलम् ।
चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ॥ ७५ ॥
अतिरिक्तः समधिको दृढसन्धिस्तु संहतः ।
खक्खटं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ॥ ७६ ॥
जरठं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ।
पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः ॥ ७७ ॥
प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।
नूत्नश्च सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ॥ ७८ ॥
अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ।
प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकमप्रत्यक्ष(प्रत्य)क्षमतीन्द्रियम् ॥ ७९ ॥

व्याप्नोति स्थिरत्वात् (कालव्यापी) । कूटेनाचलत्वेन तिष्ठति कूटस्थः, आत्माकाशादिः । तिष्ठति तच्छीलः स्थावरः शैलादिः, स्थेशभासेति (सू०) वरच् । जङ्गमात्प्राणिनोऽन्यः (जङ्गमेतरः) । (चरिष्णुः) चरेस्ताच्छील्ये- इष्णुच् । भृशं गच्छति जङ्गमः, अकौटिल्येऽप्यभिधानाद्यङ् (प्रा०) । (चरं) चरेरचि चरिचलिपतीति (वा०) वा द्विर्भाव आगागमश्च । त्रस्यति चलत्वात्त्रसम् । इङ्गतीङ्गम्, इगि गत्यर्थः ॥ ७४ ॥ चलति तच्छीलश्चलनः, चलनशब्दार्थाद्युच् (सू०) । (कम्पनः) कम्पते तच्छीलः, युच् । (कम्प्रः) नमिकम्पीति (सू०) रश्च । लुड विलोडनेऽस्मात् लोलम् । (चलाचलं) चरिचलीति (वा०) द्वित्वमागागमश्च ॥ ७५ ॥ अतिरिच्यतेऽतिरिक्तः । सम्यगध्युपरिभवः समधिकः । संहन्यते स्म संहतोऽच्छिद्रः । खक्ख हसने, कक्खटमित्येके । (कठिनं, कठोरं) कठ कृच्छ्रजीवनेऽस्मादिनच्- ओरंश्चौणादिकौ । कृणाति क्रूरम् । नियतं तिष्ठति निष्ठुरम् । (दृढं) दृह वृद्धौ, क्ते, दृढो बलवति साधुः (दृढःस्थूलबलयोः) ॥ ७६ ॥ जीर्यति जरठम् । मूर्च्छति मूर्तम् । नवैत्यर्था इत्येके । प्रोह्यते स्म प्रौढम्, प्रादूहोढोढ्येषैष्येष्विति (वा०) वृद्धिः । (एधितं) एध वृद्धौ । पुरापि नवं(भवं)पुराणम्, नश्च पुराणे (वा०) । (प्रतनं, इ०) पुरात्- त्नतनौ प्रादेशाश्च भवार्थे (नश्चपुराणेप्रात्) । पुराभवं चिरंभवं, सायंचिरमिति (सू०) ट्युट्युलौ तुट् च, निर्देशान्मान्तत्वम् ॥ ७७ ॥ प्रतिनवमग्रमस्य प्रत्यग्रः । अभिनूयतेऽभिनवं, णु स्तुतौ । नव एव नव्यः । (नवीन इ०) नवस्यनूआदेशे त्नप्तनप्खाश्चप्रत्ययाः (वा०), यच्च । सयत्कश्च । सुष्ठु कुत्सितं म्रियते म्लायति वा सुकुमारं, कुमार क्रीडायामित्यस्माद्वा । मृद्यते मृदु । (मृदुलं) गुणमात्रवृत्तित्वे लच् ॥ ७८ ॥ अन्वञ्चत्यन्वक्- क्रान्तोऽव्ययत्वात्स्वागादिवत् अक्षस्य पश्चादन्वक्षम्, अक्षेण रथो लक्ष्यते । पदस्य क्रमस्य पश्चादनुपदं, पश्चादर्थेऽव्ययीभावः । अनुगच्छत्यनुगं, डः । तत्रैतत्त्रयं (अन्वक्, अन्वक्षं, अनुपदं च) अव्ययं वर्तते, क्लीबत्वं तु द्वयोः (अन्वक्षं, अनुपदं च) । अक्षिणी प्रतिगतं प्रत्यक्षं. अत्यादयःक्रान्ताद्यर्थेद्वितीयया (वा०) इति समासः । इन्द्रियेषु भवमैन्द्रियकम् । अक्षेष्वधिकृतमध्यक्षं, तदतिक्रान्तमत्यध्यक्षम् ॥ ७९ ॥ एकं तननम-

समीपे निकटासन्नसंनिकृष्टसनीडवत् ।
सवेशाभ्यास(श)सविधसमर्यादसवेशवत् ॥ ६७ ॥
उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् ।
संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ॥ ६८ ॥
नेदिष्ठमन्तिकतमं स्याद् दूरं विप्रकृष्टकम् ।
दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं दीर्घमायतम् ॥ ६९ ॥
वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं तून्नतानतम् ।
उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गेऽथ वामने ॥ ७० ॥
न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्युरवाग्रेऽवनतानतम् ।
अरालं वृजिनं जिह्ममूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ॥ ७१ ॥
आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्रमित्यपि ।
ऋजावजिह्मप्रगुणौ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ॥ ७२ ॥
शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ।
स्थास्नुः स्थिरतरः स्थेयानेकरूपतया तु यः ॥ ७३ ॥

समेभ्योपर्दत् (सू०) । नियच्छति निकटं, संप्रोदश्चात (सू०) कटच् । आसीदति स्मासन्नः । संनिकृष्यते स्म संनिकृष्टः । समानं नीडमस्य सनीडं, सविधसनीडसमर्यादसवेशसदेशेषु सामीप्ये (सू०) इति सामीप्यं लक्षणयात्र । समानो देशोस्य सदेशः । अभ्यस्यतेवाप्यतेभ्यासः । (सविध इ०) समाना विधा मर्यादा वेशश्चास्य ॥ ६७ ॥ कण्ठस्य समीपमुपकण्ठम् । अन्तोस्यास्तीत्यन्तिकः । अभ्यर्द्यतेभ्यर्णः, अभेश्चाविदूर्ये (सू०) इति इभावः । अभिमुखमग्रमस्याभ्यग्रम् । अभित इति निपातः, अभेस्तसिर्वा । नास्ति पदेन तिरस्करिण्यान्तरं व्यवधानमपदान्तरम् ॥ ६८ ॥ अतिशयेनान्तिकं नेदिष्ठं, नेदीयोपि, अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ (सू०) । दूणाति दूरम् । अतिशयेन दूरं दवीयः, स्थूलदूरेति (सू०) यणादि परं लुप्यते पूर्वस्य च गुणः । दृणाति दीर्घम् । आयम्यत आयतं, आयतते वा ॥ ६९ ॥ वर्तते भ्रमति वर्तुलम् । निर्गतं तलं प्रतिष्ठास्य निस्तलं, भूमौ नास्ते तत्र वा रजो न तिष्ठति । बध्नाति गतिं बन्धुरम् । (उन्नतानतं) उन्नतं सद् नाभिवशादीषन्नतं, यथा– कण्ठस्य तस्याः स्तनबन्धुरस्य (कु० सं०) । उच्चीयत उच्चम्, डः, उदञ्चो वा, आचपगचादित्वन्– मयूरव्यंसकादित्वो (सू०) । प्राश्नुते प्रांशु । उन्नमति स्मोन्नतम् । ऊर्ध्वमग्रमस्योदग्रम् । ऊर्ध्वं श्रयति स्मोच्छ्रितम् । तुञ्जत्यादत्ते तुङ्गम् । उत्तुङ्गमुन्दुरं च । वमति वामोऽस्त्यस्य वा वामनः ॥ ७० ॥ नियतमञ्चति न्यक् । निम्नं चीयते नीचं, नीचैर्विद्यतेस्य वा । खर्वति खर्वः । ह्रसति ह्रस्वः । अवनतमग्रमस्यावाग्रं, अधोमुखमित्यर्थः । अवनमति स्मावनतम् । आनमति स्मानतम् । इयर्ति– अराः सन्ति वास्य– अरालम् । वर्ज्यते वृजिनम् । जी(ही)यते जहाति वा जिह्मम् । (ऊर्मिमत्) ऊर्मयो भङ्गाः सन्त्यस्य । (कुञ्चितं) कुञ्च गतिवैकल्ये । नमति स्म नतम् ॥ ७१ ॥ आविध्यत आविद्धम् । भुजो कौटिल्ये, भुग्नम् । वेल्लति वेल्लितम् । वञ्चति वक्रं, रक् । भङ्गुरं च । इयर्ति ऋज्यते वा ऋजुः । प्रकृष्टो गुणोस्य सदृशो गुणेन मौर्व्या वा प्रगुणः । व्यस्यते विपर्यस्यते स्म व्यस्तम् । आकोलत्येकीभवति– आकुलम् ॥ ७२ ॥ शश्वद्भवः शाश्वतः, अव्ययानांभमात्रेटिलोपः (वा०), आराच्छश्वतोर्नेष्यते (इ०) । शाश्वतिकोपि । ध्रुवः, ध्रुव स्थैर्ये । नियतं भवं नित्यं, त्यब्नेर्ध्रुवे (वा०) इति त्यप् । (सदातन इ०) सदाभवः सनाभवश्चेति, सायंचिरमिति (सू०) ट्युट्युलौ तुट् च । तिष्ठति तच्छीलः स्थास्नुः, ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः (सू०) । अतिशयेन स्थिरः स्थेयान्, प्रियस्थिरेति (सू०) स्थादेशः ॥ ७३ ॥ एकरूपो निर्विकारः । निरवधि कालं

अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ।
विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥
वड्रोरुविपुलं पीनपीव्नी तु स्थूलपीवरे ।
स्तोकाल्पक्षुल्लकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥
स्त्रियां मात्रात्रुटी पुंसि लवलेशकणाणवः ।
अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥
प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ।
पुरुहु(हं) पुरु भूयिष्ठं स्फिरं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥
परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शताधिकात् ॥ ६४ ॥
गणनीये तु गणेयं संख्याते गणितमथ समं सर्वम् ।
विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम् ॥ ६५ ॥
समग्रसकलाखण्डपूर्णानि स्यादनूनके ।
घनं निरन्तरं सान्द्रं पेलवं विरलं तनु ॥ ६६ ॥

क्लीबे, यथा– उपसर्जनं भार्या । अप्राग्र्यस्तु वाच्यलिङ्गः । उपाग्रं च । विशी(स्तीर्य)ते विशङ्कटः, वेःशालच्शङ्कटचौ (सू०) । प्रथते पृथुः । गुणमात्रवृत्तेर्लः (पृथुलः) । बृंहते (बर्हति) बृहत् । महति महत्, वर्तमानेपृषद्बृहन्महज्जगदिति (उ०) निपात्यते ॥६०॥ वलते वड्रम् । ऊर्णुते– उरु, उरु शब्दे । विपोमति विपुलं, पुल महत्वे, कः । विकटं च । प्यायते पीनः, क्तः, प्यायःपी (सू०), ओदितश्च (सू०) इति निष्ठा नत्वम् । (पीवन्, पीवरं) कनिप्क्वरप्च । (स्थूलं) स्थूल परिबृंहणे । घनो बहलश्च । स्तौति स्तोकम् । अल्यते– अल्पम् । क्षुद्यते क्षुद्रः । सुक्ष्– उच्यते आप्याय्यते सूक्ष्मम् । दभ्यते दभ्रम् । (कृशं) कृश तनूकरणे । तन्यते तनु ॥६१॥ मीयतेऽनयाऽनेनमात्रा । त्रुटति त्रुटिः । लूयते लवः । लिश अल्पीभावे, लिश्यते लेशः । कणति निमीलति कणः । अणत्यणुः । अतिशयेनाल्पं (अल्पीय इ०), इष्ठनीयसुनौ । (कनीयः) युवाल्पयोःकनन्यतरस्याम् (सू०) । अतिशयेनाणु– अणीयः, तुरिष्ठेमेयस्सु (सू०), टेः (सू०) इति टलोपः ॥ ६२ ॥ प्रभवति प्रभूतम् । प्रचीयते प्रचोर्यते वा प्रचुरम् । प्राज्यते प्राज्यं, प्रकर्षेणाज्यी(वी)यते वा । न दभ्रमदभ्रम् । बंहते बहु । (बहुलं) प्राग्जन्मस्वर्थीयो लः । पूर्यते पुरु । पुर्विति हूयते पुरुहु । अतिशयेन बहु भूयिष्ठं, बहोर्लोपोभूचबहोः (सू०), इष्ठस्ययिट्च (सू०) इति भूरादेशो यिडागमश्च । स्फायते स्फिरम् । भवति भूरि ॥ ६३ ॥ शतात्परं परःशतं (परःशता आदि), यत्– मयूरंयो ब्रह्महिताय तस्वा परःसहस्राः शरदस्तपांसि (उ० रा०), पारस्करादित्वात्सुट् । श्रीभोजस्तु परःशब्दं निपातं मन्यते, यथा परोवरः, परोक्षम् ॥ ६४ ॥ (गणेयं) उपायो गणेरेयः । (गणितं) कर्मणि क्तः । समति समं सर्वार्थे सर्वनाम, यथा– सूर्यः समेषां समः । सर्वति सरति वा सर्वम् । वेवेष्टि विश्वम् । नास्ति शेषमस्याशेषम् । कृती वेष्टने, कृत्स्यते व्याप्यतेऽनेन कृत्स्नम् । समस्यते– एकीक्रियते समस्तम् । निवृत्तं खिलाच्छून्यान्निखिलम् । नास्ति खिलमस्याखिलम् । निष्क्रान्तं शेषान्निःशेषम् ॥ ६५ ॥ संगतमग्रमस्य समग्रं, समं ग्रसते वा । सह कलाभिर्भागैर्वर्तते सकलम् । न खण्डं भिन्नमखण्डम् । पिपर्ति पूर्यति वा पूर्णम् । पूर्णमित्येके । आदिशब्दादभिन्नादि । नास्त्यूनमस्यानूनम् । (घनं) मूर्तौघनः (सू०) इति साधुः । निर्गतमन्तरं व्यवधानमस्य निरन्तरम् । सम्राध्यते बध्यते सान्द्रम् । निविडं निविरीशं(सं) गाढं [निरन्तरे] च । पेल्यते क्षिप्यते पेलवम् । विरान्तरं विरलम् । तन्यते तनु । शिथिलं श्लथं च ॥ ६६ ॥ संभूता आपोऽत्रेत्युपचारात्समीप, द्वयन्तरुप-

तदा(द)सेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।
अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥
निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः ।
कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः ॥ ५४ ॥
मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ।
पूतं पवित्रं मेध्यं च वीध्रं तु विमलार्थ(त्म)कम् ॥ ५५ ॥
निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।
असारं फल्गु शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥
क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।
मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवरार्ध्यवत् ॥ ५७ ॥
परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम् ।
श्रेयाञ्श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥
स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभकुञ्जराः ।
सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥

आप्याय्यते दृगनेन— आसेचनकं, यस्य दर्शनाद् दृग्न तृप्यति । आभिमुख्येनेष्यतेऽभीष्टम् । अभ्याप्तुमिष्टमभीप्सितम् । हृदयस्य प्रियं हृद्यं, हृदयस्य प्रियइति (सू०) यत्, हृदयस्यहृल्लेखेति (सू०) हृत् । दयते चित्तमाऽस्ते दयितम् । (वल्लभं) वल्लति सौत्रः प्रीत्यर्थः । प्रीणाति प्रियं, कः ॥ ५३ ॥ निकृष्यते निकृष्टः । एवं प्रतिकृष्टः । ऋच्छत्यर्वा । रिफति हिनस्ति रेफः । यापिता गुणा अस्माद्याप्यः, षपादित्वाद्दूरे (ग०) याप्योऽपि । अवोभत्रोऽवमः । अधोभवोऽधमः, अवोऽधसोर्लोपश्च (सू०) इति मः सलोपश्च । कुत्सितं पूयते कुपूयः । नोद्यतेऽवद्यः, अवद्यपण्यवर्या गर्ह्येति (सू०) साधुः । खेटति त्रस्यतीति खेटः, खिट उत्त्रासने । अणति रटतीत्यणकः, अत्र कुत्सायां कन् (कुत्सिते) । कद्वरोऽपि ॥ ५४ ॥ (मलिनं, मलीमसं) मलोऽस्त्यस्येति, ज्योत्स्नातमिस्रेति (सू०) साधुः । कुत्सितं चरति कच्चरम् । म्लानं कश्मलं च । पुनाति पूतम् । पूयतेऽनेनेति पवित्रम् । मेधनीयं मेध्यं, मेधायां साधु वा । विशेषेणेन्द्धे वीध्रं, रक् ॥५५॥ (निर्णिक्तं) णिजिर् शौचे । (मृष्टं) मृजू(ष्) शुद्धौ । निष्क्रान्तं शोध्यान्निःशोध्यम् । अविद्यमानोऽवस्करो वर्चस्कोऽस्यानवस्करम् । फलति विशीर्यते फल्गु, ञिफला विशरणे । शुने हितं शून्यं शुन्यं च, उगवादिभ्यो यत् (सू०) इत्यत्र शुनः संप्रसारणं वा च दीर्घत्वम् (ग०) । उश्यते काम्यतेऽनावृतत्वाद्वाशिकम् । तुद्यते स्म तुच्छम् । रिच्यते रिक्तं, रिच वियोजने ॥ ५६ ॥ प्रधीयते प्रधानम् । प्रकृष्टं मुखमस्य प्रमुखः । प्रकृष्टो वेकः पृथक्त्वमस्य प्रवेकः । नास्त्युत्तमोऽस्मादनुत्तमः । अतिशयेनोद्गत उत्तमः । मुखमिव मुख्यः, शाखादिभ्यो यः (सू०) । वरणीयो वर्यः । व्रियते वरेण्यः, वृञ एण्यः (उ०) । प्रकृष्टो वर्हः परिच्छदोऽस्य (प्रवर्हः), वर्ह वृद्धौ वर्ह प्राधान्ये वा, प्रवृहत्युद्यच्छते वा प्रवर्हः, वृह उद्यमे । अनवरार्धे मुख्ये भागे भवोऽनवरार्ध्यः ॥५७॥ परार्धे भवः परार्ध्यः, परावराधमोत्तमपूर्वाच्चेति (सू०) यत् । अगति न गच्छति का—अग्रं [प्रः] । प्रकृष्टमग्रं हरति प्राग्रहरः । प्राग्रे भवः प्राग्र्यः । (अग्र्यः, इ०) अग्राद्यत् (सू०), घच्छौ च (सू०) । अग्रणीर्ग्रामणीः शालीवरश्च । (श्रेयान्, इ०) अतिशयेन प्रशस्यः, इष्ठन्नीयसुनौ, प्रशस्यस्य श्रः (सू०) । पुष्यति पुष्कलः । अतिशयेन सन् सत्तमः ॥ ५८ ॥ पुरुषो व्याघ्र इव शूरः पुरुषव्याघ्रः, गोनागः । आद्यशब्दान्मुखचन्द्रपादपद्माद्याः, उपमितं व्याघ्रादिभिः (सू०) इति समासः । श्रेष्ठस्यार्थो गोचरो विषय एषाम् ॥ ५९ ॥ उपसृज्यते नियुज्यत उपसर्जनं, आविष्टलिङ्गत्वा-

कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दुर्जनः खलः ।
नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥
अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः ।
कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥
निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।
वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥
अहंकारवानहंयुः शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।
दिव्योपपादुका देवा नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५० ॥
स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।
उद्भिदस्तरुगुल्माद्या उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥
सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।
कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

जपोः (सू०) इत्यच् । पेशयत्येकदेशेन सूचयति पिशुनः, पिश अवयवे, अपिश्यति खण्डयतीति श्रीभोजः । दुष्टो जनः, दुष्टं जनयति वा दुर्जनः । खं शून्यं लाति खलः, खलति चलति वा । नृञ्शंसति नृशंसः । हन्ति तच्छीलो घातुकः, लषपतपदेति (सू०) उकञ् । कृञ् गतिकौटिल्ये (अस्मात्) क्रूरः, कृन्तति वा । पिबति धर्मं पापः, पापं वास्त्यस्य । धूर्वते (धूर्वति स्म) धूर्तः ॥४७॥ मुह्यति मूढः । यथैव जातस्तथैव स्थितोऽसंस्कृतत्वाद्यथाजातः । मुह्यति मूर्खः, मुहेःखो मूर्च (उ०) । विधाया भोजनस्यापत्यमिव वैधेयः, विधेयात्स्वार्थेऽण् वा । बाल्यते बालिशः, बाडृ आप्लाव्ये, बलिशाच्छब्देऽण् वा । मातृशासितश्च । मन्दविषयो देवपरः । कुत्सितोऽर्यः स्वामी कदर्यः । कल्पते कृपणः । क्षुद्यतेऽल्पत्वात्क्षुद्रः । किंचित्पचति किंपचानः, औणादिक आनच् । मितं पचति मितंपचः, मितनखेच (सू०) इति पचः खच् । कीनाशोऽपि ॥ ४८ ॥ दुष्टा विधा प्रकारो भोजनं वास्य दुर्विधः । दीयते दीनः, दीङ् क्षये, स्वादय ओदितः (म०) । दुःस्थः कीकटश्च । (वनीयकः) वनु याचने । याचते याचनः, युच् कन् । मार्गति मार्गणः । अर्थयते तच्छीलोऽर्थी, अर्थापासनिहितइति (सू०) इनिर्वा । तर्कु[र्क]कश्च ॥ ४९ ॥ अहमिति क्रियाक्षिप्रतिरूपको निपातः, अहमस्त्यस्य– अहंयुः, अहंशुभमोर्युस् (सू०), निपातनान्मान्तत्वम् । दिवि भवा दिव्या उपपा[प]दन्ते दिव्योपपादुकाः, दिगादिभ्यो यदिति (सू०) यत्, लषपतपदेत्युकञ् (सू०) । अदृष्टसंहतेभ्यः परमाणुभ्यो जायन्ते सद्य इत्यर्थः । अयोनिजत्वार्थं पुनरिहोक्ताः । नरो गोमहिष्याद्याश्च जरायुजाः, जरायुर्गर्भशय्या ॥ ५० ॥ आद्यशब्दान्मशकयूकाद्याः । आदिशब्दः प्रकारे व्यवस्थायां वा पिपीलिकाद्यर्थः । आद्यशब्दात्तृणाद्याः । उद्भिनत्ति भुवमुद्भित्– उद्भिदं च, क्विप्, कश्च । उद्भेदनमुद्भित्ततो जायत इत्युद्भिज्जं, डः । इत्थमयोनिजजरायुजस्वेदजाण्डजोद्भिज्जत्वेन पञ्चधा भूतसर्गः । एषामेवा(वा)न्तरभेदाच्चतुर्दशविधत्वं, यदाहुः– अष्टविकल्पो दैवस्तैर्यग्योनिश्च पञ्चधा भवति । मानुष्य एकविधः स समासाद् भौतिकः सर्गः ॥ पैशाचो राक्षसो याक्षो गान्धर्वः शाक्र एव च । सौम्यश्च प्राजापत्यश्च ब्राह्मोऽष्टौ देवयोनयः ॥ ५१ ॥ सुन्दरं सुष्ठु नन्दयतीति नैरुक्ताः । रोचते रुचिरं, रुचिं राति वा । चरति मनोऽस्मिन्चारु । सुष्ठु समं शोभना समाप्नोति वा सुषमं, लक्षणया चारु । साध्नोति साधु । शोभते शोभनं, युच् । काम्यते कान्तम् । रोचते रुच्यं, राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्येति (सू०) कर्तरि साधुः । जानातीति ज्ञं, इगुपधेति (सू०) कः, मन एव ज्ञं यत्र तन्मनोज्ञम् । सर्वैर्मन्यते मञ्जु, धर्मे । (मञ्जुलं) धर्ममात्रवृत्त्या तु मत्वर्थीयो लः श्यामलपिङ्गलादिवत् । हारि वल्गु मनोहारि च ॥ ५२ ॥ आविष्यश्च

आत्तगन्धो(र्वो)भिभूतः स्याद्दापितः साधितः समौ ।
प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥
निः(नि)कृतः स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।
मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥
अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो बद्धे कीलितसंयतौ ।
आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्कान्दिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥
आक्षारितः क्षारितोभिशस्ते संकसुकोस्थिरे ।
व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ विहस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥
विक्लवो विह्वलः स्यात्तु विवशोरिष्टदुष्टधीः ।
कश्यः कशार्हे सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥
द्वेष्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ।
विष्यो विषेण यो वध्यो मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥
शिश्विदानोकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः समौ ।
दोषैकदृक् पुरोभागी निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥

चत्वार एकार्था इत्येके । (समौ) दण्डितार्थे । प्रत्यादिश्यते स्म प्रत्यादिष्टः, अनङ्गीकृत इत्यर्थः । अपविद्धोपि ॥ ४० ॥ निःक्रियते खलीक्रियते स्म निःकृतः । मनसि हतो मनोहतः । प्रतिबन्धः प्रवृत्तिनिवारणार्थः ॥४१॥ प्रतिक्षिप्यते न्यक्क्रियते स्म प्रतिक्षिप्तः । (कीलितः) कील बन्धने । प्राप्त आपदं आपत्प्राप्तः, प्राप्तापन्नेचद्वितीययेति (सू०) समासः । (कांदिशीकः) कां दिशं व्रजामीति व्याकुलः, पृषोदरादिः (सू०) । भयाद् द्रुतः पलायितः ॥ ४२ ॥ आक्षार्यते स्वरूपाच्चाल्यते– आक्षारितः, अलीकोत्पन्नपातकव्यपदेशः । अभिशस्तोभिदूषितः, मैथुनं प्रतीत्येके । (संकसुकः) समिकसउकन् (उ०), अनैश्चित इत्येके । समावित्येव । व्यस्यति श्रेयोमार्गाद्व्यसनं तेन ऋतो व्यसनार्तः, ऋतेचतृतीयासमासे (सू०) इति वृद्धिः । उपरज्यते स्मोपरक्तः । विगतो हस्तो यस्य स विहस्तः, किंकर्तव्यतामूढत्वात् ॥ ४३ ॥ विक्लवते कातरीभवति विक्लवः, क्लविर्धातुगणापरिसमाप्तेर्लौकिकः । विरुद्धं ह्वलति विह्वलः । विरुद्धं वष्टि कामयते विवशः । अरिष्टेन मरणचिह्नेन श्वासादिना दुष्टा धीर्यस्य । कशा चर्मयष्टिस्तद्घातोप्युपचारात्, तामर्हति कश्यः–अश्वादिः, दण्डादित्वाद्यः (सू०) । सन्नद्धः सन् यो वधार्थमुद्यतः स आततः संयोगः सन्नेति वधार्थं धावति अवश्यं, आर्तं पलायमानं तायते वा– आततायी । वध उपलक्षणं यत्स्मृतिः– अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः । क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते ह्याततायिनः ॥ ४४ ॥ अक्षिगतो यथा किंशारुकादिः खेदकृत् । वधं शीर्षच्छेदं चार्हति । (विष्यः) नौवयोधर्मेति (सू०) यत् । (मुसल्यः) मुसलेन वध्य इत्यर्थः ॥४५॥ (शिश्विदानः) श्विदि श्वैत्ये, लिटःकानज्वा (सू०)। अकृष्णं निष्पापत्वाच्छुक्लं कर्म यस्याकृष्णकर्मा । चप्यते चपलः. चप सान्त्वने । चिनोति चिकुरः, चेकर्वा रूपं, लक्ष्यं च– तां वीक्ष्य लीलाचिकुरामनङ्गः स्वचापसौन्दर्यमदं मुमोच (कु० सं०) । चलाचले स्यात्तरलश्चापलश्चञ्चलश्चलः । दोष एकस्मिन्नेव दृग्ज्ञानमस्य, यत्काव्यः– दोषैकग्राहिहृदयः पुरोभागीति कथ्यते । पुरोग्रे भजते पूर्वं[सूर्प]वत्पुरोभागी । निकृणोति हिनस्ति स्म निकृतः । (शठः) शठ कैतवे ॥ ४६ ॥ कर्णे जपति सूचयति कर्णेजपः, स्तम्बकर्णयोरमि

स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणशयितौ समौ ।
पराङ्मुखः पराचीनः स्यादवाङप्यधोमुखः ॥ ३३ ॥
देवानञ्चति देवद्र्यङ् विष्वद्र्यङ् विष्वगञ्चति ।
यः सहाञ्चति सध्र्यङ् स स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति ॥ ३४ ॥
वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।
वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकोऽतिवक्तरि ॥ ३५ ॥
स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक् ।
दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ शक्लः(क्तः) प्रियंवदे ॥ ३६ ॥
लोहलः स्यादस्फुटवाग्गर्ह्यवादी तु कद्वदः ।
समौ कुवादकुचरौ स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥
रवणः शब्दनो नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।
जडोऽज्ञ(जडोऽज्ञ ए)डमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥
तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको नग्नोऽवासा दिगम्बरः ।
निष्कासितोऽवकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ३९ ॥

॥ ३३ ॥ (स्वप्नक्) स्वपितृषोर्नजिङ् (सू०) । (शयालुः) शीङ्श्रद्धेतिवक्तव्यादालुच् (शीङ्से० वाच्यः) । (निद्रालुः) निद्राति तच्छीलः, निद्रातन्द्राश्रद्धाभ्य आलुच् (स्पृहिगृहिपतिदयीति) । निद्राति स्म निद्राणः, संयोगादेरातोधातो (सू०) इति निष्ठा नत्वम् । पराञ्चतीति पराङ् (पराचीनः), विभाषा- ञ्चेरदिक्स्त्रियाम् (सू०) इति स्वार्थे खः । संमुखीनस्त्वभिमुखः । अवाञ्चत्यवाङ्, अवाचीनोपि ॥ ३३ ॥ (देवद्र्यङ्, इ०) विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतावप्रत्यये (सू०), विष्वक्सर्वतोर्थेऽव्ययम् । (सध्र्यङ्) सहस्य सध्रिः (सू०) इत्यञ्चतौ परे सध्र्यादेशः । (तिर्यङ्) तिरसस्तिर्यलोपे (सू०) ॥ ३४ ॥ वदति (वदः) वदावदः, चरिचलिपतिवदिभ्योद्वित्वमभ्यासस्याक्चेत्ता (वा०) । वाचो युक्तौ पटुः, वाग्दिक्- पश्यद्भ्यो युक्तिदण्डहरेषु (वा०) इति षष्ठ्या अलुक् । प्रशस्ता वागस्त्यस्य वाग्मी, वाचोग्मिनिः (सू०) । वावदते तच्छीलो वावदूकः, यजजप- (सू०) इत्यत्र वदेरनु[प]देशः कार्य इति पदकारवाक्यादूकः । वक्तीति, तृन् (सू०) । प्रवाक् प्रगल्भः सुमुखश्च ॥ ३५ ॥ (जल्पाकः) जल्पभिक्षेति (सू०) ताच्छील्ये षाकन् । (वाचाल इ०) आलजाटचौ बहुभाषिणि (सू०) । गर्ह्यं जारो जल्पकः । मुखेन वाग्लक्ष्यते, निन्दितं मुखमस्त्यस्य मुखरः, (रप्रकरणे) खमुखकुञ्जेभ्योरो वक्तव्यः (वा०) । अबद्धमनियन्त्रितं मुखमस्त्यस्याबद्धमुखः । शक्नोति वक्तुं शक्तः । (प्रियंवदः) प्रियवशेवदःखच् (सू०) ॥ ३६ ॥ (लोहलः) लुड् कथनादौ । कुत्सितं वदतीति कद्वदः, रथवदयोश्च (सू०) इति कोः कत् । अनुसरो वद्वदश्च । कुत्सितो वादोऽस्य कुवादः । कुत्सितं चरति कुचरः, पचाद्यच् (नन्दिग्रहीति) । विपरीतः स्वरोऽस्य- अस्वरः, नञ् तद्भिन्नदनर्थकत्वम् ॥ ३७ ॥ (रवणः, इ०) रौति शब्दायतीति, चल- नशब्दार्थात् (सू०) इति युच् । नान्दीं मङ्गलपाठं करोति नान्दीकरः, दिवाविभेति (सू०) टः । (जडः) जल धान्ये (चान्द्रो धातुः), डलयोरेकत्वम् । अज्ञोऽतीक्ष्णधीः । मातृमुखो मातृशासि- तश्च । तीक्ष्णधीस्तु कुशाग्रीयः । न- एडोऽपि (अ)वकरोपि मूकः- एडमूकसदृशो वा- अनेडमूकः, नञिवयुक्तमन्यसदृशाधिकरणे तथाह्यर्थः (भाष्य०), एडो हि बधिरः ॥ ३८ ॥ (तूष्णीकः) तूष्णीमः शीलेकोमलोपश्च वक्तव्यः (वा०) । ओलजी व्रीडे, लजते स्म नग्नः । अविद्यमानं वासोऽस्य- अवासाः । अवकृष्यते दूरीक्रियते स्मावकृष्टः, निःसारित इत्यर्थः ॥ ३९ ॥ आत्तो गृहीतो गन्धोभिमानोस्यात्तगन्धः ।

स्यादधृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ।
अधीरे कातरस्त्रस्नौ भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥
आशंसुराशंसितरि गृहयालुर्ग्रहीतरि ।
श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥
लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वन्दारुरभिवादके ।
शरारुर्घातुको हिंस्रः स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥
उत्पतिष्णुस्तूत्पतितालंकरिष्णुस्तु मण्डनः ।
भूष्णुर्भविष्णुर्भविता वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥
निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ।
ज्ञाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥
विसृत्वरो विसृमरः प्रसारी च विसारिणि ।
सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥
क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।
जागरूको जागरिता घूर्णितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥

कौपीनहृति (सू०) साधुः । विरुद्धं लक्ष्यते विरुद्धं लक्ष्मस्य वा विलक्षः, निष्प्रतिपत्तिरित्यर्थः । ईषत्तरति कातरः, कतरस्यायं वा, अत्र कातरा स्त्रीति न स्यात् । इतो निद्र त्वन्तात्ताच्छील्ये । त्रस्यति त्रस्नुः, त्रसिगृधीति (सू०) क्नुः । (भीरुः, इ०) बिभेति तच्छीलः, भियः क्रुक्लुकनौ (सू०), क्रुकन्नपि वक्तव्यश्च (वा०) । दरितो भीतस्त्रस्तश्चकितश्च ॥ २६ ॥ (आशंसुः) सनाशंसभिक्ष उः (सू०) । गृह्यते गृहयालुः, स्पृहिगृहीति (सू०) आलुच् । श्रद्दधाति तच्छीलः श्रद्धालुः । आयः पतिचोरादिकोऽदन्तः, पतयति पतयालुः, स्पृहिगृहीति (सू०) आलुच् । पतति तच्छीलः पातुकः, लषपतपदेत्युकञ् (सू०) ॥ २७ ॥ (अपत्रपिष्णुः) अपत्रपते तच्छीलः, प्राज्यलंकृञिति वक्तव्यात् (वा०) इष्णुच् । वन्दते तच्छीलः (वन्दारुः), शृवन्द्योरारुः (सू०) । (शरारुः, इ०) शृणाति हन्ति हिनस्ति च तच्छीलः, शृवन्द्योरारुः (सू०), लषपतपदेत्युकञ् (सू०), नमिकम्पीति (सू०) रश्च । (वर्धिष्णुः, इ०) अलंकृञिति (सू०) इष्णुच्, अनुदात्तेतश्चेति (सू०) युच् । भवति तच्छीलः (भूष्णुः), ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः । (भविष्णुः, इ०) भुवश्चेति (सू०) इष्णुच्, तृन् (सू०) । (वर्तिष्णुः, इ०) इष्णुच्, युच् ॥ २९ ॥ क्षिपति तच्छीलः क्षिप्नुः, त्रसिगृधीति (सू०) क्नुः । [सान्द्रशब्दोऽत्यन्तनामा भवति] सान्द्रः पीनः स्निग्धश्च (सान्द्रस्निग्धः) । मेद्यति मेदुरः, भञ्जभासमिदो घुरच् (सू०) । वेत्ति तच्छीलो विदुरः, विदिभिदिच्छिदेः कुरच् (सू०) । वेत्ति विन्दुः, विन्दुरिच्छुः (सू०) इति साधुः । (विकासी) विकसति तच्छीलः, वौकष(स)लसेति घिनुण् (सू०) । (विकस्वरः) स्थेशभासपिसकसो वरच् (सू०) ॥ ३० ॥ (विसृत्वरः) विसरति तच्छीलः, इण्नश्जीति (सू०) क्वरप् । (विसृमरः) सृघस्यदः क्मरच् (सू०) । (प्रसारी) प्रेलपसृद्रुमथेति (सू०) घिनुण् । (सहिष्णुः, इ०) सहेरिष्णुच्, युच् । (क्षन्ता) क्षमेस्तृन्, ऊदित्त्वादिट् । (तितिक्षुः) तिजेः क्षमायाम् (वा०), गुप्तिज्कीति (सू०) सन्, सनाशंसेति (सू०) उः । (क्षमी) शमित्यष्टाभ्यो घिनुण् (सू०) ॥ ३१ ॥ (क्रोधनः) क्रुधमण्डार्थेभ्यश्चेति (सू०) युच् । कोपनो रोषणश्च । (चण्डः) चडि कोपे । (जागरूकः) जागरूकश्च (सू०) इति ऊकञ् , (जागरिता) चकारात्तृन् । प्रचल इवाचरन् प्रचलायितः, य उपविष्टो निद्रया घूर्णते

बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।
पराञ्जः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽद्मरः ॥ २० ॥
आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ।
उभावात्मंभरिः कुक्षिंभरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥
सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी गृध्नुस्तु गर्धनः ।
लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक् समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥
सोन्माद(उन्मद)स्तून्मादिष्णुः स्यादविनीतः समुद्धतः ।
मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कमितानुकः ॥ २३ ॥
कम्रः कामयिताभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।
विधेयो विनयग्राही वचने स्थित आश्रवः ॥ २४ ॥
वश्यः प्रणेयो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।
धृष्टे धृष्णुर्वि(धृष्णग्वि)यातश्च प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥

क्षितः)। क्षुध्यति स्म क्षुधितः। अत्तुमिच्छति जिघत्सुः। अशनमिच्छति, सुप आत्मनः क्यच् (सू०), अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु (सू०) साधुः, ततः क्तः, इट्। परादन्नमस्य पराञ्जः। अत्ति तच्छीलोऽद्मरः, सृघस्यदः क्मरच् (सू०), निर्देशात्तत्र घस्लादेशः, घस्ल अदने वा ॥ २० ॥ आ-ईषद्दीव्यति स्म- आद्यूनः, दिवोऽविजिगीषायाम् (सू०) इति नत्वम्। उदरेण भृतः (उदरे प्रसितः) औदरिकः, उदराट्ठगाद्यूने (सू०)। आत्मानं बिभर्त्यात्मंभरिः, आत्मोदरयोर्भृञः (सू०) इति खिः। उदरंभरिरपि। (कुक्षिंभरिः) कुक्षौ चेति वक्तव्यात् (वा०) खि(च)। स्वोदरयोः स्वादात्मोदरयोः पूरकः ॥ २१ ॥ सर्वाण्यन्नानि भक्षयति सर्वान्नीनः, अनुपदसर्वान्नायानयमिति (सू०) खः। (गृध्नुः) त्रसिगृधीति (सू०) क्नुः। (गर्धनः) जुचङ्क्रम्येति (सू०) युच्। अभिलषति तच्छीलोऽभिलाषुकः, लषपतपदेत्युकञ् (सू०)। तृष्यति तच्छीलस्तृष्णक्, स्वपितृषोर्नजिङ् (सू०), तृष्णाक्रान्तः, लुब्धे- उपचारः। तृषितस्तर्षितः पिपासितश्च। भृशं लुम्पति भृशं लुभ्यति (लोलुप इ०), यङ्लुगन्तादच्। केचित्तु वैः संघ्नन्ति। लालसो लम्पटश्च ॥ २२ ॥ उन्मायति तच्छील उन्मादिष्णुः- भूताद्याविष्टः, अलंकृञ्निराकृञिति (सू०) इष्णुच्। (अविनीतः) निर्मर्यादोऽपि। मदेन माद्यति स्म मत्तः। शुण्डायां भवः शौण्डः शुण्डास्त्यस्य वा, अण्प्रकरणे ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानात् (वा०)। उत्क्रान्तः कटीछादनादुत्कटः, उद्रिक्तो वा, संप्रोदश्च कटच् (सू०)। क्षीवते स्म क्षीवः, क्षीबृ मदे, अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबेति (सू०) साधुः। कामयते तच्छीलः (कामुक इ०), लषपतपदेत्युकञ् (सू०), तृन् (सू०) ॥ २३ ॥ (कम्रः) नमिकम्पीति (सू०) रः। (कमनः) अनुदात्तेतश्चेति (सू०) युच्, औणादिकस्त्वपरः। कामनः कमनोऽभिक इति तु युक्तः पाठः, आयादय आर्धधातुके वा (सू०) इति पक्षे कर्मणि णिङ्। अनुकाभिकाभीकः कमितेति (सू०) अन्वभिभ्यां के (कनि) साधवः। [छेको विदग्धे व्यसनिप्रव्रभष्टावुरप्लुते। वेश्यापतिर्भुजंगः स्यात्षिड्गः पल्लविको विटः ॥] विधातव्यो विधेयो यथेष्टं विनियोज्यः। विनयः शास्त्रजः संस्कार इन्द्रियजयो वा। आशृणोति वाक्यमाश्रवः ॥ २४ ॥ (वश्यः) वशंगतः (सू०) इति यत्। प्रणेतव्य आयत्तः (प्रणेयः)। प्रणेयान्ताः षडेकार्था इत्येके। निभृतोऽचपलः। प्रश्रयति प्रश्रितः। धृष्णोति स्म धृष्टः, धृषिशसी वैयात्ये (सू०) इतीडभावः। धृष्णोति तच्छीलो धृष्णुः, त्रसिगृधीति (सू०) क्नुः। धृषेश्चेति वक्तव्यात् (वा०) नजिङि धृष्णक्। विरुद्धं याति स्म वियातः। प्रगल्भते प्रगल्भः। प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता (रुद्रः), प्रतिभास्त्यस्यामिति (प्रतिभा)। प्रत्युत्पन्नमतिस्तत्कालधीश्च ॥ २५ ॥ शालां प्रवेष्टुमर्हति शालीनः, शालीन-

निर्धा(र्वा)र्यः कार्यकर्ता यः संपन्नः(न्न) सत्त्वसंपदा ।
अवाचि मूकोथ मनोजवसः(सः स) पितृसंनिभः ॥ १३ ॥
सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।
लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान् स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥
स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ।
स्वतन्त्रोपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥
परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।
अधीनो निघ्न आयत्तोस्वच्छन्दो गृह्यकोप्यसौ ॥ १६ ॥
खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।
जाल्मोसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥
कर्मक्षमोलंकर्मीणः क्रियावान्कर्मसूद्यतः ।
स कार्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥
कर्म(भर)ण्यभुक्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
अपस्नातो मृतस्नात आमिषाशी तु शौष्कलः ॥ १९ ॥

निर्धार्यः समुदायाद् गुणैः पृथङ्निर्धार्यः । सत्त्वसंपच्चित्तोत्कर्षः, तया संपन्न(न्नः) संपद्यमानः । नास्ति वागस्य– अवाक् । मूयते बध्यते वागस्य मूकः, मुङ् बन्धने । मनो जवतेऽस्मन् पितायमिति धावति मनोजवसः, औणादिकोऽसः– चमसादिवत्, मनोऽभिलाषे वसति वा । पितेव सम्यङ् निभाति पितृसंनिभः ॥ १३ ॥ कोकत आदत्ते धर्मं कूकुदः, कूङ् शब्द इत्यस्य वा रूपं कूतवत्, ब्राह्मे विवाहे दाता, यन्मनुः– आच्छाद्य चार्हयित्वा च श्रुतशीलवते स्वयम् । आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः ॥ लक्ष्मीरस्त्यस्य लक्ष्मणः, पामादित्वान् (लोमादिपामादीति) लक्ष्म्या अच्चेतिनः (वा०) । श्रियं लाति श्रीलः, सिध्मादित्वाल्लज्वा (सू०) । रलयोरेकत्वस्मरणात्– श्रीलः । वत्सोऽस्यास्तीति वत्सलः, वत्सांसाभ्यां कामबले (सू०) इति लच् ॥ १४ ॥ (दयालुः, इ०) दया कृपा चास्त्यस्य । करुणा प्रयोजनमस्त्यस्य कारुणिकः । सुष्ठु रमते सूरतः, सूर्योऽर्क इव तपति वा, डः । स्व आत्मा तन्त्रं मुख्यमस्य स्वतन्त्रः । अपगतमावरणं नियन्तास्येत्यपावृतः । स्वेन– ईर्तुं तच्छीलः स्वैरी, स्वादीरेरिणोः (वा०) इति वृद्धिः । स्वच्छन्दोभिप्रायोऽस्य स्वच्छन्दः । निष्क्रान्तोऽवग्रहान्नियन्त्रणातो निरवग्रहः । निर्यन्त्रणो निरङ्कुशो यथाकामी च ॥ १५ ॥ परोऽध्युपर्यस्य पराधीनः, अषडक्षाशितंगिति (सू०) खः । परो नियन्तास्त्यस्य परवान् । अधि– उपरीनोऽस्याधीनः । निहन्यते निघ्नः, घञर्थे कविधानम् (वा०) । आयत्यते नियुज्यते– आयत्तः । गृह्यते गृह्यकः, पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च (सू०) क्यप् ॥ १६ ॥ खलं पुनाति खलपूः । बहु करोति बहुकरः, दिवाविभाते (सू०) टः, अत एव बहुकरी मार्जनी, बहुधान्यार्जक इत्येके । दीर्घं चीरेण सुवति सूत्रयते वा दीर्घसूत्रः । जडति जाल्मः । (कुण्ठः) कुठि आलस्ये । मन्दोलसः ॥ १७ ॥ अलं कर्मणेऽलंकर्मीणः, पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्येति (वा०) समासः, अषडक्षाशितंगिति (सू०) खः । (क्रियावान्) नित्ययोगे म(म)तुप् (का०) । (कार्मः) कर्मणश्छीलये (सू०) इति साधुः । कर्मणि घटते कर्मठः, कर्मणि घटोऽठच् (सू०) ॥ १८ ॥ कर्मणि साधु कर्मण्यं वेतनं भुङ्क्ते कर्मण्यभुक् । कर्म करोति कर्मकरः, कर्मणि भृतौ (सू०) इति टः । (कर्मकारः) कर्मण्यण् (सू०), विना भृतिं कर्मसंपादकः । (अपस्नातः) अपेत्य विस्नायः । (मृतस्नातः) मृतसंस्कारार्थं स्नापितः । शुष्कली मांसोपलक्षणं, तामत्ति शौष्कलः [शाष्कलः], सोऽस्य (सू०) इत्यण् ॥ १९ ॥ बुभुक्षा संजातास्य (बुभु-

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष(क्ष्य)दानशौण्डा बहुप्रदे ।
जैवातृकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥
परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्धु(र्ध)कः ।
हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥
दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।
दक्षिणे सरलोदारौ सुकलो दातृभोक्तरि ॥ ८ ॥
तत्परे प्रसितासक्ताविष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।
प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥
गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहतलक्षणौ ।
इभ्य आढ्यो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥
अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।
अधिकर्धिः समृद्धः स्यात्कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥
स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ।
वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥

दानो यत् (तत्रसाधुः) । (स्थूललक्ष्यः) स्थूलं लक्षयत्यालोचयति ददातीति यावत् । दाने शौण्डः मद्य उपचारात्, शुण्डा हि पानमदस्थानं तत्र भवः शौण्डः । जीवति जैवातृकः, जीवेरातृकन्वृद्धिश्च (उ०) । (अन्तर्वाणिः) अन्तर्वाण्यस्य ॥ ६ ॥ करणं प्रयोजनमस्य कारणिकः, बलादौ दानार्थ प्रायेणपरीक्षिता । 'आद्यपटस्त्रिकोपि । करणेनाधिकार(रि)वर्गेण चरतीति वा । समृध्नोति संवर्धयति समर्धुकः । हृष्यति हर्षमाणः, ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश् (सू०) । हर्षाद्विकारं याति विकुर्वाणः । प्रहृष्टं मनोस्य प्रमनाः ॥ ७ ॥ अन्तर्लीनं मनोस्यान्तर्मनाः । उद्गतं मनोस्योत्कः, येनान्तर्बहिश्चादिभि-र्बहुभिरप्युत्कमुत्सुचितामिति धर्ममात्रेपि, उत्कउन्मनाइति (सू०) साधुः । दोषस्फुटश्च । (दक्षिण इ०) दक्षते, सरति, उदियर्ति च । शोभना कलास्य सुकलः, दाता भोक्ता च यः ॥ ८ ॥ तत्परं यस्य स तत्परस्तत्सिद्धः । प्रसिनोति स्म प्रसितः, षिञ् बन्धने । आसजति स्मासक्तः । प्रियमर्थं प्रेप्सुः, उद्युक्तः उद्योगार्थः सुखस्यः शोभनार्थः, उत्सादित्वात्कन् (ग०) । प्रत्येत्येति प्रतीतः । प्रथते प्रथितः । ख्यायते ख्यातः । विद्यते प्रतीयते वित्तः, वित्तोभोगप्रत्यययोः (सू०) इति साधुः ॥ ९ ॥ कृताः प्रसिद्धा लक्षणरूपा गुणा यस्यासौ कृतलक्षणः । आहतान्युद्घोषि-तानि लक्षणानि यस्यासावाहतलक्षणः । इभमर्हति- इभ्यः, दण्डादित्वाद्यत् (सू०) । आध्यायन्ति तमाढ्यः, कः, पृषोदरादिः (सू०) । स्वमस्त्यस्य स्वामी, स्वामिन्नैश्वर्ये (सू०) इति साधुः । ईष्टे तच्छील ईश्वरः, स्थेशभासेति (सू०) वरच् । पातीति पतिः ॥ १० ॥ अध्युपरि भवत्य-धिभूः । नयति नियुङ्क्ते नायकः । प्रभवति प्रभुः, विप्रसंभ्यवृति (सू०) डुः । परिवृंहति परिवृढः, प्रभौपरिवृढइति (सू०) साधुः । ग्रामणीरप्यधीश्च ॥ ११ ॥ कुटुम्बे कलत्रादौ व्यापृतः, तत्पोपणोद्युक्तः, अभितोऽम्बरे भवोऽभ्यागारिकः । उपाधीयत उपाधिः । सिंहस्येव संहननं देहोस्य सिंहसंहननः ॥ १२ ॥

तृतीयं काण्डम् ।

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।
लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥
स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।
गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥
सुकृती पुण्यवान्धन्यो महेच्छस्तु महाशयः ।
हृदयालुः स(सु)हृदयो महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥
प्रवीणनिपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।
वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥
पूज्यः प्रतीक्ष्यः सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।
दक्षिणी(ये)यो दक्षिणार्हस्तत्र द(दा)क्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

श्रीगणेशाय नमः । विशेष्यनिघ्नो विशेषणम् । विशेषणादिभिर्हेतुभूतैर्ये पञ्च वर्गास्ते काण्डद्वयोक्तसाधारण्यात्सामान्यकाण्डेऽस्मिंस्तृतीयेयान्तरवर्गान् संश्रयन्ति, यथा नानार्थे कान्तादिवर्गैः, अव्ययवर्गेनेकार्थैकार्थवर्गौ, लिङ्गभेदवर्गो स्त्रीलिङ्गादिवर्गाः । वर्गसंग्रह इत्येके पेठुः, सामान्यकाण्डे ये पञ्च वर्गाः स वर्गसंग्रह इति योजना । आदिशब्दः प्रकारे ॥ १ ॥ स्त्र्यादिभिः पदैर्यादृग्लिङ्गैर्यादृग्वचनैश्च विशेषणैर्यद्विशेष्यं भेद्यं प्रस्तुतं तस्य गुणादिशब्दास्तथा तादृग्लिङ्गास्तादृग्वचनाश्च भेदका विशेषणानि भवन्ति । गुणशब्दा यथा प्रवीणा स्त्री, प्रवीणा दाराः, प्रवीणं कलत्रम् । द्रव्यशब्दा यथा दण्डिनी स्त्री, दण्डिनो दाराः, दण्डि कलत्रम् । क्रियाशब्दा यथा पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कलत्रम् । दाराद्यमिति पाठो दुष्टः । स्त्रीनराद्यैरित्येके, स्त्रीपुंनपुंसकैरित्यर्थः । क्षेमंकरोरिष्टतातिः शिवतातिः शिवंकर इति वक्ष्यमाणम् ॥ २ ॥ धने साधुर्धन्यः । महानाशयोऽस्य महाशय उदाराभिप्रायः । उदीर्ण उत्कृष्टोदारावुदात्तश्च महामनाः । प्रशस्तं हृदयमस्त्यस्य हृदयालुः, हृदयाद्देरा(चा)लुरन्यतरस्याम् (वा०) । स एव हि हृदयेन सह वर्तते, अन्ये मांसखण्डे सत्यप्यहृदयाः, यन्माघेन– हृदयं तद्विविक्ते यद्भावमन्यपरं परम् । शतेषीयाः सहृदया गम्यन्ते कथमन्यथा ॥ सुहृदोऽपि । (महोत्साहः) उद्यमवानित्यर्थः ॥ ३ ॥ प्रकृष्टा वीणास्येति प्रवीणः, मुख्यार्थं परित्यज्य निपुणे रूढः, यदाहुः (कुमारिलभ०)– निरूढा लक्षणाः काश्चित्सामर्थ्यादभिधानवत् । क्रियन्तेऽद्यतनैः काश्चित्काश्चिन्नैव त्वशक्तित इति । एवं निष्णातकुशलौ । निपुणाति निपुणः, शोभनकर्मत्वात् । अभितो जानात्यभिज्ञः । विजानाति विज्ञः, इगुपधज्ञेति कः (सू०) । निष्णा(स्ना)ति निष्णातः, निनदीभ्यां स्नातेः कौशले (सू०) इति षत्वम् । शिक्षा संजातास्येति शिक्षितः । विज्ञानं प्रयोजनमस्येति वैज्ञानिकः । कृतं संस्कृतं मुखमस्येति कृतमुखः । प्रशस्तं कृतं कर्मास्येति कृती । कुशान्– लाति कुशलः, ते हि व्युत्सर्पेणादातुं शक्याः । कृतकर्मा कृतकृत्यः कृतार्थश्च ॥ ४ ॥ प्रतीक्षणीयो मुख्यत्वात् (प्रतीक्ष्यः) । (सांशयिकः) संशयमापन्नइति (सू०) ठञ् । (दक्षिणीय इ०) दक्षिणामर्हति, कडङ्गरदक्षिणाच्छ चेति (सू०) छयतौ । तत्र साधोमार्हे ॥ ५ ॥ वदाते शीयतामिति वदान्यः, वदेरान्यः (उ०) । वदन्योऽपि,

मैरेयमासवः शीधुर्मेदको जगलः समौ ।
संधानं स्यादभिषवः किण्वं पुंसि तु नग्नहुः ॥ ४२ ॥
कारोत्तमः(रः) सुरामण्ड आपानं पानगोष्ठिका ।
चषकोऽस्त्री पानपात्रं सरकोऽप्यनुतर्षणम् ॥ ४३ ॥
धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृत्समाः ।
स्युर्लग्नकाः प्रातिभुवः सभिका द्यूतकारकाः ॥ ४४ ॥
द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ।
पणोऽक्षेषु ग्लहोऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ॥ ४५ ॥
परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ।
अष्टापदं शारिफलं प्राणिद्यूतं समाह्वयः ॥ ४६ ॥
उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ।
ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ॥ ४७ ॥

इति शूद्रवर्गः । १० ।

सुराया विशेषो मैरेयः । शेरतेऽनेन शीधुः, शीङो धुक्- (उ०) । शीधोरित्येके पठित्वा शीधुप्रतिकृतिक इति व्याहरन् । यदाहुः- मध्वासवस्तु मैरेयं, तत्र- यन्माला- मैरेया गदितः शीधुः, (इक्षोः) [अ]पक्वरसोऽपि । मेद्यति स्निह्यत्यनेन मेदकः । भृशं गलति जगलः स्वच्छः सुरासंधानद्रव्यप्रकृतिः । संधीयते संधानं, वंशाङ्कुरफलादीन् बहुकालं संधाय क्रियते । अभिषूयते चिरं क्लिद्यतेऽभिषवः । भावसाधनौ वा द्वौ सुरासंधौ वर्तेते । कि(क)णति कीयते वा सुरानेन किण्वं माषदलन्या(ला)दि सुराबीजाख्यम् । नग्नेनाह्वयते स्पर्धते सुराच्छादनाभावान्नग्नहूः, नग्नहुर्मालायाम् ॥ ४२ ॥ कारेण क्रियावशान्मुख्यः कारोत्तमः । सुरोर्ध्वे स्वच्छो भागः (सुरामण्डः) । आपीयतेऽस्मिन्नापानम् । पानाय गोष्ठी-आसनबन्धः पानगोष्ठी, गावो नानाविधा वाचस्तिष्ठन्त्यत्रेति । चषन्त्यनेन चषकम् । गल्वर्कोऽपि. स्फाटिके पात्रेयं रूढः, विवक्षातो विध्यनुवादौ । सरति सरकः । अनुतृष्यन्त्यनेनानुतर्षणं सुरापरिवेषणम् । चषकपर्यायावेतावित्येके, यन्मुनिः- चषकश्चानुतर्षश्च सरकश्चेति ॥ ४३ ॥ धूर्वति हिनस्ति धूर्तः । अक्षैर्दीव्यति विजिगीषते तच्छीलोऽक्षदेवी । किं तवास्तीति पणो [illegible] । लगति लग्नकः । प्रतिनिधिर्भवति प्रतिभूः । सभा द्यूतशालास्त्यस्य सभिकः । द्यूतं कारयति द्यूतकारकः । द्वौ द्वौ निम्नार्थौ, अन्ययोः सर्वसामान्यात् ॥ ४४ ॥ दीव्यतेऽस्मिन् द्यूतम् । कितवस्य कर्म कैतवम् । पणनं पणः । दुरोदरं नानार्थे । पण्यते पणो बन्धकः । गृह्यते ग्लहः, अक्षेषु ग्लहः (सू) इत्यप् । अश्नोत्यक्षः । दीव्यत्यनेन देवनः । पाश्यते बध्यतेऽनेन पाशकः, प्राशक इत्येके ॥ ४५ ॥ वामदक्षिणयोः शारीणां परिणयनं परिणायः, परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः (सू०) इति घञ् । शृणातीति शारी खेलनी । अष्टपदान्यस्य ष्टापदम् । शारयः फलन्त्यत्र शारिफलं खेलनाधारः, चतुरङ्गफलकादि । आकर्षो नानार्थे । प्राणिनिर्मेषकुक्कुटादिभिर्द्यूतं प्राणिद्यूतम् । संघर्षेणाह्वयन्तेऽत्र समाह्वयः ॥ ४६ ॥ येऽत्र संबन्धिशब्दा लक्ष्यबाहुल्यादेकस्मिन् लिङ्गे- उक्तास्ते तद्गुणयोगादन्यत्र वर्तमाना लिङ्गान्तरेऽप्युत्प्रेक्ष्याः, यथा कर्मण्या भृतिः, कर्मण्यं वेतनं, हलिप्रिया सुरा, हलिप्रियं मद्यं, अक्षवती सभा, अक्षवद् द्यूतम् । एवं माल्यकारी स्त्री, अक्षदेविनी स्त्री । तथानुपदीनं पादत्राणम् ॥ ४७ ॥ इति शूद्रवर्गः । १० । इति श्रीक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितेऽमरकोशोद्घाटने भूम्यादिकाण्डो द्वितीयः समाप्तः ।

प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ।
प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिरुपमोपमानं स्यात् ॥ ३६ ॥
वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक् ।
साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी ॥ ३७ ॥
निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ।
कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम् ॥ ३८ ॥
भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ।
सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा ॥ ३९ ॥
गन्धोत्तमा प्रसन्नेरा कादम्बर्यः परिस्रुता ।
मदिरा कश्यमद्ये चाप्यवदंशस्तु भक्षणम् ॥ ४० ॥
शुण्डा पानमदस्थानं मधुवारा मधुक्रमाः ।
मध्वासवो माधवको मधुमार्द्वीकमद्ययोः ॥ ४१ ॥

ते प्रतिबिम्बं, बिम्बसदृशं वा । प्रतियात्यतेनया प्रतियातना, यत निकारोपस्कारयोः । अर्च्यतेऽर्चा । प्रतिनिधीयते प्रतिनिधिर्मुख्यसदृशः । प्रतिरूपं [प्रतिच्छन्दः] प्रतिकायश्च । उपमितिरुपमा । केचिदेतत्पूर्वैः सबध्नन्ति ॥ ३६ ॥ समति समः । तुलया संमितस्तुल्यः, नौवयोधर्मेति (सू०) यत् । (सदृक्ष इ०) समान इव दृश्यते, त्यदादिषुदृशोऽनालोचनेकञ्च (सू०) इत्यत्र समानान्ययोश्चेतिवक्तव्यात् (वा०) क्सः कञ् क्विन् च, दृग्दृशवतुःष्विति (सू०) समानस्य सः । समानमाधारणं मानं चास्य साधारणः समानश्च ॥ ३७ ॥ वाच्यलिङ्गास्तुल्यार्थाश्चेते, यथा चन्द्रनिभं मुखं, पद्मसंकाशम् । नियतं भाति निभम् । सम्यक् काशते संकाशः । आदिशब्दाच्चन्द्रप्रतिमः, पितृरूपः, आयासभूत इत्यादि । चन्द्रेण निभ इत्यादौ न भवति समास एवोत्तरपदत्वस्य रूढेः । कर्मणि साधु कर्मण्या, भर्मण्या वा । विधीयतेनया विधा, लक्ष्ये भोजनपिण्डे रूढा । (भृत्या, इ०) भ्रियतेनयेति, संज्ञायांसमजेति (सू०) क्यप्, स्त्रियां क्तिन्, मनिन्, ल्युट् । वीयतेऽयते वेतनं, वी गत्यादौ ॥ ३८ ॥ भरणे साधु भरण्यम् । मूलेनानाम्यं मूल्यं, नौवयोधर्मेतियत् (सू०) । निर्विश्यते भुज्यते निर्वेशः । पण्यते- आभाष्यते पणः, निर्यपणः-परिमाण इति (सू०) साधुः । सूयते परिवास्यते सुरा । हलिनो बलस्य प्रिया । जहाति लज्जामनयेति हाला, हलति विलिखत्यङ्गं वा, ज्वलादित्वाण्णः (ज्वलितिकसन्तेभ्योणः) । परिस्रवति परिस्रुत्, परिस्रुता च । वरुणात्मजा वारुणी समुद्रोत्थत्वात् ॥ ३९ ॥ गन्धेनोत्तमा । प्रसीदति प्रसन्ना, अच्छसुरा । एति भ्राम्यत्यनया- इरा । कुत्सितं अम्बरस्य नीलवाससः इयं कादम्बरी. हेत्वर्थे तृतीया । माद्यत्यनया मदिरा । कशादेशे भवं कश्यम् । मदे साधु मद्यं, माद्यन्त्यनेन वा, कृत्यल्युटोबहुलं (सू०) इति करणे गदमदचरेति (सू०) यत् । स्वादुरसा मदिष्ठा कल्यं हारहूरं कापिशायनं च । अवदश्यते पानरुचिजननार्थमवदंशः, खरविशदमभ्यवहार्यम् । चर्वणमुपदंशश्च ॥ ४० ॥ शुण्ड्य(न्य)ते शुण्डा, शुण(न) गतौ । पानमदयोरास्पदं कल्यपालगृहं देशः । शाश्वतस्तु- कुञ्जराणां करः शुण्डा शुण्डा कादम्बरी मता । (मधुवारा इ०) क्रमेण मधुपानावसराः । गौडी पैष्टी च माध्वी च फलोत्था च सुरा स्मृतेति सुराया भेदानाह । माक्षिकमिश्र आसूयते मध्वासवः । मधुनो विकारो मधुना कृतो वा माधवकः, कुलालादित्वाद्वुञ् (सू०) । मन्यते मधु, माद्यन्त्यनेन वा । मृद्वीकाया विकारो मार्द्वीकं, मार्द्वीकमित्युपाध्यायः । मद्यस्योक्तत्वाद्- अद्वयोरित्येके पेठुः, तन्न- सामान्यविशेषरूपत्वात् ॥ ४१ ॥ गिरायां देशे भवो गौल्माः

पिटकः पेटकः पीडा मञ्जूषाथ विहङ्गिका ।
भारयष्टिस्तदालम्बि शिक्यं काचोथ पादुका ॥ ३० ॥
पादूरुपानत्स्त्री सैवानुपदीना पदायता ।
नध्री वर्ध्री वरत्रा स्यादश्वादेस्ताडनी कशा ॥ ३१ ॥
चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ।
नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ॥ ३२ ॥
व्र(वृ)श्चनः पत्रपरशुरेषिका तूलिका समे ।
तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥ ३३ ॥
आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे ।
वृक्षादनो वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारकः(णः) ॥ ३४ ॥
क्रकचः करपत्रं स्यादारा चर्मप्रभेदिका ।
सूर्मी स्थूणायःप्रतिमा शिल्पं कर्म कलादिकम् ॥ ३५ ॥

संघाते, कः । पिटुलि पेटकः । पीड गहने (अवगाहने),अस्मात्पीडा, पीङ् पानेस्मात्पेटेति श्रीभोजः । मञ्जु मनोज्ञं कृत्वा वस्त्राधैरूष्यतेत्र मञ्जूषा । आर्या पेटारिकायां पटी महत्याम् । विहंगपतिकृतिश्चर्मादिमयी, या भित्त्यादौ लम्बमाना स्थाप्यते प्रयाणके च संचार्यते (विहंगिका) । भारोद्वहनार्थं यष्टिः, चतुर्दण्डिकेति सभ्याः, शिक्याधारस्कन्धप्रापणो लगुड इति व्र(वि[पि])ताः, विहंगमेत्येके । तदालम्बो भारालम्बः, तस्या आलम्ब्यते वा । शक्नोति वोढुं शिक्यं, अघ्न्यादिः (उ०) । कच्यतेनेनेति काचः, कच बन्धने, वस्त्र रज्जुपञ्जरे ये लम्ब्यमानास्ते ॥ ३० ॥ पद्यतेनया पादूः, मितद्रुविपदर्तेरित्यूः (उ०) । (पादुका) स्वार्थे कन्, केऽण इति (सू०) ह्रस्वः । उपनह्यति पादमुपानत्, नहिवृतिवृषीति (सू०) दीर्घः । पादत्राणं च । अनुपदं पादायामेन बद्धानुपदीना, अनुपदसर्वान्नेति (सू०) खः । नह्यति बध्नाति नध्री । वर्धने दीर्घीभवति चर्मरज्जुत्वाद्वध्री । व्रियतेनया वरत्रा, वरत्रा चेलवेणवीति तु ... सूत्राप्यते(?) उपचाराद्वायवत् । कशति कशा चर्मयष्टिः ॥ ३१ ॥ चण्डालस्येयं चाण्डालिका । कण्ड(ण्ड)ते तन्त्रीभिराभियते कण्डो(ण्डो)लवीणा किन्नर्याख्या । नरमचति नराच्, तस्येयं, नाराची । अन्विष्यते वर्णोनयेत्येषणिका, स्वर्णतुलेतीह युग्मम् । श्यति तनूकरोति शाणः । निकष्यतेत्र निकषः, गोचरसंचरेति (सू०) चकारात्साधुः , पुंसिसंज्ञायां घो वा (सू०) । एवं कषः, निकषोपल इत्येके, पचाद्यच् (नन्दिग्रहीति), मणिकारादिभाण्डमाहुः, यन्नागिः– शाणस्तु निकषोपलः ॥ ३२ ॥ वृश्चति छिनत्ति व्रश्चनः । पत्राकारः पत्राणां वा परशुः (पत्रपरशुः) । एषःयेषिका, ईष उञ्छे । चित्रलोहमयी शलाका तूलिका, तूल निष्कर्षे । ईषिकेत्येके, शलाकेषिकयोस्तूलिरिति पुमाँ भेदेनाह । तैजसं हेमादि– आवर्त्यते प्रवीक्रियतेस्याम् । मूषते मूषा, मूष् बन्धने । भमस्ति भक्षयतीव स्थाप्यं भस्त्रा । चर्ममयी, प्रसीव्यते प्रसेविका, प्रसेवकोपि ॥ ३३ ॥ आस्फोट्यते विध्यते चानया मौक्तिकादि (आस्फोटनी, इ०) । कल्प्यते छिद्यतेनया कृपाणी । कर्त्यतेनया कर्तरी । वृक्षोऽद्यते छिद्यतेनेन शस्त्रेण वृक्षादनः । टङ्क्यतेनेन टङ्कः, टकि बन्धने, हन्यमानः– टङ्कशब्दं कायति वा ॥ ३४ ॥ क्रकशब्दोच्चारणेन कचति क्रकचः । करसंचार्यं शस्त्रपत्रं करपत्रं, कराभ्यामुच्चारणेन पतति वा । इयर्त्यनयेत्यारा, भिदादौ– आराशस्त्र्यां (ग०) साधुः । चर्मसीवनी च । सुवति सूर्मी, शोभनोर्मिरित्येके । तिष्ठति स्थूणा, वचनान्मतः– स्थूणा स्तम्भेऽय सूर्म्यां च । अयोमयी प्रतिकृतिः (अयःप्रतिमा), यत्स्मृतिः– सूर्मी ज्वलन्तीमाश्लिष्येन्मृत्युना गुरुतल्पगः । शिनोति शिल्पं, शिञ् निशाने, शिल उञ्छेस्माद्वा । कला गीताद्याश्चतुःषष्टिः । आदिशब्दः प्रकारे ॥ ३५ ॥ प्रतिमीयतेनेनेति प्रतिमानं, प्रतिमा च । प्रतिबिम्ब-

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ।
प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ॥ २५ ॥
चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं लोप्त्रं तु तद्धनम् ।
वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ॥ २६ ॥
उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद्वागुरा मृगबन्धनी ।
शुम्बं वटाकरः (वराटकः) स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ॥ २७ ॥
उद्घाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः ।
पुंसि वेमा वायदण्डः सूत्राणि नरि तन्तवः ॥ २८ ॥
वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।
पा(ञ्च)आलिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ॥ २९ ॥

भीमसेनमिरत्युक्तम् ॥ २४ ॥ चोरयति चोरः, स्वार्थेण् (चौरः), चुराशीलो वा, छत्रादित्वाण्णः (सू०) । एकस्मिन्नसहायेऽगारे भव ऐकागारिकः, ऐकागारिकट्चौरे (सू०) । स्तेनयति स्तेनः, स्तेन चौर्ये, स्यात्स्य ह्रस्वविभ्य इति (उ०) इनचि स्तयेनः स्यात् । दस्यत्युपक्षिणोति दस्युः । तत्करोति तस्करः, तद्बृहतोःकरपत्योश्चोरदेवतयोःसुट्तलोपश्च (ग०) । मुष्णाति मोषकः । प्रतिरुणद्धि प्रतिरोधी । परानास्कन्दति परास्कन्दी । पाटयंश्चरति पाटच्चरः, पटच्चरे जीर्णवस्त्रे भवो वा । मलिनैर्म्लोचयति मलिम्लुचः, म्लुच स्तेयकरणे । पारिपन्थिकः पश्यतोहरश्च, वागिदक्पश्यद्भ्योयुक्तिदण्डहरेष्विति (सू०) षष्ठ्या अलुक् । व्यलीकं चातिसंधानं व्याजने च प्रतारणम् ॥ २५ ॥ चोरस्य भावश्चौरिका, मनोज्ञादित्वात् (द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च) वुञ् । ब्राह्मणादित्वात्ष्यञि (गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च) चौर्यम् । स्तेनस्य भावः कर्म वा स्तैन्यं, स्तेनाद्धितियोगविभागात्ष्यञ् (इ०)। स्तेनाद्यन्नलोपश्च (सू०) इति स्तेयम् । लुप्यते लोप्त्रं चौर्यधनम् । मृगादिबन्धनार्निमित्तं जालवागुरादिसाधनं, वितन्यत इति वीतंसः, वितस्यंते बध्यतेऽनेन वा, तसिः सौत्रः ॥ २६ ॥ ऊर्ध्वपातान्मथ्यतेऽनेनोन्माथः । छलेन यम्यतेऽनेन कूटयन्त्रं, पाशयन्त्रमित्येके । (मृगबन्धनी) रज्जुरेति शेषः । अवागुरयति मृगान् वागुरा जालाकृतिः । शु[ल्बं] पूजायां शपं, पूजितं मीयते शु[ल्बं]कं, शुल्वं वा । वध्यते वेष्टयते वराटकः, वटी च । सृज्यते रज्जुः । गुण्यतेऽभ्यस्यते गुणः । वटो गुण इति पृथगाहुः । येन वेष्टनैर्द्वि]गुणा त्रिगुणा वा रज्जुर्वेष्ट्यते वटागुण इत्येके ॥ २७ ॥ उद्घाट्यते प्रकाश्यतेऽम्भोऽनेनोद्घाटनं, ऊर्ध्वं हन्य[घात्यं]तेऽनेनेत्युद्घातनमिति कौटिल्यः । ग्रहेरवटात्संपूर्णं वाल्यतेऽनेनोद्वाहनम् । पाशावर्तोऽपि । वयन्त्यनेन वेमा । उप्यते वीयते यन्त्रे सूत्रं येनेति वापस्तदर्थो दण्डो वापदण्डः, वायदण्ड इति तु युक्तम् । सूयते सूत्र्यते वा पटोऽनेन सूत्रम् । तन्यतेऽनेन तन्तुः । नारे पुंसि ॥ २८ ॥ व(वा)णनं वाणिः, वयनं वा, अत एव निष्प्रवाणिर्नवः पटः । विवयनं व्यूतिः, ऊतियूतीति (सू०) साधुः । तुल्या च तुल्या च तुल्ये । पुस्यतेऽभिमर्द्यते मृदत्र पुस्तं, पुस्त आदरे वा । पञ्चालदेशे भवा पाञ्चालिका यया बालाः खेलन्ति । (पुत्रिका) पुत्रात्कृत्रिमइति (ग०) कन् (यावादिभ्यः कन्) । आदेशशब्दार्थमेलनार्थैः, स्यात्सालभञ्जिका स्तम्भे लेप्येनाक्षिप्तालिका । मनुष्यप्रतिकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु ॥ त्रपुजतुनोःषुक् (सू०) ॥ २९ ॥ पेटति पिटः, पिट

मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ।
दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ॥ १९ ॥
चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्तिजनङ्गमाः ।
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ॥ २० ॥
भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ।
व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ॥ २१ ॥
कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः ।
शुनको भषकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः ॥ २२ ॥
श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः सरमा शुनी ।
विट्चरः सू(शू)करो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः पशुः ॥ २३ ॥
आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ।
दक्षिणारुर्लुब्धयोगाद्दक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ॥ २४ ॥

स्वपितीव मन्दः, अत एव मदि जाड्य इति चान्द्रा धातुः । तुन्दं परिमार्ष्टि तुन्दपरिमृजः, तुन्द-शोकयोःपरिमृजापनुदोः (सू०) इति सूत्रे– आलस्यसुखाहरणयोरितिवक्तव्यात् (वा०) कः । आलस्य-मस्त्यस्यालस्यः, अर्शआदित्वात् (सू०) अच् । (शीतकः) शीतादलसे, शीतोष्णाभ्यांकारिणीति (सू०) कन् । न लसतीत्यलसः । दक्षते दक्षः । चतते कर्म चतुरः । पिशति पियति वा पेशलः, पिश अवयवे, रि पि गतौ । पटति पाटयति वा पटुः । सुष्ठूत्थानमुद्योगोऽस्य सूत्थानः । उषति दहतीवोष्णः । उष्णकोऽपि ॥ १९ ॥ चण्डते चण्डालः । प्लवते प्लवः । मा निषिद्धं तङ्गति मातङ्गः, अमानोनाः प्रतिषेधे, मतङ्गस्यापत्यमिति पौराणिकाः । दिवा कीर्त्यते दिवाकीर्तिः, रात्रौ भयदत्वात् । जनं गच्छति जनंगमः, गमश्च (सू०) इति खच् । निषण्णमस्मिन्पातकमिति निषादः, निषीदति वा, ज्वलादित्वाण्णः (ज्वलितिकसन्तेभ्योणः) । श्वानं पचति श्वपचः, पचादित्वादणोपवादोच् (नन्दिग्रहीति)। ग्रामान्ते वसति– अन्तेवासी, अन्तावसायी च । (चाण्डालः) कुलालवरुड(कर्मार)निषादचण्डालमित्रामित्रेभ्यश्छन्दस्युपसंख्यानात् (वा०) स्वार्थेऽण् । पुक्कासितं कसति पुक्कसः, पुष्कस इत्येके । अवान्तरभेदोऽत्र नादृतः, यतः श्वपचो[श्वपो] डोम्बः[मः] पुक्कसो मृतपः ॥ २० ॥ किराताद्यास्तथा म्लेच्छजातीयाः– दरद्-मुरुभेदादयश्चाण्डालभेदाः । किरति शरान् किरातः । शवत्यरण्यं शबरः । पोलति भ्रमति पुलिन्दः । एते-ऽन्यचरा देशभेदाद् भिन्नाः । म्लेच्छत्यव्यक्तं वक्ति म्लेच्छः । शिष्टा मालभटा भिल्ला नाहलाद्यान्त्यजाः पृथक् । विध्यति व्याधः, श्याद्व्यधेति (सू०) णः । मृगान् याति मृगयते वा मृगयुः । लुभ्यते (श्म) गृध्यति मांसं लुब्धकः ॥ २१ ॥ कुले गृहे भवः कौलेयकः, कुलकुक्षीति (सू०) ढकञ् । सरमाया अपत्यं सारमेयः । कोकते कुक्, चोरप्राप्तिकुक्शब्दं वा कुरति (कुक्कुरः), कुर शब्दे । मृगान्दशति मृगदंशकः । शुनति शुनकः, शुन गतौ । भषति कुत्सितं वाशते भषकः । शवति श्वयति वा श्वा । मण्डली च । रथ्यामृगो देश्याम् । स श्वा संजातगरलयोगोऽल्यते वार्यते दशनभयादलर्क उन्मत्तः श्वा ॥ २२ ॥ विश्वं कन्दत्याह्वयते विश्वकद्रुः, विगतं श्वकद्रमस्येत्येके, विश्वकं द्रवति वा । सरति सरमा देवशुनी, विशेषवृत्तिरपि सामान्येऽभिधानात् । विषं गूथं चरति(अत्ति) विट्चरः । सूयते बहून् सूकरः । वर्ततेऽर्वान् वर्करः, वृक आदाने ॥ २३ ॥ आच्छाद्यन्ते त्रास्यन्ते प्राणिनोऽत्रेत्याच्छोदनं, छुदेश्छदनम् । मृगान्व्ययति मृगव्यं, मृगव्येति मुनिः, व्येञ् संवरणे । आखेट्यन्ते प्राणिनोऽत्राखेटः, खिट उत्त्रासने । मृग्यन्ते प्राणिनोऽस्यां मृगया, मृगयादयश्चेत्यङ् (परिचर्यापरिसर्येति) । पापर्द्धिश्च । लुब्ध[क]संबन्धात् दक्षिणे पार्श्वे दर्मणमस्य दाक्षिणारुः (दक्षिणेर्मा), दक्षिणेर्मालुब्धकयोगइति (सू०) साधुः, वणोऽस्या-

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः ।
भरता इत्यपि नटाश्चारणास्तु कुशीलवाः ॥ १२ ॥
मार्दङ्गिका मौरजिकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।
वेणुध्माः स्युर्वैणविका वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ १३ ॥
जीवान्तकः शाकुनिको द्वौ वागुरिकजालिकौ ।
वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥
भृतको भृतभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।
वार्तावहो वैवधिको भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥
विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।
निहीनोपश(स)दो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥
भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।
नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥
पराचितपरास्कन्दपरजातपरैधिताः ॥ १८ ॥

च प्रोक्तं नटसूत्रमधीते शैलाली कृशाश्वी च, पाराशर्यशिलालिभ्याम् (सू०) इति णिनिः, कर्मन्दकृशाश्वात् (सू०) इनिः । शिलूषस्यर्षेरपत्यं शैलूषः । भरतस्यापत्यं, बिदाद्यञि बहुत्वे लुक् (यञञोश्च) । नटति नटः । चरणस्य भ्रमणस्यायं चारणः, यतो देशान्तरभ्रमणे जीवति । कुत्सितं शीलं वाति कुशीलवः ॥ १२ ॥ मृदङ्गमुरजवादनं शिल्पमेषां (मार्दङ्गिका मौरजिकाः)। पाणी हन्ति पाणिघः, पाणिघतान्डघौ शिल्पिनीति (सू०) साधुः । वेणुं धमति वेणुध्मः वाणविकः । वीणावादनं शिल्पमस्य वैणिकः ॥ १३ ॥ शकुनान् हन्ति शाकुनिकः, पक्षिमत्स्यमृगान् हन्तीति (सू०) ठक् । एकार्थाविति शेषः । वागुरया मृगबन्धनरज्ज्वा चरति वागुरिकः । वितन्यते वीतंसः प्राणिबन्धोपकरणं, कूटः कूटयन्त्रं, ताभ्यां जीवति चरति चेति ठक् (चरतीति) । मांसं पण्यमस्य मांसिकः । सौनिकार्था इत्येके ॥ १४ ॥ भ्रियते भृतकः, स्वार्थे कन् । भृतिं वेतनं भुङ्क्ते भृतिभुक् । कर्मकरः, कर्मणि भृतौ (सू०) इति टः । वेतनेन जीवति वैतनिकः, वेतनादिभ्यो जीवति (सू०) इति ठक् । वृत्तिर्जीविकास्त्यस्यां वार्त्ता– अभाद्यं प्रज्ञाश्रद्धार्चेति (सू०) णः, वार्त्तया वहो वार्त्तावहः । विवध्यते विवधो भारः पर्याहारो वा, बध संयमने, पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण (सू०), तं वहति वैवधिकः, विभाषा विवधवीवधात् (सू०) इति ठन् । भारोऽस्त्यस्य भारिकः ॥ १५ ॥ विरुद्धो वर्णोऽस्य विवर्णः, वर्णान्तराजत्वात् । पामाः सन्त्यस्याधमत्वात् पामरः, पामा(नं) राति वा । निम्नमञ्चतीति नीचः । प्रकृतौ भवः प्राकृतो गुणासंस्कृतः । पृथग्जनेभ्यः पृथग्जनः । नियतं हीयते निहीनः । अपशीर्यतेऽपशदः । जलति जाल्मः, जल घातने । क्षुधं लाति क्षुल्लकस्तुच्छत्वात् । इतं रात्येति वा–इतरः । बर्बरोऽपि [यथाजातोऽपि] । भारताद्यो रेफशकारौ ॥ १६ ॥ भरणीयो भृत्यः, भृञोऽसंज्ञायां (सू०) इति क्यप् । दासस्यापत्यं दासेरो दासेयश्च, क्षुद्राभ्यो वा (सू०) इति ढक्–ढ्रकौ । दीयते दासः, दस्यते(ति) वा, दसु उपक्षये । गोपनीयो गोप्यः । चेटति चेटः, चिट प्रेष्ये । (नियोज्यः) प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे साधू (सू०) । किं करोमीत्याज्ञाप्रतीक्षकः किंकरः, दिवाविभानिशेति (सू०) टः । प्रेषणीयः प्रैष्यः, प्रादूहोढोढ्येषैष्येष्विति (वा०) वृद्धिः, ईष उञ्छे– इत्यस्मात् प्रैष्यः । भुङ्क्ते स्वाम्युच्छिष्टं भुजिष्यः ॥ १७ ॥ परैराचीयते वर्ध्यते पराचितः । परिस्कन्द्यते– आक्रम्य नियुज्यते परिस्कन्दः, परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु (सू०) । परैरेध्यते वर्ध्यते परैधितः ॥ १८ ॥ मन्यते

कारुः शिल्पी संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।
कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
कुम्भकारः कुलालः स्यात्पलगण्डस्तु लेपकः ।
तन्त्र(न्तु)वायः कुविन्दः स्यात्तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥
रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
पादूकृच्चर्मकारः स्याद् व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
नाडिंधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारके ।
स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥
तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।
ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥
क्षुरिमुण्डिदिवाकीर्तिनापितान्तावसायिनः ।
निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥
जाबालः स्यादजाजीवो देवाजीवी तु देवलः ।
स्यान्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रातिहारिकः ॥ ११ ॥

उण् । शिल्पं कलास्त्यस्य शिल्पी । समानजातीयकारुसंघः, श्रीयत इति श्रेणिर्द्विलिङ्गः । कुलं कायति कुलकः, कुलिक इत्यन्ये, श्रेण्यादौ श्रेष्ठार्थः । कुले वणिग्वृन्दे श्रेष्ठत्वमस्त्यस्य कुलश्रेष्ठी । (मालिकः) तदस्यपण्यमिति (सू०) ठक् ॥ ५ ॥ कुलानि गृहाण्यलति कुलालः, कुं मृदं लाडयति मृद्नाति वा । पलेन मांसेनेव मृदादिना गण्डाति संहन्ति पलगण्डः लेप्यकृत् । तन्त्रं तन्त्वातानं वयति तन्त्रवायः, ह्वावाम-श्चेत्यण् (सू०) । कुं विन्दति कुविन्दः । तुन्नं विद्धं वयति तुन्नवायः । सूचिवानं शिल्पमस्य सौचिकः ॥ ६ ॥ रङ्गान् रक्तपीतान्याजीवति रङ्गाजीवः । चित्रं करोति चित्रकरः, दिवाविभेत्यादिना (सू०) टः । शस्त्रं मार्ष्टि तेजयति शस्त्रमार्जः । असीन्धावति शोधयति- असिधावकः । पादूः पादत्राणानि करोति पादूकृत्, पादकृदित्येके । विशेषणोक्तं समवायमियर्ति व्योकारः, व्योरित्ययःपर्याय इति श्रीभोजः ॥७॥ नाडीं धमति नाडिंधमः, नाडीमुष्टयोश्च (सू०) इति खश् । कलां आदत्ते कलादः, कलं सुवर्णकालिका-माधत्याखण्ड[य]ति वा, अत एव कलं धौतं यस्मिन्निति कलधौतं रुक्मम् । हेममुष्टिकोपि । कम्बुघटनं शिल्पमस्य काम्बविकः शङ्खवलयादिकृत्, लक्ष्याद्रस्य कदेशाभावः । शुल्वघटनं शिल्पमस्य शौल्विकः । मणिकारो वैकटिकः ॥ ८ ॥ तक्ष्णोति तक्षा । वर्धयति वर्धकिः, वर्ध छेदने । त्वक्षति तनूकरोति दारु त्वष्टा । काष्ठं तक्ष्णोति काष्ठतट् । स्थपतिश्च । ग्रामस्याधस्तात्तक्षा ग्रामतक्षः, ग्रामकौटाभ्यांचतक्ष्णः (सू०) इति टच् । कुट्यां भवः कौटः स्वतन्त्रः । नास्त्यध्युपरि- इनः स्वाम्यस्यानधीनः ॥ ९ ॥ क्षुरोस्यास्ति क्षुरी । मुण्डयति मुण्डी । दिवा कीर्त्यते दिवाकीर्तिः, रात्रौ क्षुरकर्मनिषेधात् । नाप्यते नापितः, नञ् प्रकृत्या । अन्तमवस्यत्यन्तावसायी । चण्डिलोपि । संवाहकोऽङ्गमर्दः स्यात् । निर्नेनेक्ति क्षालयति निर्णेजकः । रञ्जयति रजकः, शिल्पिनि क्वुन् (क्वुन्शिल्पिसंज्ञयोरिति), रजकरजनरजःसूपसंख्यानात् (वा०) नलोपः । केचित्तु य एव धावकः स एव रजकः, स्मार्ते तु भिन्नावेतौ । शुण्डा पानमदस्थानं सुरा वा पण्यमस्य शौण्डिकः । मण्डमच्छसुरां हरति मण्डहारकः । सुराजीवी कल्यपालश्च ॥ १० ॥ अजमलति जालम्बालागस्तस्यायं जाबालः, अजपालापभ्रंशो वा । देवान्- लाति देवलः । मात्यस्यां विश्वं माया । शम्बराख्यस्यासुरस्येयं शाम्बरी, सा हन्ती ति शंवगे व्याघ्र इति तु युक्तम् । इन्द्रजालं तु कुसृतिः कुहकं कुहिका च । प्रतिहरणं व्याजः प्रयोजनमस्य प्रातिहारिकः ऐन्द्रजालिकः ॥ ११ ॥ शिल्पिना शिल्पिना कर्मणेन

शिग्रुजं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैक्षवम् ।
ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥
गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।
त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः । ९ ।

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।
आचाण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥
शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।
शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥
माहिष्योऽर्याक्षत्रिययोः क्षत्तार्याशूद्रयोः सुतः ।
ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥
रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः ।
स्याच्चाण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥

अञ्जनबीजम् । मुरति मोरटं, मुर संवेष्टने । ग्रन्थिप्रतिकृतिर्ग्रन्थिकम् । चटकाशिरोरूपत्वाच्चटकाशिरः ॥११०॥ गोरिव लोमान्यस्या गोलोमी । भूताः केशा अस्य भूतकेशः, भूतस्येव केशा अस्य वा । ना पुमान् । पत्त्रमङ्गमस्य पत्राङ्गम् । त्रीणि कटूनि ऊषणानि च शुण्ठीपिप्पलीमरीचानि समाहृतानि (त्रिकटु, त्र्यूषणम्) । विशेषेण ओषति दहति व्योषम् । कटुत्रिकं च । त्रयाणां फलानां हरीतक्यामलकबिभीतकानां समाहारस्त्रिफला, अजाद्यतष्टाप् (सू०) । वरा च ॥१११॥ इति वैश्यवर्गः । ९ ।

शु पूजितं कृत्वोन्दन्ति सुरान् क्लेदयन्ति शूद्राः, शीयन्ते वा । वृषान्- लुनन्ति वृषलाः, नारदस्तु –'वृषो हि भगवान्धर्मस्तस्य यः कुरुते लयम् । वृषलं तं विजानीयात्–' । जघन्याज्जाता जघन्यजाः । यच्छ्रुतिः- पद्भ्यां शूद्रो अजायत । पद्याः पज्जाश्च । चाण्डालो ब्राह्मण्यां शूद्राज्जातोऽत्र । संकीर्णाः प्रतिलोमानुलोमजत्वान्मिश्राः, यत्स्मृतिः (याज्ञव०)- विप्रान्मूर्धावसिक्तस्तु क्षत्रियायां विशः स्त्रियाम् । अम्बष्ठस्तु शूद्रायां निषादः पारशवोऽपि वा ॥ माहिष्योग्रौ प्रजायेते विट्शूद्राङ्गनयोर्नृपात् । शूद्रायां करणो वैश्याद्विप्रास्वेष विधिः स्मृतः ॥ ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतो वैश्याद्वैदेहकः स्मृतः । शूद्राज्जातस्तु चाण्डालः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ क्षत्रिया मागधं वैश्याच्छूद्रात्क्षत्तारमेव च । शूद्रादायोगवं वैश्या जनयामास वै सुतम् ॥ माहिष्येण करण्यां तु रथकारः प्रजायते । असत्सन्तस्तु विज्ञेयाः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ १ ॥ सिंहावलोकितन्यायेन सुत इत्येव । शूद्रायां वैश्याज्जातः, करोति प्रेष्यकर्माणीति करणः, ल्युट् । एवं सर्वत्राप्याहारानुषङ्गादि । अम्बायां तिष्ठत्यम्बष्ठः, अम्बाम्बगोभूमि (सू०) षत्वम्, ह्रस्वो निर्देशात् । द्विजन्माऽत्र विप्रः । वैश्येति, यमश्च (सू०) इति ङीप्– नास्ति लक्ष्यात् । शूद्रा चामहत्पूर्वेति (ग०) अजादित्वाट्टाप् । उच्यत्युग्रः, उच समवाये । मगधयति स्तौति मागधः ॥ २ ॥ महिष्यां साधुर्माहिष्यः, स हि- अन्तःपुरपालिनेति स्मार्ताः । अर्या वैश्या । क्षदति दुःखम्... तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः (उ०) इत्यनिट् तृच्, क्षदस्त्वौणादिको धातुः क्षदादिपाठात् । सुवति प्रसवस्थान् सूतः । ब्राह्मण्यां वैश्याज्जातो [वैदेहको] वणिग्धर्मा ॥ ३ ॥ माहिष्यात्क्षत्रियवैश्याजात् करण्यां शूद्रावैश्यजातायां सूनो रथकारसंज्ञा । चण्डमुग्रं कर्माऽलति पर्याप्नोति चण्डालः ॥ ४ ॥ करोति कारुः, कृवापाजीति (उ०)

डि(हि)ण्डीरोऽब्धिकफः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम् ।
नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥
रङ्गवङ्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम् ।
स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥
मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि ।
मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥
मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ।
नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥
पाक्योऽथ स्वर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
सौवर्चलं स्याद्रुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

धिक्येन बहिःप्रसादब्धिकफः सागरमलाख्यः, नद्यादौ तूपचारात् । स्फायते फेनः । सिनोति बध्नाति चेतः स्यन्दते वा सिन्दूरम् । नागात्सीसात्संभवोऽस्य नागसंभवम् । चीनपिष्टं गान्धारपिष्टो[पङ्क्तो]ऽपि । धन्वन्तरिस्तु– सिन्दूरं रक्तरेणुश्च रागरक्तं च नागजम् । शृङ्गारभूषणं श्रीमद्वसन्तोत्सवमण्डनम् ॥ हंसपादो हिङ्गुलके– । न न गच्छति चलत्वान्नागम् । सिनोति बध्नाति पारतं सीसं सीसपत्त्रं च । हेम्नो वर्णोत्कर्षार्थे योगे श्लेषे– इष्टं (योगेष्टम्) । उप्यते वप्रं वर्णोत्कर्षे बीजत्वात् । त्रपत इवाग्नेराशु द्रवते(ति) त्रपु । पिच्यते कुट्यते पिच्चटम् ॥ १०५ ॥ रज्यतेऽनेन रङ्गम् । वङ्गति वङ्गम् । आलीनमपि । पञ्च्यते सूत्रमस्य पिचुः पिचयति वा, पिचि गतौ । तूल्यते फलात्तूलः, तूल निष्कर्षे, निर्बीजः कार्पासोयम् । रङ्गवङ्गेऽथ पिचुल इति प्रागल्भसंज्ञाविस्मृतेः पाठः । कमलेभ्य उत्तरं वर्णाधिक्यात्कमलोत्तरम् । कुस्यति कुसुम्भं, कुस श्लेषणे, कौ सुम्भ्यते निकुम्भ्यते वा, सुम्भेः सौत्रः । वह्नेरिव शिखास्य वह्निशिखम् । महच्च तद्रजनं च, रज्यतेऽनेनेति रजनं, रजकरजनरजःसूपसंख्यानात् (वा०) नलोपः ॥ १०६ ॥ काम्यते शीतार्तैः कम्बलः, कम्बलः कमनीयो भवतीति निरुक्तम् । ऊर्णास्यास्ति– ऊर्णायुः । शशस्योर्णा शशोर्णं, गृहस्थूणवत्क्लीबे । मन्यतेऽभिलष्यते मधु पुष्परसाह्वम् । क्षुद्राभिर्मक्षिकाभिः कृतं (क्षौद्रं माक्षिकं च), क्षुद्राभ्रमरेति (सू०) अण् । सारघं च । आदिशब्दात्पौत्तिकभ्रामरादि । अन्यविताम्बरमेदा गजनिर्मासिकयेते, यदाहुः– माक्षिकं तैलवर्णं स्याद् घृतवर्णं तु पौत्तिकम् । क्षौद्रं भ्रामरं श्वेतं क्षौद्रं तु कपिलं मतम् । मधुनोच्छिष्यते त्यज्यते मधूच्छिष्टम् । सिञ्चति सिक्थकम् ॥ १०७ ॥ मनोवाच्या शिला मनःशिला । मनःशब्देन हूयते मनोह्वा । नागजिह्वावत्याकृतिर्नागजिह्विका । शिला च । नेपालदेशे भवा मनःशिला नेपाली द्विरुक्ता, अभेदाभपाठो पाली वा । कौ नटति कुनटी । गां लाति गोला, गुडति वा । खसोत्कार्थी इत्येके । दग्ध्वा यवाङ्कुराज्जन्यते यवक्षारः ॥ १०८ ॥ पचनीयः पाक्यः । स्वर्जिका दग्ध्वा क्षार्यते स्वर्जिकाक्षारः । कापोतः कपोतवर्णः, कपोतस्यायमिति वा, ईषत्सूयते वा । (सुखवर्चकः) वर्च दीप्तौ । सुवर्चलास्याकरस्येदं सौवर्चलम् । रुच्यते दीप्यते जाठराग्निरनेन रुचकं, रुकप्रत्ययात्सुनरुचकम् । एवं ग्रन्थिकपत्ताघ्नादि । त्वचो वंशात्क्षीरमस्यास्त्वक्क्षीरी, त्वक्क्षीरं च । वंशोत्था रोचना वंशरोचना, आह च (शाश्वतः)– स्याद्वंशरोचना पौधी तुकाक्षीरी तुगा शुभा । त्वक्क्षीरी वंशजा शुभ्रा वंशक्षीरी तु वैणवी ॥ १०९ ॥ चिनोति तैक्ष्ण्याच्चिनुः, (तस्माज्जातं) चीना-

सर्वं च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी ।
क्षारः काचोऽथ चपलो रसः सूतश्च पारते(दे) ॥ ९९ ॥
गवलं माहिषं शृङ्गमभ्रकं गिरिजामले ।
स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥
तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।
कर्परी दार्विकाक्वाथोद्भवं तुत्थरसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥
रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं गन्धाश्मनि तु गन्धिकः ।
सौगन्धिकश्च चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥
रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥
गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।
बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥

सुवर्णं रजतं ताम्रं रीतिः कांस्यं तथा त्रपु । सीसं च वीमरं (कालायसं) चैव ह्यष्टौ लोहानि चक्षते ॥ सर्वं तु विशेषाल्लोहम् । कुत्सितं शेते कुशी फालः, चक्रतात्पथतः– कुशो दर्भः कुशी फालः, जानपदकुण्डेति (सू०) अयोविकारे कुशाद् ङीष् । क्षरति गलति क्षारः । कचाते(ते) काचः । चपलोऽस्थैर्यात् । रस्यते रसायनार्थिभी रसः । सूते हेम युक्तो सूतः, शिवात्प्रसूतो वा । पिपर्ति पारतः, पारं तनोति वा ॥ ९९ ॥ गां जलति वारयत्यनेन गवलं, गवते वा । अभ्रप्रतिकृतिरभ्रकम् । गिरिजं च तदमलं च गिरिजामलं, गौर्या मलमिति धातुविदः । अज्यतेऽनेनाक्षि– अञ्जनं, यमुनास्रोतसो जातम् । सुवीरदेशे भवं सौवीरम् । कपोतवर्णं कापोताञ्जनम् । धन्वन्तरिस्तु– अञ्जनं मेचकं कृष्णं सौवीरं स्यात्सुवीरजम् । कापोतं यामुनं तच्च स्रोतोऽञ्जनमुदाहृतम् ॥ १०० ॥ तुदत्यक्षिरोगं तुत्थम् । शिखिग्रीवं मयूरग्रीवाभम् । वितुदति रोगान् वितुन्नकम् । मयूरप्रतिकृतिर्मयूरकम् । कल्पतं रोगात्पातु कर्परी । दार्वीक्वाथोत्थं, तुत्थं च तद्रसाञ्जनं च तुत्थरसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥ दार्वीरसस्य गर्भो रसगर्भम् । तार्क्ष्यशैले कुक्कुतायां भवं (तार्क्ष्यशैलं) । रसजातं रसाग्र्यं च । गन्धोऽस्यास्तीति गन्धिको गन्धपाषाणः, रसग्रन्थे गन्धकोऽयम् । चक्षुषे हिता चक्षुष्या दृक्प्रसादाख्या । कुलमलति कुलाली । कुले तिष्ठति कुलत्था, कुलत्थप्रतिकृतिर्वा, कोलोष्ठी तार्[क्ष्यशै]लाख्या, आह च– कुलाली लोचनहिता दृक्प्रसादा कुलत्थिका ॥ १०२ ॥ रीतेर्ध्मायमानस्य पुष्पाभं मलं रीतिपुष्पम् । पुष्पप्रतिकृतिः पुष्पकं, पक्षे स्वार्थेऽण् । पिजि हिंसादौ, पिञ्जते पिञ्जरम् । पीयते पीतनं, पीतं वर्णं नयति वा । आलाति शोभामालं, अलति भूषयति वा । हरेः पीतवर्णस्य तालः प्रतिष्ठाऽस्मिन् हरितालं, हरितमलति भूषयति वा । तालं च मौलवत्, धन्वन्तरिः– हरितालं च गोदन्तं पीतकं नटमण्डनम् । आलं च तालं गौरं च पिञ्जरं चिरगन्धिकम् ॥ १०३ ॥ गिरेरिदं गैरेयम् । अर्थ्यते रसायनार्थिभिरर्थ्यम् । शिलातः जतुवत्स्रवति शिलाजतु । बोल्यते बोलः, बुल निमज्जने । गन्धप्रधानो रसोऽस्य गन्धरसः, [रसगन्धोऽपि] । प्राणितत्वेन प्राणः । पिण्ड्यते द्रव्यान्तरैः पिण्डः, पिण्डसहत्वात् । पिड संघाते । गां पाति रसोऽस्य गोपरसः, गोपो रसोऽपि मौलवत् ॥ १०४ ॥ डिण्डीति शब्दमीरयति डिण्डीरः, दार्वियो डि(दि)ण्डिमवत् । अब्धेः कफ इवा-

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः।
शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागोऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥
मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम्।
रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥
स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम्।
तपनीयं शातकौम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥
चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने।
रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥
अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः।
दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥
रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ ताम्रकम्।
शुल्वं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्ठोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥
लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी।
अश्मसारोऽथ मण्डूरं (सिंहाणं शिंघाण)मपि तन्मले ॥ ९८ ॥

हरिन्नीलवर्णो मणिः। शोणं च तद्रत्नं च। लोहित एव लोहितकः, लोहितान्मणौ (सू०) इति कन्। मुच्यते शुक्तिभिर्मुक्ता। (मौक्तिकं) विनयादित्वात् (सू०) स्वार्थे ठक् ॥ ९२ ॥ विशिष्टो द्रुमो विद्रुमः, विद्रवत्यब्धौ वा। प्रवलते प्र(प्र)वते वा– अब्धेरूर्ध्वं प्रवालम्। सूर्यकान्तस्त्वग्निमणिर्वैडू(दू)र्यं बाल-वायजम्। रमन्तेऽस्मिन् रत्नम्। मण्यते शब्द्यते मणिः पुंस्त्रीलिङ्गः। अश्मजातीयं मरकतेन्द्रनीलादि। आदिशब्दाद्विद्रुमादि, वज्रपद्मरागादि वा पार्थिवभाण्डत्वात् ॥ ९३ ॥ शोभनो वर्णोऽस्य स्वर्णं, समासे वर्णस्य वा वलोपमाहुः– यथा पद्मार्णो मन्त्रः। कनति कनकं, कनी दीप्तिकान्तिगतिषु। हिनोति हेम। हटति हाटकं, हट दीप्तौ। तपति तपनीयम्। शतकुम्भे गिरौ भवं शातकौम्भं, अनुशतिकादित्वात् (सू०) उभयपदवृद्धिः, शातकुम्भमित्येके। गङ्गाया अपत्यं गाङ्गेयम्। भ्रियते धार्यते भर्म। कर्बति लोकमध्ये दृप्यति कर्बुरं, नानारूपं वा ॥ ९४ ॥ चमीकरकृतस्वराबाकरौ, तत्रभवइति (सू०) अण्। जातरूपमकृतकत्वं, भोट्टदेशजम्। महच्च तद्रजतं रञ्जकं (महारजतं)। काञ्चति(ते) काञ्चनं, कचि दीप्तौ। रोचते रुक्मम्। जम्बूद्वीपे जम्बूफलरसोत्पन्नद्यां जातं जाम्बूनदम्। अष्टसु लोहेषु पदं प्रतिष्ठा-स्याष्टापदं, अष्टनःसंज्ञायां (सू०) इति दीर्घः। कल्याणमर्जुनं कलधौतं गैरिकं [भूरि]चन्द्रं वसु च ॥ ९५ ॥ शृङ्ग्यलंकारमकरिका, तदर्थं कनकम्। दुर्वर्णं स्वर्णापेक्षया। रज्यते हेम्ना रजतम्। रूप्यति रूप्यं(रुप्यं), रुप लुप विमोहने। खर्जति खर्जूरं, कर्ज खर्ज व्यथने। इति शब्दात्सितादि। अपि-शब्दात्तारं कलधौतं च ॥ ९६ ॥ रीयते स्रवति रीतिः, ऋयर्ति– आरस्तस्य कूटं पित्तलाख्यम्। आरोऽपि, पित्तलेऽहं च। माद्री पिङ्गला मलरीतिः कांस्यं घोषो द्विलोहकम्। ताम्यति ताम्रम्। शवति द्रवति शुल्वम्। म्लेच्छदेशो मुखमुत्पत्तिरस्य। द्वे हेमरूप्ये अश्नुते द्व्यष्टम्। अतिशयेन वरं वरिष्ठम्। कालिका-म्नायते स्वर्णं हि तत्, अत एवोदुम्बरं, उद्गताम्बरमिति नैरुक्ताः। औदुम्बरमित्येके। रक्तधातुकं च। सौराष्ट्रकं पञ्चलोहे वर्तलोहे तु वर्तकम् ॥ ९७ ॥ लुनाति लोहम्, लुङ् कर्तनादौ वा। शस्यतेऽनेन शस्त्रं, शसु हिंसायाम्। तेज्यते तेजयति वा तीक्ष्णं, शस्त्रान्तरच्छेदकत्वाद्धेतककाख्यं तत्, तिज निशाने। पिण्ड्यते पिण्डम्। कालं च तदयश्च कालायसम्, अनोऽश्मायःसरसामिति (सू०) टच्। अयते मेय-मयः। अश्मनः सारोऽश्मसारः, यत्स्मृतिः– अश्मभ्यो लोहमुत्थितम्। पारशवं घनं च। मण्डते मण्डू-रम्। हिनस्ति सिंहाणं ध्मायमानस्यायसो मलः ॥ ९८ ॥ तेजसो विकारस्तैजसं हेम्नोऽपि लोहं, यदाहुः–

ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री पलं कर्षचतुष्टयम् ।
सुवर्णबिस्तौ हेम्नोऽक्षे कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥
तुला स्त्रियां पलशतं भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।
आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥
कार्षापणः कार्षिकः स्यात्कार्षिके ताम्रिके पणः ।
अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः ॥ ८८ ॥
कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।
अंशस्तुरीयः पादः स्यादंशभागौ च वण्टकः ॥ ८९ ॥
द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ।
हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा अपि ॥ ९० ॥
स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ।
ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं रूप्यं तद् द्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥

दच् (सू०) । बिस्यते बिस्तः, बिस उत्सर्गे । अक्षे षोडशमाषके माने द्वौ वर्तेते; यत्स्मृतिः– पञ्चकृष्णलको माषस्ते सुवर्णस्तु षोडश । कुरुदेशे प्रसिद्धो बिस्तो हेमपलम्, यन्मालाः– पलेन हि सुवर्णस्य कुरुबिस्तः ॥ ८६ ॥ तोल्यते तुला, चिन्तिपूजीति (सू०) चकारादङ्, निष्करणसामर्थ्याद् गुणाभावः । भ्रियते भारः, पुरुषा हि द्वे पलसहस्रे वोढुं शक्नुवन्ति । आचीयत आचितः स च शकटेन वोढुं शक्यः । अन्ये तु विंशतिः पलसहस्राण्याचितमाहुः । शाकटभारस्तु नोतिरिक्तो यत्प्याचित एव । अत एव शाकटाख्योऽप्याचित इति पुनराचितशब्देन बोध्यते ॥ ८७ ॥ कर्षसंबन्धिना पण्यते व्यवह्रियतेऽनेन रूप्यरूपेण कार्षापणः । कर्षः प्रमाणमस्य कार्षिकः । ताम्रमयं कर्षप्रमाणं तु रूप्यं पणः । तन्मूल्यं चोपचाराद्‌ वीतिः श्वेतश्च । पृथगित्येषामपर्यायत्वम् । परिमाणविशेषा एते, यदाहुः– पलं प्रकुञ्चकं मुष्टिः कुडवस्तच्चतुष्टयम् । चत्वारः कुडवाः प्रस्थश्चतुःप्रस्थमथाढकम् ॥ अष्टाढको भवेद् द्रोणो द्विद्रोणः शूर्प उच्यते । सार्धशूर्पो भवेत्खारी द्विशूर्पा गोण्युदाहृता ॥ तामेव भारं जानीयाद्वाहो भारचतुष्टयम् । शुष्कमेवं स्थिरं मानं द्विगुणं तद् द्रवेषु तु ॥ तत्र देशभेदात्संख्यान्यथात्वं, तथा क्वचिच्चतुराढको भवेद् द्रोणः, षोडशद्रोणा खारी, विंशतिद्रोणः कुम्भः, दशकुम्भो वाहः ॥ ८८ ॥ रूपकादेश्चतुर्थोंशः पादः, पदरुजेति (सू०) कर्तरि घञ् । अंश्यतेंऽशः । भज्यते भागः । वण्ट्यते विभज्यते वण्टः ॥ ८९ ॥ (द्रव्यं) द्रव्यं च भव्ये इति (सू०) साधुः । विन्द(द)ते तद्वित्तं, वित्तो भोगप्रत्यययोरिति (सू०) साधुः । स्वपतौ साधु स्वापतेयं, पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् (सू०) । ऋच्यते स्तूयते ऋक्थम् । रिच वियोजनेऽस्माद्वा- (१), रिच्यते विभज्यते रिक्थम् । दधन्ति धनम् । वस्ते छादयति वसु, वसतीश्वरगृहे वा वसु । ह्रियते हिरण्यम् । द्रवति द्रविणम् । द्युयते द्युम्नं, द्यु अभिगमने । अर्थ्यतेऽर्थः । रातेर्डै रा:, स्त्रीलिङ्गे । विभवति विभवः ॥ ९० ॥ कूयते शब्द्यते कोशः, कुष्यत आकृष्यत आयस्थानेभ्यः कोश इत्येके । हेम कृताकृतं घटिताघटितं, रूप्यं चैवम् । हेमरूप्याभ्यामन्यत्तैजसं कुप्यं, राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्येति (सू०) साधु । आहन्यत आहतम् । रूप्यं, रूपादाहतप्रशंसयोर्यप् (सू०) । तद् द्वयं कुप्याकुप्यम् ॥ ९१ ॥ गरस्मत एवं जातं चिनं हन्तु गारुत्मतम् । मरकं तरन्त्यनेन मरकतम् । अश्मनो गर्भो योनिः ।

पुमानुपनिधिर्न्यासः प्रतिदानं तदर्पणम् ।
क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥
विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु ।
क्लीबे सत्यापनं सत्यंकारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥
विपणो विक्रयः संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ।
विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥
संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्तस्तासु चानवतेः स्त्रियः ।
पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥
पौ(यौ)तवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ।
मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थैर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥

समीपे निधेयः । न्यस्यते निक्षिप्यते न्यासः । निक्षेपोपि । स्मार्ते(याज्ञव०)स्त्वेषां भेदोस्ति– वासनस्थमनाख्याय हस्तेन्यस्य यदर्पितम् । द्रव्यमुपनिधिर्न्यासः प्रकाश्य स्थापितं तु यत् ॥ निक्षेपः शिल्पिहस्ते तु भाण्डं संस्कर्तुमर्पितम् ॥ तस्य न्यासस्य निक्षेप्त्रे प्रतीपं दानं प्रतिदानं, परिदानमित्येके । प्रत्यक्षादानं स्त्रीकारोपन्नयः [पर्यक्ष्यः] क्रयकं च तत् । क्रयनिमित्तमापणे न्यस्तं (क्रय्यं), क्रय्यस्तदर्थे इति (सू०) साधुः । (क्रेयं) यथा क्रेयो गौर्विक्रीयते न च क्रय्योस्ति ॥ ८१ ॥ (पण्यं) अवद्यपण्यवर्येति (सू०) साधुः । (त्रिषु) वाच्यलिङ्गा इत्यर्थः । अवश्यं मयैतद्विक्रेयमिति सत्यस्य करणं सत्यापनं, सत्यापपाशरूपेति (सू०) णिच्, अर्थवेदसत्यानामापुक् (पक्ष्यः) (वा०) । (सत्यंकारः) कारेसत्यागदस्येति (सू०) मुम् । (सत्याकृतिः) सत्यादशपथे इति (सू०) डाच् ॥ ८२ ॥ विपणनं विपणः, युवयन्तादप् (नान्यस्य इति), अन्यतो विपणः स्यात् । एकाद्या दशान्ताः संख्याः संख्येयेषु वर्तमानास्त्रिलिङ्गाः, एका शाटी, एकः पटः, एकं कुण्डं, दश स्त्रियः, दश पटाः, दश कुण्डानि । आदशेत्यथाष्टदशान्ताः । विंशत्याद्याः सर्वा एव संख्याः संख्येये संख्यायां च नित्यमेकवचनान्ता एव वर्तन्ते, यद् भाष्यम्– आदशभ्यः संख्या संख्येये वर्तते, ऊर्ध्वं संख्याने संख्येये च, विंशतिः पटाः, विंशतिः पटानां, शतं गावः, शतं गवाम् । [अत्र विंशतिशब्देनैकानविंशतिशब्दोपि ज्ञेयः]॥ ८३ ॥ संख्यामात्रार्थे वर्तमानाया विंशत्यादेः संख्याया द्विवचनबहुवचने अपि स्तः [भवतः] एकशेषात् , द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः, गवां विंशती, गवां विंशतयः । विंशत्याद्या नवत्यन्ताः स्त्रीलिङ्गाः । द्वे(द्वे) पञ्चती पङ्क्तिर्दशात्मा, पङ्क्तिविंशतित्रिंशदिति (सू०) साधुः । दश पङ्क्तयः शतम् । दश शतानि सहस्रम् । दश सहस्राण्ययुतम् । एवं परार्धान्तान्यष्टादश गणितस्थानानि, यदाहुः– एकदशशतसहस्राण्ययुतं प्रयुतानि लक्षमथ नियुतम् । अथ कोटिन्यर्बुदपद्मं खर्वं निखर्वमिति दशभिः ॥ गुणनान्महाम्बुजशङ्कू समुद्रमध्यान्त्यमथ परार्धं च । एवं परार्धमपि तत्स्थितं पूर्यते संख्येति । प्रयुतसंज्ञं लक्षमर्बुदसंज्ञा कोटिरित्यर्थः ॥ ८४ ॥ पुनाति पोतु– मानभाण्डशोधकः पोतवाणिजः, तस्येदं पौतवम् । द्रोर्विकारो द्रुवयं, ध्रौव (सू०), मानेवयः (सू०) । माति पाय्यं, पाय्यसान्नाय्येति (सू०) साधुः । मीयतेनेनेति मानम् । पौतवं तुलादि, द्रुवयं प्रस्थादि, पाय्यं हस्तादीति गौडो भ्रान्तः । त्रिभिर्मानं मीयतेनेन च । तत्र तुलया तुल्यार्थं, अङ्गुल्यादि प्रमाणं, प्रस्थादि परिमाणं, यदाहुः– ऊर्ध्वं मानं किलोन्मानं परिमाणं तु सर्वतः । आयामस्तु प्रमाणं स्यात्संख्या भिन्ना तु सर्वतः ॥ गुञ्जा रक्तिका । माषो गुञ्जः । पञ्चगुञ्जा एव माषकः । सप्त द्वे इत्यन्ये सप्तमाष इत्यपि दर्शनात् । अस्मिन्काले– अष्ट– इत्येके, यदाहुः– माषकं सप्त गुञ्जाभिः ॥ ८५ ॥ गच्छन्तीत्यादयः । कर्षति कर्षः । (पलं) पल रक्षायाम् । सुवर्णमस्त्यस्य सुवर्णः, अर्शआदित्व-

उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः शिशुः ।
करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥
अजा छागी शुभ(स्तभ)च्छागबस्तच्छगलका अजे ।
मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥
उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।
चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥
वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥
विक्रेता स्याद्विक्रयिकः क्रायकः क्रयिकः समौ ।
वाणिज्यं तु वणिज्या स्यान्मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥
नीवी परिपणो मूलधनं लाभोऽधिकं फलम् ।
परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥

समस्त्यबन्धनंकरभइति (सू०) कन् । विकारे नित्यंवृद्धशरादिभ्यः (सू०) इति मयटा दारुमयैरिति भवितुं युक्तम् ॥ ७५ ॥ अजति गच्छति व्यय मर्शालत्वादजा, अजाद्यतष्टाप् (सू०) । छयति रोगं छागी, जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् (सू०) इति ङीष् । स्त्रीविषयप्रत्ययार्थे पृथक्पाठः । शोभते शुभः, शु(तु)भो निघण्टुषु । बस्ते बस्तः । छयति रोगांश्छागः, छगलश्च । छागोऽपि । मेहति मेढ्रः । उरु भ्राम्यति– उरभ्रः, उरु रभते वा, उः स्वरप्रतिरूपको निपातः । एवमुरु रणोऽस्येत्युरणः, उरण्यति देवताः प्रीणातीति कण्ड्वादिपाठात् । ऊर्णास्त्यस्योर्णायुः, ऊर्णाया युस् (सू०) । मेषति वाशते मेषः, पचाद्यच् (नन्दिग्रहीति) । वर्षति वृष्णिः । आ–ईड्यन्ते देवा अनेन एडकः । हुडुश्च । अविर्नानार्थे ॥ ७६ ॥ (औष्ट्रकं, इ०) गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रेतिवुञ् (सू०) । चक्रमस्त्यस्य तैलिकादिचक्रभ्रमणाय, आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवदिति (सू०) साधुः । चक्रवालस्तु बालेय इति माला । बालेभ्यो हितो बालेयः, बाले व[च]यसि भवो वा । रासते रासभः, रासृ शब्दे । गर्दति गर्दभः, गर्द शब्दे । खं शब्दं राति खरः, खमस्त्यस्य वा, (रप्रकरणे) खमुखकुञ्जेभ्योरः (वा०) । क्रूरोऽपि, शङ्कुकर्णोऽपि । षड्-द्वित्रयोः पशुभ्यः षड्गवमथ गोयुगं च परं, यथा मेषषड्गवं गोगोयुगम्, पशुनामभ्यो द्वित्वे गोयुगच् (वा०), षट्त्वे षड्गवच् (वा०) । अविसोढमविमरीसं तथाविदूसं पयो मेष्याः, अवेर्दुग्धे-सोढदूसमरीसचो वक्तव्याः (वा०) ॥ ७७ ॥ विदेहे– उपचये भवो वैदेहकः । सार्थान्सधनान्सरतो वा पान्थान्वहति सार्थवाहः । निगमे– आपणे भवो नैगमः । पणते वणिक् । वणिगेव वाणिजः, प्रज्ञादित्वात्स्वार्थेऽण् (सू०) । आपणः प्रयोजनमस्त्यस्यापणिकः । क्रयविक्रयाभ्यां जीवति क्रयविक्रयिकः, वस्नक्रयविक्रयाट्ठन् (सू०) इति संघातविगृहीताट्ठन् ॥ ७८ ॥ विक्रीणीते भाण्डेन मूल्यं गृह्णाति विक्रेता । क्रीणाति मूल्येन भाण्डं क्रायकः । क्रयेण जीवति क्रयिकः । वणिजो भावो वाणिज्यं, ब्राह्मणादित्वात्ष्यञ् (गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च) । (वणिज्या) दूतवणिग्भ्यां चेति वक्तव्यात् यच्च (वा०) । मूल्ये-नानाम्यं मूल्यं, नौवयोधर्मेति (सू०) यत् । वसत्यस्मिन्पण्यं वस्नः । अवक्रीयतेऽनेनावक्रयः ॥ ७९ ॥ नीवीव परहस्तेऽर्प्यमाणत्वात् । परिपण्यते वृद्ध्यर्थं प्रयुज्यते परिपणः । मूलं लाभकारणम् । मूलधनादधिकं निष्पन्नं स लाभः फलं च । फलान्तरादि । परिवर्तादानं परिदानम् । निमेये परिवर्तनीये भवो नैमेयः । निमानं निमयः, मेङ् प्रणिदाने ॥ ८० ॥ उपसृत्य समीपे निधीयते गुप्तं स्थाप्यते– उपनिधिः, उप

वशा वन्ध्यावतोका तु स्रवद्गर्भाथ संधिनी ।
आक्रान्ता वृषभेणाथ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥
काल्योपसर्या प्रजने प्रष्ठौही बालगर्भिणी ।
स्यादचण्डी तु सुकरा बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥
चिरसूता बष्कयिणी धेनुः स्यान्नवसूतिका ।
सुव्रता सुखसंदोह्या पीनोध्नी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥
द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुष्या बन्धके स्थिता ।
समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥
ऊधस्तु क्लीबमापीनं समौ शिवककीलकौ ।
न पुंसि दाम संदानं पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥
वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।
कुट(ठ)रो दण्डविष्कम्भो मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥

प्रसूतिं वन्ध्या वन्धनीया वा । अवकृत्तं तोकमपत्यमस्या अवतोका, अव(व)स्रवन्ती च, मृतवत्सा स्रवद्गर्भेति माला । संधानं संधा गर्भग्रहणमस्त्यस्याः संधिनी, अदुग्धा दोहकाले तु संधिनीति कात्यः, संधिन्य-कालदुग्धा गौर्वृषाक्रान्ता च संधिनीति शाश्वतः । विहन्ति गर्भं वेहत्, वेहृ प्रयत्नेऽस्य वा, वेहद्वृषोपग-तेति माधुरिः ॥ ६९ ॥ प्रजने गर्भग्रहणे (काल्या)प्राप्तकाला, वृषेणोपसरणीयोपसर्या, उपसर्या काल्या-प्रजने (सू०) इति साधुः । प्रष्ठं वहति प्रष्ठौही, वहश्च (सू०) इति ण्विः, वाहऊठ् (सू०) ङीप्, वाहऊठ् (सू०), एत्येधत्यूठ्सु (सू०) इति वृद्धिः । प्रष्ठौही गर्भिणीति सर्वे, असिक्नी बालगर्भिणीति माधुरिः, पलिक्नी बालगर्भिणीति माला । अचण्डा- अकोपनेत्यर्थः, बह्वादित्वात् (सू०) वा ङीष् । सुखेन क्रियते सुकरा, सुखाकरीत्यागमः । परमिच्छति परेष्टुका । सकृत्प्रसूता गृष्टिः ॥ ७० ॥ बष्कतेति कालः, औणादिकः (अयन्), सोऽस्त्यस्याः (बष्कयिणी), बष्कयणीति रम्याः । धयत्येनां धेनुः । (सुव्रता) सुशीलेत्यर्थः । पीनमूधोऽस्याः पीनोध्नी, ऊधसोऽनङ् (सू०), बहुव्रीहेरूधसो ङीष् (सू०)। पीवरस्तनी, स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादिति (सू०) ङीष् ॥ ७१ ॥ द्रोणं दोग्धि द्रोणदुघा, दुहः कब्घश्च (सू०)। धेनुष्या) संज्ञायां धेनुष्येति (सू०) साधुः, आ ऋणशुद्धेर्या बन्धके स्थापिता पीतदुग्धाख्या । (समांसमीना) समांसमां विजायते (सू०) इति साधुः ॥ ७२ ॥ उनत्त्यूधः । आप्यायत आपीनं, प्यायः पी (सू०), सोपसर्गाच्च (वा०), आङ्पूर्वस्या)न्धूधसोरेव स्यात् (वा०), ओदित्वात् (ओदितश्चेति) निष्ठानत्वम् । हम्भा(म्बा)रावो गवां ध्वनिः । शिवात्कन्, चिनोति वा शिवकः । कील्यते बध्यतेऽस्मिन्कीलकः । दीयते रक्ष्यतेऽनेनेति संदानं बन्धनरज्जुः । (दामनी) नित्यं संज्ञाछन्दसोः (सू०) इति ङीप् ॥ ७३ ॥ विशाखासु जातो वैशाखः, विशाखाषाढादण्मन्थदण्डयोः (सू०), विशाखस्यायं वा । मथ्यतेऽनेन मन्थः, पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण (सू०) । मथ्नाति मन्थानः, शानच् । (मन्थाः) मथिन्- शब्दस्य- इतोऽत्सर्वनामस्थाने (सू०), थोन्थः (सू०) । मन्थानार्थो दण्डो मन्थनदण्डः । स्वार्थे कः क्वचिल्लोपि । कुट्यति कुठरः, कुठरो वा दण्डकटके वर्तते । दण्डं विष्क-म्नाति दण्डविष्कम्भः, यस्मिन्बद्धा दण्ड आकृष्यते । मञ्जीरोऽपि, दण्डकीलकमित्येके । मथ्यते-ऽस्यां मन्थनी । गिरति दधि गर्गरी । कलशश्च ॥ ७४ ॥ उष्यते दह्यते गरो- उष्ट्रः । क्रमानेमयति क्रमेलकः । मं नयति मयः, मयते गच्छति वा, मयेत इत्येके । दासेरको दीर्घ-जङ्घो ग्रीवी रवणधूम्रकौ । कं शिरो रभत उत्तम्भयति करभो बालोष्ट्रः । (शृङ्खलकः) शृङ्ख-

शकृत्करिस्तु वत्सः स्याद्दम्यवत्सतरौ समौ ।
आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥
स्कन्धदेशे त्वस्य वहः सास्ना तु गलकम्बलः ।
स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥
युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
खनति तेन तद्वोढास्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥
धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ।
उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥
स तु सर्वधुरीणो यो भवेत्सर्वधुरावहः ।
माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥
अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी ।
वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥
द्विहायनी द्विवर्षा गौरेकाब्दा त्वेकहायनी ।
चतुरब्दा चतुर्हायण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

ह्रोर्ण्यः (सू०) । सन्यत उत्सृज्यते षण्डः । एषणमिट्, इषा चरति– इट्चरः स्वेच्छचारी, इत्वर इत्येके पेठुः ॥ ६२ ॥ वहत्यनेनेति वहः, गोचरसंचरेति (सू०) साधुः । सस्ति स्वपितीव व्याप्तिक्षमत्वात् षीयते वा सास्ना, षस स्वप्ने, षोऽन्तकर्मणि । नासाया नस्तः, नस्नासिकायास्तःक्षुद्रेष्विति (वा०) नस् । नस्तः क्रियते स्म नस्तितः, प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे इति (ग०) णिजन्तात् क्तः, नासायां कृतच्छिद्रो गौरित्यर्थः । नासिकायां भवे नस्ये नासाकृते रन्ध्रे रज्ज्वादिना– उत उतस्यूतो नस्योतः । प्रष्ठं वहं वा यदा वहति प्रष्ठवाड् युवा गौः, वहश्च (सू०) इति ण्विः । युगस्य स्कन्धकाष्ठस्य पार्श्वे गच्छति युगपार्श्वगो हलशिक्षार्थः । दमनाय योजित इत्येके । स्कन्धैकदेशदर्शनेनापि ग्रन्थकृता यदुक्तिस्तया नोध्याः ॥ ६३ ॥ (युग्य इ०) युगं प्रासङ्गं शकटं च वहति, तद्वहतिरथयुगप्रासङ्गम्–(सू०) इति यत्, शकटादण् (सू०) । (हालिक इ०) हलेन खनति, तेनदीव्यतिखनतीति (सू०) ठक् । हलं य- हति हलस्येदं वेति, हलसीराट्ठक् (सू०) ॥ ६४ ॥ (धुर्य इ०) धुरं वहति, धुरो यड्ढकौ (सू०), खः सर्वधुरा- दिति (सू०) योगविभागात्खः । धुरं धारयति धुरंधरः, संज्ञायां भृतॄवृजिधारिसहितपिदमः (सू०) इति खच् (मुम्), धूर्वहोऽन्य- था स्यात् । (एकधुरीण इ०) एकधुराल्लुक्च (सू०) इति खो लुक् च, लुक्पक्षे, ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे इति (सू०) अः समासान्तः ॥ ६५ ॥ (सर्वधुरीणः) खः सर्वधुरात् (सू०) । महीने पूज्यते मही, तस्या अपत्यं माहेयी । वसति क्षीरमस्यामुस्रा । शृङ्गिण्यादयः सामान्यान्यपि विशेषे वर्तन्ते ॥ ६६ ॥ अर्जुनीति [illegible] । न हन्यतेऽघ्न्या, अघ्न्यादयश्च (उ०) इति साधुः । रोहिणी शबला । अनड्वाही गौरनडुही, प्रशस्ता गोमतल्लिका । सुरभिर्नाम्ना । नीचैश्चरति नैचिकी, ठक्, अव्ययानां भमात्रे टिलोपोऽत्र कल्प्यः (वा०) । इतो गवाधिकारः प्राग्भूत् । शबलीति, अन्यतो ङीष् (सू०) । धवला, अन्तोदात्तत्वानुदात्तत्वाभावाद् ङीष् नास्ति । आद्यादिशब्दाः कृष्णापाटलाद्याः, द्वितीयाकृष्णाकपिलाद्याः ॥ ६७ ॥ द्वौ हायनौ वयः- प्रमाणमस्यां द्विहायनी तद्धितार्थे– अपरिमाणबिस्ताचितकम्बल्येभ्यो न तद्धितलुकि इत्यत्र (सू०) लुक्, दामहायनान्ताच्च (सू०) इत्यत्र हायनोऽद्वयसि स्मृते (सू०) इति ङीप् । द्वे वर्षे प्रमाणमस्या द्विवर्षा (गौः), वर्षाल्लुक् च (सू०), चिन्तयन्निति स्म् (सू०), अपरिमाणबिस्ताचितेति (सू०) ङीप् – नाहिन, कालसंख्या च न परिमाण- मिति । त्रिचतुर्भ्यां हायनस्य णत्वं वाच्यं (वा०) वयसि ॥ ६८ ॥ त्राटि कामयते पर्ता यथा । भवन्ति

सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥
जेमनं लेह आहारो निघसो न्याद इत्यपि ।
सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥
कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।
गोपे गोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥
गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं द्वौ गवीश्वरे ।
गोमान्गोमी गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवां व्रजे ॥ ५८ ॥
त्रिष्वाशितंगवीनं तद् गावो यत्राशिताः पुरा ।
उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥५९॥
अनड्वान्सौरभेयो गौरुक्ष्णां संहतिरौक्षकम् ।
गव्या गोत्रा गवां वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥ ६० ॥
वृषो(उक्षा)महान्महोक्षः स्याद् वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ।
उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्योजातस्तु तर्णकः । ६१ ॥

घस्त्व्.ती.क्तिति (सू०) ॥ ५५ ॥ जमेर्जेमनमाहुः, जमनं जवनं वा, यद् दुर्गः– जघनं भोजनं किंचित् । न्यदनं निघसः, नौणच (सू०) इत्यप्, घञोश्च (सू०) इति घस्त्रादेशः । णे (नौणच) न्यादः । प्रत्यवसानमभ्यवहारश्च । सुहितस्य भावः सौहित्यम् । फलति विशीर्यते फेला, फल चलने-र्सिद्धा ॥५६॥ काम्यते कामम् । पर्याप्तिः पर्याप्तम् । इष्यत इष्टम् । ईप्सितमनतिक्रम्य यथेप्सितम् । प्रायः क्रियाविशेषणान्येतानि अत एवाव्ययानि- एतेषां क्लीबे.ऽन्तो भ्रान्तः, यच्छाश्वतः– कामे निकामे कामा-र्हया । गाः पाति गोपः । गाः संख्याति गोसंख्यः । गा दोग्धि गोधुक् । आ–अभित ईरयति– आभीरः । वल्लयति गा वल्लवः, वल्लिः शौलो वा ॥ ५७ ॥ पादे बन्धनमस्य पादबन्धनम् । आदिशब्दादश्वादि । यादवं धनमित्येके पेठुः । गावः सन्त्यस्य गोमी, ज्योत्स्नातमिस्रेति (सू०) साधुः । व्रजन्त्यस्मिन्व्रजः– गोसंबन्धी समूहः, गोचरसंचरेति (सू०) साधुः । धनं च ॥ ५८ ॥ आशिता भोजिता गावो यत्राशितं-गवीनं, अषडक्षाशितंगिवति (सू०) स्वार्थे खः । आशितंगवीनमिति प्राच्यानां भ्रमः यत्रास्यन्-गावो यत्राशिताः पुरेति । उक्षति– उक्षा । भन्दते भद्रः । बलीन्वृदते बलीवर्दः । ऋषति गच्छति ऋषभः ॥ ५९ ॥ अनो वहत्यनड्वान्, अनसिवहेःक्विपनसोडश्च (उ०) । सुरभेरपत्यं सौरभेयः । गच्छति गौः । अवान्तरभेदोऽस्य न विवक्षितः । शाक्करशाक्वरौ शाक्वेयः शाक्करश्च । (औक्षकं) गोत्रोक्षोष्ट्रेति (सू०) वुञ् । संहतिरित्येव । (गव्या, गोत्रा) खलगोरथादिति (सू०) यः, इनित्रकट्यचश्चेति (सू०) त्रः । वत्सानां समूहो वात्सकं, गोत्रोक्षोष्ट्रेति (सू०) वुञ् । धेनूनां समूहो धैनुकम् , अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् (सू०)॥६०॥ महांश्चासावुक्षा च महोक्षः, अचतुरविचतुरेति (सू०) साधुः । एवं वृद्धोक्षजातोक्षौ । भाष्ये च – महोक्षः स्याद्वृद्धतरे स्थाण्डिलः स्कन्धवाहकः । षण्ढः पदृषणो क्लृटः कूटो भग्नविषाणकः ॥ जरंश्चासौ गौश्च जरद्गवः, गोरतद्धितलुकि (सू०) इति टच् । तृणोत्याति केवलं तर्णकः ॥ ६१ ॥ शकृत्करोति शकृत्करिः, स्तम्बशकृतोरिन् (सू०), व्रीहिवत्सयोरुपसंख्यानात् (वा०) । वसति वत्सः । दम्यार्हौ दम्यः । वत्सत्वं तनुत्वमस्य वत्सतरः, वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च (सू०) इति ष्टरच्, तनुत्वं द्वितीयवयः-प्राप्तिः । (आर्षभ्यः) षण्ढकर्मोचितः, षण्ढतेत्येके, अत एव ऋषभस्य प्रतिकृतिरार्षभ्यः, ऋषभोपम-

भिस्सटा दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ।
मासराचामनिस्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥
यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा ।
गव्यं त्रिषु गवां सर्वं गोविट् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥
तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।
पयस्यमाज्यदध्यादि द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥
घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतम् ।
तत्तु हैयंगवीनं यद् ह्योगोदोहोद्भवं घृतम् ॥ ५२ ॥
दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ।
तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥
मण्डं दधिभवं मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः ।
अशनाया बुभुक्षा क्षुद् ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥

निस्रावः ॥ ४९ ॥ यूयते पिष्टादिना यवागूः, सृयुवचिभ्योऽन्युजागूच् (उ०) । संज्ञितोष्णा — उष्णिका, ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम् (सू०) । श्रायते श्राणा, श्रा पाके । विलिम्पति विलेपी । तरला लेह्यत्वाच्चपला । अङ्क्षाभ्यञ्जने तलं कृश[स]स्तु निर्लोदनः । गोरिदं गवि भवमित्यादिष्वर्थेषु गव्यं क्षीरादि, सर्वत्रगोरजादिप्रसंगेयत् (वा०) । गोर्विट् गोविट् गोमयं च, गोश्च पुरीषे (सू०) मयट् ॥ ५० ॥ करोत्यग्निं करीषं शुष्कगोमयम् । दुह्यते दुग्धम् । घस्यते(अद्यते) क्षीरम्, घसेः किच्च (उ०) इतीरन्, गमहनजनेति (सू०) उपधालोपः, खरि च (सू०) इति चर्त्वम्, शासिवसिघसीनां च (सू०) षत्वम् । पीयते पयते वा रसत्वात्पयः, असुन् । सममिति पयसो नपुंसकत्वार्थम् । पयसो विकारः पयस्यं, गोपयसोर्यत् (सू०) । आदिशब्दान्नवनीतादि । दृप्यति(अनेन) द्रप्सम् । घनादन्यदघनमित्यर्थः, यन्माला — द्रप्सं दध्यघनं तथा । एतच्च द्रप्सं शरमिति भागुरिः सरमिति बुद्ध्वा मालाकारो भ्रान्तः । केचित्सरैस्तु नाशिता इत्ययमर्थः । मालायां तु विप्रलब्धः, यदाह दुर्गः — बाणद्रप्सौ शराविति । इत्थं तु समर्थ्यं, तरत् — उपरि प्लवमानं घनं दधि द्रप्सम् ॥ ५१ ॥ जिघर्ति घृतम् । आ — अञ्जनीयमाज्यं, आङ्पूर्वादञ्जेः संज्ञायां क्यप् (वा०) । हूयते हविः, हविष्यं च । सर्पति सर्पिः, इसन्तौ । दध्नो मथितान्नवं तत्कालं नीतमुद्धृतं नवनीतं नवोद्धृतम् । ह्योगोदोहस्य विकारो हैयङ्गवीनं, हैयङ्गवीनं संज्ञायां (सू०) इति साधुः । कात्यो नवनीतमित्याह ॥ ५२ ॥ मन्थदण्डेनाहतं दण्डाहतम् । कलश्यां गर्गर्यां भवं कालशेयम् । न रिष्यति हिनस्ति — अरिष्टं, सर्वरोगाजित्वात् । तद्विशेषमाह । तक्नोति द्रुतं गच्छति तक्रं चतुर्भागाम्बु । उदकेन श्वयति — उदश्विदर्धाम्बु । दध्नो मथनमात्रसाध्यं मथितं निर्जलम् । द्विगुणाम्बु श्वेतरसमर्धोदकमुदश्वितम् । तक्रं त्रिभागाभिमाम्बु केवलं मथितं स्मृतमिति धन्वन्तरिः ॥ ५३ ॥ दध्नो मण्डं द्रवो भागः, मस्यति परिणमते मस्तु । पीयते पीयूषः, नवप्रसूतगवीक्षीरं कथितं सत् । अशनेच्छा — अशनाया, अशनायोदन्येति (सू०) साधुः । भोक्तुमिच्छा बुभुक्षा । क्षुत्, क्षुध बुभुक्षायाम् । रोचकोऽस्त्री रुचिश्च । ग्रस्यते ग्रासः । के तालुनि वलते कवलः ॥ ५४ ॥ सहपानं सपीतिः । सहादनं सग्धिः, क्तिन्, बहुलं छन्दसि (सू०) इति घस्लृ, घसिभसोर्हलि च (सू०) इत्युपधालोपः, झलो झलि (सू०) इति सलोपः, झषस्तथोर्धोऽधः (सू०), झलां जश् झशि (सू०) । उदकेच्छा उदन्या, अशनायोदन्येति (सू०) साधुः । तर्षणं तृट् तर्षश्च, ञितृष पिपासायाम् । तृष्णा नानार्थे । अदनं जग्धिः अदोज-

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता ।
स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥
शूलाकृतं भटित्रं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ।
प्रणीतमुपसंपन्नं प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥
स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं संमृष्टं शोधितं समे ।
चिक्कणं मसृणं स्निग्धं तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥
आपक्वं पौलिरभ्यूषो लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः ।
पृथुकः स्याच्चिपिटको धाना भृष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥
पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्करम्भो दधिसक्तवः ।
भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिविः ॥ ४८ ॥

वक्तं मुनिग[दृढ]पर्युषितस्य दध्नः खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभस्य । सर्पिष्पलं मधुपलं मरिचाद्धि-कर्षं शुण्ठ्याः पलार्धमपि वा[चा]र्धपलं चतुर्णाम् । श्लक्ष्णे पटे ललनया मृदुपाणिघृष्टा कर्पूरधूलिसुरभी-कृतभाण्डसंस्था । एषा वृकोदरकृता सु[स]रसा रसाला या स्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥ तिम्यत्या-र्द्रीभवत्यन्नमनेन तेमनम् उपसेचनं कनापनाख्यम् । नितिष्ठत्यन्नमनेन निष्ठानम् । व्यञ्जनं च सूपाद्युपस्था-नात् ॥ ४४ ॥ इतः प्रभृति वासितान्ताः वाच्यलिङ्गाः । (शूलाकृतं) शूलात्पाके (सू०) इति डाच् । भटत्यनेन भटित्रम्, भट भृतौ । शूले संस्कृतं शूल्यं, शूलोखाद्यत् (सू०) । भाष्ट्रकं भृष्टं च । संस्कृतं सार्पिषं दध्ना सार्पिष्कं दाधिकं क्रमात् । उदलावणिकं तत्स्याद्यत्सिद्धं लवणाम्भसा ॥ उखायां स्थाल्यां संस्कृतम् उख्यम् । पिठरे संस्कृतं पैठरं, संस्कृतं भक्षाः (सू०) इत्यण् । रूपरसादिनिष्पन्नमन्नं, प्रणीयते स्म प्रणीतम् । परिव्ययपाकादिना प्रयत्ननिष्पन्नं प्रयस्तम् । संस्कृतम् (सू०) अनित्ये साधुः ॥४५॥ (पिच्छिलं) पिच्छादित्वादिलच् (लोमादिपामादीनि) । विजते चलति विजिलं, विज्जलमिति वैद्याः । वाल्माक्षि-कादिरहितं संमृष्टं, मृजू शुद्धौ । चिगित्यव्यक्तं कणति चिक्कणम् । मसूरति मसृणम् । भाव्यते मिश्रीक्रियते स्म भावितं, भुवोऽवकल्कने (धा० सू०) णिच् । वास्यते द्रव्यान्तरेण मेल्यते, धूपपुष्पादिना वाधिवास्यते वासितं, यन्मुनिः—धूपैर्वासितं विदुः ॥४६॥ ईषद्भृष्टं कलायादि— आपक्वं खरभर्जिताख्यम् । पु(पो)-लति वर्धते पौलिः, पुल महत्त्वे । ऊषरुजार्थादभ्यूषः, उपदाहार्थादभ्योष इत्येके । लज्यन्ते लाजाः, लज भर्जने । न क्षण्यन्तेऽक्षताः, चाद्विमक्तमात्तेपि पुंसि बहुत्वे च । अक्षता यवा इति पुराणे तन्मते पुंबहुत्वार्थो विधिः । आर्द्रे भृष्टं सस्यं तद्विपाकात्पृथुभवति चिपिटीभवति च, नीलधान्यं वा भृष्टमुलूखल-क्षोदाच्चिपिटीभूततण्डुलम् । धीयन्ते धानाः । भृष्टयव इति जात्याख्यायामेकत्वम् । धाना चूर्णं सक्तवः स्युर्धुस्तिः स्यान्मांसशष्कुली, भूस्तिरिति द्रावि[मि]डाः ॥ ४७ ॥ पुनाति पूपः । न पूय[य्य]तेऽपूपः पिष्टतण्डमयो मण्डकाख्यः, पूपी विशरम, अद्भिरप्यत इति नैरुक्ताः । (पिष्टकः) पिष्टाच्चसंज्ञायां (सू०) कन् । मुनिस्तु— अपूपः पिष्टपूपः स्यात्पूप मर्जाः प्रकीर्तिताः । केन रभ्यते मील्यते कीर्यते वा करम्भः । दध्युपसिक्ताः सक्तवः (दधिसक्ता) । भस्यते भक्ष्यते भिस्सा, भ्यसेः संप्रसारणं वा, ब्राह्मणभिस्सेति भाष्यम् । भज्यते भक्तम् । अद्यत इत्यन्धः सान्तम् । अद्यतेऽन्नम् । उनत्ति क्लिद्यत्योदनम् । भृशं दीव्यत्यनेन दीदिविः, स इति विशेषणात्पुंसि ॥४८॥ ईप्सिता भिस्सा भिस्सटा, यथोदनभिस्सटा, लक्ष्म्यानुराधाढः— यथा स्वर्गग्रामटिका, वधूटिका । मण्डः द्रव्याणामग्रं मुख्यं, मण्डयति मण्डः । मस्यति परिणमते मासरः । आचम्यत आचामः । निस्राव्यते

आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि तु ।
अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्चि(ञ्जि)कं ॥३९॥
सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिङ्गु रामठम् ।
तत्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥
निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।
सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशि(सि)रं च तत् ॥ ४१ ॥
सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ।
रौमकं वस्त(स्तु)कं पाक्यं बिडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥
सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तत्र मेचके ।
मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारे शर्करा सिता ॥ ४३ ॥

भवं सौवीरम् । (अभिषुतं) षुञ् अभिषवे, अस्माद्वा पृथक् कुल्माषाख्या नास्ति, चेद् भीमवत् स्यात् । कुल्माषैर्यवादिभिरर्धस्विन्नैरभिषूयते परिवास्यते स्म कुल्माषाभिषुतम् । अवन्तिषु सूयते– अवन्तिसोमम् । कुञ्जं लाति कुत्सितं जलमस्य वा कुञ्जलम् । काञ्चयति दीपयत्यग्निं बध्नाति दोषान्वा काञ्जिकं, काञ्च्या पूरे भवं वा । आह च (धन्वन्तरिः)– काञ्जिकं काञ्जिकं वीरं कुल्माषाभिषुतं तथा । अवन्तिसोमं धान्याम्लमारनालं महारसम् ॥ सौवीरकं सुवीराम्लं तथा शुक्तं तुषोदकम् ॥३९॥ सहस्रं बहु विध्यति सहस्रवेधि । जायते जतुकम् । बाह्लीकरामठवुग्रदेशौ । हिनोति हिङ्गु । अत्युग्रं भूतना-शनमगूढगन्धं च । तस्य हिङ्गोः पत्त्रा, कारोरियं कारवी संस्कर्त्री । बाष्पं स्रवति बाष्पिका । कबर्या-कृतिः कबरी, कर्वरीति च पाठभेदः ॥ ४० ॥ निशाह्वया रात्रिपर्याया नानार्थे रजनीत्वात् । काञ्चनवर्णा काञ्चनी । हरि पीतं वर्णं द्रति (गच्छति) हरिद्रा । वरो वर्णोऽस्त्यस्या वरवर्णिनी । आह च– हरिद्रा पीतिका पिङ्गा र(रं)जनी रजनी[काञ्चनी] निशा । गौरी वर्णिनी पीता हरिता वरवर्णिनी ।, लुनाति जाड्यं लवणं, नन्द्यादित्वाल्ल्युः (सू०), णत्वं च । अश्नोति व्याप्नोति– अक्षीवम् । उश्यते वशिरं, वश कान्तौ ॥ ४१ ॥ सिन्धुनद्युपलक्षिते देशे भवं सैन्धवम् । शीतं शिनोति शीतशिवं, उष्णवीर्यत्वात् । मणिबन्ध-गिरौ भवं माणिबन्धम् । मणिमन्तं(न्थं) माणिमन्थं बाहुः । आह च– सैन्धवं स्वादु सिन्धूत्थं नादेयी-(यं) सिन्धुजं शिवं । शुद्धं शीतशिवं चान्यन्माणिबन्धं शिलानकम् ॥ रुमायामाकरे भवं रौमकम् । वस्तगन्धि वस्तकं नाम लवणं, रौमके वस्तकं वदन्तीति माला । पाके साधु पाक्यं पक्तव्यं वा कक्षरा-ख्यम् । बिलति भिनत्ति मलं बिडम् । कृतकस्य लवणस्य द्वे नामनी, पाक्यबिडलवणयोर्भेदेपि कृतकत्वा-देक्यम् । स्यर्थे पाक्यं बिडलवणं यवक्षारः काचश्चेति ॥ ४२ ॥ सुवर्चलाकरे भवं सौवर्चलं, सुवर्चस्ये-दमग्निदीपनं लाति वा, वर्च दीप्तौ, अच । अश्नोति व्याप्नोत्यक्षम् । रोचतेनेन रुचकम् । पूयगन्धं च । तिलति स्निह्यति तिलकम् । तत्र तस्मिन्मेचके कृष्णे लवणे वर्तते, पूर्वं तु मधु(र)लवणम् । अगन्धं कृष्णलवणं तिलकमित्येके, यद्वैद्याः– कृष्णे सौवर्चलगुणा लवणे गन्धवर्जितं । मदं स्यन्दते मत्स्यण्डी सामान्यशर्करा, मत्स्यानमति रुजति मत्स्य(त्स्या)ण्डीति वैद्याः, यद्धन्वन्तरिः– शर्करोक्ता तु मीनाण्डी श्वेता मत्स्यण्डिका सिता । मत्स्यण्डिकाखण्डसिताः क्रमेण गुणवत्तरा इति तु वाह(ग्भ)टः । फाण्यते द्रवत्वात्फाणितं खण्डश्वेता । क्षौद्रकं स्विक्षुरसविकारः खण्डवत् । शीर्यते शर्करा । साय्यते सिता खण्डशर्कराख्या ॥४३॥ कूर्चस्तत्(क)मस्तु तदस्त्यस्याः कूर्चिका, कूचति कूचिका. कुचीकेत्येके किला-टिकाख्या । रसमलति रसाला । मार्ज्यते मार्जिता दधिसितामरीचादिकृतं लेह्यं, यत्सूपशास्त्रम्– अर्धा-

घटः कुटनिपावस्त्री शरावो वर्धमानकः ।
ऋजीषं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥
कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ।
सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥
दर्विः कम्बिः खजाका च स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।
अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुरस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥
कडम्बश्च कलम्बश्च वेषवार उपस्करः ।
तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्लमथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥
मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धार्मपत्तनम् ।
जीरको जरणोऽजाजी कणा कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥
सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।
आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादथ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥
कुस्तुम्बरु च धान्याकमथ शुण्ठी महौषधम् ।
स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

चषको मल्लिका पारी च ॥ ३२ ॥ कुत्सितं तन्यते कुतूः । कृत्तेश्चर्मणः (स्नेहपात्रम्) । ह्रस्वा कुतूः कुतुपः, कुत्वा डुपच् (सू॰) । आ- उप्यते- आधेयमस्मिन्नावपनम् । भण्ड्[य]त्याधेयं भाण्डम्, भडि परिभाषणे । पात्याधेयं पीयतेऽस्माद्वा पात्रम् । अमत्याधेयमत्रामत्रम् । भज्यतेऽस्मिन्नाधेयं भाजनम् । भाण्डावपने पृथगाहुः, यन्मुनिः- उष्ट्रिकादि तु यद्भाण्डं सर्वमावपनं विदुः ॥ ३३ ॥ दृणाति पाक्यं दर्विः । काम्यते कम्बिः । खजति मथ्नाति खजाका । ततं दुनोति खण्डयति तर्दूः, तनोति वा । दारुमयो हस्तप्रतिरूपो दारुहस्तकः, दर्वीभेदोऽयम् । शक्नोति देहं शक्यतेऽनेन वा भोक्तुं शाकम् । हरितकं नीलत्वात् । शिनोति शिग्रुः, द्वयर्थे शिग्रुः शोभाञ्जनं हरितकविशेषश्च ॥ ३४ ॥ अस्य शाकस्य नाडी, कडति के लम्बते वा कडम्बः (कलम्बः), शाकविशेष इत्येके, प्राकृते दस्य(श्च) लडात्कदम्ब इत्याहुः । कदंबो वा । वेषं व्याप्तिं वृणीते वेषवारः । कासमर्दकसुरसादिर्येन मांसान्युपस्क्रियन्ते सोऽयमुपस्करः, समवाये च (सू॰) इति सुट् । तद्भेदानाह । तिन्तिडिशैलजं तिन्तिडीकम् । चुक्रं, चुक व्यथने । वृक्षस्याम्लमम्लवेतसमाहुः । वेल्ले वेल्लतटे जायते वेल्लजं, वेल्लाह्वयः शार्ङ्ग इत्येके ॥ ३५ ॥ म्रियते जिह्वानेन मरीचम् । सौक्ष्म्यात्कोलकं, कुल बन्धे । कृष्णं वर्णेन कर्षति तैक्ष्ण्याद्वा । ऊषति रुजति- ऊषणम् । धर्मपत्तने भवं धार्मपत्तनम् । आह च- मरीचं वलितं श्यामं वेल्लकं(जं) कृष्णमूषणम् । यवनेष्टं सितवृन्तं कोलकं धार्मपत्तनम् ॥ जीर्यतेऽनेनान्नं जीरकः । जरयतीति जरण इति सभ्याः । अजं स्वाभाविकं मन्दाग्नित्वमजति- अजाजी, स्त्री । कणाः सन्त्यस्याः कणा, अर्शआदिभ्योऽच् (सू॰) । कणा कृष्णा तु पिप्पलीत्येके पेठुः ॥ ३६ ॥ सुष्ठु सुवति प्रेरयति दोषान् सुषवी । कारोरियं कारवी । पृथ्वी बृहत्कणा । काला वर्णेन । उपकुञ्चयत्यल्पीकरोति दोषानुपकुञ्चिका । आह च- उपकुञ्चिकोपकुञ्ची च कालिका चोपकालिका । सुषवी कुञ्चिका कुञ्ची पृथ्वीका कृष्णजीरके ॥ (आर्द्रकं) आर्द्रात्संज्ञायां कन् (सू॰) । शृङ्गोपलक्षितं वेरं देहोऽस्य शृङ्गवेरम् । आह च- महौषधं शृङ्गवेरं कटुभद्रं तथार्द्रकम् । छत्रातपत्रा, छादयति दोषान्वा छत्रा । वितुदति मन्दाग्नित्वं वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥ कुत्सितं तुम्बति कुस्तुम्बरु, तुबि तुपि अर्दने, पारस्करादित्वात्सुट् (सू॰) । धान्यमकति धान्याकं, अणुका धान्यकं च । शुण्ठति शुष्यति शुण्ठी । नागराख्ये देशे भवं नागरम् । विश्वभेषजमनेकदोषजित् । विश्वं विश्वा च भीमवत् ॥ ३८ ॥ आरनालो भक्तं तज्जमारनालम् । सुवीरेषु प्रायो

तृणधान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।
अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥
प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री चालनी तितउः पुमान् ।
स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिण्डौ कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥
समानौ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।
पौरोगवस्तदध्यक्षः सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥
आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः ।
आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥
अश्मन्तमुद्घा(द्धा)नमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ।
अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥
हसन्यप्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ।
क्लीबेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥
अलं(लि)जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालूर्गलन्तिका ।
पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

उद्गूर्णोऽस्त्वखवत् पृषोदरादित्वात् (सू०) उभयम् ॥ २५ ॥ प्रस्फोट्यतेऽसारं बहिः क्रियतेनेन प्रस्फोटनम् । शीयते शीर्यते वानेन शूर्पं, शूर्प माने वा । चाल्यतेऽनेनेति चालनं, कात्यः– क्षुद्रच्छिद्रसमोपेतं चालनं तितउः स्मृतः । तनोति सारं तितउः, तनोतेर्डउःसन्वच्च (उ०) । परिपवनं च । समानाविव्येव । सीव्यते स्म स्यूतः, वस्त्रावपनं च । प्रसीव्यते प्रसेवकः । कण्ड्यते कण्डोलः । पिण्ड्यते पिण्डः, वंशदलादिमयं भाण्डम् । पिटकोपि । कटस्यावृणोति कटः । क्लिश्यते क्षिप्यतेऽस्मिन् किलिञ्जः, वीरणतृणादिमयं कुणालाख्यम् ॥ २६ ॥ रस आस्वादोऽस्त्यस्यां रसवती । महदनोऽस्य महानसं, अनसोपकरणं लक्ष्यते, अनोऽश्मायःसरसामिति (सू०) समासान्तष्टच् । पुरो गोमांसं जलं वास्याः पुरोगुस्तस्या रसवत्या अयं पौरोगवः । सूपं कुर्वन्तीत्युपलक्षणं मांसशाकादेः । (बल्लवः)वल्लिः सौत्रः प्रीत्यर्थः ॥ २७ ॥ (आरालिकाः, इ०) आरालमन्धः ओदनं च पण्यमेषाम् । सूदयन्ति तण्डुलान्सूदाः । गुणयन्ति गुणाः । भक्तकाराश्च । अपूपाः कन्दुश्च पण्यमस्य, इसुसुक्तान्तात् (सू०) कः, कान्दुक इति न्याय्यम् । खरविशदमभ्यवहार्यं भक्ष्यम् । पौरोगवाद्या वाच्यलिङ्गाः ॥ २८ ॥ अश्नुतेऽश्मन्तम् । उद्ध(द्ध)न्नते(ति) उद्धा (ध्मा)नम् । अधिश्रीयतेऽनयाधिश्रयणी, श्रीञ् पाके । चुल्ल भावकरणेऽस्माच्चुदेर्वा चुल्लिः । अन्तोऽस्त्यस्यामन्तिका, अन्त्यधिश्रयणी भवेदिति माला । अङ्गारा धीयन्तेऽस्यामङ्गारधानी समासैः । हसन्त्यङ्गारैर्हसनी ॥ २९ ॥ अङ्गत्यङ्गारः, लिङ्गार्थं विधिः । अलन्ति वारयन्त्येतदलातं न लान्ति वा (अलातम्) । उल्का मुखस्युल्मुकमर्धदग्धं काष्ठं, उलति वा, उलिः सौत्रः । अम्ब्यतेऽर्थ्यतेऽम्बरीषम् । भृज्ज्यतेऽत्र भ्राष्ट्रम् । वेत्येव विकल्पेन कन्दुर्ना पुमान्, पक्षे स्त्री, कन्दत्यनेनां कन्दुः । स्वेदयति स्वेदनी ॥ ३० ॥ अलं जीर्यत्यलञ्जरो महाकुम्भः । मणत्यजसा ध्रियमाणो मणिकः । किरत्यम्बु कर्करी । आलात्यालूः, अस्त्र उदयमेऽस्मादालूर्वा । गलत्यम्भोऽस्या गलन्तिका, वर्धनीत्यर्थः । पि(पे)ठति पिठरः पिठरी च, पिठ अवयवे । तिष्ठत्यस्यां स्थाली । स्थालं कुम्भी च । ओखत्युखा । कुण्डयते पच्यतेऽस्मिन्कुण्डं कुण्डी च । कं लाति कलयति वा कलशः ॥ ३१ ॥ घटते घटः । कुटति कौत्यम्भसा वा कुटः । निपिबन्त्यस्मान्निपः । शीर्यमाणमवति शरावः । वर्धते मृत्पिण्डाद्वर्ध्यते छिद्यते वा चक्राद्वर्धमानकः । शाल्माजिरोपि । अर्घ्यते पाकोत्कर्षादृजीषं, ऋजीषमिति तान्त्रिकाः, ऋजिभृजी भर्जने । पिष्टकृतं भक्ष्यं पच्यतेऽस्मिन् पिष्टपचनम् । काम्यतेऽस्मात्कंसः ।

सिद्धार्थस्त्वेष धवलो गोधूमः सुमनः समौ ।
स्याद्यावकस्तु कुल्माषश्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥
द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।
क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकासुरी ॥ १९ ॥
स्त्रियौ कङ्गुप्रियङ्गू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा ।
मातुलानी तु भङ्गायां व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥
किंशारुः सस्यशूकं स्यात्कणिशं सस्यमञ्जरी ।
धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥
नाडी नालं च काण्डोऽस्य पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।
कडङ्गरो बुसं क्लीबे धान्यत्वचि पुमांस्तुषः ॥ २२ ॥
शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्बा त्रिषूत्तरे ।
ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥
माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ।
शालयः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥

मंथ्यते हरिमन्थः ॥ १८ ॥ तिलाभिष्फलात्पिञ्जपेजौ वक्तव्यौ (वा०)। जर्तिलः स्याद्वनतिलः । क्षौत्यनेन क्षवः । क्षुतमभिजनयति क्षुताभिजननः । कृष्णसर्षपोयं राजसर्षपाह्वयः । राजते राजिका । कृष्णा वर्णेन, कर्षति विलिखति वा । अस्यते- आसुरी, असुरर्षत्व वा ॥ १९ ॥ कुत्सितं कृत्स्याङ्ग्यते कङ्गुः, कङ्गुः कङ्गुर्थेत्येके । प्रीणाति प्रियङ्गुः । न तस्यते- अतसी । अवते- उमा, ऊङ् शब्दे । क्षौत्यनया भुक्तया क्षुमा । न सोल्यते मातुलानी । भज्यते भङ्गा । शणोऽपि । अणुरल्पकणत्वात् , अणति पर्दत्यनेनेति वा । तुवरी स्वरके वल्ले निष्पावे श्यामाक्षः श्यामके च ॥ २० ॥ कुत्सितं शृणाति किंशारुः । स्यति शूकम् । कणाः सन्त्यस्य कणिशम् । धान्ययवादिशिलः, शिलं च । धन्यतेर्ध्यते धान्यम् । स्तम्बं करोति स्तम्बकरिः, स्तम्बशकृतोरिन् (सू०)। र्शी[सी]त्यं च । कुसूलो वलजः कोष्ठागारं धान्यादिकोष्ठकः । तृणादेर्यः स्तम्बो नालं, स गुप्यतेनेनेति गुच्छः । यं प्रति स्तम्बोऽप्रसिद्धस्तं प्रत्यन्यपर्यायेष्वनुवादो कार्यो । एवं सर्वत्रोन्नेयम् ॥ २१ ॥ अस्य गुच्छस्य यः काण्डः- कण्ड(य)त्यनेन- सा नाडी, नल(ती)ति । (नालं) णल गन्धे । स काण्डः पलालः, पलतीति । कटस्याङ्गमीति, कट्(ड्) अङ्गं रूपमस्य कडङ्गरः । बुस्यते- उत्सृज्यते बुसं तृणादिक्षोदः । तुष्यत्यनेनाग्निस्तुषः ॥ २२ ॥ स्यति शूकम्, श्लक्ष्णं च तीक्ष्णाग्रं च तत् । सस्यादेरन्यत्र वृश्चिकादिकण्टकोऽपि शूक इति किंशारोरन्यत्र निर्देशः, शूकधान्यशमीधान्यभेदार्थं वा पुनरुक्तः । शाम्यत्यस्यां सस्यं शमी । शिनोति शिम्बा । शामः शिम्बिरित्यपि । त्रिष्वाद्याश्चत्वारो वाच्यलिङ्गाः । ऋद्धं संसिद्धं राधेः, ऋद्धं संपन्नमित्यन्ये ऋधेः । आवसितं रक्षार्थमाच्छादितं, षव आच्छादने, वा- अवसितं निष्पन्नमित्येके । पूयते स्म पूतं निर्बुसीकृतम् । बहु लाति बहुलं सारं, ततश्च्विः, मार्जनीशोधितमित्येके ॥ २३ ॥ वर्तन्त इति शेषः । (माषादयः) आदिशब्दान्मुद्गमसूरादयः । (यवादयः) आदिशब्दाद् गोधूमशालयः । शाल्यते शालिः । कल्यते कलमः । आद्यशब्दाद्राजशाल्याद्या अकलाः । षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते । आद्यशब्दात्कलमाद्याः स्वकजाः । अमी इति पुंलिङ्गनिर्देशान्माषाद्याः शाल्यन्ताः पुंसि ॥ २४ ॥ नियतेर्भ्रियन्ते नीवाराः, मुन्यन्नत्वात्, नीवृधान्य इति (सू०) घञ् । बहुवचनाच्छ्यामाकादयोऽपि । गवे(वि)अम्भसि निधीयते गवेधुर्नाम मुन्यन्नम् । अयोऽग्रमस्य- अयोग्रं, अयोनिरित्येके पेठुः । मुस्यते खण्ड्यतेऽनेन मुसलम् । ऊर्ध्वं खं लाति (उदूखलमुलूखलं)

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु ।
कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥
लोष्टानि लेष्टवः पुंसि कोटिशो लोष्टभेदनः ।
प्राजनं तोदनं तोत्त्रं खनित्रमवदारणम् ॥ १२ ॥
दात्रं लवित्रमाबन्धो योत्रं योक्त्रमथो हलम् ।
निरीषं कुटकं फालः कृषको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
गोदारणं च सीरोऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ।
ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥
पुंसि मेथिः(धिः) खलेदारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।
आशुर्व्रीहिः पाटलः स्याच्छितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥
तोक्मस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः ।
हरेणुखण्डिकौ चास्मिन्कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥
मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्ठ(ष्ट)कमयुष्टकौ ।
वनमुद्गे सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

क्ष्यतेऽस, फलैर्हीय(हिंस्य)ते वा क्षेत्रं, क्षि निवासे, क्षिणु हिंसायां वा । अस्य क्षेत्रस्य समूहेऽर्थे– एते स्युः । (कैदार्यं, इ०) केदाराद्यञ्चेति (सू०) यञ्वुञ. (कैदारिकं) ठञ्कवचिनश्चेति (सू०) ठञ् । (क्षेत्रं) क्षेत्राद्-आचित्तहस्तीति (सू०) ठकि प्राप्ते भिक्षादित्वात् (सू०) अण् ॥ ११ ॥ लुप्यते लुपति वा लोष्टम् । लेष्टुश्च मृत्खण्डः । कोटिभिः कोणैः स्यति भिनत्ति कोटिशः । प्राज्यते (प्रवीयते) प्रेर्यतेऽनेन प्राजनं, वायाविति (सू०) पक्षेऽजेर्वी, प्रवयणं च । तुद्यतेऽनेनेति तोत्त्रम् । प्रेषणं च । खन्यतेऽनेन खनित्रं कुद्दालादि ॥ १२ ॥ द(दा)न्ति लुनन्ति चानेन, दाम्नीतिष्ट्रन् (सू०) । (लवित्रं) अर्तिलूधूसूखनसहचरइत्रः (सू०) । आबध्यते यूयते युज्यते चानेनेति, चर्मरज्जुः । इतो हलप्रकरणमारब्धमित्यर्थः । निष्क्रान्ता– ईषास्मान्निरीषम् । कुटति कुटकं यस्याग्रे फालो बध्यते । फलति विशीर्यते भूमिरनेन फालः । कृषति क्ष्मां कृषकः, कृञ्–शिल्पिसंज्ञयोः (उ०) । कृषिकः फलं च । लङ्गति लाङ्गलम् । हलति विलिखति हलम् ॥ १३ ॥ गौर्भूमिर्दार्यतेऽनेन गोदारणम् । सीयते बध्यतेऽनेन सीरः । शाम्यति शम्या । ईषति– ईषा, ईष उञ्छे । स्यति भुवं सीता हललेखा ॥ १४ ॥ मीयते क्षिप्यते मेथिः, मेथन्ते (सं)गम्यन्तेऽस्मिन्वा, खलेदार्विति हलदन्तात्सप्तम्याः (सू०) इत्यलुक् , पशुबन्धननिमित्तम् । खलेवाली च । खलं तु खलधान[धान्य]स्थम् । अश्यते अश्नुते वा– आशुः, शीघ्रपाकी वा, यद् गुर्गः– आशुव्रीहया शालिव्रीह्योः । व्रीणाति व्रीहिः षष्टिकादिधान्यविशेषः, व्री भरणे, यतः– व्रीहिर्यवो मसूरो गोधूमो मुद्गमाषतिलचणकाः । अणवः प्रियङ्गुकोद्रवमयुष्टकाः (शालिराढक्यः) ॥ द्वौ च कलायकुलत्थौ शणसप्तदशानि धान्यानि । शितस्तीक्ष्णः शूकः किंशारुरस्य शितशूकः । यूयते यवः ॥ १५ ॥ तत्र नाले यवे, तुज्यते तोक्मः, तुजिर्हिंसार्थः । कल[म]यति सारमयते कलायः, कं लाति वा । सीदन्त्यनेन सतीनकः, सातीनकोऽपि । ह्रियते हरेणुः । खण्ड्यते खण्डिकः । कोरं भक्षं दूषयति कोरदूषः कदन्नत्वात् । केनाप्यमना– उद्यते कोद्रवः ॥ १६ ॥ (मसूरः) मसी परिणामे । मङ्क्ष्यतेऽनेन मकुष्टः । मीयते मयुष्टकः । सरति सर्षपः । तुदति तन्तुभः । कुत्सितमम्बते कदम्बः ॥ १७ ॥ (सिद्धार्थः) सिद्धयोजनो रक्षोघ्नत्वात् , एष सर्षपः । गुध्यति परिवेष्टयति गोधूमः, गां धुनोति वा । सुष्ठु मन्यते सुमनः, अकारान्तः । यूयतेऽम्भसा यावकः । कोलति कुलेन मस्यति परिणमति वा कुल्माषः, अर्धस्विन्नो यवादिः, धान्यविशेष इत्येके । चण्यते दीयते चणकः । हरिभि

उद्धारोर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ।
याच्ञयाप्तं याचितकं निमयादापमित्यकम् ॥ ४ ॥
उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ।
कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥
क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ।
क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥
यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि तत् ।
तिल्यतैलीनवन्माषोमाणुभङ्गाद् द्विरूपता ॥ ७ ॥
मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम् ।
बीजाकृतं तूप्तकृष्टे सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥
त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।
द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥
द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।
खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

इति ल्यप्- तुक्, तत आगतेर्थे, अपमित्ययाचिताभ्यांकक्नौ (सू०)। मुनिस्तु- निमयः परिवर्तः स्यादुद्धारोऽप्यापमित्यकः ॥ ४ ॥ उत्तम ऋणे उत्तमर्णः प्रयोक्ता, अधम ऋणे- अधमर्णो ग्राहकः, सुप्सुपेति (सू०) समासः । कुसीदं गृह्णाति कुसीदिकः, कुसीददशैकादशात्ष्ठन्ष्ठचौ (सू०)। वृद्धिं गर्ह्यां प्रयच्छति वार्धुषिकः, प्रयच्छतिगर्ह्यमिति (सू०) ठक्, वृद्धेर्वृधुषिभावः (वा०)। (वार्धुषिः) इन्त्यादिप्रन्तोपि, यन्मनुः- श्रोत्रियस्य कदर्यस्य वदान्यस्यापि वार्धुषी । वृद्धिमाजीवति वृद्ध्याजीवः । द्वैगुणिकश्च । वृद्धिर्लाभः कलान्तरम् ॥ ५ ॥ कर्षति कृषिकः, औणादिक इकः (कृषिकृष्योःकिकन्)। कार्षकोपि । कृषिरस्त्यस्य कृषीवलः, रजःकृष्यासुतीति (सू०) वलच्, वले (सू०) इति दीर्घः । व्रीहीणां भवनं क्षेत्रं व्रैहेयं, व्रीहिशाल्योर्ढक् (सू०) ॥६॥ यवानां भवनं क्षेत्रं यव्यं, यवयवकषष्टिकाद्यत् (सू०)। यवकोल्पयवः । षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते। उपाध्यायो यवादिभवने हितमिति पाठं परिकल्प्य प्रस्तावात्- चोद्यमित्यशुद्धं पठति । तिलानां भवनं क्षेत्रं, विभाषातिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः (सू०) इति यत्खञौ । एवं माषादीनां द्विरूपता- माष्यं माषीणं, उम्यमौमीनं (उमा-अतसी), अणव्यमाणवीनं, भङ्ग्यं भाङ्गीनम् ॥ ७ ॥ मुद्गानां कोद्रवाणां च भवनं क्षेत्रं, धान्यानांभवनेक्षेत्रेखञ् (सू०)। आदिशब्दान्मासूरीणादि । शेषाणि व्रीह्यादिभ्योन्यानि । शाकक्षेत्रे द्वयं- शाकशाकटं शाकशाकिनं, भवने- क्षेत्रेशाकटशाकिनौवक्तव्यात् (वा०)। अबीजं सबीजं संपन्नं बीजाकृतं, कृञोद्वितीयतृतीयशम्बबीजात्कृषौ (सू०) इति डाच् । आदावुप्तं पश्चात्कृष्टं (उप्तकृष्टं), पूर्वकालैकेति (सू०) समासः । सीतया हललेखया समितं संगतं सीत्यं, नौवयोधर्मेति (सू०) सीतया समिते यत् । हलेन कृष्टं हल्यं, मतजन- हलात्करणजल्पकर्षेषु (सू०) इति यत् ॥ ८ ॥ त्रिगुणं कृष्टं क्षेत्रं त्रिगुणाकृतं, संख्यायाश्चगुणान्तायाः (सू०) इति डाच् । त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि प्राग्वयत्, रथसीताहलेभ्यो यद्विधौ तदन्तविधिः (येनविधि- स्तदन्तस्य)। सर्वं पूर्वं डाच्-यच, द्वितीयाकृतं द्विहल्यं द्विसीत्यम् । शम्बाकृतं हि सम्यक् कृष्ट्वा तिर्यक् कृष्टमाहुः ॥ ९ ॥ द्रोणस्य वापः क्षेत्रं द्रौणिकं, उप्यतेस्मिन्वापः, तस्यवापइति (सू०) ठञ् । आदि- शब्दात्प्रस्थादिभ्यः, संभवत्यवहरतिपचतीति (सू०) ठनि प्रास्थिकादयः । (खारीकः) खार्या ईकन् (सू०)। वाच्यलिङ्गत्वात्क्षेत्रम् ॥ १० ॥ उप्यतेस्मिन्वप्रम् । के जले दार्यते केदारः । क्षीयते धान्ये-

श्मशानं स्यात्पितृवनं कुणपः शवमस्त्रियाम् ।
प्रग्रहोपग्रहौ बन्द्यां कारा स्याद्बन्धनालये ॥ १२० ॥
पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं जीवोऽसुधारणम् ।
आयुर्जीवितकालो ना जीवातुर्जीवनौषधम् ॥ १२१ ॥
इति क्षत्त्रियवर्गः । ८ ।

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।
आजीवो जीविका वार्त्ता वृत्तिर्वेतन(वर्तन)जीवने ॥ १ ॥
स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।
सेवा श्ववृत्तिरनृतं कृषिरुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥
द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते ।
सत्यानृतं वणिग्भावः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥

जयाख्यस्य वायोः शवे संभवात् । शवति यात्यस्माज्जीवः शवः । प्रगृह्यते बध्यते प्रग्रहः । बन्द्यते बध्यते बन्दी हठहृता स्त्री, बलवतो हस्तक्षिप्तो राजपुत्रादिश्च, यदाहुः— बन्दी स्यात्पणबन्धस्थः । कीर्यते क्षिप्यतेऽस्यां कारा, भिदाद्यङ् (षिद्भिदादिभ्योऽङ् इति)॥ १२० ॥ अस्यन्तेऽसवः, स्वभावाद्बहुत्वे पुंलिङ्गः । प्राणन्त्यमीभिः प्राणाः, एवं शब्दात्पुंसि भूम्नि । प्राणो नाम वायुरित्येकत्वमर्जीवार्थत्वात् । जीवनं जीवः प्राणधारणम् । जीवापि । आयत्यायुर्जीविताबधिः, उसन्तः क्लीबे, छन्दस्युदन्तोऽपि । जीवत्यनेन जीवातुः, जीवनायौषधं जीवनरक्षोपायः, यथा— जीवातवे विसृज शूद्रमुनौ कृपाणम् (उ०), जीवितौषधं चेत्युपाध्यायः ॥ १२१ ॥ इति क्षत्त्रियवर्गः । ८ ।

ऊर्वोर्भवा ऊरव्याः, शरीरावयवाच्चेति (सू०) यत्, यच्छ्रुतिः— ऊरू तदस्य यद्वैश्यः । अरणीयोऽर्यः, अर्यःस्वामिवैश्ययोः (सू०) इति साधुः । विशोऽपत्यं जातिर्वैश्यः, गर्गादिभ्यो यञ् (सू०)। भूमिं स्पृशन्ति कृष्यादिना भूमिस्पृक् । विशतीति विट् । (आजीवः) आजीवन्त्यनेनेति करणे भावे वा घञ् । जीवनं जीविका, रोगाख्यायां (सू०) इत्यत्र धातुमात्राद् भावे ण्वुल् वक्तव्यः (धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल्) । कृष्यादिस्तूपचारात् । वर्तनं वृत्तिरस्त्यस्यां वार्त्ता, प्रज्ञाश्रद्धार्चावृत्तिभ्यो णः (सू०) । वर्तन्तेऽनया वृत्तिः । वेति खादत्यनेन वेतनम् ॥ १ ॥ कर्षणं कृषिः, इक्कृष्यादिभ्यः (वा०) । पशुपालस्य कर्म पाशुपाल्यम् । वणिजः कर्म वाणिज्यम्, ब्राह्मणादित्वात्ष्यञ् (गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च) । दूतवणिग्भ्यां चेति वक्तव्यात् (वा०) वणिज्यापि । चात्कुसीदम् । ऋतामृताभ्यां जीवेत्तु मृतेन प्रमृतेन वा । सत्यानृताभ्यामपि वा न श्ववृत्त्या कथंचनेति ये षड्वृत्तिभेदास्तानाह । (सेवा) शुन इव वृत्तिः परपिण्डोपजीवितत्वादधमेत्यर्थः । न ऋतमनृतं पापिष्ठत्वात्, प्रमृतमिति तु लभ्यः पाठः । उञ्छो धान्यकणोच्चयः— शिलं धान्यमञ्जरी, समस्तं व्यस्तं विपर्यस्तं वैतत्, वन्यत्वादृतं सत्यम् ॥ २ ॥ मृतं निर्जीवमिव । अमृतमनश्वरम् । किंचित्सत्यं किंचिच्चासत्यं, अत्र मनुः— ऋतमुञ्छशिलं ज्ञेयं स्यादयाचितममृतम् । मृतं तु याचितं भैक्ष्यं प्रमृतं कर्षणं स्मृतम् ॥ सत्यानृतं तु वाणिज्यं तेनापि खलु जीव्यते । सेवा श्ववृत्तिराख्याता तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ अर्यते स्म ऋणं, ऋणमाधमर्ण्ये इति (सू०) साधुः । (पर्युदञ्चनं) परित उदञ्चनमुत्तमर्णादुद्धारत्वेन ग्रहणम् ॥ ३ ॥ अर्थस्य प्रयोगः कलान्तरेण दानम् । कुत्सितं सीदन्त्यत्र कुसीदम् । (याचितकं) अपमित्ययाचिताभ्यां कक्नौ (सू०) । विनिमयाद् भाण्डपरिवर्तनादागतमापमित्यकं, मेङ् प्रणिदाने, उदीचांमाङोव्यतीहारे (सू०), मयतेरिदन्यतरस्याम् (सू०)

वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ।
प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ॥ ११२ ॥
अपक्रमोऽपयानं च रणे भङ्गः पराजयः ।
पराजितपराभूतौ त्रिषु नष्टतिरोहितौ ॥ ११३ ॥
प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ।
प्रवासनं परासनं निषूदनं निहिंसनम् ॥ ११४ ॥
निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ।
निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ ११५ ॥
निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।
उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ॥ ११६ ॥
आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथ(न्मथ)वधा अपि ।
स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ॥ ११७ ॥
अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ।
परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ॥ ११८ ॥
मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ।
कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ॥ ११९ ॥

समियुद्रुदुवः (सू०) इति घम् ॥ ११२ ॥ अपद्वारेण क्रमणं (अपक्रमः) । भङ्गोपसरणं, अन्यत्रो॰पचारात् । परिभूतोऽभिभूतोऽपि । त्रिष्वित्यस्यैव, नश्यति स्म नष्टम्– अदृश्यम् । तिरोधीयते स्म तिरोहितं गृहीतदिक्कम् ॥ ११३ ॥ अत्राहिंसार्था अप्युपसर्गवशाद् हिंसार्था ज्ञेयाः, अकर्मकाश्च णिचा सकर्मकाः । प्रमापणं, मीञ् हिंसायां णिच्, मीनातिमिनोतीति (सू०) आत्वं, युच् । निपूर्वाद् बर्हेर्वृंहेर्वा निबर्हणम् । निकारणं, कॄञ् हिंसायाम् । विशारणं, शॄ हिंसायाम् । प्रवसतः प्रयुक्तिः प्रवासनम्, एवं निर्वासनम् । असु क्षेपणेऽस्मात्परासनमपासनं च । षूद क्षरणेऽस्मान्निषूदनं जीवत्याजनम् ॥ ११४ ॥ (संज्ञपनं) ज्ञपे॰र्मारणतोषणेति मित्त्वाद् ह्रस्वः (मितां ह्रस्वः) । निर्ग्रन्थनं, ग्रथि कौटिल्ये । निस्तर्हणं, तृहेर्हिंसार्थान्निः–पूर्वात्, स्तृहेर्वा निपूर्वात् । क्षणनं, क्षणु हिंसायाम् ॥ ११५॥ निर्वापणं, वै ओवै शोषणे । विशसनं, शसु हिंसायाम् । क्रथनं, क्रथ हिंसायाम् । उज्जासनं, जसु हिंसायाम् ॥ ११५ ॥ आलम्भः, लभिराङ्पूर्वो हिंसार्थः, (लभेः) उपसर्गात्खल्घञोरिति (सू०) नुम् । पिञ्जः, पिजिर्हिंसार्थः । विशरणं हिंसनं विशरः । हननं वधः, हनश्च वधइति (सू०) अप्, वधादेशश्च, पक्षे घञि घातः । (उन्माथः) मथ संलोडने । व्यापादनं विशमनं कदनं च निशुम्भनम् । (पञ्चता) देहस्य पञ्चमहाभूतारब्धः, मरणं त्वेतस्य पञ्चभावः प्रत्येकं स्वांशसंक्रमात् । कालो मृत्युभूतलक्षणः, क्षणाद्यात्मको वा यदाहुः– कालः संहरति प्रजाः, तस्य धर्मः कालधर्मः संहारः । दिष्टस्य कालस्य जीविताववधेरन्तो दिष्टान्तः ॥ ११७ ॥ अमत्यन्तः पर्यन्तः । मरणं मृत्युः, द्वयोः स्त्रीपुंसयोः । निधृत्तं धनमत्र निधनं, निपूर्वो धनिर्मरणार्थ इति सभ्याः । प्रमयोऽपि, दीर्घनिद्रा हिंसा संस्था प्रमालनम् । परागता असवोऽस्य परासुः । संतिष्ठते स्म संस्थितः, संपूर्वस्तिष्ठति– र्मरणे वर्तते । सर्वेते वाच्यलिङ्गाः ॥ ११८ ॥ चीयते स्म चिता । चेतव्या चित्या, चित्याग्निचित्येचेति (सू०) साधुः । चीयते चितिः । एते प्रेतदाहार्थेऽग्न्याधाने वर्तन्ते । कस्य शिरसो बन्धोऽत्र कबन्धः, केन बन्धो वा । क्रियया युक्तं नृत्यदपगतो मूर्धाऽस्यापमूर्धं यत्कलेवरम् । रुण्डोऽपि ॥ ११९ ॥ शवशयनं श्मशानम् । पितॄन्वनेनान्वनाति भजति पितृवनम् । प्रेतवनं करवीरं च । कुणं शब्दं पाति कुणपः, धर्म॰

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ।
मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं सांपरायि(संपराय)कम् ॥ १०५ ॥
अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ।
संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ १०६ ॥
अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ।
समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः ॥ १०७ ॥
नियुद्धं बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसंकुले ।
क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्करिणां घटना घटा ॥ १०८ ॥
क्रन्दनं योधसंरावो बृंहितं करिगर्जितम् ।
विस्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरौ समौ ॥ १०९ ॥
प्रसभं तु बलात्कारो हठोऽथ स्खलितं छलम् ।
अजन्यं क्लीब उत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ॥ ११० ॥
मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ।
अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः ॥ १११ ॥

न्यतेऽत्रास्कन्दनम् । संचक्षतेऽस्मिन् संख्यं, संपूर्वश्चक्षिर्वधार्थः । समीयन्तेऽस्मिन् समीकं, इङ् गतौ । संपरायो मृत्युः प्रयोजनमस्य सांपरायिकं, [ठञ्], विनयादित्वात्स्वार्थे (सू०) ठक् वा ॥ १०५ ॥ समियर्ति (ते) संगच्छन्तेऽस्मिन् समरः । न नीयन्ते चास्यन्तेऽत्रानीकम्, अनीकमस्त्यत्र वा । रणन्ति दुन्दुभयोऽत्र रणं, घञर्थे कविधानमिति वक्तव्यादप् (वा०) । कल्यते क्षिप्यतेऽत्र कलहः, कलं हीनबलं हन्ति वा । विगृह्णन्त्यत्र विग्रहः, ग्रहवृदृ– इति (सू०) अप् । संप्रहरन्तेऽन्योन्यं घ्नन्त्यत्र संप्रहारः । अभिसंपतन्त्यत्राभिसंपातः । कल्यतेऽत्र कलिः । संस्फुटन्त्यत्र संस्फोटः, संस्फेट इति युक्तः पाठः, स्फिट अनादरे, भरते तु संफेटः । संयुज्यतेऽत्र संगता रथयुगा अत्र वा संयुगः ॥ १०६ ॥ अभ्यामृद्नन्त्यत्राभ्यामर्दः । समाघ्नन्त्यत्र समाघातः । संग्रामयन्तेऽस्मिन् संग्रामः । अभ्यागच्छन्त्यत्राभ्यागमः । आहूयन्तेऽत्राहवः, आङि युद्धे (सू०) इत्यप्, संप्रसारणम् । समुदीयन्ते मिलन्त्यत्र समुदायः । संयतन्ते संयच्छन्ति वास्यां संयत् । संयन्ति संगच्छन्तेऽत्र समितिः । आ– अज्यन्ते क्षिप्यन्तेऽत्राजिः । युध्यन्तेऽस्यां युत्–द् ॥ १०७ ॥ नियतं युद्धं (नियुद्धं) । ताम्यन्त्यत्र तुमुलं, तुमुः धातो वा । (क्ष्वेडा) क्ष्विदा अव्यक्ते शब्दे– इति दुर्गः । सिंहानामिव नदनं भटानां सिंहनादः । क्ष्वेला वा । (घटा) घटादयः षितः (ग०) इति षिद्भिदादिभ्योऽङ् (सू०) ॥ १०८ ॥ समन्ताद्रवणं संरावः, उपसर्गे रुवः (सू०) इति घञ् । (बृंहितं) बृहि शब्दे । (विस्फारः) स्फुर संचलने । पटो हन्यतेऽस्य पटहः । आडम्ब्यते– आडम्बरः, डमरुवदस्य स्वरम् ॥ १०९ ॥ प्रगता सभात्र प्रसभं, सभया युक्तायुक्तविचारो लक्ष्यते, प्रस [प्रसभ] प्रसवे वा । बलादिति निपातो हठार्थः । (हठः) हठ प्लुतिशठत्वयोः । स्खलनं मार्गाच्चलनम् । छयति छिनत्ति छलम् । न जने साधु– अजन्यम् । उत्पतत्यकस्मादायाति– उत्पातः, ज्वलादित्वाण्णः (ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः) । उपसृज्यत उपद्रूयतेऽत्रोपसर्गः ॥ ११० ॥ कशति(ते) वैचित्यात्कश्मलम् । (पीडनं) पीड अवगाहने । (अभ्यवस्कन्दनं) छलादाक्रमणमित्यर्थः । धाटी च । रात्रौ च सौप्तिकम् । (विजयः) विः स्वार्थे लोचनादिलोचनवत् ॥ १११ ॥ प्रतीपं करणं प्रतीकारः शुद्धिः । निर्यातनं शोधनं, यत निकारोपस्कारयोः । जितकाशी जिताहवः । एते द्वौ पलायनार्थकाः, प्रेद्रुस्रुस्रुवः, (सू०), उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः (सू०),

स्यादासारः प्रसरणं प्रचक्रं चलितार्थकम्।
अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९७ ॥
वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकाः समाः।
स्युर्मागधास्तु मगधा बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९८ ॥
संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ॥ ९९ ॥
रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांशुर्ना न द्वयो रजः।
चूर्णे क्षोदः समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ॥ १०० ॥
पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम्।
सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्यातिभयप्रदा ॥ १०१ ॥
अहंपूर्वमहंपूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम्।
आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ॥ १०२ ॥
अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहंकारः।
द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ॥ १०३ ॥
शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता।
वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ १०४ ॥

सते येनेत्यासारोऽन्वागच्छद्रूमम्। प्रसारस्तु सैन्याद्बहिस्तृणजलाद्यर्थं प्रसरणमिति कौटिल्यः, बाहुल्य-निरुद्धवीवधासारप्रसारा गा इव व्रजम् (शिशु०)। प्रस्थितं चक्रं सैन्यं प्रचक्रम्। आभिमुख्येनाभिभूषारीन्वा यानमभिक्रमः ॥ ९७ ॥ वितालः शब्दः प्रयोजनमेषां वैतालिका राज्ञोवसरपाठका मङ्गला- [मङ्गला]ख्याः, प्रातर्बोधका इत्येके। (चाक्रिकाः) चक्रं राष्ट्रं घण्टाघातेन देवताग्रे ये शंसन्ति ते, श्रावकाख्याः। (मागधाः) वंशोदीरणेन ये याचन्ते, आहुश्च- वैतालिकाश्च कथ्यन्ते कविभिः सौखशायिकाः। राज्ञः प्रबोधसमये घण्टाशिल्पास्तु घाण्टिकाः। मागधाः स्तुतिवंशज्ञा इति, मगधेति चाख्यार्थैः कम्ब्वादिः, यच्छ्रीभोजः- कमर्थिनः कुशुभ्यन्तु कं मगध्यन्तु मागधाः। कमिघुष्यन्तु यज्वा[युध्वा]नो रामेरण्यं तुरण्यति ॥ वन्दन्ते स्तुवन्ति तच्छीलाः (वन्दिनः)। चत्वार एकार्था इत्येके ॥ ९८ ॥ संशपन्ति पलायमानं, सशपथं वा युध्यन्ते दृढानिश्चयाः संशप्तकाः ॥ ९९ ॥ रीयते रेणुः, रीङ् गतौ। धूयते धूलिः। पंशयति वस्त्रादि पांशुः, पशि नाशने। रज्यते धमायनेन रजः क्लीबे, रञ्जनरञ्जकरजःसूपसंख्यानं (वा०) इति नलोपः। (क्षोदः) क्षुदिर् संपेषणे, धूलिपर्यायोयं, यच्छाश्वतः- चूर्णानि वासयोगाः स्युश्चूर्णो धूलिः सशर्करा। पिञ्जि हिंसायां, आह च- समुत्पिञ्जोतिसंकुलः ॥ १०० ॥ पतति धूयते पताका। विजयते विजयन्तः, औणादिको झच् (तृभूवहीति), तस्येयं वैजयन्ती। केत्यते संज्ञायतेऽनेन केतनम्। ध्वजति धूयते ध्वजः, पताकादण्डो ध्वज इत्येके। केतुर्नानार्थे। वीरा आशंस्यन्तेऽत्र (वीराशंसनम्) ॥ १०१ ॥ अहं पूर्वमस्यां क्रियायामिति सर्वे यत्र ब्रुवते साहंपूर्विका. स्वार्थे कन्- मत्वर्थीयो वा ठन् (अतइनिठनौ)। अहो पुरुषोऽहमित्यस्य भावः (आहोपुरुषिका), मनोज्ञादित्वाद्वुञ् (द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च) ॥ १०२ ॥ अहं शक्तोऽहं शक्त इत्यस्यामहमहमिका, ठन् (व्रीह्यादिभ्यश्च), अहंशब्दो निपातः। द्रवत्यनेनारिं द्रविणम्। तरत्यनेनापदं तरः। सहतेनेनारिं सहः, असन्तौ द्वौ। शूरस्य भावः शौर्यम्। तिष्ठत्यनेन स्थाम। शुष्यत्यनेनारिः शुष्मम्, शुष्मेत्येके ॥ १०३ ॥ शक्नं शक्तिः। प्राननं प्राणः। विक्रमन्तेनेन विक्रमः। वीराणां मद्यपानं वीरपानम् ॥ १०४ ॥ जायते जन्यं, जन्ययोर्येति (सू०) साधुः। प्रदधान्ति प्रधनम्, धनिर्मारणार्थोऽत्र निधनवत्। म्रियन्तेऽस्मिन् मृधम्। आस्क-

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्यान्मेखला तन्निबन्धनम् ।
फलकोऽस्त्री फलं चर्म संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९१ ॥
द्रुघणो मुद्गरघनौ स्यादीली करवा(पा)लिका ।
भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ परिघः परिघातनः ॥ ९२ ॥
द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।
स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९३ ॥
वा पुंसि शल्यं शङ्कुर्ना स(श)र्वला तोमरोऽस्त्रियाम् ।
प्रासस्तु कुन्तः कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९४ ॥
सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंनहनार्थकः ।
लोहाभिसा(शा)रोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनो विधिः ॥ ९५ ॥
यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ।
यात्रा व्रज्याभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९६ ॥

हस्ताच्च निर्याति । फलति विशीर्यते प्रहारैः (फलं,फलकं) फलं, मुनिना खड्गपर्याये दृष्टं, अयं तु फलकात् फलकं मन्यते, यच्छाश्वतः– फले शस्ये शराग्रे च्युष्टौ च फलके फलम् । चर्मण्यस्याच्चर्म । संगृह्यतेऽनेनेति संग्राहः, समिमुष्ट्योरिति (सू०) घञ्, अस्य चर्मणो मुष्टिर्ग्रहणस्थानम् ॥ ९१ ॥ द्रुं वृक्षमपि हन्ति द्रुघणः, द्रुघनो वा, अयोघनोऽन्यः । मुदं गिरति ग्रसते मुद्गरः । हन्यतेऽनेन घनः, मूर्तौ घनइति (सू०) साधुः, यच्छाश्वतः– घावे मुस्तेऽम्बुदे सान्द्रे घनः स्याल्लोहमुद्गरे । ईल्यत ईली, एकधारोऽसिस्तुल्याकारायुधम् । करवालात् , अल्पे (सू०) कन् , तरवालिकेत्येके । भिन्दतः पालयति भिन्दिपालः, भिन्दिपालो वा हस्तक्षेप्यो लगुडः । सृज्यते सरति वा सृगः । परितो हन्ति परिघः, परौ घ इति (सू०) के घत्वम्, लोहबद्धो लगुडः ॥ ९२ ॥ कुठान्वृक्षानियर्ति कुठारः । स्वं धियति बिभर्ति स्वधितिः । पराञ्शृणाति परशुः परश्वधश्च, पर्श्वधोऽपि, यदाह– पार्श्वकपारश्वधिकौ यष्टिपर्श्वधहेतिकौ । शस्यतेऽनया शस्त्री । असेः पुत्रीवाल्पत्वात् । छुरति छिनत्ति छुरिका, क्षुरिकापि ॥ ९३ ॥ शलति विशत्यन्तः शल्यः । शङ्कतेऽस्मात् शङ्कुरायुधविशेषः, यच्छाश्वतः– संख्याकीलकयोः शङ्कुः शङ्कुः प्रहरणान्तरे । अन्यत्रोपचारात्शल्यम् सर्वान्–लाति सर्वला । स्तोमयते प्रश्लाघ्यते तोमरः, तुः सौत्रो वा । प्राश्यते प्रासो हस्तक्षेप्यः शस्त्रः । कुणति कुन्तः । कोणो गृहादेर्विदिक्– धस्त्र्याख्या, कुण शब्दोपकरणयोः । पाति पालिः । अश्नुतेऽश्रिः । कुट्यते कोटिः ॥ ९४ ॥ सर्वेण सैन्येनाभिसरणं सर्वाभिसारः । सर्वेषामोघो वहनं सर्वौघः । सर्वे संनह्यन्तेऽत्र सर्वसंनहनम् । शस्त्रभृतां राज्ञां यः शास्त्रिको विधिः प्रस्थानात्प्राक् स लोहाभिसारः, लोहं शस्त्रमभिसार्यते प्रस्थानेऽत्रेति । नीरस्य शान्त्युदकस्याजनं क्षेपोऽत्र नीराजनं, मन्त्रोक्त्या वाहनायुधादेर्निर्वेषणं राजनं वात्र । नीराजनादनन्तरं कर्म लोहाभिसार इति मुनिः– विधिर्लोहाभिसारस्तु राज्ञां नीराजनोत्तरः, दुर्गोऽपि– लोहाभिसारस्तु विधिः परो नीराजनान्नृपैः । दशम्यां दर्शितैः कार्य इति । अत एव नीराजनाद्विधिरित्येके पठन्ति ॥ ९५ ॥ (अभिषेणनं) सत्यापपाशेति (सू०) णिच् , उपसर्गात्सुनोतीति (सू०) षत्वम् । यान्त्यस्यां यात्रा । व्रजनं व्रज्या, व्रजयजोर्भावे क्यप् (सू०) । (प्रस्थानं) प्रपूर्वंस्थितिवर्ज्ञंतमेत्यर्थः । गमेः– ग्रहवृदृ (सू०) इत्यपि गमः ॥ ९६ ॥ सैन्यस्य सर्वतो व्याप्तिरासारः, आसि

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसके ।
कोटिरस्याटनी गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८५ ॥
लस्तकस्तु धनुर्मध्यं मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।
स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८६ ॥
लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च शराभ्यास उपासनम् ।
पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८७ ॥
कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ।
प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः पक्षो वाजस्त्रिषूत्तरे ॥ ८८ ॥
निरस्तः प्रहिते बाणे विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ ।
तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधिर्द्वयोः ॥ ८९ ॥
तूण्यां खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः ।
कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवा(प)लः कृपाणवत् ॥ ९० ॥

स्यादिति गाण्डीवं, गाण्डयजगात्संज्ञायामिति (सू०) वः, गाण्डिरिदन्त ईदन्तश्चात्र प्रश्लिष्य निर्देशः । पुंनपुंसके इति प्रथमाद्विवचनमजहल्लिङ्गम् । अस्य धनुषः प्रान्ते कोटिः, कुटतीति । अटत्यटनी, अस्व-टनी इत्येके । गोधा च गोधा च गोधे द्वे, सम्यगादित्वात्, गुध परिवेष्टने । तलं चर्मादिमयो ज्याघातवारः ॥ ८५ ॥ (लस्तकः) लस श्लेषणे । मूर्वाख्यतृणस्य विकारो मौर्वी । जिनाति ज्या । जीवापि । शिञ्जे शब्दायते शिञ्जिनी । गुण्यतेऽभ्यस्यते गुणः । अङ्घ्र्योर्धारि(वि)निवृत्तौ स्थितिः स्थानकमिति तु विशेषः । आलेढि भुवमालीढम् । आदिशब्दात्समपादं वैशाखं मण्डलं च धनुर्वेदप्रसिद्धम् । भरतस्त्वन्यथाह– वैष्णवं समपादं च वैशाखं मण्डलं तथा । प्रत्यालीढमथालीढं स्थानान्येतानि षट् नृणाम् ॥ ८६ ॥ लक्ष्यत इति (लक्षं), घञ् ण्यच । शृणाति शरः हितस्तस्मै हितं शरव्यं, उगवादिभ्योयत् (सू०), अभ्यस्यते उपास्यते वा । (उपासनं) असु क्षेपणे । पर्षति सिञ्चति– असृजा पृषत्कः, पृषत्कमस्येति धनुर्वेदः– पुङ्खः शरस्तथा शल्यं पक्षस्नायुजतूनि षट् । बणति बध्यतेऽनेन वा बाणः । विशीयते विशिखः, शिञ् निशाने, विविधशिखो वा । अजिह्मग ऋजुगामी ॥ ८७ ॥ कल्यते क्षिप्यते कलम्बः । मार्गयति लक्ष्यं मार्गणः । शृणाति शरः । रोप्यते निखन्यते रोपः । इष्यति– इषुः, इष गतौ । प्रदरो नानार्थे । प्रक्ष्वेड्यते प्रक्ष्वेडनः, क्ष्विरे स्वं, क्ष्वेडिर्णिचः । नरमयति, नराच एव नाराचः, स्वार्थेऽण्, अर्शआद्यच् । (पक्षः) पक्ष परिग्रहे । वजति गच्छत्यनेन वाजः, न्यङ्क्वादेः (सू०) कुत्वम् ॥ ८८ ॥ निरान्ता वाच्यलिङ्गाः । निरस्यते स्म प्रहीयते स्म, क्षिप्त इत्यर्थः । विषेणाक्ते प्रहिते, दिह्यते स्म लिप्यते स्म । तूण्यते पूर्यते शरैस्तूणः, तूणीति लिङ्गादिभेदार्थम् । उपासज्यन्ते निषज्यन्ते च बाणा अस्मिन्नुपासङ्गनिषङ्गौ । इषवो धीयन्तेऽत्रेषुधिः । कलापो नानार्थे ॥ ८९ ॥ खड(ड)ति भिनत्ति खड्गः । निष्क्रान्तस्त्रिंशतोऽङ्गुलिभ्यो निस्त्रिंशः । चन्द्रवद् हासः प्रभास्य चन्द्रहासः । अस्यतेऽसिः । ऋषेर्गत्यर्थात् ऋष्टिः, मन्त्रकः (सू०) इति प्रकृतिः, हिंसार्थाद्रिषेस्तु रिष्टिः । कुक्षौ भवः कौक्षेयकः, कुक्ष्यामीति (सू०) ढकञ् । मण्डलाकृत्यग्रमस्य मण्डलाग्रः । करं वलनमस्य करवालः । कल्पते कृपाणः, यतिः पूरणार्थः ॥ ९० ॥ (त्सरुः) त्सर छद्मगतौ । मीयते मणिबन्धे प्रक्षिप्यते मेखला, यथा महस्तो

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनानीकिनी चमूः ।
वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७९ ॥
व्यूहस्तु बलविन्यासो भेदा दण्डादयो युधि ।
प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ८० ॥
एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका ।
पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८१ ॥
सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
अनीकिनी दशानीकिन्योक्षौहिण्यथ संपदि ॥ ८२ ॥
संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपत्त्यां विपदापदौ ।
आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियौ ॥ ८३ ॥
धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।
इष्वासोप्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८४ ॥

वाहिनी । सिनोति सेना, सह- इनेन वर्तते वा । प्रियते पृतना, पृङ् व्यायामे । चमत्यरीं चमूः । वरूथो रथगुप्तिरस्त्यस्या वरूथिनी । बलति प्राणिति बलम् । सेनैव सैन्यम्, चतुर्वर्णादित्वात् (सू०) ष्यञ् । करोति च क्रं चक्रम् । अनितिअनीकम्, न नीयते वा, सैन्यैकदेशोयम् ॥७९॥ व्यूह्यते रच्यते व्यूहः । व्यूहस्येति घञ्, चतुरः दण्डो मण्डलभोगौ चाप्युत्तम्भश्चाचलो दृढः । व्यूहास्तेषां विशेषाः स्युश्चक्रव्यूहादयोऽपि च ॥ प्रत्यासरति यस्मात् प्रत्यासारः, सृस्थिरइति (सू०) घञ् । पार्ष्णिः पश्चाद्भागः । (प्रतिग्रहः) प्रतिगृह्यतेवष्टभ्यतेनेन सैन्यम् ॥ ८० ॥ पतति(पद्यते)पत्तिः सेनांशः, यद् भारते- एको गजो रथश्चैको नराः पञ्च पदातयः । त्रयश्च तुरगास्तज्ज्ञैः पत्तिरित्यभिधीयते ॥ पत्तिस्त्रिगुणा सेनामुखं- गजत्रयं ३, रथत्रयं ३, अश्वनवकं ९, पदातयः पञ्चदश १५ ॥ ८१ ॥ तत्त्रिगुणं गुडति गुल्मः- गजाः ९, रथाः ९, अश्वाः २७, पदातयः ४५ । स त्रिगुणो गण्यते गणः- गजाः २७, रथाः २७, अश्वाः ८१, पदातयः १३५ । स त्रिगुणो वाह्यते वाहिनी- गजाः ८१, रथाः ८१, अश्वाः २४३, पदातयः ४०५ । सा त्रिगुणा पृतना- गजाः २४३, रथाः २४३, अश्वाः ७२९, पदातयः १२१५ । सा त्रिगुणा चमूः- गजाः ७२९, रथाः ७२९, अश्वाः २१८७, पदातयः ३६४५ । सा त्रिगुणानीकिनी- गजाः २१८७, रथाः २१८७, अश्वाः ६५६१, पदातयः १०९३५ । अक्षाणां रथकाष्ठानामूहोस्त्यस्याम्, अक्षदृहिन्यामिति (वा०) वृद्धिः ॥ ८२ ॥ (संपद्) संपदादिभ्यः क्विप् (वा०) । श्रयन्ति तां श्रीः, क्विब्वचिप्रच्छिश्रीति (उ०) क्विप्- दीर्घश्च । विपत्तिर्दारिद्र्यम् । आयुध्यन्तेनेनायुधं, घञर्थे कविधानं (वा०), स्थास्नापाव्यधिहनियुध्यर्थम् । शस्यतेनेन शस्त्रं, दाम्नीशसेति (सू०) ष्ट्रन् । अस्यतेस्त्रम् । हेतिर्नानार्थे ॥ ८३ ॥ धन्वते-र्थ्यते धनुः, अर्धर्चादिः (सू०)। चपस्य वेणोर्विकारश्चापम् । धन्वति (धन्व), कनिन् (उ०)। शरा अस्यन्तेनेन शरासनम् । कुद्(डि) अनृतभाषणे, अस्माद्दण्डन्, कुदेर्वा रेफलोपे कोदण्डम् । कर्मणे प्रभवति कार्मुकम्, कर्मणउकञ् (सू०) । इषवोस्यन्तेनेन- इष्वासः । आसोपि ॥ ८४ ॥ गाण्डिवः पर्या-

चर्मी फलकपाणिः स्यात्पताकी वैजयन्तिकः।
अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिच(स)रः समाः ॥ ७२॥
पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः।
पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७३ ॥
जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यौ जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ।
तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७४ ॥
जय्यो यः शक्यते जेतुं जेयो जेतव्यमात्रके।
जैत्रस्तु जेता यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७५ ॥
सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि।
ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७६ ॥
स्यादुरस्वानुरसिलो रथिको रथिरो रथी।
कामंगाम्यनुकामीनो ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७७ ॥
शूरो वीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णुश्च जित्वरः।
सांयुगीनो रणे साधुः शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७८ ॥

त्पताकोऽपि। वैजयन्त्या चरति वैजयन्तिकः, चरतीति (सू०) ठक् ॥ अनु पश्चात्प्लवतेऽनुप्लवः। सह-अयते सहायः ॥ ७२ ॥ पुरो गच्छति पुरोगमः। (पुरोगः) गमश्च (सू०) इति डः। अग्रे सरत्यग्रेसरः, पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः (सू०) इति टः। प्रातिष्ठते प्रष्ठः, प्रष्ठोऽग्रगामिनीति (सू०) साधुः। मथ्नाति पादौ मन्थरः ॥ ७३ ॥ जङ्घे स्तोऽस्य जङ्घालः। जङ्घे एव करौ गमने येनास्य जङ्घा-करिकः। जङ्घाभ्यां जीवति जाङ्घिकः। तरोऽस्यास्तीति तरस्वी, अस्मायामेधेति (सू०) विनिः। त्वरते स्म त्वरितः। प्रजवते प्रजवी, प्रजोरिनिः (सू०)। जवते तच्छीलो जवनः, जुचङ्क्रम्येति (सू०) युच्। जवते जवः, पचाद्यच् (नंदिग्रहीति) ॥ ७४ ॥ क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे (सू०) इति साधुः। (जेयः) शक्यादन्यत्रेत्यर्थः। जेतैव जैत्रः, तृन्नन्तत्वात्– प्रज्ञादित्वात् (सू०) अण्, जेतुरयं वा, फलतस्तुल्यार्थ-त्वम् ॥ ७५ ॥ आभिमुख्येनामित्रानलं गामी, अभ्यमित्राच्छ चेति (सू०) छः, यकारात्खौ च। अभ्यमित्र्यश्च। ऊर्ज ऊर्जा वास्त्यस्येति, ज्योत्स्नातमिस्रेति (सू०) साधुः। ऊर्जोऽ-न्तं मन्यते, पमन्तोऽग्रेति तु युक्तं, अन्यथोर्जस्वीति निपातनं व्यर्थं स्यात्, अस्मायामेधेति (सू०) विनिना सिद्धत्वात् ॥ ७६ ॥ उरसा बलं लक्ष्यते, तदस्यास्ति, पिच्छादित्वादिलच् (लोमादिपामादीति)। रथोऽस्यास्ति रथिकः, अतइनिठनौ (सू०)। (रथिरः) मेधारथाभ्यामिरन्निरचौ (वा०), रथिन इत्यपपाठः। अनुकामं यथेच्छं गामी– अनुकामीनः, अषारपारात्यन्तानुकामंगामी ति (सू०) खः। अत्यन्तं भृशं कृत्वा गामी– अत्यन्तीनः, खः ॥ ७७ ॥ विक्रमते स्मोत्सहते विक्रान्तः। जयनशीलः (जेता), तृन्। (जिष्णुः) ग्लाजिस्थश्चग्स्नुः (सू०)। (जित्वरः) इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप् (सू०)। संयुगे साधुः सांयुगीनः, प्रतिजनादिभ्यः खञ् (सू०)। (त्रिषु) वाच्यलिङ्गत्वात् ॥ ७८ ॥ पादाः पत्न्यस्ता

शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ।
उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥
आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।
संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६६ ॥
त्रिष्वामुक्तादयो वर्मभृतां कावचिकं गणे ।
पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६७ ॥
पद्गश्च पदिकश्चाथ पादातं पत्तिसंहतिः ।
शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६८ ॥
कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्खवत् ।
अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥ ६९ ॥
धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः ।
स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ७० ॥
याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपर्श्वधहेतिकौ ।
नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्यात्समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७१ ॥

शीर्षण्यम् । शिरसि भवं शीर्षण्यं, शरीरावयवाद्यत् (सू०), शीर्षंश्छन्दसि (सू०), ये चाद्धिते (सू०)। शिरस्त्रायते शिरस्त्रम् । तनोस्त्राणं वर्म । दंश्यते बध्यते दंशनम् । कङ्कटत्यवच्छादयति कङ्कते वा (कङ्कटकः) । जागर्त्यनेन हस्तात्ज्जगरः, यन्माला– उरश्छदेऽथ जगरः । कवते कवचः, कं वञ्चयति वा ॥ ६५ ॥ आमुच्यते बध्यते स्म मुक्तः । अपिनह्यते स्मापिनद्धः । (पिनद्धः) वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः (का०) इति पक्षेऽल्लोपः । संनह्यते स्म संनद्धः । वर्म संजातमस्य वर्मितः । सज्जायते सज्जति वा सज्जः । व्यूढो धृतः कङ्कटोऽनेन व्यूढकङ्कटः ॥ ६६ ॥ नरेत्यर्थः । (कावचिकं) ठञ् कवचिनश्च (सू०) इति ठञ् । पादाभ्यामतति गच्छति पदातिः । पादाभ्यामजति पदाजिः, पादस्य पदाज्यातिगोपहतेषु (सू०) इति पदः । हलन्तपक्षे पद्गः, यल्लक्ष्यं– पद्गा भरद्वाजमुनेराशिषम् (भट्टि०) । पादाभ्यामतति पादातिकः, औणादिक इकः, विनयादित्वात्स्वार्थे ठग्वा (सू०) । पतति (पद्यते) पत्तिः ॥ ६७ ॥ पादाभ्यां चरति पादिकः, पर्पादिभ्यष्ठन् (सू०), इत्येचरतीत्यद् च्छन्त्यात् (वा) । पदातीनां समूहः पादातं, भिक्षादिभ्योऽण् (सू०) । काण्डानि पृष्ठेऽस्य काण्डपृष्ठः । आयुधेन जीवति, आयुधाच्छ चेति (सू०) ठन्–छौ ॥ ६८ ॥ कृतो सिद्धो हस्तोऽस्य कृतहस्तः । कृताः पुङ्खा अनेनेति कृतपुङ्खः । अपराद्धा अलक्ष्यलक्षा बाणा अस्यापराद्धपृषत्कः ॥ ६९ ॥ धन्व– अस्यास्ति धन्वी, व्रीह्यादिभ्यादिनिः (सू०) । धनुः प्रहरणमस्य धानुष्कः, ...– प्रहरणमिति (सू०) ठक् , इसुसुक्तान्तात्कः (सू०)। निषङ्गस्तूणोऽस्यास्ति निषङ्गी । अस्त्राणि सन्त्यस्यास्त्री । (काण्डीरः) काण्डाण्डादीरन्नीरचौ (सू०)। शक्तिः प्रहरणमस्य शाक्तीकः, शक्तियष्ट्योरीकक् (सू०) ॥ ७० ॥ पर्श्वधः परशो न दृष्टः, अतो यष्टिस्वधितिहेतिकाविति काश्मीराः पठन्ति, यन्मुनिः– परश्वधः कुठारश्च स्वधितिः, तदस्य प्रहरणमिति (सू०) परश्वधाट्ठञ् च । निस्त्रिंशोऽसिः प्रहरणमस्य नैस्त्रिंशिकः । (प्रासिककौन्तिकौ) प्रासः कुन्तश्च प्रहरणमस्य ॥ ७१ ॥ चर्मफलकोऽस्यास्ति चर्मी । फलति विशीर्यते पातैः फलकः, रत्नयोरेव्या-

रथगुप्तिर्वरूथो ना कूबरस्तु युगंधरः ।
अनुकर्षो दार्वधःस्थं प्रासङ्गो ना युगाद्युगः(न्तरम्) ॥ ५८ ॥
सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ।
परंपरावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥
आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥ ६० ॥
सव्येष्टृ(ष्ठ)दक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।
रथिनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६१ ॥
भटा योधाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।
सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६२ ॥
बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।
परिधिस्थः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६३ ॥
कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।
बध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शीर्षकम् ॥ ६४ ॥

यस्यां लोहादिमयी वृतिः । कूयते शब्द्यते कूबरः । युगं वोढृस्कन्धकाष्ठं धारयति युगंधरः, संज्ञायां भृतॄवृजीति (सू०) खच् । अनुकृष्यतेऽनुकर्षः । प्रसज्यते वोढृस्कन्धे प्रासङ्गः । युगेनाततति युगाद्युगः—दित्वस्य युगो ना पुमान्, अन्यस्तु क्लीबे युगं कालो युग्मं वा । युगाद्युगान्तरं यस्सदमनार्थमिति गौडः, सत्यात्यः[मुनिः]– युगं द्वितीयं प्रासङ्गः ॥ ५८ ॥ सर्वं हस्त्यश्वरथादि दोलान्तम् । वोढव्यं युग्यं, युग्यंच पत्रे (सू०) इति साधुः । पतन्त्यनेन पत्रं, दाम्नीशसेति (सू०) ष्ट्रन् । धोर्यतेऽनेन धोरणम् । वोढृभिः परम्परया वाह्यते, प्राबन्धिकमभ्यासास्थितम् । विनीता(शक्ता)नामिदं (वैनीतकं) याप्ययानादि ॥ ५९ ॥ आधोर्यते हस्ती यैराधोरणाः । हस्तिनः पान्ति हस्तिपकाः । हस्तिनमारोहन्ति हस्त्यारोहाः । निषीदन्त्यवश्यं निषादिनः । द्वौ द्वौ भिन्नार्थाविव्येके, अग्रगौ द्वौ पाचकौ परौ द्वौ योद्धारौ ॥ नियच्छति नियन्त्रयति नियन्ता । प्राजयति (प्राजति) प्राजिता, वानुवृत्तेर्वीभावो नास्ति (इ०) ॥ सुवति सूतः, षू प्रेरणे । क्षदति क्षत्ता । सरथस्यापत्यं सारयति वाहान्वा सारथिः ॥ ६० ॥ सव्ये तिष्ठति सव्येष्ठः(ष्ठा), सव्येस्थश्छन्दसीति (उ०) ऋन् (ऋः)– क्विप, स्थास्थिन्स्थूणामिति षत्व्यात् (का०) षत्वम् । रथस्य कुटुम्बी वाहकः । (रथिनः) रथे योद्धारः ॥ (अश्वारोहाः) अश्वारोहयाः । सीदन्त्यवश्यं सादी ॥ ६१ ॥ भटन्ति काङ्क्षन्ति युद्धं भटाः । युध्यते योधः, पचाद्यच् (नन्दिग्रहीति) । (सैनिकाः) रक्षतीति (सू०) ठक्, प्राहरिकाद्याः । सेनां समवयन्ति श्लिष्यन्ति (सैन्याः), सेनाया वा (सू०) इति ण्यः, पक्षे ठञ् ॥ ६२ ॥ बलं सैन्यं, सहस्रं योद्धारः सन्त्यस्य, तपःसहस्राभ्यां विनीनी (सू०), अण् च (सू०) । परिधौ सेनान्ते तिष्ठति परिधिस्थः । परितः समन्ताच्चरति रक्षितुं परिचरः । सेनां नयति नियुङ्क्ते सेनानीः ॥ ६३ ॥ कञ्च्यते बध्यते कञ्चुकः । वारमाच्छादकं बाणमस्य वारबाणः, पूर्वपदात्संज्ञायाम् (सू०) इति णत्वम् । बाणवारस्य व्यत्ययेन मयूरव्यंसकादित्वादिति वर्णोक्तः । सारं मनोति ददाति सारसनम् । अधिकमङ्गादधिकाङ्गः । सारसनाधिकाङ्गा इत्येके पेठुः, यन्मुनिः— अधिकाङ्गं सारसनम्, गुर्वस्तु— तस्य सारसनं ह्येयं धिपाङ्गं च निबन्धनम् ॥ ६४ ॥ शीर्षप्रातिक्रतिः

नतघोणः पत्र धारा घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।
कविका तु खलीनोऽस्त्री शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥ ५० ॥
पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले वालहस्तश्च वालधिः ।
त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५१ ॥
याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
असौ पुष्प(ष्प)रथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५२ ॥
कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।
क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद्गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥ ५३ ॥
शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला प्रेङ्खादिका स्त्रियाम् ।
उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५४ ॥
पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।
रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५५ ॥
त्रिषु द्वैपादयो रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।
धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५६ ॥
चक्रं रथाङ्गं तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।
पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ॥ ५७ ॥

नासान्तःप्रदेशः । कवते दन्तघर्षणाच्छब्दायत इति कविका । खलति चलति खलीनं, खे तालुनि लीनं वा । शम्यते भुवा घृष्यते शफम् । खुरति विलिखति क्ष्मां खुरः ॥ ५० ॥ पुच्छ्यते दंशादीनुत्सारयति पुच्छं, पूतौ लापयति वा । लूयते लूमम् । लङ्गति चलति लाङ्गूलम् । वालो हस्त इव दंशवारणाद् वालहस्तः, प्रशस्ता वाला वा । वाला धीयन्तेऽस्मिन्वालधिः । उपावर्तते स्मोपावृत्तोऽश्वः । लुठति स्म लुठितः ॥ ५१ ॥ चक्रमस्त्यस्य चक्रि तस्मिन् साम्परायिकाख्यम् । शताङ्गो बह्वङ्गकः । स्यन्दते याति स्यन्दनः । रमन्तेऽस्मिन् रथः । इतो भटादेः प्रसङ्गप्रकरणम् । पुष्ये यात्रोत्सवादौ मङ्गल्यो रथः पुष्परथः । चक्रयुक्तं यानं (चक्रयानम्) ॥ ५२ ॥ कर्णेषु स्कन्धेषु रथः कर्णीरथः, दीर्घो लक्ष्यात्, पुंस्कन्धोह्यमानो रथः । प्रवहन्त्यनेन प्रवहणम् । डयन्ते विहायसा यान्त्यनेन (डयनम्) विमानाख्यम् । अनितीति चीत्करोत्यनः, अनुन् । शक्नोति भारं वोढुं शकटम् । गच्छति तच्छीला गन्त्री शकटिका । कम्बलिभिर्बलीवर्दैर्वाह्यं (कम्बलिवाह्यकम्) ॥५३॥ (शिबिका) शिवा श्रेयस्करी, संज्ञायां कन् (सू॰) । याप्यस्याशक्तस्य यानं, युग्याख्यं यानमिति गौडः । दोल्यते दोला काष्ठमयी रज्जुप्रालम्बश्च । प्रेङ्ख्यते प्रेङ्खा हिन्दोलाख्या । आदिशब्दाच्छया[य]नकादि याप्ययानानुवृत्तेः । द्वीपिनश्चर्मणावृतो रथः, द्वैपवैयाघ्रादण् (सू॰) ॥ ५४ ॥ पाण्डुकम्बलेन प्रावृतो रथः, पाण्डुकम्बलादिनिः (सू॰) । (काम्बलवास्त्राद्याः) परिवृतो रथः (सू॰) इत्यण् । आदिशब्दाद् दुकूलाद्याः ॥ ५५ ॥ वाच्यलिङ्गत्वाद् द्वैपी गन्त्री, द्वैपो रथः, द्वैपमनः । शकटाद्यपि रथत्वेन मन्यन्ते । रथानां समूहे, खलगोरथात् (सू॰), इनित्रकट्यचश्च (सू॰) इति यत्कट्यच् । धूर्वति हिनस्ति वोढारं धूः, यस्या अग्रे वोढारो बध्यन्ते । यानमुखं रथादेरग्रम् । रथारम्भकं चक्रादन्यत्, अपकरोति(कीर्यते) अपस्करः, अपस्करो रथाङ्गमिति (सू॰) साधुः ॥ ५६ ॥ रथस्य यच्चक्रं तद्रथ्या रथाङ्गम् । तस्य चक्रस्यान्ते नेमिः, नयतीति । प्रान्ते धीयत इति प्रधिः । पिण्ड्यतेऽत्र यस्यां सा पिण्डिका । नभ्यते हिंस्यतेऽनेन नाभिः । अक्षस्य नाभिक्षेप्यकाष्ठस्यान्ते रक्षार्थं कीलकः, अणति शब्दायतेऽणिः, लक्ष्यं त्वाणी ॥ ५७ ॥ ध्रियते गुप्त्यर्थं रथो येन स

वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजबन्धनी ।
घोटके वीति(पी)तुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः ॥ ४४ ॥
वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ।
आजानेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४५ ॥
वा(व)नायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः ।
ययुरश्वोऽश्वमेधीयो जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४६ ॥
पृष्ठ्यः स्थौरी सितः कर्को रथ्यो वोढा रथस्य यः ।
बालः किशोरो वाम्यश्वा वडवा वाडवं गणे ॥ ४७ ॥
त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।
कश्यं तु मध्यमश्वानां हेषा ह्रेषा च निस्वनः ॥ ४८ ॥
निगालस्तु गलोद्देशे वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।
आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४९ ॥

वार्यतेऽनया वारी गजदानभूः । घोटते भुवो परिवर्तते घोटकः । वेति याति वीतिः । तुरं त्वरितं गच्छति तुरगः, डः । (तुरङ्गः) खच्डिद्वाच्यः (वा०)। (तुरंगमः) गमश्चेति (सू०) खच् । अश्नुतेऽध्वानमश्वः ॥ ४४ ॥ वजति तच्छीलो वाजी, वाजाः पक्षा अभूरस्येति वा । वाह्यते वाहः । अर्वति चार्वा । गन्धयतेऽर्दते गन्धर्वः । हयति याति हयः । सिन्धौ भवः सैन्धवः, विशेषेऽपि सामान्यवृत्तिः । सपति समवैति सप्तिः । इतो रथप्रकरणाद्याश्वपरिकरः । आजेन देशेऽमानेयाः (आजानेयाः), आयत्ता इत्यर्थः । विनीयन्ते विनीताः सुशिक्षिताः ॥ ४५ ॥ वनायुजादिषु देशेषु- एते जाता हयविशेषाः । एवं तुरुष्कादयोऽपि । मध्ये वार्ड कोऽश्वः । याति- अत्यर्थं ययुः । अश्वमेधाय हितोऽश्वमेधीयः, अश्वमेधाच्छ- च (सू०) । जवते तच्छीलो जवनः, जुचङ्क्रम्येति (सू०) युच् । मृगादिरपि । जवोऽस्त्यस्येति (सू०) इति प्रजवीति च ॥ ४६ ॥ पृष्ठे अलंकारादियुक्तोऽसौ पृष्ठ्यः, तत्रो यत् (समासाद्युः)। स्थूराणां स्थागमकृषादिभारवाहिनां मिदं स्थौरं बलं तदस्त्यस्य स्थौरी । कर्कः शुक्लोऽश्वः, क्रियन्ते वर्णान्तराण्यस्येति । रथं वहति रथ्यः, तद्वहतिरथयुगेतिवत् (सू०)। कीर्यते चोप्यते कस्यते वा किशोरः । वाम्यते गर्भे वामी, यदुक्तम्- अथोष्ट्रवामीशतवाहि(वाहि)तार्थम् (रघु०) । वडं वलं दृढं वा वाति वडवा, वाडिषवत्वाद् ङीप् नास्ति । अश्वा स्वजादिः । प्रमूर्नानार्थे । वडवानां समूहे वाडवं, खण्डिकादिभ्यश्च (सू०) इत्यञ् ॥ ४७ ॥ (आश्वानं) अश्वस्यैकाहगम इति (सू०) खञ् । कशामर्हति कश्यम् । हेषृ ह्रेषृ अव्यक्ते शब्दे, गुरोश्च हलः इति (सू०) अः ॥ ४८ ॥ निगलत्यनेन निगालः, गलो यमुनाद्भिः, उन्धोर्ग इति (सू०) घञ् । गलस्योद्देशः प्रदेशः देवमणेरावर्तस्य स्थानम् । अश्वानां समूहः (आश्वीय, आश्वं), केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् (सू०), पक्षे तु- अनुदात्तादेरञ् (सू०)। अश्वानां धाराख्या स्याः पञ्च गतयः, धार्यते गतौ स्थाप्यतेऽनया धारा, भिदादित्वात्साधुः (षिद्भिदादिभ्योऽङ्)। आस्कन्दन- मास्कन्दितं, उत्तेरितादयोऽतिवेगः । धोरणं धोरितं, धोर्ऋ गतिचातुर्ये । रेचितमुत्तेजितादयम् । वल्गनं वा, यदाहुः- धौरितं वल्गितं धारा प्लुतमुत्तेजितं क्रमात् । उत्तेरितं चेति पञ्च विद्यात्तुरंगगतम् ॥ धौरितं गतिमात्रे स्यादोजनं वल्गितं पुरः । अग्रकायसमुल्लासात्कुञ्चितास्यं मत- मिष्यम् ॥ पूर्वापरोन्नमनतः क्रमादारोपणं प्लुतम् ॥ उत्तेजितं मध्यवेगं वोजनं श्चयवस्था । उत्तेरितेति- वेगाश्वो न शृणोति न पश्यति ॥ ४९ ॥ घोणते थाडेन वल्गते घोणा । प्रवते गच्छति प्रोथः, कृषी

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः समावुद्वान्तनिर्मदौ ।
हास्तिकं गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा ॥ ३७ ॥
गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः ।
कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३८ ॥
अवग्रहो ललाटं स्यादीषिका त्वक्षिकूटकम् ।
अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३९ ॥
अधः कुम्भस्य वाहित्थं प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।
आसनं स्कन्धदेशः स्यात्पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ४० ॥
पक्षभागः पार्श्वभागो दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।
द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४१ ॥
तोत्रं वैणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खले(ला) ।
अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादङ्कुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे ।
प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४३ ॥

संजातास्य गर्जितः । उद्वमति स्मोद्वान्तः, टुवम (उद्गिरणे)। राजवाग्रस्त्वैपवाह्यः समाद्यः समरोचितः । हस्तिनां समूहो हास्तिकं, अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् (सू०)। गजानां समूहो गजता, गजाच्चेति वक्तव्यात्तल् (गजसहायाभ्यांचेतिवक्तव्यम्)। धयत्येनां धेनुका । वष्टि कामयते वशा ॥ ३७ ॥ (गण्डति) गडि वदनैकदेशे । कटति वर्षति मदं कटः । माद्यत्यनेन मदः, मदोऽनुपसर्गे (सू०) इत्यप् । द्यति खण्डयत्यनेनेति दानम्, दात्तिर्वा । वम्यते वमथुः, ट्वितोऽथुच् (सू०)। कुम्भाकृती मांससंघातौ । वेत्ति संज्ञां यस्मादङ्कुशस्थानात्स विदुः, यत्पालकाप्यः– तत्र रक्षाविताने द्वे विदू द्वौ श्रवणे गतौ । प्राक्च पश्चाच्च तिर्यक्च षड्भेदाङ्कुशवारणा ॥ ३८ ॥ अवगृह्यतेऽङ्कुशेनावग्रहः । ईषा लाङ्गलदण्डेव– ईषिका । निर्यात्यनेनाशु निर्याणम् । चोल्यते पार्श्वगमनायाङ्कुशेनास्यां चूलिका ॥ ३९ ॥ वाह्यतेऽनेनाङ्कुश-चोदनया वाहित्थम्, मदवाहिनि स्थाने तिष्ठति वा, वाह्यस्यापभ्रंशोऽयम् । अस्य वाहित्थस्याधः प्रतिमानं, प्रतिमीयतेऽनेनेति, डुमिञ् प्रक्षेपणे, मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च (सू०) इत्यात्वम् । आस्यतेऽस्मिन्नासनम् । पद्मप्रतिकृति रक्तत्वात्पद्मकं, तारुण्ये हि हस्तिनां देहे रक्तबिन्दवः स्युः ॥ ४० ॥ हस्तिनां योऽग्रतो भागः (दन्तभागः)। हस्तिनः पूर्वः पादजङ्घादिभागो गात्रम्, पश्चाद्भागोऽवरम् ॥ ४१ ॥ तुद्यतेऽनेन वेणुमयेन प्रेषणेनेति तोत्रम् । आलायते बध्यतेऽत्रालानं, ला– आदाने । शृणाति बन्धनेन शृङ्खलम् । अन्दति बध्नाति– अन्दुः, अदि बन्धने, स्वार्थे कन्, इकोह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य (सू०)। निगल्यते बध्यतेऽनेन निगडः । अङ्क्यते गम्यतेऽनेनाङ्कुशः । सरत्यनया सृणिः ॥ ४२ ॥ दूष्यते दूयते वानया दूष्या । कक्षायां मध्यदेशे भवा कक्ष्या । व्रियतेऽनया वरत्रा मध्यबन्धनं चर्मरज्जुः । (कल्पना) हस्तिनः सज्जीकरणं, मद्ये लगैरिकादिना शृङ्गारणमित्येके । प्रवयत्येनां प्रवेणी । आस्तीर्यते हस्तिपृष्ठ आस्तरणम् । वर्णो वर्णकम्बलो भीमवत् । परिस्तोम्यते प्रस्तीर्यते परिस्तोमः, वर्णपरिस्तोम इत्येके । कुथ्यते कुथा ॥ ४३ ॥ वेत्ति स्म याति भुङ्क्ते च वीतं, विशेषेणेतं नष्टं वा । (हस्त्यश्वं) सेनाङ्गत्वात्समाहारः ।

तत्कालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः ।
सांदृष्टिकं फलं सद्य उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ ३० ॥
अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३१ ॥
प्रक्रिया त्वधिकारः स्याच्चामरं तु प्रकीर्णकम् ।
नृपासनं तु यद्भद्रासनं सिंहासनं तु तत् ॥ ३२ ॥
हैमं छत्रं त्वातपत्रं राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ।
भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३३ ॥
निवेशः शिबिरं षण्ढे सज्जनं तूपरक्षणम् ।
हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३४ ॥
दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ।
मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३५ ॥
इभः स्तम्बेरमः पद्मी यूथनाथस्तु यूथपः ।
मदोत्कटो मदकलः कलभः करिशावकः ॥ ३६ ॥

तत्कालः । तदेत्यस्य भावस्तदात्वम् । एष्यत्यायतिरागामी कालः । संदृष्टं प्रत्यक्षं प्रयोजनमस्य सांदृष्टिकम् । समनिहनि सद्यस्तात्कालिकं फलं, सद्यःपरुत्परारीति (सू०) साधुः । उदर्च्यतेऽभिलष्यतेऽस्तूर्ध्वंत उदर्कः ॥ ३० ॥ भयमित्युत्तरेण योज्यम् । आदिशब्दात्पिशाचाशन्यादि । स्वराष्ट्रचौराटविकादिभयम्, परराष्ट्राद्राष्ट्रविलोपादिभयं च । स्वपक्षाद्राजपुत्रादेरहेरिव गृहस्थिताद्भयम् ॥ ३१ ॥ प्रारम्भात्करणं प्रक्रिया । अधिक्रियते प्रस्तूयतेऽधिकारः, व्यवस्थास्थापनमित्यर्थः । चमर्या इदं चामरम् । प्रकीर्यते विक्षिप्यते प्रकीर्णम् । भद्रस्यासनं, भद्रं रूप्यादिमयं वासनं भद्रासनम् । हेम्न इदं हैमं सिंहोपलक्षितमासनम् ॥ ३२ ॥ छाद्यतेऽनेन च्छत्रम् । आतपात्त्रायत आतपत्रम् । तच्छत्रम्, यल्लक्ष्यं— नृपतिककुदं दत्त्वा यूने सितातपवारणम् (रघु०) । भद्रार्थं भद्रो वा कुम्भः । भृज्यते भ्रियते वा भृङ्गारः । सौवर्णं कालुः (कनकालुका) ॥ ३३ ॥ निविश्यते संनिवेशेन स्थाप्यते निवेशः सैन्यावासः । शेरतेऽस्मिञ्शिबिरम् । स्कन्धावारोऽपि । सच्छोभनं जन्यतेऽनेन सज्जनं सज्ज्यतेऽनेन वा । उपरक्ष्यतेऽनेनोपरक्षणं सैन्यस्य प्रगुणीकरणं गुल्मको वा । चतुरङ्गा हि सा (सेना), पदातीनां समूहः पादातं, भिक्षादित्वात् (सू०) अण् ॥ ३४ ॥ दन्तौ स्तोऽस्य दन्ती दन्तावलः, दन्तशिखात्संज्ञायां (सू०) इति वलच्, वले (सू०) इति दीर्घः । हस्ती, हस्ताज्जातौ (सू०) इतीनिः । द्वौ रदावस्य द्विरदः । न एकेन पिबत्यनेकपः । द्वाभ्यां पिबति द्विपः । मतङ्गादृषेर्जातो मतङ्गजः । गजति माद्यति गजः । नगे भवो नागः, न— अगो वा । कुञ्जौ कुम्भाधोगर्तौ दंष्ट्रे वा स्तोऽस्य कुञ्जरः, (रप्रकरणे) समुकुञ्जेभ्योरोवक्तव्यः (वा०), कुञ्जेषु रमते, वः । वारयत्यरीन्वारणः ॥ ३५ ॥ एतीभः । स्तम्बे तृणे रमते स्तम्बेरमः, स्तम्बकर्णयोरमिजपोः (सू०) इत्यच् । पद्मानि यौवने रक्तबिन्दवोऽस्य सन्ति पद्मी । सामजः सिन्धुरः कुम्भी च । इतोऽन्येभ्यः प्रागनवर्गः । मदेन स्नानाम्बुना कलो मनोज्ञः । कलो भाति कं लभते वा कलभः ॥ ३६ ॥ प्रभिद्यते स्म प्रभिन्नः । गर्जो

अषडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः।
विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २३ ॥
रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु।
समौ विस्र(श्र)म्भविश्वासौ भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २४ ॥
अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम्।
युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २५ ॥
न्याय्यं च त्रिषु षट् संप्रधारणा तु समर्थनम्।
अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २६ ॥
शिष्टिश्चाज्ञा च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः।
आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तूद्दानबन्धने ॥ २७ ॥
द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो बलिः।
घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २८ ॥
उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा।
यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २९ ॥

क्षीणो मन्त्रः, अषडक्षाशितंग्वलंकर्मेति (सू०) स्वार्थे खः, यदाहुः—'षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः' विविच्यते पृथक् क्रियते स्म विविक्तम्। विगतो जनो (यतः) विजनम्। छाद्यते स्म छन्नम्। निर्गता शलाका व्यापकोऽत्र निःशलाकम्। रहयति रह इत्येको रहःशब्दः सान्तः क्लीबे ॥ २३ ॥ अन्त्योऽव्ययम्। अव्यये अलिङ्गे द्वे (रहश्चोपांशु च)। अनुरहसं च। रहसि भवं रहस्यं, दिगादित्वाद्यत् (सू०)। विश्रम्भणं विश्रम्भ आश्वासः। यथोचिताद्रूपाद्भ्रंशो(भ्रंशः)ऽधःपातो भ्रेषः, भ्रेषृ चलने ॥ २४ ॥ नियतमीयते न्यायः, परिन्योर्नीणोः (सू०) इति घञ्। कल्पनं कल्पः सामर्थ्यम्। दृश्यमानस्योचितस्य रूपं देशरूपं, प्रशस्तं देशत्वं वा। सम्यगञ्जसा सत्यमत्र समञ्जसम्। उपाय एवौपयिकं, विनयादित्वात्— उपायाद्ध्रस्वत्वं च (म०) इति ठक्। अभिनीयते स्माभिनीतम् ॥ २५ ॥ तद्वन्न्याय्यं, न्यायादनपेतं, धर्मपथ्यर्थेति (सू०) यत्। उचितं साम्प्रतं च। संप्रधार्यते अर्थः स्वरूपमापद्यते ययेति संप्रधारणा गुणागुणपरीक्षा। अवनम्य वदनमववादो गुरुस्वरूपम्। निःशेषेण देशनं निर्देशः। नियतं देशनं निदेशः ॥२६॥ शासनं नियोजनं शिष्टिः। आज्ञापनमाज्ञा। संतिष्ठतेऽनया संस्था। मर्यते समोपार्थं(सीमार्थं)मव्ययं, तत्र दीयते मर्यादा। आ— अगति कुटिलं गच्छति— आगः, असन्तः क्लीबे। मन्यते हृदि मन्तुः। उद्दीयतेऽस्मिन्नुद्दानं, दोऽवखण्डने, दैङ् रक्षणे वा ॥ २७ ॥ द्वौ पादौ प्रमाणमस्य द्विपाद्यः, पणपादमाषशताद्यत् (सू०), प्राग्वहतेष्ठगभावात् पद्यत्यतदर्थे (सू०) इति पद्भावाभावः। भागोंश एव भागधेयः, नामरूपभागेभ्यो धेयः (वा०)। क्रीयते प्रत्येकं करः। बल्यतेऽनेन बलिः, राजग्राह्यः षड्भागादिर्भागः। प्रत्येकं स्थावरजङ्गमादिदेयः करः। नियोज्योपजीव्यो बलिरित्यवान्तरभेदोऽर्थशास्त्रोक्तो नाश्रितः। घट्टोऽनेन घट्टयति वा घट्टो नदीतरस्थानम्। आदिशब्दाद् गुल्मप्रतोल्यादौ प्रावेश्यनैष्का(ष्क्रा)म्यद्रव्येभ्यो राजग्राह्यो भागः शुल्कः, शलति शल्लति वा सुखेन यात्यनेनेति। प्रकर्षेणाराधनार्थमाह्रियते ढौक्यते स्म प्राभृतम्। प्रदिश्यते अर्प्यते प्रदेशनम् ॥ २८ ॥ उप समीपेऽयतेऽनेनोपायनम्। उपगृह्यत उपग्राह्यम्। उपह्रियत उपहारः। उपदीयत उपदा। कौशलिकं ढौकनं च। उपदोत्कोच इत्येके, उपप्रदानमुत्कोच उपदा इत्यन्ये। समाः। युतयोर्वधूवरयोरिदं यौतकम्। आदिशब्दाद् बन्धुदत्तादि। सुष्ठु दीयते सुदायः, स दाय इत्येके, स्वस्मान्ततः— यौतकादि धनं दायो दायो दानं च कथ्यते। ह्रियते हरणम् ॥२९॥ स [illegible]

लिपिलिव्याक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ ।
स्यात्संदेशहरो दूतो दूत्यं तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥
अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ॥ १७ ॥
स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ १८ ॥
सन्धिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ।
षड् गुणाः शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ॥ १९ ॥
क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ।
स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ॥ २० ॥
भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् ।
साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमथो समौ ॥ २१ ॥
भेदोपजापावुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २२ ॥

अक्षरविन्यासे सर्वं वर्तते । लिख्यते स्म लिखिता (-तम्) । लिप्यतेऽनया पत्रं लिपिः । (लिबिः) अपादित्वात् (ग॰) पक्षे बत्वम् । संदिश्यते संदेशो मुखस्वरूपम् । दूयतेऽनेन दवोऽभ्यावादत्वात्पर इति दूतः । (दूत्यं) दूतवणिग्भ्यां च तत्कर्मण्यात् (वा॰) यः ॥ १६ ॥ अध्वानं गच्छत्यध्वनीनः, अध्व· नोयत्खौ (सू॰) । पन्थानं गच्छति पथिकः, पथःष्कन् (सू॰) । पन्थानं नित्यं गच्छति पान्थः, पन्थोणनित्यं (सू॰) इति णः पन्थादेशश्च । अदूरविप्रकर्षस्त्वनयोः पर्यायत्वम् । दे(दं)- शिकोऽपि । पाथेयं शम्बलम् ॥ १७ ॥ स्वं वित्तमस्य स्वामी, स्वामिन्नैश्वर्ये (सू॰) इति साधुः । अमा सह समीपे वा भवोऽमात्यः, अमेहक्कतसित्रेभ्यस्त्यब्विधिर्योऽव्ययात्स्मृतः (का॰) इत्यप् (अव्ययात्त्यप्) । कूयते मृग्यत इति कोशः, कुष्णातः कोष इत्येके । राजतं राष्ट्रम् । दुःखेन गम्यतेऽस्मिन्दुर्गं, सुदुरोरधिकरणे चोति (वा॰) डः । बलन्त्यनेनेति बलम् । अङ्गान्या- रम्भकाणि । प्रक्रियतेऽनया प्रकृतिः । एकमुख्यः सजातीयसमूहः श्रेणिः । प्रकृतयो राज्याङ्गानीत्येव, यत्कात्यः- अमात्याश्च पौराश्च सद्भिः प्रकृतयः स्मृताः ॥ १८ ॥ सधानं संधिः, एकत्वमित्यर्थः । विग्रहं प्रकर्षं स्वस्थानात्परमण्डलं प्रति वाहुविलोडितैर्विग्रहः । यानं यातव्यं प्रति यात्रा । आसनं विग्रहादिनि- वृत्तिः । द्वौ प्रकारौ द्वैधं, द्विस्त्योश्चधमुञ् (सू॰), एकेन संधायान्यत्र यात्रेत्यर्थः, यद्वा- बलिनोर्द्विषतो- र्मध्ये वाचात्मानं समर्पयन् । द्वैधीभावेन वर्तेत काकाक्षिवदलक्षितः ॥ अशक्त्या बलवदाश्रयणमाश्रयः । गुणा गत्यंशकारकाः । शक्यते जतुमाभिः शक्तयः । कोशदण्डर्द्धिः प्रभुशक्तिः । उद्यम्य सहनमुत्साह- शक्तिः । मन्त्रः षड्गुणो मन्त्रशक्तिः ॥ १९ ॥ प्रागवस्थानतः शक्तिसद्वर्धनपचयः क्षयः, साम्यं स्थानं, उपचयो वृद्धिः । नीतिरन्यत्र धर्मादित्रिवर्गः [एतत्त्रय नीतिवेदिनां राज्ञां त्रिवर्गं इत्युच्यते] । प्रतपन्त्यनेन प्रतापः । प्रभवन्त्यनेन प्रभावः । तेज उग्रत्वं, यच्छूरतः- अधिक्षेपावमानादेः प्रयुक्तस्य परेण यत् । प्राणात्ययेप्यसहनं तत्तेजः समुदाहृतम् ॥ २० ॥ उत्तेत्यनेनोपायः । मायोपेक्षेन्द्रजालान्यपि- चान्तभूतानि । सहसि बले भवं साहसम् । स्यति वैरं सामयति वा साम प्रियवचनादि, साम सान्त्वने । सान्त्व सामप्रयोगे ॥ २१ ॥ संहतयोर्भेदनं भेदः । उपांशु जापनमुपजापः । उपधीयते समीपे ढौक्यते परीक्षार्थमुपधा, धर्मकामार्थभयोपन्यासेनाशयान्वेषणं, यत्कौटिल्यः- उपधाभिः शौचाशौचपरिज्ञान- ममात्यानाम् ॥ २२ ॥ पथ(शब्दाः)निःशलाकान्ता वक्ष्यमाणा वाच्यलिङ्गाः । न पञ्चशानि बलाबलः

उदासीनः परतरः पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥
द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशात्रवः ।
अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥
वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत् ।
सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥
यथार्हवर्णः प्रणिधिरव(प)सर्पश्चरः स्पशः ।
चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तः प्रत्ययितस्त्रिषु ॥ १३ ॥
सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञगणकावपि ।
स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥
तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः सत्री गृहपतिः समौ ।
लिपि(पि)कराक्षरचणाक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥

द्वयोरुदासीनः शत्रुमित्रयोर्मध्यस्थो ब्राह्मणः तस्य ... पश्चात्स्थितो राजा, पार्ष्णिमिव पार्ष्णिं गृह्णा-त्यवष्टभ्नाति (पार्ष्णिग्राहः) । ... मण्डलं परिसमाप्तं यदाहुः– अरिर्मित्रमरेर्मित्रं मित्रमित्रमतः परम् । तथारिमित्रमित्रं च विजिगीषोः पुरः स्मृताः ॥ पार्ष्णिग्राहस्ततः पश्चात्ततस्त्वाक्रन्द आसा-रश्च तयोः पृथक् । ... इति ... रिः, रृ गतौ । समानं पत्नार्थ-कार्याभिनिवेशात्सपत्नः । इयर्त्यरिः । द्वेष्टि द्विषन्, द्विषोऽमित्रे (सू०) इति शतृ । द्वेष्टि तच्छीलो द्वेषणः, जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्य ... (सू०) इति युच् । दुष्टं हृदयमस्य दुर्हृत्, सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः (सू०) इति साधुः ॥ १० ॥ विरुद्धः पक्षो विपक्षः । अमित्रः । शातयति शत्रुः । (शात्रवः) प्रज्ञादि-भ्यश्च (सू०) इति पक्षेऽण् । अभिहन्तीत्यभिघाती । ... पृङ् व्यायामे । इयर्त्यरातिः । प्रतीप-मर्थयते प्रत्यर्थी । परिपन्थयति परिपन्थी, छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि (सू०) इति साधुः । प्रत्यवस्थाता प्रत्यनीकः परिपन्थकोऽपि । [भ्रातृव्यासहनदुर्हृदाजघांसुप्रत्यनीकिनः] ॥ ११ ॥ वयसा तुल्यो वयस्यः, नौवयोधर्म... (सू०) यत् । समानं वयोऽस्य सवयाः । ... मित्रम् । समानं ख्याति सखा, समाने ख्यः स चोदात्तः (उ०) इतीण् (स) डिच्च ... । सख्युर्भावः सख्यं, स-ख्युर्यः (सू०) । सप्त पदानि क्रमाः सुप्तिङन्तानि वा व्याप्नोति (साप्तपदीनं), साप्तपदीनं सख्यं (सू०) इति साधुः । तदेतां... साप्तपदीनः । सौहृदं सौहार्दं सौहार्द्यं ... च । ... अनुरोध ... ॥ १२ ॥ देशकालोचितो वर्ण आकारो जातिवर्णनं वास्य यथार्हवर्णः । ... प्रणिधिः । अवसर्पः । चरति चरश्चारश्च, ... (...) । स्पशति बाधते परान्स्पशः । आप्यते स्माप्तः, अविसंवादित्वात् । ... प्रत्ययितः ॥ १३ ॥ संवत्सरः कालोपलक्षणं, तद्वेद सांवत्सरः, तदधीते तद्वेद (सू०) ... । ... ग्रहनक्षत्रादिज्ञानार्थ कृतो ग्रन्थो ज्योतिषः, ज्योतिषं वेद ज्यौतिषिकः, क्रतूक्थादिसूत्रान्ताट्ठक् (सू०) । दैवं पूर्वकृतं कर्म जानाति दैवज्ञः । मुहूर्तं वेद मौहूर्तिकः, क्रतूक्थादित्वात् (सू०) ... । ... ज्ञानमस्यास्तीति ज्ञानी । कृतान्तं वेद कार्तान्तिकः ॥ १४ ॥ ... तन्त्रेण ... ज्योतिषादि, तद्वेद तान्त्रिकः । सिद्धो निर्वाहितोऽप्रतिवादिभिः ... सत्रं गृहं सदादानं च । लिपिं करोति, दिवाविभेति (सू०) टः । अक्षरैर्वित्ताक्षरचणः, तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ (सू०) ॥ १५ ॥

राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् ।
मन्त्री धीसचिवोऽमात्योऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥
महामात्राः प्रधानानि पुरोधास्तु पुरोहितः ।
द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ ॥ ५ ॥
प्रति(ती)हारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः ।
रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थोऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥
स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
भौरिकः कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ७ ॥
अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः ।
सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥
श(ष)ण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ सेवकार्थ्यनुजीविनः ।
विषयानन्तरो राजा शत्रुर्मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥

न्यानां समूहो राजन्यकम्, गोत्रोक्षोष्ट्रेति (सू०) वुञ् । मन्त्रः कर्तव्यावधारणमस्त्यस्य मन्त्री । धिया सचति समवैति धीसचिवः । अमा सह समीपे वा भवोऽमात्यः । सामवायिकोऽपि । ततो मन्त्रिणोऽन्येऽमात्याः कर्मसचिवा नियोग्याख्याः ॥ ४ ॥ अमात्या इत्येव । महती मात्रा परिच्छद एषां महामात्राः । प्रदधाति प्रधानमाविष्टलिङ्गकम् । पुरो धीयते हिनोति वा पुरोहितः । सौवस्तिकोऽपि । द्रष्टा निर्णेता । व्यवहार ऋणादानादिन्यायः, यत्स्मृतिः- वि नानार्थेऽव संदेहे हरणं हार उच्यते । नानासंदेहहरणाद् व्यवहारः प्रकीर्तितः ॥ पृच्छतीति प्राट्, क्विब्वचिप्रच्छ्यायतीति (उ०) क्विप् दीर्घोऽसंप्रसारणं च । प्राट् चासौ विविधं वक्ति (विवाकश्च) प्राड्विवाकः । अक्षाण्यायसुखानि स्वानि वा पश्यति (अक्षदर्शकः), आक्षदर्शकोऽपि । धर्माधिकरणिकोऽक्षपटलिकश्च ॥ ५ ॥ प्रतिह्रियन्ते वार्यन्तेऽनेन प्रतीहारः । द्वारि तिष्ठति द्वाःस्थः । द्वारि स्थितं दर्शयत्यावेदयति (द्वाःस्थितदर्शकः), द्वे संज्ञे इत्येके, द्वाःस्थित एव हि दर्शयति, द्वाःस्थोपस्थितदर्शका इत्येके पेठुः । दण्डी दौवारिको वेत्री, उत्सारकश्च । अङ्गरक्षकवृन्दं, अनीके तिष्ठत्यनीकस्थः । [illegible] शाम्भवः । अधिकृतोऽधिकृतायमुखेष्वध्यक्षः, अध्यक्ष्णोति वा, [illegible] । अधिक्रियते- उपरि नियुज्यते स्माधिकृतः ॥ ६ ॥ तिष्ठति [illegible], लषपतपदस्थाभूवृषेत्युकञ् (सू०) । अधिकृत इत्येव, गां भुवं पाति गोपायति वा गोपः । भूरिणि [illegible] नियुक्तो भौरिकः । हैरिक इति पाठे हिरण्ये नियुक्तः । रूपमाहतमस्त्यस्य रूप्यं दीनारादि- रूप्याद्याहतप्रशंसयोर्यप् (सू०), निष्के दीनारादौ नियुक्तो नैष्किकः ॥ ७ ॥ वंशस्यान्तरन्तर्वंशं कुलं, स्त्रियस्ताः [illegible], अन्तःपूर्वपदाट्ठञ् (सू०) इत्येके । जनः कुब्जवामनादिसमूहः । सुविदन्तं विचार्य जानन्तं लान्ति सुविदल्ला ऊढाः स्त्रियः, तत्र भवाः सौविदल्लाः । कञ्चुकं विनीतवेषार्थमस्त्यस्य(कञ्चुकी) । कुस्त्रीर्व्यवस्थायां स्थापयन्ति स्थापत्याः, यद्वा तिष्ठन्त्यस्मिन्वेश्याः स्थः, [illegible] (वा०), स्थस्यादौ पतिः स्थपतिः, तत्र भवा इति, दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः (सू०) । सुविदस्तोढ्ढार इवे सौविदाः ॥ ८ ॥ शाम्यति शण्डः, अत एवान्तःपुरपालकः । वर्षं रेतःसेकं तृणोत्यावारयति वर्षवरः, वृष शक्तिप्रतिबन्धे वा । अर्थयते तच्छीलोऽर्थी, अर्थाच्चासंनिहिते (वा०) इतीनिः । विजिगीषुविषयादनन्तरहितः (शत्रुः) । अतः शत्रोः परभूमिस्थं विजिगीषोर्मित्रम् ॥ ९ ॥ ऊर्ध्वमासीन

तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ।
व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ॥ ५७ ॥
त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुर्वर्गः समोक्षकैः ।
सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥
इति ब्रह्मवर्गः । ७ ।

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।
राजा राट्पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥
राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।
चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥
येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।
शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राडथ राजकम् ॥ ३ ॥

व्यवयनं व्यवायः । मिथुनस्य स्त्रीपुंसयोरिदं मैथुनम् । निधूयन्तेऽङ्गान्यत्रेति निधुवनम् । रमणं रतम् । रतिः संवेशनं रहः सुरतं संमोहनं संप्रयोगोऽपि ॥ ५७ ॥ त्रिसंख्याको वर्गः, धर्मकामार्थैरित्येव । चतुर्णां भद्राणां समाहारश्चतुर्भद्रं, पात्रादिः (पात्राद्यन्तस्य न) । तैर्धर्मकामार्थैः, यत्कात्यः– आहुश्चत्वारि भद्राणि बलं धर्मं सुखं धनम् ।· जनीं वधूमर्हन्ति (वहन्ति), संज्ञायांजन्याः (सू०) इति साधुः । जामातुर्वयस्याः, जनीवोढारोऽपि, यल्लक्ष्यम्– यातेति जन्यानवदत्कुमारी (रघु०) ॥ ५८ ॥ इति ब्रह्मवर्गः । ७ ।

मूर्धन्यभिषिच्यते स्म, मूर्धावसिक्तोऽपि । राज्ञोऽपत्यं राजन्यः, राजश्वशुराद्यत् (सू०) इत्यत्र राज्ञोऽपत्ये जातिग्रहणम् । हिरण्यगर्भबाहुभ्यां जातो बाहुजः, बाहू राजन्यः कृत इति श्रुतेः । क्षत्रस्यापत्यं जातिः क्षत्रियः, क्षत्राद्घः (सू०) । क्षत्त्रं च क्षतत्राणात् । राजते राट्, व्रश्चभ्रस्जसृजमृजेति (सू०) षत्वं, झलांजशोऽन्ते (सू०) डत्वं, वावसाने (सू०) चर्त्वम् । पृथिव्या राजा पार्थिवः, सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ (सू०) । महीं क्षियत्यधिवसति महीक्षित् । [नराधिपश्च] ॥ १ ॥ अध्युपरिष्टे तच्छीलोऽधीश्वरः । अप्रतिरथोऽपि । नृपचक्रे राजके वर्तते स्वाम्येन, चक्रं राष्ट्रं वर्तयति वा चक्रवर्ती । सर्वस्या भूमेरीश्वरः सार्वभौमः, अनुशतिकादित्वात् (सू०) उभयपदवृद्धिः । अत्राहुः– रामो दाशरथी रावणारिः काकुत्स्थराघवाः । सौमित्रिर्लक्ष्मणो लङ्कापतिर्पौलस्त्यरावणाः ॥ दशास्योऽपीन्द्रजिन्मेघनादो मन्दोदरीसुतः । आञ्जनेयस्तु हनुमान्हनूमान्मारुतात्मजः । किष्किन्धाधिपसुग्रीवौ द्वौ जटायुर्जटायुषौ ॥ अजातशत्रुः शल्यारिर्धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । राधेयोऽङ्गाधिपः कर्णो भीमसेनो हिडिम्बजित् ॥ मारुतिः कीचकारातिर्बकवैरी वृकोदरः । धनंजयोऽर्जुनः पार्थो विजयः शक्रनन्दनः ॥ गान्डीवी फाल्गुनः सव्यसाची मध्यमपाण्डवः । जिष्णुः किरीटी बीभत्सुः श्वेतवाजी कपिध्वजः ॥ पृथा कुन्ती च कृष्णा तु पाञ्चाली याज्ञसेन्यपि । द्रौपदी विक्रमादित्यः साहसाङ्कः शकान्तकः ॥ शूद्रकस्त्वग्निमित्रो वा शालः स्याच्छालिवाहनः [सातवाहनः] । वैरोचनो बलिः कार्तवीर्योऽर्जुनः सहस्रदोः ॥ अन्यो भूम्येकदेशे यो नृपः (स मण्डलेश्वरः) ॥ २ ॥ इज्यते स्मेष्टम् । मण्डलस्य द्वादशराजकस्य, समुदितं स्थानं चैतत् । सम्यग्राजति सम्राट्, मोराजिसमःक्वौ (सू०) इति मस्य मः ॥ ३ ॥ राज्ञां समूहो राजकम्, राज-

अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैवं स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम्।
मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः पित्र्यं मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम्॥ ५१॥
स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि।
देवभूयादिकं तद्वत्कृच्छ्रं सान्तपनादिकम्॥ ५२॥
संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा।
नष्टाग्निः कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना॥ ५३॥
व्रात्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः।
धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः॥ ५४॥
सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च।
अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ तौ यथाक्रमम्॥ ५५॥
परिवेत्तानुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात्।
परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान् विवाहोपयमौ समौ॥ ५६॥

स्तीर्यते दीयते तीर्थम्। स्वल्पा कनिष्ठाङ्गुलिः, द्विःसमञ्जलिनानेन प्रजापतिभ्यो जलदानाम्नानात्। कः प्रजापतिर्देवतास्य कायं, कस्येत् (सू.) इत्यण्- इत्वं च। अङ्गुलिस्तर्जन्यत्र, पितरो देवतास्य पित्र्यं तीर्थं, वाय्वृतुपित्रुषसो यत् (सू०)। ब्रह्मा देवतास्य ब्राह्मं तीर्थं, ब्राह्मोऽजातौ (सू०) इति साधुः, यथाह याज्ञवल्क्यः- कनिष्ठादेशिन्यङ्गुष्ठमूलान्यग्रं करस्य च। प्रजापतिपितृब्रह्मदेवतीर्थान्यनुक्रमात्॥ कर-मध्य सौम्यं स्याहुः॥ ५१॥ ब्रह्मणो ज्ञानस्य भवनं ब्रह्मभूयं, ब्रह्मैकत्वं (कात्स्न्यं) मोक्ष इत्यर्थः, भुवो भावे (सू०) इति क्यप्। सह युनक्ति सयुक्, तस्य भावः सायुज्यम्। तद्वदिति देवत्वं देवसायुज्यं च। आदिशब्दान्मूर्धभूयादि। कृन्तति पापं कृच्छ्रं नाम तपः। संतापने भवं सांतपनं, यत्स्मृतिः- त्र्यहं सायं त्र्यहं प्रातस्त्र्यहमद्यादयाचितम्। त्र्यहं परं च नाश्नीयात्कृच्छ्रं सांतपनं स्मृतम्॥ आदि-शब्दादतिकृच्छ्रादि॥ ५२॥ संन्यसनं सर्वत्यागः, (तद्युक्तः) मरणाध्यवसायः (प्रायः)। पुमानिति प्रायस्य सान्तत्वं माविज्ञायीति, प्रायोपवेशनमतिर्नृपतिर्बभूव (रघु०)। नष्टाग्निः, वीरयते वीरोऽग्निस्तमुपेक्षया हन्ति (वीरहा)। ईर्यापथाख्यस्य भिक्षुव्रतस्य दम्भेन परविस्मापनार्थं मिथ्याकल्पना कुहना, कुह विस्मापने स्मायुच्। अर्थलिप्सया विज्ञानदर्शनं वा कुहनिकाख्यम्। शाश्वतस्त्वाह -ईर्ष्यालुर्दम्भचर्या च कुहनः कुहना स्मृता॥ ५३॥ व्रते साधुः काले व्रत्यः, तत्र भवो व्रात्यः प्रायश्चित्तार्हः, संस्कारोऽत्रोपनयनम्, यत्स्मृतिः- सावित्रीपतिता व्रात्या व्रात्यस्तोमादृते क्रतोः, व्रतेऽसाधुरित्येके, पृथग्व्यपदेशेनेत्यर्थः। निरा-क्रियते वेदहीनत्वान्निराकृतिः, आकृतेर्जातेर्वा निष्क्रान्तः, यत्स्मृतिः- अनधीत्य तु यो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्। स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ धर्मो ध्वजश्चिह्नमिवास्यास्य धर्मध्वजी। लिङ्गमाश्रया-देर्वृत्तिर्जीविकास्य, निक्षिप्य इत्यस्य जटा इति यावत्। अन्तरे कीर्णं रेतोऽस्यावकीर्णी, यत्स्मृतिः- ब्रह्मचार्यवकीर्णी स्यात्कामतस्तु स्त्रियं व्रजेत्॥ ५४॥ अभिभूय निर्मुक्तस्तमितोऽर्केणाभिनिर्मुक्तः। अभिभूयोदितोऽर्केऽस्याभ्युदितः॥ ५५॥ ज्येष्ठे भ्रातर्यकृतविवाहे कनिष्ठो विवाहं कुर्वन्, परिवर्ज्य विन्दति परिवेत्ता, यत्स्मृतिः- येऽग्रजेष्वकृतेषु कुर्वते दारसंग्रहम्। ज्ञेयास्ते परिवेत्तारः परिवित्तिस्तु पूर्वजः॥ उपलक्षणं चैतद्यतोऽग्निहोत्राद्यनादाने परिवेदनव्यवहारोऽस्ति। तस्य ज्यायानग्रजः, परिवर्ज्य विन्दति स परिवित्तिः॥ ५६॥ विवहनं विवाहः। उपयमनमुपयमः, यमः समुपनिविषु च (सू०) इति पक्षे- अप्।

पवित्रः प्रयतः पूतः पाषण्डाः सर्वलिङ्गिनः ।
पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ ४५ ॥
अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनामासनं वृषी ।
अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥
स्वाध्यायः स्याज्जपः सुत्याभिषवः सवनं च सा ।
सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् ॥ ४७ ॥
दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ॥ ४८ ॥
शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ।
नियमस्तु स यत्कर्मानित्यमागन्तुसाधनम् ॥ ४९ ॥
उपवीतं यज्ञसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ।
प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥ ५० ॥

प्रयतः । शुचिः पुण्यः पावनश्च । पाप(प)मणन्ति पाषण्डा वेदबाह्यव्रताः सर्वलिङ्गिनः क्षपणकाद्याः । सर्वाणि लिङ्गानि सन्त्येषां, भग्नव्रता इत्येके, आहुश्च– नानाव्रतधरा नानावेषाः पाषण्डिनो मताः । आषाढस्तु जात आषाढः, विशाखाषाढादण्मन्थदण्डयोः (सू०), यदाह– आषाढो व्रतिनां दण्डः । व्रत इत्येव, रम्भो वेणुपर्यायः ॥ ४५ ॥ कं जलमण्डं मध्ये लाति कमण्डलुः । कुण्डात् जानपदकुण्डेत्यत्र (सू०) ङीष् । वृषन्तोऽस्यां सीदन्ति वृषी । अज्यते क्षिप्यतेऽजिनम् । चरितं चर्म । कृत्यते कृत्तिः । (भैक्षं) भिक्षादिभ्योऽण् (सू०) ॥ ४६ ॥ स्वस्य वेदस्याध्ययनं स्वाध्यायः, इङश्चेति (सू०) घञ् । जपनं जपः, व्यधजपोरनुपसर्गे (सू०) इत्यप् । सोमं सुन्वन्त्यद्भिः परिवासयन्त्यस्यां सुत्या, संज्ञायां समजेति (सू०) क्यप् । अभिषवणमभिषवः, उपसर्गात्सुनोतीति (सू०) षत्वम् । अघं मृष्यते क्षोभ्यतेऽनेनाघमर्षणं, अन्दैवत्यो मन्त्रस्तद्रूपो वा, करणाधिकरणयोश्च (सू०) इति ल्युट्, शिरःप्रोक्षवासादिस्तूपचारात् ॥ ४७ ॥ अमावास्या(यां) दर्शः, दृश्यते चन्द्रोऽत्रेति, यागस्तूपचारात् । पूर्णिमायां पौर्णमासः, पूर्णो माश्चन्द्रस्तत्र भवः ॥ ४८ ॥ शरीरमात्रेणैव यत्क्रियते तत्, यम्यतेऽनेन चित्तं यमः, यमःसमुपनिविषुचेत्यप् (सू०), आह च– अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः । आगन्तु बाह्यं मृज्जलादि साधनं यत्रेति, अत एव कृत्रिमं कर्म नियमः, यदाह– शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः ॥ ४९ ॥ शैव ऊर्ध्वस्रोतसिकः सिद्धान्ती शुद्धमार्गिकः [शुद्धान्ती सिद्धमार्गिकः] । पाशार्थिकः पाशुपतो लाकुलीय महाव्रती ॥ कापाली सोमसिद्धान्ती तान्त्रिकः स्याद्विशेषदृक् । यामलोद्भवमार्गी स्यात्त्रिकभेदी षडर्धिकः ॥ पूर्वाम्नायी महामार्गो भैरवी दक्षिणागमः । शाक्तो वामस्रोतसिकः कौल आन्वयिको मतः । एकायनः शाश्व [सात्व] तश्च वैष्णवः पाञ्चरात्रिकः । रक्ताम्बरो भदन्तश्च शाक्यः श्रमणवन्दको । भिक्षुः श्वेतः श्वेतपटः क्षपणोर्दिगम्बरः(दिगीश्वरः) । नग्नाटः श्रावकोऽर्हीको निर्ग्रन्थो जीवजीवको ॥ [क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु । कक्षापटी च कौपीनं शाटी च स्त्रीति लक्ष्यतः ॥] उपवीयते प्राविश्यते स्मोपवीतम् [यज्ञोपवीतं च] । अन्यस्मिन्वामे करे प्रोद्धृते प्राचीनावीतं, प्रागेव प्राचीनं, विभाषाग्वेरादिक्स्त्रियाम् (सू०) इति सः, आवीयते स्मावीतम् । यज्ञसूत्रमित्येव, नियतं वीयते स्म निवीतं, मन्स्मनुः– प्रोद्धृते दक्षिणे पाणावुपवीत्युच्यते द्विजः । सव्ये प्राचीनमावीती निवीती कण्ठसज्जने ॥ ५० ॥ दैवम्य-

पाठे ब्रह्माञ्जलिः पाठे विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः ।
ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥
मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ।
संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥
समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ।
भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥
तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी वाचंयमो मुनिः ।
तपःक्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥
ऋषयः सत्यवचसः स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती ।
ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ॥ ४३ ॥
यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ ।
स्थाण्डिलश्चाथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः ॥ ४४ ॥

स हि ब्रह्माञ्जलिः स्मृतः । वेदपाठे– आस्यनिर्गता जलकणा ब्रह्मबिन्दवः । (ब्रह्मासनं) ध्यानयोगयोरास्यतेऽनेन । ध्यानमेकाग्र(तया)चिन्तनं, यदाह– तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् । योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः । कल्पते विधीयते प्रक्रम्यते वानेन विनियोगशास्त्रेणेति ॥ ३९ ॥ (मुख्यः) आद्यो विधिरित्यर्थः । (अनुकल्पः) मुख्याभावे प्रतिनिधिमंत्रः । उपाक्रियतेऽनेनेत्युपाकर्म वेदपाठारम्भे विशिष्टो विधिः, श्रौहिष्वौ छन्दांस्युपाकुर्यादिति हि श्रुतिः ॥ ४० ॥ वामेन वामः स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन तु दक्षिण इति पादोपसंग्रहणम् । अभिवाद्यते– आशिषं कार्यतेऽनेनेत्यभिवादनम्, अत एवाभिवादोपसंग्राह्यः । भिक्षते भिक्षुः, सनाशंसभिक्ष उः (सू०) । परित्यज्य सर्वं संन्यस्य व्रजति परिव्राट्, परौ व्रजेः षश्च पदान्ते (उ०) इति क्विप् (क्विप्) षत्वं च । कर्मन्देन पाराशर्येण प्रोक्तं भिक्षुतन्त्रमधीते, कर्मन्दकृशाश्वादिनिः (सू०), पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः (सू०) इति णिनिः । मा कृ(कुरु)त कर्माणि शान्ति[शान्ति]र्वः श्रेयसीति मस्करी, मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः (सू०) इति साधुः ॥ ४१ ॥ तपोऽस्यास्तीति, तपःसहस्राभ्यां विनीनी (सू०), अण् च (सू०) । अन्येषामपि दृश्यते (सू०) इति दीर्घात्पारिकाङ्क्षी । पारि(क्ष)कः सांन्यासिकश्च । वाचं यच्छति मौनेनास्ते वाचंयमः, वाचि यमो व्रते (सू०) इति खच् । मन्यते मुनिः । भिक्षुपर्याया एतावित्येके । दाम्यति दान्तस्तपःक्लेशानुद्विग्नः, वा दान्तशान्तेति (सू०) साधुः । वर्णोऽस्यास्तीति वर्णी, वर्णाद्ब्रह्मचारिणि (सू०) इतीनिः । ब्रह्म चरति तच्छीलो वा ब्रह्मचारी ॥ ४२ ॥ दर्शनादृषयोऽविसंवादिवाक् (सत्यवचाः) । (स्नातकः)स्नातवेदसमाप्तौ (ग०) इति श्रावादित्वात् (सू०) कन् । यो व्रतवांस्तीर्थेष्वाप्लवते स्नातीत्याप्लुतः स स्नातकः, यत्स्मृतिः– गुरवे तु धनं दत्त्वा स्नायाद्वा तदनुज्ञया । वेदव्रतानि वा पारं नीत्वा ह्युभयमेव च । यतं यमनमस्यास्तीति यती । यच्छत्युपरमति यतिः ॥ ४३ ॥ आद्यस्य(स्थण्डिलशायिनः), व्रते (सू०) इति णिनिः । परस्य (स्थाण्डिलस्य), स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते (सू०) इत्यण् । विगते रजस्तमसी येभ्यः, सात्त्विका इत्यर्थः । द्वयमतिगच्छन्त्यतिक्रामन्ति द्वयातिगाः ॥ ४४ ॥ पूयतेऽनेन पवित्रः । प्रयतते प्रयच्छत्युपरमति वा

अर्घं तु त्रिष्वर्घ्यमर्घार्थे पाद्यं पादाय वारिणि ।
क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥
स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ।
पूजा नमस्यापचितिः सपर्यार्चार्हणाः समाः ॥ ३४ ॥
वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासनम् ।
व्रज्याटाट्या पर्यटनं चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥ ३५ ॥
उपस्पर्शस्त्वाचमनमथ मौनमभाषणम् ।
आनुपूर्वी स्त्रियां वावृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥
पर्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ।
नियमो व्रतमस्त्री तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥
औपवस्त्रं तूपवासो विवेकः पृथगात्मता ।
स्याद् ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिरथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥

लिलिङ्गाः । वारिणीत्येव, पादार्घाभ्यां च (सू०) इति यत् । अतिथय इदमातिथ्यं, अतिथेर्ञ्यः (सू०) । अतिथौ साधु- आतिथेयं, पथ्यतिथीति (सू०) ढञ् । कात्यस्त्वाह- आवेशिकं त्रिष्वातिथ्यमभिधीयते, आतिथ्योऽतिथिरागन्तुरिति च माला, शाश्वतोऽप एवोभयमाह- आतिथ्यं स्यादतिथ्यर्थे आतिथ्यमतिथिं विदुः ॥ ३३ ॥ अवेशे- अप्रतिवेशे भव आवेशिकः, नैकग्रामीणमतिथिं विप्रं सांगतिकं तथेति स्मृतेः । नास्ति तिथिरस्यातिथिः, अतति सततं गच्छति वा, यत्स्मृतिः- अध्वनीनोऽतिथिर्ज्ञेयः, किं च- तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे त्यक्ता येन महात्मना । अतिथिः स हि विज्ञेयः शेषः प्राघूर्णिकः स्मृतः । प्राघूर्णिकः प्राघुणकोऽप्यभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ (नमस्या) नमोवरिवश्चित्रङः क्यजिति (सू०) नमः पूजायां क्यच्, अप्रत्ययात् (सू०) । अरचायनमपचितिः, अपचितश्च (सू०) इत्यत्र चायतेः क्तिनि (तिर्थे) चिभावोऽनेट्त्वं च वक्तव्यात् (वा०)। सपरे साधुः सपर्या, सह पर्यायक्रमेण वर्तते वा ॥ ३४ ॥ वरिवसः परिचर्यायां क्यच् (नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्) । शुश्रूषा गुरुसेवायां सदानया । परिचरणं (परिचर्या), परिसर्यापरिचर्यामृगयाटाट्यानामुपसंख्यानम् (वा०), परिचर्या तु पर्येष्टिरिति साहुरिः । परिव्रज्या तपस्यायां कण्डूयो विशाखिका । व्रजनं व्रज्या, व्रजयजोर्भावे क्यप् (सू०) । कुटिलमटनमटाट्या, सूचिसूत्रिमूत्र्यट्यर्त्यशूर्णोतीनामुपसंख्यानाद्यङ्ण्यन्तात् (वा०), अट्यापि, यन्मनुः- तीर्थसिद्धं पूपादिना च कानको रुक्मो गुणः, तीर्थत्वं च निवर्त्य कन्येतिवत् । एवं गदमदचरेति (सू०) चर्या । ईर्यापथे ध्यानमौनादिके सर्वेऽधमार्गाख्य भिक्षुव्रते स्थितिरनुष्ठानम्, चर्या त्वीर्या सिद्धपुंसा इति शुभिः ॥ १५ ॥ उपस्पृश्यन्तेऽद्भिः सान्यत्रोपस्पर्शः । आचम्यतेऽम्भोऽत्राचमनम् । मुनेर्भावः कर्म वा मौनं, इगन्ताच्च लघुपूर्वात् (सू०) इत्यण् । प्राचेतसस्त्वादिकविः स्यान्मैत्रावरुणश्च सः । वाल्मीकिश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः ॥ व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः ॥ पूर्वानुक्रमेणानुपूर्वं तस्य भाव आनुपूर्व्यं, ष्यञ्, षित्वाद्धा ङीत्वम् । आपादिनमावृत् । उणादौ, परिपाटनं परिपाटिः, इञ्, आवृत्परिपाट्यावनुक्रमस्त्रीत्वम् । ॥ १६ ॥ पर्ययणं पर्यायः, परावनुपात्ययइणः (सू०) इति घञ् । विपर्ययः क्रमोल्लङ्घनमतिक्रमश्च । व्र[वृ]ञ्यत यज्ञेऽस्मादि यन्त्र्यते (व्रतम्) । तद्व्रतमुपवासकृच्छ्रचान्द्रायणादिकं पुण्यपर्यायम् (पुण्यकम्), संज्ञायां कन् (सू०) ॥ १७ ॥ उपवस्ता प्राप्तोऽस्यौपवस्त्रं, उपवस्त्रादिभ्यः (सू०) इत्यण्, उपवस्तस्येदमौपवस्तमित्येके, वसु स्तम्भे, घः, उपवस्तुरिदमित्यमाधवि, यत्स्मृतिः- माषान्मधु मसूरांश्च वर्जयेदौपवस्तके । प्रकृतिपुरुषयोः पृथग्भावो विवेकः, भावानां पृथक्त्वरूपत्वामित्येके, विचिर् पृथग्भावे । ब्राह्मणस्तरःस्वाध्यायादेर्वर्चस्तेजो ब्रह्मवर्चसं, ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः (सू०) इत्यच् ॥ १८ ॥ ब्राह्मणं वेदायाञ्जलिः, यन्मनुः- संहत्य हस्तावध्येयं

परंपराकं शमनं प्रोक्षणं तथ यो वधः ।
वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥
सान्नाय्यं हविरग्नौ तु हुतं त्रिपु वषट्कृतम् ।
दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञस्तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥
त्रिष्वथ क्रतुकर्मेष्टं पूर्तं खातादिकर्मणि ।
अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥
त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।
विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनं ॥ २९ ॥
प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।
मृतार्थं तदहे दानं त्रिपु स्यादौर्ध्वदै(दे)हिकम् ॥ ३० ॥
पितृदानं निवापः स्याच्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।
अन्वाहार्यं मासिकेंऽशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥
पर्येषणा परीष्टिश्चान्वेषणा च गवेषणा ।
सनिस्त्वध्येषणा याच्ञाभिशस्तिर्याचनार्थना ॥ ३२ ॥

हिंसायाम् । प्रोक्षणं लक्षणया वधः, प्रोक्ष्य हि यज्ञे पशुर्हन्यते । यज्ञ इति शेषः । (प्रमीतः) मीञ् हिंसायाम् ॥ २६ ॥ संनीयते (सान्नाय्यं), पाय्यसान्नाय्येति (सू०) साधुः । हूयते हविः । वषण्मन्त्रलिङ्गेन पूतं हुतं वषट्कृतम् । अवाभ्रियते पूर्यतेनेनावभृथः । यज्ञकर्मार्हतीति यज्ञियं, यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ (सू०), यज्ञर्त्विग्भ्यां तत्कर्मार्हतीत्युपसंख्यानात् (वा०) घः ॥ २७ ॥ इज्यते स्मेष्टं यागादि, यदाह—एकाग्निकर्म हवनं त्रेतायां यच्च हूयते । अन्तर्वेद्यां च यद्दानमिष्टं तदभिधीयते । पिपर्ति स्म पूर्तं, नध्याख्यापॄमूर्च्छिमदामिति (सू०) निष्ठानत्वाभावः । खातं वाप्यादि, आह च— वापीकूपतडागानि देवतायतनानि च । अन्नप्रदानमारामः पूर्तमार्याः प्रचक्षते ॥ न म्रियते न नश्यत्यमृतम् । विशिष्टमदनं विघसः, उपसर्गेऽदः (सू०) इत्यप्, घञपोश्च (सू०) इति घस्लादेशः, यन्मुनिः— विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चामृतभोजनः । विघसो भुक्तशेषं स्याद्यज्ञशिष्टमथामृतम् ॥ २८ ॥ स्यत उपसर्गवशात्त्यक्ते दानार्थाः । स्पर्शनं तृणचारादानं, पुच्छादौ गवादि स्पृष्ट्वा हि दीयते । ओहाक् त्यागे । श्रण दाने ॥ २९ ॥ अंहतेरंहतिः । उत्सर्गोऽप्यपि । तदहे प्रेतादिने मृतमुद्दिश्य दानं पिण्डोदकादि, ऊर्ध्वदेहाद्भवमौर्ध्वदेहिकं, ऊर्ध्वदमाच्चदेहाच्चेति (ग०) ठञ्, अनुशातिकादित्वात् (सू०) उभयपदवृद्धिमाहुः ॥ ३० ॥ पितृभ्यो दानं, न्युप्यते निवापः । श्रद्धास्त्यस्य श्राद्धं पितृकर्म, प्रज्ञाश्रद्धार्चेति (सू०) णः । अन्वाह्रियतेऽन्वाहार्यममावास्याश्राद्धम् । कुं तपति सूर्योऽत्रेति कुतपो मध्याह्नात्प्रभृतः श्राद्धकालः, यत्स्मृतिः— दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करे । स कालः कुतपो यत्र पितृभ्यो दत्तमक्षयम् ॥ ३१ ॥ श्राद्धे द्विजशुश्रूषा (पर्येषणा), इषेरनिच्छार्थस्य (वा०) युज्वक्तव्यः, परेर्वा (सू०) । गवेष मार्गणे । गुर्वादेः कस्यचिदर्थे प्रार्थनया नियोजनं सनिः, षणु दाने । याचनं याच्ञा, यजयाचेति (सू०) नङ् । (याचना) ण्यासश्रन्थइति (सू०) बाहुलकाद्युच् । अभिशसनमभिशस्तिः, शस स्तवने ॥ ३२ ॥ आगन्तवन्ताः षट्

यूपाग्रं तर्म निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ।
दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥
अग्नित्रयमिदं त्रेता प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।
समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥
योगार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ।
तस्मिन्नानाय्योऽथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥ २१ ॥
ऋक्सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने ।
गायत्रीप्रमुखं छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः ।
धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
पृषदाज्यं सदध्याज्ये परमान्नं तु पायसम् ।
हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने पात्रं स्रुवादिकम् ॥ २४ ॥
ध्रुवोपभृज्जुहूर्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः ।
उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥

तरन्त्यनेन यूपं तर्म । निर्मन्थनार्थं दारु यतोऽग्निर्जायते, इयर्त्यग्निर्यतः सोऽरणिः । दक्षिणोऽग्निर्दक्षिणाग्निः । गृहपतिना संयुक्तो गार्हपत्यः, गृहपतिनासंयुक्तेञ्यः (सू॰) । आहोतव्य आहवनीयः ॥ १९ ॥ त्रीनिता त्रेता, पृषोदरादित्वादेत्वम् (सू॰) । प्रणयनं मन्त्रादिना संस्कारैः प्रादुष्करणम् । अग्नौ परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः (सू॰) इति निपात्यन्ते, समूह्यते ढौक्यत इत्यग्निः समूह्यः परिचीयते परिक्रम्य उपचीयत उपचाय्य इत्यग्निनामधेयानि प्रयोगविषयाणि ॥ २० ॥ आनाय्योऽनित्यइति (सू॰) साधुः, आनीयत आनाय्यः, प्रणीयते दाक्षिणाग्नित्वेन संस्क्रियते । (अग्नायी) वृषाकप्यग्निकुसीदेति (सू॰) ङीप्प्रसङ्गे- ऐत्वम् । सुष्ठु- आहूयते स्वाहा, स्वाहास्त्यस्या वा ॥ २१ ॥ समिधामाधानी सामिधेनी, समिधःमाधानेषेण्यण् (वा॰) । धीयतेनया धाय्या, पाय्यसान्नाय्यनिकाय्येति (सू॰) साधुः । गायन्तं त्रायते गायत्री । गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यतिजगतीशक्वर्यतिशक्वर्यष्टयत्यष्टिधृत्यतिधृतिकृतिविकृतिसंकृत्यतिकृत्युत्कृत्याख्यं षडक्षरादारभ्य षाड्विंशत्यक्षरं यावत्, छन्दति (चन्दते) छन्दः । अक्षरनियमात्मकं लघुगुरुनियमात्मकं च वृत्तं तनुमध्यादि । हव्यस्य पाको हव्यपाकः । पक्वं होतव्यं, चरुः चर्यते भक्ष्यते[रध्यते] इति । स्थाल्यपि चरुः, हव्यकव्यपाकोऽत्रेति ॥ २२ ॥ पक्वे तप्ते च क्षीरे दधियोजनादामिक्षा, पक्वे पयसि दध्यानयति सा वैश्वदेव्यामिक्षेति श्रुतिः, आमीयते पक्षिप्यते दध्यत्रेति । धूयतेऽग्निर्येनेति धवित्रं, अर्तिलूधूसूखनसहचरित्रः (सू॰) ॥ २३ ॥ पृषद्भिर्दधिबिन्दुभिः सहितमाज्यं पृषदाज्यम् । पयसि संस्कृतं पायसम् । अग्निमुखेन देवेभ्योऽन्नं हव्यं, ब्राह्मणमुखेन पितृभ्योऽन्नं कव्यं, कूयते शब्द्यते पितृभिः कव्यम् । उभयमुभयत्रेति तु श्रुतिज्ञाः । पिबन्त्यस्मात्पात्रम् । आदिग्रहणात्स्रुग्ग्रहादि ॥ २४ ॥ ध्रुवति ध्रुवा । [उपाश्रियतेनया] उपभृत् । हूयतेनया जुहूः । एते च स्रुचो विशेषाः स्त्रीलिङ्गाः । स्रवत्यस्मात्स्रुवस्तु स्रुग्विशेषः पुंलिङ्गः । उपामन्त्र्य क्रियते हन्यते स्म (उपाकृतः); यज्ञ इति शेषः ॥ २५ ॥ परंपरामक्रति परंपराकम् । शसनमिति तु युक्तः पाठः, पशु

उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।
यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥
पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ।
एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥
समज्या परिषद् गोष्ठी सभासमितिसंसदः ।
आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥
प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात्सदस्या विधिदर्शिनः ।
सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥
अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात् ।
आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥
वेदिः परिष्कृता भूमिः समे स्थण्डिलचत्वरे ।
चषालो यूपकटकः कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १८ ॥

चन्द्रोपज्ञमसंज्ञकं व्याकरणम् । उपज्ञाय– आरम्भणमुपक्रमः, यत्कात्यः– यस्मात्प्रवृत्त आरम्भः स उपक्रमः, नन्दस्योपक्रमः– नन्दोपक्रमाणि मानानि, उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम् (सू०) इति नपुंसकत्वम् । इज्यते यज्ञः, यजयाचेति (सू०) नङ् । सूयते सोमोऽस्मिन्सवः । अध्वानं रात्यध्वरः, न ध्वरति वा, ध्वृ हूर्छने । सप्ततन्तुः सप्तभिश्छन्दोभिस्तन्यत इति । मखति घर्मे मखः । क्रियते क्रतुः ॥ १३ ॥ स्वाध्यायो ब्रह्मयज्ञः, होमो देवयज्ञः, अतिथिपूजनं नृयज्ञः, तर्पणं श्राद्धाख्यं पितृयज्ञः, बलिर्भूतयज्ञः, यन्मनुः– अध्याप(न)नं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ १४ ॥ समजन्ति मिलन्त्यस्यां समज्या, संज्ञायांसमजनिषदेति (सू०) क्यप् । परिषीदन्त्यस्यां परिषद्, पर्षच । गावो ज्ञानोक्तयस्तिष्ठन्त्यस्यां गोष्ठी । सह भान्त्यस्यां सभा । संयन्त्यस्यां समितिः । संसीदन्त्यस्यां संसद् । आतिष्ठन्त्यस्यामास्थानी । सीदन्त्यस्मिन् सदः, असुन्, सान्तः क्लीबे ॥ १५ ॥ वंशः कुलं स्थूणा वा । प्राग्वंशोऽत्र प्राग्वंशः पत्नीशालाख्योऽग्निशालायाः प्रथमो भागः । सदसि साधवः, ऊनाधिक्यज्ञा ऋत्विग्भेदाः सदस्याः । सभायां सीदन्ति सभासदः । सभां स्तृणन्ति सभास्ताराः । समाजं समवयन्ति सामाजिकाः, समवायान्समवैतीति (सू०) ठक् । पार्षदाः पारिषद्याः सभ्यश्चापि ॥ १६ ॥ ऋत्विज इत्येव । अध्वरं याति न ध्वरति वाध्वर्युर्नामर्त्विग्विशेषः, स यजुर्वित्कठः स्यात् । उद्गायत्युद्गाता छन्दोगः स्यात् । जुहोति होता बह्वृचः स्यात् । अग्नीनिन्धेऽग्नीद्, तस्य (अग्नीधः) शरणमाग्नीध्रः, अग्नीधःशरणेरण्भंच (वा०) इति रञ् । आद्यशब्दाद्गोतृब्राह्मणाच्छंस्यच्छावाकग्रावस्तुदुन्नेतृमैत्रावरुणप्रतिप्रस्थातृप्रतिहर्तृनेष्टृपोतृसुब्रह्मण्याः । इत्थं सदस्याः सप्तदशर्त्विजः । एतिस्तुशास्वृदृजुषइति (सू०) वृञो ग्रहणाद् वृङोऽपि, व्रियन्त इति वार्याः, ऋहलोर्ण्यत् (सू०) । वृताः कुर्वन्ति ये यज्ञमृत्विजस्त इति कात्यः । ऋतौ यजतीति ऋत्विक्, ऋत्विग्दधृगिति (सू०) साधुः ॥ १७ ॥ विदन्त्येनां वेदिः, परिष्कृता चातुरस्रेण भूषिता यागार्थम् । अपरिष्कृतां त्वाह, तिष्ठन्त्यस्मिन्स्थण्डिलम् । चत्यते चत्वरम्, यागार्थमसंस्कृता भूमिः । तक्ष्णा घटितो यूपाग्रे कटकाकृतिः, चष्यत उत्कीर्यते चषालः । (कुम्बा) कुबि छादने, चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च (सू०) । व्रियतेऽनया वृतिः, यज्ञवाटे परिधिः ॥ १८ ॥

उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद् गुरुः ।
मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥ ७ ॥
यष्टा च यजमानश्च स सोमवति दीक्षितः ।
इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥
स गीष्प(पे)तीष्ट्या स्थपतिः सोमपीथी तु सोमपाः ।
सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥
अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु यः ।
लब्धानुज्ञः समावृत्तः सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥
छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ।
एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥
सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवश्चितवानग्निमग्निचित् ।
पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥

षेति (सू०) घञ् । गृणात्युपदिशति गुरुः, यन्मनुः— निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधि । संभावयति चान्नेन स विप्रो गुरुरुच्यते ॥ निषेको गर्भाधानविधिः । आदिशब्दात्पुंसवनसीमन्तोन्नयनजातकर्मनामकरणान्नप्राशनचौडोपनयनादीनि । आचरणीयः सेव्य आचार्यः, आचारं ग्राहयतीति नैरुक्ताः, मन्त्र(व्याख्या)कृद्वेदाध्यापनादिशिष्यस्याकृदुपनयनेन द्विजत्वापादनात्, यदाह— उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः । सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ दिशत्यादेशत्यादेष्टा, आदिष्टीति पाठे— आदिष्टमनेनेति, इष्टादिभ्यश्च (सू०) इतीनिः, क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानात् (वा०) सप्तमी । व्रती सनियमः ॥ ७ ॥ यजते यजमानः, पूङ्यजोः शानन् (सू०) । स व्रती सोमवत्यध्वरे दीक्षिताख्यः, दीक्षा संजातास्येति । सोमपानमिष्टोमादिक्रतुः, यद् गौतमः— अग्निष्टोमोऽत्यग्निष्टोम उक्थ्यः षोडशी वाजपेयोऽतिरात्रोऽप्तोर्याम इति सोमसंस्थाः । यजनमिज्या, व्रजयजोर्भावे क्यप् (सू०) । अत्यर्थं यजति तच्छीलो यायजूकः, यजजपदशां यङः (सू०) इत्यूकः । (यज्वा) सुयजोर्ङ्वनिप् (सू०) ॥ ८ ॥ स यज्वा बृहस्पतिसवनहेतुना, स्थापयतीति स्थपतिः । पानं पीथः, पातृतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक् (उ०), सुमास्येतीत्वम् (सू०), सोमपीती तु पाठ्याः पठुः । सर्वं दायं, दीक्षितस्तु तत्कालम् । सर्वं विन्दत्यस्मात्सर्ववेदाः, असुन् ॥ ९ ॥ अनूक्तवान्, उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च (सू०) इति कानचि साधुः । प्रोच्यते प्रवचनं वेदः । अधीतमनेनाधीती, इष्टादिभ्यश्च (सू०) इतीनिः, क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानात्सप्तमी (वा०) । अधीत्य गुर्वाज्ञया गुरुगृहात् समावर्तते स समावृत्तः— स्नातकाख्यः, गुरुगेहादनावृत्तस्नातको हि न लभ्यते ॥ सुनोति सुत्वा सुयजोर्ङ्वनिप् (सू०) । अभिषवः सोमकण्डनसंधानम् ॥ १० ॥ छत्रमिव शीलमस्य छात्रः, छत्रादिभ्यो णः (सू०), छत्रेण गुरुसेवा लक्ष्यते । गुरोरन्ते वसत्यन्तेवासी, शयवासवासिष्वकालात् (सू०) इति सप्तम्या अलुक् । शासनीयः शिष्यः । शिक्षायां भवाः शैक्षाः । प्रथमकल्प आद्यारम्भः प्रयोजनमेषां तमर्हयन्ते वा प्राथमकल्पिकाः । तुल्यवेदास्तुल्यव्रतास्तुल्याचाराश्चान्योन्यं, समानं ब्रह्म चरन्ति सब्रह्मचारिणः, ब्रह्म वेदो ब्रह्म तपो ब्रह्म ज्ञानं च शाश्वतमिति, एकस्मिन्वेदे व्रतमाचरन्ति वा, व्रते (सू०) इति णिनिः, चरणे ब्रह्मचारिणि (सू०) इति समानस्य सः ॥ ११ ॥ (सतीर्थ्याः) समानतीर्थे वासी (सू०) इति यत्, तीर्थे ये (सू०) इति सत्वम् । तरन्त्यनेनाविद्यां तीर्थं गुरुः । अग्निचिदादिनाग्निः, अग्नौ चेरिति (सू०) क्विप् । इत्येवं ह किलेति गुरुपारंपर्ये स्थितमितिह, ततः स्वार्थे यञ्— अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः (सू०) ॥ १२ ॥ उपज्ञायत इत्युपज्ञा, इदं प्रथमतया ज्ञानं, चन्द्रस्योपज्ञा

संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।
वंशोऽन्ववायः सन्तानो वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥
विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।
राजबीजी राजवंश्यो बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥
महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।
ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥
आश्रमोऽस्त्री द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।
विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्युतः ॥ ४ ॥
विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः ।
धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः ॥ ५ ॥
धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः ।
दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियश्छान्दसः समौ ॥ ६ ॥

संतन्यतेऽनया संततिः । गूयते जन्यते कुल्यते वाऽनेन । अन्वीयतेऽन्वयः । वम्य[न्य]ते जन्यते वंशः । अन्ववैत्यन्ववायः । व्रियन्ते वर्ण्यन्ते वा वर्णाः ॥ १ ॥ चत्वार एव वर्णाः, स्वार्थे ष्यञ् (चतुर्वर्णादीनां स्वार्थउपसंख्यानम्) । राजबीजमस्यास्ति राजबीजी । राजवंशे साधुर्भवो वा राजवंश्यः । बीजे साधुर्भवो वा यथा, सूर्यबीज्यो रामः, यत्प्रकरणे– अन्येभ्योऽपि दृश्यते (वा०) ॥ २ ॥ कुलस्यापत्यं कुलीनः । आरात्तापकेभ्यः कर्मभ्यो यात आर्यः, अरणीयो गम्यो वा । सभायां साधुः सभ्यः । संश्चासौ जनश्च सज्जनयते वा सज्जनः । साध्नोति परकार्यं साधुः । आमुष्यायणोऽमुष्यपुत्रश्च । ब्रह्म वेदो ब्रह्म तपो ब्रह्म ज्ञानं च शाश्वतं, तच्चरत्यर्जयत्यवश्यं ब्रह्मचारी वर्णी । गृही गृहमेधी गृहाश्रमी ज्येष्ठाश्रमी । प्रतिष्ठन्तेऽस्मिन्प्रस्थः, वनप्रस्थे भवो वानप्रस्थो वैखानसाख्यः । भिक्षते तच्छीलो भिक्षुर्यतिः, सनाशंसभिक्षउः (सू०) । अस्मिंश्चतुष्के, आश्राम्यन्ति तपस्यन्त्यस्मिन्नाश्रमं प्रत्येकं वर्तते ॥ ३ ॥ मातुर्यदग्रे जननं द्वितीयं मौञ्जीबन्धनादिति द्विजातिः । अग्रे– आदौ– अग्रान्मुखाद्वा जन्मास्य, यच्छ्रुतिः– ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् । वाडव इवातृप्तः । विशेषेण प्राति पूरयति विप्रः, विपाति विपति पापं वा विप्रः, विप क्षेपे । ब्रह्मणोऽपत्यं ब्राह्मणः । जातिमात्रोपजीवी स्याद्विप्रस्तु ब्राह्मणब्रुवः । षट् कर्माणि ब्राह्मणस्य– अध्ययनमध्यापनं यजनं याजनं दानं प्रतिग्रहश्चेति ॥ ४ ॥ वेत्ति विद्वान्, विदेःशतुर्वसुः (सू०) । विपश्यंश्चिन्तयते विपश्चित् । दोषाञ्जानाति ज्ञात्वा जह्यादिति दोषज्ञः । सन् विद्यमान उत्तम इत्यर्थः, अन्ये त्वसत्कल्पाः । शोभनं ध्यायति सुधीः, अन्येभ्योऽपि दृश्यते (सू०) इति क्विप् संप्रसारणं च । ओकः स्थानं वेत्ति कोविदः, कुङ् शब्देऽस्माद्वा । धियमीरयति धीरः । मनस ईष्टे, मनीषाऽस्त्यस्य वा मनीषी । जानातीति ज्ञः, इगुपधेति (सू०) कः । प्रज्ञ एव प्राज्ञः, प्रज्ञादिभ्यश्च (सू०) इत्यण्, प्रज्ञाऽस्त्यस्य वा, प्रज्ञाश्रद्धेति (सू०) णः । सम्यक् ख्यानं ज्ञानमस्त्यस्य संख्यावान्, संख्या विचारणा वा । पण्डते जानाति पण्डितः, पडि गतौ, सर्वे गत्यर्था ज्ञानार्था इति, पण्डा धीः संजाताऽस्य वा । कवते वर्णयति कविः, कविताऽपि ॥ ५ ॥ सुवति सूरिः । कृतमस्याऽस्तीति कृती कृतकृत्यः । कर्षति विविङ्क्ते कृष्टिः । लब्धं वर्णनं प्रसिद्धिर्येन स लब्धवर्णः । विचष्टे विचक्षणः । (दूरदर्शी) अप्रत्यक्षमूहत इत्यर्थः । (श्रोत्रियः) श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते (सू०), श्रोत्राभ्यां कृतकर्मेति । छन्दोऽधीते छान्दसः । मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि । वैशेषिके स्यादौलूक्यः सौगतः शून्यवादिनि ॥ नैय्यायिकस्त्वाक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक आर्हतः । चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्यौ साङ्ख्यकापिलौ ॥ ६ ॥ उपेत्याधीयतेऽस्मादुपाध्यायः, इङ-

चूर्णानि वासयोगाः स्युर्भावितं वासितं त्रिषु ।
संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥
माल्यं मालास्रजौ मूर्ध्नि केशमध्ये तु गर्भकः ।
प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥
प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठाद्वैकक्षकं तु तत् ।
यत्तिर्यक्क्षिप्तमुरसि शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥
रचना स्यात्परिस्यन्द आभोगः परिपूर्णता ।
उपधानं तूपबर्हः शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥
शयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्काः खट्वया समाः ।
गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् ॥ १३८ ॥
समुद्गकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।
प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९ ॥
दर्पणे मु(म)कुरादर्शौ व्यजनं तालवृन्तकम् ॥ १४० ॥
इति नृवर्गः । ६

वासितोदः । वास्यते सुगन्धीक्रियते यैर्युज्यमानैर्मिश्रैस्ते वासयोगाः । भाव्यते भस्यते भावितं, भुवोऽवकल्कने णिच् (धा० सू०) । वास्यते छाद्यते स्म, वस स्नेहच्छेदापहरणेषु । गन्धद्रव्यैर्भावितं पुष्पाद्यैर्वासितमित्येके । संस्कारास्तिलादीनां गुणाधानम् । आद्यशब्दाद्धूपादिभिः । मालैव माल्यं, चातुर्वर्ण्यादित्वात्ष्यञ् (चतुर्वर्णादीनां स्वार्थ उपसंख्यानम्) । माल्यते धार्यते माला । सृज्यते स्रक्, ऋत्विगदधृगिति (सू०) साधुः । माल्यमित्येव, गर्भस्थत्वाद्गर्भकः । माल्यमित्येव, मध्यात्प्रभ्रष्टकम् । ललाटे ललामकं पुरोन्यस्तकम् ॥ १३५ ॥ कण्ठादृजुत्वेनावलम्बमानं माल्यं प्रालम्बम् । विकक्षायां भवं वैकक्षकं, यज्ञोपवीतन्यायेन माल्यम् । माल्यमित्येव, आपीड्यत आपीडः । शेते शिरसि शेखरः । उत्तंसोऽपि ॥ १३६ ॥ शिल्पादिना रचना, अन्यापि । आभुज्यतेऽनेनाभोगः । उपधीयतेऽस्मिन् शिर उपधानम् । उपबृह्यतेऽनेनोपबर्ह्यते वा– उपबर्हः शिरोनिवेशनम् । शेरतेऽत्र शय्या, संज्ञायां समजेति क्यप् (सू०) । (शयनीयं) कृत्यल्युटो बहुलम् (सू०) इत्यधिकरणेऽनीयर् । तूलिकापि ॥ १३७ ॥ मञ्च्यते धार्यतेऽनेन मञ्चः । पर्यङ्क्यते पल्यङ्कः, परेश्च घाङ्कयोरिति (सू०) वा लत्वम् । खट्यतेऽनेन श्रान्तः खट्वा । गायते गाः, गच्छभिन्दुके गुडको गेन्दुकः, गिन्दुक इत्येके, (गे) गगने– इन्दुरिवेति वा । कन्द्यतेऽर्द्यते क्रीडार्थिभिः कन्दुकः, कं शिरो दुनोति वा गमनागमनेऽक्षेपात् । दीप्य भासते । च्युतापानक्रीडायां गुलिका गिरिकश्च तौ । (प्रदीपः) प्रः स्वार्थे मेरुसुमेरुवत् । [कज्जलध्वजः, दशेन्धनो गृहमणिः स्नेहाशय] । पीयत उपवेशनेन प्रस्यते पीठम् ॥ १३८ ॥ समुद्यते समुद्गच्छति वा समुद्गकः । संपुट्यते श्लेष्यते संपुटकः, भूषणाद्यावपनम् । प्रतिगृह्णात्याचिक्षादि प्रतिग्राहः, विभाषाग्रहः (सू०) इति णः । पतद् गृह्णाति पतद्ग्रहः । कर्पण्याख्या, प्रसाध्यन्तेऽनया केशाः । कङ्कते कङ्कती, कङ्कान्दन्तांस्तनोति वा । पिष्टेन कुङ्कुमचूर्णादिनातति पिष्टातः । पटो वास्यतेऽनेन पटवासः ॥ १३९ ॥ दृप्यन्त्यनेन सुवेषा दर्पणः । मङ्क्यते मण्ड्यतेऽनेन मु(म)कुरः । आदृश्यते रूपमस्मिन्नादर्शः । आत्मदर्शोऽपि । व्यजति वातोऽनेन विक्षिप्यते वा व्यजनम् , तालस्येव वृन्तमस्य तालवृन्तम् । तालस्य वृन्तेऽभ्यत इत्येके [तालवृन्तामास्यस्पर्येत्येके] ॥ १४० ॥ इति नृवर्गः । ६

कालीयकं च कालानुसार्यं चाथ समार्थकम् ।
वंशिकागुरुराजार्हलोहकृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥
कालागुर्वगुरु स्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।
यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥
बहुरूपोऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ।
तुरुष्कः पिण्डकः सिल्हो यावनोऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥
श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्ट(पिष्ट)सरलद्रवौ ।
मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चाथ कोलकम् ॥ १२९ ॥
कक्कोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।
घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥
गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम्
तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥
तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ।
कुचन्दनं चाथ जातीकोशजातीफले समे ॥ १३२ ॥
कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलैर्यक्षकर्दमः ।
गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकाख्री विलेपनम् ॥ १३३ ॥

न गुरु–अगुरु । कालागुरु कालवर्णाख्यम् । रोहति लोहम् । कृमिभिर्जन्यते कृमिजम् । जोङ्गकं गिरिजम् । आहुश्च– अगुरु प्रवरं लोहं कृमिजग्धमनार्यजमिति (शाश्वतः) ॥१२६॥ मल्लिकापुष्पगन्ध्यगुरु मङ्गल्याख्यम् । यक्षान्धूपयति यक्षधूपः । सर्जवृक्षस्य रसः सर्जरसः । राति प्रीतिं रालः, रालापि ॥ १२७ ॥ बहुरूपो नानाकृतिगन्धः । वृकान्धूपयति वृकधूपः । तुरुष्को यवनदेशजः । पिण्डको द्रव्यान्तरैः सह पिण्डितः स्वरूपात्र च्यवते । सिल्हाख्यो वृक्षः, सिल उञ्छे, सुगन्धिप्रस्तावात्पुनरिहोक्तः । पयसो दुग्धक्षीरस्य विकारः घृतिः पायसः ॥ १२८ ॥ श्रिया वासो वेष्टश्च निर्यासः, वेष्टते वेष्टः । सरलस्य देवदारुभेदस्य द्रवो निर्यासः । विकसति सौगन्ध्यमस्याः कस्तूरी, कं स्तूयते वा । कोलमिव कोलकम् ॥ १२९ ॥ ककन्ते कक्, (ककं) कोलति संस्त्यायति कक्कोलकम् । कोशे फलान्यस्य कोशफलम् । कल्पते कर्पूरः । घनरसेव सारोऽस्य शैत्यात् सिताभ्रत्वाच । चन्द्रपर्यायो ह्लादकत्वात् । हिमा शीतला वालो वालुका च हिमवालुका ॥ १३० ॥ भद्रा श्रीरस्य । चन्द्यते ह्लाद्यतेनेन चन्दनम् । तैलपर्णगोशीर्षौ गिरी आकरावस्य । हरेरिन्द्रस्य चन्दनं, हरि कपिलं वा, तच्चातिशीतलं पीतमाहुः । श्रीखण्डं च ॥ १३१ ॥ तिलस्येव पर्णान्यस्याः तिलपर्णी नदी– आकरोऽस्या इत्यन्ये । पत्त्रेष्वङ्गति पत्राङ्गम् । पतङ्गं च पत्राङ्गापभ्रंशोऽयम् । (कुचन्दनं) कौ चन्दनम् । जातीलतायाः कोशं जातीसस्याख्यम् ॥ १३२ ॥ एतैः पिण्डीकृतैर्यक्षप्रियः पङ्कः । सकुङ्कुमैरित्यागमः, धन्वन्तरिस्तु– कुङ्कुमागुरुकस्तूरीकर्पूरं चन्दनं तथा । महासुगन्धमित्युक्तं नामतो यक्षकर्दमः ॥ द्वौ द्वौ भिन्नार्थावित्येके । वर्तिर्हि नयनौ प्रसिद्धा ॥ १३३ ॥ चूर्णे पटवा-

अधोंशुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमंशुकम् ।
स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥
अस्त्री वितानमुल्लोचो दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ।
प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा ॥ १२० ॥
परिकर्माङ्गसंस्कारः स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।
उद्वर्तनोत्सादने द्वे क्लीबे आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥
स्नानं चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकोऽथ प्रबोधनम् ।
अनुबोधः पत्त्रलेखा पत्त्राङ्गुलिरिमे स्त्रियौ ॥ १२२ ॥
तमालपत्त्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।
द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियामथ कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥
काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतनम् ।
रक्तसंकोचपिशुनं वी(धी)रलोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥
लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तो द्रुमामयः ।
लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञमथ जायकम् ॥ १२५ ॥

आ प्रपदादाप्रपदं, आप्रपदंप्राप्नोति (सू०) इति खः ॥ ११९ ॥ वितन्यते वितानः । उपरि उल्लोच्यत उल्लोचः, उल्लोच्यतेऽपनीयतेऽनेनातपादि वा, चन्द्रकाह्वयः । कर्करोऽपि । दूष्यतेऽनेनान्यदर्शनं दूष्यम् । आद्य-शब्दात्पटकुटी । पटकुड्यं गुणशालि[लय]नी स्थूला[लं] च । प्रतिसिनोति प्रतिबध्नाति प्रतिसीरा । जवन्त्यस्यां जवनिका । तिरस्करोति छादयति तिरस्करिणी काण्डपटाख्या । क्वचित्- पर्यङ्किका परिकरः पर्यङ्कश्चावसक्थिका । अञ्चलं त्वंशुकान्ते नीवी सारसनमुच्चयः ॥ १२० ॥ मलपरिमार्जनार्थं क्रिया परि-कर्म स्नानोद्वर्तनादि । मार्जनं मार्ष्टिः शुद्धिमात्रम्, वसेस्तिः (उ०) इति बाहुलकात्तिः, व्रश्चभ्रस्जेति (सू०) षः, मृजेर्वृद्धिः (सू०) । मृजति षिद्भिदादित्वादङ् (सू०) । उत्साद्यते मलोऽनेनोत्सादनम् । छद अपवारणे, उच्छादनमिति तु सभ्याः । (आप्लावः, आप्लवः) विभाषाऽऽङिरुप्लुवोरिति (सू०) घञ् । मज्जनं च ॥ १२१ ॥ चर्च्यतेऽनयाङ्गं चर्चा । चर्चिकायां चर्चने साधु चार्चिक्यं चन्दनादिना पुण्ड्रादि । तिष्ठत्यङ्गे स्थासकः । चर्चिक्यं त्वपभ्रष्टम् । अनुबोधः, यथा कस्तूरिकादेर्मेदादिना । पत्त्राङ्गु-लिलेखा (पत्त्रलेखा) । (पत्त्राङ्गुलिः) द्राविडकादि(पु) लिङ्गादिभेदेन कपोले पत्त्रभङ्गः ॥ १२२ ॥ तमालपत्त्राकृति कस्तूर्या ललाटे तमालपत्त्रम् । तिलकाकृति तिलकम् । चित्रकं नानावर्णम् । विशिनष्टि विशेषकम् । इत्थं तिलकभेदा एते, पर्यायत्वं त्वदूरविप्रकर्षात् । अत्र द्वितीयचतुर्थौ तिलकविशेषकौ पुंन-पुंसकयोः । पुण्ड्रं च । कुं कायति कुङ्कुमम् ॥ १२३ ॥ अग्नेरिव शिखा केसरोऽस्याग्निशिखम् । व्रियते.वरं, ग्रहवृद- इत्यप् (सू०) । बाह्लीकदेशजं (बाह्लीकं), यद्घोषोत्तरदिग्विजये- धुन्वाना वाजिनः स्कन्धाँल्लग्न-कुङ्कुमकेसरान् । पीतयत्यङ्गं पीतनम् । रञ्जनाद्रक्तम्, अत एवासृक्संज्ञम् । संकोचस्य पिशुनं सूचकम् । धीरं स्थिररागम् । लोहितं चन्दनमिव । वर्ण्यं च । घुसृणं देस्दाम् ॥ १२४ ॥ लक्ष्यते लाक्षा । रक्षति देहं राक्षा, रलयोर्लत्वाद्वा । जायते जतु । यौति यावकः । न क्लजते स्म- अलक्तकः, अलति वा । द्रुमस्या-मय इव निर्यासः । धन्वन्तरिस्तु- लाक्षा पलङ्कषा राक्षा दीप्तिश्च कृमिजं जतु । कृत्वघ्नानद्रुमःवा च द्रुमव्याधिरलक्तकः ॥ लूयते लवङ्गम् । देवद्युतिमत्कुसुमं देवानां वा । (श्रीसंज्ञं) श्रीपर्यायम् । (जा-यकं जायकाख्यपर्वतभवम् ॥ १२५ ॥ (कालीयकं) क.लवर्णसारम् । वंशाभं वंशकम्, वंशिकेत्येके ।

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरे ।
तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥
पत्त्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्यं महाधनम् ।
क्षौमं दुकूलं स्याद् द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥ ११३ ॥
स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयो द्वयोः ।
दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥
पटच्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तककर्पटौ ।
वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥
सुचेलकः पटोऽस्त्री ना वराशिः(सिः) स्थूलशाटकः ।
निचोलः प्रच्छदपटः समौ रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥
अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंऽशुके ।
द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥
संव्यानमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।
नीशारस्तु प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

ऽेर: क्षालनं भोगश्चाहननं तद्रहितमनाहतम् । प्रोयतेऽस्यां प्रवाणी तन्तुवायशलाका सा निर्गतास्य (निष्प्रवाणि), निष्प्रवाणिश्च (सू०) इति साधुः । तन्त्रादचिरापहृते (सू०) इति कनि तन्त्रकः । उद्गम्यतेऽभिलष्यते– उद्गमनीयम् । युगमविवक्षितं, यल्लक्ष्यम्– गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रेति (कु० सं०) ॥ ११२ ॥ लकुचवटादिपत्त्रेषु कृमिलालयोर्णीकृतं पत्त्रोर्णम्, पृषोदरादित्वात् (समासः) । क्षुमाया विकार: क्षौमम् । दुवति क्षुमाया आकृष्यते दुकूलम् । निवीयत आच्छाद्यते निवीतम्, व्येञ् संवरणे, निवृतमिति युक्तिः ॥ ११३ ॥ दस्यन्ते दशाः, पुंसीत्येके । वस्यते याभिस्ता वस्तयः, आच्छिन्नवस्त्रस्य तत्रस्थाच्छादनाभावात्, वर्तय इत्येके । आनह्यतेऽनेनानाहः, सर्वत्रेदम् । (परिणाहो विशालता) विस्ताराख्या ॥ ११४ ॥ पट इवाचरति पटति, सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्वा (वा०) इत्येके, ततः घञन्तात् भूतपूर्वे चरट् (सू०) । नक्तं नवो नक्तकः, नक्यते वा, शोणजी प्रौढे, प्रक्षाल्यं येन पूयते तस्य स्तोकं तत्तुल्येऽपि वर्तते । कल्प्यते कर्पटः । वस्यतेऽनेनाङ्गं वासः, वसन्तं क्लीबे । चिल्यते चैलम्, चैलमित्यन्ये, चिल वसने । अंशुभ्योऽल्पत्वादंशुकम् । प्रोतः सिचयश्चीरं च ॥११५॥ पटति विस्तीर्यते पट्यम्, वक्तीति चिन्त्यं शुचेर्वेलनात् । वृणोत्यङ्गं वराशिः, ना पुंलिङ्गः । चत्वार एकार्था इत्येके । निचोल्यतेऽनेन निचोलः येन तूलशय्यादि प्रच्छाद्यते, तुलिः चोलपुष्टैरव वा । रमतेऽस्मिन् रल्लकः । काम्यते कम्बलः, कम्बलः कमनीयो भवती ति निर्वचनात् ॥११६॥ अन्तरे भवमन्तरीयं, गहादित्वाच्छः (सू०)। उपसंवीयतेऽनेनाङ्गमुपसंव्यानम्। प्राव्रियतेऽनेनाङ्गं प्रावारः, वृणोतेराच्छादने (सू०) घञ्। उत्तर ऊर्ध्वाङ्ग आसज्यत उत्तरासङ्गः। (बृहतिका) बृहत्याच्छादने (सू०) क्वुन् ॥ ११७ ॥ संवीयतेऽनेन संव्यानम् । उत्तर ऊर्ध्वे भवमुत्तरीयम् । चोल्यतेऽङ्गमनेन चोलः, आप्रपदीनं कञ्चुकम् । कूर्परैरस्यते कूर्पासः स्त्रीणां कञ्चुलिकाख्यः । निशीर्यते शीतादनेन नीशारः, घञ्युपसर्गस्य बहुलमिति (वा०) घञ्, यल्लक्ष्यम्– गौरिवाकृतनीशारः प्रायेण शिशिरे कृशः ॥११८॥ ऊर्वोरस्त्याच्छादकमंशुकमधोंऽशुकम् । चण्डं भगमतति चण्डातकं, यस्य चलनकोपभ्रंशः । पादाग्रं प्रपदं,

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।
स्वर्णैः प्रालम्बिकाथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥
हारो मुक्तावली देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिकः ।
हारभेदा यष्टिभेदाद् गुच्छ(त्स)गुच्छा(त्सा)र्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥
अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।
सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥
आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम् ।
केयूरमङ्गदं तुल्ये अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥
साक्षराङ्गुलिमुद्रा सा कङ्कणं करभूषणम् ।
स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना स्त्रियाम् ॥ १०८ ॥
क्लीबे सारसनं चाथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु ।
पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
हंसकः पादकटकः किङ्कणी क्षुद्रघण्टिका ।
त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिर्दश त्रिषु ॥ ११० ॥
वाल्कं क्षौमादि फालं तु कार्पासं बादरं च तत् ।
कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्कवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥

कुलकुक्षिग्रीवाभ्यश्चेति (सू०) ढकञ् । ललत्यलंकारान्ते ललन्तिका । सिंहावलोकितेन कृतेत्येव । स्वर्णमयी कण्ठभूषा प्रालम्बिकेत्येव ॥ १०४ ॥ ह्रियतेऽनेन चित्तं हारः । देवानां छन्दोऽभिप्रायोऽत्र । यष्टिर्लता सरः सरिरित्येकार्थाः, यदाहुः– चतुःषष्टिलतो हारोऽष्टाष्टहीना यथोत्तरम् । रश्मिः कलापो माणवकोऽर्धहारोऽर्धगुच्छकः । कलापच्छन्दो मन्दरश्च गुच्छः सप्ततिर्यष्टिकः । अन्ये त्वाहुः– द्वात्रिंशल्लतो गुच्छो, गुच्छसादृश्यात् । चत्वारिंशल्लतो गोस्तनो लम्बमानात्, गोपुच्छोऽपि ॥ १०५ ॥ चतुःपञ्चाशल्लतोऽर्धहारो देवच्छन्दार्धत्वात् । विंशतिलतो माणवकोऽल्पत्वात् । एका– आवलते (अत्र) । सैव– एकावली ॥ १०६ ॥ हस्तसूत्रादयः, आ–उप्यते आवापकः । परिह्रियते परिहारे भवो वा पारिहार्यः । कटति कटकः । वलते वलयः । के बाहुशीर्षे यौति केयूरम् । अङ्गं दयतेऽङ्गदम् । अङ्गुल्यां भवमङ्गुलीयकं, जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः (सू०), स्वार्थे कन् । ऊर्मिप्रतिकृतिरूर्मिका ॥ १०७ ॥ अङ्गुल्या मोदयते मुद्रयति वाङ्गुलिमुद्रा, सा– ऊर्मिका । आहुश्च– कङ्कणं स्यात्प्रतिसरः, कं शुभं कणति कङ्कते सरति वा । मीयते प्रक्षिप्यते मेखला । कच्यते बध्यते काञ्ची । सपति समवैति सप्तकी । रशन्ति तां (रशना), रश कान्तौ शोभते । सिञ्जिनी च । कलापो नानार्थे ॥ १०८ ॥ सारं सनोति सारसनं स्त्रीकट्या वस्त्रग्रन्थनम् । उच्चयो नीवी च । पुंस्कट्यां या काञ्ची सा शृङ्खलं, शृङ्खैः खलतीति । पादेऽङ्गदमिव पादाङ्गदम् । तुलाकृतेर्मञ्जूषायाः कोटिरिव तुलाकोटिः । मञ्जु मधुरमीरयतीति मञ्जीरः । नुवति नूपुरः, नू स्तवने ॥ १०९ ॥ हंसवत्कायति हंसकः । अवान्तरभेदस्त्वेषां भरतोक्तो ज्ञातः । किङ्कि इति कणति किङ्कणी, किङ्किणीत्येके । क्षुद्रास्या घण्टिका घुघुरकाख्या । प्रक्षेपकवाक्यमिदम् (त्वक्फलकृमिरोमाणीति) । त्वगादयो वस्त्रस्य योनिरुपादानकारणं, आदिद्यतिलिङ्गत्वम् । वाल्कक्षौमफालकार्पासबादरकौशेयराङ्कवानाहतनिष्प्रवाणितन्त्रकाणि वाच्यलिङ्गानि ॥ ११० ॥ वल्कस्य त्वचो विकारो वाल्कम् । क्षुमाया विकारः क्षौमम् । आदिशब्दात् भं(भा)ङ्गादि । फलस्य विकारः फालम् । कोशस्येदं कौशेयं नेत्रपट्टादि, कोशाड्ढञ् (सू०) । रङ्कुर्मृगविशेषः, कच्छादिभ्यश्च (सू०) इत्यण् ॥ १११ ॥

कबरी केशवेशो(षो)ऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः ।
शिखा चूडा केशपाशी व्रतिनस्तु सटा जटा ॥ ९७ ॥
वेणिः प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ।
पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥
तनूरुहं रोम लोम तद्वृद्धौ श्म(स्म)श्रु पुंमुखे ।
आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥
दशैते त्रिष्वलंकर्तालंकरिष्णुश्च मण्डितः ।
प्रसाधितोऽलंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥
विभ्राड् भ्राजिष्णुरोचिष्णू भूषा तु स्यादलंक्रिया ।
अलंकारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥
मण्डनं चाथ मुकुटं किरीटं पुंनपुंसकम् ।
चूडामणिः शिरोरत्नं तरलो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥
बालपाश्या पारितथ्या पत्त्रपाश्या ललाटिका ।
कर्णिका तालपत्त्रं स्यात्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

संयता बद्धाः । ऊर्ध्वं मिलति धम्मिल्लो जूटाख्यः, धमिः सौत्रो वा । धम्मेल्ल इति सभ्याः । शेते मूर्ध्नि शीय(शस्य)ते वा शिखा, शीङोऽस्वश्च (उ०) । चोरयते चूडा । प्रशस्ताः केशाः केशपाशी । शिखेलेव, (सटा) षट अवयवे । (जटा) जट संघाते ॥ ९७ ॥ (वेणिः) वेञ् गतौ । शिरसि भवः शीर्षण्यः, शरीरावयवाच्च (सू०) इति यत्, ये चतद्धिते (सू०) इत्यत्र वाकेशेष्विति (वा०) शिरसः शीर्षन् वक्तव्यः । विशदेऽन्योन्यासंपृक्ते-अविकृते स्नानादिनिर्मले वा, शद्लृ शातने । कचादिस्यर्पनिर्देशः, केशपाशः, केशपक्षः, केशहस्तः, प्रशंसावचनैश्च (सू०) इति समासः ॥ ९८ ॥ शिरसोऽन्यत्र रोहति रोम । रलयोरैक्याल्लोम, लूयते वा । पुरुषमुखे रोमवृद्धिः, समश्नुते श्मश्रु । दाढिकापि । व्यञ्जनं नानार्थे । आकल्प्यत आकल्पः । प्रवेष्टव्यङ्गं वेषः, विशति चेतसीत्येके तालव्यं समाहुः, कर्मवेषाद्यत् (सू०), इत्यत्र तथा विचारात् । नेत्रयोः पथ्यं (नेपथ्यं) वस्त्रादिशोभा । प्रत्यङ्गं कर्म प्रतिकर्म । प्रसाध्यतेऽनेनाङ्गं प्रसाधनम् । पर्यायार्था इत्येके तदसत्, वेषो हि वस्त्रालंकारमाल्यप्रसाधनैरङ्गशोभा, प्रसाधनं तु समालम्भनं तिलकपत्त्रभङ्गादिना ॥ ९९ ॥ एते वक्ष्यमाणा रोचिष्ण्वन्ताः । (अलंकरिष्णुः) अलंकृञ्निराकृञ्इति (सू०) इष्णुच् । परिष्क्रियते स्म, संपर्युपेभ्य इति (सू०) सुट् ॥ १०० ॥ भ्राजते तच्छीलो भ्राजिष्णुः, भुवश्च (सू०) इति चाद् (भ्राजतेः) इष्णुच् । (अलंक्रिया) अलंकारसाध्या शोभा । करणे घञ्ल्युटौ ॥ १०१ ॥ मौलिर्नानार्थे । मुखे कुट्यते मुकुटं, मङ्क्यतेऽनेन वा (मकुटं) । कीर्यते किरीटम् । कोटीरं च । मणिरिति शेषः, तरतीव तरलः । नायको नानार्थे ॥ १०२ ॥ बालपाशे साधुः बालपाश्या, बालबन्धनार्थं मुक्तावलयः, उत्फुल्लतीत्यादि, बालेषु पाशसमूहो वा । परितस्तथा भवा पारितथ्या, पार्श्वे तथ्या वा, सीमन्तादिः । पत्त्रपाशानां समूहः पत्त्रपाश्या । ललाटस्यालंकारो ललाटिका, कर्णललाटात्कनलंकारे (सू०) । कर्णालंकारस्तालपत्त्ररूपो वर्णोऽपि । कुण्डं लाति वृत्तत्वात्कुण्डलम् । कर्णौ वेष्टयतेऽनेन कर्णवेष्टनम् । भिन्नरूपास्त्रयः कर्णालंकारा इत्येके ॥ १०३ ॥ ग्रीवाया अलंकारो ग्रैवेयकं,

ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।
अधस्ताच्चिबुकं गण्डौ कपोलौ तत्परो हनुः ॥ ९० ॥
रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम् ।
रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥ ९१ ॥
ललाटमलिकं गोधिरूर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियाम् ।
कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्ष्णः कनीनिका ॥ ९२ ॥
लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ।
दृग्दृष्टी चास्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च ॥ ९३ ॥
अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।
कर्णशब्दग्रहौ पुंसि श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ।
उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।
चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥
तद्वृन्दे कैशिकं कैश्यमलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।
ते ललाटे भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

द्वेत्र वर्तते । अधो भवोऽधरः । ओष्ठाभ्यां सहितावधरो वा, अधरोप्योष्ठमात्रे वर्तते । ओष्ठाधः, चीव्यते चिबुकं हन्वग्रसंधिः । गण्डति संहन्यते गण्डः । कम्पते कपोलः । तदधो गल्लः । तत्परस्तत्पश्चाद्भागे कपोलाधः, हन्त्याहारं हनुः, पुंस्यपि ॥९०॥ रदते विलिख्यतेभीभी रदनाः । दश्यते दम्यते वाभीभिर्दशना दन्ताश्च । रदन्ति लिखन्ति रदाः । तलत्याहारोऽस्मिस्तालु । ईषत्कदते काकुं ददाति वा काकुदम् । रस्यतेऽनया रसना । लेढि जिह्वा । लोला च । घण्टिकान्तर्गलशुण्डिका । ओष्ठस्येति जातावेकवचनम् । सृजति लालां सृक्कि, सृक्कणी इत्यपि क्वचित्कन्नन्तत्वात् ॥ ९१ ॥ लल्यतेऽलंकारः, ललश्चटुलस्तिलकोऽत्यस्य वा ललाटम् । अल्यते भूष्यतेऽलिकं, अलीकं च । गुध्यते पत्रादिना वेष्ट्यते गोधिः । भालं च । भ्रमति भ्रूः, नेत्रोर्ध्वे रोमराजिः । कूर्चमिति भागुरिः, तन्न, लक्ष्यादर्शनात्, एवं कूर्चम् । तारयति तमसस्तारका, तारकाज्योतिषीतीत्वाभावः (वा०) । अक्ष्ण इति खेचरीव्यवच्छेदः । (कनीनिका) कनी दीप्तौ ॥९२॥ लोच्यतेऽनेन लोचनं विलोचनं च । नीयतेऽनेन दृश्यं नयनं नेत्रं च । ईक्ष्यतेऽनेनेक्षणम् । चष्टे वक्ति चक्षुः । अश्नोत्यक्षि, द्वन्द्वे चक्षुः क्लीबे । दृश्यतेऽनया दृक्, द्वन्द्वात्स्त्रियाम् । अस्यतेऽस्रु, अस्रं च । अश्नुत आक्रम्याश्रु । बाष्पो नानार्थे ॥ ९३ ॥ बाह्याविति शेषः । अपकृष्टावङ्गादपाङ्गौ । कटे क्षिपति कटाक्षः, अपाङ्गेन दर्शनं यत्र, नेत्रविभागाख्यम् । कीर्यते शब्दोऽस्मिन्कर्णः । शब्दस्य ग्रहोऽनेन शब्दग्रहः । श्रूयतेऽनया श्रुतिः । शृणोति श्रवः, असन्तः क्लीबे । श्रोत्रं च ॥ ९४ ॥ शीर्यते जरसा शिरः । एवं कुमारशीर्षयोर्णिनिः (सू०) इति लिङ्गाच्छीर्षं प्रकृत्यन्तरम् । मूर्च्छति मूर्धा, पुमान् । मस्यति परिणमते मस्तकम् । कं वराङ्गं च नानार्थे । चीयते चिकुरः, चिहुरः प्राकृते कस्य हादेशात्, संस्कृतेपीति दुर्गः— कुन्तला मूर्धजाः स्रस्ताश्चिकुराश्चिहुराः कचा इति । कुन्ताकारं लाति कुणति वा कुन्तलः । वल्यते वालः, ज्वलादित्वाण्णो वा (ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः) । कचति कचः । के शेते केशः । शिरसिजश्च ॥ ९५ ॥ केशानां समूहे, अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् (सू०), केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम् (सू०) । अल्यन्ते भूष्यन्तेऽलकाः । चूर्णमस्त्याः केशाः (चूर्णकुन्तलाः), चर्चराख्याः । कुरलाश्च । भ्राम्यन्ति भ्रमरवत्कृतयो वा (भ्रमरकाः) । काकस्येव पक्षः । शिखेव ड्यते शिरसि खण्डयते वा शिखण्डकः । क्षत्रियाणां चूडा काकपक्ष इति गौडः ॥ ९६ ॥ कं मस्तकं वृणोति वा कवरी, जानपदकुण्डगोणेति (सू०) ङीष् । देशी रचना ।

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।
प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥
अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ।
पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ ॥ ८४ ॥
द्वौ संहतौ सिंहतलप्रतलौ वामदक्षिणौ ।
पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिस्तौ युतावञ्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥
प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो मुष्ट्या तु बद्धया ।
स रत्निः स्यादरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥
व्यामो बाह्वोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ।
ऊर्ध्वविस्तृतदोःपाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥
कण्ठो गलोऽथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।
कम्बुग्रीवा त्रिरेखा साऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥
वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।
क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥

(सू०) साधुः, न खनति खाति वा । नखं राति नखरः, न खन्यते वा, नखरेक्षका (खनेर्डरेकेकव- कावाच्याः) । पुनर्नवः कररुह इत्येके पेठुः । त्रिभुवनचरन्तत्वाभावः । कामाङ्कुशोपि । तर्जन्या युते तते प्रसारितेऽङ्गुष्ठे मध्ये, प्रादिश्यते प्रादेशः । मध्यमया युतेऽङ्गुष्ठे तते तालः, तल प्रतिष्ठायाम् । अनामिकया युते ततेऽङ्गुष्ठे, गोकर्णाकृतिर्गोकर्णः ॥ ८३ ॥ सह कनिष्ठया ततेऽङ्गुष्ठे वितस्तिः, वितस्यतीति । विदिघ । द्वादशाङ्गुल इति विद्वस्यानुवादः । चप्यतेऽनेन चपेटः, चपेटापि । प्रसृतं तलमस्य प्रतलः । प्रसृतो हस्तोऽस्य प्रहस्तः ॥ ८४ ॥ द्वौ प्रसृततलौ संहतौ सिंहतलाख्यौ, सिंहो हि मिलिताभ्यां चपेटाभ्यां हन्ति, संहतले च- इत्येके संहतं संपर्कं लातीति । संकुचितो हस्तस्तालादिना, प्रसियत इति प्रसृतः. प्रसृतिश्च । निकुब्ज इत्यपपाठः । प्रकुब्जस्त्वर्धप्रसृतिः । तौ युतौ प्रसृतौ पार्श्वमिलितौ अञ्जलिः, अञ्ज्य(अज्यते)ऽनेनेति, अञ्ज्यते अलमनेनेति गौडपादाः । नाट्ये तु- पताकाभ्यां तु हस्ताभ्यां संश्लेषादञ्जलिः स्मृतः ॥ ८५ ॥ बाहौ(प्रकोष्ठे) प्रसारितपाणौ हस्तश्चतुर्विंशत्यङ्गुलं मानम् । स हस्तः, रत्नेः पुंस्त्वार्थो वा । रमन्तेऽस्मिन्माना रत्निः, सह रत्न्या मुष्ट्या बद्धेन इत्येके । नास्ति रत्निर्मुष्टिरस्यारत्निः, निष्क्रान्ता कनिष्ठास्मिन्निष्कनिष्ठे मुष्टिस्तेनोपलक्षितः स हस्तोऽरत्न्याख्यः ॥ ८६ ॥ व्यामीयते रज्ज्वादिनेन व्ययति वा व्यामः, स्वे स्वे पार्श्वे प्रसारितयोर्बाह्वोर्मध्यम् । ऊर्ध्वे विस्तृतौ दोः पाणी च नुः पुंसो यत्र तन्मानमध्ये पौरुषं नाम मानम्, पुरुषोर्ध्वमानं तस्योपमितमेके पुरुषहस्तिभ्यामण् च (सू०) । द्वादशाङ्गुलं तु पौरुषं चायाममानम् ॥ ८७ ॥ कणति कण्ठते वा कण्ठः । गिलति गलो ग्रीवाग्रभागः । गृणाति गिरति वा ग्रीवा । शिरो धीयतेऽस्यां शिरोधिः । कं धारयति कंधरा, संज्ञायां- भृतृवृजीति (सू०) खच् । शंखाकृतिग्रीवा कम्बुग्रीवाख्या, असौ त्रिवलया चेति । न वटत्यति चावटुः । घटयति घाटा । कृकं शिरोग्रीवमटति कृकाटिका ग्रीवापश्चाद्भागः ॥ ८८ ॥ उच्यतेऽनेन वक्त्रम् । अस्यतेऽस्मिन्नास्यम्, कृत्यल्युटो बहुलं (सू०) इति ण्यत्, मुखं मुखान्तरालं च द्वयमाहुरिति शाब्दिकाः । उद्यतेऽनेन वदनम् । तुण्ड्यतेऽनेन तुण्डं, तुडि तोडने । आनिति श्वसित्यनेनाननम् । लप्यतेऽनेन लपनम् । खन्यतेऽनेन मुखं, डित्खनेर्मुट्स चोदात्तः (उ०), मुदितानि खान्यत्रेत्येके । जिघ्रत्यनेन घ्राणम् । घोणति भ्रमति गन्धार्थे घोणा । नासते नासिका, कुस्त्या गन्धवहा घोणा घ्राणं नासा च नासिकेति मुनिः कुल्यामप्याह । सिङ्घा[ङ्घि]णी च ॥ ८९ ॥ उच्यते तीक्ष्णाहारेणोष्ठ इत्युभयार्थोपि- अधरस्तस्मिन्नुत्तरो-

भगं योनिर्द्वयोः शिश्नो मेढ्रो मेहनशेफसी ।
मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥
पिच(चि)ण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं स्तनौ कुचौ ।
चु(चू)चुकं तु कुचाग्रं स्यान्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥
उरो वत्सं च वक्षश्च पृष्ठं तु चरमं तनोः ।
स्कन्धो भुजशिरोंऽसोऽस्त्री संधी तस्यैव जत्रुणी ॥ ७८ ॥
बाहुमूले उभे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥
भुजबाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्कफो(पो)णिस्तु कूर्परः ।
अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥
मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः ।
पञ्चशाखः शयः पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥
अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी ।
मध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

(खनेोघचेत्यत्र) खलो भगःपदमितिवक्तव्याद्घः (ग्रा०) । योति योनि । स्त्रीचिह्नं स्मरगृहं च । शिनोति वर्षति भगं शिश्नः, शेफ[स] च । मेहत्यनेन मेढ्रम् । मुष्णाति गोपायति शुक्रं मुष्कः । अण्डयोः कोशोऽण्डकोशः । वर्षति शुक्रं वृषणः । पेलश्च । पृष्ठास्थ्नोश्च ऊर्वोः संधौ त्रिसंपर्कात्त्रिकम् ॥ ७६ ॥ पचत्यन्नं पिचण्डः, अपिचमत्याहारं वा । कुष्यते कुक्षिः । जमत्याहारं जठरम् । उदीर्यति(दियर्ति) उदरम् । तुदति तुन्दं, तुन्दिश्च । स्तन्यंते बालैः स्तनौ । कूयेते कुच्येते वा कुचौ । वक्षोरुहौ उरोजौ च । चुचि(?)त्यव्यक्तं कायति धीयमानं चुचुकम् । (क्रोडं) कुड घनत्वे, ना पुंलिङ्गं न भवति । वक्षोमध्यास्थि क्रोडा ॥ ७७ ॥ उरस्यति सहते– उरः, उरस् कण्ड्वादिः । वस्यते छाद्यते वत्सम् । (वक्षः) वक्ष संघाते, असुन् । वत्स (क्रोडादयः) एकार्था इत्येके । पृष्यते सिच्यते पृष्ठं देहस्य पश्चाद्भागः, पश्चान्मात्रे तूपचारात् । स्कन्द्यते भारेण स्कन्धः । अस्यते भारेणांसः । अंसवक्षसयोः सन्धिरुद्धिपास्थि, जायते अत्रु ॥ ७८ ॥ कष्येते कक्षौ, यान्तावपि कक्ष्यौ । (पार्श्वे) पर्शूनां समूहः पार्श्वम्, पर्श्वादिगणपाठात् (वा०), पार्श्वे इति द्विवचनं न्याय्यम् । मध्ये भवं मध्यमं, मध्यान्मः (सू०) । अवलगत्यवलग्नमतिकृशत्वात् । विलग्नं च । मन्यते मध्यम् । परौ भुजो बाहुश्च ॥ ७९ ॥ भुज्यतेनया भुजा, भुजन्युब्जाविति (सू०) साधुः । वहति वाहते प्रयतते वा बाहुः, बाहृ प्रयत्ने । प्रवेष्टते प्रवेष्टः । याति ददाति वा दोः, सान्तः । कं फणति कफोणिः । कुरति कूर्परः, बाहूरुबाहुसंधेररत्निसंज्ञस्य पश्चाद्भागः, तथा च– कफोणिः कूर्परोऽरत्नेः पृष्ठमिति नाममाला । अस्य कूर्परस्योर्ध्वे, प्रगण्यते प्रगण्डयते वा प्रगण्डो बाहुः । कूर्परस्याधः, प्रकुष्यते प्रकोष्ठ उपबाहुः, यत्कात्यः– प्रकोष्ठमन्तरं विद्यादरत्निमणिबन्धयोः ॥ ८० ॥ मणेर्बन्धोऽत्र मणिबन्धो भुजपाण्योः संधिः । तस्मादारभ्याकनिष्ठायाः करभः, करे भातीति आङभिविधौ (सू०) । शेतेऽस्मिन्सर्वं शयः, शम इत्येके, नाममाला तूभयं पपाठ– पाणिः शमः शयो हस्त इति । पणन्तेनेन पाणिः । हस्तकरौ नानार्थे । मणिबन्धः पाणिमूले । तर्जयत्यनया तर्जनी । प्रदिशत्यनयस्यं प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥ अङ्गुं पाणिपादं लात्यङ्गुली । अङ्गौ तिष्ठत्यङ्गुष्ठः, सुपिस्थ इति (सू०) कः, अम्बाम्ब-गोभूमीति (सू०) षत्वम् । अनामिका नामग्रहणायोग्या, ब्रह्मणोऽनया शिरश्छेदनादत एवास्यां पवित्रं क्रियते । कनिष्ठात्यल्पा । ता अङ्गुष्ठाद्याः पञ्चाङ्गुलयः ॥ ८२ ॥ नास्ति खमस्य नखः, नभ्राण्नपादिति

स्याच्छरीरास्थि कङ्कालः पृष्ठास्थ्नि तु कशेरुका ।
शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥
अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनोऽथ कलेवरम् ।
गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥
कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः ।
पादाग्रं प्रपदं पादः पदङ्घ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥
तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ पुमान् पार्ष्णिरधस्तयोः ।
जङ्घा तु प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥
सक्थि क्लीबे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वङ्क्षणः ।
गुदं त्वपानं पायुर्ना बस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥
कटो ना श्रोणिफलकं कटिः श्रोणिः ककुद्मती ।
पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥
कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ।
स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथावुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥

मुनिः, कश्यत इति । पृष्ठग्रन्थौ गडुः पुमान् । के रटति करोटिः करोटी च । पृश्यते पर्शुः, पर्शुरेव पर्शुका ॥ ६९ ॥ अङ्गत्यङ्गम् । प्रत्येति प्रतीकः । अवयौत्यवयवः । अपहन्यतेऽपघनः, अपघनोऽङ्गमिति (सू०) साधुः । कल्यते कलेवरम् । गातं गच्छति गात्रम् । उप्यते वपुः । संहन्यते संघात्यन्तेऽस्मिन्नङ्गानि संहननम् । शीर्यते शरीरम् । वृष्यते सिच्यते वर्षति मलान्वा वर्ष्म । विगृह्यते विग्रहः, ग्रहवृद्‍–इति (सू०) अप् ॥ ७० ॥ चीयते कायः, निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्चकः (सू०) । दिह्यते देहः । मूर्च्छति वर्धते मूर्तिः । तन्यते तनुः । प्रारम्भः पदस्य प्रपदं, पदशब्दः पादपर्यायोऽस्ति । पद्यतेऽनेन पादः । पदिति लक्ष्यलक्षणयानोऽस्ति, यस्तु मोः पदा न स्वष्टव्या, पद्भ्यामेव यथातथेस्यादौ स पद्दन्नोमास्सिति (सू०) पदादेशः, अतः पदोऽङ्घ्रिरिति पाठ्यम्, क्रमे तु पदम् । अंहत्यनेनाङ्घ्रिः । चरत्यनेन चरणः ॥ ७१ ॥ पादग्रन्थी पार्श्वनिःसृते, घोटते घुटिका, घुट परिवर्तने । गुल्यते गुल्फः । गुल्फाधः पश्चाद्भागः पार्ष्णिः, पुमानिति प्रायिकं, पृष्यते सिच्यते विपादिका चिकित्सार्थं पार्ष्णिः । जङ्घन्यते कुटिलं गच्छति जङ्घा । प्रसरति प्रसृता । जायते जानु । ऊर्वोः पर्व ग्रन्थिः । अस्थि विद्यतेऽत्राष्ठीवत्, आसन्दीवदष्ठीवदिति (सू०) साधुः ॥ ७२ ॥ सजति सक्थि । ऊर्णत्यूरुः । वस्त्यथ ऊरुसंधिः, वङ्क्षते वङ्क्षणः । गवते गूयते वाऽनेन गुदम्, गुद परिवेष्टने वा । अपानित्यनेनापानम् । पाति मलोत्सर्गात्पायुः, पिबति वा लहम् । वसत्यस्मिन्मूत्रं बस्तिर्मूत्रपुटकम् ॥ ७३ ॥ कट्यत आम्रियते कटः, शवे श्रोणौ कालञ्जे च गजगण्डे भृशे कट इति शाश्वतः । कटीरोऽपि । श्रोण्यते संहन्यते श्रोणिः, तस्याः फलकमिव-ककुत्पार्श्वनिःसृतांशोऽस्त्यस्याः ककुद्मती । कट्याः पश्चाद्भागः, नितान्तं तपति सुरतसंमर्दं नितम्बः । स्त्रीकट्याः पुरो भागः, हन्यते जघनम् ॥ ७४ ॥ कुत्सितं कु रणाति कुकुन्दरं, द्वयहीने क्लीबे । स्फायते स्फिक् । प्रथत उद्भियते प्रोथः । प्रोथोऽपि । (उपस्थः) वक्ष्यमाणौ भगशिश्नौ ॥ ७५ ॥ भज्यते भगं,

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम् ।
उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥
रुधिरेऽसृग्लोहितास्ररक्तक्षतजशोणितम् ।
बुक्काग्रमांसं हृदयं हृन्मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥
पश्चाद्ग्रीवासिरा मन्या नाडी तु धमनिः सिरा ।
तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गोर्दं किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥
अन्त्रं पुरीतद् गुल्मस्तु प्लीहा पुंस्यथ वस्नसा ।
स्नायुः स्त्रियां कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥
सृणिका स्यन्दिनी लाला दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।
मूत्रं प्रस्राव उच्चारावस्करौ शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥
पुरीषं गूथं वर्चस्कमस्त्री विष्ठाविषौ स्त्रियौ ।
स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥

कार्श्यं वा । मन्यते मांसं, मांसभक्षयितामुत्रेति नैरुक्ताः [मांसभक्षयितामुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम् । एतन्मांसस्य मांसत्वे निरुक्तं मुनिरब्रवीदिति नैरुक्ताः]। पाल्यतेनेन देहः पललं, यच्छाश्वतः- पललं तिलमिश्रे स्यात्पललं पिशितेपि च । क्रव्यते (कृयते) क्रव्यं, क्रुङ् गतौ । आमिष्यते आमिषम् । आङ्गलं च, पलं नानार्थे । उत्तप्यते शोष्यते- उत्तप्तम् । वलं लुनाति वल्लूरं, वल्लिः सौत्रो वा ॥ ६३ ॥ रुणद्धि स्रोतांसि रुधिरम् । अस्यते न सृज्यते वासृक् । लोहितं रक्तं च वर्णतः । अस्यतेऽस्रम् । शोणति शोणितं, शोणृ वर्णे । बुक्क्यते स्वादुत्वान्मृग्यते बुक्का, नान्तः पुंस्यपं, स्त्रीत्येके, वृक्केति वैद्याः । अग्रं गुल्मम् । ह्रियते हृत्- जीवाधारं पद्मं, दान्तं प्रकृत्यन्तरम् । मेद्यति स्निह्यति मेदः, असन्तत्वात्क्लीबे । उप्यते वपा । वसते मांसं वसा, शुद्धमांसस्य यः स्नेहः सा वसेति वैद्याः ॥ ६४ ॥ पश्चाद्भागे ग्रीवायाः कृकाटिकायां सिरा, मन्यते मन्या, संज्ञायांसमजनिषदेति (सू०) क्यप् । नलस्येयं नाडी स्रोतोऽवीर्यात् । धमति धमनिः, धमिः सौत्रः । सिनोति कायं सिरा, षिञ् बन्धने । तिलति तिलकम् । क्लाम्यति क्लोम, उदर्यो जलाधारः । हृदयस्य दक्षिणे यकृत्क्लोम वामे प्लीहा पुप्फुसश्चेति वैद्याः । मस्तकमज्जा, मस्तकमिष्यतीति मस्तिष्कं, इष गतौ । गुर्द्यते गोर्दं, गुर्द परिवेष्टने । केटति किट्टम्, किट गतौ । मलते धारयति कायं मलः ॥ ६५ ॥ अमत्यनेनान्नमन्त्रम् । पूर्यते पुरीतत्, तान्तोयम् । गुल्यते रक्ष्यते मा बाधिष्टेति गुल्मः । प्लेहते प्लीहा, नान्तः । वस्ते छादयति कायं वस्नसा । वसा ह[न]हारश्च । स्नायत्यङ्गं स्नायुः, ष्णै वेष्टने । महास्नायुश्च कण्डरा, स्नायुसंघात इति वैद्याः । दक्षिणपार्श्वे कृष्णमांसांशः कालखण्डम्, कालखञ्जमित्येके । यमं करोति यकृत् ॥ ६६ ॥ सरति सृणिका । स्यन्दते स्यन्दिनी । ललति लाति वा लाला । दूषयत्यक्षि दूषिका, दूषीकापि । (प्रस्रावः) प्रेद्रुस्तुस्रुवःइति (सू०) घञ् । उच्चार्यते प्रेर्यते- उच्चारः । अवाधः कीर्यत इति, वर्चस्केऽवस्करःइति (सू०) साधुः । शाम्यति शमलम् । शक्नोत्यनेन शकृत् ॥ ६७ ॥ विपर्त्यन्त्रं पुरीषम् । गूयत उत्सृज्यते गूथम् । वर्च एव वर्चस्कम् । वितिष्ठतेनया विष्ठा । वेवेष्टि विट्, विशतीति सम्याः । कल्पते कर्परः, कृपे रो लो नास्ति बाहुलकात् । कं पालयति कपालं मूर्ध्नोऽस्थि, घटादिखण्डेऽप्युपचारात् । कीति कसति कीकसम् । कुले शरीरे साधु कुल्यं, कोलति संस्त्यायते वा । अस्यतेऽस्थि ॥ ६८ ॥ कं कालयति कङ्कानलति वा कंकालः, देहारम्भकोऽस्थिपञ्जरः । करङ्कोऽपि । कशाङ्केति

ग्लानग्लास्नू आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।
आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः समौ पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥
दद्रुणो दद्रुरोगी स्यादर्शोरोगयुतोऽर्शसः ।
वातकी वातरोगी स्यात्सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥
स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्लाः क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी ।
उन्मत्त उन्मादवति श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥
न्युब्जो भुग्ने रुजा वृद्धनाभौ तुण्डि(न्दि)लतुण्डि(न्दि)भौ ।
किलासी सिध्मलोऽन्धोऽदृङ्मूर्च्छाले मूर्तमूर्च्छितौ ॥ ६१ ॥
शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।
मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

ग्लायति तच्छीलो ग्लास्नुः, ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः (सू॰)। आमयोऽस्यास्त्यामयावी, सर्वत्र–आमयस्योपसंख्यानाद्दीर्घश्च (वा॰)। व्याधिः संजातोऽस्य व्याधितः। अपटुर्मन्दः। आतोरत्यातुरः, आतरति रोगं वा। अभितोऽम्यते स्माभ्यान्तः (अभ्यमितश्च), वण्यन्तस्वरेति (सू॰) वेट्। संप्राप्तमृत्युर्मरक[रो] मारिर्मारी च देश्तेति क्षीरस्वामिः। पामास्यास्ति पामनः, पामर इत्येके, द्रावयतीति क्षीरस्वामी। [कच्छूरस्यास्ति] कच्छुरः, कच्छ्वा ह्रस्वत्वं च (वा॰) इति रः ॥ ५८ ॥ (दद्रुणः) पामादित्वान्नः, दद्रुणाह्रस्वश्च (म॰) इति नः। दीर्घान्तेनया दद्रूः। अर्शांसि सन्त्यस्यार्शसः, अर्शआदिभ्योऽच् (सू॰)। वातो विद्यतेऽस्य वातकी, वातातिसाराभ्यां कुक् च (सू॰) इतीनिः। एकदेशे विकृतस्यानन्यत्वादतीसारक्यपि ॥ ५९ ॥ क्लिन्नस्य चुल्चिल्पिल् चास्य चक्षुषीति चक्ष्यात् (वा॰) लच्प्रत्ययः। चक्षुःक्लेदेऽपि, तेन चक्षुर्गतः क्लेदश्चुल्लो नाम रोगः, तद्योगाच्चुल्लं चक्षुः, चुल्लचक्षुश्चुल्लः पुमान्। उन्मादो वातभूतादिदोषाच्चित्तविभ्रमः। श्लेष्मास्यास्ति, सिध्मादित्वाल्लच् (सू॰)। (श्लेष्मणः) पामादित्वान्नः (श्लेष्मादिपामादीति ॥ ६० ॥ न्युब्जनं न्युब्जः, घञ्, भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः (सू॰) इति साधुः। भुग्नः कुब्जः, न्युब्जेन व्याधिगतेन भुग्नत्वेन योगाद् न्युब्जः पुमान्, यदुक्तम्भवता– दिवादधोगतं न्युब्जं न्युब्जः कुब्ज उदाहृतः। तुन्दिः प्रवृद्धनाभिः, तुन्दिस्तु जठरं, इलच् (तुन्दादिभ्य इलच्)। (तुण्डिभः) तुन्दिवलिवटेर्भः (सू॰) भश्च, एकदेशविकृतत्वात्। (सिध्मलः) सिध्मादित्वाल्लच् (सू॰)। अन्धोऽदृक्, अन्ध दृष्ट्युपसंहारे। नास्ति दृगस्यादृक्। मूर्च्छास्यास्त्यस्येति (मूर्च्छालः), प्राणिस्थादातो लच् (सू॰), शुभ्रमन्दूपतापाचेभ्यते (म॰)। मूर्च्छति मूर्तः, राल्लोपः (सू॰) इति छलोपः, नध्याख्येति (सू॰) नत्वाभावः। मूर्च्छा संजातास्य मूर्च्छितः, चुरादिमूर्च्छेः क्तो वा ॥ ६१ ॥ शोचति चरति शुक्रम्। तेजयति तेजः असुन्। रीयते रेतः, रीङ् स्रवणे। बीज्यते वेति वा बीजं, बीजिस्तौर्दिकः। वीरेऽक्लीबे साधु वीर्यम्। इन्द्रस्यात्मनो लिङ्गमितीन्द्रियं, इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिति (सू॰) साधुः। मिनोति मलान् संसक्तत्वान्मायुः। पतति स्रंसते पित्तम्। केनात्फलति कफः। श्लिष्यति श्लेष्मा। (त्वक्) त्वच संवरणे। असृजो धरा (असृग्धरा) ॥ ६२ ॥ (पिशितं) पिश अवयवे। तरो बलमस्त्यस्य तरसं, तरन्त्यनेन

स्त्री क्षुत्क्षुतं क्षवः पुंसि काश(स)स्तु क्षवथुः पुमान् ।
शोफस्तु श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥
किलासासिध्मे कच्छ्वां तु पामा पामा विचर्चिका ।
कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटकस्त्रिषु ॥ ५३ ॥
व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे नाडीव्रणः पुमान् ।
कोठो मण्डलकं कुष्ठश्वित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥
आनाहस्तु विबन्धः स्याद् ग्रहणी रुक्प्रवाहिका ।
प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥ ५५ ॥
व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेहभगंदराः ।
अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥
रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ।
वान्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

शोफः शोथश्च । श्वयतेनेन श्वयथुः । विपद्यतेनया विपादिका, पादशतस्य (सू०) इत्यत्रान्यत्रापीति वक्तव्याद् वुन्– लोपो वा ॥ ५२ ॥ समे इति शेषः । किलसत्यति किलासम् । सिध्यति सिध्मं मकारान्तम् । कषति कच्छूः । पिबत्यङ्गं पामा । (पामा) डाबुभाभ्यामन्यतरस्यां (सू०) । विचर्चयति विचर्चिका, अङ्गुल्यादिसंधिषु सूक्ष्माः पिटकाः, खर्जूविशेष इत्येके । कण्डूयति कण्डूः, भावे क्विप् (संपदादिभ्यः क्विप्) । (कण्डूया) अप्रत्ययात् (सू०) । खर्जति खर्जूः, कर्ज खर्ज व्यथने । विस्फोटयति विस्फोटः । पटति संक्षिप्यति पेटति वा पिटका ॥ ५३ ॥ व्रणयति व्रणः । ईरयत्यङ्गमीर्मम् । इयर्त्यरुः, उस् । नाड्या व्रणं, समासे पुंस्त्वम् । नालिश्च । कूयते शब्द्यते कोठः । (मण्डलकं) मण्डलाकृति कुष्ठम् । समे इति शेषः । कुष्णात्यङ्गं कुष्ठं, कुत्सितं तिष्ठति वा, अम्बाम्बगोभूमीति (सू०) षत्वम् । श्वेतते श्वित्रं श्वेतकुष्ठम् । पापरोगत्वाद् दुर्नामकम् । इयर्त्यर्शः । गुदजं गुदकीलकं च ॥ ५४ ॥ आनहनं विण्मूत्रनिरोधः । गृह्णाति ग्रहणी, जाठरोमिर्गृह्यतेनया वा तच्छेषिन्यात् । रुग्रोगः । मलप्रवहणं प्रवाहिका, रोगाख्यायांण्वुल् (सू०) । प्रच्छर्दनं प्रच्छर्दिका, रोगाख्यायांण्वुल् (सू०) । वमनं वमिः । छर्दिश्छर्दी च ॥ ५५ ॥ विद्रात्यनया विद्रधिः, विद्रो धीयतेस्यां वा । मेहति मूत्रयतेनेन मेहः । प्रमेहोपि, दीपप्रदीपवत् । भगं दारयति भगंदरः स्फिक्संधौ पिटकं, पूःसर्वयोर्दारिसहोः (सू०) इत्यत्र भगेच दारेर्वक्तव्यात (वा०) खच् । श्लीपदं पादवल्मीकं वेशध्नं त्विन्द्रलुप्तकम् । व्याधिभेद इत्येव । अश्मानं शुक्रं रात्यश्मरी । शुक्रात्पूर्वे मूर्च्छितान्ता वाच्यलिङ्गा ॥ ५६ ॥ अगदः क्रियतेनेनागदंकारः, कारेसत्यागदस्य (सू०) इति मुम् । भिषज्यति भिषक् । विद्यामर्हति वेद वा वैद्यः । आद्यो सामान्येनौषधादावपीत्येके । वमति वान्तः, वार्त इति तु युक्तं, यद्वक्ष्यति– वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिषु, वृत्तिरस्यास्ति, प्रज्ञाश्रद्धार्चावृत्तिभ्योणः (सू०) । कलासु साधुः कल्यः । उल्लाघ्यते स्मोल्लाघः, क्तः, अनुपसर्गात्फुल्लेति (सू०) साधुः ॥ ५७ ॥ ग्लायति स्म ग्लानः, संयोगादेरातोधातोः (सू०) इति निष्ठा नत्वम् ।

विकलाङ्गस्तु पोगण्डः खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।
खरणाः स्यात्खरणसो विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥
खुरणाः स्यात्खुरणसः प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ।
ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात्संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥
स्यादेडे बधिरः कुब्जे गडुलः कुकरे कुणिः ।
पृश्निरल्पतनौ श्रोणः पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥
वलिरः केकरे खोडे खञ्जस्त्रिषु जरावराः ।
जडुलः कालकः पिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥
अनामयं स्यादारोग्यं चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।
भेषजौषधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥
स्त्री रुग्रुजा चोपतापरोगव्याधिगदामयाः ।
पुमान्यक्ष्मा क्षयः शोषः प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥

ह्रसति ह्रस्वः । वामोऽस्यास्तीति वामनः । निखर्वः खर्वः [नः] सर्व इति नाममाला । खरा तीक्ष्णा खरस्येव वा नासास्य खरणाः, खुरखराभ्यां वा नस्वक्तव्यः (वा०), पक्षे– अस्थूलासिकायाःसंज्ञायां नसं चास्थूलात् (सू०), पूर्वपदात्संज्ञायामगः (सू०) इति णत्वम् । नः क्षुद्रः क्षुद्रनासिकः । (विग्रः) वेर्ग्रो वक्तव्यः (वा०) ॥ ४६ ॥ खुराकारा नासिकास्य खुरणाः–विकटघोणः । प्रगते विरले वातादिदोषात्तयो– र्ये संहते च जानुनी अस्य, प्रसंभ्यां जानुनोर्ज्ञुः (सू०), ऊर्ध्वाद्विभाषा (सू०) ॥ ४७ ॥ एडपशुरिव –एडः । बद्धौ कर्णावस्य बधिरः । कुत्सित उब्जः कुब्जः, पृषोदरादिः (सू०) । गडुरस्यास्ति गडुलः, सिध्मादित्वात् (सू०) लच् । कुण शब्दे, कृपाणिः कुणिरिति नैरुक्ताः । कलंकस्तवाचष्टे खलति- स्विन्द्रलुप्तकः । स्पृश्यते पृच्छति वा पृश्निः । (श्रोणः) श्रोणृ संघाते, कुटिलजङ्घापादः । मुण्ड्यते मुण्डः ॥ ४८ ॥ वलते चेष्टते वलिरं नेत्रं तद्योगाद्वलिरः । के मूर्ध्नि करोत्यक्षिणी चलतारकत्वात्केकरः, एनमुपाध्यायः काव[व]र इत्याख्यत् । (खोडः) खुड प्रतिघाते । (खञ्जः) खजि वैकल्ये । दण्डो दुश्चर्मा द्विनग्नोऽपि । जराशब्दादग्रतो उत्तानशयादयः खञ्जान्तास्त्रिलिङ्गाः । जडति जडुलः, जडुलो जडत्वाद्वा । काल एव कालकः । अपिप्लवते पिप्लुः । तिलप्रतिकृतिस्तिलकः । तिल इव कालकस्तिल- कालकः, देहे कृष्णं लक्ष्म ॥ ४९ ॥ आमयस्याभावोऽनामयं, अव्ययंविभक्तिसमीपेति (सू०) अर्थाभावेऽव्ययीभावः । कितेर्व्याधिप्रतीकारे सन् । भिषज्यत्यनेन भेषजं, भिषज कण्ड्वादिः, अनन्तावसथेतिहभेषजा- दिति (सू०) निर्देशाद् गुणः, भेषं रोगं जयतीति वा । (औषधं) ओषधेरजाताविति (सू०) स्वार्थेऽण् । (भैषज्यं) अनन्तावसथेतिहभेषजाञ्ञ्यः (सू०) स्वार्थे । अविद्यमानो गदोऽस्मिन्नगदः । जयति रोगाञ्जायुः, कृवापाजीत्युण् (उ०) ॥ ५० ॥ रुज्यतेऽनया रुक्, क्विप् । (रुजा) भिदादयङ् (षिद्भिदादिभ्योऽङ्) । व्याधीयतेऽनयाऽस्मिन्व्याधिः । गदति व्यथां गदः । आमीनात्यामयः, अम रोगे- ऽस्माद्वा । आमोऽपि । यक्ष्यते पूज्यते रोगराजत्वाद्यक्ष्मा । राजयक्ष्मापि । क्षीयतेऽनेन क्षयः । शुष्यत्यनेन शोषः । प्रतिश्यायते स्रवति प्रतिश्यायः, श्याद्व्यधेति (सू०) णः । पीनं स्थूलयन्तं नयति पीनसः ॥ ५१ ॥ क्षवणं क्षुत्, क्विप्, क्तः, अप् । कास्यतेऽनेन कासः । क्षौत्यनेन क्षवथुः । शयति विसर्पति

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ विस्रसा जरा ।
स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनंधयी ॥ ४१ ॥

बालस्तु स्यान्माणवको वयस्थस्तरुणो युवा ।
प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।
जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ॥ ४३ ॥

अमांसो दुर्बलश्छातो बलवान्मांसलोंऽसलः ।
तुन्दिलस्तुन्दिभ(क)स्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिच(चि)ण्डिलः ॥४४॥

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।
केशवः केशिकः केशी वलिनो वलिभः समौ ॥ ४५ ॥

आदिशब्दाद्रोमादौ च । विस्रंसतेऽनया कचादिकं विस्रसा । जीर्यन्त्यनया जरा, षिद्भिदादिभ्योऽङ् (सू०) । उत्ताना शेते-उत्तानशया, अधिकरणे शेतेः (सू०) इत्यत्र-उत्तानादिषु कर्तृषु (वा०) इत्यच् । डिम्भेति प्राक् पक्षिक्रमेणोक्तं इह मानुषक्रमात् । स्तनं पिबति स्तनपा, (सुपस्थ इत्यत्र) सुपीति योगविभागात्कः । स्तनं धयति स्तनंधयी, नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः (सू०) इति खश्, धेटष्टित्वाद् ङीप् । स्त्रीलिङ्गेन निर्देशः स्त्रीप्रत्ययप्रदर्शनार्थः ॥ ४१ ॥ बलति(ते) प्राणिति बालः, ज्वलादित्वाण्णः (सू०), वाङ् आप्लावेस्माद्वा । अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरौत्सर्गिकः स्मृतः । नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिध्यति माणवः ॥ स्वार्थे कन् (माणवकः) । वयसि प्रथमे तिष्ठति वयस्थः । तरति तरुणः । यौति मिश्रीभवति स्त्रिया युवा । प्रगतं वयोऽस्य प्रवयाः । तिष्ठति स्थविरः । वर्धते स्म वृद्धः, एवमादौ गत्यर्थाकर्मकेति भूते क्तः, वर्तमाने युक्तः शीलितादिवत् । जिनाति स्म जीनः, ग्रहिज्यावयीति (सू०) संप्रसारणं, संप्रसारणस्येति (सू०) दीर्घः, ल्वादित्वात् (सू०) निष्ठा नत्वम् । जीर्यति स्म जीर्णः, श्युकः-किति (सू०) इत्यनिट् । (जरन्) जीर्यतेरतृन् (सू०) ॥ ४२ ॥ अतिशयेन वृद्धो वर्षीयान्, इष्ठेमेयस्सु प्रियस्थिरेति (सू०) वर्षादेशः । दशमोऽवस्थाविशेषोऽस्यास्ति दशमी, वयसि पूरणात् (सू०) इतीनिः, यन्मुनिः- इतो वयोदशांशेन सप्तमी दशमीति च । अतिशयेन वृद्धः ज्यायान्, ज्य च (सू०), वृद्धस्य च (सू०) इति ज्यादेशः, ज्यादादीयसः (सू०) इत्यात्वम् । अग्रे जातोऽग्रियः, अग्राद्यत् (सू०), घच्छौ च (सू०) इति घः । अग्र्यामीयौ च । अग्रिमपाठे, अग्रादिपश्चाड्डिमच् (वा०) । जघन्यजः पश्चाज्जातः । अत्यर्थं युवा कनिष्ठो यवीयांश्च, युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम् (सू०), स्थूलदूरेति (सू०) यणादिलोपः पूर्वस्य गुणः । एवं कनीयान् कनिष्ठश्च । अवरे जायतेऽवरजः ॥ ४३ ॥ छ्यति स्म छातः, छो छेदने । मांसमस्यास्ति मांसलः, सिध्मादित्वात् (सू०) लच् । अंसो बलमस्य स्तः (अंसलः), वत्सांसाभ्यां कामबले (सू०) इति लच् । तुन्दं निम्नं उच्चं चास्यास्ति, तुन्दादिभ्य इलच्च (सू०) इति चादिनिठनौ । उदरलोपि । तुन्दिरस्यास्ति तुन्दिभः, तुन्दिवलिवटेर्भः (सू०) ॥ ४४ ॥ नतनासिकायाः संज्ञायां टीटञ्नाटज्भ्रटचः (सू०) । नतनासिकश्चिपिटघोणः । नतायां नासिकायां नासानमनेऽप्येते वर्तन्ते । प्रशस्ताः केशाः सन्त्यस्य केशवः, केशाद्वोऽन्यतरस्याम् (सू०) । वलिस्त्वक्संकोचोऽस्यास्ति, पामादित्वान्नः (लोमादिपामादीति) । (वलिभः) तुन्दिवलिवटेर्भः (सू०) ॥ ४५ ॥ पूयतेऽपसार्यते पोगण्डः । खर्वति खर्वः ।

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद् भावसमूहयोः ।
धवः प्रियः पतिर्भर्ता जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥
अमृते जारजः कुण्डो मृते भर्तरि गोलकः ।
भ्रात्रीयो भ्रातृजो भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरावुभौ ॥ ३६ ॥
मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ।
श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥
दंपती जंपती जायापती भार्यापती च तौ ।
गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥
सूतिमासो वैजननो गर्भो भ्रूण इमौ समौ ।
तृतीयाप्रकृतिः शण्ढः क्लीबः पण्डो नपुंसकम् ॥ ३९ ॥
शिशुत्वं शैशवं बाल्यं तारुण्यं यौवनं समे ।
स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं वृद्धसंघेपि वार्धकम् ॥ ४० ॥

भावो ज्ञातेयं, कपिज्ञात्योर्ढक् (सू०) । बन्धूनां समूहो बन्धुता, ग्रामजनबन्धु(सहाये)भ्यस्तल् (सू०), तलि स्त्रीलिङ्गवचनम् । धुनोति धवः । प्रीणाति प्रियः, इगुपधेति (सू०) कः । पाति पतिः, पातेर्डतिः (उ०) । सेक्ता वरयिता वरश्च । जारयति जारः, दारजारौ कर्तरिणिलुक् च (वा०) । उपजातः पतिरुपपतिः ॥ ३५ ॥ भर्तरीत्येव । कुण्डयते कुलमनेन कुण्डः, कुडि दाहे । जारज इत्येव । गुप्यते लज्जाकरत्वाद् गोप्यते गोलकः, परनार्यां प्रजायेते द्वौ सुतौ कुण्डगोलकौ । पत्यौ जीवति कुण्डस्तु मृते भर्तरि गोलक इति स्मृतिः । भ्रातुरपत्यं भ्रात्रीयः, भ्रातुर्व्यच्च (सू०) इति वा छः । भ्रातृव्यो नानार्थे । भ्राता च भगिनी चेति (भ्रातरौ), भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम् (सू०) इत्येकशेषः । [एवं पुत्रौ] ॥ ३६ ॥ माता च पिता च मातापितरौ, आनङृतो द्वन्द्वे (सू०) । (पितरौ) पिता मात्रा (सू०) इत्येकशेषो वा । मातरपितरावुदीचाम् (सू०) इति- अन्यः साधुः । प्रसूर्माता जनयिता पिता द्वौ त्रिसंज्ञौ । (श्वशुरौ) श्वशुरः श्वश्र्वा (सू०) इत्येकशेषो वा । [पुत्रश्च दुहिता च प्रागुक्तम्] ॥ ३७ ॥ राजदन्तादौ (सू०) जायापत्योर्जायाशब्दस्य दंभावो जंभावो वा निपात्यते, दं भार्येति निघण्टुः । गर्भ आशेतेऽत्र गर्भाशयः । जरामेति जरायुः । उलति वृणोत्युल्बः । कलयति के लसति वा कललः शुक्रशोणितसमवायः, प्रसिध्यास्य पर्यायो नोक्तः, अस्त्रीत्वविधानार्थे तु विधिः । उल्बपर्यायः कलल इत्येके, यन्मुनिः- तदुल्बं कललं च तत् ॥ ३८ ॥ दशमे मासि सूतव इति श्रुतेः, नवमे दशमे मासि प्रबलैः सूतिमारुतैः । निःसार्यते बाण इव यन्त्रच्छिद्रेण सत्वर इति स्मृतेश्च नवमो दशमो वा मासो, विजनने भवो वैजननः । गीर्यते गर्भः । भ्रियते भ्रूणः कुक्षिस्थः । स्त्रीपुंसाभ्यामन्या तृतीया प्रकृतिः, लिङ्गान्तरत्वात् । शाम्यति शण्ढः, [षण्ढोपि] । क्लीबते क्लीबः । पण्डते पण्डः, पिण्डोपि । न स्त्री पुमान् नपुंसकं, नभ्राण्नपादिति (सू०) साधुः, स नपुंसकं भवेदिति भाष्यात् पुंस्यपि ॥ ३९ ॥ शिशोर्भावः शैशवं, प्राणभृज्जातिवयो(सू०) । यूनो भावो यौवनं, हायनान्तयुवादिभ्योऽण् (सू०) । (वार्धकं) गोत्रोक्षोष्ट्रेत्यत्र (सू०) वृद्धाच्चेति वक्तव्यात् (वा०) वुञ्, मनोज्ञादित्वात् (द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च) भावकर्मणोरप्याहुः, यथा- वार्धके मुनिवृत्तीनाम् (रघु०) ॥ ४० ॥ पलति शोभामनेन पलितं, पल गतौ ।

आतुर्दुहितरं सर्वेऽपत्यं तोकं तयोः समे ।
स्वजाते त्वौरसोरस्यौ तातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥
जनयित्री प्रसूर्माता जननी भगिनी स्वसा ।
ननान्दा तु स्वसा पत्युर्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥
भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।
प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥
पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः ।
पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यान्मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥
श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो देवृदेवरौ ।
स्वस्रीयो भागिनेयः स्याज्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥
पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ।
मातुर्मातामहाद्येवं सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥
समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।
सगोत्रबान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥

समे) पुत्रे दुहितरि च सामान्येन वर्तेते । अतननमपत्यम्, अपति सन्धपत्यम् । स्तूयते तोकम् । संततिः संतानः, नन्दनोद्वहप्रजाः, [तन्तुश्च] । उरसा निर्मिते यथेति- अप्यतो (उरसोयश्च, उरसोण्च) । तनोति कुलं तातः, स्वार्थेऽण् । जनयति जनकः । पाति पिता । वप्ता च ॥२८॥ या जनित्री त्रिलोक्या इति त्वन्तर्भावितण्यर्थत्वात् । प्रसूयते प्रसूः । मान्त्यस्यां गर्भो माता । भगं कल्याणमस्त्यस्या भगिनी । सुष्ठु अस्यते स्वसा, सावसेर्ऋन् (उ०), नस्वस्रादिभ्यः (सू०) इति ङीप् नास्ति । न नन्दति भ्रातृजायां ननन्दा, नञिचनन्देः (उ०) इति ऋन् । न पतत्यनया कुलं नप्त्री । पुत्रस्यापत्यं पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥ यतते स्पर्धया याता, यतेर्वृद्धिश्च (उ०) इति ऋन् । (भ्रातृजाया) ऋतोविद्यायोनिसंबन्धेभ्यः (सू०) इति षष्ठ्या अलुगनार्हेन, सप्तमीसमासात्, यथा- द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम् (मेघ०) । (मातुलानी । इन्द्रवरुणेति (सू०) ङीपानुकौ । उपाध्यायमातुलाभ्यां वा (मातुलोपाध्याययोरानुग्वा) इति पक्षे ङीप् ॥३०॥ पत्युर्माता पत्न्याः श्वश्रूः, पत्न्या माता पत्युः श्वश्रूः, श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च (वा०) इत्यूङ् । तयोः पतिपत्न्योः पितान्योन्यं श्वशुरः, शु पूजितं कृत्वाश्नुते । (पितृव्यः) पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः (सू०) इति साधुः । (मातुलः) प्राग्वत् ॥३१॥ श्यायते श्यालः, स्यम वितर्केऽस्माद्वा (स्यालः), पत्युः श्याला इत्यर्थः । स्वामिनः पत्युः- भ्राता कनिष्ठः पत्न्याः, दीव्यति देवा, दिवेर्ऋः (उ०) । अर्तिकमिभ्रमिचमिदेविवासिभ्यश्चिदिति वरः (उ०) देवरः । स्वसुरपत्यं स्वस्रीयः, स्वसुश्छः (सू०) । जायां मिमीते जामाता ॥३२॥ प्रगतः पितामहात् (प्रपितामहः) । मातुः पिता मातामहः, [तत्पिता प्रमातामहः] । समानः पिण्ड एषां, यत्स्मृतिः-सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते । सप्तमादूर्ध्वं सगोत्राः । समानो नाभिर्मूलमेषां सनाभयः, ज्योतिर्जनपदेति (सू०) समानस्य सत्वम् ॥ ३३ ॥ समाने उदरे शयितः समानोदर्यः, समानोदरे शयितः (सू०) इति यत् । सोदरशब्दात्- सोदराद्यः (सू०), विभाषोदरे इति (सू०) समानस्य सत्वं वा । समाने गर्भे भवः सगर्भ्यः, सगर्भसयूथसनुताद्यन् (सू०), छान्दसोपि लोकेभिधानात् । सह जायते सहजो भ्राता । समानं गोत्रमेषां सगोत्राः, ज्योतिर्जनपदेति (सू०) सत्वम् । ज्ञायते ज्ञातिः । बध्नाति बन्धुः । (बान्धवः) स्वार्थेऽण् । एकः स्वो ज्ञातिवचनः, अन्य आत्मीयार्थः ॥ ३४ ॥ ज्ञाते-

आपन्नसत्त्वा स्याद् गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ।
गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥
पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्विस्तस्या दिधिषूः पतिः ।
स तु द्विजोग्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥
कानीनः कन्यकाजातः सुतोथ सुभगासुतः ।
सौभागिनेयः स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥
पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्रीयश्च पितृष्वसुः ।
सुतो मातृष्वसुश्चैवं वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥
अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ।
कौलटेयः कौलटेरो भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥
तदा कौलटिनेयोस्याः कौलटेयोपि चात्मजः ।
आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः स्त्रियां त्वमी ॥ २७ ॥

गर्भोस्या गुर्विणी, व्रीह्यादित्वादिनिः (सू०) । गुर्वीति च भागुरिः । अन्तर्विद्यतेस्याः (अन्तर्वत्नी), अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् (सू०) । गणिकानां समूहो गाणिक्यं, गणिकायायमितिवक्तव्यं (वा०) इति यञ् । गर्भिणीनां समूहो गार्भिणं, इनण्यनपत्ये (सू०) इति प्रकृतिभावः (नस्तद्धित इति टिलोपे प्राप्ते) । युवतीनां समूहो यौवतं, युवत्या अपुंवदिति गणपाठात् (भिक्षादिषु), भस्याढेतद्धिते (वा०) इति पुंवद्भावो नास्ति ॥ २२ ॥ पुनर्भवति पुनर्भूः । दिधेष्टि वाच्या भवति दिधिषूः । द्वौ वारौ द्विस्तस्य संस्कृता, यदाहुः– अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूः संस्कृता पुनः (याज्ञ०) । मनुस्त्वन्यथाह– ज्येष्ठायां यद्यनूढायां कन्यायामुह्यतेनुजा । सा चाग्रेदिधिषूर्ज्ञेया पूर्वा तु दिधिषूर्मता ॥ तस्याः पुनर्भ्वाः पतिः, किं च– पुनर्भूः पतिरस्य पुनर्भूर्दिधिषूस्तथेत्येषोप्यूदन्तः, दिधिषूमिच्छत्यात्मन इति क्यच् (सुपआत्मनःक्यच्), क्विप् (अन्येभ्योपिदृश्यते) । अग्रेनन्यभार्यत्वात्प्रधानं दिधिषूर्यस्य सोग्रेदिधिषूः, समासान्तविधिरनित्यः ॥ २३ ॥ (कानीनः) कन्यायाःकनीनचेत्यण् (सू०) । (सौभागिनेयः) कल्याण्यादीनामिनङ् (सू०) इति ढगिनङौ । एवं दौर्भागिनेय इत्याद्युभयं, हृद्भगसिन्ध्वन्तेपूर्वपदस्यच (सू०) इत्युभयपदवृद्धिः, उत्तरत्र– अनुशतिकादीनांचेति (सू०) । सुत इत्येव, परस्त्री कल्याण्यादिः ॥ २४ ॥ (पैतृष्वस्रीयः) पितृष्वसुश्छण् (सू०) । (पैतृष्वसेयः) ढकिलोपः (सू०) इति ज्ञापकाद्– ढक्– अन्त्यलोपश्च । सुत इत्येव, मातृष्वसुश्च (सू०) इति छणि मातृष्वस्रीयः, ढकिलोपः (सू०) इति ढकि मातृष्वसेयः । विसदृशाया मातुरपत्यं वैमात्रेयोऽसोदर्यो भ्राता, शुभ्रादित्वात् (सू०) ढक्, स्त्रीभ्योढक् (सू०) इत्यत्र स्त्रीप्रत्ययग्रहणात् । सांमातुरस्त्वभयमातृकः ॥ २५ ॥ बन्धक्या अपत्यं, कल्याण्यादीनामिनङ् (सू०) इति ढगिनङादेशः । बन्धून्– लाति बन्धुला । कुलटाया अपत्यं, स्त्रीभ्योढक् (सू०) । (कौलटेरः) क्षुद्राभ्योवा (सू०) इति ढ्रक् ॥ २६ ॥ सा हि भिक्षार्थिनी कुलान्यटति, कुलटायावा (सू०) इति ढगिनङौ, पक्षे ढगेव क्षुद्रात्वाभावात्, अङ्गशीलहीना हि क्षुद्रा । तनोति कुलं तनयः । सूयते सूनुः । सुवति सुतः । पुन्नरकात्त्रायते पुत्त्रः, पुनाति वा, पुवोह्रस्वश्च (उ०) इति क्त्रः । दारकदायादौ च ॥ २७ ॥ आत्मजादयः स्त्रियां वृत्ता दुहितृवाचकाः । गौरादौ पुत्री । दोग्धि पितरौ दुहिता । (तयोः

वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ।
जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥
स्त्री नग्निका कोटवी स्याद् दूतीसंचारिके समे ।
कात्यायन्यर्धवृद्धा या का(क)षायवसनाधवा ॥ १७ ॥
सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।
असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रैष्यान्तःपुरचारिणी ॥ १८ ॥
वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवाथ सा जनैः ।
सत्कृता वारमुख्या स्यात्कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥
विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञाथ रजस्वला ।
स्त्रीधर्मिण्यवि चात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥
ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।
श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥

(वीरपत्नी) नित्यंसपत्न्यादिषु (सू०) इति नान्तत्वाद्- ऋन्नेभ्योङीप् (सू०)। वीरं सूतवती वीरसूः सत्सूद्विषेति (सू०) क्विप् । वीरप्रसूर्जगति भार्गवरेणुकेव (वा० रा०) वीरस्य प्रसूर्मातेत्यर्थः । जीव- तोका तु जीवसूः । कोट्य तु कटहारिणी । जनयितुं प्रवृत्ता सा प्रजाता । (प्रसूतिका) सूतकापुत्रिका- वृन्दारकाणां वा (वा०) इति पक्षे- इत्वम्, अ.ह्याग्रहणात्पुंयोगेपि ङीष् नास्ति ॥ १६ ॥ विवस्त्रा योषिन्मुक्तकेशीत्यागमः । कोटेन लज्जावशात्कुटिलत्वेन वेति याति कोटवी । दूयन्तेस्या मोखर्यात् दूती । संचारयति (संदेशं) प्रापयति संचारिका । कतस्यापत्यमिव कात्यायनी, ऋषिपत्न्याकारत्वात् । सिद्धान्तेन, कषायेण रक्तं वस्त्रं शुद्धत्वादस्याः काषायवसना, अधवा- अपुंस्का रण्डेत्यर्थः ॥ १७ ॥ शिल्पं प्रसाधनादि तेन या परवेश्मान्युपजीवति, स्ववशा स्वायत्ता, एकायत्ता न भवतीत्यर्थः । सह-एरं प्रेरणं धरते सैरन्ध्री, चतुःषष्टिकलाभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी । प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री स्ववशेति चेति कात्यः । असितपलितयोः क्नम् ङीप् च । प्रादेषैष्ययोर्वृद्धिः (प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु)। द्वे वाक्ये इत्येके सम, यन्मुनिः- असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रैष्यान्तःपुरयोषिता ॥ १८ ॥ वारे राजदेवादिसेवाक्रमे स्त्री वारस्त्री । गणः पेटकोस्त्यस्याः, गणयतीश्वरानीश्वरो वा गणिका । वेशो वेश्यावाटे भवा वेश्या । पण्यस्त्री पणस्त्री च । वारे सेवाक्रमे मुख्या (वारमुख्या)। कुट्टयति कुट्टनी । शं श्रेयो भालयति शंभं श्रेयोयुक्तं लाति वा शंभली । चुन्दी देश्याम् ॥ १९ ॥ विप्रश्नो दैवप्रच्छनं शुभाशुभेक्षणं चास्त्यस्याः (विप्रश्निका)। दैवं शुभाशुभं कर्म जानाति दैवज्ञा, अन्तःपुरस्यापुंस्प्रवेश्यत्वात् । रजोस्त्यस्या रजस्वला, रजःकृष्या- सुतीति (सू०) वलच् । स्त्रीधर्मो रजोस्त्यस्याः स्त्रीधर्मिणी । अत्रेरपत्यमात्रेयी । (मलिनी) मलिना- द्यसिद्धीप् (वा०), मलादिमन्ताद्वा ङीप् ॥ २० ॥ ऋतू रजोस्त्यस्या ऋतुमती । उदकात्संज्ञायां यति उदक्या, उदकमर्हतीति । पुष्पितेति माला । पुष्पवत्यत्रीरिति प्राच्याः पेठुः, अज्यते रज्यतेन्येभ्योऽ- पीः, अवितृस्तृतन्त्रिभ्यईः (उ०)। अविरात्रेयीत्येके, यत्कात्यः- अविः स्त्रीधर्मिणी स्त्रियादिति । पुष्पं सुतफलहेतुत्वाद्रजः । ऋतुरेवार्तवम्, ऋतुः स्त्रीरजोत्र, ऋतौ गर्भग्रहणकाले भवं वा, ऋतुः प्राप्तोस्य वा । (स्पृहिगृहिपतिदयि)निद्रातन्द्राश्रद्धाभ्यआलुच् (सू०) । दोहदं गर्भिण्यभिलाषोस्त्यस्या दोहदवती । निःक्रान्ता कलाभ्योऽशुद्धिभ्यो निष्कला जीर्णर्तुः ॥ २१ ॥ आपन्नं गृहीतं सत्त्वं गर्भोनयापन्नसत्त्वा । गुरु-

कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका ।
पुंश्चली धर्षणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी ॥ १० ॥
स्वैरिणी पांशुला च स्यादशिश्वी शिशुना विना ।
अवीरा निष्पतिसुता विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥
आलिः सखी वयस्या च पतिवत्नी सभर्तृका ।
वृद्धा पलिक्नी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥
शूद्री शूद्रस्य भार्या स्याच्छूद्रा तज्जातिरेव च ।
आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥
अर्याणी स्वयमर्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।
उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥
आचार्यानी तु पुंयोगे स्यादर्यी क्षत्रियी तथा ।
उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ १५ ॥

मदन च । अभिसारयते कान्तं सा भवेदभिसारिका ॥ ण्वुलन्तोयं (अभिसारिका) । वासकसज्जा विरहोत्कण्ठिता खण्डिता विप्रलब्धा कलहान्तरिता तथा प्रोषितभर्तृका स्वाधीनदयितेत्यन्या सप्तान्वर्थत्वान्न दर्शिताः । पुमांसं चलयति पुंश्चली । कर्षति चेतश्चर्षणी, कृषेरादेश्चचः (उ०) । बध्नाति बन्धकी । कुलान्यटति कुलटा शकन्ध्वादिः (वा०), कुत्सितं लटतीत्येके । एति तच्छीला– इत्वरी चपला, इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप् (सू०) ॥ १० ॥ स्वेनेर्तुं तच्छीला स्वैरिणी, स्वादीरेरिणोः (वा०) इति वृद्धिः । पांशुर्मालिन्यहेतुरस्त्यस्याः पांशुला । (अशिश्वी), सख्यशिश्वीतिभाषायां (सू०) इति साधुः । न विद्येते वीरौ पतिपुत्रावस्या अवीरा । विश्वसिति स्म विश्वस्ता । विगतो धवो भर्तास्या विधवा ॥ ११ ॥ अल(आलय)त्यालिः, यच्छाभ्वतः– आलिः सखी सेतुरालिरालिरावलिरिष्यते । समानं ख्याति सखी । वयसा तुल्या वयस्या, नौवयोधर्मेति (सू०) यत् । सध्रीची च । (पतिवत्नी) अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् (सू०), ङीप् च । (पलिक्नी) असितपलितयोर्न (वा०), छन्दसिक्नमेके (वा०), भाषायाम-पीष्यत इति ङीप् च । प्रजानातीति प्रज्ञा, इगुपधेति कः (सू०) । (प्राज्ञी) प्रज्ञादिभ्यश्चेति (सू०) स्वार्थेऽण् । प्रज्ञास्त्यस्याः (प्राज्ञा), प्रज्ञाश्रद्धार्चावृत्तिभ्यो णः (सू०) ॥१२॥ (शूद्री) पुंयोगादाख्यायां (सू०) इति ङीष् । शूद्रजातीया स्त्री शूद्रा, शूद्राचामहत्पूर्वाजातिः (वा०) इति– अजादित्वाट्टाप् । आभीरजातीया महाशूद्रस्य स्त्री च, जातिलक्षणे पुंयोगे च ङीप् । वैश्यभेद एवाभीरो गवाद्युपजीवी । अन्यत्र महती चासौ शूद्रा च महाशूद्रा ॥ १३ ॥ स्वयं पुंयोगं विना । अर्यक्षत्रियाभ्यांवास्वार्थे (वा०) इति ङीषानुकौ, पक्षे टाप्, योपधत्वाज्जातिलक्षणो ङीप्– नास्ति । स्वयमित्येव । उपेत्याधीयतेस्याः, अपादाने स्त्रियामुपसंख्यानंतदन्ताच्चवाङीष् (वा०) इति घञ् वा च ङीष् । स्वयं मन्त्रव्याख्याकृदाचार्या । स्वतो जातावित्यर्थः, योपधत्वाज्जातेर्ङीष्–नास्ति ॥ १४ ॥ (आचार्यानी) इन्द्रवरुणेति (सू०) ङीषानुकौ आचार्यादणत्वंचेति वक्तव्यम् (वा०) । पुंयोग इत्येव, (उपाध्यायानी) उपाध्यायमातुलाभ्यांवेति (मातुलोपाध्याययोरानुग्वा) पक्षे ङीषानुकौ । पुट संश्लेषणे, उभयव्यञ्जना पोटा नपुंसकाख्या ॥ १५ ॥

सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी ।
वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥
कृताभिषेका महिषी भोगिन्योन्या नृपस्त्रियः ।
पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥
भार्या जायाथ पुंभूम्नि दाराः स्यात्तु कुटुम्बिनी ।
पुरन्ध्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥
कृतसापत्न(त्नि)काध्यूढाधिविन्नाथ स्वयंवरा ।
पतिंवरा च वर्या च कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥
कन्या कुमारी गौरी तु नग्निकानागतार्तवा ।
स्यान्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥
समाः स्नुषा जनी वध्वश्चिरण्टी तु सुवासिनी ।
इच्छावती कामुका स्याद् वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥

स्त्र्येव । सुष्ठु- आद्रियते सुन्दरी । रमन्तेऽस्यां रमणी । रमते रामा, ज्वलादित्वाण्णः (सू०) । कुप्यति तच्छीला कोपना, क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च (सू०) इति युच् । भामिनी, भाम क्रोधे । उत्तमा स्त्रीपर्याया । आरोहतेऽस्मिन्नारोहो नितम्बः, स वरोऽस्या वरारोहा । मत्ता क्षीबेव काशते भाति मत्तकाशिनी, कर्तर्युपमाने (सू०) णिनिः । वरो वर्णोऽस्या वरवर्णिनी ॥ ४ ॥ नृपस्त्र्येव । धर्ममहादेव्येव कृताभिषेका, यथा वासवदत्ता, मह्यते पूज्यते महिषी । पद्मावत्याद्याः, भोगोऽस्त्यासां भोगिन्यः । पत्युर्नो यज्ञसंयोगे (सू०) इति पत्नी । पाणिर्गृहीतोऽस्याः, बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात् (सू०) इत्यत्र पाणिगृहीतीत्यादिना (वा०) विशेष इति ङीष् । द्वितीया धर्मसहाया । सह धर्मोऽस्त्यस्याः सहधर्मिणी, यज्ञादौ सहाधिकारात् ॥ ५ ॥ भरणीया भार्या, संज्ञायां भृञः- ऋहलोर्ण्यत् (सू०) । जायतेऽस्यां पतिर्जाया, यन्मनुः- जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः । दारयन्ति दाराः, दारजारौ कर्तरि णिलुक् च (वा०) । अथशब्दात्पुंभूम्नोर्न पूर्वभाक्त्वम् । सहचरी च । कुटुम्बं पुत्रभृत्यादयस्त्यस्याः कुटुम्बिनी । पुरं धत्ते पुरंध्री । पतिसेवैव व्रतं यस्याः सा पतिव्रता, यत्स्मृतिः- नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतमिति ॥ ६ ॥ कृतं सापत्नकं सपत्नीभावोऽस्याः (कृतसापत्नका) । अध्युपर्यूह्यते द्वितीया(अन्या)स्या अध्यूढा । अधिविन्दत्यस्यामधिविन्ना । स्वयं वृणीते स्वयंवरा, संज्ञायांभृतृवृजिधारि (सू०) खच् । पतिं वृणीते पतिंवरा, खच् । व्रियतेऽनया वर्या, अवद्यपण्येति (सू०) साधुः, वरमर्हतीति वा । कुलस्य संपादयित्री स्त्री(कुलस्त्री) ॥ ७ ॥ कनति कन्या, कनी दीप्तौ, अघ्न्यादिः (उ०), कन्यायाः कनीन च (सू०) इति लिङ्गाद् ङीप्- नास्ति । कुमारयति क्रीडति कुमारी कुत्सितो मारोऽस्या वा, अनूढत्वात् । अष्टवर्षा भवेद् गौरी दशमे नग्निका भवेदिति स्मार्तो विशेषो नादृतः । गो(गु)रते गौरी । नजते नग्ना, ओणजी ओलजी व्रीडे । ऋतौ भवमार्तवं रजः । (मध्यमा) अजाद्यतष्टाप् (सू०) । (तरुणी) वयसिप्रथमे (सू०) इति ङीप् स्यात्, नञ्स्नञीकक्ख्युंस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानात् (वा०) वा ङीप् । (युवतिः) यूनस्तिः (सू०) ॥ ८ ॥ स्नौति स्नुषा । जायतेऽस्यां जनी । वधूटी च प्रामटिकावत् । चिरिणोति चिरिण्टी, चरति चरण्टीत्येके, वयस्यचरमे (वा०) इति ङीप् । सुष्ठु वसति सुवासिनी, स्ववासिनीति द्रवि[मि]डाः । (कामुका) लषपतपदेत्युकञ् (सू०) । वृषमिच्छति, सुप आत्मनः क्यच् (सू०), अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि (सू०) इत्यात्राश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायामिति (वा०) असुक् । जानपदकुण्डेति (सू०) मैथुनेच्छायां ङीपि कामुकी ॥ ९ ॥ यत्तु भरतः- हित्वा लज्जाभये श्लिष्टा मदनेन

पशूनां समजोन्येषां समाजोथ सधर्मिणाम् ।
स्यान्निकायः पुञ्जराशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४३ ॥
कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्गणे ।
गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४४ ॥

इति सिंहादिवर्गः । ५ ।

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।
स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥
स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।
प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥
विशेषास्त्वङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥

समूहविशेषा वक्ष्यन्त इति शेषः । सजातीयैः प्राणिभिरप्राणिभिश्च समूहो वर्गः, वृज्यते विजातीयेभ्य इति । प्राणिभिः समूहः (संघः), संहन्यते संघः, संघोद्घौ गणप्रशंसयोः (सू०) इति साधुः, यथा गोसंघः, मेघसंघादुपचारात् । सरति सार्थोऽध्वगवृन्दम् । जन्तुभिरित्येव, कुल संस्त्याने बन्धुषु च, (यथा) विप्रकुलम् । वृन्दमित्येव, यथा मृगयूथः, यु मिश्रणे ॥ ४२ ॥ संवीयते समजः, समुदोरजःपशुष्विति (सू०) अप् । पशुभ्योन्येषां वृन्दं (समाजः), यथा श्रोत्रियसमाजः । (सधर्मिणां) समूह इत्येव, यथा श्रमणनिकायः, निचीयते निकायः, निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः (सू०) घञ् कत्वं च । धान्यादेरुच्छ्रितं वृन्दं, पुञ्ज्यते पुञ्जः पूर्यते वा । रश्यते राशिः, रशिः शब्दो दीप्त्यर्थः । उत्कीर्यत उत्करः । कूट्यते कूटः ॥ ४३ ॥ कपोतादिसमूह एतानि वर्तन्ते, अनुदात्तादेरञ् (सू०) । आदिशब्दात्काकादि । छायन्ते छेकाः पञ्जरादौ स्थाप्यन्ते । गृह्यन्ते गृह्यकाः, पदास्वैरीति (सू०) क्यप्, स्वार्थे कन् ॥ ४४ ॥ इति सिंहादिवर्गः । ५ ।

मनोरपत्यं मनुष्यो मानुषश्च, मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च (सू०) । म्रियते मर्त्यः, स्वार्थे यत् । मानवः, तस्येदमर्थेऽण्, अपत्यार्थे अञ्यद्भ्यां बाधितत्वात् । नृणाति नरः, नॄ नये । पाति पुमान् । पञ्चभिर्भूतैर्जातः पञ्चजनः । पुरि पुरि शयनात्पूरणाद्वा पुरुषः । (पूरुषः) अन्येषामपीति (सू०) वा दीर्घः । नयति ना, नयतेर्डिच्च (उ०) इति ऋः ॥ १ ॥ स्त्यायतेस्यां गर्भः स्त्री । यौति पुंसा [योषति] योषित्, हृसृरुहियुषिभ्य इतिः (उ०) । युष्य(योष)त्यन्यं यौति वा योषा । नारीति, नृनरयोर्वृद्धिश्च (ग० सू०) इति शार्ङ्गरवादिपाठान्ङीन् । सीमन्तः केशवेशोस्त्यस्याः सीमन्तिनी । उह्यतेसौ भर्त्रा, बध्यतेनया भर्ता वा वधूः । प्रतीपं वक्रं पश्यति, अपाङ्गनिरीक्षणात् । वामा विपरीतलक्षणया शृङ्गाररसवेदनाद्वा । वनति भजति वनिता । मह्यते महिला । तथाशब्दान्महेलापि, यथा — अथ यद् द्विषतः प्रासनयः परमहेलया । स्वप्नेपि मनसि स्पृष्टो न वः परमहेलया ॥ २ ॥ प्रशस्तान्यङ्गान्यस्या अङ्गना, अङ्गात्कल्याणे (ग० सू०) इति पामादित्वान्नः (लोमादिपामादीति) । बिभेति तच्छीला भीरुः, भियःक्रुक्लुकनौ (सू०) । कामयते कामिनी । वामे चारुणी लोचने अस्याः वामलोचना । प्रकृष्टो मदः कामवेगोस्याः प्रमदा । मानः प्रणयकोपोस्या मानिनी । काम्यते कान्ता । ललति ल(ड)ल्यते वा ललना, लल विलासे, लल ईप्सायां वा । नितम्बिनी प्रशस्तनितम्बा ॥ ३ ॥ विशेषा

तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवंजीवश्चकोरकः ।
कोयष्टिष्टिट्टिभः कोकः कुकरो(वर्तको) वर्त(र्ति)कादयः ॥ ३६ ॥
गरुत्पक्षच्छदाः पत्त्रं पतत्रं च तनूरुहम् ।
स्त्री पक्षतिः पक्षमूलं चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥ ३७ ॥
प्रडीनोड्डीनसंडीनान्येताः खगगतिक्रियाः ।
पेशीकोशो द्विहीनेऽण्डं कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥ ३८ ॥
पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ।
स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वं युग्मं तु युगलं युगम् ॥ ३९ ॥
समूहनिवहव्यूहसंदोहविसरव्रजाः ।
स्तोमौघनिकरव्रातवारसंघातसंचयाः ॥ ४० ॥
समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः ।
स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४१ ॥
वृन्दभेदाः समैर्वर्गः संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।
सजातीयैः कुलं यूथं तिरश्चां पुंनपुंसकम् ॥ ४२ ॥

तित्तिशब्दं राति तित्तिरिः । कुक्कुशब्दं करोति (भाषते) कुक्कुभः । लाति [लावयति] लूयते वा लावः । जीवेन सहचरेण जीवति जीवंजीवः, बाहुलकात्खच् । चकत(ति) ज्योत्स्नया तृप्यति चकोरः । कोके यजति कोयष्टिः शिखरी । टिट्टिशब्दं भाषते टिट्टिभः । कुकति [कोकते] कोकः । केति करोति कुकरः । वर्तत इति (वर्तकः), वर्तकाशकुनौ प्राचां (वा०) इति साधुः, पक्षे वर्तिका । आदिशब्दात्कपिञ्जलादयः ॥ ३६ ॥ गिरति स्वं गरुत् । (पक्षः) पक्ष परिग्रहे । छाद्यतेऽनेनाङ्गं छदः, छादेर्घे (सू०) इति ह्रस्वः । पतत्यनेन पत्त्रम् । पतन्तं त्रायते पतत्रम् । मूले, पक्षात्तिः (सू०) । चमति चञ्चति चञ्चुः । त्रोटयति त्रोटिः । तुण्डं च ॥ ३७ ॥ प्रकृष्टमूर्ध्वं संहतं वा डयनं, स्वादय ओदितः (ग० सू०), (ओदितश्च) इति निष्ठानत्वम् । एता इति हि डीनाद्युपलक्षणार्थं । पेशीनां मांसखण्डानां कोशः । अश्नाति निःसरत्यस्मादण्डम् । तिस्रः संज्ञा इति गौडाः । कौ लीयते कुल्यते कुलमेति वा कुलायः । निलीयतेऽस्मिन् नीडः ॥ ३८ ॥ पुनाति पोतः । पात्यनं पिबति स्तनौ वा पाकः । ऋभ्यते(अर्यते) वृद्धिं प्राप्यतेऽर्भकः । डयति(ते) डिम्भः । प्रथते वर्धते पृथु कायति वा पृथुकः । श्यति छ्यति वा शावकः । शिनोति स्नेहेन शेते वाल्यर्थं शिशुः । स्त्री च पुमांश्च स्त्रीपुंसौ, अचतुरविचतुरेति (सू०) साधुः । मेथते संगच्छते मिथुनम्, मिथृमेथृ संगमने । द्वन्द्वमिति, द्वन्द्वंरहस्यमर्यादेति (सू०) साधुः, यत्कालिदासः- द्वन्द्वानि भावं क्रियया विवव्रुः । युज्यते धर्मिवृत्त्या युग्मम् । धर्मवृत्तौ तु युगं लाति युगलं, मत्वर्थीयो वा लच् (सिध्मादिभ्यश्च) ॥ ३९ ॥ समूह्यते ढौक्यते समूहः । निवहति निवहः । व्यूह्यते व्यूहः । संदुह्यते प्रपूर्यते संदोहः । विस्रियते विसरः । व्रज्यते व्रजः, गोचरसंचरवहव्रजेति (सू०) साधुः । स्तूयते स्तोमः । ओघते- ओघः, न्यङ्क्वादिः (सू०) । निकीर्यते निकरः । व्रियते वारः । संहन्यते संघातः, हो हन्तेरिति (सू०) घः । संचीयते संचयः ॥ ४० ॥ समुदयनं समुदायः, अयते-र्घञ् । समुदयः, इणोऽच् । समवेयते समवायः । चीयते चयः । गण्यते गणः । वृणोति वृन्दम् । निकुरति निकुरम्बम् । कदम्बपुष्पाकृतिः केसरसंचयात्मकत्वात् (कदम्बकम्), कुत्सितमम्बते वा ॥ ४१ ॥

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः ।
द्विरेफपुष्पलिड्भृङ्गषट्पदभ्रमरालयः ॥ ३० ॥
मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् ।
शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ॥ ३१ ॥
केका वाणी मयूरस्य समौ चन्द्रकमेचकौ ।
शिखा चूडा शिखण्डस्तु पिच्छबर्हे नपुंसके ॥ ३२ ॥
खगे विहंगविहगविहंगमविहायसः ।
शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३३ ॥
पतत्रि(त्रि)पत्त्रिपतगपतत्पत्त्ररथाण्डजाः ।
नगौकोवाजिविकिरविविष्किरपतत्रयः ॥ ३४ ॥
नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः ।
तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३५ ॥

मधुव्रतः । अलत्यली, अलिश्च । द्वौ रेफौ नाम्न्यस्य द्विरेफः । भृज्जति बिभर्ति वा भृङ्गः । षट् पदानि चरणा अस्य षट्पदः । भ्रमति भ्रमरः । चञ्चरीकभसले(ने)न्दिन्दिररोलम्बा देश्याम् ॥ ३० ॥ मीनात्यहीन् मयूरः । बर्हमस्यास्ति (बर्हिणः), फलबर्हाभ्यामिनन् (वा०) । शिखास्त्यस्य शिखावलः, दन्तशिखात्संज्ञायां (सू०) वलच् । शिखी, व्रीह्यादित्वात् (सू०) । मेघनादमनुलसति नृत्यति— अवश्यं मेघनादानुलासी । चन्द्रकी शुक्लापाङ्गश्च ॥ ३१ ॥ के मूर्ध्नि कायति केका । चन्द्रप्रतिकृतिश्चन्द्रकः । मेचको मिश्रवर्णत्वात्, यत्कात्यः— बर्हिकण्ठसमं वर्णं मेचकं ब्रुवते बुधाः । मयूरस्येत्येव, चन्द्रकोपचारात् । शिखाभिर्ध्वयते शिखण्डः । पिच्छ[य]ति पिच्छम् । बर्हति नृत्येनोर्ध्वीभवति बर्हम् । प्रचलाकोपि । कलापो नानार्थे ॥ ३२ ॥ खे गच्छति खगः, अन्यत्रापि दृश्यते (वा०) इति डः । विहायसा गच्छति, गमेः सुपि वाच्यः (वा०) खच्च वक्तव्यः, विहायसो विह इति (वा०) डे, खच्डिद्वा (वा०) । विजिहीते विहायाः, यच्छाश्वतः— विदुर्विहायसं व्योम पक्षिणश्च विहायसः । शक्नोतीति, शकेरुनोन्तोन्त्युनयः (उ०) । पक्षाः सन्त्यस्य पक्षी । द्विर्जायत इति द्विजः ॥ ३३ ॥ पतत्राणि विद्यन्ते येषु ते पतत्रिणः । पतन्त्यनेनेति पतः पक्षः, पुंसि संज्ञायां घः (सू०), पतेर्गच्छति पतगः । पतति पतन् । पत्त्राणि पक्षा रथोस्य पत्त्ररथः । नगे— ओकोस्य नगौकाः । वाजो वेगोस्यास्तीति वाजी । विकिरति भक्ष्यं विकिरः— विष्किरः, विष्किरः शकुनिर्विकिरो वा (सू०) । वाति वयति वा विः, वेञ्श्चित् (उ०) । पतत्राणि सन्त्यस्य पतति वा पतत्री, पतेरत्रिन् (उ०), पतेरत्रिरिति भ्रान्त्या पतति प्रत्ययकृदिदन्तं मन्यते ॥ ३४ ॥ पतितुमिच्छन् पित्सन्, सनि मीमेति (सू०) इस्— इत्यभ्यासलोपौ । नभसा गच्छति नभसंगमः, गमेः सुप्युपसंख्यानात्खच् (वा०), वाचंयमपुरंदरौ च (सू०) इति चकारादमागमः, अत्यविचमितमिरमिलभिनभितपिपातिपनिपणिमहिभ्योऽसजिति (उ०) नभः(भस)शब्दोस्तीत्येके । पतङ्गो नानार्थे । एते पक्षिविशेषाः । हरिणं वर्णं मतो हारीतः । मज्जति मद्गुः जलकाकः, न्यङ्क्वादिः (सू०) । कण्डे भवं कारण्डं पञ्जरबन्धं वाति कारण्डवः । प्लवते प्लवः ॥ ३५ ॥

क्रुङ् क्रौ(क्रु)ञ्चोऽथ बकः कह्वः पुष्कराह्वस्तु सारसः।
कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २३ ॥
कादम्बः कलहंसः स्यादुत्क्रोशकुररौ समौ।
हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥ २४ ॥
राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः।
मलिनैर्मल्लिकाक्षा(ख्या)स्ते धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २५ ॥
शरारिराटिराटि(डि)श्च बलाका बिसकण्ठिका।
हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २६ ॥
जतुकाजिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैलपायिका।
वर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ॥ २७ ॥
पतङ्गिका पुत्तिका स्याद्दंशस्तु वनमक्षिका।
दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्गन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २८ ॥
भृङ्गारी चीरुका चीरी झिल्लिका च स्त्रियामिमाः।
समौ पतङ्गशलभौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २९ ॥

स्त्रियामजादित्वात्क्रौञ्चा। वङ्कति बकः, न्यङ्क्वादिः (सू०)। बकोटोऽपि। केन कं जलं वा ह्वयते कह्वः। सरति भवः सारसो लक्ष्मणाह्वयः। निलीनाङ्गो दीर्घजङ्घश्च। कोकते वाशते कोकः। चकते चक्रः। चक्रेति वाक्- आख्याऽस्य चक्रवाकः। रथाङ्गं चक्रमाह्वयो नाम चास्य रथाङ्गाह्वयो रथाङ्गनामा च॥ २३॥ कदम्बस्यायं संघचारित्वात्कादम्बः। कलो मधुरवाग्हंसः (कलहंसः)। उच्चैः क्रोशत्युत्क्रोशः। कुरति कुररः, कुर शब्दे, कुरेति शब्दं राति वा। हन्ति गच्छति हंसः। श्वेता गरुतः पक्षा अस्य श्वेतगरुत्। चक्राकाराङ्गो वृत्तत्वात्, चक्राङ्ग इत्येके। मानसाख्यं देवसरस्योकोऽस्य मानसौकाः॥ २४॥ चञ्चुसहितैश्चरणैरिति लक्षणे तृतीया। मलिनैश्चञ्चुचरणैस्ते सिता मल्लिकाक्षाः, [मल्लिकाकाराक्षाः] शुक्लापाङ्गत्वात्। कृष्णैश्चञ्चुचरणैर्धृतराष्ट्रे- अमात्ये भवा धार्तराष्ट्राः, राजहंसेभ्यो न्यूनत्वात्॥ २५॥ शृणन्त्येनां शरारिः। अतत्याटिः। अटत्याटिः। एताः स्त्रियाम्, बलात्कान् कायति बलेनाकति याति वा बलाका। बिसमिव कण्ठोऽस्याः, बिसकण्ठिकेत्येके। शारिका गोराटी पीतपादेति च वाच्यम्। व्रियते वरटा, स्त्रीविषयत्वाज्जातेर्ङीष् नास्ति, वरलापि। योषिदित्येव, लक्ष्मणीत्येके, अत एव लक्ष्मणाह्वयोऽसौ॥ २६॥ जतिव कृष्णपिङ्गलत्वाज्जतुका। अजिनं पत्राणि पक्षा अस्या अजिनपत्रा चर्मवटकत्वात्। परमुष्णत्वमस्याः शीतापहत्वात्, परं विरुद्धं वा तेजसोऽन्धकारात् (परोष्णी)। तैलं पिबतीति तैलपायिका, नित्यमास्यविकासात्। चतुःसंज्ञे(ज्ञा)त्येके, तैलाख्या- अजिनपक्षत्वात्। मुखविष्ठा वल्गुलिका निशाटनी च। वृणोति वर्वणा। मक्षन्ति हृष्यन्त्यस्यै मक्षिका। सरन्ती घातयति सरघा॥ २७॥ पतति- अपतङ्गति वा पतङ्गिका। पुत्कुत्सितं तनोति पुत्तिका, मधुमक्षिकाभेदोऽयं, यदाह्निभिः- माक्षिकं तैलवर्णं स्याद् घृतवर्णं तु पौत्तिकम्। भ्रामरं तु भवेच्छुक्लं क्षौद्रं तु कपिलं भवेत्॥ दशति दंशः। (दंशी) दंशजातीया, जातेरिति (सू०) ङीष्। गन्धयतेऽर्दयति गन्धोली, गन्धालीत्येके। वृणोति वरटा तैलाटाह्वा॥ २८॥ आकृत्या भृङ्गमियर्ति भृङ्गारी। चीति रौति चीरुका। चीति रिणाति चीरी। झिल्ली वाद्यभेदस्तत्तुल्यशब्दा झिल्लिका चक्राह्वया, केऽणः (सू०) इति ह्रस्वः, झिल्लिकार्ति(र्ता)कवीनामिति तु लक्ष्यम्। शलति शमं लभते वाग्नौ शलभः। खे द्योतते खद्योतः। ज्योतिषेङ्गति चलति ज्योतिरिङ्गणः। इन्द्रगोपको ज्योतिर्माली कीटमाणिक्यं च [-माणिश्च]॥ २९॥ मधु व्रतयति भुङ्क्ते

व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ।
लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यादथ चाषः किकीदिविः(वः) ॥ १६ ॥
कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा अथ स्याच्छतपत्रकः ।
दार्वाघाटोऽथ सा(शा)रङ्गः स्तोककश्चातकः समाः ॥ १७ ॥
कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १८ ॥
चटकः कलविङ्कः स्यात्तस्य स्त्री चटका तयोः ।
पुमपत्ये चाटकैरः स्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥ १९ ॥
कर्करेटुः करेटुः स्यात्कृकणक्रकरौ समौ ।
वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ २० ॥
काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः ।
ध्वाङ्क्षात्मघोषपरभृद्बलिभुग्वायसा अपि ॥ २१ ॥
द्रोणकाकस्तु काकोलो दात्यूहः कालकण्ठकः ।
आतापि(यि)चिल्लौ दाक्षाय्यगृध्रौ कीरशुकौ समौ ॥ २२ ॥

टस्य । खञ्जतीति खञ्जनः । लोहवर्णं पृष्ठमस्य । कङ्कते कङ्कः । चषति चाषः । किकीति दीव्यति शब्दायते किकीदिविः, द्वे नामनी इत्येके, किकिदीविरित्यन्ये ॥ १६ ॥ के लिङ्गं चुगत्य कलिङ्गः । भृङ्गवर्णोऽन्यपक्षी (भृङ्गः) । धूमयानिपाटति धूम्याटः, धूम आटश्च पर्यायेकदेशत्वात् । शतं बहवः पत्त्राणि पक्षा अस्य शतपत्त्रः । दार्वाङ्कृन्ति दार्वाघाटः, दारावाहनोऽणन्त्यस्य टः संज्ञायाम् (वा०) । सरति सारङ्गः, सृ– आरङ्गगिति वा यूथका(चा)रित्वात् । स्तोकं कायति याचते वा स्तोककः । चतते(ति) याचते चातकः । जलरङ्कोऽपि ॥ १७ ॥ कृकेण शिरोग्रीवेण वकि कृकवाकुः । कुगुचारणेन कुटति कुक्कुटः । शिखी कालज्ञश्च ॥ १८ ॥ चटति भिनत्ति– आहारं चटकः । कं शिरो लुनाति चलयति कलविङ्कः । (चटका) आजाद्यतष्टाप् (सू०), क्षिपकादित्वादित्वाभावः (क्षिपकादीनां च) । (तयोः) चटकस्य चटकायाश्चापत्यं पुमान्– चाटकैरः, चटकाया ऐरक् (सू०), चटकायेरयुपसंख्यानं (चटकस्येति वाच्यम्) । स्त्री च तदपत्यं च तत्र, स्त्रियामपत्ये लुगवक्तव्यः (वा०), लुक्तद्धितलुकि (सू०) इति टापो लुक्यपि स्त्रीत्वात्पुनष्टाप् ॥ १९ ॥ कर्केति रेटते । केति च रेटते याचते (करेटुः) । कृ इति कणति कृकं नयति वा कृकणः । क्रेति करोति याचते क्रकरः । परभृतः काकपुष्टत्वात् । कोकते चित्तं गृह्णाति कोकिलः । अपिकायति पिकः । कलकण्ठस्ताम्राक्षश्च ॥ २० ॥ काशब्दं कायति कक्कते वा लौल्यात्काकः । केति रटति करटः । नास्ति रिष्टं हिंसास्यामृतभुक्त्वादरिष्टः । बलिभिः पुष्टो वैश्वदेवभागाहर(गार्ह)त्वाद् बलिपुष्टः । सकृत्प्रजायते सकृत्प्रजः, एकाण्डप्रसवात् । ध्वाङ्क्षति ध्वाङ्क्षः । आत्मनः स्वनाम्नो घोषे यस्यात्मघोषः, काकाते वाशनात् । परान् पिकान् बिभर्ति परभृत् । वय एव वायसः, प्रज्ञादित्वादण् (सू०), वयते वा । एकदृष्टिश्चिरजीवी मौकुलिर्द्विकश्च ॥ २१ ॥ (द्रोणकाकः) वृद्धकाकोऽद्रिकाको वा, यदाहुः– द्रोणकाको दग्धकाको वृद्धकाको वनाश्रयः, कुल हिंसायां, द्रोणोऽपि । द्वितीयं तृतीयं वा रूपं ददाति दित्यवाट्, तस्यापत्यं दात्यूहः, देविकाशिंशपेत्यात्वम् (सू०) । जलः कण्ठोऽस्य कालाः कण्टका रोमोद्भेदा वास्य कालकण्ठः कालकण्टकः । जलरङ्को(ङ्को)पि । चिल्लः लोहितेन समावित्येव । आतापयति आतापी । चिल्लति चिल्लः, चिल्ल शैथिल्ये । दक्षते दाक्षाय्यः, कुदक्षिस्नुहिगृहिभ्य आय्यः (उ०), ततोऽपत्येऽण् (तस्येदम्) । गृध्यति मांसं गृध्रः । कीयन्दमीरयति कीरः । शुको नीलरवात्, शवतीत्येके । प्रियदर्शनोऽपि ॥ २२ ॥ कुषाति कुष् । (कीरः) प्रज्ञादित्वादण् (सू०),

कृष्णसाररुरुन्यङ्कुरङ्कुशम्बररौहिषाः ।
गोकर्णपृषतैणर्श्यरोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥
गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः ।
इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥
उन्दुरुर्मूषिकोऽप्याखुर्गिरिका बालमूषिका ।
[छुछुन्दरी गन्धमुखी दीर्घतुण्डी दिवान्धिका ॥ १२ ॥]
सरटः कृकलासः स्यान्मुसली गृहगोधिका ।
लूता स्त्री तन्त्र[न्तु]वायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ॥ १३ ॥
नीला[ल]ङ्गुस्तु कि[कृ]मिः कर्णजलौकाः शतपद्युभे ।
वृश्चिकः शूककीटः स्यादालिद्रुणौ तु वृश्चिके ॥ १४ ॥
पारावतः कलरवः कपोतोऽथ शशादनः ।
पत्त्री श्येन उलूके तु वायसारातिपेचकौ ॥ १५ ॥

मृगविशेषाः । कृष्णेन सारः शबलः कृष्णसारः । रौति रुरुः । न्यञ्चति न्यङ्कुः, न्यङ्क्वादित्वात् (सू०) कुत्वम् । रमते रम्यते वा रङ्कुः । शं वृणोति शंवरः । रोहिषाख्ये तृणे भवो रौहिषः । पृषतो बिन्दुचित्रः, मत्वर्थीयो- ऽच् । एत्येणः । ऋषति ऋश्यः, ऋषी गतावित्यस्मान्मूर्धन्यः षः स्यात् । रोहितो रक्तत्वात् । चमति चमरः ॥ १० ॥ गन्धमर्दयति गन्धर्वः । शृणाति शरभः । रमन्तेऽस्मिन् रामः । सरति सृमरः । गुवति गवते वा गवयः । शशति लुत्या गच्छति शशः । आदिशब्दाद्धन्युर्न्यर्त्नो[यो]त्यः (?) । मृगेन्द्राद्या उक्ताः । गवाद्याश्च वक्ष्यमाणाः पाशबन्धे पाशैः पशवः, तिर्यञ्च इति । श्वापदा हिंस्रपशवः ॥ ११ ॥ उनत्त्युन्दुरुः, अदन्तोऽपि । मूष्णाति मूषिकः । आखनत्याखुः । कुंभजोऽपि । खनको गुहाशयो गर्ताश्रयः । वृषो नानार्थे । गिरति गिरिका, बालवर्चोऽल्पमूषिकेति दुर्गः । [गन्धमुख्यादि त्रिशाम्] ॥ १२ ॥ सरति सरटः । कृकं शिरोग्रीवं लासयति कृकलासः, कृकवाकुश्च इत्यपि(प)ाठः । प्रानेत्रूर्ध्वः शयानकश्च । आंडकोशाश्च कौचो हलाहलोश्च लेकेति वाच्यम् । मुस्यति भिनत्ति मुसली, मुस खण्डने, मुसलीति गौडः । गृहगोलिकेति सभ्यः पाठः, यद्वा परगोलीति प्रसिद्धिः । लूयते लूता । तन्त्रं तन्तुं वयति तन्त्रवायः [तन्तुवायः] । ऊर्णा नाभावस्योर्णनाभः । मर्कट इव रोहणशीलो मर्कटकः । जालिको जालकारकश्च ॥ १३ ॥ नीलयति नीलं[ल]ङ्गुः । क्रमति कि[कृ]मिः, क्रमितमिग्रमितिभ्यश्च (उ०) । कृ(पु)लकोऽपि । शतं पदानामस्याः शतपदी, कुम्भपद्यादिषु च (सू०) इति साधुः । उभे द्वे स्त्रियाम् । वृश्चति वृश्चिकः । शूकः कण्टकस्तत्प्रधानः कीटः (शूककीटः), अयमेवोयम् । आलमनर्थीयत्रास्त्याली, अर्थीतिवेऽली । द्रुणति द्रुणः, द्रुण हिंसायां, कः, द्रोण इत्येके, विषकीटोयम् ॥ १४ ॥ पा(प)रापतत्यार्य पारावतः, अगादित्वात् (ग०) वत्वम् । रवश्च । केन पवते कपोतः, कस्य वायोः पोत इवागमः, आरण्योयं, ग्राम्यस्तु गृहकपोतः, अयं रवभेद मन्यते । पत्त्रीति सामान्यं विशेषे वर्तते, यदुक्तमत्र- श्येनाह्वो विहगः पत्त्री पक्षिणो शशादनौ, माला- श्येनः पत्त्रिशशादनौ । श्यायते श्येनः । उलति नेत्राभ्यां दहत्युलूकः, ऊर्ध्वो उलनाशो निहन्ता वा । पचति पीयते वा पेचकः । घूको निशाटश्च ॥ १५ ॥ व्याजिघ्रति व्याघ्राटः । भरद्वाजापत्यं भरद्वाजोऽस्त्यस्य वा भरद्वाजकश्चाटके-

ऋक्षाच्छभल्लभल्लूका गण्डके खड्गखड्गिनौ ।
लुलायो(पो) महिषो वाहद्विषत्कासरसैरिभाः ॥ ४ ॥

स्त्रियां शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तकाः ।
सृ(शृ)गालो वञ्चकः क्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः ॥ ५ ॥

ओतुर्बिडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।
त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥

श्वावित्तु शल्यस्तल्लोम्नि शलली शललं शलम् ।
वातप्रमीर्वातमृगः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥ ७ ॥

मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।
ऐणेयमेण्याश्चर्माद्यमेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ।
समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

हिनस्ति भल्लूकः, लक्ष्ये तु (भल्लूकः), दधति कुहरभाजामत्र भल्लूकयूनामिति (उ० राम०)। ऋच्छति (ऋक्ष्णोति) ऋक्षः। अच्छ आभिमुख्येन भलति(ते) अच्छभल्लः, अच्छशब्द आभिमुख्यार्थेऽव्ययम्। भल्लयति- (ते) भल्लूकः। भल्लोऽपि। गण्डति संहन्यते गण्डकः। खडति भिनत्ति खड्गः। खड्गं शृङ्गमस्या- स्तीति खड्गी। वाध्रीणसोऽपि। लुलति पङ्के लुलायः। मह्यति महां शेते वा महिषः। महोऽपि। वाहं हयसमूहं द्वेष्टि वाहद्विषत्, द्विषोऽमित्रे (सू०) इति शतृप्रत्ययः। वाहद्विषमित्येके। चर्मार्तः कं जलमा- सरति कासारः, ईषत्सरति वा महाकायत्वात्। सीरिभिर्दन्तैर्भाति सीरिभः कुटुम्बी तस्यायं सैरिभः। रजस्वलोऽपि ॥ ४ ॥ शिनोति शिवा, शकुनावेदिनी वा, शृगालेऽपि स्त्रीलिङ्गः, बहुत्वाभावात्— शिवः कीलः शिवा क्रोष्ट्री भवेदामलकी शिवा। गां मिनोति मीनाति वा गोमायुः। मृगान् धूर्वति मृगधूर्तः। असृगालाति सृगालः, सरति सृजति वा। क्रोशति क्रोष्टा। फे- इत्यव्यक्तं रौति फेरुः फेरवश्च। जमति जम्बुकः सर्वभक्षत्वात्। फेरण्डोऽपि ॥५॥ अवत्याखुभ्य ओतुः। बिलान्— आलाति बिडालः, बिलमलो वा, बिलान्यटति पर्याप्नोति वा, बिडति भिनत्ति— आखून्वा, बिड् आलमस्याङ्गुलित्वाद्वा, बिड आक्रोश इत्यस्माद्वा। आखुभ्यो गृहं मार्ष्टि मार्जारः। वृषानाखून्दशति वृषदंशः। [illegible] गोधेयम्, भवेद्गोधायां जातो आसन्तरमित्येके। (गौधेर इ०) गोधाया ढ्रक् (सू०), आरगुदीचाम् (सू०), शुभ्रादित्वाड्ढक् (सू०) ॥ ६ ॥ श्वानं विध्यतीति श्वावित्, नहिवृतिवृषिव्यधि... (सू०) दीर्घः। शलति शल्यानि क्षिपति वा शल्यकः बिलेशयः। शलको(लो)पि। तस्य लोम्नि शलाकायाम्, शल्यानाद्या- भाविषक्तत्वात् शलली, शल गतौ। वातं प्रमिमीते (वातप्रमीः), वाताभिमुखधावनात्। कोकते गृह्णाति कवते याति वा कोकः। ईहा मृगस्येवास्य ईहामृगः, ईहां मृगयते वा। ईहां वर्द्धते— ईहावृक एवैकदेशेन वृक इत्युक्तः। आरण्यः श्वेत्येके। वृक वृक आदाने ॥ ७ ॥ मृग्यते व्याधैर्मृगः। कौ रङ्गति कुरङ्गः। वातमयते वातायुः, वानं शुष्कमयते वानायुरित्येके। ह्रियते गीतेन हरिणः। अजिनस्य योनिः। (ऐणेयं , विकारेऽवयवे वा, एण्या ढञ् (सू०)। (ऐण) विकारादौ, प्राणिरजतादिभ्योऽञ् (सू०)। ऐणेयमैणं च वाच्यलिङ्गौ ॥ ८ ॥ के दलति कदली, कन्दे लीयते कन्दली, इमन्तौ। चिनोतीति चीनः। चमति चमूरुः। प्रीयते प्रियकः। समूर्यं(र्व्य)ते समूरुः चित्रवर्णः। एते चर्मान्मुपयुक्ताः ॥ ९ ॥ अमी

तृणराजाह्वयस्तालो नालिकेरस्तु लाङ्गली ।
घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरोस्य तु ॥ १६९ ॥
फलमुद्वेगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ।
खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ॥ १७० ॥

इति वनौषधिवर्गः । ४ ।

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।
शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥
वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरः (रिः) किटिः ।
दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥
कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः ।
मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ भल्लुके ॥ ३ ॥

प्रतितिष्ठति बहुमूलत्वात्तालः । भूमिपिशाचो देश्याम् । नाडिकामलयुक्तान्पुष्पादीनीरयति नालिकेरः । लाङ्गलाकारपत्रशाखत्वाल्लाङ्गली । तत्फलं चोचम् । घुणति (घोणते) भ्रमति- अनया घोण्टा । पवते पूगः । क्रामति क्रमुकः । गुवत्यनेन संसकत्वाद्गुवाकः । खानि पृणाति खपुरः कारपत्रशाखः ॥१६९॥ अस्य पूगस्य फलमुद्गतो वेगोस्योद्वेगं संसकत्वात् । पूगादयो हि फलवृत्तयः क्लीबे, फलेलुक् (सू०), घोण्टा तु, हरीतक्यादिभ्यश्च (सू०) इति लुपा, लुपियुक्तवद्व्यक्तिवचने (सू०) इति वृक्षे फले च स्त्रियामेव । एते तालनालिकेरपूगास्त्रयो हिन्तालेन चतुर्थेन सहिताः खर्जूराद्याश्चत्वारस्तृणप्रधाना वृक्षाः । ताली आत्यन्तरम् । एवं खर्जूरी भूमिखर्जूरः । हिनोति वर्धते हिन्तालः । खर्जूरः, खर्ज व्यथने । केत्यते ज्ञायते गन्धेन केतकी । तालयति ताली ॥ १७० ॥ इति वनौषधिवर्गः । ४ ।

हिनस्ति सिंहः । मृगाणां द्वीप्यादिशशकान्तानामिन्द्रः । पञ्चास्यो विस्तृतास्यः, पचि विस्तारवचने, कर्मणि घञर्थेकविधानम् (वा०), मुखपादैर्योद्धृत्वाद्वा । हर्यक्षः कपिलाक्षः । अत एव हरिः, हरत्याकर्षति वा । कण्ठीरवो देश्याम् । शृणाति शार्दूलः । द्वौ वर्णावीयते द्वीपोस्त्यस्य वा वनियास्त्यद् द्वीपी । व्याजिघ्रन् हन्ति व्याघ्रः । चित्रकायः पञ्चशिखश्च । तरं क्षिणोति मार्गं रुणद्धि तरक्षुः- आरण्यः श्वा, तरक्ष इत्येके । वृकोपि ॥ १ ॥ वरमाहन्ति वराहः । सूयतेत्यर्थं सूकरः । घर्षति घृष्टिः । पीनत्वात्कोलः, कुल संस्त्याने । पोत्रं मुखाग्रमस्यास्तीति पोत्री । किरति क्ष्मां किरः, इगुपधेति (सू०) कः । केटति किटिः, किट गतौ । कुड घनत्वेस्मात्क्रोडः, क्रोडः कुद्दालो मुस्तादो दंष्ट्राख्यो मुखलाङ्गल इति दुर्गः ॥ २ ॥ कम्पते चलति कपिः । प्लवैर्गच्छति प्लवगः प्लवंगोपि, गमेःसुपि (वा०), खच्चडित् (वा०)इति प्लवंगः, अन्यत्रापिदृश्यते (वा०) इति डे प्लवगः, गमश्च (सू०) इति खचि प्लवंगमोपि । शाखा-संचारी मृगः (शाखामृगः) । वल्यः(ल्यः) मुखेस्य वलीमुखः । म्रियते मर्कटः कुम्भकर्णनिगीर्णत्वात् । वने रमते वनरस्तस्यायं वानरः, पक्षे नरो वा । चिकेति जानाति कीशः, कीशब्दमीष्टे वा । वने- ओ-कोस्य वनौकाः । हरिर्नानार्थे । कृष्णमुखो गोलाङ्गूलः । कापेयं चापलादिकम् ॥ ३ ॥ भल्लति(ते)

रसाल इक्षुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः ।
स्याद्वीरणं वीरतरं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ॥ १६४ ॥
अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ।
लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ॥ १६५ ॥
नलादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा अपि ।
अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रमथ कत्तृणम् ॥ १६६ ॥
पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकरौहिषम् ।
छत्रातिच्छत्रपालघ्नौ मालातृणकभूस्तृणे ॥ १६७ ॥
शष्पं बालतृणं घासो यवसं तृणमर्जुनम् ।
तृणानां संहतिस्तृण्या नल्या तु नलसंहतिः ॥ १६८ ॥

पुण्ड्रदेशजत्वात् (पुण्ड्रः), पौण्ड्रोऽपि । कान्तमुत्तममियर्ति कान्तारः, कान्ता अरका भाषा अस्य वा । आदिशब्दात्कोशकाराद्याः । आह च– इक्षुः कर्कोटको वंशः कान्तारो वेणुनिः सृतः । इक्षुरन्यः पौण्ड्रकश्च रसालः सुकुमारकः ॥ अन्यः करङ्कशालिः स्यादिक्षुयोनीक्षुवालिका । तथान्य इक्षुगन्धा स्यादिक्षुलः कोकिलाक्षकः ॥ वीरयते वीरणं वीरतरं च तृणभेदः । अस्य वीरणस्य मूलं उश्यते काम्यत इत्युशीरम् ॥ १६४ ॥ अभयं रोगहृत्त्वात् । आह च– उशीरममृणालं स्यादभयं समगन्धिकम् । रणप्रियं वीरतरं वीरं वीरणमूलिका ॥ नलं याति नलदं अपारुष्यात्, नलति वा । अत एवामृणालमहिंस्रम् । जल आशेते जलाशयं, शीतवीर्यत्वाद्वा । लाति दोषान्–ला, ला मज्जासारोऽस्य लामज्जकम् । लघुगुणेन लीयते लघुलयम् । अवली[दी]यते दाहोऽनेनावदाहम् । इष्टं कापथमस्याधोवातकृत्त्वादिष्टकापथम् । आह च– लामज्जकं सुनालं[वासं] स्यादमृणालं लयं लघु । इष्टकापथकं शीघ्रं दीर्घमूलं जलाशयम् ॥ द्वयमेवामृणालं लामज्जकमुशीरं च, तथा सेव्यं लामज्जकमुशीरं चेति । अवदाहमवदत्तमाहुस्तच्चोशीरं नलदं, यदिन्दुः– अवदत्तं रणप्रियम् । ग्रन्थकृत्तु सेव्यामृणालयोर्नलदोशीरैकार्थत्वाद् भ्रान्तः ॥ १६५ ॥ (नलादयः) तृणजातीया इत्यर्थः । तृण्यतेऽद्यते पशुभिस्तृणम् । गर्मुच्छ्यामाको तृणधान्यविशेषौ । गीर्यते गर्मुत् । श्यामं वर्णमकति श्यामाकः । प्रमुखशब्दान्नीवाराद्याः । तृणगर्मुती एकार्थे इत्येके । कौ शेते कुशः । कु(को)थति कुथः । दृणाति पारुष्याद्दर्भः, दृभ्यते वा । पूयतेऽनेन पवित्रं, समन्त्रं तु पवित्रकमिति स्मृतिः । कुत्सितं तृणं कत्तृणं, तृणे च जाताविति (सू०) कोः कत् ॥ १६६ ॥ पुरे भवं पौरम् । सुगन्धप्रयोजनं सुरभिः (सौगन्धिकम्) । ध्यायते पशुभिर्ध्यामं धूसरवर्णं वा । देवैर्जग्धमिव जग्धं त्वात् । यत्र तत्र रोहति रौहिषं, रुहेर्वृद्धिश्च (उ०) इति टिषच् । आह च– कत्तृणं शङ्खिनीर्भूरिभूतिकं रौहिषं ततम् । ध्यामकं भूमकं पौरं मुद्रकं देवजग्धकम् ॥ स्यार्थे सौगन्धिकं नीलपत्रं कत्तृणं गन्धपाषाणश्च । छत्त्राकारस्तृणविशेषश्छत्त्रा । अतिक्रान्तश्छत्त्रामतिच्छत्रः, छत्त्रातिच्छत्त्रमित्येके । पारुष्यात्पालं हन्ति पालघ्नः । मालास्थापि तृणान्यस्य मालातृणकः । भुवस्तृणं भूस्तृणः, पारस्करादित्वात् (सू०) सुट्, भूस्थयं वा । आह च– भूस्तृणो रौहिषो भूतिर्भूमिकोऽथ कुटुम्बकः । मालातृणश्च पाठ्यन्तश्छत्रातिच्छत्रकस्तथा ॥ १६७ ॥ शस्यते शष्पं, शषु हिंसायाम् । बालं नवं तृणम् । घस्यतेऽद्यते घासः । यूयते यवसं तृणजातिः । अर्ज्यतेऽर्जुनं, सर्वं च तृणमर्जुनमिति भागुरिः । (तृण्या) पाशादित्वाद्यत् (पाशादिभ्योयः) । (नल्या) प्राग्वयत् ॥ १६८ ॥ तृणराजाह्वयस्तृणद्रुममध्ये मुख्यत्वात् । तलति

कलम्ब्युपोदिका स्त्री तु मूलकं हिलमोचिका ।
वास्तुकं शाकभेदाः स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका ॥ १५८ ॥
सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहानन्ताथ सा सिता ।
गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षकः ॥ १५९ ॥
कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ।
स्याद् भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा ॥ १६० ॥
वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ।
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥ १६१ ॥
वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ।
ग्रन्थिर्ना पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ॥ १६२ ॥
नडस्तु धमनः पोटगलोऽथो काशमस्त्रियाम् ।
इक्षुगन्धा पोटगलः पुंभूम्नि तु बल्वजाः ॥ १६३ ॥

संज्ञितं मूलं मूलकः, अवयवशब्देऽप्यस्य शाकत्वं, यो त्वभयोर्भवति लभते सोऽन्यतरतो व्यपदेशमिति । हिला-द्वीर्यान्मोचयति हिलमोचिका । वसन्त्यस्मिन्गुणा वास्तुकं क्षारपत्राख्यम् । कलम्ब्यादयः पञ्चैते शाकप्रकाराः, शाकाख्यं पुष्पमूला(पत्रपुष्पा)द्येतत आरभ्य वा(पृ० ७८) यन्माला—मण्डूकपर्णी पालङ्क्या चिञ्चिका चाप्युपोदका । चाङ्गेरी हिलमोचा च कलम्बी शाकजातयः ॥ दूरं वाति दूर्व्यते या पशुभिर्दूर्वा ॥१५८॥ भृगोरियं भार्गवी । सहस्रवीर्या बहुपर्वा महाप्रभावा वा । रोहति मूले रुहा । अनन्ता दूरप्रसरणात्, नीलदूर्वेयं, यदाह—नीलदूर्वा स्मृता शष्पं शाद्वलं हरिता तथा । शतपर्वा शतवीर्या शतवल्लपसिता लता ॥ सहस्रवीर्या-नन्ता च दुर्मरा भार्गवी रुहा । गोरिव लोमान्यस्या गोलोमी । आह च— गोलोमी श्वेतदूर्वा च श्वेतगर्भा सिता लता । नीलश्वेतयोः पर्यायविपर्यासोऽन्येष्यः । श्वेतदूर्वाविशेषोऽयम् । गण्डैर्ग्रन्थिभिरल्यते गण्डाली । मत्स्याक्षितुल्यग्रन्थिः (शकुलाक्षकः) । आह च— गण्डदूर्वा तु गण्डाली तीव्रा मत्स्याक्षिकापि च । षष्टि-नाडी कलापश्च वारणी शकुलाक्षकः ॥ १५९ ॥ कुरुदेशं विन्दति कुरुविन्दः । मेघपर्यायोऽम्बुधरत्वात् । मुस्यति खण्डयति रोगान् मुस्ता, लक्ष्ये त्रिलिङ्गा । गुन्द्रान्ति रोगा अस्या गुन्द्रा । धन्वन्तरिर्भेदेनाह-मुस्तमम्बुधरो मेघो घनो राजकशेरुकः । भद्रमुस्तो वराहेन्द्रो गाङ्गेयः कुरुविन्दकः ॥ उच्चटत्युत्फलत्यु-च्चटा, चक्राङ्केयम् ॥ १६० ॥ वन्यते वंशः । त्वचि सरति त्वक्सारः, सृस्थिरे (सू०) इति घञ् । (त्वचिसारः) तत्पुरुषेकृतिबहुलम् (सू०) इति सप्तम्या अलुक् । कर्म इयर्ति कर्मारः । तृणानां ध्वजो मुख्यः । यवाभं फलमस्य यवफलः । वेणन्ति व(वि)यन्ति यानेन वेणुः । मा क्रियतेऽनेन मस्करः, मस्कर मस्करिणौ वेणुपरिव्राजकयोः(सू०) । तेजयति तेजनः । द्वयर्थे तेजनः शरो वेणुश्च ॥१६१॥ कीति चकति कीचकः, कीचेति कायति वा । ग्रन्यते ग्रन्थिः । पर्वति पर्व । पिपर्ति परुः । गुन्द्रो दर्भविशेषे रूढः, यदाहुः— दर्भाणां स्थाने शरैः प्रस्तरितव्यम् । तेजयति निशिनोति तेजनकः । शृणाति पारुष्याच्छरः । काशास्त्विषी-का च ॥१६२॥ नडयत्यर्दयति नडः, नल गन्धे । धमनोऽन्तःसुषिरत्वात्, धमिः सौत्रः, यथा धान्तो धान्तः काञ्चनस्येव राशिः । पोटेन संश्लेषेण गलति पोटगलः । आह च— नले नटो नडश्चैव स च पोटगलः स्मृतः । धमनोऽनन्तकश्चेति नडस्तु शर उच्यते ॥ काशते काशः । कोकिलाक्षपर्याय इक्षुगन्धेत्येके । द्वयर्थे पोटगलः काशो नडश्च । बल्वजे बल्वजास्तृणविशेषाः ॥ १६३ ॥ रस्यते रसालः । इष्यत इक्षुः ।

अवाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी ।
तस्यां कटंभरा राजबला भद्रपर्ण्येति च ॥ १५३ ॥

जनी जतूका जत(रज)नी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ।
संस्पर्शाथ शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ॥ १५४ ॥

कर्चूरोपि पलाशोथ कारवेल्लः कटिल्लकः ।
सुषवी चाथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ॥ १५५ ॥

कूष्माण्डकस्तु कर्कारु(रु)र्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ।
इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्तुम्ब्यलाबूरुभे समे ॥ १५६ ॥

चित्रा गवाक्षी गोतुम्बा विशाला त्विन्द्रवारुणी ।
अर्शोघ्नः सू(सु)रणः कन्दो गण्डीरस्तु समष्ठिला ॥ १५७ ॥

कर्म्या । आह च– शतपुष्पा मिसिर्घोषा पाठका माधवी शफा । अतिच्छत्रा त्ववाक्पुष्पी शताह्वा कारवी स्मृता ॥ सराते वातसंक्षोचामित्रतेतेऽङ्गमनया सरणा, सरणी तु युक्तः पाठः । कटं बिभर्ति कटंभरा । राजरूपा मुख्या बला बलकृत् । आह च– प्रसारणी तु प्रसरा सरणी सारणी च सा । चारुपर्णी राजबला भद्रपर्णी प्रसारिका ॥ १५३ ॥ जायतेस्या जन्तुर्जनी । जतु करोति जतूका । संगतः स्पर्शोस्याः संस्पर्शा । आह च– जतुकारा तु जतुकृज्जतुकारी जनी स्मृता । जननी चैव संकर्षा जतूका चक्रवर्तिनी ॥ शटति शटी, षड्ग्रन्थिकैकदेशः षटीति मूर्धन्यादिमाहुः ॥ १५४ ॥ पलाशाः सन्त्यस्य पलाशः । आह च– शटी षटी पलाशश्च ज्ञेया पृथुपलाशिका । सुगन्धमूला गन्धाली षड्ग्रन्था सुव्रता वधूः ॥ कस्य चित्संमता षटीति कर्चूरस्य षटीत्वं षट्याः कर्चूरत्वं चेतीह कर्चूरोपादानम् ॥ द्व्यर्थे चाह षटी गन्धपलाशः कर्चूर इति । कारेण वेल्लति कारवेल्लः । कटिं लाति कटिल्लः, कटस्यावृणोति वा । सुष्ठु सूयते सुषवी । कोलति संस्त्यायते कुलकं, कुत्सितं कल्प्यत आस्वाद्यते वा । पटति सरलत्वात्पटोलः । तिक्तो रसेन । पटुर्देहपटुत्व-कृत्, लक्ष्मानुसर इत्येके । आह च– पटोलः कुलकस्तिक्तः पटुकः कर्कशच्छदी । राजीफलः पाण्डुफलो राजिमानमृताफला ॥ १५५ ॥ कोष्णमन्नानिति, कुत्सितोष्माण्डेषु बीजेष्वस्य वा पित्तकारित्वात्कूष्माण्डः, कुष्यते करोति तृप्तिं वा । कर्कन्धारावविधर्ति– अर्शोपत्तिशोधनः सरणत्वात्कर्कारुः । आ– ईर्यते– एर्वारुः कटुचिर्भटी, उर्वारुकमिव बन्धनादिति श्रुतेः–उर्वारुकं स्वादुचिर्भटीमाहुः । ह्रस्वः कर्कः कर्कटी, ग्रामटीष-गौरादिकप्रत्ययः । इष्यत इक्ष्वाकुः, क्षत्रियपनत्वाद्वा । कटुका तुम्बी, तुबि अर्दने । आह च–कटुकालाबुनी तुम्बी ल(तु)म्बा पिण्डफला तथा । इक्ष्वाकुः क्षत्रियवनस्तिक्तबीजो महाफलः ॥ न लम्बतेलाबूः, लम्बनम्, न लाति वान्तर्जलम् । समे इति वोत्वेनापि । अमरेन्द्रावाः– अलाबूस्तुम्बकः पोपो जलजलबूरलाम्बुनी । महालम्बुमहातुम्बीति– ॥१५६॥ गोतुम्बा, अपभ्रंशोयं गवाक्षीत्वात् । आह च– ऐन्द्रीन्द्रवारुणी शाक्षा इन्द्रैर्वा-रुपादनी । गवादनी क्षुद्रफला वृषभाक्षी गवाक्ष्यपि ॥ द्व्यर्थे चित्रा विशाला द्रवन्ती चेति विशालावाचित्रा-त्वाद् भ्रान्तो ग्रन्थकृत् । गवाक्षीविशेषो वा विशालेति न दोषः । विशाला महाफलत्वात् । इन्द्रवदर्केणो-तीन्द्रवारुणी । आह च– अन्येन्द्रवारुणी प्रोक्ता विशाला तु महाफला । आत्मरक्षा चित्रफला त्रपुसी त्रपुषी च सा ॥ सूर्यते प्रेर्यते सूरणः । कन्द्यतेन्विष्यते कन्दो मूलविशेषः । गण्डीन् ग्रन्थीनीरयति गण्डीरः, पुंसि । सम्यगस्थीनि लाति समष्ठिला सान्द्रत्वात्, समष्ठिल नाम शाकं, यन्माला–गण्डीरो ना समष्ठिला ॥१५७॥ फलम्बमस्याः कलम्बी । अपगतोदका जागरूकत्वात्, अपोदकामत्स्यकाक्षीति धन्वन्तरिः ।

११

पद्माट उरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ।
लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरितेऽथ महौषधम् ॥ १४८ ॥
लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ।
पुनर्नवा तु शोथघ्नी वितुन्नं सुनिषण्णकम् ॥ १४९ ॥
स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि ।
पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ॥ १५० ॥
वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ।
विष्वक्सेनप्रिया घृ(गृ)ष्टिर्वाराही बदरेत्यपि ॥ १५१ ॥
मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्काकमाची तु वायसी ।
शतपुष्पा सितच्छत्रातिच्छत्रा मधुरा मिसिः ॥ १५२ ॥

न्मेषवदक्षीण्यस्योरणाक्षः । इन्द्रुाद्याः– चक्रमर्दः स्मृतश्चक्री प्रपुन्नाडश्च नामतः । एकरेतो दद्रुहरो मेषाक्षे-डगजश्च सः ॥ पिपर्ति धातून्पलाण्डुः । तत्र हरिते तत्र नीले पलाण्डौ लतार्कौ लवतर्काख्यः । दुष्टे द्रुमो-पवित्रत्वात् । धन्वन्तरिस्त्वभेदेनाह– पलाण्डुर्म(र्य)वनेष्टश्च मुकुन्दो मुखदूषकः । हरितोन्य पलाण्डुस्तु लतार्कौ दुर्द्रुमश्च सः ॥ १४८ ॥ सुश्रुतस्त्वाह– लशुनो दीर्घपत्रश्च पिच्छगन्धो महौषधम् । फरणश्च पलाण्डुश्च लवतर्कोपराजितः ॥ गृञ्जनं यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः । महौषधं सर्वरोगाज्जित्वात् । लशति छिनत्ति रोगान्– लशुनम् । गृञ्जति कुत्सितं शब्द्यते गृञ्जनः । न रिष्यत्यरिष्टः । रसोनः पञ्चरस-त्वात् । आह च– रसोनो लशुनोरिष्टो म्लेच्छकन्दो महौषधम् । महाकन्दो रसाख्योन्यो गृञ्जनो दीर्घ-पत्रकः । महौषधगृञ्जनादीनामाकृतिभेदेपि रसाद्यैक्यादभेदं मन्यते । पुनर्नवेव (छिन्नापि) विशाख-त्वात् । आह च– पुनर्नवो विशाखश्च कठिल्लः स शिलाटकः । वृश्चीवः क्षुद्रवर्षाभूर्दीर्घपत्रः कठिल्लकः ॥ वितुद्यते वितुन्नकं नाम शाकम् । सुष्ठु निषीदन्त्यमस्मिन्गुणाः सुनिषण्णकम् । आह च– शितिचा[सा]-रः सूतपुत्रस्तुल्या(?) च सुनिषण्णकः। शाकभेदोयम्, यदाह– पाठा शुण्ठी शटी शाकं वास्तुकं सुनिषण्णकम् । विषन्वघ्नमयक्लीसि वर्चोभेदि तु वास्तुकम् ॥ १४९ ॥ शीतलवातक इत्येका संज्ञा, यद्धन्वन्तरिः शणपर्णी शीतलवातक इत्याह । द्वयर्थेऽपराजिता शीतलवातको गिरिकर्णिका च । कटत्यावृणोति कटभी । पण्या स्तुत्या । ज्योतिष्मती– अग्न्याभत्वात् । लता दूरप्रसरात् । आह च– ज्योतिष्मती तु कटभी स्या-त्सुवर्णलतेति च । ज्योतिष्का चाग्निभासा च लवणोत्का च दुर्दिना ॥ त्र्यर्थे लता प्रियङ्गुज्योतिष्मती सारिवा च । द्वयर्थे पारावतपदी काकजङ्घा ज्योतिष्मती च ॥ १५० ॥ वर्षासु भवं वार्षिकम् । आह च– त्रायमाणा कृतत्राणा त्रायन्ती त्रायमाणिका । बलभद्रा बलदेवा वार्षिकं गिरिसानुजम् ॥ वाराही वराहक्रान्ता, (अत एव विष्णुवल्लभा) । अत एव घृ[गृ]ष्टिर्घं[वं]र्षणात् । त्र्यर्थे बदरा सुवर्चला अश्वगन्धा वाराही च ॥ १५१ ॥ मर्वति संपृच्यते मार्कवः । भृङ्गवद्राजते रञ्जयति कृष्णी-करोति च भृङ्गराजः, भृङ्गरजोपि । आह च– भृङ्गराजो भृङ्गरजो मार्कवो भृङ्ग एव च । अङ्गारकस्त्वेकरजो भृङ्गारः केशरञ्जनः ॥ काकवन्मचति(ते) वर्णेन संपृच्यते काकमाची । अत एव वायसी, काचमाच्यपि । आह च– काचमाची ध्वाङ्क्षमाची काकशाह्वा च वायसी । शतपुष्पा बहु-पुष्पा । सितच्छत्राभा ॥ १५२ ॥ अर्वाञ्च्यधोमुखानि पुष्पाण्यस्या अवाक्पुष्पी ॥ कारोरियं कारवी

नमस्कारी गण्डकाली समा(म)ङ्गा खदिरेत्यपि ।
जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ॥ १४२ ॥
कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्गह्रस्वाङ्गजीवकाः ।
किराततिक्तो भूनिम्बोनार्यतिक्तोथ सप्तला ॥ १४३ ॥
विमला शा[सा]तला भूरिफेना चर्मकसेत्यपि ।
वायसोली स्वादुरसा का(व)यस्याथ मकूलकः ॥ १४४ ॥
निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि ।
अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यमा[ना]निका ॥ १४५ ॥
मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ।
अव्यथातिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ॥ १४६ ॥
काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि ।
प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः ॥ १४७ ॥

आह च— जीवन्ती जीवनीया च जीवा जीवनवर्धनी । मङ्गल्यनामधेया च शाकश्रेष्ठा पयस्करी ॥१४२॥ कूर्चः शीर्षेस्य कूर्चशीर्षः । शृङ्गः शृङ्गाभः । जीवयति जीवकः, जीवतीति वा दीर्घायुष्ट्वात् । आह च— जीवकः शृङ्गकः सर्जो दीर्घायुः कूर्चशीर्षकः । ह्रस्वाङ्गो मधुरः स्वादुः प्राणदश्चिरजीव्यपि ॥ किरातदेशे भवस्तिक्तः किराततिक्तः । अनार्यः किरातः । आह च— किराततिक्तको हैमकाण्डतिक्तः किरातकः । भूनिम्बोनार्यतिक्तश्च कैरातो रामसेनकः ॥ १४३ ॥ सपति समवैति सप्तला । शा[सा]तं सुखं लाति शा[सा]तला । भूरयः फेनाभा बिन्दवोस्या भूरिफेना । चर्मे कसति घर्षते चर्मकसा, चर्मकषेत्येके । आह च— शातला सप्तला सारा विन्दुला विमलामला । बहुफेना चर्मकसा फेना दीप्ता समालिका ॥ वायसवदवलीयते वायसोली काकोल्याख्या । काये तिष्ठति कायस्था, कि प्राने । आह च— काकोली मधुरा शुक्ला क्षीरा(री) ध्वाङ्क्षो(लि)का मता । कायस्था स्वादुमांसी च वायसोली च कारि(लि) का॥ ऽयंर्थ स्वादुरसा पृश्निका शतावरी काकोली(ली) च ॥ १४४ ॥ मङ्कते विप्रत्वान्मकूलकः । नियतः कुम्भो निकुम्भः । दन्तामा दाम्यन्त्यनया दोषा वा दन्ती । आह च— दन्ती शीघ्रा निकुम्भा स्यादुपचित्रा मकूलकः । तथोदुम्बरपर्णी च विशल्या च घुणप्रिया ॥ द्रवर्थे प्रत्यक्श्रेणी द्रवन्ती दन्ती च । अजमोदो गन्धोस्या अजमोदा । ब्रह्मदर्भाभा । यच्छत्यमिमान्यं यमानी, पूर्वोक्तापीह शास्त्वात् पुनरुक्ता, यवानीं मत्वा वा ग्रन्थकृद् भ्रान्तः । आह च— यवानी दीप्यको दीप्यो यवसाह्वयनामकः । यमानिकोग्रगन्धा च दीपनीया च दीपनं ॥ पूर्वोक्ता हि खराश्वेवाजमोदा ब्रह्मकुशा च । तथा चेन्द्वाद्याः— अजमोदा ब्रह्मकुशा खराश्वा लोचमर्कटः । वल्लीमोदा वस्तमोदा सैव हस्तिमयूरकः ॥ १४५ ॥ पुष्करमूले त्रीणि नामानि । पद्मपत्रमिति ग्रन्थकृद् भ्रान्तः, पद्मवर्णेति लिपिभ्रान्त्या पद्मपर्णमिति पुठवान्, यदाह— मूलं पुष्करमूलं च पौष्करं पुष्कराह्वयम् । काश्मीरं पुष्करजटा वीरं तत्पद्मवर्णकम् ॥ अत्यर्थं चरति— अतिचरा । पद्माभा । चरति चारटी । आह च— पद्मचारिण्यातिचरा पद्मा पद्मावतीति च । चारटी गन्धमूला च लक्ष्मीः श्रेष्ठा सुपुष्पका ॥ ऽर्थे— अव्यथा हरीतकी महाश्रमणी पद्मचारिणी च ॥ १४६ ॥ काम्पिल्लदेशे भवः काम्पिल्यः । चन्द्रोह्लादनात्क्षैप्याद्वा । (रोचनी) रेचनीति सम्यः पाठः, यदाह— काम्पिल्यकोथ रक्ताङ्गो रेचनी रेचकस्तथा । रञ्जनो लोहिताङ्गश्च कर्कशो रक्तचूर्णकः ॥ आहेन्दुः— कर्कशः स्यः करंजः[भः] स्यात्तु काम्पिल्यः पटोलकः । प्रपुनाति प्रपुणति वा प्रपुन्नाडः । एडवन्मेषाण्डवद् भज्यते चम्यत एडगजः ॥ चक्राणि दद्रुमण्डलानि मृद्नाति चक्रमर्दकः ॥ १४७ ॥ पद्मवदटति पद्माटः । उरणच-

ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।
शाकाख्यं पत्रपुष्पादि तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ॥ १३६ ॥

विशल्याग्निशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्प्यपि ।
स्यादृक्षगन्धा छगलाण्ड्या(न्त्या)वेगी वृद्धदारकः ॥ १३७ ॥

जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ।
पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ॥ १३८ ॥

हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।
तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ॥ १३९ ॥

बर्बरा कबरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका ।
एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ॥ १४० ॥

चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाम्ललोणिका ।
सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ॥ १४१ ॥

शाकास्तण्डुलीयकः, लघुतण्डुलाभबीजो वा । अल्पं मृष(ष्ट)त्यल्पमारिषः । आह च– तण्डुलीयक उदिष्टः ख[च]टाला (?) तण्डुलेरकः । भण्डीरस्तण्डुलीबीजो मेघनादो घनस्वनः ॥१३६॥ लाङ्गलिकीयं पूर्वोक्तापि शाकत्वादिहोपात्ता । ऋक्षवद्गन्धयति ऋक्षगन्धा, ऋष्यगन्धा वृक्षगन्धेति च पाठभेदः । छगलस्येवाण्डान्यस्थीन्यस्याश्छगलाण्डी । आवेगी वृक्षत्वात्, उद्वेजको वा । वृद्धं वृद्धत्वं दारयति वृद्धदारकः, वृद्धं दारकीकुरुते वा । जुङ्गाति वृङ्क्ते दोषाञ्जुङ्गः, जुगि वर्जने । आह च– वृद्धदारक आवेगी जुङ्गको जीर्णबालकः । अन्तःकोटर(र)पुष्पा स्यादजाङ्गी छगलाण्ड्यपि ॥ ऽयर्थे वृक्षगन्धा वृद्धदारकः पिण्डालुकं विदारी च ॥ १३७ ॥ ब्राह्मी पावनीत्वात् । मत्स्याक्षी मत्स्यपुष्पा । वयस्था वयसः स्थैर्यकृत् । ऽयर्थे सोमवल्ली वाकुची गुडूची ब्राह्मी च । हिमावती हिमजातत्वात् । आह च– क्षीरिणी काञ्चनक्षीरी पटुपर्णी च कर्णिनी । तिक्तदुग्धा हैमवती हेमदुग्धा हिमावती ॥ स्वर्णक्षीरी स्वर्णवती सुवर्णक्षीरिकापि च । ऽयर्थे हैमवती हिमावती हरीतकी श्वेतवचा च ॥ १३८ ॥ हयपुच्छाकृतिः । कम्बोजदेशे भवा काम्बोजी । महासहेति मुद्गपर्ण्याः सहाया भिन्नेयम् । आह च– माषपर्णी तु काम्बोजी कृष्णवृन्ता महासहा । आर्द्रमाषा सिंहवृन्ता माष[मांस]माषाश्वपुच्छिका ॥ तुण्डिकेरी– ओष्ठोपमफलत्वात् । बिम्बमिव बिम्बिका । आह च– बिम्बी रक्तफला तुण्डी तुण्डिकेरफला च सा । ओष्ठोपमफला गोह्वा (?) पीलुपर्णी च तुण्डिका ॥ ऽयर्थे तुण्डिकेरी बिम्बी कर्पासी च ॥ १३९ ॥ शाकोयम्, बर्बरा कुटिलह्रस्वकेशाभा, अत एव कबरी । आह च– अजगन्धा खरपुष्पा बस्तगन्धाजगन्धिका । कबरी बर्बरागन्धा तुङ्गी पीतमयूरकः ॥ रस्यते रास्ना । आह च– रास्ना युक्तरसा रस्या श्रेयसी रसनी रसा । सुगन्धमूला विरसा सैव युक्तफला मता ॥ ऽयर्थे सुवहा रास्ना शेफालिका नाकुली च ॥ १४० ॥ चङ्गं दन्तपटुत्वमीरयति चाङ्गेरी । चुक्रपदे व्ययतेस्याश्चुक्रिका । अम्बे तिष्ठत्यम्बष्ठा । अम्लेव लुनात्यम्ललोणिका, अपभ्रष्टेयम् । आह च– क्षुद्राम्लीका तु चाङ्गेरी लोणिका चाम्ललोणिका । ऽयर्थे– अम्बष्ठा पाठा मोचिका चाङ्गेरी च, तथा चुक्रिकाम्लिका चाङ्गेरी भण्डाकी च । आह च– अम्लोऽम्लवेतसो भीमो रसाम्लोऽम्लितवेतसः । रक्तसारो वेतसाम्लः शतवेधी च वेधकः ॥ ऽयर्थे चुक्रो वृक्षाम्लोऽम्लवेतसश्चुक्रश्च, तथा सहस्रवेधी– अम्लवेतसो हिङ्गुलता कस्तूरी च ॥ १४१ ॥ नमस्कारी अञ्जलिरूपपत्रत्वात् । गण्डेषु ग्रन्थिषु कृष्णा गण्डकाली । समान्यङ्गान्यस्याः समाङ्गा । खदिरा कृष्णसूक्ष्मपत्रत्वात् । आह च– रक्तपादी शमीपत्रा समङ्गाञ्जलिकारिका । नमस्कारी गण्डकाली समङ्गा खदिरकेत्यपि ॥ जीवन्त्यनया जीवनी ।

शुक्तिः शंखः खुरः कोलदलं नखमथाढकी ।
काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृतालकसुराष्ट्रजे ॥ १३१ ॥
कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ।
प्लवगोपुरगोनर्दकैवर्तीमुस्तकानि च ॥ १३२ ॥
ग्रन्थिपर्णं शुकबर्हं पुष्पं स्थौणेयकुक्कुरे ।
मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ॥ १३३ ॥
समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि ।
तपस्विनी जटा मांसी जटिला लोमशामिषी ॥ १३४ ॥
त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ।
कर्चूरको द्राविडकः काल्य(ल्प)को वेधमुख्यकः ॥ १३५ ॥

नोगहनुः संहः ॥ आढकीसंज्ञा धानाख्या तुवरीत्वात्, तुवरो हि कषायो रसः । कषति काक्षी । प्रशस्ता मृद् मृत्स्ना, सस्नौ प्रशंसायाम् (सू०) । म्रियतेनेन हेम मृतालकम् । सुराष्ट्रदेशे जातम् । आह च– सौराष्ट्री च मृतासङ्गः काक्षी कामी सुराष्ट्रजा । आजिता तुवरी स्तुत्या मृत्स्ना मृत्या(त्सा) मृतालकम् ॥ १३१ ॥ कुटन्ती नटति, कुटन्नटापि । दशपुरे भवं दाशपुरं, दाशान्पिपर्ति वा, कैवर्तीमुस्तत्वात् । वने जातं वानेयं, नद्यादिभ्योढक् (सू०) । प्लवते लघुत्वात्प्लवः । गाः पिपर्ति गोपुरम् । अत एव गोनर्दम् । आह च– परिपेलवं प्लवं वन्यं गोपुरं स्यात्कुटन्नटम् । सितपुष्पं दाशपुरं गोनर्दं जीर्णबुध्नकम् ॥ १३२ ॥ ग्रन्थिप्रधानानि पर्णान्यस्य ग्रन्थिपर्णं, ग्रन्थीन्वा पिपर्ति ग्रन्थिमत्त्वात् । शुकस्येव बर्हाणि पर्णान्यस्य शुकबर्हं, शुकं बर्हमिति पदैकदेशत्वाद्वा द्वे संज्ञे । पुष्प्यति पुष्पं विकचास्यम् । स्थूणाया इदं रूपेण स्थौणेयम् । कुक्कुरं श्वाकृति । आह च– स्थौणेयकं बर्हिचूडं शुकपुच्छं शुकच्छदम् । विकचं शुकबर्हं च हरितं शीर्णलोमकम् ॥ मरुन्माले मारुतस्रगाख्ये द्वे संज्ञे एते, अयं तु तुशब्दादेकां मन्यते, मरुत्साहिता माला वा । पिशुना गन्धसूचनात् । स्पृशति गन्धैः स्पृक्का । देवी देवपुत्रीत्वात् ॥ १३३ ॥ वधूराश्लाघ्यत्वात् । कोटिभिर्वर्षति मधु कोटिवर्षा । लङ्कासूप्यते लङ्कोपी, समुद्रान्तत्वात् । इन्दुकाथाः– स्पृक्का माला पङ्कमुष्टिर्नीला देवी लतागुरुः । देवपुत्री च लङ्कोपी शीता पङ्कजमुष्टिका ॥ स्रग्मारुता कोटिवर्षा निर्माल्याशावधूः स्मृता । धन्वन्तरिश्च– स्पृक्का स्रग्ब्राह्मणी देवी लता लङ्कोपिकेत्यपि । पङ्कमुष्टिर्देवपुत्री निर्माल्या पिशुना वधूः । स्यर्थे समुद्रान्ता कर्पासी यवासकः स्पृक्का च । जटाः सन्त्यस्या जटा । अत एव तपस्विनी । समांसत्वान्मांसी । अत एवामिषी । गन्धमांसी चेयम्, यदाह– मांसी कृष्णजटा हिंस्रा नलदा जटिलामिषी । जटा च पिशिता मेषी क्रव्यादा च तपस्विनी ॥ द्वितीया गन्धमांस्यन्या भूतकेशी जटा स्मृता । पिशाची पूतना केशी भूतकेशी च लोमशा ॥ १३४ ॥ त्वग्वृक्षशकलत्वात् । पत्राकृति पत्रम् । उत्कटं चमत्कारात् । भृङ्गं कार्ष्ण्यतैक्ष्ण्याभ्याम् । चोचेमभिचोदकम् । वरमङ्गं त्वग्रूपमस्य वराङ्गकम् । आह च– त्वचं वराङ्गं भृङ्गं त्वक् चोचं शकलमुत्कटम् । कृन्तति त्वग्दोषं कर्चूरः, हरिद्राभः । द्रावयति द्राविडः । कल्यकारी काल्यः । आह च– कर्चूरको गन्धमूलो द्राविडः काल्य एव च । वेधमुख्यो दुर्लभश्च कस्य वित्तमता शटी ॥ १३५ ॥ ओषं धयत्योषधी फलपाकान्ता जातिः । सैवौषधं रोगहृत् । सर्वामिति क्षौद्रघृततैलाद्यमप्यौषधं, ओषधेरजातौ (सू०) इत्यण् । तद्विशेषाच्छाकादीनाह । शक्यतेनेन भोक्तुं स्यति देहं वा शाकम् । पत्रं निम्बादेः, पुष्पं कोविदारादेः । आदिशब्दात्फलं वार्ताक्यादेः, मूलं मूलकविशादेः, कन्दः सूरणादेः, अङ्कुरो वंशादेः । आह च– मूलपत्रकरीराग्रफलकाण्डविरूढकाः । त्वक्पुष्पं कवकं चेति शाकं दशविधं स्मृतम् ॥ विरूढकं तालास्थिमज्जेति गौडः, वयं तु क्षेत्रोप्तृ(द्र)तस्य फलमूलादेः सेकाम्भवोद्भिन्नानङ्कुरान्विरूढान्मन्यामहे । कवकं छत्रिका । शाकविशेषानाह । ताम्यति

अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातुकी धातुपुष्पिका ।
पृथ्वीका चन्द्रबालैला निष्कुटिर्बहुलाथ सा ॥ १२५ ॥
सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः ।
व्याधिः कुष्ठं पारिभ(भा)व्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् ॥ १२६ ॥
शंखिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्यथ वितुन्नकः ।
झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ॥ १२७ ॥
प्रपौण्डरीकं पुण्डर्यमथ तुन्नः कुबेरकः ।
तुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ राक्षसी ॥ १२८ ॥
चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पु(ष्प)त्रगणहासकाः ।
व्यालायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ॥ १२९ ॥
सु(शु)षिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।
धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्हट्टविलासिनी ॥ १३० ॥

पृथ्वीका हिङ्गुपत्रिकोपकुञ्चिका सूक्ष्मैला चेत्याहुः । द्व्यर्थे तु त्रिपुटा त्रिवृत्सूक्ष्मैला चेति लक्ष्याक्षप्रेस विनिश्चयः ॥ १२५ ॥ सा– एला सूक्ष्मा, उपकुञ्चत्युपकुञ्चिका । तुत्था चाल्पत्वात् । कुरति शब्दायते कोरङ्गी । त्रिपुटा त्र्यश्रिः । त्रुट्यति त्रुटिः, सूक्ष्मत्वाद्वा । आह च– सूक्ष्मैला द्राविड[वि]डो तुत्था कोरङ्गी बहुला त्रुटिः । एला कपोतवर्णा च चन्द्रबाला च निष्कुटिः ॥ द्व्यर्थे त्रिपुटा त्रिवृत्सूक्ष्मैला च । व्याधिपर्यायं कुष्ठत्वात् । कौ तिष्ठति कुष्ठम्, अम्बाम्बगोभूमीति (सू०) षत्वं, कुष्णाति रोगान्वा । पारिषु तोयाशयेषु भवति पारिभव्यं, भव्यगेयेति (सू०) साधुः । वाप्यां भवं वाप्यम्, व्याप्यमित्येके । पाकलं व्याधित्वात्, पाकं लाति वा । उत्पलं दाहहरत्वादुत्पलपुष्पत्वाद्वा । आह च– कुष्ठो रोगो गदो व्याधिरुत्पलं पाकलं रुजा । वाप्यं वानीरजं रामं कौवारं पारिभव्यकम् ॥१२६॥ शंखिनी शौक्ल्यात् । चोरपुष्पी धनहरीत्वात्, रात्रौ विकाशाद्वा । केशाः सन्त्यस्याः केशिनी । चन्द्रनन्दनोत– चण्डा धनहरी चौरी चोरपुष्पा च तस्करी । तथा निशाचरी च स्यात्केशिनी ग्रन्थिकेत्यपि ॥ वितुद्यते वितुन्नकः । झटः संघातोऽस्या झटा । आमला– आमलकीत्वात् । अज्झटाश्चर्यदारिसंघाता, अद् आश्चर्येऽद्भुतवत् । ताडयति मलांस्ताडी(ली) । आमलकीत्वाच्छिवा । ताम्यति तामलकी । आह च– तामलक्युत्तमा ताली तमलं(कं) तु पुलाङ्गिनी । वितुन्नकस्त्वज्झटा च झटा चामलकीति च ॥ १२७ ॥ प्रकर्षेण पुण्डरीकस्येवं दाहहरत्वात्प्रपौण्डरीकम् । अस्यैकदेशानुकाराल्लोके पुण्डर्यम् । आह च– प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं पौण्डर्यं पुण्डरीयकम् । स्थलपद्ममिति गौडाः । तुद्यते तुन्नः । कुबेरः कुत्सितदेहः । अत एव तुणिस्त्वाबे कुणि पेठुः । कच्छय(च्य)ते कच्छः । आह च– तुणिस्तुन्नक आपीतस्तुणिकः कच्छकस्तथा । कुबेरकः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ नन्दकः ॥ अश्वत्थाकारोऽयम् ॥ १२८ ॥ रक्ष्यतेऽस्या राक्षसी । क्षियति बलस्यास्य गन्धः क्षेमकः । दुष्पुत्रश्चोरकत्वात् । गणं हासयति गणहासकः कोहनत्वात् । आह च– चोरकः शङ्कितश्चण्डा दुष्पुत्रः क्षेमको रिपुः । गणहासः कोहनकः कितवः फलको(चो)रकः ॥ गन्धद्रव्यं चैतत् । व्यालायुधं नखत्वात् । चक्रमेलं धूपद्रव्यैः करोति चक्रकारकम् ॥ १२९ ॥ नखीयं, विद्रुमलताभा । कपोताङ्घ्रिर्नलिकात्वात् । नटति वायुना नर्तकीत्वान्नटी । धमनी शौषिर्यात् । अञ्जनाभकेशा (अञ्जनकेशी) । आह च– नलिका विद्रुमलता कपोतचरणा नली । शुषिरा धमनी शून्या निर्मध्या नर्तकी नटी ॥ हन्ति हनुस्तीक्ष्णाग्रत्वात् । हट्टे विलसति हट्टविलासिनी वेश्येव वा ॥ १३० ॥ शुक्त्याकृतिः । अत एव शंखः । खुरति विलिखति खुरः, प्राणिशफत्वाद्वा । कोलदलं बदरीपत्राख्ययेन्नुनोक्तम् । न खनति नखम् । आह च– नखः कररुहः शिल्पी करजोऽथ खुरः शफः । शुक्तिः शंखः ख[च]रः कोशी[ली] हनु-

स्यात्लाङ्गलिक्यग्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका ।
गोधापदी तु सुवहा मुसली तालमूलिका ॥ ११९ ॥
अजशृङ्गी विषाणी स्याद् गोजिह्वादार्विके समे ।
ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यप्यथ द्विजा ॥ १२० ॥
हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।
एला-ल-वालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ १२१ ॥
वालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरू ।
वालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ॥ १२२ ॥
कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ।
शैलेयं तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ॥ १२३ ॥
गन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ।
महेरणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च ॥ १२४ ॥

आह च– काकनासा ध्वाङ्क्षनासा काकतुण्डफला च सा । गोधाया इव पदान्यस्या गोधापदी, कुम्भपद्यादिः (सू०) । हंसपदी च । मुष्णा(स्य)ति खण्डयति दोषान्मुसली । द्वयर्थे तालपत्री मुसली मिश्रेया च ॥ ११९ ॥ अजस्येव शृङ्गाण्यस्या अजशृङ्गी, कर्कटशृङ्गीत्यर्थः । विषाणी शृङ्गीत्वात् । आह च– शृङ्गी कर्कटशृङ्गी च कुरङ्गी कर्कटाह्वया । कुलीरशृङ्गी वक्रा च महाप्येषा नताङ्ग्यपि ॥ गोजिह्वाभपत्त्रा । दारयति रोगान् दार्वी, ओषधिविशेषः । नागवल्ली फणिलता पातालानीतत्वात् । द्विर्जायते द्विजा ॥ १२० ॥ हरति हरेणुः । रेणुका भस्मयोगात् । कुन्त्या दुर्वाससा दत्ता कौन्ती । भस्मना धूल्या गन्धयति भस्मगन्धिनी । आह च– रेणुका राजपुत्री च नान्दिनी कपिला द्विजा । भस्मगर्भा पाण्डुफला भस्मगन्धा हरेणुका ॥ गन्धद्रव्यं चैतत् । एला-ल-वद्वलति– एला-ल-वालुकम् । हरि पिङ्गं वालुकं हरिवालुकम् । त्र्यर्थे सुरभिः सल्लकी मुरा– एलावालुका च ॥ १२१ ॥ पाल्यंते पालङ्क्या । मुखात्कुन्द इव मुकुन्दः, मुचति रसं वा । कुन्याति कुन्दुरुः । आह च– कुन्दुरुः स्यात्कुन्दुरुकः कुन्दवासो वि४[द्]-ङ्क्ष्यापि । मुकुन्दस्तीक्ष्णगन्धश्च पालिन्दो(लङ्क्यो)भीषणो बली ॥ वलते वालम् । जिहेति च ह्रीवेरम् । बर्हते वर्धते बर्हिष्ठम् । उदीचीभवमुदीच्यम् । केशपर्यायं वालत्वात् । अम्बुनाम तृष्णघ्नत्वात् । आह च– वालकं वारि तोयं च ह्रीवेरं जलमम्बु च । केशं वज्रमुदीच्यं च पिङ्गमावपनं कचम् ॥ १२२ ॥ कालमनुसरति शीतोष्णाभ्यां कालानुसार्यम् । वृद्धं कालस्थायि । अश्मनः पुष्पं, अश्मानं पुष्णाति वा, तदूर्ध्वजत्वात् । शीतत्वेन शिवं शीतशिवम् । द्वयर्थे शीतशिवं सैन्धवं मिश्रेया चेत्याहुः । तानि तु शैलेयं, शिलायां भवं शैलेयम् । आह च– शैलेयं पलितं वृद्धं जीर्णं कालानुसार्यकम् । स्थविरं च शिलादद्रु शिलापुष्पं शिलाभवम् ॥ दैत्या मुराख्यदैत्यनामत्वात् । (मुग) मुर संवेष्टने । आह च– मुरा गन्धवती दैत्या गन्धाढ्या गन्धमालिनी । सुरभिः श्वेतगन्धा च कुटी गन्धकुटी स्मृता ॥ १२३ ॥ गजैर्भक्ष्यते गजभक्ष्या । सुष्ठु वहति स्रवति सुवहा, सुस्रवेति वैद्याः । महदीरणमस्या महेरणा । शल्कृत्य लक्ष्यते स्वाद्यते गजैः सल्लकी [शल्लकी] । ह्लादोस्त्यस्या ह्लादिनी । आह च– सल्लकी शल्लकी ह्लादा सुरभिः सुस्रवा रसा । अश्वमूत्री कुन्दुरुकी गजभक्ष्या महेरणा ॥ १२४ ॥ अग्नेर्ज्वालेव रक्ता, मद्यपावनत्वाद्वा । सुभिक्षा सुलभा । धातुरक्ता धातुकी, धातुपुष्पीत्वात् । आह च– धातुकी ताम्रपुष्पी च कुञ्जरा मद्यपावनी । पर्वतीया सुभिक्षा च वह्निपुष्पा च शब्दिता ॥ पृथ्वीका बहुफला पत्त्रैलात्वाद्वा । एवं बहुला । चन्द्रस्य कर्पूरस्य बाला पुत्रीव चमत्कारात् । एलयति मुखदौर्गन्ध्यमित्येला । निष्क्रान्ता कुटेः कोशान्निष्कुटिः । आह च– पत्त्रैला बृहदेला च त्रिदिवा त्रिदिवोद्भवा । स्थूलैला त्वक्सुगन्धा च पृथ्वीका चन्द्रकन्यका ॥ त्रिपुटे(टी)तन्दुः । त्र्यर्थे

घोण्टयमृष्टिः सिरिलक्ष्म्यौ पृथ्वेरप्याख्या प्रमे ।
कदली वारणवुसा रम्भा मोचांशुमत्फला ॥ ११३ ॥
काष्ठीला मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ।
वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ॥ ११४ ॥
नाकुली सुरसा नाग(रास्ना)सुगन्धा गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा भुजंगाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ॥ ११५ ॥
विदारिगन्धांशुमती शा(सा)लपर्णी स्थिरा ध्रुवा ।
तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कर्पासी बदरेति च ॥ ११६ ॥
भारद्वाजी तु सा वन्या शृङ्गी तु वृ-ऋ-षभो वृषः ।
गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वा गवेधुका ॥ ११७ ॥
धामार्गवो घोषकः स्यान्महाजाली स पीतकः ।
ज्यौत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ॥ ११८ ॥

तेस्या रम्भा । मुञ्चति रसं मोचा । अंशुमानिव फलान्यस्या अंशुमत्फला, भानुफलाख्या ॥ ११३ ॥ ईषदष्ठीलमस्याः काष्ठीला, काष्णी[ष्ठी]रस इत्येके । आह च (धन्वन्तरिः)— कदली सुकुमारा च रम्भा भानुफला मता । काष्णी[ष्ठी]रसश्च निःसारा मोचा हस्तिवि(वु)षा तथा ॥ सहा क्षुद्रा, सहाख्यात्र । द्वयर्थे हि सहा मुद्गपर्णी बला नाकुली च, यतो महासहा माषपर्ण्युच्यते । वार्ताकं देश्याम् । भण्टाकी कण्टकार्या अन्येयमित्ययं मन्यते, वैद्यास्त्वभिन्ना प्राहुः, यदाह— हिङ्गुली बृहतीति च ॥ ११४ ॥ नकुलानां प्रिया नाकुली । नागसुगन्धा सर्पसुगन्धत्वात् । छत्राकी छत्राभपर्णा । सुष्ठु वहत्यामोदं सुवहा । अर्धेन रास्नार्धेन सर्पाक्षीति गौडाः, वैद्यास्तु नाकुलीगन्धनाकुल्यौ विदारीक्षीरविदारीवद् भिन्ने मन्यन्ते । आह च— नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा भोगिगन्धिका । सैव सर्पसुगन्धेति— । तथा— अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली । सर्पाक्षी नकुलेष्टा च छत्राकी विषमर्दनी ॥ ११५ ॥ विदार्या गन्धोस्या विदारिगन्धा । अंशवः सन्त्यस्या अंशुमती दीर्घमूलत्वात् । शालस्येव पर्णान्यस्याः शालपर्णी । आह च— शालपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्ण्यतिगुहा ध्रुवा । विदारिगन्धांशुमती दीर्घमूला च पीतनी ॥ तुण्डिकान् गन्धादीनीरयति कण्टकियात्तुण्डिकेरी । समुद्रः कण्टकैः कृतरक्षोन्तेस्याः समुद्रान्ता, दूरप्रसरत्वाद्वा । कल्पते कर्पासी । बदराणीव फलानि सन्त्यस्या बदरा, यन्माला— कर्पासो बदरः प्रोक्तो बादरः पिचव्यश्च ह । द्वयर्थे तुण्डिकेरी बिम्बा कर्पासी च, द्व्यर्थे समुद्रान्ता कर्पासी यवासकः स्पृक्का च ॥ ११६ ॥ वने भवा वन्या । सा कर्पासी । (भारद्वाजी)भरद्वाजसृष्टेत्यागमः । भद्रापि । शृङ्गाणि सन्त्यस्य शृङ्गी । अत एव वृषाख्यः । आह च— ऋषभो धूर्वहो वी[धी]रो मातृको वृषभो वृषः । वितानी ककुदिन्द्राक्षो बन्धुरो गोपतिः स्मृतः ॥ गाङ्गमीरयति पवित्रत्वात् गाङ्गेरुकी । नागानां बलकृन्नागबला । झषति हिनस्ति गन्धेन झषा । गवि जले—इन्द्वे (एधते) गवेधुका । आह च— गाङ्गेरुकी नागबला खरगन्धनिका झषा । विश्वदेवा तुयारिष्टा ख[च]ण्डा ह्रस्वा गवेधुका ॥ ११७ ॥ धामार्जति धामार्गवः । घोषति शब्दायते घोषकः । स धामार्गवः पीतपुष्पो महाजाली, जालं वितानः । आह च— धामार्गवः कोशफला राजकोशातकी फला । कर्कोटकी पीतपुष्पा महाजाली तथोच्यते ॥ ज्यौत्स्नी रात्रौ भासनात् । पटति विस्तीर्यते पटोली । जाली सवितानाः । ऐरावतो नागरङ्गो नादेयो भूमिजम्बुकेत्युक्तत्रापि भ्रान्त्याभ्राक्ता ॥ ११८ ॥ लाङ्गलवद् भेदनाल्लाङ्गली । अग्निशिखा स्प्रष्टुमशक्यत्वात्, अग्निमुखीत्येके । आह च— कलिकारी तु फलिनी विशल्या गर्भपातनी । लाङ्गल्यग्निमुखी सीरी दीप्तानन्तेन्द्रपुष्प्यपि ॥ द्वयर्थे— अग्निमुखी भल्लातकी लाङ्गली च । काकस्येवाङ्गं नासारूपं फलमस्याः काकाङ्गी, काकजङ्घेत्येके ।

मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च ।
सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिपुता त्रिवृत् ॥ १०८ ॥

त्रिभण्डी रोचनी श्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका ।
काला मसूरविदलार्धचन्द्रा कालमेषिका ॥ १०९ ॥

मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका ।
विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता ॥ ११० ॥

अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्ष्य(र्क्ष)गन्धिका ।
लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ॥ १११ ॥

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ।
गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ॥ ११२ ॥

गोस्तनीति विशेषोपि सामान्यवृत्तिः । द्राति सरसत्वाद् द्राक्षा । आह च– द्राक्षा चारुफला कृष्णा पियाला कालमेषिका । स्वाद्वी गुडा मधुरसा मृद्वीका गोस्तनी स्मृता ॥ हारहूरा च । सर्वे अनुभूतयोस्याः सर्वानुभूतिः, नानारसेत्यर्थः । सरति सरला विरेचनीत्वात्, सरलेत्येके । त्रयः पुटाश्छादका अस्यास्त्रिपुटा, त्रिपुटी च, त्र्यस्रेत्येके । त्रिभिर्व्रियते त्रिभिर्वर्त्यते छाद्यते वा त्रिवृता त्रिवृत्, त्रिपुटात्वाद्वा ॥ १०८ ॥ त्रिभिर्मण्ड्यत उद्भाव्यते त्रिभण्डी । रोचनी रुचिकर्त्री, रेचनीत्येके । शुक्लेयं, कृष्णामाह । पालयति पालिन्दी । सुषिणोति सुषेणी । आह च– श्यामा त्रिवृन्मालविका मसूरविदला च सा । कालार्धचन्द्रा पालिन्दी सुषेणी कालमेष्यपि ॥ शुक्ला चापि त्रिभण्डी स्यात्काकाक्षी सरला त्रिवृत् । सर्वानुभूतिस्त्रिपुटा त्र्यस्रा कूटरवृद्धिणी ॥ आम्लसी रेचनी चैव दण्डविक्षोभणी तथा ॥ १०९ ॥ यष्टीस्थं मधुकं यष्टीमधुकम् । एकदेशान्मधुकम् । क्लीबत्वं तद्धति प्रतिहन्ति वृष्यत्वात्क्लीतकं, क्लीतसंज्ञं वा । आह च– मधुयष्टी च यष्टी च यष्टीमधु मधुस्रवा । यष्टीमधुकं मधुकं यष्ट्याह्वं मधुयष्टिका ॥ तल्लक्षणं क्लीतकं च– इति । विदार्यते अस्यते विदारी । क्षीरेण शुक्ला । इक्षुगन्धा माधुर्यात्, क्षीरविदारीयं कृष्णो भूकूष्माण्डोयं वा [प्राक्षु देशेषु] । शुक्लो भूकूष्माण्डः सृगाली, रसं सृजतीति, क्रोष्ट्री तु लक्षणया । आह च– विदारिका मता शुक्ला स्वादुकन्दा शृगालिका । ऋष्यगन्धा विदारी च ऋष्यवल्ली विदारिका ॥ त्र्यर्थे– इक्षुगन्धा विदारी कोकिलाक्षको गोक्षुरश्च ॥११०॥ ऋष्यानन्यवत्तर्दयति ऋष्यगन्धा । आह च– अन्या क्षीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्ल्यपि । क्षीरवल्ली क्षीरकन्दा क्षीरशुक्ला पयस्विनी ॥ त्र्यर्थे महाश्वेता नीलस्यन्दा यवशर्करा क्षीरविदारी च, तथा ऋष्यगन्धा मूलकं रक्तालुकं क्षीरविदारी च, तथा क्षीरशुक्ला क्षीरविदारी क्षीरकाकोली नीलस्यन्दा च । लाङ्गली हलाकारा । शकुलादनी मत्स्यभक्षणात् । आह च– जलपिप्पल्यभिहिता शारदी तोयपिप्पली । मत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लाङ्गली शकुलादनी ॥ १११ ॥ खरमश्नुते खराश्वा । कारोरियं कारवी कर्मण्येत्यर्थः । दीप्योग्निदीपनः । मीनात्यभिमान्यं मयूरः । लोच्यते लुच्यते वा मस्तकोस्य बर्बराकारत्वाल्लोचमस्तकः, लोचमर्कट इत्येके । आह च– अजमोदा वस्तमोदा दीप्यको लोचमस्तकः । खराश्वा कारवी वल्ली मोचा हस्तिमयूरकः ॥ त्र्यर्थे मयूरकोपामार्गोजमोदा तुत्थकश्च । गोपायति गोपी । (श्यामा) श्यामवर्णा । यच्छाश्वतः– शारिवायां निशि श्यामा श्यामो च हरितासितौ । शीर्यन्तेनया दोषाः शारिवा । चन्दनाच्छादनत्वात्, अनन्तेत्येके । उत्पलाभपत्रोत्पलशारिवा । आहुश्च– शारिवा फणिजिह्वा च गोप्यास्फोता च चन्दना ॥ ११२ ॥ योजनीयं योगे साधु वा योग्यम् । ऋध्नोति ऋद्धिः । वृद्धेरोषधिविशेषस्यापि योग्यादीनि नामानि । आह च– ऋद्धिर्वृद्धिः सुखं सिद्धी रथाङ्गं मङ्गलं वसु । ऋद्धिपुष्टा[सृष्टा] युगं योग्यं लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ॥ केन वायुना दल्यते कदली । वारणानां बुसो घासः, वारणवि(बु)षेत्येके । रम-

अहेरुरथ पीतद्रुकाली(ले)यकहरिद्रवः।
दार्वी पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ॥ १०२ ॥
वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका।
शुक्ला हैमवती वैद्यमातृसिंह्यौ तु वाशिका ॥ १०३ ॥
वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः।
आस्फोता गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रान्तापराजिता ॥ १०४ ॥
इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः।
शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः ॥ १०५ ॥
मिश्रेयाप्यथ सीहुण्डो वज्रः स्नुक् स्त्री स्नुही गुडा।
समन्तदुग्धाथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ॥ १०६ ॥
तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम्।
बल्वला वाट्यालको घण्टारवा तु शणपुष्पिका ॥ १०७ ॥

हरिः पीतो द्रुः स्कन्धोऽस्य हरिद्रुः। दार्वी दारुहरिद्रा च पिण्डहरिद्रातोऽन्या। अत्यर्थं पचति पचंपचा। पिपर्ति रोगेभ्यः पर्जनी। आह च– हरिद्रा पीतिका पिण्डा रजनी रञ्जनी निशा। गौरी वर्णवती पीता हरिता[द्रा] वरवर्णिनी ॥ अन्या दारुहरिद्रापि हरिद्रुः पीतचन्दनम्। निर्दिष्टा वै कटंकिनी स च कालेयकः स्मृतः ॥ कालीयको दारुनिशा दार्वीपीतद्रुपीतकाः। कटंकटेरी पर्जन्या पीतदारु पचंपचा ॥ १०२ ॥ वक्त्यनया वचा, वाक्पाटवकृत्। षड् ग्रन्थयः पर्वाण्यस्याः षड्ग्रन्था। गोरिव लोमान्यस्या लोमशत्वाद् गोलोमी। शुक्ला कृष्णा च द्वेधासौ, यदाह– वचोग्रगन्धा गोलोमी जटिलोग्रा च लोमशा। अन्या श्वेतवचा मेध्या षड्ग्रन्था हैमवत्यपि॥ द्व्यर्थे शतपर्वा दूर्वा वशा वचा च। वैद्यानां मातेव रोगजित्वात्। हिनस्ति रोगान् सिंही। उश्यते काम्यते वाशिका ॥ १०३ ॥ वर्षति मधु वृषः। अटान् गच्छतो रूषयत्यटरूषः। सिंहास्याकारपुष्पत्वात्सिंहास्यः। वाजिदन्ता इव केसराण्यस्य वाजिदन्तकः। आह च– वासकः सिंहपर्णी च वृषो वासोथ सिंहिका। अटरूषः सिंहमुखी भिषङ्मातारूषकः ॥ आस्फुटत्यास्फोता। गिरि(रे)रश्मवत्कर्णिकास्य(स्या) गिरिकर्णी। विष्णुनाक्रान्ता। अत एव रक्षाहेतुत्वान्न पराजिता। आह च– अश्वक्षुरा श्वेतपुष्पा श्वेता च गिरिकर्णिका। कटभी श्वेतसारा च श्वेताख्या चापराजिता ॥ द्व्यर्थे आस्फोता सारिवा गिरिकर्णिका च ॥ १०४ ॥ इक्षोरिव गन्धोऽस्याः, स्वाद्वीस्यर्थः। इक्षुसदृक्काण्डत्वात् (काण्डेक्षुः)। कोकिलस्येवाक्षीण्यस्य कोकिलाक्षः। इक्षुं रातीक्षुरः। स एव लोकोक्त्या क्षुरः, पारुष्याद्वा। आह च– तथान्य इक्षुगन्धः. स्यादिक्षुरः कोकिलाक्षकः। कामः[सः] काण्डेक्षुरुद्दिष्टः काकेक्षुर्वायसेक्षुकः ॥ शालायां भवः शालेयः, गुप्तत्वात्, अत एव शालीनः। शीतः शिवश्च। (छत्रा) छत्राकारपत्रा। मस्यति परिणमति मिसिः। आह च– मिश्रेया तालपत्री च तालपर्णी मिसिस्तथा। शालेयः स च शालीनो नाम्ना शीतशिवो मतः ॥ १०५ ॥ सीहुण्डः सिंहतुण्डापभ्रंशः, वन्मेखलाकुलिशतरू सीहुण्डो। वज्रो भेदकत्वात्। स्नौ(स्नुश्र)ति क्षीरं स्नुक् स्नुही च, स्नुहेति वैद्याः। गुडा वृत्तत्वात्, गुहेत्यपपाठः, यच्छाश्वतः– गुडौ गोलेक्षुविकृती स्नुही गुडिकयोर्गुडा। सुधापि। आह च– स्नुक् सुधा च महावृक्षो गुडा निस्त्रिंशपत्रकः। समन्तदुग्धा गण्डीरा सीहुण्डो वज्रकण्टकः ॥ वज्रद्रुः स्नुक् स्नुहीत्येके पेठुः। वेल्लति वेल्लम् ॥ १०६ ॥ बिलति भिनत्ति विडङ्गं विलङ्गति वा। आह च– विडङ्गा जन्तुहन्त्री च कृमिघ्नी चित्रतण्डुला। तण्डुलः कृमिहामोघा केशा[केस]ला मृगगामिनी ॥ बलन्त्यनया बला, बलकृद्वा। वटति वाट्यालकः। चन्द्रनन्दनो बला भद्रोदनी हृया तथा वाट्यालक इत्याह। घण्टेवारौति घण्टारवा। शणस्येव पुष्पाण्यस्याः शणपुष्पी, पाककर्णपर्णेति (सू०) ङीष्। आह च– शणपुष्पी बृहत्पुष्पी स चोक्तः शणघण्टकः ॥ १०७ ॥ मृद्वीका सौकुमार्यात्। गोस्तनाभा

कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ।
ऊषणा पिप्पली शौण्डी कोलाथ करिपिप्पली ॥ ९७ ॥
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ।
चव्यं तु चविका काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला ॥ ९८ ॥
पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ।
गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ॥ ९९ ॥
विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ।
शृङ्गी महौषधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे ॥ १०० ॥
शतमूली बहुसुताभीरुरिन्दीवरी वरा(री) ।
ऋष्यप्रोक्ताभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी ॥ १०१ ॥

उपकोलति संस्त्याम्यत्युपकुल्या । विदेहदेशे भवा वैदेही । मगधभवत्वान्मागधी । चपति चपला । कणाः सन्त्यस्या कणा । ऊषत्यूषणा, ऊष रुजायाम् । उषणापि, उष दाहे, तीक्ष्णतण्डुलत्वात् । पिपर्ति पिप्पली । शौण्डी शफत्वात् । कोला, कुल संस्त्याने । आह च– पिप्पली मागधी कृष्णा चपला तीक्ष्णतण्डुला । उपकुल्या कणा श्यामा कोला शौण्डी तथोषणा ॥ इन्दुश्च– पिप्पली तण्डुलफला वैदेही कृष्णतण्डुला । करिपिप्पली बृहत्त्वाद् गजयोग्या वा ॥९७॥ कपिवल्ली मर्कटरोमत्वात् । एवं कोलवल्ली । वस्यते छाद्यते रोमभिर्वसिरः । चव्यं, फलं चैतत्, चव्यते चव्यं च्यवते वा । आह च– चविका कोलवल्ली तु चव्यं चवनमेव च ॥ तस्याः फलं विनिर्दिष्टं श्रेयसी हस्तिपिप्पली ॥ चन्द्रनन्दनः सामान्येनाह चव्या कोला च चविका श्रेयसी गजपिप्पली । चवना कोलवल्ली तु चव्यं कुञ्जरपिप्पली । स्वर्थे मर्कटवल्ली– अपामार्गो हस्तिपिप्पली स्वयंगुप्ता चेति, तथा वसिरोपामार्गः समुद्रलवणं हस्तिपिप्पली चेति । काकवर्णा चिञ्चा प्रान्तोस्याः काकचिञ्ची । गुञ्जति शिम्ब्यां गुञ्जा । कृष्णं प्रान्तं लाति कृष्णला । रक्तिकापि ॥ ९८ ॥ पलं मांसं कषति पलंकषा । इक्षोरिव गन्धोस्याः स्वादुकण्टकत्वादिक्षुगन्धा । शुनो दंष्ट्रेव हिंसत्वाच्छ्वदंष्ट्रा । गवां कण्टको वेधको गोकण्टको गोक्षुरत्वात् । गौर्महीति तु युक्तं, अत एव वनशृङ्गाटो भूक्षुरश्चायम् । आह च– गोक्षुरः स्याद् गोक्षुरको भक्षकः स्वादुकण्टकः । गोकण्टको भक्षक[ट]कः षडङ्गः क्षुरकः क्षुरः ॥ गोकण्टो गोक्षुरः कण्टी षडङ्गस्त्रिकटस्त्रिकः । त्रिकण्टकः कण्टफलः श्वदंष्ट्रव्यालदंष्ट्रकः ॥ स्वर्थे पलंकषो लाक्षा गोक्षुरो गुग्गुलुश्च, तथा– इक्षुगन्धा विदारी कोकिलो गोक्षुरश्च ॥९९॥ विशत्यन्तर्विश्वा । वेवेष्टि विषा । प्रतीपा विषस्य प्रतिविषा, अगदत्वात् । शृङ्गयुक्तत्वाच्छृङ्गी । आह च– अतिविषा शुक्लकन्दा ज्ञेया विश्वा च भङ्गुरा । श्यामकन्दा प्रतिविषा शृङ्गी चोपविषा विषा[तथा] ॥ महौषधं तु विषं नातिविषा । स्वर्थे तु हि महौषधं (विषं) शुण्ठी लशुनं चेति विषा(ष)मन्वं पुस्त्व भ्रान्तोयम् । क्षीरमवति क्षीरावी । दुग्धमस्त्यस्या दुग्धिका क्षीरकाकोलीयम् । आह च– द्वितीया क्षीरकाकोली क्षीरशुक्ला पयस्विनी । पयस्या [वयस्था] क्षीरमधुरा वीरा क्षीरविकारिका । अत्र क्षीरावी विकारिकेति च ग्रन्थकृन्मन्यते, क्षीरेति विकारिकेति तु वैद्याः ॥ १०० ॥ शतं बहूनि मूलान्यस्याः शतमूली । बहुधा सुवति बहुसुता । अभीरुः स्थिरपत्रा रसायनत्वाद्वा । इन्दीवर्युत्पलपुष्पा । वृणोति वरा । ऋष्यैः प्रोक्ताश्रिता द्वीपिशत्रुत्वात् । नारायणी विष्णुजाता । शतेन वृणोति शतावरी । न हिनोत्यहेरुः, अभीरोरपभ्रंशोयं वा । हरमेखलो निघण्टौ दृष्टः, यदाह– सहस्रमूली सहस्रावरी– अहेरुरिति । आह च– शतवीर्या शतपदी पीवरीन्दीवरी वरी । सहस्रवीर्याऽभीरुश्च तुङ्गिनी बहुपत्रिका ॥ ऋष्यप्रोक्ता द्वीपिशत्रुर्वी[द्वी]पिका वरकण्टकः । मता पुरुषदन्ता च शतावर्यूर्ध्वकण्टकः ॥ १०१ ॥ काम्यति दोषान्काम्पिल्लकः ।

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।
रोदनी कच्छुरानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ॥ ९२ ॥
पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका ।
क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशिर्धावनिर्गुहा ॥ ९३ ॥
निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ।
प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ॥ ९४ ॥
नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ।
रञ्जनी श्रीफला तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी ॥ ९५ ॥
अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका ।
कालमेषी कृष्णफला वाकुची पूतिफल्यपि ॥ ९६ ॥

यासः । यौति यवासः । दुःस्पर्शः कण्टकित्वात् । धन्वयासो मरुद्भवत्वात् । कुं नाशयति कण्टकित्वात्कुनाशः । रोदयति खेदयति रोदनी, चोदनीति सभ्याः । कच्छूं रोगं राति कच्छुरा । अनन्ता समुद्रान्ता च दूरव्याप्तेः । कृच्छ्रेण लभ्यते दृश्यते दुरालभा । आह च– यासो यवासकोऽनन्तो बालपत्रो विकण्टकः । दीर्घमूलः समुद्रान्तो दीर्घमूलो मरुद्भवः ॥ धन्वयासो दुरालम्भा ताम्रमूली च कच्छुरा । दुरालभा च दुःस्पर्शा यासो धन्वयवासकः ॥ ९२ ॥ पृश्निश्चित्रगवीव पर्णान्यस्याः पृश्निपर्णी, सूक्ष्मपर्णा वा, यदाह पृश्निरल्पतनौ । अङ्घ्रेर्बुध्नादारभ्य पर्णान्यस्या अङ्घ्रिपर्णी । क्रोष्टुर्निर्विन्ना दत्तेव, क्रोष्टुपुच्छीरत्वात् । सिंहस्येव पुच्छमस्याः सिंहपुच्छी, लांगोलत्या सिंहपुच्छकः । कलशिर्गर्गरी पृथुलत्वात् । धावति प्रसरति धावनिः । गूहति रसं गुहा । आह च– पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी कलशिर्धावनी गुहा । शृगालविन्नाघृ(ङ्घ्रि)तिलापर्णी क्रोष्टुकपुच्छिका ॥ ९३ ॥ निदिह्यते निदिग्धिका । स्पृशति कण्टकैरुपतपति स्पृशी । व्याघ्री हिंस्रत्वात् । कण्टकबाहुल्याद् बृहती । कण्टकानियर्ति कण्टकारी । प्रचोदयति कण्टकैः प्रेरयति प्रचोदनी । कोलति कुली । क्षुणत्ति क्षुद्रा हिंस्रा, क्षुद्रवार्ताक्येकदेशो वा । राष्ट्रमस्त्यस्या राष्ट्रिका । बृहती तु निदिग्धिकेति भागुरिवाक्याद् ग्रन्थकृद् भ्रान्तः, यतोऽनयोर्महान्भेदः । आह च– कण्टकारी तु दुःस्पर्शा क्षुद्रा व्याघ्री निदिग्धिका । कण्टालिका कण्टकारी धावनी दुःप्रधर्षिणीति ॥ यथा– बृहती सिंहनाक्रान्ता वार्ताकी राष्ट्रिका कुली । विशदा स्थूलभण्टाकी महती तु महोटिका ॥ भागुरिर्हि द्वयोर्बृहतीत्वं मन्यते, यच्छाश्वतः– क्षुद्रायां क्षुद्रवार्ताक्यां बृहती छन्दसि क्वचित् । द्व्यर्थे प्रचोदनी कण्टकारिका दुरालभा च ॥ ९४ ॥ नीली काला च वर्णे, नीलात्प्राण्योषध्योर्ङीष (वा०) । क्लीतकं विनिमयोऽस्त्यस्याः क्लीतकिका । ग्रामे भवा ग्रामीणा । रञ्जयति नीलीकरोति रञ्जनी । श्रीफला रम्यफला । तुद्यते तुत्था । द्रवत्यस्याः स्पर्शाज्जनो द्रोणी, तूणीत्येके । दोह्यते दोला, मेलेत्येके । नीलोऽस्त्यस्या नीलिनी । आह च– नीलिनी नीलिका काला ग्राम्या तूणी विशोधनी । तुत्था श्रीफलिका मेला सारवाही च रञ्जनी ॥ त्र्यर्थे मधुपर्णी गुडूची काश्मरी नीलिका चेति, द्व्यर्थे क्लीतकिका मधुयष्टी नीलिका च ॥ ९५ ॥ अवल्गोररम्याज्जातोऽवल्गुजः । सोमेनाह्लादनेन राजते सोमराजी । कालेन मिष्यते शब्दयते कालमेषी कृष्णफलत्वात् । वातं संकोचयतीति निर्वचनाद्वाकुची । पूतिः फलमस्याः पूतिफली, पाककर्णेति (सू०) ङीष् । त्र्यर्थे कालमेषी मञ्जिष्ठा बृहती वाकुचिका च ॥ ९६ ॥ कर्षति कृष्णा, श्यामलत्वाद्वा ।

आत्मगुप्ताजहाव्यङ्गा कण्डूरा प्रावृषायणी।
ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ॥ ८७ ॥
चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शंवरी वृषा।
प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी चण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ ८८ ॥
अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ।
प्रत्यक्पर्णी के(की)शपर्णी किणिही खरमञ्जरी ॥ ८९ ॥
हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका।
अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्बरवर्धकाः ॥ ९० ॥
मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषि(शि)का।
मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ॥ ९१ ॥

राति कण्डूरा। प्रावृषि भवा प्रावृषायणी। ऋष्यैर्मृगैः प्रोक्ता दर्शिता ऋष्यप्रोक्ता, ऋषिभिरप्रोक्ता हेयत्वादित्येके। शूकप्रधाना सकण्टका शिम्बिरस्याः शूकशिम्बिः। कर्षान् कषति कपिकच्छुः। मर्कटी कपिरोमफलत्वात्। आहेन्दुः– ऋष्यप्रोक्ता स्वयंगुप्ता कपिकच्छुश्च कण्डुरा। आत्मगुप्ता दुरालम्भा जाङ्गलिर्दुरभिग्रहा ॥ अव्यङ्गा वृषभी गुप्ता कण्डूरा शूकशिम्बिका। कपिरोमफला चैव समाना प्रावृषायणी ॥ ज्ञेया जाङ्गलिका सैव साजहा प्रावृषायणी ॥ ८७ ॥ चित्रानेकवर्णपत्रा। न्यग्रोहति रुणद्धि वा बहुमूलत्वान्न्यग्रोधी। द्रवति द्रवन्ती। शं वृणोति शंवरी। वर्षति वृणोति वा वृषा। प्रतीची श्रेण्यस्याः प्रत्यक्श्रेणी। सुतानां मूलानां श्रेण्यस्याः सुतश्रेणी। चण्ड्यते चण्डा। मूषिकपर्णी– आखुकर्णाभपत्रा। आह च (निघण्टुः)– द्रवन्ती शंवरी चित्रा न्यग्रोधी मूषिकाह्वया। प्रत्यक्श्रेणी वृषा चण्डा पुत्रश्रेण्याखुपर्णिका ॥ द्वयर्थे– उपचित्रा दन्ती पृश्निपर्णी चेति, दन्त्यां द्रवन्तीभ्रान्त्या प्रत्यक्पुष्पिनामाह ॥८८॥ अपकृष्टः(आ)समन्तान्मार्गोऽस्यापामार्गः, अधःशाख्य(त्व)त्वाद्। शिखरे भवः शैखरिकः। अधर्मं मार्गे याति धामार्गवः, धाम अर्जति वा। मयूरप्रतिकृतिर्मयूरकः। प्रत्यञ्चि पर्णान्यस्याः प्रत्यक्पर्णी। केशपर्णी कपिलरोमत्वात्, अत एव केशवल्लीत्येके। किणिनो जिहीते याति किणिही, स्पर्शात्किणोत्पादनात्। आह च– अपामार्गस्तु शिखरी प्रत्यक्पुष्पी मयूरकः। अधःशल्याथ किणिही दुर्ग्रहः खरमञ्जरी ॥ स एवोक्तः शैखरिको मर्कटी दुरभिग्रहः। पत्रपुष्पी च शिखरः कूटो मर्कटपिप्पली ॥ द्वयर्थे धामार्गवोऽपामार्गः कोशातकी च ॥ ८९ ॥ हन्ति रोगं हञ्जी। ब्राह्मणी पवित्रत्वात्। पद्मा पद्माभपुष्पा। भृज्जति भार्गी, भृगुजेत्येके, अत एव ब्राह्मी। अङ्गाराभा वल्ल्योऽस्या अङ्गारवल्ली। बालेयशाको गर्दभभोग्यत्वात्। वृणोति वर्बरो वर्चश्च, वर्बराकृतिपत्रो वा। आह च– भार्गी गर्दभशाकश्च पद्मा ब्राह्मणयष्टिका। अङ्गारवल्ली हञ्जी च वर्चो वर्बरकस्तथा ॥ द्वयर्थे ब्राह्मी स्पृक्का भार्गी च। आहेन्दुः– ब्रह्मरीतिस्तथा स्पृक्का भार्गी च ब्राह्मणी मता ॥९०॥ मञ्जौ मनोज्ञे वर्णे तिष्ठति मञ्जिष्ठा, अम्बाम्बगोभूमीति (सू०) षत्वम्। विकसति दूरं विकसा। जिङ्गति प्रसरति जिङ्गी। समन्ततोऽङ्गति समङ्गा। काले मिष्य(श्य)ते शब्द्यते कालमेषी(शी)। भण्ड्यते भण्डीरी भण्डी च। योजनवल्ली दूरप्रसरा। आह च (निघण्टुः)– मञ्जिष्ठा कालमेषी च समङ्गा विकसारुणा। मञ्जुषा रक्तयष्टिश्च भण्डी योजनवल्ल्यपि॥ आहेन्दुः– विकसा कालमेषी तु कालगोष्ठी च जिङ्गिका। रक्ता भण्डीरिका चेति– ॥९१॥ याति प्रसराति

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ।
वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ॥ ८२ ॥
वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकामृता ।
जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ॥ ८३ ॥
मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ।
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ॥ ८४ ॥
पाठाम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ।
एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ॥ ८५ ॥
कटुः कटंभ(व)राशोकरोहिणी कटुरोहिणी ।
मत्स्यपित्ता कृष्णभेदा चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥

मल्लिका शिवमल्ली, उक्तं च– बुकं बिल्वं सपत्त्रं सुमना पाटला तथा । पद्ममुत्पलगो सूर्यमष्टौ पुष्पाणि शंकरे ॥ पशुपतेरयं प्रियो वा पाशुपतः । एकोष्ठीलो मज्जास्त्यस्य । बाति बुकः, बक इति प्राच्याः । वस्ते छादयति वसुः । आह च– वसुर्वसुक इत्युक्तः शिवार्कः[ष्कः] शिवशेखरः । महापाशुपतश्चैव सुव्रतः शिवमल्लिका ॥ [जन्मवृक्षमत्ति नाशयति वृक्षादनी । वृक्षे रोहति वृक्षरुहा, वृक्षरोहेति वनेचराः]। आह च– वन्दाकः स्याद्वृक्षरुहा शेखरी कामवृक्षकः । वृक्षादनी नटरुहा कामिन्यङ्घ्रिपरोहणी ॥ द्व्यर्थे जीवन्ती गुडूची वृक्षरुहा शाकविशेषश्च ॥ ८२ ॥ वत्सानामदनं वत्सादनी । छिन्ना रोहति छिन्नरुहा । गुडति रक्षति गुडूची । तन्त्रयते धारयत्यायुस्तान्त्रिका । जीवयति जीवन्तिका । सोमवल्ल्यमृतत्वात् । मधूनि पर्णान्यस्या मधुपर्णी । आह च– गुडूच्यमृतवल्ली च छिन्ना छिन्नरुहामृता । छिन्नोद्भवामृतलता वरा वत्सादनी स्मृता ॥ सैवोक्ता सोमवल्ली च कुण्डली चक्रलक्षणा । जीवन्ती मधुपर्णी च तान्त्रिका देवनिर्मिता ॥ द्व्यर्थे विशल्या लाङ्गली दन्ती गुडूची च ॥ ८३ ॥ मूर्वति बध्नाति मूर्वा, अत एवास्या विकारो मौर्वी । मधुरो रसोऽस्या मधुरसा । मुरति संवेष्टयति मोरटा । तेजयत्यग्निं तेजनी । स्रवति रसं स्रवा, स्रुवेत्येके । मधूलिका माधुर्यात् । मधुनः श्रेणी पङ्क्तिर्मधुश्रेणी । गोकर्णी गोकर्णाभपत्त्रा, पाककर्णपर्णेति (सू०) ङीप् । पीलोरिव पर्णान्यस्याः पीलुपर्णी । आह च– मूर्वा मधुरसा देवी पृथुत्वक् पीलुपर्ण्यपि । स्व(मधु)श्रेणी स्वादुरसा स्निग्धपर्णी च मोरटा ॥ द्व्यर्थे तेजनी तेजोवती मूर्वा च । आहेन्दुः– स्निग्धच्छदा मधुश्रेणी पृथुत्वप्रसवाहिनी । स्वश्रेणी मधुमती सुरङ्गी द्विजमेखला ॥ आलोलनी योगवहा मोरटा च मधुस्रवा । सुयो[खो]षिता स्निग्धपर्णी गोकर्णी सा मधूलिका ॥ पीलुपर्णी कर्मकरी प्रमथा मधुमतीति च ॥ ८४ ॥ [पठ्यते पाठा]। विद्धौ कर्णौ यया विद्धकर्णी, शास्त्रे श्रूयमाणत्वात् । स्थापनी वस्तिकर्मोपयोग्या । रस्यते रसा । पापचेली वृकीत्वात् । प्राचीभवा प्राचीना । वने तिक्तरसा वनतिक्ता । आह च– पाठाम्बष्ठाम्बष्ठकी च प्राचीना पापचेलिका । वृकतिक्ता वनेतिक्ता पापिका स्थापनी वृकी ॥ द्व्यर्थे रसा रास्ना सल्लकी पाठा च ॥ ८५ ॥ कटत्यावृणोति गलं कटंभरा । शोकहन्त्री रोहत्यगं वाशोकरोहिणी । मत्स्यपित्तास्वादा, मत्स्यानां पित्तं जीवितं वा । कृष्णो भेदश्छेदोऽस्याः कृष्णभेदा । शकुलानामदनं शकुलादनं शकुलादनी वा । आह च(निघण्टुः)– कटुका मत्स्यशकुला मत्स्यपित्ता च रोहिणी । कृष्णभेदा चण्डरुहा रास्ना कटुकरोहिणी । अशोकरोहिणी तिक्ता चक्राङ्गी शकुलादनी । कटुरोहिण्यरिष्टा च प्रोक्ता तिक्तकरोहिणी ॥ द्व्यर्थे कटंभरा कटुङ्ग्वः कटुकी च ॥ ८६ ॥ आत्मना गुप्ता स्पर्शाविषयत्वात् । न जहाति शूकानजहा । न विगताङ्गाव्यङ्गा कण्डू

प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ।
करवीरे करीरे तु क्रकरग्रन्थिलावुभौ ॥ ७७ ॥
उन्मत्तः कितवो धूर्तो धर्तूरः काञ्चनाह्वयः ।
मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रकः ॥ ७८ ॥
फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ।
समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः ॥ ७९ ॥
जम्बीरोऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुठेरकौ ।
सितेऽर्जकोऽत्र पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ॥ ८० ॥
अर्काह्ववसुकास्फोट(त)गणरूपविकीरणाः ।
मन्दारश्चार्कपर्णोऽत्र शुक्लेऽलर्कप्रतापसौ ॥ ८१ ॥

श्वेतत्वाद्धासो विकासोऽस्य प्रतिहासः । शतं बहूनि प्रासाः कुन्ता इव पुष्पाण्यस्य शतप्रासः, श्वेतश्चासौ । चण्डय(मत)ति तीक्ष्णत्वाच्चण्डातः, रक्तोऽसौ । करवीर इव मारकत्वात्कराः करीरो वीरा अत्रेति । आह च– शतकुन्तः श्वेतपुष्पः प्रतिहासोऽश्वरोहकः । द्वितीयो रक्तपुष्पस्तु चण्डातो लगुडस्तथा ॥ चण्डातको गुल्मकश्च प्रचण्डः करवीरकः । करिण ईरयति कण्टकैः करीरो मरुवृक्षः । क्रेति करोति क्रकरः, तीक्ष्णत्वात् । आह च– करीरं गूढपत्रं च शाकपत्रं मृदूफलम् । ग्रन्थिलं तीक्ष्णसारं च क्रकरं तीक्ष्णकण्टकम् ॥ ७७ ॥ उन्मत्त उन्मादकत्वात् । धूर्वति हिनस्ति धूर्तः, अत एव कितवः । धरति धावन् धर्तूरः (धत्तूरः), धत्तूरमिति प्राच्याः । काञ्चनाह्वो भुक्तेऽस्मिन् हेमवर्णपृथ्वीदर्शनात्, यद्विन्दुः– संज्ञेयं हेमनामभिः । नास्ति तुलास्य मातुलः, अमानोनाः प्रतिषेधे । मदयति मदनः । आह च– धर्तूरकः स्मृतो धूर्तो देविता कितवः शठः । उन्मत्तको मदनकस्तूरी चलतल्कस्तथा ॥ यतो धन्वन्तरिर्मातुलं धत्तूरं मातुलपुत्रकं तत्फलमाह ॥ ७८ ॥ रोचयति रुचकः । आह च– फलपूरो बीजपूरः केसरी बीजपूरकः । बीजकः केसराम्लश्च मातुलुङ्गस्तु पूरकः ॥ अनेकार्थे– सौवर्चलं मातुलुङ्गं शिला चन्दनपेषणी । ग्रीवाभरणकं चेषु चतुर्षु रुचकं स्मृतम् । समीरयत्यामोदं समीरणः । मरौ वाति मरुवकः । प्रस्थे सानौ पुष्यति जाङ्गलत्वात्प्रस्थपुष्पः । खरत्वेन फणाभपत्रत्वाद्वेस्यः फणिज्जकः ॥७९॥ जम्यते जम्बीरः, जम्भीरोऽपि । आह च– जम्बीरः खरपत्रश्च फणी चोक्तः फणिज्जकः । मरुतको मरुवको मरुन्मरिचकस्तथा ॥ पर्णान्यस्यति पर्णासः । कठिनं जरयति कठिञ्जरः । कुण्ठाति कुठेरकः कृष्णार्जकाह्वयः । (शुक्लः कुठेरोऽर्जकः), अर्जयतीति । आह च– कुठेरकस्तु वैकुण्ठः क्षुद्रपत्रोऽर्जकः सितः । ष(व)टपत्रः कुठेरोऽन्यः पर्णासो बिल्वगन्धकः । पाठोऽस्यातीति पाठी । चेतति चित् चितो जन्तुर्जायते चित्रकः, नानारूपो वा । वह्निपर्यायो दीपनत्वात् । आह च– चित्रको दहनो व्यालः पाठीनो दारुणोऽग्निकः । ज्योतिष्को बर्बरी वह्निः पाटी पाली कुटः शिखी ॥ ८० ॥ अर्काह्वोऽर्कपर्यायो । वसत्यस्मिंस्तेजो वसुकः । आस्फुटत्यास्फोटः । गणा बहवः (बहूनि) रूपाण्यस्य गणरूपः । विकिरति पुष्पाणि विकीरणः । मन्दानियर्ति मन्दारकः, मन्दा आरा अस्य वा । अर्काभानि पर्णान्यस्यार्कपर्णः । शुक्लार्कोऽलर्कः, अलति भूषयतीति । प्रतापं स्यति प्रतापसः, प्रकृष्टास्तापसा येन वा । आह च– अर्कः सूर्याह्वयः पुष्पी विदुच्छुरश्च विकीरणः । जम्मलः क्षीरपर्णः स्यादास्फोतो भास्करो रविः ॥ राजार्को वसुको व्यर्को मन्दारो गणरूपकः । एकाष्ठीलः सदापुष्पी स चालर्कः प्रतापसः ॥ ८१ ॥ शिवप्रिया

शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ।
सितासौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मागधी ॥ ७१ ॥
गणिका यूथिकाम्बष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका ।
अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ॥ ७२ ॥
सुमना मालती जातिः सप्तला नवमालिका ।
माध्यं कुन्दं रक्तकस्तु बन्धुको बन्धुजीवकः ॥ ७३ ॥
सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा ।
तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः ॥ ७४ ॥
नीला झिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ।
सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ॥ ७५ ॥
पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ।
ओड्रपुष्पं जपा(वा) पुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ॥ ७६ ॥

योऽस्यां शेफालिका । सुष्ठु वहत्यामोदं सुवहा । नीलवर्णा (नीलिका) । आह च– शेफालिका तु निर्गुण्डी यमको नीलमञ्जरी । त्र्यर्थे सुवहा रास्ना शेफालिका गन्धनाकुली च । भूतानि विशल्यान्ह्लादयति भूतवेशी। मगधदेशे भवा मागधी ॥७१॥ गणिका चित्ताकर्षणात् । यूथो जालकमस्या यूथिका । अम्बे शब्दे तिष्ठत्यम्बष्ठा । आह च– यूथिका बालपुष्पा च पुष्पगन्धा गुणोज्ज्वला । गणिकावारमोटा च शिखण्डी श्वेतयूथिका ॥ आह च– सुवर्णपुष्पा हारिणी पीतका पीतयूथिका । त्र्यर्थे हेमपुष्पा बिम्बी दुःस्पर्शा पीतयूथिका च । अतिक्रान्तो मुक्तान्विरक्तानतिमुक्तः । पुण्ड्रदेशे भवः पुण्ड्रकः, मण्डकोऽयमिति निघण्टुश्च । मधौ वसन्ते भवा माधवी । आह च– अतिमुक्ता माधवी च सुवसन्तो वनाश्रयः । अतिमुक्तः कामुकश्च मण्डको भ्रमरोत्सवः ॥७२॥ सुष्ठु मन्यते सुमना मनोज्ञात्वात् । मालयत्यामोदैर्मालती । जायतेनया प्रीतिर्जातिः । आह च– जातिर्मनोज्ञा सुमना राजपुत्री प्रियंवदा । मालती हृद्यगन्धा च वैदिका (?) तैलभागि(वि)नी । सप्त मनोवुध्यन्तानीन्द्रियाणि लाति सप्तला, सपति समवैति वा । नवा स्तुत्या मालास्या नवमालिका । माघे मासि भवं माघ्यम् । कुन्यति कुन्दं, कुन्द इति माला । बध्नाति चित्तं बन्धूकः । बन्धुर्जीवानां बन्धुजीवकः ॥७३॥ सहते परिमलं सहा। कुं भूमिष्ठान्मारयति कुमारी, कुत्सितो मारोऽस्या इति वा, जरां न यातीत्येके । तरत्यनया[दुःखं]तरणिः, यच्चन्द्रनन्दनः– कुर्यकस्तरणिर्वल्ली कुमार्यलिकुलप्रिया । त्र्यर्थे सहा मुद्गपर्णी वधा(चा) तरणी च । कुरण्टको हि म्लानिं न गच्छतीति तेनाम्लानः, वात्स्यायनोऽत एव कूर्चकस्थाने कुरण्टकमालाश्चेत्याह । वर्णपुष्पोऽपि । महतो विमर्दस्य सहा महासहा, आबन्तः, यन्माला– अम्लानस्तु कुरण्टकः । तत्राम्लाने, कौ रूयतेऽर्च्यते कुरवकः । कौ रम्यते कुरण्टकः, कुरण्डकोऽपि । आह च– अविम्लानोऽपरिम्लानस्तथैवाम्लानकः स्मृतः । रक्तपुष्पः कुरवकः पीतपुष्पः कुरण्टकः ॥ किंकिरातोऽसौ ॥ ७४ ॥ या नीलपुष्पा झिण्टी, शुष्का झिं रटतीति । बाणो हि द्विलिङ्गः, वण शब्दे । दस्यति क्षीयते दासी । आर्तः क्षीणो गलत्यार्तगलः । सीरे भवा सैरेयाख्या झिण्टी– अरुणपुष्पा चेत्कुरवकोऽसौ ॥ ७५ ॥ सहचाराख्या झिण्टी पीतपुष्पा चेत्कुरण्टकोऽसौ । आह च– सैरेयकः सहचरः सैरेयश्च सहाचरः । पीतो रक्तोऽथ नीलश्च कुसुमैस्तं विभावयेत् ॥ पीतः कुरण्टको ज्ञेयो रक्तः कुरवकः स्मृतः । नील आर्तगलो दासी बाण ओदनपाक्यपि ॥ ओड्रदेशोद्भवं पुष्पं, जपतीति जपा । वज्रमिव दारकं वज्रपुष्पम् ॥ ७६ ॥ प्रतीपो-

घ-ब-कुली वञ्जुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ ।
चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ॥ ६५ ॥
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ।
श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका ॥ ६६ ॥
जयोऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ।
एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयवभद्रयवं फले ॥ ६७ ॥
कृष्णपाकफलाविग्नसुषेणाः करमर्दके ।
कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यथ सिन्दुकः ॥ ६८ ॥
सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ।
वेणी ग(ख)रागरी देवताडो जीमूत इत्यपि ॥ ६९ ॥
श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशूल्यं(न्यं) तु मल्लिका ।
भूपदी शीतभीरुश्च सैवास्फोता वनोद्भवा ॥ ७० ॥

मतो नागः केसरोः नागकेसरः । चाम्पेयो नागकिञ्जल्कः कनकं हेम काञ्चनम् ॥ ६५ ॥ जयतीति जया । तर्कमियर्ति तर्कारी केतुत्वात् । अग्निं मथ्नाति दीपनत्वादग्निमन्थः, अत एवारणिः । कणाः सन्त्यस्याः कणिका । गणिकासमूहमियर्ति गणिकारी, स्वार्थेकन्, गणिं तर्कं करोति वा । त्र्यर्थे नादेयी जलजम्बूर्जलवेतसस्तर्कारी च । लिङ्गसांकर्याच्चयेत्यर्धेन जयन्तं(न्तीं) श्रीपर्णमिति चार्धेन जयपर्यायमाहुः, तन्न, वनौषधिवर्गे तस्यानादृतत्वात्, यदिन्दुः– अग्निमन्थोऽग्निमथनस्तर्कार्यरणिको जयः । अरणिः कणिका सैव तपनो वैजयन्तिकः ॥ चन्द्रनन्दनस्त्वाह– अग्निमन्थोऽग्निमथनस्तर्कारी वैजयन्तिका । वह्निमन्थोऽरणिः केतुर्जयः पावकमन्थनः ॥ तर्कार्यो वैजयन्ती च वह्निनिर्मथनी जया । अरणिका जयन्ती च विजया च जयावहा ॥ ६६ ॥ कुटिस्तो (कुटे) जायते कुटजः । शक्र इन्द्रवृक्षः । वस्ते त्वचं वत्सकः । आह च– कुटजः कौटजः कोटी वत्सको गिरिमल्लिका । कलिङ्गो मल्लिकापुष्प इन्द्रवृक्षोऽथ वृक्षकः ॥ कलिं गायति कलिङ्गं, कालिङ्गदेशजं वा, अत एव कालिङ्गं कालिङ्गी च । इन्द्रयवं कुटजफलं, भद्रयवं तु कुटजबीजं, यदाह– फलानि तस्येन्द्रयवा बीजं भद्रयवास्तथा ॥ ६७ ॥ कृष्णं पाके फलमस्य । आविजते स्माविग्नः । सुषेणकपिमुखाभः । करेण मृद्यते करमर्दः, कराम्ललोऽपि । आह च– करमर्दकमाविग्नं सुषेणं पाणिमर्दकम् । कराम्ल्लं करमर्दं च– ॥ [कालः स्कन्धः प्रकाण्डोऽस्य] । द्व्यर्थे कालस्कन्धस्तिन्दुकः श्यामखदिरस्तमालश्च । ताम्यति तमालः । तापिनश्छादयति तापिच्छः ॥ ६८ ॥ स्यन्दते सिन्दुकः । स्यन्दं वृणोति सिन्दुवारः । इन्द्रस्य सुरसो यस्मिन्, दिव्य इत्यर्थः । अत एवेन्द्राणी । निष्क्रान्ता गुडाद्दुष्टनाम्निर्गुडी निर्गुण्डी च । आह च– सिन्दुवारः श्वेतपुष्पः सिन्दुकः सिन्दुवारकः । तिलपुष्पः शीतसहो निर्गुण्डी नीलसिन्दुकः । वणीव वेणी । गरमागिरति गरागरी मूषिकाविषघ्नत्वात् । कर्णं ताडयति ताडः, मुख्यत्वाद्देवताडो राजताडवत् । जीमूतो छादकत्वात् । आह च– जीमूतको देवताडो वृत्तकोशो गरागरी । प्रोक्ताखुविषहा वेणी देवताली च ताडकः ॥ ६९ ॥ भुवि रोहति भूरुण्डी । हस्तिकर्णपत्त्रा शाकविशेषः । इतो धत्तूरान्तानि पुष्पाणि । तृणशूले गुल्मे साधु तृणशूल्यम् । मल्लयते मूर्ध्नि मल्लिका । भुवि पदमस्या भूपदी । शीतभीरुर्ग्रैष्मकत्वात् । आह च– मल्लिका शीतभीरुश्च मदयन्ती प्रमोदनी । मदनीया गवाक्षी च भूपद्यष्टपदी तथा ॥ द्विपुटासौ विचकिलम्– । आस्फुटत्यास्फोता गिरिमल्लिका ॥ ७० ॥ शेरते शेफा अष–

नाक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ।
अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता ॥ ५९ ॥
हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ।
पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः ॥ ६० ॥
कर्णिकारः परिव्याधे लकुचो लिकुचो डहुः ।
पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोम्बुजः ॥ ६१ ॥
काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलपूर्जघनेफला ।
अरिष्टः सर्वतोभद्रहिङ्गुनिर्यासमालकाः ॥ ६२ ॥
पिचुमर्दश्च निम्बेथ पिच्छिलागुरुशिंशपा ।
कपिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः ॥ ६३ ॥
भण्डिलोप्यथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ।
एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे ॥ ६४ ॥

॥ ५९ ॥ हरति रोगान् हरीतकी । चेत्यतेनया रोगः शुद्धेश्चेतकी । आह च– हरीतक्यभया पथ्या प्रपथ्या पूतनामृता । जयाव्यथा हैमवती कायस्था चेतकीति च ॥ द्व्यर्थे श्रेयसी रास्ना हरीतकी हस्तिपिप्पली च। शिवाव्यथा पूतनेति चन्द्रः । सरलः, ऋजुत्वात्, आह च– सरलः पूतिकाष्ठं च चित्रा पीतद्रुरुच्छ्रितः । द्रुमोत्पलानीव पुष्पाण्यस्य द्रुमोत्पलः, सुरभिश्च यम्, अन्यो निर्गन्धः ॥ ६० ॥ कर्णिकामियर्ति कर्णिकारः । द्व्यर्थे परिव्याधो जलवेतसः कर्णिकारश्च । लक्यत आस्वाद्यते लकुचः । दह्यते डहुः । पन्यते स्तूयते पनसः, पषस इति दुर्गः । लोकोक्त्या कण्टकयुक्तफलः । महासर्गोपि । निचोल्यतेम्बुना निचोलः (निचुलः) । हितजलस्यापभ्रंशो हिज्जलोम्बुवेतसविशेषत्वात् ॥ ६१ ॥ काकप्रियोदुम्बरी । फलति फल्गुः । मलं श्वित्रं पावयति मलपूः श्वित्रभेषजम्, (मलयूः) यु जुगुप्सायाम् । जघने बुध्ने फलान्यस्या जघनेफला, आह च– काकोदुम्बरिका फल्गुरराजी फल्गुवाटिका । फल्गुनः फलभारी च मलयूः श्वित्रभेषजम् ॥ हिङ्गुगन्धिनिर्यासोस्य । माल्यते वेष्ट्यते काकैर्मालकः, शुकमालकैकदेशश्चायम् ॥६२॥ पिचुं मर्दयति पिचुमर्दः, अरोगत्वात्, पिचुमन्द इत्येके । पवनेष्टोपीति सौश्रुताः । शाश्वतस्तु– हिङ्गुनिर्यासशब्दोयं निम्बे हिङ्गुरसेपि च । चन्द्रनन्दनस्तु शुकमालकमाह । अगुरुतुल्यसारा शिंशपा अगुरुशिंशपा, यदाह– शिंशपा तु महाश्यामा कृष्णसारः स्मृतोऽगुरुः । अगुरुर्धूपद्रव्यं शिंशपासारं चाहुः। द्व्यर्थे पिच्छिला शाल्मलिः शिंशपा च, यदाह– कुशिंशपान्या कपिला भस्मगर्भा च सादिनी । शिरसीष्यते शिरीषः, शीर्यते वा सौकुमार्यात् ॥ ६३ ॥ भण्ड्यते भण्डिलः, भण्डिरोपि, आह च– शिरीषो मृदुपुष्पश्च भण्डिरः शङ्खिनीफलः । कपीतनः शुकतरुः श्यामवल्कः शुकप्रियः ॥ भण्डीत्येके । चम्पादेशे भवश्चाम्पेयः । चम्प्यतेऽलिभिश्चम्पकः, चाम्पकोपि । आह च– चम्पकः सुकुमारश्च सुरभिः शीतलश्च सः । चाम्पेयो हेमपुष्पश्च काञ्चनः षट्पदातिथिः ॥ गन्धः फलमस्या गन्धफली । प्रियङ्गुश्चम्पककलिकाचेति द्व्यर्थे गन्धफली । के सरति केसरः सन्त्यस्य वा केसरः ॥६४॥ उच्यते बकुलः । आह च– बकुलः सीधुगन्धश्च मद्यगन्धोथ शारदः । मधुगन्धो गूढपुष्पः शिम्बी केसरकस्तथा ॥ अश्नुतेऽशोकः, शोकनाशकत्वाद्वा । यदाह– अशोकः शोकनाशश्च विचित्रः कर्णपूरकः । द्व्यर्थे वञ्जुलो वेतसः स्यन्दनोशोकश्च । किरति कणान्करकः । दाल्यते दाडिमः । आह च– दाडिमो दालिमः सारः कुट्टिमः फलषा(शा)डवः । स्वाद्वम्ल्लो रक्तबीजस्तु करकः शुकवल्लभः ॥ नागप्रियाणि केसरवन्ति पुष्पाण्यस्य नागकेसरः । आह च– नागपुष्पो

भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च ।
पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुण्यथ द्वयोः ॥ ५४ ॥
पाटलिः पाटलामोघा काला स्थाली फलेरुहा ।
कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी श्यामा तु महिलाह्वया ॥ ५५ ॥
लता गोवन्दनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली ।
विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ॥ ५६ ॥
मण्डूकपर्णपत्त्रोर्णनटकट्वङ्गटुन्दु(टुण्टु)काः ।
स्योनाकः शुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ॥ ५७ ॥
शोनकश्चारलौ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ।
अमृता च वयस्था च त्रिलिङ्गस्तु बिभीतकः ॥ ५८ ॥

देवकाष्ठं भद्रकाष्ठं पूतिकाष्ठं च दारु च । सुरदार्विन्द्रवृक्षश्च तथैवामरदारु च ॥ स्यर्थे पारिभद्रः कोलिः पारिजातो देवदारु च, तथा पीतदारुर्दारुहरिद्रा देवदारु पूतिकाष्ठं च । किलिमं च दार्विति पदैकदेशत्वा-द्भीमवत् ॥ ५४ ॥ पाटला ताम्रपुष्पत्वात् । अमोघा बहुफलत्वात् । काला कालवृन्तत्वात् । स्थाली रसा-धारः कुम्भीत्वात् । काचस्थालीत्येके । फले रोहति (फलेरुहा) साङ्कुरफलत्वात् । कुबेराक्षी यक्षाक्षि-तुल्यपुष्पत्वात् । आह च– पाटलोक्ता तु कुम्भीका ताम्रपुष्पाम्बुवासिनी । स्थाली वसन्तदूती स्यादमो-घा कालवृन्तिका ॥ द्वितीया पाटला श्वेता निर्दिष्टा काष्ठपाटला । सा चैव श्वेतकुम्भी स्यात्कुबेराक्षी फले-रुहा ॥ पाटली कृष्णवृन्तेति नेति [मि] मिः । पाटला पाटलिर्वा नेति माला । श्यामा श्यामगौरवर्णात् । महिलाह्वया वनितापर्याया श्याम(मा) त्वात् ॥ ५५ ॥ गवि भूमौ वन्द्यते गोवन्दनी । गुधते क्रीडयते गुन्द्रा । प्रीणाति प्रियङ्गुः । फलति विशीर्यते फली । विष्वक् सिनोति सर्वतो बध्नाति विष्वक्सेना । ईषद्रम्भाकारा कारम्भा । आह च– प्रियङ्गुः प्रियवल्ली च फलिनी क्राङ्गिनी (?) प्रिया । वृक्षा गोव-न्दनी श्यामा कारम्भा वर्णभेदिनी ॥ दुन्दुर्गोवन्दनीति भिनत्ति, यदाह– वन्दनी पुष्पशो-भना । गन्धप्रियङ्गुः कारम्भा लता गौर्वर्णभेदिनीति ॥ स्यर्थे गुन्द्रा– एरका प्रियङ्गुः श(स)रा च, तथा प्रियकोसनः प्रियङ्गुः कदम्बश्चेति । द्व्यर्थे गन्धफलिनी प्रियङ्गुश्चम्पककलिका च ॥ ५६ ॥ मण्डूक इव पर्णान्यस्य(मण्डूकपर्णः) । पत्त्रैपूर्णोऽस्य पत्त्रोर्णः । नटति वातेन नटः । कटून्यङ्गान्यस्य रौक्ष्यात्क-ट्वङ्गः । दुन्दुति शिम्बिभिः कायति दुन्दुकः । स्योनमुखमकति स्योनाकः । शुकनासेव पुष्पाण्यस्य (शुकनासः) । ऋक्ष्णोति हिनस्ति ऋक्षः, अत एव भाल्लुकः । कुटन्नकीभवन् नटति स्पन्दते कुटन्नटः ॥ ५७ ॥ शवति शोनकः, गौडाः शोषकमाहुः, शोण वर्णे । इयर्त्यरलुः । आह च– स्योनाकः शुक-नासश्च कट्वङ्गोथ कटम्भरः । मयूरजङ्घोरलुकः प्रियजीवः कुटन्नटः ॥ सप्रोक्तः पृथुशिम्बिश्च टुन्टुको दीर्घवृन्तकः । भाल्लुकः शाकोफल्गुवृन्तको अम्बुको नटः ॥ तिष्यं मङ्गल्यं फलमस्यास्तिष्यफला, नित्यमामलके लक्ष्मीरिति । आमलते गुणानामलकी, अमला च । अमृता वयस्था च रसायनत्वात् । धात्री नानार्थे । आह च– वयस्यामलकं तिष्यं धातीफलरसं शिवम् । धात्रीफलं श्रीफलं च तथामृतफलं स्मृतम् ॥ बिभेत्यस्माद् बिभीतकः ॥ ५८ ॥ अक्ष्णोति व्याप्नोत्यक्षः, ना पुमान्– फले पुंलिङ्गः । पु(तु)ष्यति तुषः, इति निघण्टुषु न संवादस्तेषु तु मूलवर्गपाठात् । कर्षफलोऽक्षसामान्यात्, कर्षो बिभीतके पलचतुर्भागे च वर्तते । भूतानामावासः । कलेराश्रयो द्रुमः। आह च– बिभीतकः कर्षफलो वस-न्तोक्षः कलिद्रुमः । संवर्तको भूतवासः कर्षोऽहार्यो बिभीतकः ॥ इन्दुश्च– आ(अ)हार्यं बहुवीर्यं च तुमुलं च विभेदकम् । नास्ति भयमस्या अभया । न व्यथयत्यव्यथा । पथि साधुः पथ्या, हितेत्यर्थः । कायं तिष्ठति निष्फला न भवति कायस्था, वयस्थेत्येके । पूतं करोति पूतना विरेचनीत्वात्, पूतनेत्येके

चिरि(र)बिल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ।
प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ॥ ४८ ॥
करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ।
रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ॥ ४९ ॥
गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ।
अरिमेदो विट्खदिरे कदरः खदिरे सिते ॥ ५० ॥
सोमवल्कोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगन्धर्वहस्तकौ ।
एरण्ड उरुबूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ॥ ५१ ॥
चञ्चुः पञ्चाङ्गुलामण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ।
अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी सक्तुफला शिवा ॥ ५२ ॥
पिण्डीतको मरुवकः श्वसनः करहाटकः ।
शल्यश्च मदने शक्रपादपः पारिभद्रकः ॥ ५३ ॥

द्वयर्थे करजः करञ्जो नखश्च ॥ ४८ ॥ षड् ग्रन्थयोऽस्य हस्तिवारणाख्यः । मर्कत्यङ्गपाटनान्मर्कटी वल्ली-करञ्जः । अङ्गारा इव वल्लयोऽस्या अङ्गारवल्लरी । आह च– उदकीर्यस्तृतीयोऽन्यः षड्ग्रन्थो हस्तियारणी । अङ्गारवल्ली शादस्या काकघ्नी करभालिका ॥ स्यर्थे मर्कटी– आत्मगुप्तापामार्गो वल्लीकरञ्जश्च । रोहयति रोहितः, रोहनीत्येके छिन्नरूढत्वात् । धन्वन्त्रश्च– रोहितको रोचनकः प्लीहघ्नो रक्तपुष्पकः । रक्तघ्नो रोहितो रक्तो रोही दाडिमपुष्पकः ॥ ४९ ॥ गायतो विप्रांस्त्रायतेऽवश्यं गायत्री । बालपत्रो यवासः खदि-रश्चेति द्वयर्थेषु धन्वन्तरिपाठमदृष्ट्वा बालपुत्रभ्रान्त्या ग्रन्थकृद्बालतनयमाह । सूक्ष्मपर्णोऽप्यसौ । खदति खदिरः, खद स्थैर्ये । आह च– खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः । कण्टकी बालपत्रश्च जिह्म-शल्यः क्षितिक्षमः ॥ अरिर्दुःसहो मेदः सारो[स्रावो]स्यारिमेदः । विड्गन्धिः खदिरः पूतिखदिराख्यः । आह च– परिमेदोऽरिमेदश्च गोधास्कन्धोऽरिमेदकः । अहिमेदोऽहिमारश्च रिभः पूत्यरिमेदकः ॥ कं दृणाति कफघ्नत्वात्कदरः ॥ ५० ॥ सोमवल्कोऽकण्टकित्वात्– शुक्लत्वाद्वा । आह च– कदरः श्वेतसारोऽन्यः सोम-वल्कः पथिद्रुमः । त्र्यर्थे सोमवल्कः खदिरः कट्फला करञ्जश्च । व्याघ्रस्येव पुच्छमस्य व्याघ्रपुच्छः । गन्धर्वस्य भूतविशेषस्येव मृगविशेषस्येव वा हस्तोऽस्य गन्धर्वहस्तः पञ्चाङ्गुलिपर्णत्वात् । एरयति वायु-मेरण्डः । उरु वात्युरुबूकः । रोचते रुचकः ॥ ५१ ॥ चंचति चञ्चुः, चञ्चुरित्येके । पञ्चाङ्गुलयोऽस्य पञ्चाङ्गुलः । आमण्डयतीत्यामण्डः, आदण्ड इत्येके दीर्घदण्डत्वात् । व्यडतिव्यडम्बकः, अड उद्यमे, व्यडम्बक[न]इत्येके । आह च– एरण्डस्तरुणः शुक्लश्चित्रो गन्धर्वहस्तकः । पञ्चाङ्गुलो वर्धमान आ-मण्डो दीर्घदण्डकः ॥ रक्तोपरो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रतलो रुबुः[बुः] । उरुबूको हस्तिपर्णश्चञ्चुरुत्ता-नपत्रकः ॥ अल्पेऽर्थे, कुटीशमीशुण्डाभ्योरः (सू०)। शमयति दोषाञ्छमी शिवात्वात् । सक्तव इव फलान्यस्याः । आह च– शमी सक्तुफला तुङ्गा केशहन्त्रिफला शिवा ॥५२॥ पिण्डीमितः पिण्डीतकः । म्रियन्तेऽनेन विषपुष्पत्वान्मरुवकः, मरो वाति वा । श्वसन्त्यनेन श्वसनः । करं हन्ति दुःस्पर्शत्वात्करं रह-यति वा करहाटकः । शल्यमस्यास्ति शल्यः । मदयति मदनः । आह च– मदनः शल्यको राढः [वाथ] पिण्डी पिण्डीतकस्तथा । तस्करः करहाटश्च श्वसनो विषपुष्पकः ॥ द्वयर्थे मरुवको जम्भीरो मदनश्च, यच्छाश्वतः– पिण्डीतके पद्म हन्दे करहाटपदं विदुः । पारि निष्ठाप्राप्तं भद्रमस्य पारिभद्रकः॥५३॥ द्वौ स्कन्धे किलिमं निर्यासास्य द्रुकिलिमम् । पूतिरुग्रगन्धं काष्ठमस्य पूतिकाष्ठम् । सप्तग्रहणं द्रुकिलिमस्यै-कार्थं, यदाह– देवदारु स्मृतं दारु सुराह्वं किलिमं च तत् । स्नेहविद्ध महादारु भद्रदार्विन्द्रदारु च ॥

क्षीरवृक्षोऽप्लक्षोऽश्वत्थौ भल्लातकी त्रिषु ।
गर्दभाण्डे कन्दरालकपीतनसुपार्श्वकाः ॥ ४३ ॥
प्लक्षश्च तिन्तिडी चिञ्चाम्लिकाथो पीतसालके ।
सर्जकासनबन्धूकपुष्पप्रियकजीवकाः ॥ ४४ ॥
साले तु सर्जकार्श्यो(र्ष्या)श्वकर्णकाः सस्यसंवरः ।
नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ॥ ४५ ॥
राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामथ द्वयोः ।
इङ्गुदी तापसतरुर्भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ॥ ४६ ॥
पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ।
पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः ॥ ४७ ॥

सशब्दं भाण्डमस्येति युक्तं कन्दरालत्वात् । कं पीतयति कपीतनः, कपीते[ने]ति वा । आह च- प्लक्षः कपीतनः शु(शृ)ङ्गी सुपार्श्वश्चारुदर्शनः । प्लक्षो गर्दभाण्डश्च कमण्डलु पटः प्लवः ॥ ४३ ॥ तिम्यति तिन्तिडी । चिञ्चिमायतेऽम्लत्वान्मुखं यस्यासौ चिञ्चा, फलतश्चुक्रिका । आह च(चन्द्रः)- आम्लिका चुक्रिका चुक्रा साम्ला शुक्राथ शुक्तिका । अम्लिका चाश्वि[म्लि]का चिञ्चा तिन्तिडीकं च तिन्तिडी ॥ पीतवर्णः सालः (पीतसालः) । सृजति निर्यासं सर्जः । अस्यत्यसनः । बन्धूकस्येव रक्तानि पुष्पाण्यस्य बन्धूकपुष्पः । काम्यत्वात्प्रियत्वात्प्रियकः । जीवयति जीवकः । बीजक इति तु निघण्टुः, संज्ञया बीजको ज्ञेयो बीजपूरस्तथासनः । आहुश्च- बीजकस्त्वसनः काम्यः सौरिः कृष्णोलव[क]प्रियः । तिष्यपुष्पः पीतसालः प्रियकः प्रियसालकः ॥ सुगन्धिनीलनिर्यासस्तथा बन्धूकपुष्पकः । स स्यात्प्रियकसालश्च महासर्जश्च नामतः॥४४॥ स्यति सालः । कृश्यति कार्श्यः । अश्वकर्णाभपत्त्रः (अश्वकर्णकः) । सस्यं फलं संवृणोति सस्यसंवरः । आह च- सर्जकश्चाश्वकर्णश्च कषायी दीर्घपत्रकः । सस्यसंवरणः शूरः सर्जकः साल उच्यते ॥ वीरतरुर्जुननामसाम्यात् । ककुभः सन्त्यस्य दिग्व्यापकत्वात्ककुभः, कंस्कुभ्नातीत्यन्यया व्याख्या । अर्जुनः शौक्ल्यात्, इन्द्रप्रियत्वादित्येके । आहेन्दुः- ककुभस्त्वर्जुनः पार्थो नदीसर्जो धनंजयः । अश्रीफलश्चित्रयोगी वीरो वीरान्तकस्तथा ॥ ऽप्यर्थे- इन्द्रद्रुः कुटजोऽर्जुनो देवदारु च ॥ ४५ ॥ क्षीरिका क्षीरस्वादुत्वात्, आद्ये तु मिष्टामत्वाम्नामनी । आह च- क्षीरिकोक्ता च राजन्यः क्षीरी मृत्सूप[प]को नृपः । राजादनो दृढस्कन्धः कपीष्टः प्रियदर्शनः ॥ इङ्गतीङ्गुदः । तापसा ह्यरण्येस्याः स्नेहमुपभु(यु)ञ्जत । भृणाति भूर्जः, भूर्जातो वा । आहुश्च- भूर्जो भूर्जो बहुपटो बहुत्वक्को मृदुच्छदः ॥ ४६ ॥ पिच्छास्त्यस्याः पिच्छिला । पूरयति पूरणी । मुञ्चति रसं मोचा । स्थिरायुः कालसहत्वात् । शाल्मते दैर्घ्याच्छलति वा शाल्मली शाल्मलिश्च । आह च- शाल्मली रक्तपुष्पा च कुक्कुटी स्थिरजीविता । पिच्छिला तूलिनी मोचा कण्टकारी च पूरणी ॥ मोचनीति च । पिच्छेव पिच्छा, आचामवदङ्गुलिसंगित्व त् । शाल्मल्या वेष्टो निर्यासः । आह च- शाल्मलीवेष्टकः पिच्छा निर्यासः स च शाल्मलः । मोचसारो मोचरसो मोचनिर्यासकस्तथा ॥ रोचते रोचनः शाल्मलिविशेषः । कूटेन कुत्सितत्वं द्योत्यते, दुर्गादेर्हि परसैन्यदलनार्थं सा क्षिप्यते । आह च- कुशाल्मलिः शाल्मलिको रोचनः कूटशाल्मलिः ॥ ४७ ॥ चिरिणं बिलति भिनत्ति चिरिबिल्वः । नक्तं रात्रावालमस्मान्नक्तमालो भूताश्रयत्वात्, रक्तमाल इत्येके । कं रञ्जयति करञ्जः (करजश्च) । प्रकीर्यते प्रकीर्यः । पूतिको दुर्गन्धः । कलेर्मारकः कलहहन्, यदिन्दुः- करञ्जो रक्तमालश्च पूतिकश्चिरिबिल्वकः । घृतपूर्णकरञ्जोऽन्यः प्रकीर्यो गौर एव च ॥ पूतीकरञ्जः सुमनास्तथा कलहनाशनः ॥

विकङ्कतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ।
ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ॥ ३८ ॥
तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ।
काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ॥ ३९ ॥
गोलिहो झाटलो घण्टा पाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ।
तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समौ पिचुलझावुकौ ॥ ४० ॥
श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैड(ट)र्यकट्फलौ ।
क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ॥ ४१ ॥
तू(नू)दस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ।
तूलं च नीपप्रियककदम्बास्तु हलिप्रिये ॥ ४२ ॥

आम्नाता । आह च– विकङ्कतः पृथुफलो ग्रन्थिलः स्वादुकण्टकः । गोपकण्टः काकपादो व्याघ्रपादोथ किङ्करी ॥ इरावत्या विद्युत इवायं रक्तत्वादैरावतः । नागस्य सिन्दूरस्येव रङ्गोस्य नागरङ्गः, नागच्छवि सहसा रङ्गोस्य वा । आह च– नागरङ्गस्त्वक्सुगन्धो नागरङ्गो मुखप्रियः । स चैरावतकः प्रोक्तः सुधानक्षाधिवासनः ॥ नादेयी नदीजाता । भूमौ जम्यतेद्यते भूमिजम्बूः । चत्वारो नागरङ्गार्था इति गौडः । आह च– जम्बूः सुरभिपत्रा च राजजम्बूर्महाफला । काकजम्बूर्मेघवर्णा नादेयी चेदिशोत्थकः (?) ॥ ३८ ॥ तिम्यति तिन्दुकः । शितिः कालः सारो मज्जास्य शितिसारः । आह च– तिन्दुको नीलसारश्च कालस्कन्धोसितसारः । स्फूर्जकः स्फूर्जशब्दोपीति । काकवर्णस्तिन्दुः काकेन्दुः । कुत्सितैर्लक्ष्यते कुलकः, लक आस्वादने । द्व्यर्थे कुलकः काकतिन्दुकः पटोलोपि । आह च– तिन्दुकोन्यो द्वितीयस्तु स्फूर्जकः काकतिन्दुकः । काकेन्दुकश्च विख्यातः कुपीलुः काकपीलुकः ॥ मर्कटतिन्द्वाह्वयः ॥३९॥ गोभिर्लिह्यते गोलिहः, गोलीढोपि । झाटं संघातं लाति झाटलः । हन्यते घण्टा । पाटं विस्तारं लाति पाटलिः । मोक्षति सहते मोक्षः । मुष्णाति रोगान् क्षारकत्वान्मुष्ककः । आह च– मुष्कको मोक्षको घण्टा मूषको रञ्जकस्तथा । क्षारश्रेष्ठो गोलिहश्च द्विविधः श्वेतकृष्णकः ॥ तिलाभपुष्पस्तिलकः । क्षुरति पत्रपत्वात्क्षुरकः । आह च– तिलकः पुरुषः श्रीमान् क्षुरकश्छन्नपुष्पकः । पिचुं तूलं लाति पिचुलः । ध्यायतेर्झावुकोपभ्रष्टः ॥ ४० ॥ श्रीपर्णी सुपर्णत्वात्, पाककर्णपर्णेति (सू०) ङीष् । [कुमुदप्रतिकृतिः कुमुदिका, कौ मोदते वा] । कुम्भी रसाधारत्वात् । कं रसमटति कैडर्यः, अविभावितप्रकृतिप्रत्ययार्थोयं वा । कटत्यावृणोति कषायत्वात्फलमस्य कट्फलः । आह च– कट्फलः सोमवल्कश्च श्रीपर्णी कुमुदा तथा । महाकुम्भी च कुम्भी च भद्रा भद्रवतीति च ॥ द्व्यर्थे कैडर्ये कट्फलो मदनफलं च । क्रामति क्रमुकः । पट्टोस्यास्ति पट्टी पट्टिका, रोध्रोयम् । लाक्षां प्रसादयति, रोध्रप्रस्तावे व्याख्यातमेतत् ॥४१॥ तुद्यते तूदः । यूपप्रतिकृतित्वाद्यूपः । ब्रह्मणि वेदिके साधुर्ब्रह्मण्यः, अत एव ब्रह्मदारु । तूल्यते तूलं, तूलीति गौडः, तूल निष्कर्षे । आह च– तूलं तूदं च यूपं च क्रमुकं ब्रह्मदारुकम् । ब्रह्मदारु ब्रह्मनिष्ठं ब्रह्मण्यं ब्रह्मचारि च ॥ नयति सुखं नीपः । प्रीणाति प्रियकः । के दाम्यति कदम्बः । हलिनः प्रियः सुराधिवासनात् । धाराकदम्बो राजकदम्बश्चासौ, धूलीकदम्बोन्यः । आह च– परः कदम्बः प्रावृषेण्यः कादम्बर्यो हलिप्रियः । नीपो धूलिकदम्बोन्यः सुवासावृत्त[त]पुष्पकः ॥ ४२ ॥ विशेषेणेरयति वीराणां वा वृक्षो दुःस्पर्शत्वात् । अरुंषि स्फोटैर्व्रणान् करोति– अरुष्करः, दिवाविभेति (सू०) टः । अग्निवन्मुखमस्या दाहकत्वादग्निमुखी । भल्ल इवातति दृणाति (भल्लातकः) । आह च– भल्लातकः स्मृतो दुःखो दहनस्तपनोग्निकः । अरुष्करो वीरतरुर्भल्ली चाग्निमुखी धनुः ॥ गर्दभ इवाण्डमस्य गर्दभाण्डः, गर्द

गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ ।
आम्रश्चूतो रसालोसौ सहकारोतिसौरभः ॥ ३३ ॥
कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः ।
कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ॥ ३४ ॥
शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः ।
राजादनं पियालः स्यात्सन्नकद्रुर्धनुःपटः ॥ ३५ ॥
गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ।
श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ॥ ३६ ॥
कर्कन्धु(न्धू)र्बदरी कोलिर्घोण्टा कुवलफेनिले ।
सौवीरं बदरं कोलमथ स्यात्स्वादुकण्टकः ॥ ३७ ॥

कषायकृद्ग्रथिलको मधुपुष्पकः । ग्रणोपध कालहीनो हिमपुष्पोसिभेषजम् ॥ उत्सादनो घनत्वक्कस्तरः शाबरादनः । रोध्रः शाबरकः श्वेतत्वगतीसारभेषजम् ॥ द्वितीयः पट्टिकारोध्रो वृहत्वस्त्रस्तिरीटकः । उत्तालकस्तिल्वकश्च पट्टी लाक्षाप्रसादनः ॥ अम्यतेभिलष्यत आम्रः, अमितम्योर्दीर्घश्च (उ०) इति रक् । च्योतति रसं चूतः, चूष्यत इति श्रीभोजो निरवोचत् । रसमलति रसालः । सहकारयति मेलयति स्त्रीपुंसौ सहकारः, सुरासखत्वाद्वा । यदाह– आम्रश्चूतो रसालश्च सचेष्टो मदिरासखः । कामाङ्गः सहकारश्च परपुष्टमहोत्सवः ॥ ३३ ॥ कुम्भोलूखलाकाराद् वृक्षकोशान्निर्याति कुम्भोलूखलकम् । कोशे भवः कौशिकः, उलूकस्येव नक्तंचरत्वात् । गुडति रक्षति वातरोगाद् गुग्गुलुः । पिपर्ति पुरः, इगुपधेति (सू०) कः, उदोष्ठ्यपूर्वस्य (सू०) इत्युत् । आह च– गुग्गुलुः कालनिर्यासो जटायुः कौशिकः पुरः । नक्तंचरः शिवो दुर्गो महिषाक्षः फ(प)लंकषः ॥ ३४ ॥ शिलति शिनोति रोगान्वा शेलुः शेलुकश्च । श्लेष्माणमतति शीतवीर्यत्वाच्छ्लेष्मातकः, अत एव शीतः । उद्दालयत्यङ्गमुद्दालकः स्पर्शेन स्फोटकारित्वात् । बहु वृणोति स्रोतांसि बहुवारः । आहेन्दुः– शेलुः श्लेष्मातकः शीतो वसन्तकुसुमस्तथा । उद्दालकः कर्बुरकः शेलुको भूतवृक्षकः ॥ पिच्छिलः शापितः शेलुस्तथा(स्त)द्राजकुत्सितः ॥ लेखवाटो बहुवार इति । राज्ञामदनं मिष्टत्वात् । पियति सरलत्वात्पियालः, रि पि गतौ, अपियालेके । सन्नकः खर्जुदुः स्कन्धोस्य सन्नकद्रुः । धनुष इव पटो विस्तारोस्य धनुःपटः, धनुरुकारान्तो व्यस्त इति गौडो भ्रान्तः, यदाहुः– पियालोथ खरस्कन्धश्चारो बहुलवल्कलः । सन्नकद्रुश्चापपटो लस्ने[ल]नस्तापसप्रियः ॥ द्वयं राजादनः पियालः क्षीरिका च ॥ ३५ ॥ गमे सरसत्वाद् भारोस्या गम्भारी । कृश्यति तनूकरोति काश्मरी काश्मर्यश्च । मधूनि मिष्टानि पर्णान्यस्या मधुपर्णी, पाककर्णपर्णेति (सू०) ङीप् । आह च– काश्मर्यः काश्मरी हीरा कश्मरी मधुपर्ण्यपि । श्रीपर्णी सर्वतोभद्रा गम्भारी कृष्णवृन्तिका ॥ ३६ ॥ कर्कों लोहितोन्धुः कर्कन्धुः, शकन्ध्वादित्वात्पररूपम् (वा०) । वदति बदरी, वद स्थैर्ये । कोलिः, कुल संस्त्याने, कुल(ड) यत्यस्माद्वा । घुणति वृक्ष[स्त]त्वाद् भ्रमति घोण्टा । कौ भूमौ वलति कुवलम् । फेनिलं कफवर्धनात् । सुवीरदेशे भवं सौवीरम् । अत्र याख्यो वृक्षार्थाः, अन्ये फलार्थाः, घोण्टा तूभयस्पृक्, यथेन्दुः– बदरी स्निग्धपत्रा च राष्ट्रवृद्धिकरी तथा । फलं तस्याः स्मृतं कोलं कोकिलं फेनिलं कुहम् ॥ लोलं सूक्ष्मफलं तत्तु ज्ञेयं कर्कन्धु कन्दुकम् । स्वादुः कटुः सिद्यतिका तस्य कोलं फलं मतम् ॥ धन्वन्तरिः सामान्येनाह– बदरं कोविल कोल सौवीर फेनिलं कुलम् । कर्कन्धुः कन्दुकं स्वादुः कटु सिद्यतिका गुडा ॥ द्वयं कुवलं नालाब्जं बदरं च । कोकिलफलत्वात्कोलिरिति च सभ्यः पाठः, कोलफलमिति तु वैद्याः । चन्द्रोपि– बदरी गोरघोण्टा च घोण्टा घुण्टा च कोकिला । स्निग्धपत्रा [illegible] राष्ट्रवृद्धिकरी तथा ॥३७॥ विकङ्कते प्रसरति विकङ्कतः, कङ्कि गत्यर्थः । स्रुवा स्रुक्; [illegible]

अक्षोटकन्दराली द्वावङ्कोटे तु निकोचकः ।
पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथोऽथ वेतसे ॥ २९ ॥
रथाभ्रपुष्पविदुलशीतवानीरवञ्जुलाः ।
द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥
सौ(शो)भाञ्जने शिग्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमोचकाः ।
रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्यादरिष्टः फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥
बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूरश्रीफलावपि ।
प्लक्षो जटी पर्कटी स्यान्न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥ ३२ ॥

स्कष्टकित्वान्निकोचकः । आह च– अङ्कोटाङ्कोलकौ रेची निर्दिष्टो दीर्घकीलकः । पीतसारस्ताम्रफलो गन्धपुष्पो निकोचकः ॥ प्रशस्तानि पलाशानि सन्त्यस्य पलाशः, पलमश्नुते रक्तपुष्पत्वाद्वा । किंचिच्छुकवन्नीलः किंशुकः । वातं पोथयति वातपोथः । चन्द्रोऽत्र– पलाशः किंशुकः पर्णो यज्ञियो रक्तपुष्पकः । क्षारश्रेष्ठो वातपोथो ब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ॥२९॥ वेत्यम्भोनुवर्तते वितस्यत वा वेतसः । रमन्तेऽस्मिन्रथः । अभ्राणीव पुष्पाण्यस्याभ्रपुष्पः । विदाल्यते वेगेन विदुलः । शीतो वीर्येण श्लेष्मादिशमनात् । वनति भजत्यम्बु वानीरो वञ्जुलश्च । परिविध्यतेऽम्भसा परिव्याधः । नद्यां भवा नादेयी, नित्यं स्त्री, वेतसी तु द्व्यमेः । त्रिष्वर्थेष्विन्दुर्नादेयी तर्कारी जलवेतसौ भूमिजम्बूश्च । चन्द्राद्या विभागेनाहुः– वेतसो विदुलो नम्रो वञ्जुलो दीर्घपत्रकः । नादेयी गन्धपत्रश्च जलौकाः सम्भृतस्तथा ॥ नदीकूलप्रियस्त्वन्यः सुशीतो घनपुष्पकः । जलजातस्तोयकामो विदुलो जलवेतसः । निचुलो वेतसादन्यो वक्ष्यते (स्थलवेतसः) ॥३०॥ सुष्ठु भनक्ति मुखं सौभाञ्जनः । शिनोति तैक्ष्ण्याच्छिग्रुः । न क्षीवन्त्यनेन कृष्य [क्ष] त्वादक्षीवः । मुष्णाति गन्धं मोचकः । आहुश्च– शिग्रुः स्याच्छञ्जनमरिचं मुखभञ्जनितीक्ष्णकः । सौभाञ्जनस्तीक्ष्णगन्धः सुतीक्ष्णो घनपल्लवः ॥ शिग्रुर्हरितशाकोऽन्यो मतो मूलकपल्लवः । घनच्छदस्तीक्ष्णगन्धो मु[म]रङ्गी दंशनक्षमः ॥ तृतीयो मधुशिग्रुः स्यात्– । ऽर्थे मोचकः कदली शाल्मलिः सौभाञ्जनश्च । चतुर्ष्वर्थेष्विन्दुरक्षीवः समुद्रलवणं नीली महानिम्बः सौभाञ्जनश्च । मधुप्रधानः शिग्रुः (मधुशिग्रुः) । न रिष्यन्त्यनेनारिष्टो रक्षाहेतुः । फेनाः सन्त्यस्य फेनिलः । चन्द्रोऽत्र– अरिष्टस्तु सुमङ्गल्यः कृष्णबीजोऽर्थसाधनः । रक्षाबीजः शीतकेनः फेनिलो गर्भपातनः ॥ ३१ ॥ बिलति भिनत्ति बिल्वः । शण्डिलपौत्रः शिलुरज इत्यागमाद्यजणौ, शाण्डिल्य इव ब्राह्मणमन्यत्वात्, शैलूष इव नानारूपपरिवर्तनाद्वा । मलते मलान्मालूरः, मा लक्ष्मीं लाति वा । श्रीप्रदानि फलान्यस्य श्रीफलः । आह च– बिल्वः शलाटुः शाण्डिल्यो हृद्यगन्धः सदाफलः । शैलूषः श्रीफलश्चयाह्वः कङ्कटः पूतिमारुतः ॥ प्लक्षत्यधो गच्छति मूलैः प्लक्षः, प्लुष्यते (प्लक्ष्यते) वा । जटाः सन्त्यस्य जटी । अत एव पृच्यते पर्कटी, इन्नन्तोऽयं, ईदन्तोऽप्यस्ति, यच्छाश्वतः– विज्ञेया पर्कटी प्लक्षः प्लक्षः पिप्पलपादपः । न्यक् तिर्यग्रुणद्धि मार्गं मूलैर्न्यग्रोहति वा न्यग्रोधः, न्यङ्क्वादित्वात् (सू०) धत्वम् । बहवः पादा मूलान्यस्य बहुपात्, संख्यासुपूर्वस्येति (सू०) अन्तलोपः । वट[य]ति वेष्टयति मूलैर्वटः । आह च– वटो रक्तफलः शृङ्गी न्यग्रोधः कुन्दजो ध्रुवः । क्षीरी वैश्रवणावासो बहुपादो वनस्पतिः ॥ ३२ ॥ आद्यौ श्वेतलोध्रे तिरीटाद्या रक्तलोध्रे । गालयति स्रावयत्यक्षि गालवः । शाबरः शबरवृक्षः । रुणद्धि व्रणं रोध्रः, रलयोरैक्याल्लोध्रोऽपि । तिरयति रोगांस्तिरीटः । तिलति स्निग्धत्यङ्गमनेन तिल्वः । मार्ष्टि उद्वर्तयत्यङ्गं मार्जनः, अत एवो न्मा(त्सा)दनः । आह च– लोध्रो रोध्रः शाबरकश्चक्रकास्तिल्वकस्तरः । तिरीटः कालहीनश्च चिल्ली शबरपादपः ॥ द्वितीयः पट्टिकारोध्रो गालवः स्थूलवल्कलः । जीर्णबुध्नो बृहद्वल्कः पट्टी लाक्षाप्रसादनः ॥ इन्दुश्च– रोध्रः

सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।
आरग्वधे राजवृक्षशम्याकचतुरङ्गुलाः ॥ २३ ॥
आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।
स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥
वरणो वरुणः सेतुस्तिक्तशाकः कुमारकः ।
पुंनागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥
पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।
तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥
वञ्जुलश्चित्रकृच्चाथ द्वौ पीतनकपीतनौ ।
आम्रातके मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥
वानप्रस्थमधुष्ठीलौ जलजेऽत्र मधूलकः ।
पीलौ गुडफलः स्रंसी तस्मिंस्तु गिरिसंभवे ॥ २८ ॥

म्याकः । चतुरङ्गुलपर्वा ॥२३॥ रेवती रोगदेवता, अरेवत्यां भव आरेवतः, आरेवते ज्वरोनेन वा, रेवृ प्लवगतौ । कृता मालास्य कृतमालः, उत्तम्भित इव सकर्णिकत्वात् । आह च– कर्णिकारो राजवृक्षः प्रग्रहः कृतमालकः । आरोग्यशिम्बी शम्याको व्याधिघातोपघातकः ॥ आरग्वधो दीर्घफलो व्याघातश्चतुरङ्गुलः । आरेवतस्तथा कर्णी कर्णावान् स च रेवतः ॥ जम्भ्मर्[भ]हनार्थस्यैतानि रूपाणि । दन्तशठोम्लत्वात् । आह च– जम्भीरो जम्भलो जम्भः प्रोक्तो दन्तशठस्तथा । गम्भीरो वक्त्रशोधी(धी) च रोचनो दन्तहर्षणः ॥ २४ ॥ वृणोति वरुणो वरणश्च प्राणिकवृक्षत्वात् । अत एव पर्यन्ते रक्षाहेतुत्वात्सेतुः । तिक्तरसः शाकश्च, शाकमध्ये पाठात् । कुमारको नित्यतरुणः । आह च– वरुणः श्वेतपुष्पश्च तिक्तशाकः कुमारकः । सेतुद्रुमः साधुवृक्षस्तमालो मारुतापहः ॥ पूजितः पुमान् पुंनागः स इव प्राधान्यात् । प्रशस्ताः केसरा अस्य केसरः : आहेन्दुः– तुङ्गः पुंनागसंज्ञः स्यात्पुंनामा रक्तकेसरः । पुंनागः पुरुषाह्वश्च केषांचित्पद्मकेसरः ॥ २५ ॥ पारि पारं प्राप्तं भद्रमस्य पारिभद्रः । नियमनान्निम्बः । आह च– निम्बो नियमनो नेता पिचुमन्दः सुतिक्तकः । लिम्बोथ सर्वतोभद्रः प्रभद्रः पारिभद्रकः ॥ स्वर्गे पारिभद्रः कोलिः पारिजातो देवदारुश्च । अतिक्रान्तो निशास्तिनिशः, चिरकालित्वात् । स्यन्दनः स्यन्दने पटुः, रथोपयोगित्वात् । रथचक्रान्ते नयति नेमिः । अतिमुक्तो विस्तीर्णत्वात् ॥ २६ ॥ वन्यते मयते वञ्जुलः । चित्रकृल्लघुत्वेपि दार्ढ्यदैर्घ्याभ्यामाश्चर्यकारी । आहुश्च– तिनिशश्चित्रकृन्नेमिः स्यन्दनो रथसाधकः । तथारण्यो रथद्रुश्चाप्यतिमुक्तक इत्यपि ॥ पर्यायो वञ्जुलो वेतसः स्यन्दनोशोकश्च । प्रीतीक्रियतेनेन पीतनः । कपींस्तनोति कपीतनः कपिप्रियत्वात् । आम्रमतत्याम्रातकः कपिचूतत्वात् । आह च– आम्रातकः पीतनकः कपिचूतोम्लवातकः । शृङ्गी कपिरदाख्यश्च (?) नन्दः कीरः कपिप्रियः ॥ अन्यार्थे कपीतन आम्रातकः प्लक्षः शिरीषश्च । कपीतनशब्दस्य पीतनोपभ्रंश इत्येके । गुडवन्मधुराणि पुष्पाण्यस्य गुडपुष्पः । मधुप्रधानो द्रुमो मधुद्रुमः ॥ २७ ॥ वनप्रस्थे भवो वानप्रस्थः स्थलजत्वात् । मधु ष्ठीवति मधुष्ठीलः, मधु माधुर्यमष्ठीले गर्भेस्य मध्वष्ठीलो वा । यदाह– मधूको मधुवृक्षश्च मध्वष्ठीलो मधुस्रवः । गुडपुष्पो रोध्रपुष्पो वानप्रस्थोथ माधवः ॥ अत्र मधूके, यदाह– मधूकोन्यो मधूलस्तु जलजो दीर्घपत्रकः । ह्रस्वपुष्पः फलस्वादुर्गैरिकाख्यो मधूलकः ॥ पीयते मधुर्यात्पीलुः पीड्यते वा । स्रंसते स्रंसयति वा स्रंसी । आह च– पीलुः शीतफलः स्रंसी धारी गुडफलोपि च ॥ २८ ॥ अक्ष्णोत्यक्षोटः । कन्दरास्यास्तीति कन्दरावेष्टनात्कन्दरालः, कर्पराल इत्येके । आह च– अक्षोटः पर्वतीयश्च फलस्नेहो गुहाशयः । कीरेष्टः कन्दरालश्च स्वादुमज्जो मृदुच्छदः ॥ अङ्क्यते कीलकैर्लक्ष्यतेऽङ्कोटः, अङ्कोलोपि, प्राकृतेऽङ्कोलः । निकुच्यतेस्मा-

बार्हतं च फले जम्ब्वा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।
पुष्पे जातिप्रभृतयः स्वलिङ्गा व्रीहयः फले ॥ १९ ॥
विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला ।
बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥
अश्वत्थोऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥
उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।
कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥

म्बवम् । पुष्पविकासे जातिर्मल्लिकायाः पुष्पं जातिर्मल्लिका शेफालिका यूथिका, चम्पकं बकुलं शिरीषं, अनुदात्तादेश्च (सू०) इत्यणश्च पुष्पमूलेषुबहुलं (वा०) इत्येभ्यः पुष्प एव लुप् । व्रीहीणां फल एव, तदाह– व्रीहयः फले स्वलिङ्गा इत्येव, व्रीणानि व्रीहिः, व्री श्री भरणे । यवानां फलं यवाः, माषा मुद्गास्तिलाः, व्रीहिमुद्गानां बिल्वादिभ्योऽण् (सू०), अन्यत्र अवयवेनप्राण्योषधीवृक्षेभ्यः (सू०), तस्य फलपाकलुचां (वा०) इति लुप्, युक्तवद्भावः, स्वलिङ्गा इत्येव ॥१९॥ (विदार्याद्यास्तु मूले) स्वलिङ्गा इत्येव । विदार्यं भुज्येत (विदार्यं), विदार्या मूलं विदारी, मूलं प्रतिरोधयम् । (पाटला) अनुदात्तादेश्च (सू०) इत्यञ्, पुष्पमूलेषुबहुलं (वा०) इति लुप्, लुपि युक्तवत्त्वम् । आद्यशब्दादुम्भारीबृहत्यंशुमत्यादयः । पाटलायाः पुष्पं पाटलं, अत्र च लुक्कत्वे लुभावः, यच्छाश्वतः– पाटलं कुसुमे वर्णेऽप्याशुव्रीहिश्च पाटलः । अपिशब्दात्पाटला, दिलाग्रणा पाटलीत्यपि । पुष्प इति किं पाटलो नाम व्रीहिः । बोधिद्रुमो बोधिसत्त्वाह्वयः सर्वोपकारित्वात् । तनुवृन्तत्वाद् गुरुपर्णत्वाच्चास्वल्पेऽपि वाते चलदलः । पिप्पलानि देश्यां पत्राणि, तानि सन्त्यस्य, अर्शआदित्वादच् (सू०), अपत्र इति नैरुक्ताः । एवमाद्याः प्राकृता अपीति धन्वन्तरिः, यदाह –प्रायो जनाः सन्ति वनेचराद्या गोपादयः प्राकृतनामतज्ज्ञाः । प्रयोजनार्था वचनप्रवृत्तिर्यतस्ततः प्राकृत इत्यदोषः ॥ किं च– रसवीर्यविपाकेभ्यो मूलान्युपातफलं इत्यात् । आकारादेशकालैर्देवैरपथ्यर्थमुपनयेत् ॥२०॥ अश्वेषु तिष्ठत्यश्वत्थोऽश्वाश्रयः, पृषोदरादित्वात् (सू०) सस्य तत्वम् । आह धन्वन्तरिः– पिप्पली केशवावासश्चलपत्रः पवित्रकः । मङ्गल्यः श्यामकोऽश्वत्थो बोधिसत्त्वो गजाशनः ॥ केशवावासमङ्गल्यादयोऽल्पप्रयोगत्वान्नोक्ताः । एवमुत्तरत्र । कपिषु तिष्ठति कपित्थः कपिप्रियत्वात् । दधि तिष्ठति दधित्थो दधिफलत्वात् । ग्राही विष्टम्भकारित्वात् । मन्मथो मदनाह्वयः पर्यायेणोक्तः । दन्तेषु शठोऽम्लत्वात् । आह च– कपित्थोऽथ दधित्थस्तु ग्राही फलसुगन्धकः । अक्षस्यदो दधिफलश्चिरपाकी कपिप्रियः ॥ द्वयर्थे पुष्पफलः कूष्माण्डः कपित्थश्च, तथा दन्तशठो जम्भीरः कपित्थश्च । त्र्यर्थे मदनः पिण्डीतकः कपित्थो धत्तूरकश्च ॥ २१ ॥ उद्गतोऽम्बरमुदुम्बरः, उच्चं लक्ष्यात् । मशकगर्भाणि फलान्यस्य जन्तुफलः, कृमिफलः पर्यायेणोक्तः । आह च– क्षीरवृक्षो हेमदुग्ध उदुम्बरसदाफलौ । अपुष्पफलसम्बद्धो यज्ञाङ्गो श्वेतवल्कलः ॥ आहेन्दुः– उदुम्बरस्तु यज्ञाङ्गः सुचक्षुः श्वेतवल्कलः । हेमदुग्धः कृमिफलः क्षीरवृक्षः स काञ्चनः ॥ कोर्भूमेर्विदारणात्कोविदारः, अत एव कुद्दालः । चमरोऽस्यास्ति चमरिकः । आह च– कोविदारोऽथ कुद्दालः कुदारः कुण्डली कुली । ताम्रपुष्पश्चमरिको महायमलपत्रकः ॥ युगपत्रक इति यमलपत्रपर्यायेणोक्तः ॥ २२ ॥ शरदि पुष्प्यति शारदः, शारदोऽयंके । आह च– सप्तपर्णः शर्करीपर्णश्चित्रपर्णस्तु सुपर्णकः । सप्तच्छदो गुच्छपुष्पस्तथा शाल्मलिपर्णकः ॥ आहुश्च–सप्तपर्णो बृहत्त्वक्कः सप्ताह्वो गुच्छपुष्पकः । सप्तच्छदः सप्तपत्रो युग्मपत्रो बहुच्छदः ॥ आसमन्ताद्रुजां वधोऽत्रारग्वधः, आरमत्र जयन्त्यारजो मद्यास्तेषां वधोऽत्रेति वा । राजा चासौ वृक्षश्च, रोगराजं वृश्चति वा राजवृक्षः । शम्यौ शिम्बमकाति श-

काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित्स्त्रियाम् ।
निष्कुहः कोटरं वा ना वल्लरिर्मञ्जरी स्त्रियौ ॥ १३ ॥
पत्त्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान् ।
पल्लवोऽस्त्री किसलयं विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥
वृक्षादीनां फलं सस्यं वृन्तं प्रसवबन्धनम् ।
आमे फले शलाटुः स्याच्छुष्के वानमुभे त्रिषु ॥ १५ ॥
क्षारको जालकं क्लीबे कलिका कोरकः पुमान् ।
स्याद्गुच्छ(त्स)कस्तु स्तबकः कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं स(सु)मम् ।
मकरन्दः पुष्परसः परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥
द्विहीनं प्रसवे सर्वं हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।
आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैङ्गुदं फले ॥ १८ ॥

वृक्षगर्तः, ना पुमान्, रूपान्तरे क्लीबे । वल्ली वल्लरिः । मञ्जते मञ्जरी पूनादेर्नवोद्गिन् ॥ १३ ॥ पतति पत्त्रम् । अपलश्यते शाल्यते पलाशम् । छाद्यतेऽनेन छदनं छदश्च छादेर्घेऽद्व्युपसर्गस्य (सू०) इति ह्रस्वः । दलति दलम् । पिपर्ति पर्णम् । मादिः पत्त्रशिरा । फलति पल्लवः । किंचित्सरति किसलयम्, विकसति लीयमानं वा । नवपत्त्रं प्रवालाख्यम् । शाखादेर्विस्तृतिर्विस्तारः, प्रथने वावशब्दे (सू०) इति घञ् । विटपानाति विटपः, यत्कात्यः- स्कन्धादूर्ध्वं तरोः शाखा कटप्रा विटपो मतः, विटन्त्याक्रोशन्त्यस्माद्वा ॥ १४ ॥ वृक्षादीनामिति पूर्वेणापि संबध्नाति । वृणोति वृन्तम् । प्रसवः पुष्पादिः, यत्कात्यः- बन्धनं पुष्पफलयोर्वृन्तमाहुः । शलति शलाटुः । फल इत्येव, (वानं) ओवै शोषणे, ओदितश्च (सू०) इति निष्ठा नत्वम् । शलाटुवाने अभिधेयलिङ्गे ॥ १५ ॥ क्षरति प्रसूयते क्षारकः । जालमिव जालकं नवकलिकावृन्दम् । सूक्ष्मा कलिः कलिका, कल्यते शब्द्यते कलिका । कुर्यते (शब्द्यते) कोरकः । पुष्पसंघातो रम्यत्वाद् गूयते गुच्छः, गुङ् शब्दे । स्तूयते स्तबकः । गुलुच्छोऽपि । ईषद्विकसिता कलिका, कुटति कुड्मलं । [मुञ्चति कलिकात्वं मुकुलः] । दुर्गोदास्त्ववान्तरभेदं न मन्यन्ते- मुकुलाख्या तु कलिका कुड्मलं जालकं तथा ॥ १६ ॥ सुष्ठु मन्यते सुमनसः, रूपाद्बहुत्वम् । पुष्प्यति पुष्पम् । प्रसूयते प्रसूनम् । कुस्यति कुसुमम् । मध्वाख्यः, मङ्कयते मण्ड्यतेऽनेन पुष्पं मकरन्दः । परागच्छति परागः पुष्पधूलिः ॥ १७ ॥ वक्ष्यमाणं यदश्वत्थादि वृक्षलतौषधिजातीयं स्त्रीपुंसादिलिङ्गमपि प्रसूयमाने पुष्पे फले मूले च वर्तमानं द्वाभ्यां हीनं नपुंसकलिङ्गं ज्ञेयमित्यर्थः । अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः (सू०) इति विकारावयवोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य लुप्प्रकरणे पुष्पमूलेषु बहुलं (वा०) इति लुप् । क्वचिद् अनुदात्तादेश्च (सू०) इत्यञो लुप् । कदम्बस्य विकारः कदम्बं पुष्पमशोकं करवीरं, बदर्याः फलं बदरं कोलं नालिकेरमाम्रं फलमामलकमिति वृक्षलक्षणस्य मयटः फले लुक् (सू०) । सूरणस्यावयवः सूरणः कन्दः लुपि युक्तिवद्व्यक्तिवचने (सू०) इति स्त्रीपुंसे प्राप्ते । हरीतक्याः फलं हरीतकी, अवयवे च प्राण्योषधीति (सू०) अणः- अनुदात्तादेश्च (सू०) इत्यञश्च हरीतक्यादिभ्यश्च (सू०) इति लुप्, लुपि युक्तिवद्व्यक्तिवचने (सू०) इत्यत्र च हरीतक्यादिषु व्यक्तिरिति युक्तिवद्भावात्स्त्रीत्वम् । आदिशब्दात्कोशातकीद्राक्षाबदर्यादिः । अश्वत्थादेः प्लक्षादिभ्योऽण् (सू०) इति पुनर्विधेः फले लुङ्नास्ति । वेणोः बिल्वादिभ्योऽण् (सू०) । नैयग्रोधमिति, न्यग्रोधस्य च केवलस्य (सू०) इत्यैजागम ॥ १८ ॥ बृहत्याः फलं बार्हतम् । फलति फलं, फल निष्पत्तौ । जम्ब्वा वा (सू०) इत्यणि जाम्बवम्, पक्षे ओरञ् (सू०) तस्य लुकि फलं जम्बु (फले लुक्), लुप् च (सू०) इति जम्बूः- लुपि युक्तिवद्व्यक्तिवचनत्वात् (सू०)

वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च फलवान्फलिनः फली ।
प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥
फुल्लश्चैते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ।
स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कुर्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥
अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ वल्ली तु व्रततिर्लता ।
लता प्रतानिनी वीरुद् गुल्मिन्युलप इत्यपि ॥ ९ ॥
नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।
अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥ १० ॥
समे शाखालते स्कन्धशाखाशाले शिफाजटे ।
शाखाशिफावरोहः स्यान्मूलाच्चाग्रं गता लता ॥ ११ ॥
शिरोऽग्रं शिखरं वा ना मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ।
सारो मज्जा नरि त्वक्स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

(सू०) फुल्लः साधुः । उत्फुल्लसंफुल्लयोरुपसंख्यानम् (वा०), प्रफुल्लेति पाठे फुल्ल विकसने, अच् । विगत आकोशः संकोचोऽस्य व्याकोशः । विशेषेण कचति विकचः । स्फुटति स्फुटः ॥ ७ ॥ (त्रिषु) वाच्यलिङ्गत्वात् । (स्थाणुः, इ०) तिष्ठति ध्रुवति शङ्कतेऽस्मात् । ह्रस्वाः शाखाः शिफामूलानि चास्य, क्षुप्यते क्षुपः सूक्ष्मलतादिप्रतानः ॥ ८ ॥ प्रकाण्डो गण्डस्तद्रहिते, उद्भिद्विशेषः स्तम्बस्तृणसंघातो वा, तिष्ठतीति स्थः, स्थःस्तम्बजयकौ (उ०) । गुडति गुल्मः । नानार्थे विटपः । वलते वेष्टते वल्ली गुहूच्यादिर्मोधव्यादिश्च । वृक्षशाखापि (लता), यच्छाश्वतः– लता प्रततिराख्याता लता शाखा च शाखिनाम् । प्रकृष्टा ततिरस्याः प्रततिव्रतती च, जपादित्वाद्वत्वं (ग०) । लाति (लताति) लता । लतानां प्रतानोऽस्त्यस्याः प्रतानिनी वा लता विरुत्, यत्कात्यः– वीरुत्स्वपर्णजटिला प्रतानशतगामिनी । विरोहति[चेत] वीरुत्, वीरुदिति निपातनादुपसर्गस्य दीर्घः, नहिवृतीति (सू०) दीर्घः, न्यङ्क्वादित्वाद्धत्वम् (सू०) । विरुणद्धि वा, (वीरुत्), अन्येषामपि दृश्यते (सू०) इति दीर्घः । उल्यते उलपः, उलः सौत्रो दीप्त्यर्थः आवरणार्थो वा, उलप्यते वा (उलपः) ॥ ९ ॥ आरुह्यते आरोह औन्नत्यम् । उच्छ्रयणमुच्छ्रायः, उदिश्रयतियौतीति (सू०) अनित्यो घञ्, यल्लक्ष्यं– पतनान्ताः समुच्छ्रयाः । उत्सेध उन्नतिः, यच्छाश्वतः– उत्सेधो वपुरुन्नतिः । प्रकाम्यते प्रकाण्डो वृक्षजङ्घा । स्कन्द्यत आरुह्यते स्कन्धः ॥ १० ॥ (शाखा) शाखृ व्याप्तौ, श्यत्येनां वा । शिखा । समे इत्येव । शालति शाला शायते वा, यच्छाश्वतः– शाला तरुस्कन्धशाखा शाला भवनमिष्यते । शिनोति शेते वा शिफा । जटति जटनं वा जटा वृक्षादिमूलं, जट संघाते, भिदादयः (षिद्भिदादिभ्योऽङ्) । एवं शिफालतयोः पर्यायानुक्त्वा स्वरूपमाह । अधो रोहन्ति शाखा(याः) शिफाः, शिफारूपा शाखावरोहोऽश्वत्थादेरित्युपाध्यायः । मूलादूर्ध्वं गता लता(पि), यदाह मूले– मूलाच्चाग्रं गता लतेति ॥ ११ ॥ वृक्षादेर्मूर्धाग्रादयः । शिखरं तु वा ना पक्षे पुमान्, रूपात्पक्षे क्लीबे । (मूलं) मूल रोहणे । बुध्यतेऽनेन बुध्नो वृक्षादेः पादपर्यायः । सरति सारः, सृस्थिरे (सू०) इति घञ् । मज्जति मज्जा, [नरि पुंसि] । त्वच संवरणे । वल्यते छाद्यतेऽनेन वल्कं, वल संवरणे । वल्कं लाति वल्कलं, श्यामलवत् ॥ १२ ॥ काश्यते काष्ठम् । दीर्यते दारु । विशेषमाह– इन्धनं त्विति । इन्द्धनेनाग्निरिन्धनमिध्मं च, इषियुधीन्धीति (उ०) मक् । आयमेध एधस्तुनि दाह्यदार्वर्थे, अपर एधः– अर्वोदैर्धेत्येति (सू०) इन्धेर्धस्य साधुः । होमार्थे समिध्यतेऽनया समित् । निष्कुष्यते निष्कुद्यते वा निष्कुहः, निष्कुट इत्येके । कुटति कोटरो

धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः ।
निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः । ३ ।

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।
महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥
आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।
अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥
पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।
स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥
वीथ्यालिरावलिः पङ्क्तिः श्रेणी लेखास्तु राजयः ।
वन्या वनसमूहे स्यादङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥
वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।
अनोकहः कुटः सालः पलाशी द्रुद्रुमागमाः ॥ ५ ॥
वानस्पत्यः फलैः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।
ओषध्यः फलपाकान्ता स्यादवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥

त्येके, गिरौ भवामिति गिरिणाविग्रहोऽगिरिकादण् । स्थान इति शेषः । कुञ्जिरावरणार्थो लोकान् । व्यधिकरणे सप्तम्यौ ॥ ८ ॥ इति शैलवर्गः । ३ ।

अटन्त्यस्यामटवी । इयर्ति भ्राम्यन्त्यत्रारण्यम् । वेपन्ते भयेनात्र विपिनं, वेपितुह्रस्वश्च (उ०) इतीनन् । गाह्यते गहनम् । कन्यते गम्यतेऽस्मिन्काननम् । वन्यते सेव्यते वनं वृक्षबहुलं स्थानम् । पूर्वैः सहानयोरैक्यमाहुः । सत्रं नानार्थे । हिमारण्ययोर्महत्त्वेङीषानुकौ (वा०) । कुटाद् गृहान्निष्क्रान्ता निष्कुटाः ॥ १ ॥ आरमन्त्यस्मिन्नारामः । करणेन निर्वृत्तः कृत्रिमो वृक्षसमूहः । समीपं वनस्योपवनम्, तुल्यत्वेन नैकट्यात् । अमात्यगणिकयोरुपलक्षणार्थत्वात्सार्थवाहादीनामपि ॥ २ ॥ आक्रीडन्त्यस्मिन्नाक्रीडः । उद्यान्त्यस्मिन्नुद्यानम् । साधारणं राज्ञीभिः सह । प्रमदार्थं वनं प्रमदानां वा प्रमदवनम्, ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलं (सू०) इति ह्रस्वः । अन्तःपुरं तत्स्था देव्यः ॥ ३ ॥ वियन्त्यनया वीथिः । आलात्यालिः । आवलत्यावलिः । पच्यते पङ्क्तिः । श्रीयते श्रेणिः । सान्तरा पङ्क्तिर्निरन्तरा लेखा, यदाह मूले– लेखास्तु राजय इति । लिख्यन्ते लेखाः । राजन्ते राजयः, पङ्क्त्यपङ्क्तिसाधारणाः । (वन्या) पाशादिभ्यो यः (सू०) । अङ्कयत्यनेनाङ्कुरः, अकि लक्षणे । उदभिद्यत उद्भित् । प्ररोहोऽपि ॥ ४ ॥ वृश्च्यते छिद्यते वृक्षः, वृक्षति वृणोति वा । शाखी, व्रीह्यादेः (व्रीह्यादिभ्यश्च)। पादैर्मूलैः पिबति पादपः, एवमङ्घ्रिपः [चरणपश्च प्रसिद्धः] । [तरन्त्यनेनातपं तरुः । अनसः शकटस्याकं गतिं हन्ति– अनोकहो निर्वचनात्] । द्रुर्वृक्षैकदेशोऽस्यास्ति द्रुमः, द्युद्रुभ्यां मः (सू०) । द्रुशब्दोऽपि, अवयवेषु हि वृत्ताः शब्दाः समुदायेष्वपि वर्तन्त इति । न गच्छत्यगमः । अगनगौ नानार्थे । कुजोऽगच्छोऽपि ॥ ५ ॥ वनस्पतिर्वनस्पतिः, पारस्करादित्वात् (सू०) सुट्, भवार्थे दित्यदित्येति (सू०) ण्यः । पुष्पेभ्यो जातैः फलैर्हेतुभिः (वानस्पत्यः) । पुष्पं विना तैः फलैः (वनस्पतिः) । ओषं रुजं धयत्योषधिः, फलपाक एवान्ता यस्याः । फलानि गृह्णातीति, फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च (सू०) इति साधुः ॥ ६ ॥ बध्नाति फलं बन्ध्यः । अवके शून्ये– ईशेवकेशी । फलं वहत्यस्यातीति, फलबर्हाभ्यामिनच् (वा०) । प्रफलति स्म प्रफुल्लः, ञिफला विशरणे, क्त– उत्परस्यातः (सू०) इत्युत्वम् (निचेत्युत्वम्) । अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबेति

लोकालोकश्चक्रवालस्त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ ।
अस्तस्तु चरमक्ष्माभृदुदयः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥
हिमवान् निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रि(त्र)कः ।
गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥
पाषाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।
कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥
कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियौ ।
उत्सः प्रस्रवणं वारिप्रवाहे निर्झरो झरः ॥ ५ ॥
दरी तु कन्दरो वा स्त्री देवखातबिले गुहा ।
गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥
खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।
उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

पर्यन्तेनकत्वाल्लोकालोकः । चक्राकारेण वलते वाडते वा चक्रवाडः, वाडृ आप्लाव्ये, आवेष्ट्य द्वीपान् स्थितो ह्यसौ । त्रिककुत्पर्वते (सू०) इति साधुः । अस्यत्यर्कादीनस्यते वास्तः । चरन्त्यत्र चरमः पश्चिमो मन्दराद्रयः। उदयन्तेस्माद् ग्रहा उदयः ॥ २॥ नियतं सीदन्त्यस्मिन् निषधः । विन्ध्यते विन्ध्यः, अघ्न्यादिः (उ०) । माल्याकारतास्यास्ति माल्यवान् । परियात्रायां भवः पारियात्रिकः स्वार्थे कन् । गन्धेन मादयति गन्धमादनम्, [प्रयोगे च पुंलिङ्गता दृश्यते, मृगनाभिर्गन्धमादन इति कालिदासः] । आदिशब्दान्मलयमन्दराद्याः । हिमाचलोऽद्रिराजः स्यान्मलयश्चन्दनाचलः ॥ ३ ॥ पिनष्टि, प्रस्तृणाति, गिरति, उपलाति, अश्नाति, शिनोति, दृणातीति वाक्यानि । कूटयति कूटं, कूट्यते वार्कदावाभ्याम्, कूट दाहे । शिखास्यास्ति शिखरं, शिखायाहस्वश्चेतिरः (वा०) । शृणाति शृङ्गम् । प्रपतत्यस्मात्प्रपातः । तटशून्योऽतटः । प्रपातस्तु तटो भृगुरिति पाठे प्रपात्यते यतस्तटात्स भृगुः । बिभर्ति भ्रज्ज्यते वा भृगुः ॥ ४ ॥ कटत्यावृणोति कटको मध्यभागो मेखलाद्यः । स्नौत्यम्भः स्नुः । प्रतिष्ठन्तेऽस्मिन्समभूभागत्वात्प्रस्थः, घञर्थे कविधानम् (वा०)। सनोति ददाति सुखं सानुः। द्वित्यास्प्रस्थोऽयस्त्री । उनत्त्यम्भस्यः– उत्सः । प्रस्रवत्यस्मात्प्रस्रवणम् । निर्झीर्यते निर्झरः । प्रपातास्तु [नि] र्झर्यते निर्झरझराविग्येकाः॥ दीर्यते दरी, पचादित्वादच् (नन्दिग्रहादीति) । कुत्सितं दीर्यते कं दृणाति वा कन्दरा, पक्षे सिताम्सपान् कन्दरोऽपि । समे इत्यर्थः, देवखातमकृतकं, (बिल) बिल भेदने । गूहति गुहा । अगं हरति गाह्यते वा गह्वरम् । अकृतकबिलविषये गुहा गह्वरं चेत्येके पूर्वेण सह सम्बध्नन्ति, यत्कात्यः– देवखाते बिले गुहा, शाश्वतोऽप्याह– गह्वरं बिलदम्भयोः । गण्डाः शैला इव स्थूलत्वाद् गण्डशैलाः, (च्युताः) भूकम्पादिना गलिताः ॥६॥ [दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः] । खन्यन्ते लोहादयोऽस्याः खनिः खानिश्च । आकीर्यन्ते धातवोऽस्मिन्नाकरः । गञ्जापि, यच्छाश्वतः– भाण्डागारं विदुर्गञ्ज खनौ गञ्जा सुरागृहे । मुख्यपर्वतान्ते क्षुद्रपर्वताः पादा इवाधःस्थत्वाच्चरणाच्च । अद्रेर्भूमिरित्येव, उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः (सू०), नयासयोः (सू०) इत्यत्र त्यकनः– (त्यकनश्चनिषेधः) उपसंख्यानादित्वाभावः ॥ ७॥ धत्ते धातुः । आदिशब्दाद्धिङ्गुलादिः, यदाहुः– सुवर्णरूप्यताम्राणि हरितालं मनःशिला ॥ गैरिकाञ्जनकासीसलोहसीसाः सहिङ्गुलाः ॥ गन्धकोऽभ्रकमित्याद्या धातवो गिरिसंभवाः ॥ विशेषेण धातुर्धातुशब्देनैव प्रसिद्धः, गैरिकं हेम-

गोपानसी तु वलभीछादने वक्रदारुणि ।
कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥
स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।
तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥
कूटं पूर्द्वारि यद्धस्तिनखस्तस्मिन्नथ त्रिषु ।
कवाटमररं तुल्ये तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥
आरोहणं स्यात्सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ।
संमार्जनी शोधनी स्यात्संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥
क्षिप्ते मुखं निःसरणं संनिवेशो निकर्षणः ।
समौ संवसथग्रामौ वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ॥ १९ ॥
ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्सीमसीमे स्त्रियामुभे ।
घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्कणः शबरालयः ॥ २० ॥

इति पुरवर्गः । २ ।

महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदहार्यधरपर्वताः ।
अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

श्रामार्थं यदिर्निर्गनितं दारु, वक्रदार्वाधारः, पक्षिरहृक्तिर्हि तत्रेतकीर्यते ॥१५॥ प्रतिह्रियन्ते प्रतिरुध्यन्तेऽनेन प्रतीहारः । नानार्थे वलजम् । दारुपरिष्कृता चतुरस्रा विश्रान्तिभूः, विगतं तर्दनं यत्रेति वितर्दिः । विद-न्त्यस्यां वेदी । मङ्गलार्थं तुरन्त्यत्र तोरणं द्वाराग्रे स्तम्भोपरि रचितं सिंहद्वाराख्यम् । मङ्गलस्रक्तोरणे स्याद्वन्दनमालिका । गोप्यते गोपुरं प्रतोली ॥ १६ ॥ दुर्गद्वारावतरणार्थः क्रमनिम्नो हस्तिनखाभो मृत्कूटः– अपसोपानाह्वयः (कूटम्), यद्दृतटमन्तःसोपानयुक्तं युद्धार्थमित्येके । कं शिरः पाटयति प्रविशतां कवाटो द्वारपटः, जगादित्वाद्बुत्वम् (ग०)। इयर्त्यररं, अररि च । विष्कम्भो बन्धनिमित्तं, विष्कम्नात्यवष्टम्नात्यवश्यम् । विष्कम्भोऽत्येके पेट्टः । अरेणाकर्षणेन गलत्यर्गलं दारुमयो लोहो वा दण्डः । न ना पुमान्न भवति । परिघश्च ॥ १७ ॥ आरुह्यतेऽवरुह्यते वानेनारोहणम् । सहोपानमस्यस्मिन् सोपानम् । निश्रयन्ति भित्तिं नियता श्रेणिः सोपानपङ्क्तिरत्र निश्रेणिः । अधिरोहन्त्यवरोहन्ति च यया दारुमय्या साधिरोहणी । बहुलाम्त्रया रजोवारणी, मार्जन्या पूतं हि बहुलीकृतं धान्यमाहुः । समूहनी पवनीति स्मार्ताः । वहुकरी वर्धनी च । (क्षिप्ते) धूल्यादाविति शेषः । अवकीर्यतेऽवकरः ॥ १८ ॥ गृहादेर्निःस्रियते प्रविश्यते न येन तन्मुखं, यत्कौटिल्यः– मुखसमः संक्रमो मुखानुवर्तनं निःसरणविधिर्वा । समन्तान्निविशन्तेऽत्र संनिवेशः पुरादेर्बहिर्विहरणभूः । निवृतं कर्षणमत्र निकर्षणः । संवसन्त्यत्र संवसथः । ग्रस्यते भोगिभिर्ग्रामः । द्वयं ग्रामधानं खेटकं च । वसन्त्यस्मिन्वास्तुः, वसेस्तुन्प्रत्ययः णिच्च (उ०) ॥ १० ॥ अन्ते चिह्नार्थं शल्यप्रक्षेपादुपशल्यं, उपलालने समीपत्राणे साधु वा । सीयते बध्यते सीमा, [मनः] (सू०) डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम् (सू०) । सीम्न्याघाटकटौ (?) मालकोऽस्त्री ग्रामान्तराटवी । घोषन्ति गावोऽत्र घोषः । आभिम्यत्यभित ईरयन्ति वा गा आभीरा गोपाः । पल्यते पल्लिः– गृहालिः, कुटीग्रामकयोः पल्लिरिति तु शाश्वतः । पच्यतेऽस्मिन् पक्कणः । शवन्ति भ्रमन्ति शवरा आरण्यचाण्डालाः ॥ २० ॥ इति पुरवर्गः । २ ।

महीं धरयति महीध्रः, मूलविभुजादित्वात्कः (कप्रकरणे मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानम्)। हर्तुमशक्योऽहार्यः । ध्रियते धरः । पर्वाणि सन्त्यस्य पर्वतः, तप्पर्वमरुद्भ्याम् (वा०) । अयतेऽद्रिः । गां त्रायते गोत्रः । गीर्यते गिरिः । शिलानामयं शैलः, मत्वर्थेऽण् (अण्च) ॥ १ ॥ अन्तर्लीयते वृक्षे न लो-

मठश्छात्रादिनिलयो गञ्जा तु मदिरागृहम् ।
गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥
वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।
हर्म्यादि धनिनां वासः प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥
सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ।
स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥ १० ॥
विच्छन्दकप्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ।
स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥
शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ।
प्रघाणप्रघणालिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥
गृहावग्रहणी देहल्यङ्गणं चत्वराजिरे ।
अधस्ताद्दारुणि शिला नासा दारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥
प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात्पक्षद्वारं तु पक्षकः ।
वलीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

विद्यार्थिनश्छात्राः, छत्रेण गुरुसेवा लक्ष्यते, छत्रादिभ्यो णः (सू०) । सत्रशाला प्रतिश्रयश्च । बौद्धानां तु विहारोऽस्त्री । गञ्जन्ति शब्दायन्तेऽस्यां क्षीबा गञ्जा । वासाय वासमध्ये वा गृहम्, अपवरकं कोष्ठम् । [कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगृहम्] । न रिष्यते हिंस्रैः कृतरक्षत्वादरिष्टम् ॥ ८ ॥ गवामिवाक्षीणि यत्रेति गवाक्षः, इन्द्राक्षयोः समासे चेत्यवङ् (!) । इन्द्रकोशो मत्तवारणः, [मत्तालम्बोपाश्रयः स्यात्प्रग्रीवो मत्तवारणः] । मण्ड्यते नानालोकैर्मण्डपः । हरति मनो हर्म्यम् । आदिशब्दाद्वासगृहादि । वासे इत्येव, प्रसीदन्त्यस्मिन्प्रासादः, सादकारयोः कृत्रिम इति (वा०) दीर्घः ॥ ९ ॥ सुधाशुभ्रं सौधम् । उपक्रियत उपकरोति वा पटमण्डपादि राजसदनम् । स्वस्ति कायति स्वस्तिकः । नन्दी– आवर्तोऽत्र नन्द्यावर्तः । आदिशब्दाद्रुचकवर्धमानाद्याः ॥ १० ॥ विच्छर्दकप्रभेदा रचनाविशेषाः, उच्छृदिर्दीप्तौ, विशिष्टेच्छानिर्मिता विच्छन्दक इत्येके । स्त्रीणामगारं, अवरुध्यन्तेऽस्मिन्नवरोधनम् ॥ ११ ॥ शुद्धाः सुरक्षा अन्ता अत्र शुद्धान्तः । एते महिष्यामपि तात्स्थ्याद्वर्तन्ते । अट्टन्त्यत्र [इयन्ते]ऽत्र वाट्टालकः, अट अतिक्रमहिंसयोः, प्राकाराग्रे रणगृहमिति कौटिल्यः । (क्षौमः) क्षुवन्ति शब्दायन्ते योधाः (अत्र), अतः क्षौमः प्राकारधारणार्थोऽभ्यन्तरः क्षौमाख्य इत्येके । प्रहण्यते प्रघणः प्रघाणः, अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च (सू०) । अल्यते भूष्यतेऽलिन्दः । द्वारप्रकोष्ठाद्बहिर्द्वाराग्रवर्तिचतुष्किकान्ते– उपालिन्दकाख्या ॥ १२ ॥ द्वाराग्रं गृह्यते यया, वीथ्याख्येत्येके, बुध्नोदुम्बरमिति सम्यगर्थः । अवगृह्यते द्वारशाखानयावग्रहणी । दिह्यते देहली । अङ्ग्यत्यङ्गनम् । चत्यते चत्वरम् । अजन्त्यत्राजिरम् । स्तम्भादीनामाधारदारु शिलाख्यं, स्तम्भोर्ध्वे दार्वन्तरस्थापनार्थं यदासज्यते सा शिलेति गौडः । स्तम्भादेरित्यर्थः, द्वारशाखयोरूर्ध्वदारुणी शिलानासे इति माला, यदाह– नासा दारूपरि द्वारस्याधो दारु शिला स्त्रियाम् । ऊर्ध्वोदुम्बरमुत्तराङ्गमधउदुम्बरं देहलीत्याचार्याः ॥ १३ ॥ (प्रच्छन्नं) खड़क्किकाख्यम् । पार्श्वद्वारमेकमतदिति कात्यः, यदाह– प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं यत्पक्षद्वारं तदुच्यते । छादनान्तो वलीकाख्यः, वलति संवृणोतीति, कुड्याद्बहिर्वीथी येन च्छाद्यते । नियतमिन्द्धे नीयते वाम्भोऽनेन नीध्रम् । पटं लाति पटलम् । छाद्यतेऽनेनेति छदिः, इसन्तः क्लीबे, इस्मन्त्रन्क्विषु च (सू०) इति ह्रस्वः ॥ १४ ॥ गोपायति गोपानसी । पटलाधारो वंशपञ्जरो वलभी वलभ्याश्रूडा वा, वल संवरणे । विशिष्टं टङ्क्यते विटङ्कः, पक्षिवि-

तच्छाखानगरं वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।
आपणस्तु निषद्यायां विपणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥
रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।
प्राकारो वरणः सालः प्राचीनं प्रान्ततो वृतिः ॥ ३ ॥
भित्तिः स्त्री कुड्यमेडूकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।
गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥ ४ ॥
निशान्तप(व)स्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् ।
गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः ॥ ५ ॥
वासः कुटी द्वयोः शाला सभा संजवनं त्विदम् ।
चतुःशालं मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ॥ ६ ॥
चैत्यमायतनं तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा ।
आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

न्मिन्नित्यष्टशतग्रामीमध्ये स्थानीयम् । नियत गच्छन्त्यस्मिन्निगमः, गोचरसंचरेति (सू०) साधुः । नानार्थोऽधमानं, दुर्गकेन्द्रो राजधानी च । मूलनगरं राजधानी ततोऽन्यःसमुदायस्थानं (शाखानगरं), शाखेत्युपाङ्गोपलक्षणम् ॥ १ ॥ [स्यात्साकेतमयोध्यायां विदेहा मिथिला पुरी । महोदया कन्यकुब्जा कान्यकुब्जं महोदयम् ॥ काशी वाराणस्यवन्ती विदिशा चोज्जयिन्यपि । प्राग्ज्योतिषं कामरूपं द्वारका द्वारवत्यपि ॥] विशन्त्यस्मिन्कामुका वेशः । आपणन्त्यस्मिन्नापणः, गोचरसंचरेति (सू०) साधुः । निषीदन्त्यस्यां निषद्या, संज्ञायांसमजनिषदेति (सू०) क्यप् । विपण्यन्तेऽस्यां विपणिः पणिवीथी । आयो वणिक्स्थानेऽन्यो हट्टवर्त्मन्यामाहुः, यच्छाश्वतः– आपणः पण्यवीथी च द्वयं विपणिसंज्ञकम् ॥ २ ॥ रथं वहति रथ्या, तद्वहतिरथयुगेति (सू०) यत् । प्रतोल्यते प्रतोली । विगतशिखा मुण्डितेव समन्ताद्विशीर्यते जनसंमर्देन वा विशिखा । विपण्यादीन्यप्येकार्थानाहुः, यत्कौटिल्यः– विशिखायां सौवर्णिकप्रचारः । चीयते चयः प्राकाराधारः । उप्यतेऽस्मिन्वप्रः । प्रक्रियते प्राकारः, सादकारयोःकृत्रिमइति (वा०) दीर्घः । वृणोति वरणः । स्यति पर्यन्तं करोति सालः । प्रागेव प्राचीनं विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रियाम् (सू०) इति खः, प्राचीरमित्येके । व्रियतेऽनया वृतिः । वाटो वाटी– आवेष्टकोऽपि ॥ ३ ॥ भिद्यते भित्तिः । कुड्यां साधु कुड्यं, पृषोदरादित्वात् (सू०) ह्रस्वम् । तत्कुड्यमन्तर्न्यस्तास्थि, एडयत एडूकम् । गृह्णाति गृहं, गेहेकः (सू०) । उदवसीयतेऽस्मिन् स्मोर्ध्वमवसीयते वोदवसितम् । विशन्त्यस्मिन् वेश्म । सीदन्त्यस्मिन्सद्म सदनम् । निकेत्यन्तेऽस्मिन्निकेतनम् ॥ ४ ॥ निशाम्यन्त्यस्मिन् निशान्तं, निशाया अन्तोऽत्रेत्येके । अस्यत्यायाति संघातीभवति पस्त्यम् । भवन्त्यस्मिन् भवनम् । अगयतेऽस्मिन्नगारं, अगान्वृक्षान्नियर्ति वा । मन्यते मुच्यतेऽत्र मन्दिरम् । (गृहाः) भूम्नि बहुत्वे, गृहाणीत्यप्याहुः । निचीयते निकाय्यः, पाय्यसान्नाय्यनिकाय्येति (सू०) साधुः । निलीयन्तेऽस्मिन्निलयः । आलीयन्तेऽस्मिन्नालयः, पुंसिसंज्ञायांघः (सू०) ॥ ५ ॥ उष्यतेऽस्मिन्वासः । कुट्यतेऽस्यां कुटी । शा(श)लन्त्यस्यां शाला, शालते वा । सह भान्त्यस्यां सभा । वसन्तिवासतेर्या निवेशनमावसथः सभ्यायोऽपि । सजन्ति संजवन्ते वास्मिन्संजवनम् । चतस्रः शालाः समाहृताश्चतुःशालम् । इदं गृहं मुनिगवयन्थि पर्णशालाह्वम् । उटैर्देश्यां तृणपर्णैर्जायत उटजम् ॥ ६ ॥ चित्याया इदं चैत्यं देवकुले[ल]महावृक्षोऽप्यगा[वृक्षायुधा]श्रयः । आयतन्तेऽस्मिन्नायतनम् । मन्दन्तेऽत्र मन्दुरा । आविशन्त्यावेशनं गृहादन्यत्कारूणां कर्मस्थानं, तेन शिल्पशालेति सभ्यः पाठः । प्रपिबन्त्यस्यां प्रपा, घञर्थेकविधानम्(वा०) ॥ ७ ॥ मन्यतेऽस्मिन्मठः, मठ निवासे । छात्रशाला

सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् ।
गोष्ठं गोस्थानकं तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥
पर्यन्तभूः परिसरः सेतुराली स्त्रियां पुमान् ।
वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम् ॥ १४ ॥
अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः ।
सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥
अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि ।
व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥
अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृङ्गाटकचतुष्पथे ।
प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥
गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।
घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

इति भूमिवर्गः । १ ।

पूः स्त्री पुरीनगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ।
स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥

भूमास्यादिना (सू०) पञ्चम् । यत्र गावः प्रागासन् (गौष्ठीनं), गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे (सू०) इति खञ् ॥१३॥ परितः सरन्त्यस्मिन्परिसरो ग्रामादेः परिच्छेदभूः । सिन्वन्ति बध्नन्ति तं सेतुः पुलिङ्गः । आलय(त्य)- तेऽम्भोऽत्रालिः स्त्रीलिङ्गः, सस्यार्थं जलाधारणोद्यम् । संक्रमस्तु तरणार्थो यन्माला– संक्रमो दुर्गसंचरः । वामं लूयते वामैर्वा वामलूरः । न–अकति नाकुः । वलन्ते प्राणिनोऽत्र वल्मीकम् ॥ १४ ॥ [अयन्ते] वर्तन्ते मार्गन्ति– अतन्ति पद्यन्ते सरन्ति वानेनेति वाक्यानि । पद्भ्यां हन्यते पद्धतिः, हिमकाषिहतिषु च (सू०) इति पत् । पदमस्मिन्दृश्यं (सू०) इति यति पद्या, पद्यत्यतदर्थे (सू०) । एके पादा अस्यामेकपदी, कुम्भपद्यादौ (कुम्भपदीषु च) साधुः ॥ १५ ॥ (अतिपन्था, इ०) नपूजनात् (सू०) इत्यत्र स्वतिग्रहणात्, ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे (सू०) समासान्तो न भवति । संश्चासौ पन्थाश्च सत्पथः, समासान्तोऽच् । विरुद्धोऽध्वा व्यध्वः, उपसर्गादध्वनः (सू०) इत्यच् । विरुद्धः पन्था विपथः । कुत्सितोऽध्वा पन्थाश्च (कदध्वा, इ०), कोःकत्तत्पुरुषेऽचि (सू०), कापथ्यक्षयोः (सू०) । विपथं कापथं च क्लीबमाहुः, यद्वामनः– (पथःसंख्याव्ययादेः) संख्याव्ययपूर्वकस्य पथः (क्लीबता) इति ॥ १६ ॥ (अपन्थाः) पथो विभाषा (सू०) इत्यच्, अपथनपुंसकम् (सू०) । शृङ्गैरटन्ति– अस्मिञ्शृङ्गाटकम् । संस्थानकं (संस्थानं) चत्वरं च । प्रगता अन्तरस्मात्प्रान्तरं दूरशून्यो मार्गः । कस्याम्भसोऽन्तमृच्छति कान्तारम् । कान्तार- प्रान्तरे एकार्थे आहुः ॥ १७ ॥ (गव्यूतिः) गोर्यूतौ छन्दस्युपसंख्यानं (वा०), अध्वपरिमाणे च (वा०) इत्यवादेशः । (नल्वः) णल गन्धे (बन्धे), किष्कुर्हस्तस्तेषां चतुःशती नल्वमिति माला, कात्यस्तु नल्वं [विंश]हस्तशतमाह । घण्टोपलक्षितानां हस्तिनां पन्था घण्टापथः, चाणक्यास्तोऽष्टदण्डः । सम्यक्सरन्त्यनेन संसरणं, यद्दुर्गः– बुधैः संसरणं वर्त्म गजादीनामसंकुलम् । पुरोपनिष्करं चोक्तम्– । तत्संसरणं पुरं राजधानी तस्या उपनिष्करास्यमुपनिष्कीर्यतेऽत्र सैन्यमिति ॥ १८ ॥ द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी । दिवस्पृथिव्यौ गञ्जा तु [दिवः पृथिव्याः संज्ञेयं] रुमा स्याल्लवणाकरः ॥ इति भूमिवर्गः । १ ।

पक्षे तु पुरं नगरं च वाशब्दात्पत्तनसाहचर्यात्क्लीबे । पूर्यते पूः । नगाः सन्त्यस्य नगरं, नगपांसु- पाण्डुभ्यो रः (वा०) । पतन्त्यस्मिन्पत्तनम् । पुटा भाण्डवासनानि भिद्यन्तेऽस्मिन् पुटभेदनम् । तिष्ठन्त्य-

त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।
लोकोऽयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥
देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ।
प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥
आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।
नीवृज्जनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥
त्रिष्वागोष्ठान्नडप्राये नड्वान्नड्वल इत्यपि ।
कुमुद्वान्कुमुदप्राये वेतस्वान्बहुवेतसे ॥ ९ ॥
शाद्वलः शादहरिते सजम्बाले तु पङ्किलः ।
जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥
स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति ।
देश एवादिमावेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥
देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसंपन्नव्रीहिपालितः ।
स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥

भारत नाम (वर्षं) भूम्येकदेशः, वृष्यते सिच्यते वर्षम्, तथा च– हिमवान्हेमकूटश्च निषधो मेरुरन्तरे । नीलः श्वेतश्च शृङ्गीवान् गन्धमादनमष्टममिति सीमाविच्छिन्नान्यन्यानीलावृतादीन्यष्टौ वर्षाणि । शरावत्या नद्या मर्यादायाः प्राक्सहचरितो दक्षिणो देशः प्राच्यः ॥ ६ ॥ शरावत्या अवधेः पश्चिमेन सहचरित उत्तरो देशः (उदीच्यः), यदाह–प्रागुदञ्चौ विभजते हंसः क्षीरोदके यथा । विदुषां शब्दसिद्ध्यर्थं सा नः पातु शरावती (काशिका)॥ प्रतिगतोऽन्तमुपावधेः पुण्ड्रादिदेशः (?) प्रत्यन्तः । (मध्यमः) यन्मनुः– हिमवद्विन्ध्ययोरन्तर्यत्प्राग्विनशनादपि । प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥ आर्या आवर्तन्तेऽस्मिन्नार्यावर्तः, यन्मनुः– आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् । तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः ॥ नियतं वर्ततेऽस्मिन् नीवृत्, नहिवृतिवृषीति (सू०) दीर्घः । जनानां पदं जनपदः, पुंस्त्वं लोकात्, जनैर्वास्यमानो राष्ट्राख्योऽयम् । दिश्यते देशः स्थानमात्रम् । विषिणोति विषयः । उपवर्ततेऽस्मिन्नुपवर्तनं, उपावर्तनमिति कात्यः । पर्यङ्कार्थान तु ॥ ८ ॥ गोष्ठं शब्दनात्प्राग्वाच्यलिङ्गाः । तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि (सू०), कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप् (सू०), नडशादाड्ड्वलच् (सू०) ॥ ९ ॥ शादेन शष्पेण नीलः, यच्छाश्वतः– शष्पकर्दमयोः शादः । शीयते ऽस्मिन् शादः, शादोऽस्त्यस्मिञ्शाद्वलो देशः, ड्वलच्, यथा– न हि कोटरसंस्थेऽग्नौ तरुर्भवति शाद्वलः, शाद्वला दूर्वेति च नीलत्वोपचारात् । पङ्कोऽस्यास्ति पङ्किलः, पिच्छादित्वादिलच् (लोमादिपामादीति) । अनुगता आपोऽत्रानूपम्, ऊदनोर्देशे (सू०) आकारस्य–ऊकारः, ततो दीर्घः, अप्रत्ययश्च । कषन्त्यापोऽयं स कच्छः, तथाविधोऽनूपप्रायः, कच्छमिति माला ॥ १० ॥ देशे लुबिलचौ च (सू०), सिकताशर्कराभ्यां च (सू०) इत्यण्मतुपौ तु सार्वत्रिकौ । तदाह– मध्यान्मः (सू०) इत्यत्रादेश्चेत्युपसंख्यानात् (आदेश्चेति वक्तव्यम्) आदिमौ शर्करा शर्करिलौ देशे नियमात् । शर्कराश्मप्राया मृत् । सिकतासिकतिलौ देशे, सर्वत्र तु सैकतः सिकतावांश्च ॥ ११ ॥ नद्यम्बुजातसस्यसंवर्धितो नदीमातृकः । वर्षजव्रीहिवर्धितश्च देशो देवमातृकः, देवोऽभ्रं मातास्येति ॥ १२ ॥ नपूजनात् (सू०) इति सुराज्ञीति समासान्ताभावः, राजन्वान्सौराज्ये (सू०) इति साधुः । देशो विषयोपलक्षणम्, यथा– राजन्वाँल्लोक उच्यते । राजमात्रयुक्ते देशे (राजवान्) । गावोऽस्तत्रष्टन्त्यत्र गोष्ठं, घञर्थे कविधानम् (वा०), अम्बाम्बगो-

उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादि सनाट्यकम् ।
पातालभोगि नरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ १ ॥

द्वितीयं काण्डम् ।

वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः ।
नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः ॥ १ ॥
भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वंभरा स्थिरा ।
धरा धरित्री धरणी क्षोणी ज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥
सर्वंसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुंधरा ।
गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥
मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ।
उर्वरा सर्वसस्याढ्या स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥
ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थलं स्थली ।
समानौ मरुधन्वानौ द्वे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥

अथोक्तान्वर्गान् संग्रहेणोपसंहरति । एषां स्वर्गादीनां संगतं प्रसक्तानुप्रसक्तिकथानुगतं देवासुरमेघादिकं चोक्तम् । शब्दादीति रसगन्धादिग्रहणम् ॥१॥ [इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने । स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥] इति श्रीभट्टक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितेऽमरकोशोद्घाटने स्वर्गादि काण्डं प्रथमं संपूर्णम् ।

श्रीगणेशाय नमः । अथ द्वितीयकाण्डे वर्गान् संगृह्णाति । अङ्गैर्नृपादिभिरुपाङ्गैश्च क्ष्मादिभिः सह वर्तमानैः पृथ्व्यादिभिः संवादिता वर्गा इह वक्ष्यमाणे काण्डे वदितुमारब्धा उदिताः, आदिकर्मणि क्तः (सू०), आशंसायाभूतवच्च (सू०) इति क्तः ॥१॥ भवत्यस्मात्सर्वं भूः, रेफान्तं त्वव्ययं, यथा भूर्भुवःस्वः । रसाः सन्त्यस्यां रस्यते वा रसा । विश्वं बिभर्ति विश्वंभरा, संज्ञायां भृतॄवृजीति (सू०) खच् । क्षौतिभ्यां (रू)पं क्षोणी । जिनाति जायते वा ज्या, ज्येति मूर्धन्यव्याख्या, यच्छाश्वतः— ज्या मौर्वी ज्या वसुन्धरा, ज्येति निघण्टुः । कश्यपस्येयं काश्यपी, भार्गवेण जित्वा तस्मै दत्ता । क्षियन्त्येतां क्षितिः, क्षि निवासे ॥ २ ॥ वसु धनं धत्ते वसुधा । उर्वी विस्तीर्णत्वात् । वसु धारयति वसुंधरा । गोत्राः शैलाः सन्त्यस्यां गोत्रा, गात्रायते वा । कायति कूयते वा कुः । प्रथते पृथुनावतारिता वा पृथिवी, प्रथेःषिवन्संप्रसारणं च (उ०) । पृथ्वीति, वोतोगुणवचनात् (सू०) ङीप् । क्षमते भारं क्ष्मा । अवति प्रजा अव्यते वा नृपैरवनिः । दैत्यमेदोयोगान्मेदिनी । महति मही । भूर्धात्री रत्नगर्भा विपुला सागराम्बरा च, रत्नवतीति भागुरिः । क्षमा, इला च नानार्थे ॥ ३ ॥ मृद्यते मृत् । (मृत्तिका) मृदस्तिकन् (सू०) स्वार्थे । (मृत्सा, इ०) स्वार्थे सस्नौ प्रशंसायाम् (सू०) । कृष्णभूमः कृष्णमृत्तिकोदग्भूम उदङ्मृदि । पाण्डुभूमः पाण्डुमृच्च, कृष्णोदक्पाण्डुसंख्यापूर्वाया भूमेरच् (वा०) । उर्वीति अश्नुते सर्वं मियर्ति वा (उर्वरा) । (ऊषः) ऊष रुजायाम् ॥ ४ ॥ (ऊषरः) ऊषसुषीति रः (सू०) । स्थलति (स्थलम्) । स्थल्यकृत्रिमा चेत्, जानपदकुण्डगोणस्थलेति (सू०) ङीप्, कृत्रिमा तु स्थला । म्रियन्ते तृषार्ता अस्मिन्मरुः । दधन्ति धन्यन्ति वा धन्वा । खिलं शून्यं लाति खिलम् । न प्रहन्यते हलादिभिरप्रहतमकृष्टं क्षेत्रादि ॥५॥ जङ्गम्यते जगत्, वर्तमाने पृषद्बृहदिति (उ०) साधुः, ऋन्नन्तत्वात् ङीप् । विशन्त्यस्मिन् विष्टपति वा विष्टपम्, टपस्तप प्रतिघाते । अयं जम्बुद्वीपनवमांशो भरतस्य क्षत्रियस्येदं

दीर्घिकायां सरस्यां च भवे वाविकतारवी ।
सौगन्धिकं तु कह्लारं हल्लकं रक्तसंध्यकम् ॥ ३६ ॥
स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च ।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन् सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥
शालूकमेषां कन्दः स्याद्वारिपर्णी तु कुम्भिका ।
जलनीली तु शैवालं शेवलोऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥
कुमुदिन्यां नलिन्यां तु वि-बि-सिनी पद्मिनीमुखाः ।
वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
वि-बि-सप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ।
पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥
रक्तोत्पलं कोकनदं नाला नालमथाऽस्त्रियाम् ।
मृणालं वि-बि-समब्जादिकदम्बे षण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
करहाटः शिफा कन्दः किञ्जल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।
संवर्तिका नवदलं बीजकोशो(षो) वराटकः ॥ ४३ ॥

इति वारिवर्गः । ९ ।

सौगन्धिकाह्वयम् । के ह्लादते कह्लारं, शारदं शुक्लं चैतत् । हल्लति घूर्णते हल्लकम् । रक्तान् संधीनस्यति रक्तसंध्यकं, रक्तं संध्येव वा, रक्तोत्पलं चैतत् ॥ ३६ ॥ उत्पाल्यते उत्पलति वा उत्पलम् । कौ वलते प्राणिति कुवलयम्, कुत्सितो वहिर्वलयः पत्रवेष्टनमस्येति श्रीभोजः । विशेषानस्याह । इन्दतीन्दीवरं कुवलयदलनीलेति सामान्यस्य विशेषवृत्तेः । अस्मिन् सिते, कौ मोदते कुमुदं, कः । के रौति कैरवो हंसस्तस्येदं प्रियं कैरवम् ॥ ३७ ॥ शालते शालूकं, कन्दो मूलमेषामुत्पलादीनाम् । (वारिपर्णी) वारि पिपर्ति, फङ्गा नाम शाकं, घृतत्येके । कुम्भोऽस्त्यस्याः कुम्भिका, कुम्भीको वारिपर्णः स्यादित्येके । नीलिकाह्वया जलशूकोऽपि, शेते जले शेवलं शेवालं च, शीङो- वलञ्वलन्वालनः (उ०), शेवलं शैवालमिति तु द्रविडाः । कुमुदिन्यां (लतायां) कुमुद्वती, कुमुदनडवेतसेभ्योड्मतुप् (सू०)॥३८॥ नडाः सन्त्यस्यां नलिनी, पुष्करादिभ्यो देशे (सू०) इतीनिः । मुखशब्दात्पुटकिन्यब्जिन्यम्भोजिन्याद्याः । पद्यते लक्ष्मीरत्र पद्मम् । नलाः सन्त्यस्य नलिनम् । अरान् राजीर्विन्दत्यरविन्दम्, अनुपसर्गाल्लिम्पविन्देति (सू०) शः ॥ ३९ ॥ शतसहस्रे बहूपलक्षणम् । कमम्भोऽलति भूषयति कमलम्, केन मल्यते वा कमलम् । कुशे जले शेते कुशेशयम् । तामः प्रकर्षो रसोऽस्य तामरसम्, तामः प्रकर्षार्थस्तारतम्यवत्, ताम्यद्भी रस्यते वा ॥ ४० ॥ राज्यः सन्त्यस्य राजीवम् । पुष्णाति पुष्करम् । नालीकं च । पुणति महत्त्वात्पुण्डरीकम् ॥ ४१ ॥ कोकाश्चक्राह्वा नदन्त्यस्मिन्, आहुश्च- रक्ताब्जे रक्तकुमुदे बुधैः कोकनदं स्मृतम् । पद्मादिषु नतस्य द्विलिङ्गार्थपाठः, (नाला) णल बन्धे । मृणतेर्यते मृणालम् । विस्यते- उत्कृष्यते बिसम् । षनोतेर्डे षण्डः, सत्वाभावोऽबाहुलकात् ॥ ४२ ॥ कं रहयतीति, करहान् कूलोत्थान् पद्मादीनटति करहाटः । शिनोति दारयति क्ष्मां शिफा । कन्यति कन्दं पद्मादिमूलं, कन्यतेऽन्विष्यते वा, कन्दोऽस्त्री । किंचिज्जलति जडीभवति किञ्जल्कः । के सरति केसरम् । संवर्तयति वेष्टयति संवर्तिका, पद्मादीनां नवोद्भिन्नं दलं शरचन्द्रिकाह्वयम् । बीजानां पद्माक्षाणां कोशो बीजकोशः । वरमटति वराटकः, कर्णिकेत्यर्थः, यच्छाश्वतः- बीजकोशे सरोजस्य कपर्दे च वराटकः ॥ ४३ ॥ इति वारिवर्गः । ९ ।

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः।
वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥
खेयं तु परिखाधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम्।
स्यादालवालमावालमावापोऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥
तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी।
स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥
गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा।
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥
कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा।
रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥
करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी।
शुतुद्रिस्तु शतद्रुः स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥
शोणो हिरण्यवाहः स्यात्कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित्।
शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा(गी) सरस्वती ॥ ३४ ॥
कावेरी सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः।
द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥

॥ २८ ॥ (खेयं) ईचखनः (सू०) इति यत्, दुर्गवेष्टनखातिका । परिखन्यते परिखा, डः । (आधारः) क्षेत्रादिसेकार्थं यत्र संचीयतेऽम्भः । वृक्षसेकार्थं तले द्रवतोऽम्भसः स्थानं, यदाहुः– आलवालं विदुर्धीरा धारणं द्रवतोऽम्भसः, मुनिश्च– अपां धारणमाधारस्तदल्पं चालवालकम्, आलूयते खन्यते– आलवालम् । आवलते बहिर्निर्गमादम्भोऽत्रावालम् । आ– उप्यतेऽम्भोऽत्रावापः ॥२९॥ नदट् पचादिः, ङीप् । सरति सरित् । ह्रादोऽस्त्यस्याः, ह्रदिनीत्येके । धुनोति धुनी । आ– अपगच्छति, अपां च निम्नेन वेग(गे)नापेन च गच्छति वापगा । कूलंकषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती च ॥ ३० ॥ गां गाते गच्छति गङ्गा, क्षमं गच्छति वा । विष्णुपदाद्धौतेयं विष्णुपदी, कुम्भपदीषु च (सू०) इति साधुः । जह्नुना पीता श्रोत्रेण त्यक्तेति जाह्नवी । भगीरथावतारिता भागीरथी ॥ ३१ ॥ (कालिन्दी) कलिन्ददेशजा । यमेन यमजा यमुना, यमी च । (रेवा) रेवृ प्लवगतौ । नर्माथं सोमवंश्येन पुरूरवसावतारिता (नर्मदा) । मेकलोऽद्रिः प्रभवोऽस्याः ॥३२॥ गौरीविवाहे हस्तात्प्रदानतोयाज्जाता (करतोया) । सितैव सैती (वाहिनी), यन्माला– मन्तव्या बाहुदार्जुनी । बाहुभिर्दीयते तीर्यते बाहुदा, बहुदेन कार्तवीर्यार्जुनेनावतारितेत्यागमः । शु पूजितमाशु वा तुदति शुतुद्रिः, एतदयुग्यमानाः शतद्रुः सितद्रुरित्याहुः, इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रीति हि श्रुतिः । वसिष्ठशापभयाच्छतधा द्रुता शतद्रुः । वसिष्ठं विपाशितवती विपाट् ॥ ३३ ॥ (शोणः) नदोऽयम्, शोणृ वर्णगत्योः । हिरण्यं वहति (हिरण्यवाहः) । कृत्रिमाल्पा च क्षेत्रसेकार्था कुल्या, कुले कुटुम्बे साध्वी, यदाहुः– कुल्याधीनं कुलं विद्यादित्या– (?) व्यवस्थिताः । दांपत्यं कुलमित्यन्ये कुलं वा दलमुच्यते ॥ सारणी च । शरादीनां च (सू०) इति दीर्घे शरावती । (चान्द्रभागा) चन्द्रभागाभ्यां गिरिभ्यां प्रवहति, चन्द्रभागान्नद्यामिति (ग०) साधुः, चन्द्रेण भागतोऽस्यस्ता चन्द्रभागेत्येके । सरांसि सन्त्यस्या सरस्वती ॥ ३४ ॥ कवेरस्य जलदेहस्येयं कावेरी । सरिद्विशेषा एते, अन्याः सरयूदविकागोदावरीवेण्याद्याः । संगमो भिन्नयोः संभेदो नदीमेलः । प्रणवत्यम्भोऽनया प्रणाली जलनिर्गमनमार्गो मकरमुखादिः, (अन्ये) स्त्रीनपुंसकयोराहुः ॥ ३५ ॥ तत्रभवः (सू०) इत्यण्, देविकाशिंशपेति (सू०) आत्वम्, दाण्डिनायनेति (सू०) सारवः साधुः । सुगन्धि(न्ध)प्रयोजनं

स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मे कमठकच्छपौ ।
ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता ॥ २१ ॥
गण्डूपदः किंचुलुको निहाका गोधिका समे ।
रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भूम्नि जलौकसः ॥ २२ ॥
मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शंखः स्यात्कम्बुरस्त्रियाम् ।
क्षुद्रशंखाः शंखनखाः(काः) शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥
भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदर्दुराः ।
शिली गण्डूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी डुलिः ॥ २४ ॥
मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
जलाशया जलाधारास्तत्रागाधजलो ह्रदः ॥ २५ ॥
आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।
पुंस्येवान्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥
नेमिस्त्रिकास्य वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ।
पुष्करिण्यां तु खातं स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥

गृह्णाति ग्राहः जन्तुनागादयः, विभाषाग्रहः (सू०) इति णः । अवह्रियतेऽनेनेति, गोचरादिसूत्रेऽवहारोपी-त्युपसंख्यानात् (वा०) घञ्, पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण (सू०), अवहरति वा, श्याद्व्यधेति (सू०) णः । न क्रामति नक्रः । कुम्भिनमीरयति कुम्भीरः । (महीलता) भूमिसूर्नाम कृमिः ॥ २१ ॥ गण्डवो ग्रन्थयः पदान्यस्य गण्डूपदः । किंचित्कुलुम्पति किंचुलुकः, लकान्तो वा । निजहाति गुप्यति च (निहाका, ६०), बिलेशयादन्योऽयं जलचरः प्राणी । टकः (गापोष्टक्) पिबतेःसुराशीध्वोरिति (वा०) नियमाद्रक्तपा, टक्, क इत्येके । आ– उच्यते, ओकउचःके (सू०), उणादौ सान्तोऽन्यः । शार्ङ्गादि-वज्जलौकोऽति श्रीभाजः ॥ २२ ॥ मुक्ता स्फुटन्त्यस्मान्मुक्तास्फोटः । शोकति शुक्तिः, शुक गतौ, क्तिच् । शं खनति शाम्यति वा शङ्खः । काम्यते कम्बुः । सूक्ष्मनद्यादिजाः कृमयः, शंकनका इत्यसत् । क्षुद्रकाश्च । शं वान्ति शंबूका जलमात्रजाः ॥ २३ ॥ बिभेति भेकः । मण्डति मण्डते वा सरो मण्डूकः । वर्षासु भवति वर्षाभूः । शलति शाल्यते वा शालूरः, सालूर इत्येके । प्लवते प्लवः । दृणाति शब्दैः कर्णौ दर्दुरः । शिनोति शिलति वा शिली । गण्डूपदाज्जातौ पुंयोगे वा ङीष् । (वर्षाभ्वी) भुवश्चेति (उ०) छान्दसो ङीष् । दोलयति डुलिः । कूर्मी च ॥ २४ ॥ मद्गुराख्यो मत्स्यः । शृणाति शृङ्गी, सादृश्यायोग्यतया प्रिया । जलकाकारेयं दीर्घकोशत्वात्, दुष्टं नामं नमनमस्या दुर्नामा, दुःसंज्ञेत्येके । जलमाशयो हृदयमस्य जला-शयः, जलमाशेतेऽत्र वा । सामान्येनोक्तमेतयम् तत्र जलाशयेष्वमी विशेषाः संगमान्ताः । (ह्रदः) ह्रादो ह्रस्वः ॥ २५ ॥ नियतं पिबन्त्यत्र निपानम् । आहूयन्तेऽस्मिन्गाव आहावः, निपानमाहावः (सू०) इति साधुः, कूपसमीपे शिलादिनिबद्धं पशुपानाय कृत्रिमोद्धृताम्बुस्थानम् । अनन्त्यनेनान्धयति वान्धुः । प्रज-हात्यम्बु प्रहिः । कुत्सिताः कोर्वा– आपोऽत्र कूपः । उदकं पीयतेऽस्मिन्नुदपानम् ॥ २६ ॥ अस्य कूपस्यान्ते रज्ज्वादिधारणार्थं दारुयन्त्रं स्थंता त्रिका । कूपस्योर्ध्वे- इष्टिकाभिर्विनह्यते वीनाहो नान्दीपदाख्यः । पुष्क-रादिभ्योदेशे (सू०) इतीनिः । नागादिकृण्डमकृत्रिममखातमित्येके ॥ २७ ॥ (तडागः) तड आघाते, तडाक इत्येके, तटान्यस्मिन्ति तटाकमित्यन्ये । पद्माकरो योग्यत्वात् । कनामरत्यत्र कासारः, कासमृच्छति वा नड्वलाम्बुत्वात् । महत्सरः सरसी, गौरादित्वाद्ङीष् (पिद्गौरादिभ्यश्च) । विशन्ति मज्जन्त्यस्मिन्वे-शन्तः, झच् । पल्यते पल्वलः, पल गतौ । उप्यतेऽस्यां वापी । दीर्घैव दीर्घिका, संज्ञायां कन् (सू०)

क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।
त्रिष्वागाधात्प्रसन्नोऽच्छः कलुषोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥
निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ।
अगाधमतलस्पर्शे कैवर्ते दाशधीवरौ ॥ १५ ॥
आनायः पुंसि जालं स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम् ।
मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥
पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।
विसारः शकली चाथ गडकः शकुलार्भकः ॥ १७ ॥
सहस्रदंष्ट्रः पाठीन उलूपी शिशुकः समौ ।
नलमीनश्चिलिचिमः प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥
क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमथो झषाः ।
रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥
तिमिंगिलादयश्चाथ यादांसि जलजन्तवः ।
तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्कवो मकरादयः ॥ २० ॥

ऽभिधारोयम्, अभिविधावाङ् । अच्छ्यते न च्छायते वाऽच्छः । कं लुषति हिनस्ति कलुषः । आ-अव- एलयत्याविलः, आविल्यते- आभिद्यते वा, विल भेदने ॥ १४ ॥ नमति निमनति वा निम्नं, म्ना अभ्यासे । गमे भियं राति गभीरं गंभीरं वा । ऊर्ध्वं तन्यते- उत्तानं गभीरादन्यत् । नास्ति गाधः प्रतिष्ठास्यागाधम् । नास्ति तलेऽधःस्पर्शोऽस्यातलस्पर्शम् । के(जले) वर्तते कैवर्तो मत्स्यादिस्तस्यायं (घातकः) । दाति दशति दाश्नोति वा मत्स्यान्दाशः । धीयते- आध्रियते धीवरः ॥१५॥ कुत्सितं वेणन्ते-स्यां मत्स्याः कुवेणी, वेणृ गतौ, मत्स्यबन्धनीत्यर्थः । मत्स्यकरण्डिका च । बलिनः (मत्स्यान्) श्यति बलिशम् । विध्यतेऽनेन वेधनं, विध विधाने इत्यस्मात्, व्यधेर्व्यधनमिति स्यात् ॥ १६ ॥ रोम पक्षोऽत्र । झषति झषः । माद्यति मत्स्यः, मच्छोऽपि । मीनाति मीनः । मर्यादां (नदीप्रवाहोऽति) विसारी, ततो वैसारिणः, विसारिणोमत्स्ये (सू०) इति स्वार्थेऽण् । सृस्थिरे (सू०), व्याधिमत्स्य-बलेषु (वा०) इति कर्तरि विसारः । शकलानि पृष्ठे सन्त्यस्य शकली, सशल्क इत्यर्थः । शल्की च । गडति पुच्छास्फोटनात्सिञ्चति गडकः । शकुलोऽत्र मत्स्यमात्रे ॥ १७ ॥ विशेषा-नाह । सहस्रदंष्ट्रो वादालो नाम मत्स्यः । पाठीनश्चित्रवल्लिः, बहुदंष्ट्रत्वात्पाठ्यतीति, भक्ष्यत्वेन पठ्यते वा । एतौ सादृश्यात्पर्यायौ । शिशुमारप्रतिकृतिः (शिशुकः)। उलुपीनन्तः, उलूप्यतीति । सुषिर-तृणान्तश्चारी नलमीनः नडाभो वा । चीयते मीयते च चिलिचिमः, चिलिचिमस्त्रिदोषकृदिति वैद्याः । प्रोषति पित्तकारित्वात्प्रोष्ठी । शफान् राति शीघ्रगत्वाच्छफरी ॥ १८ ॥ सूक्ष्माश्चाण्डान्निःसृताश्च मत्स्याः क्षुद्राण्डमत्स्याः । पोता आधीयन्तेऽत्र पोताधानम् । झषा मत्स्यविशेषा अमी । रोहितो रक्तत्वात् । मज्जति मद्गुरः । शलति शाल्यते वा शालः । राज्यः सन्त्यस्य राजीवो वज्राभः । शक्नोति गन्तुं शकुलः । तिम्यति तिमिः ॥१९॥ तिमिं गिलति तिमिंगिलः, गिलेऽगिलस्य (वा०) इति मुम् । आदिशब्दात्तिमिंगिल-गिलनन्द्या[न्दी]वर्तादयः । याति यादः । जलजन्तुर्जलचरः । उनत्त्युद्रः । शङ्कतेऽस्माच्छङ्कुः । मा कुर्यो-त्किरतीति ग्रस्यन्त्यस्मान्मकरः । आदिशब्दाज्जलहस्तिग्राहाद्याः ॥ २० ॥ कौ लीयते कुलीरः, कुलिन-मीरयति वा, जनकभक्षकत्वात्, यत्कौटिल्यः- कर्कटसधर्माणो हि राजपुत्रा जनकभक्षाः । कृणोति कर्कटकः । कुरति कुमूर्वति वा कूर्मः । काम्यते यशोऽर्थं के मटति वा कमठः । कच्छेन पिबति कच्छपः ।

पारावारे परार्वाची तीरे पात्रं तदन्तरम् ।
द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥
तोयोत्थितं तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम् ।
निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शादकर्दमौ ॥ ९ ॥
जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये स्त्रियां नौस्तरणिस्तरी:-रिः ॥ १० ॥
उडुपस्तु(पं तु) प्लवः कोलः स्रोतोम्बुसरणं स्वतः ।
आतरस्तरपण्यं स्याद् द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥
सांयात्रिकः पोतवणिक्कर्णधारस्तु नाविकः ।
नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥
नौकादण्डः क्षे(क्षि)पणी स्यादरित्रं केनिपातकः ।
अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

कूलमवारं स्यात् । परावाची इत्येके, अर्वाक्शब्दस्याव्ययत्वात् । न वार्वियतेऽस्यावारं न म्रियते वा । तयोः कूलयोर्मध्यं, पीयते पात्रं प्रवाहः । द्विधा गता आपोऽत्र द्वीपम् । अन्तरपामन्तरीपं, द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽपईत् (सू०), ऋक्पूरब्धूरिति (सू०) अः समासान्तः ॥८॥ तत्तटं तोयात्क्रमेणोत्थितं पुलिनं, पुलो महत्त्वमस्यास्तीति, तद् द्वीपमिति माला- वा ना द्वीपं च पुलिनम् । तदेव प्रकृतं पुलिनं, सिकतास्यास्ति सैकतं, देशे लुबिलचौ च (सू०) इत्यण् । [निषीदन्त्यस्मिन् निषीदन्तं वृणोति वा निषद्वरः । जमति ग्रसते जम्बालः । पच्यते पङ्कः । शीयन्तेऽस्मिञ्शादः । कृणोति कर्दमः] । विप्रलब्धश्च ॥ ९ ॥ जलं प्रवृद्धमुच्छ्वसितीति परिवहन्ति यानिर्गममार्गैस्ते परीवाहाः, यथाश्वयं- उपार्जितानामर्थानां त्याग एव हि रक्षणम् । तटाको(तडागो)दरसंस्थानां परीवाह इवाम्भसाम् (पंचतन्त्र) (चाणक्यश०) ॥ परिवाहोऽपि । कूपप्रतिकृतिः कूपकः, शुष्कनद्यादौ जलार्थं गर्ताः क्रियन्ते, यत्कात्यः- विवरान् कूपकानाहुः । विदारयति क्ष्मां विदारकः, मालाच- चुण्डी (ण्डा) विवरोऽस्त्रश्च कूपकाः । (नाव्यं) नौवयोधर्मेति (सू०) यत् । नुद्यते नौः, ग्लानुदिभ्यां डौः (उ०) । तरन्त्यनया तरणिस्तरीश्च ॥ १० ॥ उडुप्यते- उडुपस्तृणप्लवः । प्लवन्तेऽनेन कोलः, कोलति संस्त्यायति वा कोलः, यच्छाश्वतः- पोतप्लवकयोः कोलः कोलं तु बदरीफलम् । स्वतोऽकृत्रिमम् । आतरन्त्यनेनातरः, आवाप इत्येके । पणन्तेऽनेन पणः, पणे साधु पण्यं मूल्यं, साधौ (तत्रसाधु) यत् । काष्ठमुपलक्षणं, काष्ठाश्मादिमयी जलधारिणी द्रोणी, द्रवत्यम्भोऽस्याम्, द्रोणिका त्वम्बुवाहिनीत्येके पेठुः ॥ ११ ॥ समुदितानां यानं संयात्रा, सा प्रयोजनमस्य (प्रयोजनम्) सांयात्रिकः । पवते वातेन पोतो वाहनम् । कर्णोऽरित्रं, कर्णः श्रोत्रमरित्रं चेति दुर्गः । नावा तरति नाविकः, नौद्व्यचष्ठन् (सू०) । नियन्तुं शक्ता नियामकाः । निया(र्या)माश्च । गुणवृक्षो यत्र नौरज्जवो बध्यते, पोते ध्वजपटाद्याधार इत्येके । कूपे- आधारगर्ते कायति कूपकः, गौडस्तु जलान्तस्तरून्कूपकानाह ॥ १२ ॥ येन नौर्बाध्यतेऽसौ नौकादण्डः । क्षिप्यतेऽनया क्षेपणी, क्षेपण्यपभ्रंशः, क्षिपेत्युपाध्यायः । के जले नावो येन निपातयन्ति स केनिपातः, हलदन्तादिति (सू०) अलुक् । इयर्त्यनेनारित्रम्, स्फ्यादि कोटिपात्रं वा । न बिभर्त्यभ्रिः । काष्ठे कुद्दालः काष्ठमयो वा, येन निखन्यते भग्नं पोतादिकं कुथेन पूर्यते । (सेचनं) येन नावो जलमुच्छ्रियते ॥ १३ ॥ क्वचित्- यानपात्रं तु पोतोऽब्धिभवे त्रिषु समुद्रियम् । सामुद्रिको मनुष्योऽब्धिजातादौ नौः समुद्रिका [जाता सामुद्रिका च नौः] ॥ अर्धं नावोऽर्धनावं, नावोद्विगोः (सू०), अर्धाच्च (सू०) इति टच् । नावमतिक्रान्तमतिनु जलम्, अतिनौः पुमान् स्त्री वा । तिष्ठद्गुप्रभृतिगणात्-

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।
उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोर्णवः ॥ १ ॥
रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ।
तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥
आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।
पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥
कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।
अम्भोर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशं(सं)वरम् ॥ ४ ॥
मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।
भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु ॥ ५ ॥
महत्सूल्लोलकल्लोलौ स्यादावर्तोम्भसां भ्रमः ।
पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
चक्राणि पुटभेदाश्च भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।
कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥

समुनत्ति समुद्रः । अप- उदकं भावेतेस्मिन्निर्मन्थ्य, कर्मण्यधिकरणे च (सू०) इति किः, पेषंवासवाहनधिषु च (सू०) इत्युदकस्योदः । न कुं पृणाति मर्यादापालनादकूपारः । पारमावृणोति पारावारः, पारमिवावारमस्य वा कुहरवत् । उदकमस्त्यस्योदन्वान्, उदन्वानुदधौ च (सू०) इति साधुः । स्यन्दते सिन्धुः । सरांसि सन्त्यस्य सरस्वान् । सगरैः खातः सागरः । अर्णोस्यास्त्यर्णवः, अर्णसो लोपश्च (वा०) इति वः सलोपश्च ॥ १ ॥ यादांसि पाति यादःपतिः, पाथःपतिरित्येके । सुगममेव हि मध्यमपांपतेः- इति दर्शनीयमनसो पष्ठ्या अलुक् । वीचिमाली सर[शर]ध्वजोऽवारपारश्च । (क्षीरोदः) उदकस्योदः संज्ञायाम् (सू०) । अपरे दध्युदघृतोदगुडोदेक्षूदस्वादूदाः ॥२॥ आप्नुवन्त्यापः स्त्रियां बहुत्वे । वृणोति वार्वारि च । सरति सलिलं, रलयोरैक्यम् । काम्यते कमलम् । जडति जलम् । पयते पीयते वा पयः, पय गतौ, पीङ् पाने । कीला ज्वाला अलति वारयति कीलालम् । भवत्यस्मात्सर्वं भुवनम् ॥ ३ ॥ कं बध्नाति कबन्धं, यच्छाश्वतः—कबन्धं सलिले रुण्डे । कमन्धमिति द्वे नाम्नी इत्येके । उनत्त्युदकम् । पीयते पाति वा पाथः । पुष्णाति पुष्करम् । सर्वतोमुखं सर्वदिग्गतेः । अमत्यम्भः । ऋणोत्यर्णः । तुदति तौति वा तोयं, तुः सौत्र आवरणार्थो वा । नयति नीरम् । [घस्यते क्षियति वा क्षीरम्] । अम्बति(ते) अम्बु । शं वृणोति शंवरम् ॥ ४ ॥ मेघानां पुष्पं प्रसवः । दकं जीवनीयं च, यथा दकलावणिकाः । (अपां विकारोम्मयम्) एकाचो नित्यं (वा०) इति मयट् । आप्यं तु लक्ष्यात्, अत एव आप्यं वाति चान्द्रं सूत्रम् । (भङ्ग इ०) भज्यते तरत्यूर्णोति कौति वाक्यानि, ऊर्मिर्वा स्त्रियामिति काकाक्षिवत् । वीची तु नित्यं स्त्री ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वं लोलः [लोलयति] उल्लोलः । कल्लन्त्यनेन मय इति कल्लोलः, कुत्सितो लोल इत्येके । लहरी, ओघश्च । आवर्तते मण्डलेन भ्रमत्यावर्तः । पर्षति सिञ्चति पृषत्, रूपभेदात्क्लीबे । बिन्दति बिन्दुः, बिदि अवयवे । विगतः प्रोषो दाहोस्या विप्रुट् ॥ ६ ॥ चक्राकारेण यान्त्यधः (चक्राणि) । पुटं भित्त्वा निर्यान्तीत्युपध्यायोत्प्रेक्षा । वक्राणीति **माला** । नदीवक्राख्या इति च **गौडो** भ्रान्तः । तेनातोन्ये भ्रमाः प्रणाल्याद्या जलपथाः । कूलति कूलं, कूल आवरणे । रुणद्ध्यम्भो रोधः । तरन्त्यस्मात्तीरम् । तीरप्रतीरे दीपप्रदीपवत् । तट्यते आहन्यतेम्भसा तटम् ॥ ७ ॥ (नद्याः) परे पार्श्वे कूलं पारं, पारयंत समाप्यतेस्मिन्निति वा । अर्वाक् पार्श्वे कूलमवारम्, यदाह- अर्वाक्

पुंसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ।
सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥
दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।
विषवैद्यो जाङ्गुलिको व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः । ७ ।

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।
तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥
संहारः कालसूत्रं चेत्याद्याः सत्त्वास्तु नारकाः ।
प्रेता वैतरणी सिन्धुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥ २ ॥
विष्टिराजूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।
पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥
स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः । ८ ।

त्यमृततुल्यमहो कलत्रं हालाहलं विषमिवाप्रगुणं तदेव, यथा— कानममपायि मर्गान्द्रयकुण्डयापि दुष्कृत-हालहलौघः, यथा वा— मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदये हालहलं महाविषम् (भर्तृ०शृङ्गा०) । सुराष्ट्र-शुक्तिकदरत्सु देशेषु भवाः सौराष्ट्रिकादयः । ब्रह्मणः पुत्रः [यद् याज्ञवल्क्यः— त्वं विष ब्रह्मणः पुत्रः सत्ये धर्मे व्यवस्थितः] ॥ १० ॥ वत्सस्येव नाभिरस्य वत्सनाभः । (जाङ्गुलिकः) वसन्ता-दित्वात् (सू०) ठक्, जाङ्गुलिको विषभिषगिति भागुरिः । अहितुण्डेन दीव्यति (आहितुण्डिकः) ॥ ११ ॥ इति पातालभोगिवर्गः । ७ ।

नराः कायन्त्यस्मिन् नरकः । (नारकः) अन्येषामपि (अन्येभ्योऽपि दृश्यते) इति बाहुलकाद्वा दीर्घः । निष्क्रान्तः— अयान्निरयः, अयोऽनुकूलं दैवम् । तपति सततापयति तपनः, तपन्त्यनेन वा । अवन्त्य-स्मादवीचिः, विरुद्धा वीचयोऽत्र वा, स्त्रियामपि । रुरुर्हिंस्रः कन्दश्च तत्र भवो रौरवः ॥ १ ॥ संह्रियन्तेऽत्र संहारः, संघात इत्येके । कालान्ययोमयानि सूत्राण्यत्र कालसूत्रम् । आद्यशब्दात्ता-मिस्रान्धतामिस्रादयः । सत्त्वाः प्राणिनः, सीदन्तीति । प्रकर्षेण गताः प्रेताः । परेता आतिवाहिका(ता)-श्च । नारकी नदी, विगततरणो व्यर्थः पाताले भवा वैतरणी, विगततरणिर्विनौका वा । निष्क्रान्ता ऋतेः स-न्मार्गान्निर्ऋतिः ॥२॥ विशति क्लेशं विष्टिर्नरके हठात्क्षेपः । आजवने— आजूः, क्विब्वचिप्रच्छीति (वा०) कि-र्द्दीर्घो, आ— अजयते वा, आजूर्वेतनयोर्विष्टिः कर्मकृत्कर्मणोरपीति शाश्वतः । (कारणा) कृञ् हिंसायां, णिच् । यत निकारादौ, णिच्, यातयन्ति यातना नारकदण्डः । दुष्टानि खान्यस्मिन् दुःखम् । प्रसूतेर्जातं दुःखं, (आमनस्यं) अमनसो भावः, वैमनस्यमित्यर्थः । पञ्चापि मनःपीडार्था इति सभ्याः, यन्माला— दुःखं प्रसूतिजे क्लीबे पीडा बाधा च वेदना, दुःखमाधिः प्रसूतिजमिति कात्यः ॥ ३ ॥ कषिष्यति कष्टं, कष्टभावेऽप्यतीत्याहुः (का०), कृच्छ्रगहनयोः कषः (सू०) इति नेट् । कर्पति कृन्तति वा कृच्छ्रम्, आसमन्ताद्भियं लातीति— आभीलम् । एतानि शरीरपीडार्थानि, लक्ष्ये तु नवाप्येकार्थाः । एषां दुःखादीनां मध्याद्विशेष्यनिघ्ना दुःखकष्टकृच्छ्राभीलाः त्रिलिङ्गाः, यथा— सेयं दुःखा च दुरुपपादा च, दुःखः सुतो निर्गुणः, सर्वं दुःखं विवेकिनः ॥ ४ ॥ इति नरकवर्गः । ८ ।

त्रिष्वक्संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः ।
शेषानन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ॥ ४ ॥
तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।
अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥
मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।
सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजंगोऽहिर्भुजंगमः ॥ ६ ॥
आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।
कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको बिलेशयः ।
उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥ ८ ॥
त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि स्फटायां तु फणा द्वयोः ।
समौ कञ्चुकनिर्मोकौ क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

(शेषः) शेते हरिरस्मिन्न शिष्यते वा । वसुकस्यापत्यं वासुकिः । गौरिव नासिकास्य, अस्नासिकायाः संज्ञायांनसंच.स्थूलात् (सू०), गोनासाय नियोजितागदरजाः (विद्धशाल०) इति गोनासोऽपि ॥ ४ ॥ (तिलित्सः) तिल गतौ । चरान्द्रोऽपि । अजां गिरत्यजगरः, अजो नित्यो गरोऽस्य वा । शेतेऽयं शयुः । वाहं गतिं स्यति वाहसः– अचलः । चक्रमण्डली च । न लम्बम्र्दयति निर्विषत्वात्, अलोऽत्र गर्दत्यलिगर्द इत्येके । राजिं देहे लाति राजिलः । डुण्डति डुण्डुभः, डुडि हुडि निमज्जने, डुण्डु[डु] भाषते डुण्डु[डु]भ इत्येके, निर्विषो द्विमुखोऽहिः, लक्ष्यं च– किं महोरगविसर्पिविक्रमो राजिलेषु गरुडः प्रवर्तते (रघु०) ॥ ५ ॥ मालुर्मातुलाह्वोषधिस्तत्र धानमस्य मालुधानः । सर्पभेदा एते । (मुक्तकञ्चुकः) सर्प इति शेषः । सर्पति सर्पः । प्रियते व्यायच्छति पृदाकुः । भुजेन कौटिल्येन गच्छति, गमेः सुपि (वा०), खचडिद्वा (वा०), गमश्च (सू०) इति डः खच्, एवं त्रैरूप्यम् । अंहत्यहिः ॥ ६ ॥ आस्यां विषमस्य, आशीस्तालुगता दंष्ट्रा तया विद्धो न जीवति, पृषोदरादित्वात् (सू०) रेफलोपे आशीःशब्दोयमिति सभ्याः । चक्रं मण्डलाकारतास्यास्ति चक्री । व्याडनं हन्तुमुद्यमोऽस्यास्ति व्यालः, अड उद्यमे । कुटिलं सर्पति सरीसृपः, नित्यंकौटिल्येगतौ (सू०) इति यङ्, (यङोचिचेति) लुक्, पचाद्यच् (नन्दिग्रहिपचादीति), रीगृत्वतः (सू०) । गूढाः पादा अस्य गूढपात् । चक्षुषी श्रवसी अस्य चक्षुःश्रवाः, अत एव गोकर्णः । काकस्येवोदरमस्य काकोदरः, काकोलं विषमुदरेऽस्य वा ॥ ७ ॥ दर्वीरूपः फण एव करोऽस्य प्रहारादौ दर्वीकरः । गर्हितं दशति दन्दशूकः, लुपसदचरेति (सू०) यङ्, यजजपदशांयङः (सू०) इत्यूकः, जपजभदहेति (सू०) अनुस्वार । बिले शेते बिलेशयः, शयवास-वासिष्वकालात् (सू०) इति सप्तम्या अलुक् । उरसा गच्छत्युरगः, उरसोलोपश्च (वा०) इति डः । पद्भ्यां न गच्छति (पन्नगः), नभ्राण्नपाद्– (सू०) इत्यस्योपलक्षणत्वान्नञ् प्रकृत्या । भोगः सर्पदेहः कुटिला गतिर्वास्यास्ति भोगी । जिह्मं वक्रं गच्छति जिह्मगः । कुम्भीनसः कञ्चुकी लेलिहानश्च । राजसर्पो भुजंगभुक् ॥ ८ ॥ अहेर्भवमाहेयं, दृतिकुक्षीति (सू०) ढञ् । स्फटन्ति विशीर्यन्तेऽनया स्फटा, द्वयोर्वर्तमानायां स्फटायां फणापि द्वयोः, फटेत्येके । फण गतौ (फणा) । दर्विः कफेलुश्च । कञ्चुकमिव कञ्चते बध्यतेऽनेन (कञ्चुकः) । निर्मुच्यते निर्मोकोऽहित्वक् । निर्लयनी च । क्ष्वेडते मोहयति क्ष्वेडः । गिरति जीवं गरः, गरं लाति गरलं श्यामरस्यमलवत् ॥९॥ नवामी विषप्रकाराः । काकमेचकः काकोलः, ईषत्कोलति संस्त्यायति वा । कालस्य वर्णस्य कूटोऽत्र कालकूटः, मृत्युसंबन्धी व्याजो वा । हलति विलिखति जठरं न विलिखति च हलाहलः, हालेव हलतीति लक्ष्ये हालाहलो हालहलश्च, यथा– स्निग्धं भव-

क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् ।
विप्रलम्भो विसंवादो रिङ्खणं स्खलनं समे ॥ ३६ ॥
स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ।
तन्द्री प्रमीला भ्रकुटिर्भ्रुकुटिर्भृकुटिः स्त्रियाम् ॥ ३७ ॥
अदृष्टिः स्यादसौम्येक्ष्णि संसिद्धिप्रकृती त्विमे ।
स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः ॥ ३८ ॥
कम्पोथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३९ ॥

इति नाट्यवर्गः । ६ ।

अधोभुवनपातालबलिसद्मरसातलम् ।
नागलोकोथ कुहरं सु(शु)षिरं विवरं बिलम् ॥ १ ॥
छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा सु(शु)षिः ।
गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे सु(शु)षिरं त्रिषु ॥ २ ॥
अन्धकारोस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।
ध्वान्ते गाढेन्धतमसं क्षीणेवतमसं तमः ॥ ३ ॥

दर्शनान्नेष्टम् । अङ्गीकृतासंपादनं (विसंवादः) । स्वधर्मादेः स्खलनं (रिङ्खणं), रिखिलौकिकः, रिङ्गणमित्यके ॥ ३६ ॥ नियतं द्रात्येतस्यां निद्रा । संविशन्तीन्द्रियाण्यत्र संवेशः । स्वपनं स्वप्नः, स्वपोनन् (सू०) । इन्द्रियाणां तननं द्रात्यस्यां तन्द्री; निद्रा तन्द्रेत्यावन्तोपि । प्रमीलन्तीन्द्रियाण्यस्यां प्रमीला । भ्रूकौटिल्ये भ्रकुंसवत्त्रैरूप्यम् । अन्ये त्वदृष्टिरित्येतेन संबध्नन्ति, यदाहुः– भ्रुकुटिर्दृगसौम्या स्यात् ॥३७॥ सोमदेवताकत्वेन लक्षणयाधिकृतं सौम्यं, सोमाट्ट्यण् (सू०), शाखादित्वात् (सू०) सोम्य इत्याहुः । असौम्ये विरुद्धे दर्शन इत्यर्थः । इमे द्वे स्त्रियौ स्वरूपादेः पर्यायौ ॥३८॥ (वेपथुः) ट्वितोथुच् (सू०) । क्षणुते दुःखं क्षणः । महः– अकारान्तः, सान्तस्तु तेजोर्थः क्लीबे । उद्धन्ति दुःखमुद्धवः । उत्सूते सुखमुत्सवः । उद्धर्षणमुल्लसनं नैश्चिन्त्यं निर्वृतिः । प्रयोगार्थे संगीतकं गुणनिका । प्राङ् नाट्यात्पूर्वरङ्गः स्यात् । नाट्यार्थोपक्षेपः पूर्वं प्रस्तावना मुखं च स्यात् ॥ ३९ ॥ इति नाट्यवर्गः । ६ ।

पतन्त्यस्मिन् पातालम् । रसायास्तलमधः, रसा भूस्तलं पृष्ठं वास्य । कुत्सितं कृत्वा हरति विस्मापकं वा कुहरम् । सुषिर्धर्ममात्रेपि मधुवत्, ऊषसुषीतिरः (सू०) । शाश्वतस्तु निरस्तावयवौ सुषिरसुषी मन्यते, यदाहुः– गर्ते गतोन्विते वाद्यविशेषे सुषिरं त्रिषु । विव्रियते विवरम् । बिलति बिलं, बिल भेदने ॥ १ ॥ छिद्य(द्य)ते छिद्रम् । निर्व्यथतेनेन निर्व्यथनम् । रोचते प्रकाशतेनेन रौति वा रोकम् । रमति रन्ध्रम् । श्वभ्नोति [भ्रान्तं] श्वभ्रम् । उप्यतेस्यां वपा, भिदादित्वादङ् (सू०) । सुषु स्यति सुषिः । गिरति गर्तः, गर्तापि । अवन्त्यस्मादवटः । सिद्धस्यानुवादाच्छ्वभ्रं भूरन्ध्रमेव, यत्कात्यः– श्वभ्रगर्तावटागाधा भुवो विवरवाचकाः ॥ २ ॥ अन्धं करोत्यन्धकारः । क्षुब्धस्वान्तेति (सू०) ध्वान्तं साधुः । तमोस्यास्तीति तमिस्रं, ज्योत्स्नातमिस्रेति (सू०) साधुः, स्त्रीत्वमतन्त्रम् । तिम्यतीव तिमिरम् । ताम्यन्त्यनेन तमः, असुन् । भूम्निच्छायं च । अन्धयत्यन्धं च ततमश्चान्धतमसम्, अवसमन्धेभ्यस्तमसः (सू०) इत्यच् । क्षीणे ध्वान्तेवहीनं च तत्तमश्चावतमसम् ॥३॥ (संतमसम्) समन्तात्तमः । न–अगा नागाः, नभ्राडिति (सू०) नञ् प्रकृत्या । कद्र्वा अपत्यानि काद्रवेयाः, शुभ्रादित्वाद् (सू०) ढक्, न तु– स्त्रीभ्यो ढक् (सू०) कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दस्युङ्विधेः (सू०), सर्वेभ्योन्ये देवयोनयोमी ।

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ॥ ३१ ॥
स्त्रीणां विलासविब्बोकविभ्रमा ललितं तथा ।
हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ॥ ३२ ॥
द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा ली(खे)ला च नर्म च ।
व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडाखेला च कूर्दनम् ॥ ३३ ॥
घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ।
अवहित्थाकारगुप्तिः समौ संवेगसंभ्रमौ ॥ ३४ ॥
स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः स मनाक् स्मितम् ।
मध्यमः स्याद्विहसितं रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ॥ ३५ ॥

तन्यते वा (कुतुकं), प्रज्ञादित्वात् (सू०) स्वार्थे वाण्, तुलैकिको वा ॥३१॥ शृङ्गारभावेभ्यो रत्यादिभ्यो मनोविकारेभ्यो जाताः क्रियाश्चेष्टा अलंकाराख्या लीलादयः (हावाः), ह्वयन्त्यनेनेति हावः, यदाह—स्याद् भावसूचको हावो हेलास्यैवानुभावनम् । ह्वल हावकरणे, हेलृ अनादरे वा । इतिशब्दात्प्रकारार्थात्किलकिञ्चितादयोऽपि । अत्र भरतः— अलंकाराश्च नाट्यज्ञैर्ज्ञेया भावरसाश्रयाः । यौवनेऽभ्यधिकाः स्त्रीणां विकारा वक्त्रगात्रजाः । देहात्मकं भवेत्सत्त्वं सत्त्वाद्भावः समुत्थितः । भावात्समुत्थितो हावो हावाद्धेला समुत्थिता ॥ तथा— हावः शृङ्गारभावाभो रम्योक्तिस्मितवीक्षितम् । शृङ्गारप्रौढिमा हेला हेवाको यौवने हि यः ॥ किं च— लीला विलासो विच्छित्तिर्विभ्रमः किलकिञ्चितम् । मोट्टायितं कुट्टमितं विब्बोको ललितं तथा । विहृतं चेति मन्तव्या दश स्त्रीणां स्वभावजाः ॥ प्रियस्यानुकृतिर्लीला श्लिष्टा वाग्वेषचेष्टितैः, लीङ् श्लेषणे । विलासोऽङ्गे विशेषो यः प्रियाप्तावासनादिषु, लस श्लेषणे । मण्डनानादरन्यासो विच्छित्ती रूपदर्पतः, विश्लिष्टा छित्तिर्भङ्गिरित्यर्थः । चित्तवृत्त्यनवस्थानं शृङ्गाराद्विभ्रमो मतः । हर्षाद्रुदितगीतादिव्यामिश्रं किल[लि]किञ्चितं, अलीकं किञ्चितमित्यर्थः, किलीति कण्ठकूजितं वा, यथा किलिकिलारावः । मोट्टायितं प्रियं स्मृत्वा साङ्गभङ्गविजृम्भणम्, मुट प्रमर्दने । दुःखोपचारः सौख्येऽपि हर्षात्कुट्टमितं मतम्, कुट्ट च्छेदनादौ, तेन मितं, इत्थं लक्ष्यात् । विब्बोकोऽभिमतप्राप्तावपि गर्वादनादरः, विबु क्षेपे, विपूर्वस्य बुक्कतेर्वापभ्रंशो विब्बोकः । अनाचार्योपदिष्टं स्याल्ललितं रतिचेष्टितम् । वक्तव्याभाषणं व्याजाद्विहृतं दर्शितेङ्गितम्, अवसरागतं वचनं व्याजादिना हृतं विहृतम् ॥ ३२ ॥ द्रवति हृदयमनेन द्रवः । किलन्त्यनेन केलिः, किल क्रीडायां, केलृ चलने वा । नृणाति नर्म । वकरोऽपि । व्यज्यत इति व्याजोऽत्र स्वरूपाच्छादनं, यथा— ध्यानव्याजमुपेत्य चिन्तयसि काम् (नागा०) । अपदिश्यतेऽपदेशः, अतद्रूपस्य ताद्रूप्यं क्रीडार्थं वचनेयम् । स इव लक्ष्यते लक्ष्यम् । निभच्छलच्छद्मादयोऽप्युपचारात् । एते केलिपरिष्वङ्किते रूढाः, क्रीडया खेलनं, लुक्का(वालुङ्का !)मणिकादौ त्येके । (कूर्दनं) कुर्दनमित्येके, कुर्द क्रीडायां, उपधायांच (सू०) इति दीर्घाभावश्चिन्त्यः ॥ ३३ ॥ जिघर्त्यनेनाङ्गं घर्मः । निदह्यतेनेन निदाघः, न्यङ्क्वादिः (सू०) । प्रलीयते क्रियात्र प्रलयः सात्त्विको भावः, मूर्छेत्यर्थः, यदाहुः— स्तम्भे विचेतनत्वं प्रलये गतचेतनत्वमत एव । सहसैव निपतनं भुवि भवति महाभूतशोषित्यान् ॥ (अवहित्था) अन्तःकृतस्य रोमाञ्चादेश्छादनादबहिःस्थितत्वम्, अवहित्थामित्येके । (संवेगः) भयादिना कर्मस्वावेगः ॥ ३४ ॥ उत्प्रास्यते सामर्षोऽन्यः क्रियतेनेन, सोपहास इत्यर्थः । आच्छुरणं परच्छेदनम्, अवच्छुरितमिति कात्यः । स हास ईषत्स्मिताख्यः । रोम्णामञ्चनं रोमाञ्चः । रोमाणि हृष्यन्त्यनेन रोमहर्षणम् । पुलको रोमविक्रियापि ॥ ३५ ॥ (क्रन्दितं) भावे क्तः (नपुंसके भावेक्तः) । (जृम्भः) मुखादिविकासः, घञि पुमान्, अप्रत्यये (सू०) स्त्री, क्लीबत्वं त्वभिधौ भयादिभ्य·

क्षान्तिस्तितिक्षाभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।
अक्षान्तिरीर्ष्यासूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥
वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।
पश्चात्तापोनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥
कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट्क्रुधौ स्त्रियाम् ।
शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥
प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोथ दोहदम् ।
इच्छा काङ्क्षा स्पृहेहा तृड् वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥
कामोभिलाषस्तर्षश्च सोत्यर्थं लालसा द्वयोः ।
उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥
स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कलिके समे ।
उत्साहोध्यवसायः स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥
कपटोस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छद्मकैतवे ।
कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यं प्रमादोनवधानता ॥ ३० ॥

मन्दमक्षि यत्र तन्मन्दाक्षम् । कीडावनम्रवक्त्रेन्दुरिति स्वोत्थलज्जावशाद्विनम्रवदनमति मुखमिति मन्दास्यमित्येके । (व्रीडा) व्रीडादमुं देवमुदीक्ष्येति पुंस्यपि । सा लज्जा परस्मात्सम्भावद्दे आ(य)तेपत्रपा ॥ २३ ॥ (क्षान्तिः) वहुलकात्क्तिन् । (तितिक्षा) गुप्तिज्किद्भ्यः- (सू०), निन्दाक्षमाव्याधिप्रतीकारेष्विति (वा०) सन् । क्षमा मर्षः सहनं च । अभिचारेण ध्यानमभिध्या, परस्वविषयस्पृहेत्येके, दोषचिन्तापूर्वं परस्वे लिप्सेत्यर्थः, यत्कात्यः- विषयप्रार्थनाभिध्या । भार्यादेः परदर्शनासहने स्त्वाऽक्षान्तिरीर्ष्या, अयं तु परोत्कर्षासहनं मात्सर्यमीर्ष्यां मन्यते य ईर्ष्युः परवित्तेष्विति वत् । (असूया) असूञ् कण्ड्वादिः ॥ २४ ॥ वीरस्य कर्म वैरं, द्वन्द्वाद्वुन्वैरमैथुनिकयोः (सू०) इति लिङ्गादण् । इत्थमीर्ष्यासूयाद्वयाणां भेदाद्- द्वेषो ना स्यादसूयेर्ष्येति मालाकारो भ्रान्तः । मन्यते मन्युर्दैन्यमिह, यच्छाश्वतः- निगदन्ति क्रतौ मन्युं मन्युः स्वरदैन्ययोः । शोचनं शुक् । (विप्रतीसारः) उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलं (सू०) इति दीर्घः, पक्षे विप्रतिसारः । अनुशयो वक्ष्यते ॥ २५ ॥ प्रतिहन्यतेनेन प्रतिघः, करणेहनः (सू०), परीघः (सू०) इति बाहुलकाद् घत्व च । शुची शुद्धे, तृतीयादिषुभाषितपुंस्कात् (सू०) वाव पुम् । (शील) शील समाधाने । चर्यतेनेन चरितम् । चरित्रं च । (उन्मादः) नितान्तस्यातभूतार्थावेशात् ॥ २६ ॥ प्रियस्य भावः प्रेमा, प्रियस्थिरेति (सू०) प्रादेशः । हृदयस्य कर्म हार्दम्, युवादित्वादण् (हायनान्तयुवादिभ्योण्), हृदयस्यहृल्लेखयदण्लासेपु (सू०) । प्रीतिः प्रेम, प्रीञो मनिन् (अन्येभ्योपि दृश्यन्ते) । दोहमाकर्षणं ददाति दोहदम् । मन एव रथो दूरगामि यत्र मनोरथः । मनोगवी च ॥ २७ ॥ सातिशयेनेच्छ भृशं लसनं लालसा, लल इप्सायां वा । उप समीपे- आधिरस्य, उपपन्न आधिर्वा- उपाधिः । आधीयते चिन्तानेनेत्याधिः ॥ २८ ॥ (आध्यानं) ध्यै चिन्तायाम् । चिन्ति (त्त)श्व । स्त्रीत्वेनापि साम्यं (॰उत्कण्ठोत्कलिकयोः), आध्यानमिह संबध्नन्ति, यत्काशिका- आध्यानमुत्कण्ठापूर्वकं स्मरणम् । उद्यमोद्योगौ च (अध्यवसायार्थौ) । उत्साहः सातिशयो वीर्यं, वीरस्य कर्म, वीरवीर्यौ च (सू०) इति गण-(सूत्र-)पाठात्साधुः ॥२९॥ के मूर्ध्नि पट इवाच्छादकः कपटः । उपधीयते स्फटिकस्येव सिन्दूरमुपधिः । छाद्यतेनेन रूपं छद्म, इस्मन्त्रन्क्विषुचेति (सू०) ह्रस्वः । कितवस्य कर्म कैतवम् । कुत्सिता सृतिर्हिंसार्थं कुसृतिः, पूर्वत्र तु वञ्चना फलम् । निकृष्टा कृतिर्निकृतिः । शठस्य कर्म शाठ्यम् । अनवाहितत्वं कार्येष्वलेपः ॥ ३० ॥ कुर्भूमिस्तुद्यतेनेन कुत्सितं

उत्साहवर्धनो वीरः कारुण्यं करुणा घृणा ।
कृपा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥
हासो हास्यं च बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।
विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥
दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।
भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं तूग्रममी त्रिषु ॥ २० ॥
चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ।
विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥
गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः ।
अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥
रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूक्षणम् ।
मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा साऽपत्रपाऽन्यतः ॥ २३ ॥

(षिद्भिदादिभ्योऽङ्)। कृपः कृपा, भिदादित्वादङ् (सू०)। अनुक्रोशन्ति समदुःखा भवन्त्यनेनानुक्रोशः ॥१८॥ स्थाय्येव तु रसोऽभवेदिति भावरसयोः पर्यायत्वेन ध्वनति। (हसः, हासः) स्वनहसोर्वेत्यप् (सू०)। हसनीयं हासे साधु वा हास्यम्। बधेर्निन्दायां सन्, बीभत्साऽस्य बीभत्सः, अप्रत्ययात् (सू०), अर्श आदिभ्योऽच् (सू०)। जुगुप्साप्रभवत्वाद्विकृतः, यदाह– विष्ठाकृमिज उद्वेगी क्षोभणो रुधिरादिभिः। बीभत्सो द्विविध इति, रसे तु पुमान्– तद्वति त्रिलिङ्गः। (बीभत्सं, विकृतं) द्वयमित्यनयोः पर्यायतामाह। प्राग्वद्भावरसयोः पर्यायत्वम्, अद्भुतस्य विस्मयस्थायिभावात्मकत्वात्, विपूर्वः स्मिङ् अद्भुतार्थः। अत्– आश्चर्यार्थेऽव्ययम्, तस्य भवनमद्भुतम्, अदिभुवो डुतच् (उ०)। आचरणीयं, आश्चर्यमनित्ये (सू०) इति साधुः। चित्र कदाचिद्दर्शने, अच् ॥ १९ ॥ भीरोरयं त्रासनकृद् भैरवः। दारयति चित्तं दारुणः। भीषयते भीषणः। बिभ्यत्यस्माद् भीष्मः। (भीमः) भीमादयोऽपादाने (सू०)। (घोरः) घुर भीमार्थे। बिभ्यत्यस्माद्भयानकः, आनकः शीङ्भियः (उ०)। भयं करोति भयंकरः, मेघर्तिभयेषु कृञः (सू०) खच्। प्रतिगतं भयेन प्रतिभयम्, कुगतिप्रादयः (सू०) इति समासः। रुद्रस्यायं रौद्रः क्रोधात्मा। अमी अद्भुताद्या उग्रान्ता रसेषु पुंलिङ्गास्तद्वति त्रिलिङ्गाः। रौद्रादिकं तु रसे नपुंसकमिति **नारायणः** ॥ २० ॥ रसानुक्त्वोऽथाऽव्यभावानाह दरेति। दीर्यन्तेऽस्माद्दरः, लिङ्गभेदेऽर्थभेदाद् द्विलिङ्गः, दरी गुहा। साधूनस्यति साध्वसम्। भयं भीः, संपदादिभ्यः क्विप् (वा०)। भीतिर्भयं, अज्विधौ– भयादीनामुपसंख्यानं नपुंसके क्तादिनिवृत्त्यर्थम् (वा०)। चेतसा भाव्यते सुखादिः स्वकारणाद्भवति वा चित्तवृत्तिविशेषो भावः, भावयति करोति रसान्वा, यद्भरतः– नानाभिनयसंबद्धान्भावयन्ति रसानिमान्। यस्मात्तस्मादमी भावा विज्ञेया नाट्ययोक्तृभिः ॥ ते च– रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा। जुगुप्साविस्मयशमाः स्थायिभावा रसोद्भवाः ॥ भावं योऽनुभावयति मुखरागादिः, यदुक्तं– अनुभावस्त्वभिनयः पश्चादर्थप्रकाशनम् ॥ २१ ॥ व्यभिचार्यादीनाह। मत्समो नास्तीति मननं मानः। ममताहंता दर्पोऽवलेपोऽपि। (परिभव इत्यादि) परौ भुवोऽवज्ञाने (सू०) इति वा घञ्। (तिरस्क्रिया) तिरोऽन्तर्धौ (सू०) गतिः, परिभवेन्त्यप्युपचारात्, अतः– तिरसोगतावितीति (चान्द्रसू०) सत्वम् ॥ २२ ॥ रिह कत्थनादौ, रेहणं रीढा, क्तः, होढः (सू०), ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (सू०)। अवहेलनमवहेलं, हेडृ अनादरे, डलयोरैक्यम्। अवहेलापि। न सुष्ठु– उक्षणमसूक्षणमिति लक्षणयावज्ञा गम्यते, यत्कौटिल्यः– अयमुच्चैः सिञ्चतीति दीर्घश्चारायणः प्राव्राजीत्। असूक्षणमित्येके, सूर्यतेः– यरयहलः (सू०) इति यलोपात्। निकारोऽभिभवः परभवो न्यक्कारश्च।

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्तकः ।
स्त्रीवेषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका ॥ ११ ॥
भगिनीपतिरावुत्तो भावो विद्वानथावुकः ।
जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥
राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका ।
देवी कृताभिषेकायामितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥
अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ।
अम्बा माताथ बाला स्याद्वासूरार्यस्तु मारिषः ॥ १४ ॥
अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठानिर्वहणे समे ।
हण्डे हञ्जे हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥
अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।
निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिकसात्त्विके ॥ १६ ॥
शृङ्गारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।
बीभत्सरौद्रौ च रसाः शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥

इति ह्रस्वः, अभ्रुकुंसादीनां (वा०) इति च पक्षे- अत्वम् । एवं भ्रुकुंस्यादि । गणयती- भरतन्- ईश्वरो गणः फलोऽस्त्यस्यां वा गणिका वारमुख्या । अज्जुका- असत्प्रकृतिप्रत्ययवि- भागा देश्यपदप्राया । नाट्योक्तौ नाट्यविद्यायां नान्यत्रेत्यधिकारः ॥ ११ ॥ भावयति भाव इत्यत्रगमात्राट्यादन्यत्राप्येषां प्रयोगे न दोषः, यद्भरतः- मान्ये भावोपि वक्तव्यः किंचिदूनेषु मारिषः ॥१२॥ (देवी) श्रीमहादेव्यां वासवदत्तादौ । अकृताभिषेकराज्ञीमध्यादेकैका भट्टिनी पद्मावत्यादिः ॥ १३ ॥ यथानर्हस्य ब्राह्मणस्य पूत्करणे, न ब्रह्मणि साधु (अब्रह्मण्यं), साध्वर्थेयत् (तत्रैसाधुः) । नाट्यादन्यत्र राष्ट्राधिकृतो राष्ट्रियः, राष्ट्रावारपारतिघः (सू०) । अम्ब्यते शब्द्यते बालैः, लोकेऽप्यम्बा ह्रस्वविधेः (अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः) । वस्यते प्रीत्या वासूः । आरात्पापकेभ्यः कर्मभ्यो जात आर्योऽर्णीयोऽभिगम्यो वा । मर्षणात्सहनान्मारिषः । मार्षोऽपि यथा परिषत्पर्पन् ॥ १४ ॥ अत्ता मातेवात्तिका । नियतं स्थानं निष्ठा । निःशेषेण वहनं समाप्तिर्निर्वहणम् । मुखप्रतिमुखगर्भावमर्षनिर्वहणाख्या हि पञ्च संधयः । नाट्योक्तौ नीचां प्रति हण्डे आह्वानं, चेटीं प्रति हञ्जे, सखीं प्रति हला ॥ १५ ॥ अङ्गस्य स्थानात्स्थानान्तरनयनमङ्गहारः स्थिरहस्तादिर्द्वात्रिंशद्वा । व्यनक्ति व्यञ्जकः । आभिमुख्यं नीयतेऽर्थोऽनेनाभिनयः, वाचिकाङ्गिकाहार्य- सात्त्विकाख्यो भावसूचकः । अङ्गेन यन्निर्वृत्तं तत् (आङ्गिकं), तत्र भवत्येवेति- अध्यात्मादित्वात् (वा०) ठञ् , निर्वृत्तेऽक्षद्यूतादिभ्यः (सू०) इति योगविभागाट्ठग्वा । सत्त्वं मनो गुणो वा तेन निर्वृत्तः सात्त्विकः, यदाह- सत्त्वोत्कृष्टे मनसि ये प्रभवन्ति भावास्ते सात्त्विका इति, समाहितमनस्कस्यानुकर्तु- र्जायन्ते ॥ १६ ॥ रत्यादयो भावा अनुक्रियमाणाः सामाजिकैः- रस्यन्त इति रसाः, यदाहुः— विभावैरनुभावैश्च युक्तोऽथ व्यभिचारिभिः । आस्वाद्यत्वात्प्रधानत्वात्स्थाय्येव तु रसीभवेत् ॥ वत्सलः पुत्रादिस्नेहात्मा रतिभेद एव । शान्तस्त्वलौकिकत्वान्नोक्तः, चशब्दात्संगृहीतो वा । शृङ्गमुत्तमत्व- मियर्ति शृङ्गारः । उत्तमयुवप्रकृतित्वेन जुगुप्सादिरहितत्वाच्छुचिः (शुद्धः) । उज्ज्वलो वेषौज्ज्वल्येन च । लक्षणमेतत्र त्वेतौ शृङ्गारपर्यायौ ॥ १७ ॥ उत्साहो हि वीररसस्य स्थायी भावः, एवं स्थायी भावः रसीततयैवास्वाद्यत इति सर्वरसलक्षणं कटाक्षितम् । शोकस्था- यिप्रभवः करुणो रसो धर्मद्वारेणोक्तः । [घृण्यतेनया] घृणा । दयन्तेऽनया दया, दय रक्षणे, भिदादय

चतुर्विधमिदं वाद्यवादित्रातोद्यनामकम् ।
मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्यू-र्ग्यो-र्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥
स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।
आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥
वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तु प्रसेवकः ।
कोलम्बकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥
वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझर्झराः ।
मर्दलः पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥
विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।
तालः कालक्रियामानं लयः साम्यमथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥
ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं-त्तं च नर्तने ।
तौर्यत्रिकं नृत्य-त्त-गीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

उत्सङ्गस्थत्वात् । आलिङ्ग्योऽस्यास्त्यालिङ्ग्य[ग्यः] आलिङ्ग्य वादनात् । ऊर्ध्वीकृत्यैकेन मुखेन वादनादूर्ध्वं कायति– ऊर्ध्वक आङ्गिकाह्वयः, आहुश्च– हरीतक्याकृतिस्त्वङ्क्यो यवमध्यस्तथोर्ध्वकः । आलिङ्ग्यश्चैव गोपुच्छो मध्यदक्षिणवामगः ॥ नाट्ये चैतत् ॥ ५ ॥ यात्रादौ यशोर्थं पटहो हन्यते स यशःपटहः । ढगित्यव्यक्तं कायति ढक्का । बिभ्यत्यस्या रणे भेरी । भम्भापि । दुन्दुशब्देन भाति भाययति वा दुन्दुभिः । आ-अनित्यानकः । द्वौ द्वौ भिन्नार्थावाहुः । कुणत्यनेन कोणो वादनकाष्ठं ढक्काद्युपयोगी, कुण शब्दे । शततन्त्रीरप्यनेन वाद्यते, अत एव कोणो वादित्रवादनमित्याहुः ॥ ६ ॥ कच्छपीवीणादण्डः प्रवालः, ज्वलादित्वाण्णः (ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः), यच्छाश्वतः– प्रवालो वल्लकीदण्डे विद्रुमे नवपल्लवे । कङ्कते ककुभः, दण्डाधः शब्दगाम्भीर्यार्थं दारुमयं भाण्डं यद् भस्त्रयाच्छाद्यते । केवलम्यन्ते तन्त्र्योऽत्रेत्यपभ्रंशे कोलम्बकः, कुल संस्त्याने इत्यस्माद्वा-अम्बच् । येन चर्मणा (!) उपनह्यते (उपनाहः), यत्र तन्त्र्यो निबध्यन्ते च (निबन्धनम्) ॥ ७ ॥ डमित्यव्यक्तं शब्दमियर्ति डमरुः । मड्डु कायति मड्डुच्चारणात्, मड्डुकं जलवाद्यमाहुः । डिण्डिमझर्झरौ शब्दानुकारात् । झर्झरः करटेत्येके । मर्द्यते मर्दलः, मर्द्रं लाति मर्दल इति तु कवयः । पणायत्यन्तस्तन्त्रीकः पणवः । अन्ये हुडुक्कागोमुखादयः । नृत्यति नर्तकी, शिल्पिनि ष्वुन् (सू०), नृतिखनिरञ्जिभ्यःपरिगणनं (वा०) । लसति संनर्मणि लासिका ॥ ८ ॥ विलम्बितादीनां लयानां तत्त्वाद्याः पर्याया इत्यभिधानकारः, नाट्ये तु विलम्बितानुसारेण क्रमात्तत्त्वाद्या वाद्यप्रकाराः । कालस्य क्रियया– आवापनिष्क्रमणादिकया मानं परिच्छेदकं प्रतिष्ठाहेतुस्तालः– वद्धयूट्यादि (!), मे[गे]याया मा[गा]नक्रियायाः कालनियमहेतुरित्येके, यद् दन्तिलः– तत्र ज्ञेयाः कलापाताः पादभागा[पादमान]स्तथैव च । मात्रा च परिवर्तश्च वस्तु चैव विशेषतः ॥ मा[गा]नमे[गे]ययोरन्यूनाधिक्ये श्लिष्टता लयो द्रुतादिः, वाद्यादीनामन्योन्यं समत्वमिति यावत् । तालविशेषस्तु लयोऽन्यः ॥ ९ ॥ [नाट्यशास्त्रे प्रत्येकं भेदोऽस्ति । तत्रोद्धतकरणाङ्गहारनिर्वर्त्यमारभटीवृत्तिप्रधानं गीतकानुसारित्वादादौ तण्डु(मुनि)ना प्रणीतं ताण्डवम् । ललिताङ्गहाराभिनयं कैशिकीवृत्तिप्रधानं वासकसज्जादिनायिकाचरितं डोंबिलि[लि]कादिनिबद्धं श्लिष्टत्वाल्लास्यम् । नृत्य[त्तं] त्वङ्गविक्षेपमात्रं विवाहाभ्युदयादौ ।] नाट्यं तु सर्वरसं पञ्चसंधि चतुर्वृत्ति दशरूपकाश्रयं नटकर्म, तदाह– नृत्या[त्ता]दि त्रयं समुदितं– तूर्यस्येदं त्रिप्रमाणं तौर्यत्रिकं नाट्यं च । आभ्यामन्यन्नटनमात्रम् ॥ १० ॥ भृशः कुंसनं भासनमस्य, इकोऽहस्वोऽङ्योगालवस्य (सू०)

निक्काणो निक्कणः क्काणः क्कणः क्कणनमित्यपि ।
वीणायाः क्कणितं प्रादेः प्रक्काणप्रक्कणादयः ॥ २५ ॥
कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वासि-शि-तं रुतम् ।
स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे समे ॥ २६ ॥

इति शब्दादिवर्गः । ५ ।

निषादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।
पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥
काकली तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।
कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥
समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी ।
विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥
ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम् ।
वंशादिकं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥

एते क्वणितमात्रे वीणायामवीणायां च, क्वणोवीणायांच (सू०) इति चकारेण नावित्यनुपसर्गे इति(च) सामान्येनानुकर्षणात् । उपसर्गात्क्वणो वीणायामेव घञो विकल्पात्सोपसर्गार्थं हि तत्र वीणाग्रहणम् । एवं सुक्काणसुक्कणादिः ॥ २५ ॥ कोलान् सूकरानाहलते त्रासयति कोलाहलः । कलोऽव्यक्तः, आभीक्ष्ण्ये द्विर्भावः । रुतमनूय वासि-शि-तविधिः, तिर्यञ्चो मृगपक्ष्यादयः, तिर्यग्योनिश्च पञ्चधा भवतीति । प्रतीपं श्रूयते प्रतिश्रुत् । पदस्वरतालावधानात्मकं गान्धर्वरागगीत्यादिकं गीतं, प्रावेशिक्यादि ध्रुवास्वरं गानमिति भरताद्युक्तो विशेषो नाश्रितः ॥ २६ ॥ इति शब्दादिवर्गः । ५ ।

'निषीदत्यस्मिन् रागो निषादः, निषदोऽपि । ऋषभो गोरुतसंवादित्वात्, यदाहुः– षड्जं मयूरा ब्रुवते गावस्त्वृषभभाषिणः । अजाविकं तु गान्धारं क्रौञ्चः क्वणति मध्यमम् ॥ पुष्पसाधारणे काले पिकः कूजति पञ्चमम् । धैवतं हेषते वाजी निषादं बृंहते गजः ॥ गां धयति [गां वाचं धारयति] इति गान्धारः । षड्भ्यो जातः षड्जः, यदाहुः– नासां कण्ठमुरस्तालु जिह्वां दन्तांश्च संस्पृशन् । षड्भ्यः संजायते यस्मात्तस्मात्षड्ज इति स्मृतः । धीवतामयं धैवतः । दारवी गात्रवीणा च द्वे वीणे स्वराश्रयौ, वंशमुरजादयोऽनुकरणमात्रत्वेति नोक्ताः ॥ १ ॥ ध्वनावित्येव, मधुरेऽल्पे शब्दे काकली, ईषत्कलोऽस्याम् । कलति कलयतीति वा कलः । मन्दते मन्द्रः, मन्द्रोऽपि । ध्वनावित्येव, तारयति स्वनं स्थानेभ्यस्तारः, यद्दन्तिलः– नृणामुरसि मन्द्रस्तु द्वाविंशतिविधो ध्वनिः । स एव कण्ठे मध्यः स्यात्तारः शिरसि गीयते ॥ कलमन्द्रतारा गुणिलिङ्गाः ॥२॥ समन्वितोऽनुगतो लयो द्रुतादिर्यत्र, एकः समस्तालो मानमस्यैकतालः, अभिन्नकालमान इत्यर्थः । एकं तननमस्यैकतानो वा, एकतानमनाकुलमिति दुर्गः । वेति जायते स्वरोऽस्यां वीणा । वल्लते (वलते) स्वरोऽस्यां वल्लकी, वल्लतिः (वल्लिः) सौत्रो वा हृद्यार्थः । विपञ्च्यते स्वरोऽस्यां विपञ्ची । घोषवती च । (परिवादिनी) परिवदत्यवश्यं सप्तस्वरत्वात् ॥ ३ ॥ तन्त्रीतननात्ततम् । आदिशब्दात्तेरन्धीरावणहस्तकिन्नर्यादि । आनह्यते स्म चर्मणानद्धम् । अवनद्धं च । आदिशब्दाद् दर्दुरकरटादि । सुषिश्छिद्रं विद्यतेऽस्य सुषिरम्, शुषिरमिति प्राच्याः, उपसुषीति (सू०) रः । कांस्यमयस्तालो वादित्रम् । आदिशब्दाच्छम्यादि । हन्यते घनं, मूर्तौ घनः(सू०) ॥४॥ वाद्यते (वाद्यं, वादित्रं), आतुद्यते च, यत्सुरसः– ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च । चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितम् ॥ मृद्यन्ते मृदङ्गाः, मृद्–अङ्गं येषाम् । मुरात्संवेष्टनाज्जाता मुरजाः । भेदा एषां विज्ञेयाः । अङ्कोऽस्यास्त्यङ्की[कः]

अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ।
विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥
सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निह्नवः ।
संदेशवाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥ १७ ॥
रुष(श)ती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।
अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥
निष्ठुरं परुषे ग्राम्यमश्लीले सूनृतं प्रिये ।
सत्येथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥
लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ।
अम्बूकृतं सनिष्ठेवमबद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥
अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृषार्थकम् ।
अथ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥
सत्यं तथ्यमृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति ॥ २२ ॥
शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ।
स्वाननिर्घोषनिर्ह्रादनादनिस्वाननिस्वनाः ॥ २३ ॥
आरवारावसंरावविरावा अथ मर्मरः ।
स्वनिते वस्त्रपर्णानां भूषणानां तु शिञ्जितम् ॥ २४ ॥

षकथापि ॥ १६ ॥ चोद्यमाक्षेपाभियोगौ शापाक्रोशौ दुरेषणा । अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्या विकत्थन- इति वक्तव्यम् । दुरेषणा दुरभिध्यानम् । (चाटु, चटु) प्रेम्णा श्लाघनं, चटतीति चटेः णुण्, उन् च । कं, चाटुकम् । असत्या तु श्लाघा विरुद्धं कत्थनं (विकत्थनम्) । लेखादिनाभिमतेर्थे मुखस्वरूपं वाचिकं, वाचोव्याहृतार्थायां(सू०)इति ठक् । उत्तरे वक्ष्यमाणा, यथा- रुषती वाक्, रुषच्छब्दः, रुषद्वचः॥ १७॥ (रुषती) हिंसेत्यर्थः, न तां वदेद्रुषतीं (गां) पापलोक्याम् । अत उषतीत्यसभ्यः पाठः। कलासु साधुः कल्या, काल्येति कात्यायाः। सान्त्व्यतेनेनेति सान्त्वं, सामयतेर्वा-औणादिकस्त्वत् । (हृदयंगमं) गमेःसुप्युपपदव्यात् (वा०) खच् ॥ १८ ॥ निश्चितं तिष्ठति निष्ठुरम् । विकृष्टं च । ग्रामे भवं ग्राम्यं, ग्रामाद्यखञौ(सू०)। असभ्यस्मृतिहेतुश्चाश्लीलं- अश्रीप्रदं मांसादि । प्रियं सत्यं वचनं सूनृतं, सुष्ठु नृत्यते सून. सूनं तदृतं च सूनृतम् । अन्योन्यविरुद्धं संकुलं क्लिष्टं च, यथा- अन्धो मणिमुपाविध्यत्तमनङ्गुलिरावयत् । तमग्रीवः प्रत्यमुञ्चत्तमजिह्वोभ्यपूजयत् ॥ १९ ॥ (ग्रस्तं) असंपूर्णोच्चारितम् । अनम्बुनोम्बुनः करणमम्बूकृतं, च्वौ च (सू०) इति दीर्घः । निष्ठेवस्थूत्कारः, ष्ठिवुक्लमुचमां ष्ठिवोर्वादीर्घः (चान्द्रसू०), पक्षे सनिष्ठीवम् । असंबद्धं दशदाडिमादि वाक्यं समुदायार्थशून्यम् ॥ २० ॥ (अनक्षरं) विरोधे नञ् । (आहतं) यथा-एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः । मृगतृष्णाम्भसि स्नातः शशशृङ्गधनुर्धरः ॥ सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं मणितं रतिकूजितम् । श्रव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितमिति क्वचित्पाठः । म्लेच्छेर्म्लिष्टं, क्षुब्धस्वान्तध्वान्तेति (सू०) साधुः । विगतं तथा सत्यं यत्र वितथम् ॥ २१ ॥ सति साधु सत्यम् । तथा साधु तथ्यम् । समञ्चति सम्यक्, तदेव समीचीनं, समीची समीचीना वाक्, समःसमि (सू०) इत्यप्रत्यये समिः, नामैतत्, सम्यक्त्वव्ययम् । वाग्भेदास्त्रिपुक्ताः, (यथा) सत्याशीः, सत्यः शब्दः, सत्यं वचः । यदा तु सत्यवाक्त्वादिना तद्वति वर्तन्ते तदापि त्रिषु, यथा सत्यं कुलं, सत्या स्त्री, सत्यः पुमान् । एवं ग्राम्यनिष्ठुरादयः ॥२२॥ (निनाद इ०) नौगदनदाति (सू०) वा, स्वनहसोर्वा (सू०), विभाषाङिरुप्लुवोः (सू०), उपसर्गेरुवः (सू०) इति च यथास्वं घञपौ ॥ २३ ॥ मर्मरेति शब्दानुकरणम् । स्वनित इत्येव (भूषणानाम्), शिञ्जापि ॥ २४ ॥

समस्या तु समासार्था किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
वार्त्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥
आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।
हूतिराकारणाह्वानं संहूतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥
विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।
उपोद्घात उदाहारः शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥
प्रश्नोनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे ।
मिथ्याभियोगोभ्याख्यानमथ मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥
अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।
यशः कीर्तिः समा(म)ज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥
आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।
काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥
अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ।
उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥
पारुष्यमतिवादः स्याद् भर्त्सनं त्वपकारगीः ।
यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥
तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।
स्यादाभाषणमालापः प्रलापोनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

आहूयतेनेनाह्वयः, बाहुलकाद् घः ॥ ७ ॥ नमत्यनेन नाम । (नामधेयं) भागरूपनामभ्योधेयः (वा०) स्वार्थे । आकारणमाकारणा, युच् , ल्युडन्तेन समाहारो वा । बहुभिः कृता या हूतिः सा संहूतिः, ब्रह्माह्वय इति भागुरिः ॥८॥ विविधो वादः (विवादः) । ऋणादानादिर्व्यवहारः, यत्स्मृतिः (याज्ञव०) —वि नानार्थेव संदेहे हरणं हार उच्यते। नानासंदेहहरणाद् व्यवहारः प्रकीर्तितः ॥ वाचो मुखमारम्भः। उप समीप उध्दृत्य हन्यत उपोद्घातः, यदाहुः– चिन्तां प्रकृतसिद्धयर्थामुपोद्घातं प्रचक्षते । उध्दृत्याह्रियत उदाहारः । वाचा शरीरस्पर्शनं (शपनं) । शापोपीत्यमरमाला ॥ ९ ॥ प्रच्छनं प्रश्नः, यजयाचेति (सू०) नङ्, च्छ्वोःशूडिति (सू०) शः । अनुयोगः पर्यनुयोगः । पृच्छा भिदादौ (षिद्भिदादीति) । उत्तरन्त्यनेनोत्तरं, उदो वा तरप् । मिथ्याभियोगोसत्याक्षेपः । मिथ्यादूषणमभिशाप इत्येके ॥ १० ॥ शब्दनं शब्दः प्रसिद्धः (प्रणादः), यत्कात्यः– शब्दो गुणानुरागोत्थः प्रणादः । यात्यश्नुते वा दिशो यशः । ऊतियूतीति (सू०) कीर्तिः साधुः । समाज्ञायतेनया समाज्ञा । श्लोकाभिहये अनेकार्थे ॥ ११ ॥ (आम्रेडितं) द्विर्भूते पूर्वाचार्यसंज्ञैषा, अतश्च म्रेडृ उन्माद इति पेठुः । द्वौ वारौ त्रीन् वारान्वेति, द्वित्रिचतुर्भ्यःसुच् (सू०) । विशब्दनाविवक्षातो घुषिरविशब्दने (सू०) इति नेट् । (घोषणा) ण्यासश्रन्थोयुच् (सू०) । कायति काकुः । आदिशब्दात्कामादिः ॥ १२ ॥ अवर्णो विगरितवर्णनम् । निष्क्रान्तो वादान्निर्वादः । उपक्रोशवदवर्णादयः पुंसीति वाच्ये प्रौढिम्नान्यथोक्तिः ॥ १३ ॥ (पारुष्यं) मैवं कृथाः (इति) वाच्यनेत्यर्थः ॥ १४ ॥ मैथुनमुद्दिश्य गालो इत्यर्थः, दूषणमित्येके। क्षारणापि, क्षारणाक्षारणाक्रोशाः साभिशापाभिमैथुना इति दुर्गः ॥ १५ ॥ (अनुलापः) पौनःपुन्येनोक्तिः । (विलापः) अनुशोचनमित्यर्थः । (विप्रलापः) विरुद्धं प्रलपनम् । मिथोन्योन्यमुक्तिप्रत्युक्तो संलापः ।

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।
तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥
श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः ।
स्त्रियामृक्सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥
शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गमोङ्कारप्रणवौ समौ ।
इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥
आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ।
आख्यायिकोपलब्धार्था पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥
प्रबन्धकल्पना कथा प्रवह्लिका प्रहेलिका ।
स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥

ह्यमिदं हि महात्मनाम् (भर्तृ०), भवत्यध्याहारस्तत्र हि वाचकमात्रम् । कारकैरन्विता संवद्धार्था वा क्रिया वाक्यम्- देवदत्त गामभ्याज शुक्लां दण्डेन । मर्यादाकाङ्क्षायोग्यतासत्तिवशादन्वितत्वं लक्षणं, यज्जैमिनिः— अर्थैकत्वादेकं वाक्यं साकाङ्क्षं चेद्विभागे स्यात् । भट्टोऽपि— साकाङ्क्षावयवं भेदे परानाकाङ्क्षशब्दकम् । कर्मप्रधानं गुणवदेकार्थं वाक्यमुच्यते ॥ एक शब्दात्मनोऽन्यदर्थात्मकस्य वाक्यस्य लक्ष्मेत्येके ॥ २ ॥ श्रूयते श्रुतिः । विदन्त्यनेन धर्मं वेदः । आम्नायते पारंपर्येणाम्नायः । त्रयोऽवयवास्त्रयी, अथर्वणस्त्वयुद्धारः । ऋग्यजुर्वादान्स्तुत्यादिर्विधिरिति लिङ्गादिकरदेपो नोदमनतोऽयः । निगमोऽनेकार्थे । वैदिको विधिः- चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः, यद् गौतमः— श्रुतिस्मृतिविहितो धर्मः । स्मृत्युक्तोऽपि वैदिक एव, वेदमूलत्वात्स्मृतेः । तद्विधिरित्यत्रयस्त्रयी धर्मोऽन्यः पूर्णाह्य इत्येके । ऋच्यते स्तूयतेऽनया ऋक् । स्यति पापं साम । इज्यतेऽनेन यजुः ॥ ३ ॥ अङ्ग्यते ज्ञायतेऽनेनाङ्गमुपकारकम्, शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः । छन्दोविचितिरित्येतैः षडङ्गो वेद उच्यते । (ओङ्कारः) स्वार्थे कारः, वर्णात्कारः (वा०) इत्यत्र निर्णीतत्वात् । प्रणूयते प्रणवः । इति ह आसीद्यत्रेतीतिहासः, इतिरेवमर्थे, हः किलार्थे । पुरावृत्तं पूर्वचरितम् । उदात्तानुदात्तस्वरिताः, ऊर्ध्वमादीयत इत्युदात्तः । एकश्रुतिस्तु स्वराविभागः ॥ ४ ॥ प्रत्यक्षागमाभ्यामीक्षितस्य पश्चादीक्षणमन्वीक्षा, सा प्रयोजनं यस्याः साऽऽन्वीक्षिकी तर्कविद्या । दम्यतेऽनेन दमनं वा दण्डः, स नीयते दम्यं प्रति प्राप्यते यया सा दण्डनीतिरर्थशास्त्रम् । वार्ता वैश्यवर्गे वक्ष्यते । आचष्टे-आख्यायिका वृत्तार्थकथनाद्धर्षचरितादिः । पुराऽपि नवं (भवं) पुराणं यतः- सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् (विष्णुपु०) ॥ ५ ॥ प्रबन्धस्य कल्पना कथा कादम्बर्यादिरन्यायत्वात् । प्रवह्णेन प्राधान्यं भजते प्रवह्लिका । प्रहेलयत्यभिप्रायं सूचयति प्रहेलिका, हिल हावकरणे । शाब्दी प्रहेलिका यथा- पानीयं पातुमिच्छामि त्वत्तः कमललोचने । यदि दास्यसि नेच्छामि नो चेद् दास्यसि देहि मे ॥ आर्थी यथा- जइ सामुआइ भणिआ पइवासहरम्मि दीवअं देसु । ता की समुद्द[अ]मुही हिअअम्मि णिवेसण्[अ]दि (दि)ट्ठिम् ॥ (यदि श्वश्र्वा भणिता पतिवासगृहे दीपकं देहि । तत् किं समुद्[द्र]मुखी हृदये निवेशयति दृष्टिम् ॥) उत्सन्नविप्रकीर्णशाखानां मन्वादिभिः स्मरणं स्मृतिः । धर्मः संधीयतेऽस्यां धर्मसंहिता । समाहरणं संक्षेपः ॥ ६ ॥ अपूर्णत्वाद्विक्षिप्तं[द्विःक्षिप्तं] समस्यते संक्षिप्यतेऽनया समस्या, संज्ञायांसमजेति (सू०) बाहुलकात्क्यप्, ऋहलोर्ण्यदिति (सू०) वा, संज्ञापूर्वकत्वाद् वृध्द्यभावः, समान्यस्यापि सर्वप्रातिपदिकेभ्यः (वा०) सुन् इत्येके, ततः अप्रत्ययात् (सू०), यथा- दामोदरकराघात विह्वलीकृतचेतसा । दृष्टं चाणूरमल्लेन शतचन्द्रं नभस्तलम् ॥ किं वदन्तीति किंवदन्ती लोकप्रवादः । वृत्तिर्लोकवृत्तं विद्यतेऽस्यां वार्त्ता, प्रज्ञाश्रद्धार्चावृत्तिभ्योणः (सू०)। वृत्तस्य चरितस्यान्तो वृत्तान्तः । उद्यते- उदन्तः, वदेश्च (सू०)।

अवदातः सितो गौरोऽवलक्षो धवलोऽर्जुनः ।
हरिणः पाण्डुरः पाण्डुरीषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥
कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।
पीतो गौरो हरिद्राभः पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥
लोहितो रोहितो रक्तः शोणः कोकनदच्छविः ।
अव्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥
श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।
कडारः कपिलः पिङ्गपिशङ्गौ कद्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥
चित्रं किर्मीरकल्माषशव-ब-लैताश्च कर्बु-र्बु-रे ।
गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः । ४ ।

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।
व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

गौर एव गौरः । अवलक्ष्यतेऽवलक्षः । धूयते मलोऽस्य धवलः, धावेर्ह्रस्वश्चेति श्रीभोजः । अर्ज्यतेऽर्जुनः । हरति हरिणः । पाण्डुः पाण्डुत्वमस्यास्तीति पाण्डुरः, नगपांसुपाण्डुभ्योरः (वा०) । ईषदव्यक्तः पाण्डुः, धूनोति चेतो धूसरः ॥ १३ ॥ वर्णान् कर्षति कृष्णः । नील वर्णे, कः । सितविरुद्धोऽसितः । श्यायते श्यामः । श्यामं श्यामत्वं लाति श्यामलः । कालयति मनः कालः । मेचयति (मचति) मिश्रीभवति मेचकः, मेचकः शिखिकण्ठाभ इति दुर्गः । पीयते वर्णान् पीतः । पलाशस्य वर्णस्यायं पालाशः : पीतरक्तकृष्णः, शाश्वतः पलाश इत्याह– राक्षसे किंशुके पर्णे पलाशाह्वयं हरित्यपि । हरति हरितः ॥ १४ ॥ रोहति रोहितः, रलयोरेकत्वम् । शोणति शोणः, शोणृ वर्णे । कोकनदच्छविः पद्माभः । पीतरक्तस्तु पिञ्जरः । रागोऽत्र लोहित्यम् । इयर्त्यरुणः । पाटलवर्णः (पाटलः), पाटेरलच्च ॥ १५ ॥ श्यायते श्यावो धूम्रारुणः । कपिमर्कटस्येव वर्णोऽस्त्यस्य कपिशः, लोमादित्वात् (सू०) शः । धूनोति धूमं राति वा धूम्रः । धूमवर्णं लाति धूमलः । कडति कडारः । कपिवर्णं लाति कपिलः । पिञ्जति पिङ्गलः । पिशति पिशङ्गः । कन्दते कद्रुः । पिङ्गं लाति पिङ्गलः । पञ्चैतेऽनेकार्थे । पिशङ्गो रोचनापाण्डुरिति कात्यः ॥ १६ ॥ चीयते चित्रम् । कीर्यते किर्मीरः । कलयति वर्णान् कल्माषः । शवति याति वर्णान् शवलः । एति वर्णानेतः । क्रियते वर्णैः कर्बुरः, कर्वति वा । गुणमात्रे वर्तमाना गुणाः पुंसि, पटस्य शुक्लः । गुणवद्वृत्तितायां त्वभिधेयलिङ्गाः, शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रम् । वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः (सू०) इति श्येनी श्येता, लोहिनी लोहिता ॥ १७ ॥ इति धीवर्गः । ४ ।

रूपभेदानुक्त्वा शब्दभेदानाह ब्राह्मीत्विति । ब्रह्मण इयं ब्राह्मी, ब्राह्मोऽजाताविति (सू०) साधुः । अत एव शब्दब्रह्मणोऽधिष्ठात्र्याः पर्याया एते । व्याहारादयस्त्वविधेयाः । बिभर्ति भारती । भाष्यते भाषा । गृणाति गीः । उच्यते वाक्, क्विब्वचिप्रच्छीति (वा०) क्विप्, दीर्घोऽसंप्रसारणं च । वाण्यते शब्द्यते वाणी । सरः प्रसरणमस्त्यस्याः सरस्वती । उच्यते वचः, असुन् ॥ १ ॥ संस्कृतादपभ्रश्यत इत्यपभ्रंशः । अपभ्रष्टः शब्दोऽपशब्दः, गावी गोणी गोपोतलिकादिः । शास्त्रे व्याकरणतर्कशास्त्रादौ यो वाचकः स शब्दः, लोके समुद्रघोषादिरपि । वक्तव्यं वाक्यं, चजोः कुघिण्ण्यतोः (सू०), वचोऽशब्दसंज्ञायां (सू०) इत्यन्यत्र वाच्यम् । तिङन्तसमूहो यथा– पचति भवति– पाको भवतीत्यर्थः । सुबन्तचयो यथा– प्रकृतिसि-

मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।
मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥
मोक्षोपवर्गोऽथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ।
रूपं शब्दो गन्धरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥
गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।
कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥
तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः ।
तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥
विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।
आमोदः सोऽतिनिर्हारी वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥
समाकर्षी तु निर्हारी सुरभिर्घ्राणतर्पणः ।
इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥
पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्रं स्यादामगन्धि यत् ।
शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥

(सू०) साधुः । अविद्यमानं मृतमस्तामृतम् ॥ ६ ॥ भावेभ्योपवर्जनमपवर्गः । महानन्दोपुनर्भवश्च । विरुद्धं वेदनमविद्या, अधर्मानर्थवद् विपर्यये नञ्, यदाह– अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या । अहमित्यस्य मननमहंमतिः, अनात्मन्यात्माभिमानात्, अहमिति विभक्तिप्रतिरूपको निपातः । रूपाद्याः पञ्च, विसिन्वन्ति बध्नन्ति विषयाः, पचाद्यच् (सू०), परिनिविभ्यः सेवसितसयेति (सू०) षत्वम् ॥ ७ ॥ गाव इन्द्रियाणि चरन्त्येषु गोचराः, गोचरसंचरेति (सू०) साधुः । इन्द्रियैरर्थ्यन्त इन्द्रियार्थाः । अर्थाश्च । हृष्यत्यनेन हृषीकम् । विषयोस्यास्तीति विषयि । इन्द्रस्यात्मनो लिङ्गमिन्द्रियं, इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गं (सू०) इति साधु । वाक्पाणिपादपायूपस्थाख्यं वचनादानगत्युत्सर्गानन्दरूपकर्मसाधनमिन्द्रियम् । मनःषष्ठानि नेत्रजिह्वाघ्राणत्वक्श्रोत्राणि धीहेतवो बुद्धीन्द्रियाणीत्यर्थः ॥ ८ ॥ तु इति सौत्रादावरणार्थादौणादिको वरच् । कषति कण्ठं कषायः । मधु माधुर्यमस्यास्तीति मधुरः, ऊषसुषीति (सू०) रः । लुनाति जाड्यं लवणः, नन्द्यादित्वात् (सू०) ल्युः, णत्वं च । कटत्यावृणोति कटुः । तेजति स्म तिक्तः । अम्बत्यम्लः, अमेर्ल इत्येके– अम्लमाहुः । तुवराद्याः षट्, रस्यन्त इति रसाः । गुणमात्रे रसः पुंसि, गुणवद्वृत्तित्वे तेऽभिधेयलिङ्गाः ॥ ९ ॥ सुरभिमाल्यगन्धादिपरिमर्दनोत्पन्नो हृद्यो गन्धः परिमलः । स गन्धोऽतिदूरव्यापी मनोहारी वा, समन्तान्मोदन्तेऽनेनामोदः । वाच्यलिङ्गत्वमागुणात्– अधिकारोयम्, (अधिकारार्थः) गुणाः शुक्लादय इत्येतस्मात्प्रागभिधेयलिङ्गाः ॥ १० ॥ अत्र यो यं प्रति प्रसिद्धस्तदनुवादे नान्यविधिः । निर्हरत्यवश्यं निर्हारी । सुष्ठु रभते सुरभिः । शोभनो गन्धोऽस्य सुगन्धिः, गन्धस्येदुत्पूतीति (सू०) इत् । मुखं वासयत्यनुलिम्पति मुखवासनः, मुखवासयोग्य इत्येके, मुखवासस्यागुरुवासन इति भागुरिः, यतः– आमोदो नित्योस्यास्ति अन्ये द्वौ द्वौ भिन्नावाहुः ॥ ११ ॥ पूयी विस(श)रणे दुर्गन्धे च, पूतिर्विस्रः पूतेरिव वा गन्धोऽस्य । विस्यति विस्रं, विस उत्सर्गे । आमोपक्वो मत्स्यस्तस्येव गन्धोऽस्यामगन्धि, उपमानाच्च (सू०) इतीत् । शोकति मनोऽस्मिञ्छुक्लः, शुक गतौ । शोभते शुभ्रः । शुच्यति शुचिः । श्विता वर्णे, श्वतते श्वेतः । विशीयते विशदः, विशति चित्ते वा । श्यायते श्येतः । पण्डते याति मनोऽस्मिन्पाण्डरः– उणादौ (अरः) ॥ १२ ॥ अवदायते शोध्यतेऽवदातः । सिनोति मनः सितः, षिञ् बन्धने । गो(गु)रते मनोऽस्मिन्गोरः, गुरी उद्यमे,

जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।
चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः । ३ ।

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।
प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥ १ ॥
धीर्धारणावती मेधा संकल्पः कर्म मानसम् ।
चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥
अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु संशयः ।
संदेहद्वापरौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥
मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।
समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥ ४ ॥
संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रवसंश्रवाः ।
अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ ५ ॥

अमुनि चेतः । ह्रियते विषयैर्हृदयम् । स्वनति स्वान्तं, क्षुब्धस्वान्तेति (सू०) साधुः । ह्रियते हृद् दान्त\ प्रकृत्यन्तरमस्ति, तदाधारोपि हृत्पुण्डरीकम् । मन्यते मनः मन । एव मानसम्, स्वार्थेऽण् ॥ ३१ ॥ इति कालवर्गः । ३ ।

मनुते मनीषा, मनस एव- ईषा वा । दे(दि)धिष्टि धिषणा, धिष शब्दे । ध्यायति धीयते वास्यां धीः । शेते शेः- मोहस्तं मुष्णाति शेमुषी, शमेः क्सावित्वाभ्यासलोपे ङीब्वा । उपलब्धिर्बो- हुलकात्क्तिन्, पित्वादङि तूपलम्भा स्यात् । प्रतिपत्तिः प्रतिपत्, सर्वे गत्यर्था ज्ञानार्थाः । ज्ञप्तिः, कथं- चित्ज्ञापणार्थे, मितांहस्वः (सू०) । सांख्ये बुद्धिधर्मस्यैते पर्यायाः, वैशेषिकादौ चतुर्दशापि बुध्यर्थाः ॥ १ ॥ मेधते संगच्छतेऽस्यां मेधा । मनसो व्यापारः संकल्पः । विकल्पोपि । पूर्वोक्तस्य चित्तस्य संतानद्वारेण स्थे[धे]र्यमाभोग इति बौद्धाः । पुनःपुनर्मनसि करणं मनस्कारः, अतः- कृकमीति (सू०) सत्वम् । समाधानमवधानं प्रणिधानं च । चर्चनं संख्यानं विचारश्च । विमर्शो वासना भावना, संस्कारोनुभूतायविस्मृतिरिति वक्तव्यम् ॥ २ ॥ अध्याहरणमपूर्वोत्प्रेक्षणम् । तरत्यनेन संशयविपर्ययौ तर्कः, तर्क्यते वा, तर्क भाषार्थः । उभयकोटिस्पृग्ज्ञानं विचिकित्सा- एकत्रानारूढः, कितः संशये सन् । शीङ्दिहोर्नानार्थयोः सशब्देनैवार्थो द्योत्यते, उपसर्गस्य वा सोर्थो धातूपाधिवशात्प्रकाशते । एवं सर्वत्र । द्वौ पक्षौ परौ यत्र द्वापरः, पृषोदरादित्वात् (सू०) आत्वम् ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टिः परलोकाभावबुद्धिः । नास्ति परलोक इति मतिर्यस्य, अस्तिनास्तिदिष्टंमतिः (सू०) इति ठक् । व्यापादनं व्यापादः, ण्यन्तादच् । राद्धः सिद्धोऽन्तो निश्चयोस्य राद्धान्तः । मिथ्यामतिरतस्मिंस्तदिति ज्ञानम् ॥ ४ ॥ पक्षोक्तिः प्रथिताङ्गीकारश्चेत्युभयीह प्रतिज्ञा । संविज्ज्ञानं, यथा- सत्सक्तिकरणात्तीता, नियमोपि, यथा- सविदं लङ्घयेच्च सः । धातूनामनेकार्थत्वादुपसर्गवशाद्वा तदर्थत्वम् । आगमनमागूः, भ्रमेश्च डूः (उ०) इति चकाराड् डूः ॥ ५ ॥ मोक्षविषया मोक्षफला वा धीः (ज्ञानम्) । मोक्ष [प्रतिपादक]शास्त्रादन्यत्र शिल्पे चित्रादौ शास्त्रे च धीर्विज्ञानम् । मोचनं मुक्ति- र्मोक्षः पाशेभ्य आत्मनः पृथग्भावः । अत एव कैवल्योक्तिः । निर्वात्यस्मिन्निति निर्वाणं, निर्वाणोऽवात इति (सू०) साधुः, पैंओवै शोषणे । अतिशयेन प्रशस्यं श्रेयः । निश्चितं श्रेयो निःश्रेयसम्, अचतुरेति

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।
मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥
स्यादानन्दथुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।
श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥ २५ ॥
भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ।
शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥
मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्घतल्लजौ ।
प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥
दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः
हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥
क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।
विशेषः कालिकोऽवस्था गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥
जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।
प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

यागाङ्गे नपुंसकं– तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् (श्रुतिः), क्रतौ तु पुमान्– एष धर्मः सनातनः (मनु०) इति विशेषोऽस्य नेयः । केचित्तु नाऽयमर्थभेदः पारिभाषिको धर्मशब्दोऽप्यस्ति । पुनाति पुण्यं पुण्यकर्मणि शुभे च । अतिशयेन प्रशस्यं श्रेयः । ईयसुनि प्रशस्यस्य श्रः (सू०) । सुक्रियते स्म सुकृतम् । वर्षति वृषः, कः । प्रमदसम्मदौ हर्षे (सू०) साधू ॥ २४ ॥ आनन्दनमानन्दथुः, ट्वितोऽथुच् (सू०) । शृणाति क्लेशं शर्म । स्यति दुःखं शातं, शो तनूकरणे, क्तः । शोभनानि खानीन्द्रियाण्यस्मिन् सुखयति वा सुखम् । श्व आगामि श्रेयोऽत्र श्वःश्रेयसं, श्रेयसि च, श्वसो वसीयःश्रेयसः (सू०) इत्यच् । भन्दते भद्रं, भदि कल्याणे । कल्यं नीरुजत्वमणति कल्याणम् । मङ्ग्यते मङ्गलम् । शोभते शुभम् ॥ २५ ॥ भवनशीलं भावुकं, (लषपतपद)स्थाभूवृषेति (सू०) उकञ् । प्रशस्तो भवोऽस्यास्ति भविकम् । भवनार्हं भव्यं, भव्यगेयेति (सू०) साधुः । कुशान् लाति कुशलम्, कुशल्यति वा कुशलम् । क्षिणोति क्लेशान् क्षेमः । शस्यते स्म शस्तम् । प्रशस्तं च । निःश्रेयसं मालायाम् । मतं कात्यः । द्रव्ये इति विशेष्यालिङ्गतायामभिधेयलिङ्गम् । आदिशब्दात्कुशलश्रेयःशिवभद्रादयः ॥ २६ ॥ निरस्तावयवा एवैते प्रशंसार्थाः, अत एव प्रशंसावचनैश्च (सू०) इति नित्यसमासः । प्रशस्ता गौर्गोमतल्लिका, ब्राह्मणमचर्चिका, गोप्रकाण्डम्, कुमारोद्घः, कुमारीतल्लजः, तल्लजक इति तु लक्ष्यम् । सघोद्घौ गणप्रशंसयोरिति (सू०) उद्घोऽसमासेऽपि । एत्यनः ॥ २७ ॥ देवस्यात्मन इदं दैवं पूर्वकर्म । दिश्यते स्म दिष्टम् । भगस्यैश्वर्यादेरिदं भागं, भागमेव भागधेयम्, भागरूपनामभ्यो धेयः (वा०) । भागाद्यच्च (सू०) भाग्यम् । नियम्यतेऽनया नियतिः । विधीयतेऽनेन विधिः । भवितव्यं भवितव्यता च । हिनोति हेतुः । कार्यतेऽनेन कारणम् । बीज्यतेऽनेन वेति वा बीजम् । निदीयते जन्यतेऽनेन निदानम् । आदावारम्भे कारणमुपादानकारणम्, सहकारिकारणमन्यत् ॥ २८ ॥ (क्षेत्र) देहमात्र जानाति क्षेत्रज्ञः । अतति संचरत्यात्मा । पुरि शयनात्पूरणाद्वा पुरुषः । प्रधत्तेऽन्तः सर्वं प्रधानम् । प्रारभ्यते क्रियतेऽनया प्रकृतिः, सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्था– अव्यक्ताख्या । कालकृतो देहादेर्भेदोऽवस्था– अन्यथास्थितिर्यौवनादिः । गुणाः प्रकृतेर्धर्माः । सत्त्वं साधुत्वप्रकाशकं ज्ञानसुखहेतुः । रजो रागात्मकं दुःखहेतुः । ताम्यत्यनेन तमः आवरकं मोहहेतुः ॥ २९ ॥ जननं जनुः, जनेरुसिः (उ०) । उत्पत्तिसाहचर्याज्जनिः स्त्री, इकृ(ण्) । जन्मी, व्रीह्यादित्वात् (सू०) । जायते जन्युः ॥ ३० ॥ (व्यक्तिः) निशेषोक्त्या । चेतति चित्तं, क्तः,

निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।
स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षा अथ शरत्स्त्रियाम् ॥ १९ ॥
षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।
संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनः स्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥
मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण दैवतः ।
दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥
मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।
संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥
अस्त्री पङ्कं पुमान् पाप्मा पापं किल्बिषकल्मषम् ।
कलुषं वृजिनैनोऽघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥

रमन्ते सुरभन्ते वा सुरभिः । फल्गुर्दैत्याम् । गिरन्त्यम्बु ग्रीष्मः । ऊष्मप्रतिक्रान्तस्त्वकः ॥१८॥ निदह्यतेऽस्मिन् निदाघः. घञ्, न्यङ्क्वादित्वात्कुत्वम् (सू०) । उप आप)ति– उष्णः । तपति तपः, अच्, यन्नस्यम्– तपेन वर्षाः शरदा हिमागमः (शिशु०) । प्रवर्षति प्रावृट् , नहिवृतिवृषीति (सू०) दीर्घः। भूम्नि बहुत्वे, वर्षमस्त्यासां वर्षन्ति वा वर्षाः । शीर्यन्तेऽस्यां पाकेनोपचयः शरत् ॥ १९ ॥ यत्कात्यः— आदाय मार्गशीर्षाच्च द्वौ द्वौ मासावृतुः स्मृतः । हेमन्तादि वत्सरस्यारम्भः । ऋतुः पुंलिङ्गः । संवसन्ति ऋतवोऽस्मिन् संवत्सरः, ऋतुपरिवर्तात्मा त्वसौ, यद्भागुरिः— सर्वर्तुपरिवर्तस्तु स्मृतः संवत्सरो बुधैः । परिवत्सरोऽपि । इदावत्सर इद्वत्सरोऽनुवत्सरश्च ज्योतिषे । आप्यतेऽब्दः । जहाति–ऋतून् हायनः, हश्चव्रीहिकालयोः (सू०) इति ण्युट् । समन्ति समाः, सह मान्ति वर्तन्ते ऋतवो यासां वा, स्त्रीबहुत्वेयं यथा– जीव्यात्सहस्रं समाः । समांसमांविजायते (सू०) इत्येकत्वेऽपि दृश्यते ॥ २० ॥ मासेन पौरुषेणेति शेषः। पितॄणामयं पैत्रः, देवतार्थे पित्र्यः स्यात् । तत्र कृष्णः पक्षोऽहः शुक्लो रात्रिः । वर्षेण पौरुषेणेति शेषः ।[दैवतानामयं दैवतोऽहोरात्रः]तत्रोत्तरायणमहः– दक्षिणायनं रात्रिः । [ब्रह्मणोऽयं ब्राह्मः] अहोरात्र इत्येव । दैवैर्हि सषष्ठैः (पञ्चषष्ट्यधिकैः) त्रिभिरहोरात्रशतैर्दिव्यं वर्षं, तद्द्वादशभिः सहस्रैर्लौकिकं चतुर्युगं, तच्च देवानामेकं युगं, तत्सहस्रं ब्रह्मणो दिनं भूतानां स्थितिकालः, तावत्येव रात्रिर्भूतानां प्रलयकालः । [यन्मनुः]– चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तु कृतं युगम् । तस्य तावच्छती सन्ध्या सन्ध्यांशश्च तथाविधः ॥ इतरेषु ससंध्येषु ससंध्यांशेषु च त्रिषु । एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥ यदेतत्परिसंख्यातमादावेव चतुर्युगम् । एतद् द्वादशसाहस्रं देवानां युगमुच्यते ॥ [दैविकानां युगानां तु सहस्रं परिसंख्यया । ब्राह्ममेकमहर्ज्ञेयं तावती रात्रिरुच्यते ॥] ये द्वे दैवे युगसहस्रे तौ नृणां कल्पौ, सर्वनाम्नां विधीयमानानूद्यमानलिङ्गग्रहणे कामचारः । एकः स्थितिं कल्पयति, द्वितीयः क्षयं कल्पयति (अतः कल्प इत्युच्यते) ॥२१॥ मनूनां स्वायंभुव[स्वारोचिषोत्तमितामसरैवत]चाक्षुषवैवस्वतादीनां प्रजापतीनामन्तरमवकाशोऽवधिर्वा । तैर्हि चतुर्दशभिर्मन्वन्तरैर्ब्रह्मणो दिनम् । संवर्तते प्रलीयते कल्पते क्षीयतेऽस्मिन् वा जगत् । कल्पस्यान्तोऽवधिः कल्पान्तः । एकः कल्पोऽत्र क्षयार्थोऽन्यो ब्रह्मदिनार्थः, यच्छाश्वतः– कल्पः शास्त्रे विधौ न्याये संवर्ते ब्रह्मणो दिने । संहारो युगात्ययः परिवर्तश्च ॥ २२ ॥ क्षयहेतुं पापमाह । पच्यते पङ्कः । पात्यस्मात्पाप्मा पापं च । केलयति किल्बिषम् कलयति कल्मषं कलुषं च । वर्ज्यते वृजिनम् । एत्येनः । न जहात्यघम् । अंहत्यंहः । दुरेति दुरितम् । दुष्क्रियते स्म दुष्कृतम् । एनोंऽहसी सान्तौ । मालायां किण्वम् । मलोऽनेकार्थेषु ॥ २३ ॥ धारणाद्धर्मः,

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला ।
तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥
ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च ।
पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥
द्वौ द्वौ माघादिमासौ स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभिः ।
अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥
समरात्रिंदिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ।
मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥
पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तपा माघेऽथ फाल्गुने ।
स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५ ॥
वैशाखे माधवो राधो ज्यैष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम् ।
आषाढे श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥
स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ।
स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि स्यात्तु कार्त्तिके ॥ १७ ॥
बाहुलोर्जौ कार्त्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽस्त्रियाम् ।
वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥

क्षणु हिंसायाम् । ते क्षणा द्वादश, मुहुरियर्ति मुहूर्तो द्विघण्टिकम् ॥ ११ ॥ ते मुहूर्तास्त्रिंशदह्ना सहिता रात्रिरहोरात्रः, अहःसर्वैकदेशेत्यच्(सू०), द्वन्द्वे त्वहोरात्राविमौ पुंसि । तेऽहोरात्राः पञ्चदश, पचति भूतानीति पक्षः, पक्ष परिग्रहे वा । शुक्लो मासस्य पूर्वपक्षः कृष्णस्त्वपरः, यतश्चैतन्निष्ठायां मासः । तौ पक्षौ मासश्चन्द्रस्तत्स्यायं मास इति निर्वचनेन चान्द्रेण मानेनायम् । सौरसावननाक्षत्रमानैस्त्वन्यथा, मस्यति परिमाने वा (मास) ॥१२॥ इयर्ति ऋतुः । माघाद्यतिक्रमस्तेनायनागमस्तु । यदाह तैर्ऋतुभिस्त्रिभिः, अयतेऽर्कोऽनेनायनम् । उत्तरा दक्षिणा च यार्कस्य गतिः, ते द्वे अयने मिलिते वत्सरो वर्षम् ॥१३॥ समौ रात्रिंदिवौ यत्र, अचतुर- (सू०) इत्यादिना साधुः । विषु साम्येऽव्ययम् , तद्द्वयोरस्य विषुवत् , विषुवं च, वो मत्वर्थे लिङ्गात् (अन्येभ्योऽपि दृश्यते) । विष्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृतसन्धेः (वा०) इति हि विषुवान् शब्दो युक्तः । मृगशीर्षेण युक्ता मार्गशीर्षी पौर्णमास्यस्मिन् , सास्मिन्पौर्णमासी (सू०) इत्यण् । सहोऽस्त्यस्मिन् सहाः, मत्वर्थे मासतन्वोरिति (सू०) यत्, तस्य लुगकारेकारौ (वा०) पक्षे लुक्, पृषत्य लोकात् , सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू इति छान्दसम् । एवं तपाः - नभाः । तामसतमृगशीर्षस्य मृगत्वान्मार्गः । आग्रहायणी पौर्णमास्यस्मिन्नाग्रहायणिकः, आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् (सू०) ॥ १४ ॥ (पौषः- तैषः) प्राग्वदण्- द्वयम् । तथा च- पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा । नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे - इति क्वचित्पाठोऽस्ति । सहे स्यास्तीति सहस्यः, मत्वर्थेमासतन्वोरिति (सू०) यत् । एवं तपस्यनभस्यौ । तपोऽस्यास्तीति तपाः । (फाल्गुनिकः) विभाषाफाल्गुनीश्रवणाकार्तिकीचैत्रीभ्यष्ठक् (सू०) मधुर्वसन्तोऽस्यास्तीति मधुः, मधोर्ञ्च (सू०) इति अस्य वा लुक् ॥ १५ ॥ राधया युक्ता पौर्णमासी- अस्मिन् राधः । शुचिर्यतेऽस्य शुक्रः, लुगकारेकारेफाश्च (वा०) इति रेफः । शुचिर्यतेऽस्य शुचिः, इकारः । न भासते मेघच्छन्नत्वादस्मिन्निति नभः ॥ १६ ॥ प्रोष्ठपदया युक्ता भाद्री पौर्णमास्यस्मिन् भाद्रः । इष्यते- इडश्च विद्यतेऽस्य- इषः, अकारः ॥१७॥ बहुलाभिर्युक्ता बाहुली पौर्णमास्यस्मिन् बाहुलः । ऊर्क्-अन्नं बलं वास्यास्तीति-ऊर्जः । हिमान्तोऽस्य हेमन्तः, पृषोदरादिः (सू०) । (शिशिरः) शिनोत्यर्थं शीतेन, शिञ् निशाने । वसन्त्यस्मिन् सुखं, वस्ते सुखं वा वसन्तः, झच् । सुर

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।
विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥
तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ।
आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥
गणरात्रं निशा बह्व्यः प्रदोषो रजनीमुखम् ।
अर्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरौ समौ ॥ ६ ॥
स पर्व संधिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ।
पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥
कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे ।
अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसंगमः ॥ ८ ॥
सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।
उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥
सोपप्लवोपरक्तौ द्वावग्न्युत्पात उपाहितः ।
एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥

निशीथोऽस्त्यस्या निशीथिनी, मध्यनिकास्या । राति सुखं रात्रिः । आद्यन्तयोरर्धयामयोर्दिनव्यवहारात्त्रियामा । क्षणमवसरं ददाति क्षणदा । [illegible] क्षयर्थः । क्षप्यते क्षपा, भिदादि (सू०) । विभाति विभावरी, [illegible] । रज्यन्ते तमसा रजनी । यामाः सन्त्यस्यां यामिनी । ताम्यत्यनेन, [illegible] (सू०) [illegible] । [illegible] तमी । (के भवन्ति [illegible] कुतः श्री । किमाह सीता दशवक्त्रनीता) [illegible] महादेवस्य नमानः । [illegible] । वाजसनेयी मालायाम् ॥ ४ ॥ रात्रिः काकाक्षिवत् । तमोऽस्त्यस्यां तमिस्रा, ज्योत्स्नातमिस्रेति (सू०) साधुः । ज्योत्स्ना तामसीत्यणप्रकरणे ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानं (वा०). शाश्वतस्तु–ज्योत्स्ना ज्योतिष्मती रात्रिर्ज्योत्स्ना चन्द्रमसः प्रभापि । पूर्वापराह्णयोः पक्षयोरिव मध्ये वर्तमानत्वात् वर्तमानाहो यस्याः निशा– निशामध्येऽपि दिवसः– पक्षिणीत्यादुः ॥ ५ ॥ गणानां रात्रीणां समाहारः, अहःसर्वैकदेशेति (सू०) संख्यात्वादच समासान्तः, रात्राह्नाहाःपुंसीति (सू०) अस[illegible] माहात् हि पुंस्त्वम् । मालाकार– गणरात्र नपुंसकम् । प्रारब्धा दोषा यस्मिन् (प्रदोषः) । समाविव । अर्धं रात्रेरर्धरात्रः, अर्धनपुंसकमिति (सू०) [illegible] । नियतं शेरतेऽस्मिन् भूतानि निशीथः, अत एव कात्यो निशीथ सुप्तजनमाह । याति यामः । प्रह्रियतेऽस्मिन् प्रहरः, पुंसि संज्ञायां घः (सू०) ॥ ६ ॥ स [illegible] सन्धिः पर्वेति संबन्धः, दुर्गोऽपि–प्रतिपत्पञ्चदश्योस्तु सन्धिः पर्व प्रदिक् ककुप् । प्राच्यास्तु पर्वसन्ध्या[illegible] [illegible] । पक्षान्त इति योगकालसंज्ञा । पूर्णो माश्चन्द्रः पूर्णमास्तत्र भवा पौर्णमासी । पूर्णो मासो वर्ततेऽस्याम्, पूर्णमासादण् । पूरणं पूर्तिः, [illegible] (वा०) इति नत्वं, पूर्तिं मिमीते पूर्णिमा, कः ॥ ७ ॥ सा पूर्णिमा कलाहीने निशाकरे, अनुमन्यतेऽनुमतिः । पूर्णे, राति सुखं राका । (अमावास्या) अमा सह वसतोऽस्यां चन्द्रार्कौ । (अमावस्या) अमावस्यदन्यतरस्याम् (सू०) [illegible] इति [illegible] पक्षे वृद्ध्यभावो निपात्यते । दृश्यते याज्ञिकैर्दर्शः, न दृश्यते चन्द्रोऽस्मिन् विपरीतलक्षणया । ॥ ८ ॥ सिनी सिता वाला कलाऽस्याम् । कुहूरिस्माऽपीत्यर्थः, कुं हन्ति तमसा वा । उपरज्यते छाद्यतेनेनोपरागः । ग्रहणं ग्रहः, ग्रहवृद् (सू०) इत्यप् ॥ ९ ॥ इन्दू राहुग्रस्तः सोपप्लव उपरक्तश्च । एवं पूषापि । अभिक्रमे उपसर्गः, उप– आसन्न हितः अर्थोपाहितः, धूमकेत्वादय उत्पात इत्येके । एकयोक्त्या– अपृथग्वचनेन रोदसीवत्, न तु पुष्पवानिन्दुः सूर्यो वोच्यते, पुष्पं विकासः प्रकाश इत्यर्थः ॥ १० ॥ निमेषो[illegible] [illegible]स्पन्दकालः । काशते काष्ठा । ताः काष्ठास्त्रिंशत्कलयति कालं कला । ताः कलास्त्रिंशत्क्षणः,

किरणोस्रमयूखांशुगभस्तिघृणिघृष्णि(रश्म)यः ।
भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३४ ॥
स्युः प्रभा रुग्रुचिस्त्विड् भा भाश्छविद्युतिदीप्तयः ।
रोचिः शोचिरुभे क्लीबे प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३५ ॥
कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।
तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वन्मृगतृष्णा मरीचिका ॥ ३६ ॥

इति व्योमादिवर्गः । २ ।

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽप्यथ पक्षतिः ।
प्रतिपद् द्वे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥ १ ॥
घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।
प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषःप्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥
प्रभातं च दिनान्ते तु सायं संध्या पितृप्रसूः ।
प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसंध्यमथ शर्वरी ॥ ३ ॥

[illegible] उस्रः । [illegible] नमो मयूखः । अश्नुते– अंशुः । गां [illegible] दीपयति गभस्तिः, [illegible] । [illegible] घृणिः । [illegible] वा [illegible] घृष्णिः, [illegible] [व]र्तीति [illegible] करः । [illegible] मरीचिः । दीधिति दीप्यते दीधितिः ॥३४॥ प्रभादिनामादित्यवर्गे [illegible], [illegible] पुनरिहोपादानं सामान्यार्थम् । [illegible] अपि [illegible], यथा मुक्तारश्मिः, चन्द्रातपः । रोचनं रुक् । [illegible] भानुवत् । [illegible] ॥ ३५ ॥ कवोष्णं । न० । इति का-कव-कत्समुदायात् [illegible] । [illegible] । तेजनात्तिग्मतीक्ष्णौ । खं राति खरति वा खरम् । तद्वदिति [illegible] । अतएवार्थं चैतत्, यदाहुः– तिग्मं तीक्ष्णं [illegible] । मृगाणां तृष्णास्याम् (मृगतृष्णा) । मरीचिप्रति- [illegible] ॥३६॥ इति व्योमादिवर्गः । २ ।

[illegible] कालः । [illegible] । न– [illegible] अनेहा. अनुन्, [illegible] दर्शोने [illegible] ([illegible]) । [illegible] समयः । पक्षस्य मूलं प्रारम्भोऽस्य पक्षतिः । प्रतिपद्यते उपक्रम्यते- [illegible] प्रतिपत् । [illegible] तिथिः स्त्रीपुंलिङ्गः ॥ १ ॥ घसति नमो घस्यते- ([illegible]) [illegible] दिनम् । न जहाति कालमहः, नञिजहातेः (उ०) इति कनिन् । [illegible] । प्रत्यूषति निशां प्रतिहन्ति, प्रतिगता– उषा [illegible] प्रत्यूषः । [illegible], शाश्वतः [illegible]– कल्यं प्रभाते मत्तं च कल्यो नीरोग- [illegible] । [illegible] प्रत्युषः ॥ २ ॥ [illegible] प्रभातं, आदिकर्म- [illegible] । [illegible] सायमव्ययम् । [illegible]दिदर्शनात्, [illegible] भाष्यं [illegible]निवृत्त्यर्थम् । [illegible] [illegible] पितृप्रसूः, [illegible] पितृप्रसवित्री तनुः । [illegible], अह्नोऽह्नादेशः (सू०) । [illegible] संध्याः समा- हृत त्रिसंध्यम् । [illegible] यन्माला– त्रिसंध्यं तु नपुंसकम् । शृणाति चेष्टाः शर्वरी ॥ ३ ॥ [illegible] निशा, [illegible] । (सू०) इति कः

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ।
राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २८ ॥
सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।
भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः ॥ २९ ॥
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मयः ।
विकर्तनार्कमार्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ ३० ॥
द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।
विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषांपतिरहर्पतिः ॥ ३१ ॥
भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।
माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः ॥ ३२ ॥
सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ।
परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३३ ॥

तमस्त्वात्मस्वानमः, सन्तमस्तमोऽपि च । ग्रहयति भुक्त्वा चन्द्राकौं राहुः । स्वर्भाति स्वर्भानुः, पूर्वपदात्संज्ञायां (सू०) न णत्वम् । सिंहिकाया अपत्यं सैंहिकेयः । विधुं तुदति विधुंतुदः, विध्वरुषोस्तुदः (सू०) इति खश् । अश्विन्यादौ ग्रहकल्लोलस्य दृश्यताम् । केतुः शिखीति वाच्यम् ॥ २७ ॥ सप्त च ते ऋषयश्च, दिक्संख्ये संज्ञायामिति (सू०) द्विगुः । मुखशब्दात्क्रत्वङ्गिरोवसिष्ठपुलस्त्यपुलहाः । चित्राः शिखण्डाश्चूडा अस्त्येषाम् । सप्तर्षिरित्येकत्वं रूढः । (न गणयः) मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके । तुलाथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौ ॥ २८ ॥ सूते इति सूरः । सरति सूर्यः, राजसूयसूर्येति (सू०) साधुः । इयर्ति अर्यमा । अदितेरपत्यमादित्यः । द्वादश आत्मानो मूर्तयोऽस्य (द्वादशात्मा) । दिवा दिनं करोति दिवाकरः, दिवाविभानिशाप्रभा इति टः । भास्करः । अहस्करः । बध्नाति ब्रध्नः । भासः सन्त्यस्य भास्वान् ॥ २९ ॥ विवस्तेजोऽस्त्यस्येति विवस्वान्, तसौ मत्वर्थे इति (सू०) भसंज्ञायां पदकार्यं रुत्वं नास्ति । हरितो नीला अश्वा अस्य (हरिदश्वः) । विकृन्तत्यन्धकारं विकर्तनः, त्वष्ट्रा तेजःशातनात् । अर्कयति तपत्यर्कः, अर्च्यते वा । मृतण्डस्यापत्यं मार्तण्डः, मृताण्डमजायतेति मार्ताण्डो वा । मेहति मिहिरः, आदित्याज्जायते वृष्टिरिति स्मृतिः (मनु०) । अरुणोऽस्त्यस्यारुणः, वर्णेन वा । पूषति पर्व(वर्ध)ते पूषा, श्वन्नुक्षन्पूषन्प्लीहन्क्लेदन्स्नेहन्मूर्धन्मज्जन्नर्यमन्विश्वप्सन्परिज्मन्मातरिश्वन्मघवन्निति (सू०), सौ च (सू०) इति नियमाद्दीर्घाभावः ॥ ३० ॥ दिवि मणिरिव द्युमणिः, अत एवाम्बरमणिर्गगनमणिरित्यादयोऽपि । तरन्त्यनेन तमस्तरणिः । मेद्यति मित्रः । विरोचते विरोचनः, अनुदात्तेतश्च (सू०) इति युच् । विभा दीप्तिरेव वसु धनमस्य विभावसुः । अह्नः पतिरहर्पतिः, अहरादीनां पत्यादिषु (सू०) इति वा रेफः ॥ ३१ ॥ भाति भानुः । हन्ति तमो हंसः । सूयते सविता । रूयते स्तूयते रविः । कर्मसाक्षी जगच्चक्षुरंशुमाली [लोकबन्धुः] त्रयीतनुः । [इनो भगो] धामनिधिः [अब्जिनीपतिरिति ज्ञेयम्] । प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः । शूरांशुस्तमः प्रोक्तः पद्मिनीकान्त इष्यते । मठरस्यापत्यं माठरः । दण्डोऽस्यास्तीति दण्डः । इन्द्रादयो यथाक्रमं नामान्तरेणार्कपरिचारकाः, तत्सौरे तन्त्र उक्तम्— तत्र शक्रो वामपार्श्वे दण्डाख्यो दण्डनायकः । वह्निस्तु दक्षिणे पार्श्वे पिङ्गलो वामत[नामत]श्च मः । यमोऽपि दक्षिणे पार्श्वे भवेन्माठरसंज्ञया । एवमन्येऽप्यावाह्याः (पातादाः) [गुहहरराहुखरादयः । तेषु प्राधान्यमेषां प्रोक्तम्] । परितः पार्श्वे वर्तन्ते पारिपार्श्विकाः, परिमुखं च (सू०) इति चकाराट्ठक् ॥ ३२ ॥ सूरस्य सूतः सारथिः । (कश्यपस्यापत्यं काश्यपिः) कृश्यन्धकेभ्यण् (सू०), काश्यप इति साम्यः पाठः, बाह्वादित्वादिञ् (सू०) । परितो (विष्यते) व्याप्यतेऽनेन परिवेषः । परितो धीयते परिधिः । समीपे सूर्यस्य प्रतिकृतिरुपसूर्यकम्, सूर्यमण्डलं च ॥ ३३ ॥ कीर्यते किरणः । वस-

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।
दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा अश्वयुगश्विनी ॥ २२ ॥
राधा विशाखा पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ श्रविष्ठया ।
समा धनिष्ठाः स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियाम् ॥ २३ ॥
मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।
इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २४ ॥
बृहस्पतिः सुराचार्यो गीर्पतिर्धिषणो गुरुः ।
जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः ॥ २५ ॥
शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।
अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २६ ॥
रौहिणेयो बुधः सौम्यः समौ सौरिशनैश्चरौ ।
तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुंतुदः ॥ २७ ॥

०नप्रादीति (सू०) नञ् प्रकृत्या । क्षरति गच्छति, ऋक्षोति तमो वा— ऋक्षम् । भा विद्यतेऽस्य भम् । तरन्त्यनया तारा । (तारका) स्वार्थे कन्, तारकाद्योऽनर्थान्ति (वा०) इत्याभावः, क्वचित्पि यच्छा-भ्वतः— नक्षत्रं चाक्षिमध्ये च तारका तारकापि च, लक्ष्यं च— द्विवेऽस्मिन् पुराकमौक्तिकवन(मणि)-च्छायैः स्थितं तारकैः (विद्धशाल०)। अवतेरुडुः, उडु गतौ वा। दाक्षायण्योऽश्विन्यादितारा: सप्तविंशतिर्भानि। दक्षस्यापत्यं दाक्षायणी, अतइञ् (सू०) अनन्तरापत्येऽपि द्वैपायनवत्, यञिञोश्चेति (सू०) फक्, यद्वा— इतोमनुष्यजातेः (सू०) इत्यत्र— इञ उपसंख्यानाद् ङीप्, कौरव्यमाण्डूकाभ्यांच (सू०) इति चकारादासुरायणवत् ष्फः— नाडिनः । अश्वान् वशं करोतीत्यश्वयुक्, अश्विनीनक्षत्रमश्वाकारत्वात् ॥ २२ ॥ राध्नोति कार्यं राधा । विशाखाति व्याप्नोति विशाखा, शाखा नाम्नी । पुष्यसिद्ध्योर्नक्षत्रे (सू०) साधु, पुष्यत्यर्थानिति पुष्यः, सिध्यन्त्यनेनार्थाः सिध्यः । त्विषति तिष्यः, तिष दीप्तौ, अघ्न्यादिः (उ०)। श्रूयते शुभकर्मणि श्रविष्ठा । दधन्ति धनं करोति धनिष्ठा, श्रविष्ठानभ्यामिष्ठन् (सू०)। प्रोष्ठो गौः पादावस्याः प्रोष्ठपदा, अर्थग्रहणाद् भद्रपदा, सुप्रातःसुश्वेति (सू०) साधुः, फल्गुनीप्रोष्ठपदानांचनक्षत्रे (सू०) इति वा बहुत्वम् ॥२३॥ मृगस्येव शीर्षं शिरोऽस्य, स्व ताराणां तथावस्थानात्, शीर्षं प्रकृत्यन्तरम् । अग्रे हायनोऽस्या आग्रहायणी, मार्गशीर्षादारभ्य संवत्सरप्रवृत्तेः. आग्रहायण्यश्वत्थाट्ठक् (सू०) इति निर्देशादण । इन्वका इति पञ्च ताराः, इन्वन्ति प्रीणन्तीन्वकाः, मरुतो देवता इन्वका नक्षत्राणीति श्रुतेः । इन्वलास्तारका इल्वलोसुर इति— उणादौ श्रीभोजदेवो व्याकरोत ॥ २४ ॥ बृहतां पतिर्बृहस्पतिः ( ) तद्बृहतोःकरपत्योश्चोरदेव-तयोरिति (वा०) सुट्तलोपौ । गीर्पतिः गीष्पतिः, अहरादीनां पत्यादिषु (वा०) इति वा रेफः, पक्षे कस्कादिदर्शनात् (सू०) षत्वम् । धिषणास्यास्तीति धिषणः गृणाति उपदिशति गुरुः, कृग्रोरुच्च (उ०)। जीव्यतेऽनेन मृतसंजीवनीज्ञत्वाज्जीवः । अङ्गिरसोपत्यत्वादाङ्गिरसः । चित्रशिखण्डिजः सप्तर्षिजः, समुदा-येषु हि वृत्ताः शब्दा (अवयवेष्वपि वर्तन्ते) इति । वाचस्पतिः. अलुक् षष्ठ्याःपतिपुत्रेति (सू०) सत्वम् ॥ २५ ॥ शुक्रो रुद्रस्य शुक्रद्वारेण निर्गतत्वात् । कविरपत्यं काव्यः, कुर्वादिभ्योण्यः (सू०), कविस्तत्वभेदाद्यथा— जमदग्निवत् पञ्चममन्दानमनसाम् . चातुर्विध्यं— चतुर्वर्णनामनार्थ उपसंख्यानम्) इत्येके । वष्टीत्युशना, वदेरुशनसिति (सू०) सावनङ् । भृगोरपत्यं भार्गवः । अङ्गति गच्छति वक्रत्वादङ्गा-रकः, आरस्तु भौमवत् । कौ जायते कुजः । भूमेरपत्यं भौमः, लोहिताङ्गः (सू०) । वक्रे त्रि ॥२६॥ रोहिण्या अपत्यम्, सोमः पिताऽपि देवतास्येति. सोमाद्ट्यण् (सू०) । शब्दान्दसमासयोनिश्च । सूरस्यार्क-स्यापत्यं सौरिः, सौरस्तु नभोदिग (सू०) इति । शनैरपि मन्दगतिरयुक्ताभ्यां छायापुत्रोऽसितश्च मन्दः ।

अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः ।
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ॥ १५ ॥
कला तु षोडशो भागो बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ।
भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेंऽशके ॥ १६ ॥
चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसादस्तु प्रसन्नता ।
कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ॥ १७ ॥
सुषमा परमा शोभा शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥ १८ ॥
अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।
प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ १९ ॥
शीतं गुणे तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः ।
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः ॥ २० ॥
ध्रुव औत्तानपादिः स्यादगस्त्यः कुम्भसंभवः ।
मैत्रावरुणिरस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥ २१ ॥

सोमः, सूयते वा, नवो नवो भवति जायमान इति श्रुतेः । ग्लायति क्षीयते ग्लौः, ग्लानुदिभ्यां डौः (उ०) । (द्विजराजः) यतः सोमो राजा द्विजानाम् । क्षपां करोत्युद्योतयति क्षपाकरः । सुधामूर्तिः [सुधाभृतिः] आत्रेयो रोहिणीश [ग्रस्त] श्च । अमृतोनगमः, समुद्रनवनीतं द्वयम् ॥ १५ ॥ चन्द्रस्येति शेषः । षड्भिरधिका दश षोडश, षष उत्वं दतृदशधासूत्तरपदादेष्टुत्वं च (वा०), षोडशानां पूरणः, तस्य पूरणे डट् (सू०) । कलयति संख्याति कला । बिम्बति भाति बिम्बमाभोगः, गोत्रोयम् । भिद्यते स्म भित्तं शकलं साधुः (भित्तंशकले) । शक्यते भेत्तुं शकलं शकलो वा । खण्ड्यते खण्डं खण्डो वा । खडि भागच्छेदे च । ऋध्नोति-अर्धो भागो निर्देशात्पुंसि, वाच्यलिङ्ग इत्येके, वर्द्धाका- खण्डमात्रवृत्तितायामभिधेयलिङ्ग इति । समप्रविभागे त्वर्धं नपुंसकम् । [सामि] दलं नेमोऽपि ॥ १६ ॥ चन्द्रोऽस्त्यस्यां चन्द्रिका । कुमुदानामियं विकाशहेतुत्वात्कौमुदी । ज्योतिरस्त्यस्यां ज्योत्स्ना, ज्योत्स्नातमिस्रेति (सू०) साधुः । प्रसादो नैर्मल्यम् । कल्यते लक्ष्यतेनेन कलङ्कः । अकि लक्षणे (अङ्क्यतेनेनाङ्कः) । (लाञ्छनं) लाछि लक्षणे । चहयति चिह्नं, चह परिकल्कने । लाञ्छनसाहचर्याच्चिह्नादि क्लीबे । अभिज्ञानं च ॥ १७ ॥ प्रकृष्टा कान्तिः सुषमा, सुष्ठु समेति, सुषामादित्वात् (सू०) षत्वम् । काम्यते कान्तिः । छ्यति छिनत्त्यन्धकारं छविः ॥ १८ ॥ अवश्यायतेऽवश्यायः, श्याद्व्यधेति णः (सू०) । निह्रियते नीहारः । तुष्यत्यनेन तुषारः । तोहयत्यर्दयति तुहिनं, तुहिरर्दने । हिनोति वर्धते जलमनेनेति हिमम् । प्रलयादागतं प्रालेयं, केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः (सू०) । मेहति मिहिका नीहारः, [महिकापि] । नीहारान्तरं धूमनीहारः । धूमिका च द्वयम् । (हिमानी) हिमारण्ययोर्महत्त्वे (वा०) ङीषानुक् च ॥ १९ ॥ गुणे जाड्ये शीतं क्लीबे, श्यैङो भावे क्तः (सू०), द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः (सू०) संप्रसारणं, संप्रसारणस्येति (सू०) दीर्घः । तद्वदर्थाः शीतवत्पर्याया अभिधेयलिङ्गाः । सुष्ठु श्यायते सुषीमः । शिनोत्यर्थं श्यायते वा शिशिरः । जलति जडः, जल जाड्ये । शीतं लाति शीतलः । (हिमः) हिमादेः- अर्शआदित्वादच् (सू०) ॥ २० ॥ चन्द्रप्रसङ्गादागतमुक्त्वा प्रस्तुतमाह । ध्रुवति ध्रुवः, कः । उत्तानपादस्यापत्यं, कृपिस्वादि कृष्यन्धकीनि (सू०) अण् प्राप्ते, बाह्वादित्वादिञ् (सू०) । अगं स्त्यायति स्तम्भयत्यगस्त्यः । मित्रावरुणयोरपत्यं मैत्रावरुणिः, ऋषिसमुदायस्यार्षत्वादिञ्, देवताद्वन्द्वे चानङ् (सू०) । पतिसुखलोपात्पद्मुद्रा, न मुदं राति, लोपामुद्रा । समानो धर्मोऽस्त्यस्याः सधर्मिणी पत्नी ॥ २१ ॥ न क्षरति नक्षत्रं, क्षर गतिहिंसनयोः, नभ्रा-

घनजीमूतमुदिरजलमुग्धूमयोनयः ।
कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ॥ ८ ॥
स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषे रसितादि च ।
शम्पाशतह्रदाह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ॥ ९ ॥
तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपलापि च ।
स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषो मेघज्योतिरिरंमदः ॥ १० ॥
इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजु रोहितम् ।
वृष्टिर्वर्षं तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ॥ ११ ॥
धारासंपात आसारः शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ।
वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ॥ १२ ॥
अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ।
अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ॥ १३ ॥
हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः ।
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ॥ १४ ॥

इति साधुः । जीवनस्य जलस्य मूतः पुटबन्धो जीमूतः । मोदन्तेऽनेन मुदिरः । धूमो योनिरस्य धूमयोनिः । कमादद्वे कादम्बा मेघास्ते सन्त्यस्यां कादम्बिनी, कदम्बे विकाशो वाऽस्त्यस्याम् । मेघिका देश्याम् । (अभ्रियं) समुद्राभ्राद्घः (सू०), छान्दसत्वमतन्त्रम् ॥ ८ ॥ आदिशब्दात् ध्वनितगर्जादि । शं पिबति शम्पा, शम्बेति प्राच्याः– शम्बा य इति नायनं तत्र इति व्याहरन् । शतह्रदोऽर्चिर्विद्यतेऽस्याः शतह्रदा, वाडवज्योतिष्वात् । ऐरावतोऽभ्रगो नागस्तस्य स्त्री– ऐरावती । क्षणप्रभा– अचिरद्युतिः ॥ ९ ॥ ताडयति तडित्, ताडेर्णिलुक्च (उ०) । सुदाम्नाऽद्रिणैकदिक्सौदामनी, तेनैकदिक् (सू०) इत्यण् । विद्योतते विद्युत् । चटुला [वज्रज्वाला च] देश्याम् । स्फूर्जनं स्फूर्जथुः, द्वितोऽथुच् (सू०) । निष्पेषः संघट्टस्तत्र शब्दः, अशन्याघात इत्येके । एतेन वज्राशन्योस्तडिद्भेद[त्व]मेव मन्यते । इरयाऽम्भसा माद्यति– इरंमदः, उग्रंपश्येरंमदेति (सू०) साधुः । [धूमज्योतिःसलिलमरुतां संघ एव मेघस्तत्रस्यं ज्योतिराविर्भवन्मेघज्योतिरित्युच्यते । विद्युदाख्यं वडवानलज्योतिरेव न मेघज्योतिस्तेन शम्पा शतह्रदेत्यादिशब्दा अभिलषिता इति] ॥ १० ॥ मेघप्रतिफलिता हि सूर्यरश्मयो धनुराकारेण दृश्यन्ते तदेवेन्द्रधनुरुत्पाते ऋज्ववक्रं रोहितम्, रोहः संजातोऽस्येति, लोहितत्वाद्वा, ऋत्यकः (सू०) इति प्रकृतिभावः । वर्षम्, अज्विधौ भयादीनामुपसंख्यानं नपुंसके क्तादिनिवृत्त्यर्थम् (वा०) । तद्विघाते तस्य वर्षस्य विघाते निरोधे (अवग्राहः, अवग्रहः), अवे ग्रहो वर्षप्रतिबन्ध इति (सू०) घञ् (विभाषा) ॥ ११ ॥ बद्धधाराणां संततं पतनं धारासंपातः । आसरणमासारः, सृ स्थिरे (सू०) इति घञ् भावे । शीकते सिञ्चति शीकरः । नृता वातेरिताः, यत्कात्यः– आसारो वेगवद्वर्षं वातास्तं वारि शीकरः । कृणाति हिनस्ति कीर्यते वा करका, क्षिपकादिः (वा०), कमण्डलौ च करक इति पुंस्यपि वक्ष्यति । अहरित्यहर्निशोपलक्षणम् । अह्नि मेघेन च्छन्नमाच्छादनमिति व्यधिकरणे सप्तम्यौ वा, गङ्गाधरसूरिः– दुर्दिनं त्वन्धकारेऽब्दैः । बार्दलं देश्याम् ॥ १२ ॥ अन्तर्धानमन्तर्धा, अन्तःशब्दस्याङ्किविधिणत्वेषूपसर्गत्वात् (वा०), आतश्चोपसर्गे (सू०) इत्यङ् । (अन्तर्धिः) उपसर्गे घोः किः (सू०) । वष्टि भागुरिरल्लोपमिति (का०) पक्षे पिधानम् । तिरोऽन्तर्धाविति (सू०) गतित्वात्समासः ॥ १३ ॥ आह्लादनाच्चन्द्रश्चासौ मिमीते कालं मस्यति परिणमते वा माश्च चन्द्रमाः । मा अप्युच्यते सत्यभामाभामेतिवत् । उनत्तीन्दुः, उन्देरिच्चादेः (उ०) । विध्यत्यनेन सुरा विधुः, धेट् पाने । शुभ्रांशुः सितकरः । ओषधीरीष्टे आप्यायकत्वादोषधीशः ॥ १४ ॥ अत्र्या जातोऽत्रिजः । जीवयति जैवातृकः, जीवेरातृकन्वृद्धिश्च (उ०) । सूनमृतं

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् ।
नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥
वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।
दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ॥ २ ॥
प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥
उत्तरा दिगुदीची स्याद्दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ॥ ३ ॥
इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ।
कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ॥ ४ ॥
ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ५ ॥
क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ।
अभ्यन्तरं त्वन्तरालं चक्रवालं तु मण्डलम् ॥ ६ ॥
अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः ।
धाराधरो जलधरस्तडित्वान् वारिदोऽम्बुभृत् ॥ ७ ॥

न भ्राजतेऽभ्रम्, डः । व्ययति व्योम, ज्वरत्वरस्रिव्यवीति (सू०) ऊठम् । पुष्कं वारि राति (व्ययति) पुष्करम् । अम्बते शब्दायतेऽम्बरम् । न भमस्ति भाति नभः । अन्तर्ऋक्षाण्यत्रान्तरिक्षम्, पृषोदरादित्वात् (सू०) ह्रस्वम्, द्यावापृथिव्योरन्तरीक्ष्यते वा, छान्दसमित्वम् । गच्छन्त्यनेन गगनं [वः र्मविकारो गमेर्गश्चेति (उ०) षः] । नास्त्यन्तोऽस्यानन्तम् । खन्यते खम् ॥ १ ॥ वियच्छति विरमति वियत् । विष्णोः पदं क्रमोऽत्र विष्णुपदम् । आकाशन्ते सूर्यादयोऽत्राकाशम्, न कास्यते वा, छान्दसो दीर्घः । विजहाति सर्वं विहायः । तारापथो मेघाध्वा च । महाबिलं देश्याम् । दिशन्त्यवकाशं दिक्, ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगिति (सू०) साधुः । कं स्कुभ्नाति विस्तारयति ककुप् । काशते काष्ठा । अश्नुते आशा । हरन्त्यनया हरित् ॥ २ ॥ यथासंख्येन प्राची पूर्वा, अवाची दक्षिणा, प्रतीची पश्चिमा, सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पूर्वपदस्य पुंवद्भावः (वा०) । प्रागग्रे पश्चाच्चार्कोऽस्यामिति, अवो मध्यार्थे । अपाचीति कास्यः, जपादित्वात्पक्षे वत्वं च । भवार्थे प्राचीनाद्याः । उत्तरत्यतिशयेनोर्ध्वा– उत्तरा । उत्तरमञ्चत्यर्कोऽस्यामुदीची । (दिश्यं) दिगादिभ्यो यत् (सू०) ॥ ३ ॥ विदिगपि प्रसिद्धया दिक् । [एते क्रमात्पूर्वादीनां दिशां विदिशां च पतयः] । रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः । बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ ४ ॥ दिशां धारका गजा दिग्गजाः क्रमात्, ऐरावतः पुण्डरीकः कुमुदोऽञ्जनवामना इति भागुरिः क्रमं व्यत्यस्तवान् । मालापि– ऐरावतः सुप्रतीक इति । पुण्डरीकादिवर्णाकृतिभ्यां संज्ञा एताः । शोभनानि प्रतीकान्यङ्गान्यस्य सुप्रतीकः । करिण्योऽभ्रमुकपिलापिङ्गलानुपमाः क्रमात् । ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना [वामना] चाञ्जनावती ॥५॥ दिशोर्दिशोरिदमपदिशम्, विभक्त्यर्थेऽव्ययीभावः, अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः (सू०) समासान्तः, अव्ययीभावश्च (सू०) इति नपुंसकाव्ययत्वे । विशिष्टा दिग्विदिक्, उभयव्यपदेशात्, यदाहुः– यान्यासामन्तरालानि विदिशः प्रदिशश्च ताः (अमरमाला) । अन्तरमवकाशमालात्यन्तरालम् । चक्राकारेण वलते चक्रवालं, वाडते वा, वाडृ आप्लाव्ये । मण्डं [भूष्य]ति मण्डलम् । सूत्रद्वये दिशार्थत्यनुवर्तयन्ति प्रसङ्गात्सामान्येनेति सभ्यः ॥ ६ ॥ अप्रत्यापो राति वाभ्रम्, अभ्र गत्यर्थः, न भ्रश्यन्त्यापोऽस्मादित्येके, यदुक्तं– न भ्रंशन्ति यतस्तेभ्यो जलान्यभ्राणि तान्यतः (पुराणं) । मेहति सिञ्चति मेघः, न्यङ्क्वादित्वाद् (सू०) घः । (स्तनयित्नुः) स्तनेश्चौरादिकात् स्तनिहृषिपुषिगदिमादिभ्यो णेरित्नुच् (उ०) । बलाकाभिर्हीयते बलाहकः, वारिवाहको वा ॥ ७ ॥ हन्यते वायुना घनः, मूर्तौ घनः (सू०)

नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः ।
अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ॥ ६६ ॥
तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढबाढदृढानि च ।
क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्यात्त्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ॥ ६७ ॥
कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड् गुह्यकेश्वरः ।
मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ॥ ६८ ॥
किंनरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ।
यक्षैकपिङ्गैलविलश्रीदपुण्यजनेश्वराः ॥ ६९ ॥
अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
कैलासः स्थानमलका पूर्विमानं तु पुष्पकम् ॥ ७० ॥
स्यात्किंनरः किंपुरुषस्तुरंगवदनो मयुः ।
निधिर्ना शेवधिर्भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ॥ ७१ ॥

इति स्वर्वर्गः । १ ।

नियतं भवं नित्यम् । न जस्यति तच्छीलमजस्रं, नमिकम्पीति (सू०) रः । [संसक्तमासक्तं च ।] अतिशेते जयत्यनेनातिशयः । भरः पूर्णता, भृ भरणे, ऋदोरप् (सू०) । अतिक्रान्तं वेलामर्थं मात्रां च । बिभर्ति भृशम् । उद्गाहते स्मोद्गाढम् । निःशेषेण भरोऽत्र निर्भरम् ॥ ६६ ॥ तीव्यति तीव्रं, तीव स्थौल्ये, रक् । एको निश्चितोऽन्तोऽत्रैकान्तम् नितान्यति स्म नितान्तम् । बाहते बाढम्, क्षुब्धस्वान्तध्वान्तेति (सू०) पाठं भृशे साधु । दृढः स्थूलबलयोरिति (सू०) दृढं बलवति साधु । अतिमर्यादं दृढं च । सततमविच्छेदः प्रकर्षस्त्वतिशय इत्यर्थभेदः । असत्त्वे गुणक्रियाविशेषणत्वादद्रव्यवृत्तित्वे सति शीघ्राद्या नपुंसके, यथा – भृशं मूर्खः, भृशं याति । एतन्मध्याद्यत्सत्त्वगामि द्रव्यवृत्ति तत्त्रिलिङ्गं, यथा– शीघ्रा स्त्री, शीघ्रोऽश्वः, शीघ्रं कुलम् । सत्त्वगामीति किं— भरोऽयं, गुणातिशयोऽयम् ॥ ६७ ॥ कुत्सितं बेरं देहोऽस्येति कुबेरः, कुष्ठित्वात् । त्र्यम्बकस्य सखा त्र्यम्बकसखः, राजाहःसखिभ्यष्टच् (सू०) । मनुष्यस्येव धर्मः श्मश्रुलत्वादिरस्य मनुष्यधर्मा, धर्मादनिच्केवलात् (सू०) । धनं दयते रक्षति धनदः, एवं श्रीदः । राज्ञां यक्षाणां राजा राजराजः ॥ ६८ ॥ विश्रवसोऽपत्यं वैश्रवणः, विश्रवसा विप्रहो विश्रवणेन वृत्तिरावरविकन्यायेन, शिवादिभ्योऽण् (सू०) । पुलस्तेरपत्यं गोत्रं पौलस्त्यः । नरो वाहनमस्य नरवाहनः, वाहनमाहितात् (सू०) इत्यनेन नरस्यानाहितवाचित्वाद् णत्वं नास्ति, पूर्वपदात्संज्ञायां (सू०) इत्यपि नास्ति क्षुभ्नादित्वात् (सू०) । किंनरादिस्वाम्येऽपि जात्या यक्षः, यजेर्यक्षेर्वा रूपम् । एकपिङ्गः पिङ्गलैकनेत्रत्वात्, अतो भागुरिणा हर्यक्ष उक्तः । इडविडा मातास्येति, ऐलविलोऽपि डलयोरेकत्वस्मरणात् ॥ ६९ ॥ अस्येति प्रत्येकं संबध्यते । उद्यान्त्यस्मिन्नुद्यानम् । चित्ररथेन गन्धर्वराजेन निर्वृत्तं चैत्ररथम् । नडः कूबरं रथावयवोऽस्य नडकूबरः । केल्योर्जलभूम्योरास्ते, के (जले) लसनमस्य वा कैलासः स्फटिकस्तस्यायं स्फाटिकोऽद्रिः (कैलासः) । अलत्यलका, अल भूषणे, क्षिपकादित्वात् (वा०) इत्वाभावः । पुष्पमिव पुष्पकम्, इवेप्रतिकृतौ (सू०) कन् ॥ ७० ॥ किंचिन्नरोऽश्वमुखत्वात्किंनरः, कुत्सितो नरो वा, किंक्षेपे (सू०) इति समासः । मयते मयुः । नियतं धीयते निधिः, किः । शेव्यते शेवं सुखं धीयतेऽस्मिञ्शेवधिः । ना पुंलिङ्ग इति काकाक्षिवत् । उक्तं च– महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥ ७१ ॥ इति स्वर्वर्गः । १ ।

कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।
राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः ॥ ५९ ॥
रात्रिंचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः ।
यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६० ॥
प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्पतिः ।
श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६१ ॥
पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ।
समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥ ६२ ॥
नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः ।
प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ॥ ६३ ॥
शरीरस्था इमे रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ।
जवोऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ॥ ६४ ॥
सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ।
सततानारताश्रान्तसंततविरतानिशम् ॥ ६५ ॥

॥ ५९ ॥ रात्रौ चरतीति रात्रिचरः, चरेष्टः (सू०), रात्रेः कृति विभाषा (सू०) इति पक्षे मुम् । कर्बुरः वर्णेन, कर्ब हिंसायां वा । निकषा रक्षसां मातेति [नाम] माला. अतो नैकषेयमन्त्या कसेयमाहुः । यातूनि यातना धीयन्तेऽस्मिन् यातुधानः । पुण्यजनो विपरीतलक्षणया । निर्ऋतेर्दिक्पालस्यापत्यं नैर्ऋतः । यातयति व्यथयतीति यातुशब्दो भीमवत् । रक्षन्त्यस्माद्रक्षः । विधुरोऽपि । कीनाशो नानार्थे ॥ ६० ॥ प्रचेतयते प्रचेताः, असुन् । वृणोति वरुणः । यादसां जलचराणां पतिः, यादःपतिरिति वाच्ये पक्षे वाक्याप्यनुष्ठानम् । अपां पतिरप्पतिः । श्वसन्त्यनेन श्वसनः । स्पृशति स्पर्शनः । वाति वायुः, कृवापाजीत्युण् (उ०) । मातरि खे श्वयति मातरिश्वा ॥ ६१ ॥ पृषन्मृगविशेषोऽश्वोऽस्य पृषदश्वः, पृषन्त्यम्बुकणाः सन्त्यश्वा अस्येत्यन्ये । गन्धस्य वहः । अकारादनुपपदात्कर्मोपपदो (भवति) विप्रतिषेधेन (वा०) इत्यस्य प्रायिकत्वात्पक्षे कर्मण्यण् (सू०) गन्धवाहः । अनन्त्यनेनानिलः, न निलति वा, णिल गहने । समीरयतीत्यपि चलनशब्दार्थेति (सू०) युचि च समीरसमीरणौ, समेति सम्(मी)र इत्यस्यैकदेशविकृतस्यानन्यत्वात् । म्रियन्तेऽनेन मरुत् । मरुदेव मारुतः, स्वार्थे- अण् ॥ ६२ ॥ नभोऽस्यास्तीति नभस्वान्, तसौ मत्वर्थे (सू०) इति भसंज्ञा । पवते पवनः, युच् । तथा पवमानः, पूङ्यजोः शानन् (सू०) । प्रभनक्ति प्रभञ्जनः । प्रकम्पनो महाबलश्च । हृदयात्मुखमार्गेऽप्यानयनात् प्राणः । प्रसरणेन-अपसरणेन-आसमन्तात्-ऊर्ध्व-व्यामया च-अनित्यनेनेति, घञ् । आनयेदो नो भूतानि रूपाणीति योगशास्त्रम् । एते शरीरे व्यापका अपि नियतस्थानस्थाः, यदाहुः- हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिसंस्थितः । उदानः कण्ठदेशस्थो व्यानः सर्वशरीरगः ॥ ६३ ॥ वायोर्धर्मानाह । रंहन्त्यनेन रंहः । तरन्त्यनेन तरः, असुन् । णिर्गते रयते यानेन रयः, अच् । स्यन्दतेऽनेन स्यदः, स्यदो जवे इति (सू०) साधुः । जवनं जवः, जु गतौ, ऋदोरप् (सू०) । वाजोऽपि । वेगो नानार्थे । शिङ्घति व्याप्नोति शीघ्रम् । त्वरते स्म त्वरितं तूर्णं च, विभाषा भावादिकर्मणोः (सू०) इतीट्, ज्वरत्वरेति (सू०) उपधाया ऊठ् । लङ्घ्यते लघु । क्षिपति क्षिप्रम् । अरमव्ययं, ऋतेरचि वा नामेत्यन्ये, यदाहुश्च शाश्वतः- अरमङ्गेऽरथाङ्गस्य शीघ्रशीघ्रगयोरपि । द्रवति स्म द्रुतम् ॥ ६४ ॥ सह त्वरया वर्तते सत्वरम् । न विलम्बते स्माविलम्बितम् । अश्नुते आशु, कृवापाजीत्युण् (उ०) । सवेगगतिवचनो जवः धर्मवचनास्तु शीघ्रादय इति – अर्थभेदः । सदागतिप्रस्तावादाह । संतन्यते स्म सततं, समोवा हिततयोरिति (का०) पक्षे मलुक् । आरतविरतावरतशब्दा विरामार्थास्तेषां नञ्समासः । न श्राम्यति स्माश्रान्तम् । अविद्यमाना निशा यत्रानिशम्, सा हि विरतिस्थानम् ॥ ६५ ॥

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनंजयः ।
कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५३ ॥
बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उपर्बुधः ।
आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५४ ॥
रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ।
हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५५ ॥
सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
शुचिरप्पित्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥ ५६ ॥
वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।
त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः संतापः संज्वरः समौ ॥ ५७ ॥
धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् ।
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड् यमः ॥ ५८ ॥

न्नपादिति (सू०) नञ् प्रकृत्या ॥ ५३ ॥ बर्हिःशुष्मेति व्यस्तं समस्तं वा नाम, बर्हिर्दर्भः शुष्म बलमस्येति, बर्हति वर्धते बर्हिः, यस्य बर्हिर्मुखा देवाः । शुष्यन्त्यनेन शुष्मा, यस्य—शुष्माणि प्रणयनाभिमासेद्य (स्कु)ते (शिशु०) । बर्हिरूप इत्यमरमाला. यथा—बर्हिषां बर्हिणो बर्हिरूपः (वा० रा०) । कृष्णो धूमो वर्त्मास्य (कृष्णवर्त्मा) । शोचींषि ज्वालाः केशा अस्य शोचिष्केशः । उषसि रात्रौ बुध्यते प्रकाशते – उपर्बुधः, अहरादीनांपत्यादिषु (वा०) इति रुः । आश्रितेऽन्यत्राश्रयमाधारमश्नातीत्याश्रयाशः, आश्रयाश इत्येके । बृहन्तो भानवो रश्मयोऽस्य बृहद्भानुः । कृशयति कृशानुः, कृशोऽयमिति प्रश्न[वर्त]ते वा । पुनाति पावकः । अनिलत्वेन लोक इत्यनलः ॥ ५४ ॥ रोहितावश्वौ मृगौ वा वाहनमस्येति रोहिताश्वः, यदि वा रोहिता लोहिता अश्वा अस्येति । वायुः सखानुचरो[वा]स्य वायुसखः । आशोष्मिरच्छत्याशुशुक्षणिः, आङ्युपेःसनश्छन्दसि (उ०) इत्यनिः । हिरण्यं रेतोऽस्य हिरण्यरेताः, यत्स्मृ[यु]तिः– अग्नेरपत्यं प्रथमं सुवर्णमिति । हव्यं वाहयति देवान्नयति हव्यवाहनः, हव्य(कव्य)-पुरीषपुरीष्येषुञ्युट् (सू०) ॥ ५५ ॥ दाम्यति शाम्यति विनयत्यसौ दमुनाः, औणादिक उनस्, दमूना इत्येके, दमेरुनसिः (उ०) । शुक्रं तेजोऽस्यास्य शुक्रः, अर्शआदित्वादच् (सू०) । विभैव वसु धनमस्य विभावसुः । शुचिः शोधकत्वात् । अपां पित्त सार धर्मयोनित्वादौपित्तम् । उर्वश्चित्र । क्षारस्तु भस्मनं भस्मेति वाच्यम् । उर्वस्यापत्यमौर्वः, वरुणभयान्मात्रा– ऊर्वोर्गोपितत्वादित्येके । वाडवोऽश्वमुखत्वात् ॥ ५६ ॥ ज्वलति ज्वालः (ज्वाला वा), ज्वलितिकसन्तेभ्योणः (सू०) । (कीलः) कील बन्धे । प्रायेणार्चिः स्त्री, ज्वाला भासो न पुंस्यर्चिरिति हि वक्ष्यति, अर्चयतेरर्चिः । हिनोति हेतिः । शिनोति शेते वा शिखा । स्फुलति चलति स्फुलिङ्गः, जातावपि नृ दीप कन्दरावत् । संतापयति संतापः । संज्वरयति संज्वरः ॥ ५७ ॥ धर्मस्य राजा धर्मराजः । समवर्ती रिपौ मित्रे च समवर्तनात् । परेतराट् प्रेताधिपः । कृतोऽन्तो विनाशोऽनेन कृतान्तः । शमयतीति शमनः । यमेन राजते यमराट् । यमयतीति यमः, यमलजातत्वाद्वा ॥ ५८ ॥ कलयत्यायुः कालः । श्राद्धदेवः पितृपतित्वात्, श्राद्धे देवत्वाद्वा । यद्वा विवस्वदपत्यसामान्यान्मनुवत्, यद्गुणः–श्राद्धदेवोऽर्कजो मनुः । अन्तं करोतीति, अन्तयत्यन्तकः, ण्वुल् । रक्ष एव राक्षसः, स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्तेऽपीति पुंस्त्वम् । कुणपमत्ति कौणपः, शेषे (सू०) इत्यण् । क्रव्यमाममांसमत्ति (क्रव्याद्), क्रव्ये चाति (सू०) क्विप् (विट्) अण् च । अस्र रक्तं पिबत्यस्रपः, आतोऽनुपसर्गे कः (सू०), न श्रपयति कव्यात्त्वादर्थेन इत्येके । आशृणाति हिनस्त्याशरः

ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ।
शतकोटिः स्वरुः शंबो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः ॥ ४७ ॥
व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः सुरर्षयः ।
स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ४८ ॥
मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।
मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥ ४९ ॥
पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
संतानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५० ॥
सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वैद्यावश्विनीसुतौ ।
नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ॥ ५१ ॥
स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।
हाहा हूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ॥ ५२ ॥

शं विद्यतेऽस्य शंबः, कंशंभ्यामिति (सू०) बः । दम्नोति खेदयति दम्भोलिः । अश्नाति शैलानशनिः, न शनैर्याति वा । व्याधामोऽपि ॥ ४७ ॥ व्योम्नि यान्त्यनेन व्योमयानम् । विमान्ति वर्तन्तेऽस्मिन्देवा विमानम् । नारं नरसमूहं द्यति भिनत्ति कलहेनारदः । आद्यशब्दाद्देवलादयः । सुराश्च ते ब्रह्मादिपुत्रत्वादृषयश्च, षष्ठीसमासो वा । सुष्ठु धर्मोऽस्या सुधर्मा, यदस्यं– सुधर्मानवमां पुरीं (सभां) (रघु०), धर्मादनिचकेवलात् (सू०) । सह भान्त्यस्यां सभा स्यान्नृहम् । पीयते पीयूषं, पीयेरूषन् (उ०) । नास्ति मृतमस्मादमृतम् । सुष्ठु धीयते सुधा, धेट् पाने । समुद्रनवनीतं देश्याम् ॥ ४८ ॥ मन्दमकत्यवश्यं मन्दाकिनी, अक अग कुटिलायां गतौ । सिद्धसिन्धुश्च । गङ्गामात्रस्य नामानि च वक्ष्यामः । मिनोति क्षिपत्युच्चत्वाज्ज्योतींषि मेरुः । सुमेरुरभिन्नार्थः, इन्द्रमहेन्द्रवत् । हेम्नोद्रिर्हेमाद्रिः । रत्नानि सानावस्य रत्नसानुः ॥ ४९ ॥ मन्दा आरा धारा अस्य सरलत्वान्मन्दारः । पारिणः पारवतोऽब्धेर्जातः पारिजातकः । संतन्यन्तेऽस्मिन्पुष्पाणि संतानः । कल्पवृक्षः संकल्पपूरणात् । हरेरिन्द्रस्य चन्दनं, कपे पीतं वा ॥ ५० ॥ सनाभिन्यं कुमारः । सनात्कुमारोऽपि । विधातुरपत्यं वैधात्रः । वैद्यसंहिताप्रणेतृत्वादश्विनौ । न– असत्यावसाधू नासत्यौ, नभ्राण्नपादिति (सू०) नञ् प्रकृत्या । अश्विनौ सदश्वाधिरूढौ । दस्यतो हरतो रोगान्दस्रौ । अश्विन्या अपत्यं– ढक्– आश्विनेयौ । उभाविति द्वित्वादेकवचनाभावः । भागुरिस्त्वाह– नासत्यदस्रौ यमजावर्कजावश्विनौ यमौ, नासत्यसहितौ दस्राविति व्याख्येयं, न त्वेको नासत्योऽन्यो दस्रः ॥ ५१ ॥ घृताची मेनका रम्भा– उर्वशी च तिलोत्तमा । सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः । अद्भ्यः सृता अप्सरसः इत्येकापि शब्दशक्तिस्वाभाव्यात्, अप्सरा इत्यपि दर्शनात् प्रायिकं बहुत्वम् । ऊरू अश्नुते नारायणस्योरूद्भवत्वादुर्वशी, पृषोदरादित्वात् (सू०) ह्रस्वः, यदस्य– ऊरूद्भवा नरसखस्य मुनेः सुरस्त्रीति (विक्र०) । मुखशब्दाद्रम्भादयः । हाहा एको हूहूरन्यः, एकं नामेत्येके, गन्धर्वौ च हाहा हूहूरिति तु लक्ष्यम् । आलापानिकानुकारात्पुंस्येतौ, अव्ययाविति श्रीभोजः । आद्यशब्दात्तुम्बुरुमुखा गन्धर्वा देवगायनाः ॥ ५२ ॥ अङ्गत्यूर्ध्वं यात्यग्निः । विश्वानरस्यापत्यं वैश्वानरः, बिदादित्वादञ् (सू०) । वहति हव्यं वह्निः । वीतयोऽश्वा होत्रं हव्यमस्येत्यागमः, वीतिरशनमिति प्राच्याः । धनं जयति धनंजयः, संज्ञायां भृतृवृजीति (सू०) खच् । उदकनामान्युत्तराण्येकशतमिति (निरुक्त), कृशं तस्यामनसो योनिर्धूमजत्वान्मेघानां, अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगिति च (मनु०), कृपीटं योनिरस्येत्येके, यदाहुः– अद्भ्योऽग्निर्ब्रह्मतः क्षत्रमश्मनो लोहमुत्थितम् (मनु०) । ज्वलति ज्वलनः, जुचङ्क्रम्येति (सू०) युच् । जाता वेदा अस्माज्जातवेदाः, जाते जाते विद्यते वा । तनूं न पातयतीति तनूनपात्, दृढधर्तृत्वात्, नञ्-

जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।
सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४२ ॥
वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ।
जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः ॥ ४३ ॥
संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया ॥ ४४ ॥
पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती ।
हय उच्चैःश्रवाः सूतो मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४५ ॥
स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः ।
ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥ ४६ ॥

श्रवाः, वृद्धेभ्यः शृणोति वा । शोभना नासीरा अग्रेसरा अस्य सुनासीरः, शुः पूजायां शुनुखवत्, शुनासीरयोरपत्यमित्येके । पुरु प्रभूतं हूनं यज्ञेष्वाह्वानमस्येति पुरुहूतः । पुराण्यरीणां दारयति विपुरं वा पुरंदरः, वाचंयमपुरंदरौ च (सू०) इति साधुः ॥ ४१ ॥ जयनशीलो जिष्णुः, ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः (सू०) । लेखर्षभो देवश्रेष्ठः । शक्नोति शक्रः । शतं मन्यवः क्रतवोऽस्य शतक्रतुः । दिवः स्वर्गस्य पतिः, षष्ठ्याः पतिपुत्रेति (सू०) अलुकि, कस्कादित्वात् (सू०) सत्वे च दिवस्पतिः । सुष्ठु त्रायते सुत्रामा, मनिन्, शोभनं त्राम बलं वास्य । गोत्रान् गिरीन्पक्षच्छेदाद् भिन्नवान् गोत्रभित् । वसवोऽस्य वासवः । वृत्रबलजम्भनमुचयोऽसुराः । वर्षतीति वृषा, कनिन् ॥ ४२ ॥ वास्तोर्गृहक्षेत्रस्याधिष्ठाता वास्तोष्पतिः, षष्ठ्या अलुकि षत्वं, वास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च (सू०) इति लिङ्गात् । हरयः पिङ्गा हया अस्य हरिहयः । स्वः स्वर्गे राजते स्वाराट्, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः (सू०), व्रश्चभ्रस्जेति (सू०) षः ॥ ४३ ॥ संक्रन्दयति रिपुस्त्रीः संक्रन्दनः, ल्युः । दुष्टं च्यवते परदारेषु रतत्वाद् दुश्च्यवनः, चलनशब्दार्थादिति (सू०) युच्, दुःखेन च्यवते रणाद्वा । तुरं त्वरितं साहयत्यभिभवत्यरीन्स्तुराषाट्, तुरं वेगं सहते वा, छन्दसि सहः (सू०) इति ण्विः, नहिवृतिवृषीति (सू०) पूर्वपदस्य दीर्घः, सहेः साडः सः (सू०) इति षत्वम् । मेघो वाहनमस्य, इन्द्रो हि मेघानाविश्य वर्षति, मेघ ऐरावतो वा तत्राधिष्ठानत्वात् । आखण्डयति भिनत्त्यरीनाखण्डलः । ऋभून्देवान् क्षियत्यधिवसति ऋभुक्षाः, यद्वा- अर्तेर्भुक्षिनक् (उ०), पथिमथ्यृभुक्षामात् (सू०) । प्राचीनबर्हिरहिहा पृतनाषाट् पुलोमजित् । उग्रधन्वा च पुराणे ॥ ४४ ॥ पुलोम्नो मुनेर्जाता, अत एव पौलोमी । शचते शची, शच श्वच गतौ । इन्द्रस्य स्त्रीन्द्राणी, इन्द्रवरुणेति (सू०) ङीषानुकौ । तस्येति प्रत्येकं संबध्यते । अमरा वियन्त्यस्याममरावती, मतौ बह्वचोऽनजिरादीनां (सू०) इति दीर्घः । उच्चैः श्रवसी अस्योच्चैःश्रवाः । तस्य सूतः सारथिर्मतलस्यापत्यं मातलिः । तस्योपवनं, नन्दयतीति नन्दनं, ल्युः ॥ ४५ ॥ विजयते विजयन्तो जिष्णुः, झच्, तस्यायं (सू०) इत्यण्, वैजयन्ती अस्यास्तीत्येके । तस्य पुत्रो जयन्तः, पाकशासनस्यापत्यं (पाकशासनिः) । इरावत्यब्धौ जात ऐरावतः । अभ्रस्थत्वादभ्रमातङ्गः, अभ्ररूप इत्येके, यत्कात्यः— ऐरावतं विजानीयान्नागमम्बुदगोचरम् । इरावणोद्भव ऐरावणः, विभाषौषधीति (सू०) वा णत्वम् । अभ्रे सु माति न भ्राम्यति वा मन्थरगामित्वादभ्रमुस्तद्भार्या, यद्व्यासः- अभ्रमुर्जघनान्तदोलितकरः (बा० रा०) । सुरगजो गजमल्लश्च ॥ ४६ ॥ ह्रादः स्फूर्जथुरस्यास्तीति ह्रादिनी । वजति यात्येव न प्रतिहन्यते वज्रम् । कुलिनः पर्वतान्स्यति पक्षच्छेदेन तनूकरोति कुलिशं, कुत्सितं लिशति तक्ष्णोत्यरीन्वा । भिनत्ति तच्छीलं भिदुरम्, विदिभिदिच्छिदेः कुरच् (सू०) । पुनाति पविः, हारकस्य पविसंज्ञया प्रसिद्धत्वात् । शतं बहवः कोटयोऽस्य शतकोटिः । स्वरति स्वरुः, शॄस्वृस्निहीति (उ०) उः, शोभनान्यस्त्राणि धारा अस्येति सान्तो वा ।

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा ।
उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरा ॥ ३६ ॥
शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।
अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाम्बिका ॥ ३७ ॥
विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः ।
अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ॥ ३८ ॥
कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ।
पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ॥ ३९ ॥
बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः ।
षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ॥ ४० ॥
इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिडौजाः पाकशासनः ।
वृद्धश्रवाः सु-शुं-नासीरः पुरुहूतः पुरंदरः ॥ ४१ ॥

भूतेः । अणिमा महिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यमीशिता वशिता- ईशत्व यत्रकामावसायितेत्यष्टधै- श्वर्यम । भूतिविभूती समानार्थे लोचनविलोचनवत् । उ मेति माता तपसो निषिद्धा (कुमा०) इत्युमा । कात्यशब्दाद् गर्गादिभ्यो यञ (सू०) इति यञन्ताद् (सर्वत्र) लोहितादिकतन्तेभ्यइतिष्फः (सू०), षित्वाद् ङीष् कात्यायनी । हिमवतोपत्यं हैमवती । ईष्टे तच्छीला- ईश्वरा, स्थेशभासेति (सू०) वरच् । अश्नोतेराशुकर्मणिवरट्च (उ०) उपधाया इत्वमितीश्वरी ॥ ३६॥ शिवा मतः श्रेयस्करीत्वाच्छिववत्, यच्छाश्वतः- शिवं भद्रं शिवः शंभुः शिवा गौरी शिवाभया । पुंयोगे च शिवस्य स्त्री शिवी । भवस्य स्त्री भवानी, इन्द्रवरुणभवेति (सू०) ङीषानुकौ । एवं शर्वाण्यादि । अपर्णा तपसि पर्णानामप्यनशनात् । पर्वतस्यापत्यं पार्वती । दुःखेन गन्तु शक्यतेस्यां दुर्गा, सुदुरोरधिकरणे (वा०) इति डः । चण्डी कोपना, षद्गौरादित्वाद् (सू०) ङीष्, इकोऽचेऽण: (सू०) इति ह्रस्वः । अम्बैवाम्बिका । जगन्माता- आर्या भार्गवी सती दाक्षायणी च । गणनायिका देव्याम् ॥ ३७ ॥ विगतो नायको नियन्तास्य विनायकः, अन्येषां विनेता वा । अत एव विघ्नानां राजा विनियन्ता । द्वयोर्मात्रोरपत्यं द्वैमातुरः [गाङ्गेयोपि स्तः], मातुरुत्संख्यासंभद्रपूर्वायाः (सू०) इत्यण्, अन्त्यस्योत्वं च । गुहोत्पाटितदन्तत्वादेकदन्तः । प्रत्यूषे हेरम्बते शब्दायते हेरम्बं इति नैरुक्ताः, देशीपदप्रायं तु मन्महे । आखुरथोपि ॥ ३८ ॥ कृत्तिकानां बहुलाख्यानामपत्यम् । महती सेनास्य महासेनः । शरवणे जन्मास्य शरजन्मा । षडाननः कृत्तिकाख्यासप्तपत्नीनां षण्णां स्तनपानात् । स्कन्नं शुक्रं रेतोस्य स्कन्दत्यरीन्वा स्कन्दः । गूहते सेनां गुहः, कः ॥ ३९ ॥ विशाखासु जातो विशाखः, नक्षत्राल्लुग्बहुलम्.(सू०) । शिखी मयूरो वाहनमस्य शिखिवाहनः । षण्णां मातॄणामपत्यं षाण्मातुरः । शक्तेर्धरः शक्तिधरः, अन्यथा शक्तिधरः शक्तिधारो वा स्यात् । कुमारो ब्रह्मचारित्वात्, कुत्सितो मारोस्येति वा । क्रौञ्चो गिरिस्तेन ह्यस्य कैलासमन्ञ्शिक्षार्थं गच्छतो मार्गो रुद्धोभूत्, अतस्तं दारयति क्रौञ्चदारणः, ल्युः । स्वामी च । गाङ्गेयोपि ॥ ४० ॥ भृङ्गी भृङ्गिरिटिस्तुण्डिनन्दिनो नन्दिकेश्वरे । कर्णमोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डातिचण्डि[च चर्चि-]केति वक्तव्यम् ॥ इन्द्रः परमैश्वर्ययोगात् । मरुतो देवाः सन्त्यस्य मरुत्वान्, तसौमत्वर्थे (सू०) इति भसंज्ञत्वात् पदकार्यं जश्त्वं नास्ति । मघः सौख्यमस्यास्तीति मघवा, श्वन्नुक्षन् (उ०) इत्यत्र तु निपातितस्य मघवन्नित्यस्य । पक्षे सौ प्रादेशाद्दीर्घाभावान्मघवन्, मघ्वा- बहुलम् (सू०) । वेवेष्टि विट् व्यापकमोजोस्य विडौजाः, विट्सु वा- ओजोस्य, पृषोदरादित्वात् (सू०) षत्वम् । बिड भेदने वा, बिड भेदकमोजोस्य । पाकानां दैतियभेदानां शासनः । वृद्धे श्रवसी श्रयोति यस्य-

भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।
मृत्युंजयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३१ ॥
उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३२ ॥
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।
हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥ ३३ ॥
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।
व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३४ ॥
कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवं धनुः ।
प्रमथाः स्युः पारिषदा ब्राह्म्याद्यास्तु मातरः ॥ ३५॥

ईशानः, ताच्छील्येचानश् (सू०) शंकरः, कृत्योहोत्तीति (सू०) टः ॥ ३० ॥ गिरिं द्यति - उपभोगेन तनूकरोति गिरिशः, गिरिर्वास्यास्तीति, लोमादित्वाच्छः (सू०), गिरौ शेते वा गिरिशः, गिरौडश्छन्दसि (वा०), लोके त्वानुशुक्षणिवत् । मृडति सुखयति मृडः । मृत्युं जयति मृत्युंजयः, संज्ञायांभृतृवृजीति (सू०) खच् । कृत्तिश्चर्म वासोऽस्य कृत्तिवासाः ॥ ३१ ॥ उच्यति कुत्सा समवैति- उग्रो रौद्रत्वात् । श्रीः शोभा कण्ठेऽस्य श्रीकण्ठः । नीलगलत्वाच्छितिर्नीलः कण्ठोऽस्य शितिकण्ठः । वामः श्रेष्ठो देवः, संसारे वामत्वाद्वा । विरूपाणि त्रित्वादक्षाण्यस्य विरूपाक्षः, बहुव्रीहौसक्थ्यक्ष्णोःस्वाङ्गात (सू०) षच् ॥ ३२ ॥ कृशानौ रेतोऽस्य कृशानुरेताः, देव्या सोढुमशक्यत्वादग्नौ हि क्षिप्तं रेतः, अत एव पावकिः कुमारः । धूर्गङ्गा जटास्वस्य धूर्जटिरिति निरुक्तम् । नीलः कण्ठे लोहितश्च केशेतो नीललोहित इति पुराणम् । हरत्यघं हरः, हरतेः- अच् । स्मरं हरति स्मरहरः, हरतेरनुद्यमने (सू०) अच् । बिभर्ति भर्गः, भृज्ज्यन्तेऽनेन काम-कालादयो वा । त्रीण्यम्बकान्यस्य त्र्यम्बकः, त्रयाणां लोकानामम्बकः पितेत्यागमः, द्यौर्भूमिरापस्ति-स्रोम्बा अस्येति वा । (त्रिपुरान्तकः) त्रिपुरीति भाष्यदर्शनेपि लोकाश्रयत्वात्त्रिपुरं पात्रादौ (पात्रा-द्यन्तस्यन) ॥ ३३ ॥ गङ्गाया धरश्चकधरादिवत्, अन्यथा कर्मण्यण् (सू०), संज्ञायांभृतृवृजीति (सू०) खच्- वा स्यात् । अन्धको नामासुरस्तस्य रिपुः । क्रतुं दक्षयज्ञं ध्वंसतेवश्यं क्रतुध्वंसी । व्योम द्यौः के मूर्ध्नि शेतेऽस्य व्योमकेशः, शीर्ष्णो द्यौः समवर्ततेति श्रुतेः, गङ्गां धारयितुं व्योमव्यापिनोऽस्य केशा वा व्योमकेशः । भवत्यस्माद्विश्वं भवः । बिभ्यत्यस्माद् भीमः, भीमादयोपादाने (सू०) । तिष्ठतीति स्थाणुः । रोदनाद्रुद्रः, सोऽरोदीद्यदरोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वमिति श्रुतेः, रोदयत्यरिस्त्रीर्वा, रोदेर्णिलुक्च (उ०) । अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च [महानादो] गजासुरारिश्च । महानटो देश्याम् । शिपिविष्टो वृषाकपिर्भैरवो नानार्थे ॥ ३४ ॥ ईश्वरस्य जटाजूटः कपर्दनामा, कं शिरः पिपर्ति कपर्दः, औणादिको दः । अस्य धनुः, पिनष्टीति पिनाकः, शूलार्थेऽप्यनेकार्थेषु वक्ष्यते । अजगवे विप्रतिपत्तिर्गम्यते, गाण्ड्यजकात्संज्ञायां ([illegible]) इति मत्वर्थे वः- अजकवमिति गाण्डम् । अथाजगवोऽस्थिविकारस्तदाणि वृद्धिः स्यात्, यत्कात्यः— धनुर्वेद-न्याजगवं पिनाकिकरगोचरम् । प्राच्यास्तु, गाण्ड्यजगादिति पेठुः । अजगवं धनुः प्रोक्तमिति तु पाश्चात्या अपि । प्रमथ्नन्ति प्रमथाः, अच् । परिषदि साधवः पारिषदाः, भक्ताण्णः (सू०) इति प्रकृते परिषदोण्यइति (सू०) योगविभागाद् णः । संघाते प्रमथे गण इति गणा अपि । अस्याष्टौ परिवारत्वेन मान्ति वर्तन्ते मातृनाम्न्यः । ब्राह्मी माहेश्वरी चान्द्री वाराही वैष्णवी तथा । कौमारी चर्ममुण्डा च काल-संकर्षणीति च । ब्रह्माणीत्यानुगागमाभावाच्चैव प्रसिद्धं नाम । कथंचिज्जातित्वात्, शार्ङ्गरवाद्यञोङीन् (सू०) ब्राह्मीत्याद्या इत्येके पेठुः, यद्भागुरिः- ब्राह्मयाद्या मातरः स्मृताः । रेवत्यो देश्याम् ॥ ३५ ॥ भवनं

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।
कन्दर्पो दर्पकोनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः ॥ २५ ॥
शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः ।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥
ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः स्यादनिरुद्ध उषापतिः ।
लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २७ ॥
शंखो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यश्चक्रं सुदर्शनः ।
कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ॥ २८ ॥
गरुत्मान् गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।
नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ २९ ॥
शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः ॥ ३० ॥

अनुदात्तोपदेशवनतीति (सू०) अनुनासिकलोपे तुक्, मतो मनसो मथः [मथ्नातीति] मन्मथः । म्रियन्तेनेन मारः । प्रकृष्टं द्युम्नं बलमस्य प्रद्युम्नः । मीनः केतनं ध्वजोस्य मीनकेतनः, मीनो जलचरोपलक्षणम् । कमव्ययं कुत्सायाम्, कं दर्पोस्य कंदर्पः कं दर्पयति वा । दर्पयतीति दर्पकः । न विद्यतेङ्गमस्येत्यनङ्गः, ईश्वरदग्धदेहत्वात् । काम्यतेनेन कामः, कामोस्त्यस्य वा, अर्शआदित्वात् (सू०) । [पञ्च शरा अस्येति पञ्चशरः, उन्मादनं शोचनं च तथा संमोहनं विदुः । शोषणं मरणं चैव पञ्च बाणा मनोभुवः ॥ मदनोन्मादनश्चैव मोहनः शोषणस्तथा । संदीपनः समाख्याताः पञ्च बाणा इमे स्मृताः ॥] स्मरन्त्यनेनेति स्मरः, पुंसिसंज्ञायांघःप्रायेण (सू०) ॥ २५ ॥ शम्बरोसुरभेदस्तस्यारिः शम्बरारिः । मनसि जायते मनसिजः, डः, हलदन्तात्सप्तम्याः (सू०) अलुक् । न मनसोन्यस्माज्जायतेनन्यजः । पुष्पाणि धनुरस्य पुष्पधन्वा, वासंज्ञायां (सू०) इत्यनङ् । आत्मना भवत्यात्मभूः, यन्नागुरिः— शम्बरारिः स्मरः स्वजः । हृच्छयश्चेत्रसखः शृङ्गारयोनिः पुष्पकेतुश्च ॥ २६ ॥ ब्रह्म ज्ञानं सूयते ब्रह्मसूः । ऋष्यनामा मृगः केतुरस्य (ऋष्यकेतुः) । उषा बाणदुहिता (तस्याः पतिः) । बलादयो हरेर्भ्रातृपुत्रपौत्राः, यन्नागुरिः— ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुश्च विष्वक्सेनात्मजात्मजः । संहितासु त्वेकं ब्रह्म वासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नानिरुद्धाख्यया चतुर्व्यूहात्मकमाहुः । विश्वकेतुरित्यपपाठः । लक्ष्यते लक्ष्मीः, लक्षेर्मुट्च (उ०) इतीप्रत्ययान्तः, अत एव ङ्यन्तत्वाभावाद्, हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात्सुतीति (सू०) सुलोपाभावः । पद्मं विद्यतेस्याः पद्मा, अर्शआदित्वादच् (सू०) । एवं कमला । श्रयतीति श्रीः, क्विब्वचिप्रच्छिश्रि (उ०) इत्यादिना क्विब्दीर्घौ । मा रमा अब्धिजा-इन्दिरेत्याद्यूह्यम् ॥ २७ ॥ पञ्चजने पाताले भवः पाञ्चजन्यः, बहिर्देवपञ्चजनेभ्यश्चेति वक्तव्यात् (वा०) ञ्यः । लक्ष्मीपतेरिति शेषः । सुखेन दृश्यते (सुदर्शनः), भाषायांशासियुधीति (वा०) युच् । सुदर्शनः पुंसि लोकाश्रयत्वाल्लिङ्गस्य, यथा— धनुरेष जगतां सुदर्शनः (शिशु०) । विष्णुः कुमोदकः सौरिरिति दुर्गपाठात्, कुमोदकस्येयं कौमोदकी लक्ष्मीपतेर्गदा । संहितासु मेण्ठादौ कौपोदकीति पाठः, कूपोदकाज्जातेत्याम्नायात् । नन्दयतीति नन्दकः । कुं भुवं स्तुभ्नाति व्याप्नोति कुस्तुभोब्धिस्तस्यायं कौस्तुभः ॥ २८ ॥ गरुतः पक्षाः सन्त्यस्य गरुत्मान्, झयः (सू०) इति वत्वं यवादिपाठाभावात् । गरुद्भिर्डयते गरुडः, पृषोदरादिरित्याल्लुक् (सू०), गिरति नागान्वा । तृक्षस्यापत्यं तार्क्ष्यः, गर्गादित्वाद्यञ् (सू०) । विनताया अपत्यं वैनतेयः, स्त्रीभ्योढक् (सू०) । सुपर्णो हेमपक्षत्वात् ॥ २९ ॥ शं भवत्यस्माच्छम्भुः, मितद्र्वादित्वाद् (वा०) डुः । ईष्टे— ईशः । पशूनां सुरनरतिरश्चां पतिः । शिवः श्रेयस्करत्वात् । ईष्टे— ईश्वरः, स्थेशभासपिसकसोवरच् (सू०) वरच् । महेश्वरो महादेवविन्दुकः । शृणाति हिनस्ति शर्वः ।

दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।
पीताम्बरोच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥
उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।
पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥
देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।
वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥
विश्वंभरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।
वसुदेवोस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २२ ॥
बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोच्युताग्रजः ।
रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥
नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली ।
संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २४ ॥

स्वंभूः स्वतो भवतीति ॥ १८ ॥ पुण्डरीके इवाक्षिणी अस्य पुण्डरीकाक्षः, बहुव्रीहौसक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षजिति (सू०) षच्, प्रसन्नलोचन इत्यर्थः । गां भुवं विन्दतीति गोविन्दः, वराहरूपेण गोः पृथिव्या उद्धर्ता, तद्वत् गोवर्धनाचलोद्धाराद् गवां त्राता, अनुपसर्गाल्लिम्पविन्देति (सू०) शः । गरुडो ध्वजश्चिह्नं वाहनत्वेस्य । पीते अम्बरे वाससी अस्य । न च्यवतेच्युतः । शृङ्गस्य विकारो धनुरस्त्यस्य शार्ङ्गी । विष्वक्सर्वव्यापिनी सेनास्येति विष्वक्सेनः । जनानर्दयति जनार्दनः, नन्द्यादित्वाल्ल्युः (सू०) ॥ १९ ॥ इन्द्रमुपगतोनुजत्वादुपेन्द्रः । इन्द्रस्यावरं जातोनुज इन्द्रावरजः । पद्मं नाभावस्य पद्मनाभः, अच्प्रत्यन्ववेति (सू०) प्राङ्निर्देशादच् । मधुनाम्नोसुरस्य रिपुर्मधुरिपुः । वसुदेवस्यापत्यं वासुदेवः, जगत्यां सर्वहृदये वसतीति वासुः– कल्पान्ते दीव्यतीति देवः, वासुश्चासौ देवश्च वासुदेवः । त्रयो विक्रमा अस्य त्रिविक्रमः, त्रिषु लोकेषु वा विक्रमः पादन्यासोस्य ॥ २० ॥ शूरस्यापत्यं शौरिः । पुरुषेषूत्तमः पुरुषोत्तम इति सप्तमीतत्पुरुषः, न निर्धारणे (सू०) इति षष्ठीसमासनिषेधात्, कर्मधारये च सन्महत्परमोत्तमेति (सू०) उत्तमपुरुष इति स्यात् । पुष्पफलपल्लवान्विता वनमालास्यास्तीति वनमाली, व्रीह्यादिभ्यादिनिः (सू०) । बलिं ध्वंसते बलिध्वंसी, सुप्यजातौणिनिस्ताच्छील्ये (सू०) । अधः कृत्वाक्षाणीन्द्रियाणि जातोधोक्षजः, अधोक्षाणां जितेन्द्रियाणां वा जायते प्रत्यक्षीभवति, अक्षजं ज्ञानमधोस्य वा ॥ २१ ॥ विश्वं बिभर्तीति विश्वंभरः, संज्ञायांभृतृवृजीति (सू०) खच् । मधुकैटभावसुरौ जितवान् । विधत्ते विधुः । श्रीवत्साख्यो रोमावर्तो वक्षसि लाञ्छनमस्य श्रीवत्सलाञ्छनः । गदाग्रजो दाशार्हो मुञ्जकेशोब्धिशायी पुराणपुरुषो बभ्रुरित्याद्यूह्यम् । हरौ जाते आनका दुन्दुभयश्चास्य नेदुः, अनकदुन्दुभी वसुदेवस्य पितेत्येके ॥ २२ ॥ बलेन भद्रो बलभद्रः, बलस्त्वनुनिष्पादिन्यायेन भीमवत् । प्रलम्बं नाम्नासुरं हतवान् प्रलम्बघ्नः, अमनुष्यकर्तृकेच (सू०) इति टक् । [रेवतीं रमयतीति, नन्द्यादित्वात (सू०) ल्युः] । रामः सिताङ्गत्वात् । कामान् पालयति कामं स्मरं वाग्रजत्वात्कामपालः ॥ २३ ॥ रोहिण्या अपत्यं रौहिणेयः, शुभ्रादित्वात् (सू०) ढक् । तालवृक्षोङ्को ध्वजोस्य तालाङ्कः । संकर्षति संहारमूर्तित्वात्संकर्षणः, नन्द्यादित्वाल्ल्युः (सू०) । कालिन्द्या यमुनाया भेदनो हलेनाकर्षणात् । सात्वतोपि । [एककुण्डलोनन्त इत्याद्यूह्यम्] ॥ २४ ॥ मदयति मदनः, ल्युः । मननं मत्-चेतना,

षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ।
मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ।
गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥ १५ ॥
ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ।
हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः ॥ १६ ॥
धाताब्जयोनिर्द्रुहिणो विरिञ्चः कमलासनः ।
स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड् विधिः ॥ १७ ॥
विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ।
दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥

पूर्वनिवासानुस्मृतिः परचित्तज्ञानमास्रवक्षय ऋद्धिश्चेति षडभिज्ञा अस्य सन्तीति । दानक्षान्तिशीलवीर्यध्यानशान्तिबलोपायप्रणिधानज्ञानानि दश बलान्यस्येति । अद्वयं विज्ञानाद्वैतं वदत्यवश्यमद्वयवादी । विनयति शास्तीति विनायकः । मन्यते मुनिः, मनेरुच्च (उ०), तेषामिन्द्रः । मुनिस्तु भीमवत्, सन्ति पदेषु पदैकदेशा इति । श्रिया योगविभूत्या घनो निविडः, श्रिया घन इव वर्षिता वा । शास्ति विनयति विनेयाञ्छास्ता, तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः संज्ञायां चानिटौ (उ०)। तापी च ॥ १४ ॥ यस्तु शकेषु जातः शाक्यमुनिर्बुद्धावतारः– शकोऽभिजनोऽस्येति, शण्डिकादिभ्यो ञ्यः (सू०) स शाक्यः सिंह इव शाक्यसिंहः, उपमितं व्याघ्रादिभिः (सू०) इति समासः । शाक्योपि भीमवत् । सर्वार्थेषु सिद्धो निष्पन्नः । अत एव सिद्धार्थः, यच्छाश्वतः– सिद्धार्थौ शुक्लसर्षपौ । शुद्धोदनस्य राज्ञोऽपत्यं शौद्धोदनिः, शकन्ध्वादित्वात् (वा०) पररूपम् । गौतमो गोतमगोत्रावतारात् । अर्कबन्धुः सूर्यवंश्यत्वात् । मायादेवी शुद्धोदनस्य राज्ञो भार्या तस्याः सुतः स इति । इत्यागमोक्तावतारभेदात्पृथङ् नामानि । [सर्वज्ञो वीतरागोऽर्हन् केवली तीर्थकृज्जिनस्त्रिकालविदाद्या ऊह्याः] ॥ १५ ॥ बृंहति ब्रह्मा । आत्मना भवत्यात्मभूः । अत एव स्वयंभूशब्दे लब्धे स्वभूनिवृत्त्यर्थं वचः । एवं सर्वत्रोन्नेयम् । परमे पदे तिष्ठतीति परमेष्ठी, परमेस्थः किदिति (उ०) इनिः, तत्पुरुषे कृतीति (सू०) सप्तम्या अलुक्, स्थास्थिन्स्थृणां वक्तव्यात् (वा०) षत्वम् । पितॄणामपि पिता पितामहः, पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः (सू०) इति साधुः । हिरण्यं गर्भेऽस्य हिरण्यगर्भः, हिरण्मयस्य गर्भो वा ब्रह्माण्डप्रभवत्वात् । भूरादीन् सप्त लोकानीष्ट इति लोकेशः ॥ १६ ॥ धाता विधाता कर्ता, वेरर्थो धातुनैवोक्तः– उपसर्गाणां द्योतकत्वात् । द्रुह्यत्यसुरेभ्यो द्रुहिणः । विरिञ्चक्ते सूते विरिञ्चः, विभिर्हंसै रिच्यते- उह्यते वा, विरिञ्चिरिति प्राच्याः । विदधाति सृजति विश्वमिति वेधाः, विधाति सृजति वेधाः, विध विधाने ऽसुन्, विधाञो वेध चेति वा (उ०)। विश्वं सृजति विश्वसृट्, व्रश्चभ्रस्जसृजेति (सू०) षः, झलां जशोऽन्ते (सू०) । विधत्ते विधिः, उपसर्गे घोः किः (सू०)। शतधृतिशतानन्दौ च । स्थविरो देश्याम् ॥ १७ ॥ वेवेष्टि व्याप्नोति विश्वं विष्णुः, विषेः किच्चेति (उ०) नुः । नरस्यापत्यं नारायणः, नडादिभ्यः फक् (सू०) । नाराः सलिलं नारमम्मयं नरसमूहो वायनमस्य, आपो नारा इति प्रोक्ता इति स्मृतेः । तथा नराज्जातानि भूतानि नाराणीति तेषामयनं मार्गः । कृष्णो वर्णेन कर्षति वारीन् । विकुण्ठस्यापत्यं वैकुण्ठः, विकुण्ठितसैन्यादिवक्त्रो वा संहितादिषु तथा दर्शनात् । विष्टर इव श्रवसी कर्णावस्य विष्टरश्रवाः, विष्टराक्रान्तजैरा श्रवोभ्यां निर्गताऽस्येति वा, अथवा विष्टरेऽभ्यर्थ्यतरो श्रूयते वा । दाम- उदरे यस्य स दामोदरः, बाल्ये हि चापलाद्दाम्ना बद्धोऽभूत् । हृषीकाणामिन्द्रियाणामीशो वशित्वाद् हृषीकेशः । प्रशस्ताः केशा विद्यन्तेऽस्य– यदि वा केशिनमसुरं हतवान्– केशवः, केशाद्वोऽन्यतरस्याम् (सू०) । मा या लक्ष्म्या धवो भर्ता माधवः, मधोरपत्यं वा ।

बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ।
वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः ।
महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिंनराः ।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ११ ॥

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः ।
शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।
समन्तभद्रो भगवान् मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥

न्धसः ॥ ८ ॥ बर्हिरग्निर्मुखमेषां बर्हिर्मुखाः । गीरेव निग्रहानुग्रहसमर्थो बाणोऽस्त्रमेषां गीर्वाणाः । प्रशस्तं वृन्दमस्त्येषां वृन्दारकाः, शृङ्गवृन्दाभ्यामारकन्वक्तव्यः (वा०) । देव एव देवता, देवात्तल् (सू०), स्वार्थिकाः प्रकृतितो लिङ्गवचनान्यतिवर्तन्तेऽपि । देवतैव दैवतं, प्रज्ञादित्वात् (सू०) स्वार्थे-अण्, विशेषविधेः पुंस्त्वं रूपभेदात् क्लीबत्वं तत्र प्रचुरप्रयोगम् ॥ ९ ॥ एते द्वादशत्वादिना संघेन युक्ता गणदेवताः, संघचारिणो बहुवचनान्ता वा । एकत्वं तु समुदायेष्वपि वृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्त इति । द्वादशादित्याः । त्रयोदश विश्वेदेवाः, श्राद्धे प्रविशन्तीति । अष्टौ वसवः, वसन्तीति । षट्त्रिंशत्तुषिताः, तुष्यन्तीति । चतुःषष्टिराभास्वराः, आभासन्त इति, स्थेशभासेति (सू०) वरच् । एकोनपञ्चाशदनिलाः । षट्त्रिंशद् द्वे शते महाराजिकाः, महाराजशब्दोऽस्त्येषामिति । सास्य देवता (सू०) इति माहाराजिका इत्येके, महाराजप्रोष्ठपदाट्ठञ् (सू०) । द्वादश साध्याः, साध्यन्त आराध्यन्त इति । एकादश रुद्राः । तुषिताद्या गौरुपातकजलपुराणादौ द्रष्टव्याः ॥ १० ॥ देवा योनिरुत्पत्तिस्थानमेषां, देवांशा इत्यर्थः, देवपदस्थसंहतेभ्यः परमाणुभ्यः सद्यो जायन्ते वा । नागा अप्येवम् । तथा च द्वितीयमेषु— सिद्धगुह्यकभूता हि पिशाचा देवयोनय इति भागुरिः पपाठ । विद्याधरा जीमूतवाहनादयः, खड्गगुटिकाञ्जनादिविद्याधारिणश्च । अप्सु सरन्त्यप्सरसो देवयोषितः— रम्भादयः । यक्षाः कुबेरादय ऋद्धीश्वराः । रक्षांसि मायाविनो लङ्काधिवासिनः । गन्धर्वास्तुम्बुरुप्रभृतयो देवगायनाः । किंनरा अश्वादिमुखाः शृङ्गारिणः । पिशाचाः पिशिताशास्तामसाः स्वयं निर्मांसाः । गुह्यका निधिपाला मणिभद्रादयः, गूहन्तीति । सिद्धाः, सिध्यन्तीति, प्राप्ताष्टगुणैश्वर्या विश्वावसुप्रभृतयः । भवन्तीति भूता बालग्रहादयो हिंस्रा रुद्रानुचरा वा, यतोऽसौ भूतपतिः ॥ ११ ॥ असुराः सुराया अपानात्, सुरविरुद्धा वानर्थवत्, अस्यन्ति देवानिति वा । दितिर्दनुश्चासुरमातरौ, अनया जातत्वाद्दैतेया इति, आदित्या आदितेयवत्सिद्धम् । अनयोर्देवत्वाद् भ्रष्टा इति पूर्वदेवाः । सुरान्द्विषन्तीति सुरद्विषः, सत्सूद्विषेति (सू०) क्विप् ॥ १२ ॥ सर्वे गत्यर्था ज्ञानार्था इति सुगतः शोभनज्ञानः । तथागतः सत्यज्ञानः, तथेति सत्यार्थे वितथवत् । बुध्यते बुद्धः । धर्मः सत्त्वोद्धरणादिस्तेन राजते धर्मराजः, धर्मस्य राजा वा । संपूर्णान्तं निष्पन्नं भद्रमस्य समन्तभद्रः । ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः । वैराग्यस्याथ मोक्षस्य षण्णां भग इति स्मृतः ॥ तद्वान् । मारान् कामक्रोधादीञ्जयति मारजित् । बौद्धास्तु स्कन्धमारः क्लेशमारो मृत्युमारो देवपुत्रमारश्चेति चतुरो मारानाहुः । लोकाञ्जयति तपसा लोकजित् । जयति भवं जिनाति वा जिनः ॥ १३ ॥ दिव्यं चक्षुर्दिव्यं श्रोत्रं

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति ।
निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥
स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः ।
सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥
अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः ।
सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥
आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

पदं प्रयोज्यमिति परिभाष्यते, यथा–त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः । तथा मिथुने स्त्रीपुंसलिङ्गे द्वयोरिति पदं ज्ञेयम्, यथा–वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलौ । तथा निषिद्धं लिङ्गं यत्र तच्छेषार्थं निषिद्धाल्लिङ्गादवशिष्टं लिङ्गं ज्ञेयं, विशेषनिषेधे शेषाभ्यनुज्ञानात्, यथा–व्योमयानं विमानोऽस्त्रीति, स्त्रीलिङ्गे निषिद्धे विमानस्य पुंनपुंसकविधिः । तथा तुशब्दोऽन्ते यस्य तत्त्वन्तमथशब्द आदिर्यस्य तदथादि च पूर्वं न भजते–अग्रिमेण संबध्यत इत्यर्थः । न्यायसिद्धं चैतत्–तुना पूर्वस्माद्विशेषद्योतनात्–अथशब्देन चार्थान्तरारम्भात्, यथा–पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती, नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भर इति । भ्रान्तिस्थानविषयं चैतत् ॥ ५ ॥ स्वर्गे परे च लोके स्वरिति वक्ष्यमाणत्वेऽपीह प्रचुरप्रयोगार्थं स्वःशब्दोपादानं, वक्ष्यति च भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते । अव्ययमित्यलिङ्गत्वार्थम् । सुष्ठु–अर्ज्यते स्वर्गः, घञ् । नास्त्यकं दुःखमत्र नाकः, नाविद्यमानविरिञ्चो वा, नभ्राण्नपादिति (सू०) नञ् प्रकृत्या । तृतीया द्यौर्लोकस्त्रिदिवः–वृत्तिविषये दिवौकसवद्दिवशब्दोऽप्यस्ति, दीव्यन्त्यत्रेति घञर्थेकविधानम् (वा०), पूरणार्थाधिकत्वं च वृत्तौ त्रिभागवत् । त्रयाणां ब्रह्मादीनां द्यौरित्येके । त्रिदशालयादयः सुरसदनाद्युपलक्षणम्, एवं यौगिकेषु सर्वत्रोन्नेयम् । द्योशब्दोऽप्योकारान्तोऽस्ति, भाष्ये गोतोणित् (सू०) इत्यत्र–ओतोणिदिति (वा०) न्यासान्तराम्नानात् । दीव्यन्त्यस्यां द्यौः, दिवेः क्विप् । तृतीयं विष्टपं त्रिविष्टपं भूर्भुवःस्वरिति श्रुतेः । त्रिपिष्टपमिति प्राच्याः, प्रायेण त्वेते पवौ शसौ च व्यत्यस्य पठन्ति । गौर्नानार्थे । ऊर्ध्वलोकाद्या अप्यत्राः ॥ ६ ॥ न म्रियन्त इत्यमराः । निष्क्रान्ता जराया निर्जराः । दीव्यन्तीति देवाः, देवसेवमेषादयः पचादिषु द्रष्टव्या इति–इगुपधेति (सू०) को नाम्नि । त्रिर्दश परिमाणमेषां त्रिदशाः, संख्ययाव्ययेति (सू०) बहुव्रीहिः, बहुव्रीहौसंख्येयेडजबहुगणात् (सू०) इति डच् समासान्तः, त्रयस्त्रिंशद्वै देवाः सोमपा इति श्रुतेः । तिस्रो दशा वयोवस्था येषामिति गौडः । विबुध्यन्ते विबुधाः । सुरन्ति सुराः, सुर–ऐश्वर्ये–कः, सुरा–एषामस्तीति वा, अर्शआदिभ्योऽच् (सू०), यतोऽब्धिजाता सुरा तैः पीता, सुष्ठु राजन्ते वा । शोभनं पर्व चरितमेषां सुपर्वाणः । सुष्ठु मन्यन्ते सुमनसः, असुन् । दिवि–ओको निवास एषां दिवौकसः, यमसमानार्थो दिवशब्दोऽस्ति, पृषोदरादित्वात् (सू०) वा सिद्धिः ॥ ७ ॥ अदित्या अपत्यान्यादितेयाः, कृदिकारादक्तिनः (ग०) इति ङीबन्तात्–स्त्रीभ्यो ढक् (सू०)। इदन्तात्तु दित्यदित्यादित्येति (सू०) ण्य–आदित्याः । एवं दैत्यदैतेयाः । दिवि सीदन्तीति दिविषदः, सत्सूद्विषेति (सू०) क्विप्, हलदन्तात्सप्तम्याः (सू०), हद्द्युभ्यां च (वा०) इत्यलुक्, सुषामादित्वात् (सू०) षत्वम् । पक्षे द्युसदः । लिख्यन्ते चित्रादौ ध्यानार्थं लेखाः । इनन्ति ऋभवः । ऋशब्दोऽदितिवाची ततो भवन्तीति गौडः, डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्यउपसंख्यानात् (वा०) । नास्ति स्वप्न एषामस्वप्नाः । न म्रियन्ते–अमर्त्याः, हसिमृग्रिणिति तन् (उ०), स्वार्थे यत् । अमृतमन्धोऽन्नमेषाममृता-

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः ।
सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥
समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।
संपूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥
प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।
स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥
भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ।
कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥ ४ ॥

यस्य भगवतो ज्ञानदययोर्बोधकरुणयोः सिन्धोः समुद्रस्येव गम्भीरस्यापारस्य । अगाधस्यान्यैरप्राप्तज्ञानदयावधेः । अनघा निष्पापा गुणाः क्षान्त्यादयो बोधिपक्षाः[क्ष्याः] सप्तत्रिंशत् । सः– अक्षयः– अक्षोभ्यो जातो मारजित्त्वादनन्तज्ञानसन्तानो वा । भो धीरा योगिनः–ध्येयं प्रति धियमीरयती[न्ती]ति कृत्वा श्रिये भोगार्थं [सौख्यार्थं] अविद्यमानं मृतं मरणं यत्रेत्यमृताय मोक्षार्थं च सेव्यतामाराध्यताम् । लेशस्पृष्टोऽपि समुद्रः–अस्य विष्णोः क्षयो निवासः । अगाधोऽतलस्पर्शः । रत्नादिमत्त्वान्निर्मलगुणः । लक्ष्म्यर्थं पीयूषार्थं च सुरैः सेवितः ॥ १ ॥ ग्रन्थारम्भेऽभीप्सितसिद्धिहेतुं जिनमनुस्मृत्य श्रोतृप्रोत्साहनार्थं स्वप्रवृत्तिप्रयोजनं साभिधेयमादिवाक्येनाह । समाहृत्य संघात्य–अन्यतन्त्राण्यभिधानशास्त्राणि लिङ्गानुशासनानि वा [च] संक्षिप्तैर्लघूकृतैः प्रतिसंस्कृतैः प्रत्येकं परिपाटीस्थापनादिना कृतोत्कर्षैः–संपूर्णं लक्ष्यलक्षणाभ्यां संगृह्य पूरितं, वादान्तशान्तपूर्णेति (सू०) ण्यन्तस्य निपातनात् । वर्गैः सजाति[तीय]समूहैः, सुखग्रहणार्थं वर्ज्यन्ते विजातीया अस्मिन्निल्यसारवर्जनाद्वा । नाम्नामभिधानानां लिङ्गानां च स्त्रीपुंनपुंसकानामनुशासनं व्युत्पादकं शास्त्रमुच्यते ॥ २ ॥ अथ श्लोकत्रयेण परिभाषां शास्त्रव्यवस्थापनार्थमाह । प्रायशो बाहुल्येन क्वापि चेत्यर्थः । रूपस्या[न्ये]वन्तादेर्विभक्त्यलुगादेः–अम्–भावादेश्चाकारस्य भेदेन विशेषेण स्त्रीपुंनपुंसकानीह ज्ञेयानि, यथा–लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा, पिनाकोऽजगवं धनुः । तथा कुत्रचित्साहचर्यात्, यथा–अश्वयुगश्विनी, ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः, वियद्विष्णुपदम् । अत्राश्वयुगब्रह्मवियन्ति साहचर्यात्स्त्रीपुंनपुंसकानि । क्वचिल्लिङ्गविशेषविधानात्, यथा–भेर्यादिर्वौ द्वे स्त्रियाम्, दुन्दुभिः पुमान्, क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ३ ॥ अत्रामरकोशे भिन्नलिङ्गानां प्रातिपद्येनानुक्तानां भेदमाख्यातुं द्वन्द्वो न कृतः, परवल्लिङ्गं हि स्यान्नावयवलिङ्गम्, यथा–कुलिशं भिदुरं पविः, न तु कुलिशभिदुरपवय इति । तथैकशेषो न कृतः, शिष्यमाणलिङ्गस्यैव हि प्रतीतिः स्यात्, यथा–नभः खं श्रावणो नभाः, न तु खश्रावणौ नभसी इति । तथा संकरो न कृतः–संकरो व्यामिश्रता–साहचर्यात्तल्लिङ्गत्वं हि स्यात्, यथा–स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः, न तु स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिरिति । एतच्च क्रमादृते यत्र संग्रहश्लोकादौ क्रममात्रं विवक्षितं तत्रानुक्तानां भिन्नलिङ्गानां द्वन्द्वादयः कृता एव, यथा–वर्गाः पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौषधिमृगादिभिः । नृब्रह्मक्षत्रविट्शूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिता इत्यत्र द्वन्द्वसंकरौ, भ्रात्रादावेकशेषश्च कृतः । उपाध्यायश्च क्रमादृत इत्यन्तर्गडु मन्वानः क्रमेणादृते परिपाट्योपादेयेऽत्र ग्रन्थ इति व्यददरत् । गौडोपीत्थमबुद्ध्वा यथात्रायं संकरः क्रमादृतेनुक्रमं विना भिन्नलिङ्गानां न कृतः– अभिधानानुक्रमेणैवाभिधातु तु कृत एव, यथा–कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवं धनुः, प्रमथाः स्युः पारिषदा इति । मालाकारा हि स्त्रीलिङ्गादीन् प्रकरणैर्निरदिक्षन् । श्रीभोजस्त्वन्यथा व्याख्यत्–यद्यत्र द्वन्द्वैकशेषसंकराः क्रमादृते पर्यायनिर्देशं विना भिन्नलिङ्गा यद्युक्ता न स्युस्तदा न कृताः, पर्यायनिर्देशं विना तूक्तानां कृता एव, यथा–विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिंनराः, तथा, पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च, तथा नानार्थे–संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचनेति ॥ ४ ॥ यत्र लिङ्गत्रयसमाहारस्तत्र त्रिष्विति

अथ

श्रीमदमरसिंहविरचितं

नामलिङ्गानुशासनम् ।

भट्टक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितेनामरकोशोद्घाटनेन सहितम् ।

प्रथमं काण्डम् ।

श्रीगणेशाय नमः । दिश्याच्छिवानि शिवयोस्तिलकायमान-
गोरोचनारुचिललाटविलोचनं वः ।
अन्योन्यगाढपरिरम्भनिपीडनेन
पिण्डीभवन् बहिरिव स्फुटितोनुरागः ॥ १ ॥
अद्याप्यभिन्नमुद्रो योर्थार्थिभिरमरकोश एष बुधाः ।
उद्घाट्यते यथेच्छं गृह्णीध्वं नामरत्नानि ॥ २ ॥
प्रकृतिप्रत्ययवाक्यैर्व्यस्तसमस्तैर्निरुक्तनिगदाभ्याम् ।
इति समाष्टः पथिभिर्नाम्नां पारायणं कुर्मः ॥ ३ ॥
भग्ना अभिधानकृतो विपरीतारथ्य यत्र विश्रान्ताः ।
नामानि तानि भङ्क्त्वा गहनमहो अध्यवसिताः स्मः ॥ ४ ॥
सहजो यः समुल्लासः क्षीराब्धेः सोपि मंस्यते ।
चान्द्र इत्यत्र किं कुर्मो गतानुगतिकं जगत् ॥ ५ ॥
वस्त्वेव तत्र हि भवेत् क्रियतेन्यथा यत्
कम्छादयेह्निनमपि करसंपुटेन ।
सारेतरान्तरविचारचणान् प्रतीर्ष्ये-
स्तेनाहमेव बत दुर्जनचक्रवर्ती ॥ ६ ॥
(किंतु) यदतिकृपणवृत्त्या बिभ्यतो वा परस्मा-
दरचनममहार्थे नीरसं दूषं वा ।
वरिवसितुमुदारान् - ढौकयामोतिभक्त्या
तदपि मषकवृत्त्या दूष्यते किं विदध्मः ॥ ७ ॥
जाता विश्वसृजः क्रमेण मुनिभिः संस्कारमापादिताः
शब्दाः संवसनादसाधुभिरपभ्रष्टाः स्थ भो भ्रातरः ।
वाग्देव्याथ कृता मदेकशरणा मात्रा यतोस्मान्मया
न्याय्ये वर्त्मनि वर्तनाय भवतां षड् वृत्तयः कल्पिताः ॥ ८ ॥

ERRATA &c.

Page.	Line.				
16	9	for	स्मृताः	read	सृताः
„	11	„	रवारभम्	„	रपथारम्भम्
18	17	„	दाक्षयनी	„	दाक्षायणी
49	17	„	कामुका	„	कामुक्य
66	6	„	बन्धुको	„	बन्धूको
70	4	„	काकचिश्वी	„	काकचिश्ची
85	18	„	कासारः	„	कासरः
94	15	„	कटहारिर्णा	„	कुटहारिणी
„	30	„	पुष्यवत्ययी	„	पुष्पवत्यर्थी
104	23	„	अंसकक्षयोः	„	अंसवक्षयोः
115	13	„	चन्द्रोपध्वसंज्ञार्क	„	चन्द्रोपप्लमसंज्ञार्क
125	24	„	दाहविलोदि	„	दाहविलोपादि
129	28	„	आभीय	„	अभीर्य
137	16	„	सैन्याद्बहिः	„	सैन्य(स्य) बहिः
145	18	„	पथगाहुः	„	पृथगाहुः
148	11	„	भिवर्न	„	भिनवं
152	3	„	(स्तभ) छाग	„	(स्तुभ)श्छाग
160	7	„	भृतभुक्	„	भृतिभुक्
„	13	„	परास्कन्द	„	पारिस्कन्द
165	21	„	बाघस्तिष्ठन्त्य	„	वाचस्तिष्ठन्त्व
168	30	„	चीरेण	„	चिरेण
183	30	„	(ष्ठीवनं)	„	(सीवनं)
184	8	„	श्चोते	„	श्च्योते
188	24	„	गार्येकं	„	गार्गेकं
206	22	„	रचाना	„	रचना
213	28	after श्रेष्ठयथा- and before वरं कूपशताद्वापी		insert वररुचिः । ईयात्प्रिये यथा-	
217	26	for	सिकतोपला ।	read	सितोपला ।
232	29	„	द्राक्षणाली,	„	द्राक् मृणाली,

Note.—A few misprints are corrected and omissions supplied in the Notes.

with the revised notions of Sânkhya philosophy as propounded by *Is*varakr*i*sh*n*a. This circumstance again strengthens the probability that Amarasimha lived prior to *Is*varakr*i*sh*n*a, that is, in the 4th century A. D.

Amarakosha was translated into Chinese by Gu*n*arâta of Ujjayini in the sixth century (see Max Muller's India : What can it teach us ? 1st Ed. p. 328). In the Kâvyâdarsa of Da*n*din who flourished in the latter half of the 7th century (See Indian Antiquary Oct. 1912, p. 232) we meet with words indicative of 'likeness' thus : —

इववद्वायथाशब्दाः समाननिभसंनिभाः । तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपकाः ।
सदृक्सदृशसंवादिसजातीयानुवादिनः । सच्छणसदृक्षाभसपक्षोपमितोपमाः ।

These words or many of them appear to have been suggested to Da*n*din from the following lines in the Amarakosha—

वद्वा यथा तथैवेवं साम्ये— (p. 228).
वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक् ।
साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी । निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः । (p. 164).

Dr. Bhandarkar has found the words तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते (p. 215) of Amarasimha quoted in the Kâsikâvivara*n*apanjikâ of Jinedrabuddhi who has been shown by Prof. Pathak to have flourished in the beginning of the 8th century. A reference to Amarakosha is also found in the Amoghav*r*itti written in *S*aka 789.

SOME ABBREVIATIONS &c.

सू०--Pâ*n*ini's सूत्र or सूत्रांश
वा०—Kâtyâyana's वार्तिक or वार्तिकांश
ग०--गणसूत्र or गणसूत्रांश
उ०—उणादिसूत्र or उणादिसूत्रांश
का०--कारिका or कारिकांश
भाष्य०—भाष्यवचन
इ०--भाष्यकारेष्टि
ज्ञा०—ज्ञापकवचन
धा० सू०--धातुपाठान्तर्गतसूत्र.

[ ] Variants are generally shown in rectangular brackets.
( ) Additions and emendations proposed are included in ordinary brackets.

---

of Chandra's simpler and more intelligible Sûtra ईषदर्थादसमाः प्रभा. A justifiable inference from this and many other Sûtras is that Chandra's grammar was not before Amarasimha when he wrote his work. In this connection it is interesting to note the well-known line current amongst the orthodox Pandits :—अमरसिंहो हि पापीयान् सर्वं भाष्यमचूचुरत् ।

Kshirasvâmin commenting on the word आप्य says :—

आप्यं तु लक्ष्यात् । अत एव- आप्यं वेति चान्द्रं सूत्रम् । (p. 40).

On page 161, while explaining मन्द, Kshirasvâmin says :—

मन्दते स्वपितीव मन्दः । अत एव मदि जाड्य इति चान्द्रो धातुः ।

On page 157 the commentary has :—शशास्योर्णा शशोर्णं, गृहस्थूणवल्क्लीबे । But here Kshirasvâmin does not cite Chandra's Lingânusâsana which says :—शशोर्णं कारणं करम् । From these it may be inferred that Amarasimha preceded Chandragomin. Since Chandragomin, from whom the grammarian Vasurâta (A. D. 480) is said to have learnt grammar directly, belongs to the fifth century A. D., Amarasimha may be assigned to the fourth century A. D.

A correct explanation of the word जत्रु is found in Susruta, Charaka and even in Vâgbhata. But Amarasimha attaches to the word a wrong meaning. (See Dr. Hoernle's Osteology p. 166.) This fact may indicate that Amarasimha was posterior to Vâgbhata.

In passing it may be remarked that Amarasimha, though a Buddhist, had strong leanings towards Sânkhya philosophy as it evident from the use of the words :—

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् । (See p. 24 and Com. thereon). This philosophy of Kapila was revised by *I*svarakrishna or Vindhyavâsin, the rival of Buddhamitra and his pupil Vasubhandhu (A. D. 480). Amarasimha says :—

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने । (p. 207)

'अन्तराभवसत्त्व (*i. e.* अन्तरा मरणजन्मनोर्मध्ये भवं सत्त्वं यातनाशरीरं) is one of the senses of the word गन्धर्व'. Kumârila-bhatta in his S'lokavârttika says :—

अन्तराभवदेहस्तु नेष्यते विन्ध्यवासिना । तदस्तित्वे प्रमाणं हि न किंचिदवगम्यते ॥

The theory of the existence of अन्तराभवदेह is rejected by Vindhyavâsin. This shows that Amarasimha was not acquainted

Grammarians.

प्राच्याः, प्रतीच्याः and उदीच्याः are referred to here and there in this commentary: Pâṇini, Kâtyâyana and Patanjali are of course frequently referred to. The grammarian Chandragomin is cited nearly nine or ten times. Not only does Kshirasvâmin quote Kâsikâ but reproduces even its mistakes (see Comment. on सहायता and भग pp. 188 and 192). Lastly, the grammarian Bhoja is also quoted with great respect as श्रीभोज.

Philosophical Authors.

The Dharmasûtras of Gautama are quoted on pp. 28 and 114. Jaimini's Pûrva-Mimânsâ-Sûtra is quoted on p. 28. Sânkhya-sâstra is referred to on page 25, while Sânkhya-kârikâ is quoted on page 217. We find mention of the Vaiseshika doctrine on page 25. Yoga-sâstra and its Sûtras are cited on pp. 13, 119 and 191. The great Mimânsâ-writer Kumârila-bhatta is quoted on pp. 28, 166 and 207. The seven principles recognised by the Jainas are mentioned on page 187; while Buddhism and its principles are mentioned on pp. 25 and 203.

Other authors and works quoted by Kshirasvâmin in his commentary are too numerous to mention here. For the convenience of Sanskrit scholars, they are given in a separate list. (Vide Appendix I).

The age of Amarasimha.

In the Kâlavarga, page 23, Amarasimha says :—

द्वौ द्वौ माघादिमासौ स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभिः ।

Upon this Kshirasvâmin remarks thus :—माघाद्युपक्रमस्ततोयनारम्भात् ।' It is obvious from this statement that in the days when Amarasimha lived or shortly before his time, the sun's course to the North must have commenced in the month of Mâgha. Similarly the other remark of Kshirasvâmin :—हेमन्तादि वत्सरस्यारम्भः may be taken as confirmatory of the same view. From this it may be inferred that Amarasimha must have flourished 15 or 16 hundred years ago. Another clue to his age is found in the fact that he, though a Buddhist, follows the Pâninian system of grammar. The line :—

शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थादराजकात् । (p. 236)

is a rendering of Pâṇini's well-known Sûtra सभाराजामनुष्यपूर्वा and not

Râdhâkânta, Upâdhyâya is Achyutopâdhyâya whose commentary on Amarakosha is called Vyâkhyâ-pradipa. Gau*d*a was another commentator on Amarakosha before Kshirasvâmin. Both these commentators are quoted and criticized. The third is Bhoja about whose commentary we know nothing. Nor do we know anything about the commentators *A*châryâh, Nârâya*n*ah, &c.

Medical Authorities.

Since Kshirasvâmin refers by name to Susruta thus :—सुश्रुतस्त्वाह (p. 80), पवनेष्टोपीति सौश्रुताः (p. 64), it may be inferred that the frequent reference to वैद्याः may be intended generally for Charaka. The next medical authority after Charaka and Susruta is Dhanvantari who in the opinion of Kshirasvâmin is older than Amarasimha :—बालपत्रो यवासः खदिरश्चेति यर्येषु. धन्वन्तरिपाठमदृष्ट्वा बालपुत्रभ्रान्त्या ग्रन्थकृद्बालतनयमाह (p. 62). यर्ये– उपचित्रा दन्ती पृश्निपर्णी चेति । अत्र दन्त्यां द्रवन्तीभ्रान्त्या ग्रन्थकृदुपचित्रामाह (p. 69). पुष्करमूले त्रीणि नामानि । पद्मपत्रमिति ग्रन्थकृद् भ्रान्तः । पद्मपर्णेति लिपिभ्रान्त्या पद्मपर्णमिति बुद्धवान् । यदाह– मूलं पुष्करमूलं च पौष्करं पुष्कराह्वयम् । काश्मीरं पुष्करजटा धीरं तत्पद्मवर्णकम् (धन्वन्तरिः) (p. 79). शीतलवातक इत्येका संज्ञा यद्धन्वन्तरिः शणपर्णी शीतलवातक इत्याह । Amarasimha considers शीतलवातक as a compound and treats वातक and शीतल as separate terms for शणपर्णी (p. 80).

From these and other similar remarks it is obvious that Dhanvantari, whose work is known as Nigha*nt*u, must have preceded Amarasimha by a long interval. Vâha*t*a or Vâgbha*t*a, who was a Buddhist, is thrice or four times referred to in this commentary. His reference to the S'aka kings being very fond of onions enables us to assign him to the second or third century A. D.

> लशुनानन्तरं वायोः पलाण्डुः परमौषधम् । साक्षादिव स्थितं यत्र शकाधिपतिजीवितम् ॥
> यस्योपयोगेन शकाङ्गनानां लावण्यसारादिव निर्मितानाम् ।
> कपोलकान्त्या विजितः शशाङ्को रसातलं गच्छति निर्विदेव ॥ (अष्टांगसंग्रह उत्तरस्थान Ch. 49).

Other medical writers Chandra, Indu and Chandranandana are very frequently quoted, especially in his comments on the वनौषधिवर्ग, by Kshirasvâmin. But nothing is known about their works. A गणनिघण्टु by Chandranandana is mentioned in a list of writers of medical Nigha*nt*us. Two or three references to Nimi show him to have been a medical writer about whom nothing definite is known. Nor do we know anything about the हरमेखलतन्त्र, an ancient medical treatise mentioned on page 71. धातुविदः mentioned on page 156 may, for aught we know, be medical authors.

From this it would appear that Kâtya is older than Amarasimha. The same remark may be made as regards muni who may probably be identified with Vyâḍi. The third in the list is Bhâguri, as to whose priority to Amarasimha, Kshirasvâmin thus remarks on p. 70 :—

बृहती तु निदिग्धिकेति भागुरिवाक्याद् मन्यकृद् भ्रान्तः ।

On page 148 we meet with the remark of Kshîrasvâmin that Mâlâkâra was led astray by mistaking सर for शर in Bhâguri's statement :—एतच्च हंसं शरम् and that this author, *i.e.* Amarasimha, was in his turn misled by the latter. It is thus clear that in the opinion of Kshirasvâmin Bhâguri and the Mâlâkâra preceded Amarasimha. It may be pointed out here that the author of the Mâlâ is not only frequently quoted as an authority, but is sometimes adversely criticized by Kshirasvâmin.

S'âsvata, as it contains Anekârtha Samuchchaya only, is an ncomplete work though frequently quoted by Kshirasvâmin. It is nevertheless much fuller than Amarasimha's Nânârthavarga, though in some places both agree word for word, *e.g.* वसु and अनुबन्ध. On these grounds the S'âsvata may be regarded as a later work than the Amarakosha. According to the last verse in Prof. Zachariae's edition :—

महाबलेन कविना वराहेण च धीमता । सह सम्यक् परामृश्य निर्मितोऽयं प्रयत्नतः ॥

it was composed in consultation with Varâha who may be identified with Varâhamihira. On page 118 Amarasimha says that आतिथ्य means अतिथ्यर्थं, while Kâtya and Mâlâ say that आतिथ्यः means अतिथिः. Kshirasvâmin adds that :—शाश्वतोत एवोभयमाह 'for this very reason S'âsvata gives both the meanings'. This constitutes a further proof of S'âsvata's posteriority to Amarasimha.

The next authority quoted by Kshirasvâmin is Durga who together with Bhoja are his latest authorities. The Vedic Nighaṇṭu is twice quoted. The Amaramâlâ is thrice quoted though we know nothing as to its age and authorship. The Nâmamâlâ is thrice or four times quoted. Some quotations appear on pp. 72, 75 and 169 which are ascribed to Rudra by Bhânuji Dikshita.

Among the commentators on Amarakosha, who preceded Kshirasvâmin, are Upâdhyâya, Gauḍa and Bhoja. According to

Kshîresvara Mahâdeva at Kâkupada near Kanoj. In his commentary, on page 47, he enumerates all the well-known towns situated in Central India. This circumstance may also be taken as confirmatory of the view that he was not a native of Southern India, but belonged to Central India.

A list of authorities quoted by him is given below :—

Lexicographical Authorities.

1 Kâtya
2 Muni
3 Bhâguri
4 Mâlâ and the Mâlâkâra
5 Nighantu (*Vedic*)
6 S'âsvata
7 Amaramâlâ
8 Nâmamâlâ
9 Abhidhânakâra.
10 Abhidhânasesha
11 Anekârtha
12 S'riharsha
13 Durga
14 Bhoja
15 Rudra.

Commentators.

1 Upâdhyâya
2 Gauda
3 Bhoja
4 *A*châryâh
5 Nârâya*n*ah
6 *T*ikâ.

Medical Authorities.

1 Susruta and Sausrutâh
2 Vaidyâh (chiefly Charaka)
3 Dhanvantari and his Nighan*t*u (medical)
4 Vâha*t*a or Vâgbha*t*a
5 Chandra
6 Indu
7 Chandranandana
8 Dhâtuvidah
9 Nimih
10 Haramekhalam.

Kesava in his Kalpadruma enumerates the Koshakâras thus:—

कात्यवाचस्पतिव्याडिभागुर्यमरमङ्ग(क)लाः । साहसाङ्कमहेशाद्या विजयन्ते जिनान्तिमाः ॥

If the order, in which Kesava enumerates the names, may be taken as chronological, Kâtya necessarily stands as foremost in time. He is cited with great respect and so often by Kshirasvâmin as to suggest his priority to Amarasimha. We are told that the year begins with Hemanta :—हेमन्तादि वत्सरस्यारम्भः, and Kshirasvâmin cites Kâtya as his authority thus :

आदाय मार्गशीर्षाच्च द्वौ द्वौ मासावृतुः स्मृतः । (p. 23)

INTRODUCTION

Amarasimha's lexicon well-known to every Sanskrit student, is the oldest work of the kind now extant. It is of great interest to note that, though the production of a Buddhist, it has been universally accepted as an authority by the Brahmans and the Jainas alike. The fact that it has been commented upon by Buddhists like Subhûtichandra, by Jainas like *Asâdharapandita* and Nâchirâja, and by Brahmans like Kshirasvâmin, Mallinâtha* and Appayyâdikshita testifies to its usefulness to every class of Sanskrit students. It is a well-known fact that translations of the Amarakosha into Chinese and Thibetan have been recently discovered.

Many commentaries on the Amarakosha have been published, the most well-known of these being the one by Mahesvara and the other called Vyâkhyâsudhâ by Bhânuji-Dikshita. But the oldest and most important commentary now extant is the one by Kshîrasvâmin which is here offered to Sanskrit scholars. Its interest mainly lies in the fact that Kshîrasvâmin quotes numerous authorities, sometimes without naming them, in support of his statements. The date of this commentator is now known. He quotes Bhoja and is quoted by Vardhamâna in the Ganaratnamahodadhi, and therefore belongs to the second half of the eleventh century. He was a man of profound learning, proofs of his erudition being found on every page. His works will be noticed in the Notes. He appears to have been a native of Central India from his use of the words प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, &c. His attachment to Râjasekhara and to *S*ri Bhoja makes this view highly probable. His mention of many words as Desi, which are really found in the Hindi and other Northern dialects, points to the same conclusion. Kshîrasvâmin was a devotee of *S*iva, as is obvious from the introductory verse and other indications in the commentary, and his name seems to have been suggested by the god

* Mallinâtha's commentary is called Amarapadapârijâtam.

C—No. 332 of 1875–76. This Ms. is a new copy and contains the text and the commentary on the 1st Kâ*nd*a and the first two *vargas* of the 2nd. It is said to be one of the Kâshmere collections. It is full of mistakes.

D—No. 273 of 1880–81. The age of the Ms. is Samvat 1812 *i. e.* 1756 A. D. It is complete and probably copied from the same original as A. It is unreliable, as the copyist interpolates not only extraneous information, but his own information and that from later commentators as well. It is very incorrect and the copyist is very careless.

E—No. 505 of 1884–87. This Ms. is correct and reliable, but it contains the text and the commentary only on the 1st Kâ*nd*a.

F—No. 506 of 1884–87. This Ms. does not contain the text and the commentary on the 1st Kâ*nd*a and the first four *Vargas* of the 2nd. It is otherwise reliable and tolerably correct. It is very old and the copyist is somewhat careful.

N. B.—Besides omissions and additions of letters, ह्रस्व for दीर्घ a *Mâtrâ* for *anusvâra* and a line for *Visarga* are very frequent in the Manuscripts. The letters य for प or प for य, व for च or च for व, श for स or स for श, ड for ड or ड for द, न for र or र for न, &c. are met with on every page.

PREFACE.

—:0:—

My object in bringing out the edition of Amarakosha with Kshîrasvâmin's Commentary is to make this valuable commentary easily accessible to Sanskrit scholars. I have succeeded in tracing many quotations met with in this commentary to their original sources. Still there are some quotations which I have not been able to verify and there remain some difficulties which I could not solve. These latter have been shown in the Notes and in Appendix I. My acknowledgments are due to Prof. K. B. Pathak and Sirdar K. C. Mehendale for the help which I have received from them in the course of this work: I must also tender my thanks to Dr. G. K. Garde for his kindness in supplying the interesting reference to Saka kings in the Ashtângasangraha of Vâgbha*t*a.

POONA
March, 1913.

K. G. OKA.

This edition of Amarakosha with the commentary of Kshîrasvâmin has been prepared from the following Manuscripts from the Deccan College collections :—

A—No. 88 of 1871-72. The age of the Ms. is Samvat 1678 *i. e.* 1622 A. D. It is very old and tolerably correct. It contains the text and the commentary on the 2nd and 3rd Kâ*n*das and not on the 1st, as the first 52 leaves of the copy are wanting. It is reliable, though the copyist is somewhat careless.

B—No. 333 of 1875-76. The age of the Ms. is Samvat 1690 *i.e.* 1634 A. D. It is complete and comes from Jaipur. It is very reliable, as the copyist never interpolates extraneous information. It is, therefore, taken as basis in preparing the present Edition.

Printed and published at the "LAW PRINTING PRESS,"
449 Shanwar Peth, Poona City by
D. G. KHANDEKAR.

THE NÂMALINGÂNUS'ÂSANA

(AMARAKOSHA)

OF

AMARASIMHA

With the Commentary (Amarakoshodghâṭana.)

OF

KSHÎRASVÂMIN.

Edited with critical Notes, an Essay on the time of Amarasimha and Kshîrasvâmin, a list of works and authors quoted, glossary of words, &c. &c.

BY

KRISHNAJI GOVIND OKA,

Late Sanskrit Teacher,

D. E. S., POONA.

POONA.

1913.

Price Rs. 3-8.

THE

NÂMALINGÂNUS'ÂSANA

(अमरकोष)

OF

AMARASIMHA

th the Commentary (*Amarakoshodghâtana.*)

OF

KSHÎRASVÂMIN.

PK
925
A53
1913a

LIBRARY
NOV 18 1968
UNIVERSITY OF TORONTO

6 (The) Na'malinga'nusha'sana.—(अमरकोश). The work of Amarasinh with Kshiraswamin's commentary. pp. 200. Edited with critical notes, an Essay on Amarasinh and Kshiraswamin, etc., and published by Krishnaji Govind Oka, Poona. [1st Apr. 1913]. Royal 8vo. 1st edition.

Price, Rs. 2.

22. H. 28

INDIA OFFICE LIBRARY

This book is due for return on or before the date last marked below unless it has been renewed in accordance with the Library Rules

17 MAR 1958

UNIVERSITY OF TORONTO
3 1761 00012041 0